श्री तुकाराम-चरित
जीवनी और उपदेश
लेखक—
श्री लक्ष्मण रामचन्द्र पांगारकर बी॰ए॰
अनुवादकः—
श्री लक्ष्मणनारायण गर्दे

ॐ

अ क्रमणिक

चित्र सूची

श्रीविठ्ठल.

श्रीविठ्ठल प्रसन्न

प्रस्तावन

भगवान् श्रीपाण्डुरङ्गकी कृपासे आज श्रीकृष्णजन्माष्टमी (संवत् १९७७) के परम शुभ अवसरपर मैं अपने पाठकोंको श्रीतुकाराम महाराजका यह चरित्र भेंट करता हूँ चरित्रग्रन्थोंमें मेरा प्रथम प्रयास महाकवि मोरोपन्त और काव्यविवेचन था जो आठ वर्षके सतत उद्योगके फलस्वरूप संवत् १९६५ में (मराठी भाषामें) प्रकाशित हुआ इसके अनन्तर श्रीएकनाथ महाराजका संक्षिप्त चरित्र संवत् १९६७ के पौष मासमें और ज्ञानेश्वर महाराजका चरित्र और ग्रन्थविवेचन संवत् १९६९ के चैत्र मासमें प्रकाशित हुआ इसके आठ वर्ष बाद यह ग्रन्थ प्रकाशित हो रहा है श्रीतुकाराम महाराजके ऋणसे अंशतः मुक्त होनेका यह सुअवसर भगवान्‌ने प्रदान किया इसके लिये उन दयाघन श्रीनारायणके चरणकमलोंमें प्रणामकर किञ्चित् प्रास्ताविक आरम्भ करता हूँ

सबसे पहले इस ग्रन्थके आधारके सम्बन्धमें कुछ कहना आवश्यक है प्रथम और मुख्य आधार श्रीतुकारामकी अभङ्गवाणी ही है। महाराजका चरित्र यथार्थमें उनके अभङ्गोंमें ही चित्रित है उनका अन्तरङ्ग उनका अभ्यास उनके अनुभव और उपदेश उनके अभङ्गोंमें इतनी उत्तमताके साथ निखर आये हैं कि इतना सुन्दर वर्णन और किसीसे भी बन न पडेगा महाराजके अभङ्गोंको जो जितनी ही आस्था आदर और चावसे पढेगा और मनन करेगा उसके सामने महाराज भी अपना हृदय उतना ही अधिक खोलकर रख देंगे महाराजकी पूर्वपरम्पराको अवश्य ही समझ लेना होगा मैं यह निःसंकोच और निधडक कह सकता हूँ कि परम्पराको समझते हुए श्रीतुकाराम महाराजकी वाणीके श्रवण मनन निदिध्यासनरूप सत्संगमें मेरे जीवनके

कुछ दिन यानी बीस पचीस वर्ष बीते हैं श्रीतुकाराम महाराजके अभ
उनके सहज उद्गार हैं उनमें कृत्रिमता नाममात्रको भी नहीं है
न विचारोंमें है न भाषामें ही कुछ ग्र थ ज्ञानसग्राहक होते हैं कु
उपदेशपरक और कुछ स्वगतभाषणरूप तुकाराम महाराजने जो
अभङ्ग रचे वे ससारके ज्ञानभ डारको भरनेकी बुद्धिसे नहीं रचे
ससारको साख देनेके लिये कुछ अभङ्ग उ होंने कहे हैं सही पर अधिकाश
अभङ्ग उनके भगवान्के साथ एका तकी सहज स्फूर्तिसे ही निकले
हुए हैं अथवा कुछ ऐसे भी अभङ्ग हैं जो उनके स्वगतसलापसे
निकल पडे हैं तुका कहे करूँ मनसे सवाद अपनी ही बात आपसे
ही ऐसा उनके मनका बैठका था इससे उनके अभङ्ग प्राय उनके
स्वगतभाषणोद्गारसे हो हैं अनेक प्रसङ्गोंका वर्णन इस चरित्रग्र थमें
उ होंके अभङ्गोंद्वारा हुआ है स्थान स्थानपर जो उनके अभङ्गोंके
अवतरण दिये हैं उसका कारण भी यहा है

श्रीतुकारामकी अभङ्गबानी ही इस चरित्रका मुख्य और प्रथम
आधार तो है ही पर इन अभङ्गोंका चुनाव कैसे किया किन किन सग्रहोंको
देखा और किनको प्रमाण माना यह भी यहाँ बता देना आवश्यक है
सबसे पहले माधवचन्द्रोबाने सवत् १९२२ २४ में तुकारामकी गाथा
शिलाप्रेसमें छापकर प्रकाशित की इसमें ४३२८ अभङ्ग थे इसके
पश्चात् बम्बई शिक्षाविभागके डिरेक्टर सर अलेकजैण्डर ग्राटकी
सिफारिशसे बम्बई सरकारने चौबीस हजार रुपया खर्च करके विष्णु शास्त्री
पण्डित तथा शङ्कर पा डुरङ्ग प डितसे सशोधन कराकर साढे चार हजार
अभङ्गोंका एक सग्रह इन्दुप्रकाशप्रेससे छपवाकर प्रकाशित किया
इन पण्डितद्वयने देहू तलेगाँव कडूस और प ढरपुरकी पुरानी हस्त
लिखित प्रतियोंको देखकर एक प्रति तैयार की और इस प्रकार यह
ग्रन्थ सवत् १९२६ में प्रकाशित हुआ इसपर वारकरियोंके
तत्कालीन प्रसिद्ध नेता भारू काटकरकी मुहर लगी है और
बड़े बड़े अक्षरोंमें यह लिखा है कि इस ग्रन्थको हमने देहू स्थानमें देखा
है यह सबके लेनेयोग्य है इस ग्रन्थमें आरम्भमें श्रीतुकाराम

महाराजका चरित्र अगरेजी और मराठी भाषाओंमें दिया गया है जो महीपति बाबाके आधारपर लिखा गया है इसमें पादटिप्पणियोंमें पाठभेद तथा कठिन शब्दोंके अर्थ दिये गये हैं जिन पुरानी हस्तलिखित प्रतियोंपरसे यह ग्र थ उतारा गया उन प्रतियोंको मैंने देखा है ये सब प्रतियाँ सौ सवा सौ वर्षके आगेकी नही है तथापि उनकी कोइ परम्परा तो अवश्य है इन पण्डितद्वयको सन्ताजी जगनाडेकी बही देखनेको नहीं मिली यह भी स्पष्ट है, तथापि सब बातोंका विचार करते हुए इन्दुप्रकाश से प्रकाशित य॰ सग्र॰ बहुत अच्छा है छपे हुए संग्रहोंमें सबसे अच्छा सग्रह यही है सके बाद माँडगाँवकरजीने भी पाठभेदोंके साथ एक सग्रह छापा है आपटे और निर्णयसागर आदिंने भी विषयविभाग करके भिन्न भिन्न सग्रह प्रकाशित किये है तुकाराम तात्याका नौ हजार अभङ्गोंका सग्रह सवत् १९४६ में प्रकाशित हुआ तुकाराम महाराजके अभङ्गोंका सुस्थिर एकाग्र दृष्टिसे विचार करनेपर इस सग्रहमें सगृहीत अनेक अभङ्ग तुकारामके नहीं प्रतीत होते पर सका य॰ मतलब नहीं कि इस सग्रहके ऐसे सभी अभङ्ग जो अन्य सग्रहोंमें नही है प्रक्षिप्त हों बात यह है कि अभीतक अभङ्गोंकी पूरी खोज और परख अच्छी तरहसे होने ही न पायी है पुराने संग्रहोंमें प्राय साढे चार हजारसे अधिक अभङ्ग नहीं हैं और तुकारामके सर्वमान्य अभङ्ग इतने ही हैं सवत् १९६६ में श्रीविष्णुबोवा जोगने सार्थ सग्रह छापा सब अभङ्गोंका अर्थ लगानेका यह प्रथम ही प्रयास था इस दृष्टिसे यह सग्रह अच्छा है इस सग्रहके साथ बारह पृष्ठोंकी एक प्रस्तावना श्रीविष्णुबोवाने जोडी है और उसके बाद ही उन्हींके आग्रहसे मेरा लिखा हुआ श्रीतुकाराम महाराजका अल्प चरित्र बारह पृष्ठोंमें आ गया है पण्ढरपुरमें श्रीतुकाराम महाराजके अभङ्गोंकी दो प्राचीन बहियाँ हैं जो वारकरीम डलमें प्रसादस्वरूप मानी जाता हैं एक वहाँके बडवों यानी प डोकी बही और दूसरी मालियोंकी पहली बही दो सौ वर्ष पुरानी विख्यात विठ्ठलभक्त श्रीप्र ादबोवा बडवेके समयकी मानी जाती है यह बही गङ्गुकाकाके मठमें है दूसरी बही मालियोंकी

देहूकर तथा वासकरके अखाडोंमें सम्मान्य है बडवोंकी बहीपरसे पूनेके आर्यभूषणप्रेसने श्रीहरिनारायण आपटेके तत्त्वावधानमें चार हजार बानबे अभङ्गोंका सग्रह और मालियोंकी बहीपरसे पुस्तकविक्रेता श्रीगोडबोलेजीने जगद्धितेच्छुप्रेससे साढे चार हजार अभङ्गोंका स ह प्रकाशित किया ये दोनों सग्रह सवत् १९७ में प्रकाशित हुए दोनों ही सग्रह सम्प्रदायमा य हैं और वारकरियोंके भजनोंमें २ हींसे काम लिया जाता है इनके सिवा दो सग्रह और हैं श्रीतुकाराम महाराजको वैकुण्ठ सिधारे पूरे तीन सौ वर्ष भी न बीतने पाये थे कि उनके अभङ्गोंमें पाठभेद और प्रक्षिप्त अभङ्गोंका झगडा चल पडा और उनके असली अभङ्गोंके विषयमें सबकी एक राय होना बडा कठिन हो गया ऐसा क्यों हुआ यह भी एक प्रश्न है और इसीका उत्तर ढूँढनेके प्रयासमें श्रीतुकाराम महाराजके असली अभङ्गोंका सग्रह ढूँढ निकालनेकी ओर सब शोधकोंका ध्यान लगा आशाकी यह एक झलक सी दिखायी दी कि यदि श्रीतुकाराम महाराजके लेखक गङ्गाराम मवाल और सन्ताजी तेली जगनाडेद्वारा लिखित अभङ्गोंकी बहियाँ कहींसे मिल जायँ तो तुकाराम महाराजके असली अभङ्गोंका पता लगाना बहुत सुगम हो जायगा इसी आशासे सवत् १९६ में मैंने तलेगाँव जाकर जगनाडेके घरके वेष्टन देखे उनमें सन्ताजी और उनके पुत्र बालाजीके हाथकी बहियाँ मिल गयीं उनमें तीन जगह हस्ताक्षर सन्ताजी तेली जगनाडे इस लेखको पढकर मुझे बडा हर्ष हुआ और ता २८ ४ १९ ३ ई के केसरी में मैंने दो कालमोंका एक लेख लिखकर २स अभङ्ग सग्रहकी ओर सबका ध्यान आकर्षित करनेका प्रयत्न किया सन्ताजीके एक लेखमें के १५६८ (सवत् १७ ३) और दूसरे लेखमें शाके १६११ (सवत् १७४५) लिखा हुआ है २ससे यह भी पता चला कि सन्ताजी तुकारामजीके प्रयाणके पश्चात् चालीस वष और जीवित र२ स ताजीके हाथका लिखा वह अभङ्गसग्रह उतारकर प्रकाशित करनेका काम तो मुझसे नहीं बन पडा पर शोधकोंकी दृष्टि तो उस ओर लग ही गयी श्रीदत्तोपन्त पोतदारने स ताजीकी

बहीपरसे २,८ अभङ्ग उतारे और उ हें भारत इतिहास सशोधक म डलके पञ्चम सम्मेलन वृत्तमें प्रकाशित किया इसके पश्चात् स ताजीकी और एक बहीका पता लगाकर थानेके श्रीविनायकराव भावेने श्रीतुकाराम महाराजके असली अभङ्गोंका सग्रह दो भागोंमें हालमें ही प्रकाशित किया है यह सग्रह बड़े महत्त्वका है इसमे तेरह सौ अभङ्ग हैं ये अभङ्ग तुकारामजीके असली अभङ्ग है इसमे सदेह करनेका कोई कारण नहीं रह गया है श्रीविनायकरावजी लक्ष्मीजीके कृपापात्र हैं और विद्वान् भी है उन्होंने यह सत्कार्य नि स्वार्थ प्रेमसे किया है यह सन्ताजीसंहिता या जगनाडीसहिता अभी अधूरी है इस सग्रहमें छपे हुए अभङ्ग सन्ताजीके हाथके हैं और शुद्ध लेखनपद्धति अवश्य ही तुकारामजीके समयकी और साथ ही स ताजीके हाथकी है यह बात भी ध्यानमें रहे श्रीतुकाराम महाराजका अध्ययन कितना विशाल और किस उच्च कोटिका था सो आगे पाठक देखेंगे ही सन्ताजीकी शिक्षा दीक्षा जैसी था उसी हिसाबसे उनके लेखनमें शुद्धि अशुद्धि आ गयी है देहूमें मैंने दस बीस बार चक्कर लगाये और तुकारामके वशजोंके यहाँके प्राय सब पोथियोंके वेष्टन और कागज पत्र देखे हैं और इन सबका उपयोग इस चरित्रग्र थमें यथास्थान किया है देहूमें तुकारामजीके खास घरमें तुकारामजीके हाथकी लिखी एक बही रक्षित रखी है इसे देखनेके लिये बडा प्रयत्न करना पडा है इसमें महाराजके दो सौ पचीस अभङ्ग हैं इसका लेखनप्रकार तुकारामजीके समयका और सन्ताजीकी बहीका सा ही है पर जो कुछ लिखा है वह शुद्ध और सुव्यवस्थित है तुकारामजीके वशज पूर्वपरम्परासे इस बहीको तुकारामजीके हाथकी लिखी बही मानते चले आये हैं इस बहीमेंसे दो अभङ्गोंका फोटो इस ग्र थमें जोड़ा है तुकारामजीके हाथके अक्षर कम से कम उनकी सही प्राप्त करनेके लिये मैंने नासिक और यम्बकमें रहनेवाले देहूकरोंकी मूल बहियोंको देखा उनकी सही मिल जाती तो बड़ा आनन्द होता अस्तु और एक अभङ्गगाथा का उल्लेख करके यह गाथा समाप्त

करूँगा बहिणाबाईका असल सग्रह मुझे शिऊरमें मिला है छपा हुआ सग्रह नकलपरसे छपा है असलपरसे नहीं पे हुए सग्रहमें एक अभङ्ग इस प्रकार है

" आलें झें जिणं दे तू माझें पोषण १
आठवित । रू सदा गुंणं लपा २
पाहे आ यार्च सत्तानुरें मुळेंची ३
बहेण म्ह परदेशीं थें आम्ह संगें सी ४

इस अभङ्गको पढते ही ऐसा लगा कि यह तुकारामका ही अभङ्ग है और गाथा' में देखा तो सचमुच ही यह तुकारामका अभङ्ग निकला इ दुप्रकाश आर्यभूषण और जगद्धितेच्छु प्रेसोंद्वारा प्रकाशित सग्रहोंमें कुछ श दोंके हेर फेरके साथ यह अभङ्ग छपा है बहिणाबाईके असल संग्रहमें यह अभङ्ग इस प्रकार है

क गें अल तुझ जिन दे तू माझ पोषन १
विता य व रूप सदा नेगु लपा २
वाट प हे आठ र्च त्त गोरे मु ३
क म्हणे परदेसि थें आम्हा गें ास

सन्ताजीकी गाथामें इन्दुप्रकाश का सा ही पाठ है इन्दुप्रकाश गाथा दो साम्प्रदायिक गाथाएँ सन्ताजीकी गाथा बहिणाबाईकी गाथा' ये ही पाँच सग्रह मुख्य हैं ५ वाँ सग्रह अभी छपा नहीं है कु पाठभेद हैं शुद्धि अशुद्धिके कुछ हेर फेर हैं इनका संशोधन होना आवश्यक है तथापि तात्पर्यार्थका दृ से देखते हुए गाथा गाथामें बहुत ब । अन्तर नहीं है सम्प्रदायके सिद्धान्त यदि परिचित हों श्रीतुकाराम महाराजके विचारों और भावनाओका अन्तरङ्ग परिचय हो कम से कम विचारोंकी अन्तर्धारा जँची हुई हो तो किसी भी सग्रहसे काम लिया जा सकता है अभङ्गोंके शुद्ध पाठ तभी मिल सकते हैं जब या तो तुकारामजीके हाथकी कोई प्रति मिले अथवा सब उपलब्ध प्रतियोंके अभङ्गोंको बडी सूक्ष्मतासे शोधकर परम्परा और सशोधन—दोनों प्रकारसे सवमान्य हो सकनेवाला कोई नवीन सग्रह प्रस्तुत किया जाय मैंने अबतक

के सभी सग्रहोंमें खास खास महत्त्वपूर्ण और मार्मिक अभङ्गोंको मिलान करके देखा है और इस प्रकार सम्प्रदायपरम्पराकी दृष्टि से वारकरियोंमें प्रेमसे सम्मिलित होकर तथा आल दा देहू प ढरीमें परम्परानुसार कथा कार्तन प्रवचन सुनने और सुनानेसे प्राप्त सम्प्रदायशुद्ध विचारपद्धतिक अनुसार इन अभङ्गोंका अध्ययन और मनन किया है इस चरित्रग्रन्थका जो प्रथम और मुख्य आधार है अथात् श्रीतुकाराम महाराजके अभङ्ग उसका यहाँतक विवरण हुआ

ग्रन्थका दूसरा आधार है **शोध** बहुतोंको इस बातका बड़ा आश्चर्य होता है कि एक ही मनुष्य शोधक और भावुक दोनों कैसे हो सकता है मेरे विचारमें सतोंका चरित्रलेखक तो भावुक रसिक और चिकित्सक यानी शोधक होना ही चाहिये परम्परा उपासना और भक्तिभावकी उत्कटताके बिना सतोंके रहस्य नही जाने जा सकते न उनके ग्र थ ही समझमें आ सकते हैं इस युगमें खोजसे बेखबर रह करके भी तो काम नहीं चल सकता इसलिये जहाँतक हो सकता है मै दोनों ही बातोंको चरित्रग्र थोंमें मिलाता हूँ प्रस्तुत ग्र थके लिये खोजका काम जितना भी मैं कर सका उतना मैंने किया है इसका दिग्दर्शन भी ऊपर कुछ करा चुका हूँ यों तो सारा ग्र थ ही खोजसे भरा हुआ है यहाँ उसका विस्तार कहाँतक किया जाय देहूमें दस बीस बार जाकर वहाँकी पोथियाँ कागज पत्र और बहियाँ देखीं और उनमेंसे उतना ही मसाला इस थमें लगाया है जितना कि इसके लिये पोषक और आवश्यक था श्रीशिवाजी महाराजके श्रीतुकारामतनय श्रीनारायण बोवाको लिखे दो पत्र मुझे प्राप्त हुए हैं तुकारामजाके पुत्रोंकी जायदादका बटवारा और बहिणाबाईके पतिके सम्बन्धका एक व्यवस्थापत्र इत्यादि कई कागज पत्र मेरे हाथ लगे हैं पर इस ग्र थमें उनकी चर्चा चलाकर ग्रन्थका कलेवर बढाना मैंने उचित नही समझा तुकारामजीकी आजादिनतककी वशावली देहू पण्ढरपुर नासिक और त्र्यम्बककी वशावली तथा प्राचीन लेखोंसे मिलाकर तैयार की सो भा इस ग्रन्थमें नहीं जोडी है तुकाराम जीके और सवशज देहूमें तथा अन्यत्र भी बहुत हैं तुकाराम महाराज

के अनन्तर उनके कुलमें उनके पुत्र नारायण बोवाके अतिरिक्त गोपाल बोवा राघोबा और वासुदेव बोवा तीन पुरुषाने अच्छी ख्याति लाभ की नारायण बोवाको छत्रपति श्रीशाहु महाराजने तीन गाँव भेंट किये थे देहू गाँवकी सनदमें यह लिखा है कि राजश्री तुकोबा गोसाँई के पुत्र नारोबा गोसाँईने प्रसिद्धगढ दुर्गमें पत्र भेजा उसमें लिखा कि श्रीतुकाराम महाराज देहूमें भगवत्कथा कीर्तन करते हुए अदृश्य हो गये यह बात प्रसिद्ध है उन्हींके हाथों इन श्रीभगवान्‌की मूर्तिकी पूजा हुआ करती थी कीर्तन करते हुए तुकारामजीका अदृश्य होना इस बातकी सर्वत्र प्रसिद्धि तथा तुकारामजीका मूर्तिपूजन करना ये तीनों बातें नारायण बोवाने बडे महत्त्वकी कही हैं इस ग्रंथके पूर्वपीठिकाध्यायमें खोजमें मिले हुए कागज पत्रोंका पूरा उपयोग किया है इस चरित्रमें तुकारामजीके परपोते गोपाल बोवाका नामोल्लेख कई स्थानोंमें किया गया है यह गोपाल बोवा तुकाराम महाराजके मझले पुत्र विठोबाके पोते हैं राघोबा विठोबाके परपोते हैं विठोबाके दो पुत्र एक गोविन्द और दूसरे गणेश गोविंदके पुत्र गोपाल बोवा हुए और गणेशके त्र्यम्बक और फिर त्र्यम्बकके राघोबा

तुकारामजीके प्रथम पुत्र महादेव बोवा थे इनके वंशमें वासुदेव बोवा हुए तुकारामजीके महादेव महादेवके आबाजी आबाजीके मुकुन्द और मुकुंदके वासुदेव तुकारामजीके बाद वासुदेव बोवा ही सबसे अच्छे निकले यह भी कहा जाता है कि इन्हींसे देहूका सम्प्रदाय चला वंशावलीका शेष विवरण यहाँ देना अनावश्यक है शिऊरमें जाकर बहिणाबाई और शङ्कर स्वामीके सम्बन्धमें जो ढूँढ खोज की उसका उपयोग यथास्थान किया है निलोबारायका हस्तलिखित ओवीबद्ध ग्रन्थ मिला उससे भी काम लिया है देहू और लोहगाँवके वर्णन तथा शिलालेख भी पाठक देखें इस ग्रंथका कालनिर्णय अध्याय शोधसे ही भरा है ग्रंथमें जहाँ तहाँ वारकरी सम्प्रदायका स्वरूप दरसाया है जहाँ जो कागज पत्र पुरानी बहियाँ और वे न मिले उन सबकी खोज ठीक तरहसे की है खोजसे कोई स्थान अभी यदि खाली रह गया

हो अथवा किसीकी खोज इसके बाद प्रकट हो तो उसके लिये मैं जिम्मेदार नही हूँ आठ वर्षसे इस ग्रन्थकी पुकार मची है और इसके बारेमें अनेक लेख और व्याख्यान प्रसिद्ध होते रहे है फिर भी यदि किसीने कोई बात मुझसे छिपा रखी हो तो यह उन्हींका दोष है

इस चरित्रग्रन्थका तीसरा आधार है तुकारामजीके प्रयाणकालसे लेकर अबतक उनका जो जो चरित्रकथन और गुणकीर्तन हुआ जो जो आख्यायिकाएँ ख्यात हुई जो जो चरित्रग्रन्थ और प्रबन्ध लिखे गये उन सबका पर्यालोचन इस सम्बन्धमे भी दो बातें कहनी हैं इस ग्रन्थमें तुकाराम महाराजकी गुणावली और भगवत्कृपाके प्रसङ्गोंका वर्णन पाठक पढेंगे इस गुणावली और भगवत्कृपाके दिव्य प्रसङ्ग महाराजके जीवनकालमें सबपर प्रकट हो चुके थे इस कारण उनके समकालीन तथा पश्चात्कालीन सभी सत कवियोंने प्रेममें विभोर होकर उनका वर्णन किया है इन्द्रायणीके दहमें तुकारामकी बहियोंको भगवान्ने जल से उबार लिया यह घटना सवत् १६९७ से भी पहले कोल्हापुरतक गाँव गाँवमें फैल चुकी थी इसा सवत् १६९७ का एक लेख बहिणाबाईके आत्मचरित्रमें मिलता है कि कोल्हापुरमें जयराम स्वामी हरिकीर्तन करते हुए श्रीतुकाराम महाराजके अभङ्ग गाया करते थे रामेश्वर भट्टने तुकाराम महाराजकी जो स्तुति की है उसका प्रसङ्ग आगे आवेगा ही इन्हींकी एक आरतीमें एक चरण इस आशयका है कि पत्थरसहित बहियोको जलपर ऐसे रखा जैसी लाई छिटकी हो सदेह वैकुण्ठ गमनके विषयमें रङ्गनाथ स्वामीका बडा ही सुन्दर पद अन्तिम अध्यायमें आया है इन्हींके भाई विठ्ठल (जन्मसवत् १६७१) की प्रसिद्ध प्रभाती 'उठि उठि बा पुरुषोत्तमा' में यह चर्चा भी आ गयी है कि उनकी बहियोंको तुमने पानी लगनेतक न दिया सवत् १७४२ में देवदासने जो सन्तमालिका रची उसमें कहा है कि 'जातिके बनिये तुकाराम तेरे भजनमें बडा गाढा प्रेम है। इसीसे तूने उस पुरुषोत्तमको पा लिया जो तेरे कागज भी जलसे तारने चला आया।' श्रीधर स्वामीके 'सन्तप्रताप' में बहियोंके उबारे जानेकी बात लिखी है सवत् १७३५ के

बाद सन्तगुणकीर्तनोंमे तुकारामका बहियोंके तारे ज ` तथा उनके सशरीर वैकुण्ठ सिधारने इन दोनों ही घटनाओंका कार्तन किया गया है शिवदिनकेसरी मत्स्यमुनीश्वर देवनाथ महाराज आदिने अपने पदोंमें तुकाराम महाराजकी स्तुति करते हुए इन दो कथाओंका स्मरण कराया है समर्थ श्रीरामदास स्वामाके सम्प्रदायवालोंने भी तुकारामजीके प्रति अत्यन्त प्रेम यक्त किया है समर्थ और तुकाराम एक दूसरेसे अवश्य ही मिले होंगे भिक्षाके मिससे छोटे बडे सबको परख ले महन्त महन्तको ढूँढे इत्यादि सीख दासबोध द्वारा देनेवाले समर्थ दक्षिणमें कृष्णानदीके तीरे सवत् १७ १ में आये इसके पाँच वर्ष बाद सवत् १७ ७ में तुकाराम अदृश्य हुए इन पाँच वर्षके कालमें समर्थ तुकारामजीसे कभी न मिले हों यह तो असम्भव ही प्रतात होता है रामदास तुकाराम मिलापके कथाप्रसङ्ग रामदासी ग्रन्थोंमें वर्णित हैं उद्धव सुतने समर्थचरित्रमें तथा रङ्गनाथ आत्या स्वामी वामन निवराज बोधले बोवा और जयराम स्वामीने लिखा है कि प ढरपुरमें तुकाराम रामदास मिले

भीम स्वामीके सन्तलीलामृत मे तुकारामचरित्र बीस अभङ्गोंमें है पर इन बीस अभङ्गोंमें भी समर्थ तुकाराम मिलनका प्रसङ्ग वर्णित है तथा और भा कई प्रसिद्ध और अप्रसिद्ध आख्यायिकाएँ हैं 'दास विश्रामधाम की भी यही बात है तुकारामजीकी कई अनोखी बातें इस न्थमें हैं उनकी विपत्ति उनके धैर्य निस्पृहता और असीम प्रेमाभक्तिका बहुत अ क वर्णन है सतोंकी छोटी बडी सभी गाथाओंमें तुकारामका गुणकीर्तन हुआ है तुकारामजीकी सब आख्यायिकाओंको एकत्र करके और उनकी कुलपरम्परा जानकर न्तचरित्रकार महीपति बाबाने पहले (सवत् १८१९) भक्तविजय में पाँच अध्यायोंका और पीछे (सवत् १८३१) भक्तलीलामृत में सोलह अध्यायोंका तुकाराम चरित्र लिखकर तुकाराम महाराजकी बड़ी सेवा की इन सब बातोंसे यह अच्छी तरह मालूम हो जाता है कि किस प्रकार महाराष्ट्रके क्या वारकरी और क्या अन्य सभी सम्प्रदायोंके लोगोंमें तुकारामजीकी कीर्तिपताका फहराती रही परतु सबसे बढकर तुकारामजीके सम्ब धमें

मोरोपन्तकी तीस पैंतीस आर्याएँ है जिनमे उन्होंने तुकाराम तुकारामके अभङ्ग इन अभङ्गोंके कार्तनोंपर और कीर्तनोंद्वारा जनसमूहपर होनेवाले परिणामोंका बडा ही मार्मिक वर्णन किया है तुकाजी विमद विराग विमत्सर थे नारद प्रह्लादके समान लोगोंको हरिकथामृत पान करानेके लिये वैकु ठसे उतरे थे ऐसे यह ज्ञानाम्बुधि और मूर्तिमान् भक्तिरस श्रीतु ारामको सब लोग प्रेमसे गावें ध्यावें और अपने पापोंको तुका बानीसे भस्म करें

स्वात्मानुभव देखते तुकजी केवल सखा जनकजीके
वैराग्य दे जिनक ोलन लागे अग सनकज १६
ार्ण अ ग जिनकी होके हो हरिकथा स च
अभग पाते मातासे प्रसन्न सँची १९
बहु जड जी ो जो सुभक्तिकी दें स ज्ञानी
उ स कोई होग कर्म कहीं या भ तुक ब २

(हि दीपद्यानुवाद)

न्दुप्रकाश वाले सग्रहके प्रकाशित होनेके बादसे तुकाराम महाराजके चरित्र और अभङ्गोंकी ओर लोगोंका ध्यान विशेषरूपसे लगा इस सग्रहमें दिये हुए चरित्रके आधारपर बगला और कर्णाटकी भाषाओंमें तुकाराम महाराजके चरित्र लिखे गये श्रीबालकृष्ण मह्लार हसका न्दर निबन्ध (सवत् १९२७) श्रीकेलुसकरलिखित चरित्र (सवत् १९५३) श्रीभिडेजीका तुकाराम बोवा प्रबन्ध और फिर इन्द्रौरके ा न्ताराम देसाइग्रथित तुकाराम अभङ्गरत्नोंके हार' शीर्षक सत्यजिज्ञासाप्र और थाह लेनेवाला हृदयकी लगन लगा निबन्ध ये सब निबन्ध और थ प्रकाशित हुए फ्रेजर साहबने तुकारामके कई अभङ्गोंका जो अङ्गरेजी अनुवाद किया वह प्रसिद्ध है

हमारे ईसाई भाई भा श्रीतुकारामका गुण गौरव सेवामें हमसे बहुत पीछे नहीं हैं ड मेरी माइकेलका प्रब ध भा अच्छा है और रेवरेण्ड नेहेम्या (पूर्व हिंदू श्रीनीलकण्ठ गोरे) का लिखा हुआ तुकारामका धर्मविषयक ज्ञान निब ध बहुत ही विद्वत्तापूर्ण है रेवरे ड नवलकर और डॉ मैक निकलके अङ्गरेजी भाषामें लिखे लेख नामोल्लेखयोग्य हैं यहाँकी तुकाराम चच सोसायटा तुकारामकी बानीका प्रचार करनेमें बहुत य वान् है अबतक जिन जिन लोगोंने अपने अपने ढङ्गसे तुकारामके चरित्र और अभङ्गोंके विषयमें जो कुछ भी लिखा उन सबको धन्यवाद देकर अब प्रस्तुत ग्र थकी दृष्टिके विषयमें दो शब्द लिखता हूँ

इस ग्र थके (१) अभङ्गोंका सूक्ष्मावलोकन (२) खोज और (३) अबतकके प्रयत्नोंका निरीक्षण ये तान आधार बताये अब इस ग्रन्थका स्वरूप सक्षेपमें निवेदन करता हूँ मङ्गलाचरणके पश्चात् पहले कालनिर्णयका प्रश्न हल किया है इसके बादके दो अध्यायोंमें तुकारामका पूर्वचरित्र है और फिर समग्र मध्यखण्ड उपासनाप्रधान है यह उपासनाखण्ड श्रीतुकाराम महाराजके वचनोंके ही आधारपर विस्तार पूर्वक लिखा है जिसमें ऐसा प्रयत्न किया गया है कि महाराष्ट्रीय भागवत धर्मानुयायियों अर्थात् वारकरियोंको और सामा यत सबको ही इस भागवतसम्प्रदायका विशुद्ध मूलक्रमसे यथार्थ परिज्ञान हो और यह मालूम हो कि तुकाराम किस साधनक्रमसोपानसे साक्षात्कारकी पैढीतक चढ गये उनके सामने सगुणोपासनाका रहस्य खुल जाय उन्हें श्रीवि ल स्वरूपका बो हो और उनके लिये परमार्थमार्गपर चलना गम हो भक्तिमार्गको वे स्पष्ट देख लें । यही इस विस्तारका मुख्य हेतु रहा है भावुक भगवद्भक्तोंको यह मध्यखण्ड बहुत प्रिय और बोधप्रद होगा वारकरी म्प्रदायकी सिद्धान्तपञ्चदशी बतलाकर एकादशीव्रत, संकीर्तन सत्सग और परोपकारका महत्त्व तथा तुकारामजीके पूर्वा-

का विवरण बताकर विस्तारके साथ अन्तरङ्ग प्रमाणोंको देते हुए यह चर्चा चलायी है कि उन्होंने किन किन ग्रन्थोंका अध्ययन किया था और किस थसे क्या पाया था सातवें अध्यायमें गुरुकृपा और गुरु परम्पराका विवरण है चित्तशुद्धिके साधनोंमें पाठक तुकारामजीकी लोकप्रियताका रहस्य मनोजय एकान्तवास आत्मपरीक्षण और नाम संकीर्तनका आनन्द लें फिर भक्तिमार्गकी श्रेष्ठता सगुणनिर्गुणविवेक श्रीविट्ठलोपासना और श्रीमूर्तिपूजा भगवन्मिलनकी लगन—इन सबको देखते हुए सगुण प्रेमको चित्तमें भरते हुए विट्ठलस्वरूपका परिचय प्राप्त करके श्रीविट्ठलमूर्तिको ध्यानसे मनोमन्दिरमें बैठावें और रामेश्वर भट्ट और तुकाराम महाराजके वादके मर्मको जान तुकारामकी ध्यान निष्ठाको ध्यानमें ला श्रीतुकारामके साथ सगुण साक्षात्कारके उनके आनन्दका प्रतिआनन्द लाभ करें इस ग्रन्थका मध्यख ड श्रीतुकाराम चरित्रका हृदय है इसी हृदयको लेकर आगे बढ़िये मेघवृष्टिमें तुकारामजीने ससारियोंको बार बार कैसे जगाया है दाम्भिकोंका कैसा भण्डाफोड किया है यह देख लें पीछे तुकाराम और शिवाजी प्रकरण समग्र पढनेके पश्चात् पाठक यह समझ लेंगे कि सन्तोंपर ससारियोंकी ओरसे जे आक्षेप किये जाते हैं वे कितने अयथार्थ है इसके अनन्तर सोलह शिष्योंकी वार्ताएँ निलोबारायकी महिमा और इनके बादके वारकरी नेता तुकारामबाबा और जीजाबाईका गृहप्रपञ्च दोनोंकी ओर ेरकी दृष्टियोंका मध्य देखते हुए यह देखें कि श्रीतुकाराम महाराज ज्ञान भक्तिके परमात्मानन्दको कैसे प्राप्त हुए और कैसे सशरीर वैकुण्ठ सिधारे

धन्यवादके दो ब्द

इन्दौरसंस्थानाधिपति श्रीमन्त सवाई तुकोजीराव होलकरने इस चरित्रग्रन्थका लेखन प्राय समाप्त हो चुकनेपर इस सत्कार्यके निमित्त

बहुत बडी द्रव्यसहायता की इसके लिये मैं उनके प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करता हूँ तुकाप्रेमी श्रीशिवराव कृष्ण कैकिणी था स्व कर्नल कीर्तिकर और इस ग्र थकी हस्तलिखित प्रतिको पढते हुए चर्चाद्वारा सहायता करनेवाले श्रीभिडेजीके भी बडे उपकार हैं भगवान् श्रीपाण्डुरङ्गके उपकार तो शब्दोंद्वारा व्यक्त हो ही नहीं सकते हैं तुकाबानीमें यही कहना पडता है कि

बस करो स्वामी अब ये वचन
तेरे कृपादान वाणीरूप १
तेरा दिया तेरे चरणोंपै वारा।
भार है उतारा पाडुरग २

पून क्षु कायालय
जन्माष्टमी
सवत् १९७७

साधुसन्तोंका दासानुदा
लक्ष्मण रामचन्द्र पागार र

पूर्व खण्ड कर्मकाण्ड

विठ्ठलरुखमाई
पंढरपूर

श्रीरुक्मिणीवल्लभाय नम

मंगलाचरण

रणसरोज सान्द्रनीलाम्बुदाभं
जघननिहितपाणिं मण्डन मण्डनानाम्
तरुणतुलसिमालाकन्धर कञ्जने
सदयधवलहास वि चिन्तयामि

अभङ्ग

सम चरण दृष्टि विटेवरि साजिरी ।
तेथें माझी हरी वृत्ति राहो १ ।
आणिक न लगे मायिक पदार्थ ।
तेथें माझें आर्त नको देवा ध्रु
दिक पदें दु खाची शिराणी ।
तेथें दुश्चित्त झणी जडों देसी २
तुका म्हणे त्याचें कळलें आम्हा वर्म ।
जें ज कर्म धम नाशिवन्त ३

जिनके चरण और नेत्र सम हैं ऐसे भगवान् ईंटपर खड़े बड़े ही भले लगते हैं हे भगवन् हे रि मेरी चित्तवृत्ति सदा वहीं लगी रहे और कोई मायिक पदार्थ मुझे नहीं चाहिये भगवन् उसमें मेरा मन कभी न लगे ब्रह्मादि पद दु खोंके ही घर हैं उनमें मेरा चित्त कभी

दुःि न हो तुका कहता है उसका मर्म मैंने लिया जो-जो कर्म हैं सब वान् हैं

सम चरन दीठि ईंटासन सोहै । मेरो मन मोहै सदा हरि १
आन न चाहिय मायिक पदार्थ । विषयकामार्थ नाहीं नाहीं टे
ह्मादिक पद दुः निकेतन । तहाँ मेरो मन न ो कदा २
तुका कहे याको जान्यो सब मर्म । जो जो कर्म धर्म नासैं अन्त ३

(हिन्दीपद्यानुवाद)

(२)

भक्तराज पुण्डलीकने यह बड़ा उपकार किया जो वैकुण्ठधामका निज यहाँ ले आये बालमूर्ति श्रीपाण्डुर (श्रीकृष्ण) गायों और ग्वालोंसमेत बड़े प्रेमसे आकर यहाँ समपद ड़े हैं एक अक्षरके आधिक्यसे यह दूसरा (भू:) वैकुण्ठ ही है और भी अनेक वैकुण्ठ कहानेवाले तीर्थस्थान हैं पर नसके समान नहीं इसकी पञ्चक्रोशीमें पाप ताप या आधि व्याि आ ही नहीं सकतीं फिर विि और निषेध यहाँ किसके लिये रहेंगे ? पुराण ऐसा बताते हैं कि यहाँके मनुष्य चतुर्भुज इनके हाथोंमें सुदर्शनचक्र है कल्पान्तमें भी यहाँ कभी पाप नहीं प्रवेश कर सकता पण्ढरी (पण्ढरपुर) महाक्षेत्र है इसकी महिमा अपार है तुका कहता है यहाँके वारकरी (नियमपूर्वक यात्रा करनेवाले श्रीविठ्ठल-भक्त) धन्य हैं

(३)

कटिपर कर उर तुलसीमाल । ऐसी नदलाल छबि देखूँ १
चरन सरोज खिले ईंटपर । ऐसी सम रूप छबि देखूँ ध्रु
कटि पीतांबर गरुड़ वाहन । परम मोहन छबि देखूँ २
सूख सूख हुआ पजर केवल । अब तो दयाल आवो नाथ ३
तुकाकी हे स्वामी, करो पूरा आस । करो न निरास हरि मेरे ४

(४)

हे रुक्मिणीवल्लभ तुम्हारी छबिमें मेरी आँखें गड जायँ हे नाथ तुम्हारा रूप मधुर है नाम भी तुम्हारा वैसा ही मधुर है ऐसा करो कि इसी माधुरीमें मेरा प्रेम सदा बना रहे अरी मेरी विठामाई मुझे यही वरदान दे और मेरे हृदयको अपना घर बना ले तुका कहता है मै और कुछ नहीं चाहता सारा सुख तो तेरे चरणोंमें ही है

(५)

सुदर सुकुमार मदनमोहन। रवि ससि मान, हर लीने । १
कस्तूरीलेपन चंदनकी खौर। सोहै गर हार, वैजयंती टेक
मुकुट कुडल, श्रीमुख सोहत। सुख-सुनिर्मित सबै अग । २
पीत पट धारे पीतांबर काछे। घनश्याम आछे, कान्हा मेरे । ३
जी मेरो अधीर मिलै कौं मुरारी। हटो तुम नारी, तुका कहै ४

(६)

सुदर सो ध्यान ठाढे इटासन। कर कटि सन मन भावै १
गले वृदा माल काछे पीताबर। मोहै निरतर, साईं ध्यान ध्रु
मकर कुडल जगमगे स्रवन। कौस्तुभ रतन, कठ राजै २
तुका कहे मेरो यहै सर्व सुख। जो देखूँ श्रीमुख, प्रियतम ३

(७)

श्रीअनंत मधुसूदन। पद्मनाभ नारायण।
जगव्यापक जनार्दन। आनन्दघन अविनाश १
सकल देवाधिदेव। दयार्णव श्रीकेशव।
महानद महानुभाव। सदाशिव सहजरूप ध्रु

चक्रधर विश्वंभर । गरुडध्वज करुणाकर ।
सहस्रपाद सहस्रकर । क्षीरसागर शेषशायन २
कमलनयन कमलापति । कामिनि मोहन मदनमूर्ति ।
भवतारक धारक*क्षिति । वामनमूर्ति त्रिविक्रम ३
सर्वेश सगुण निर्गुण । जगज्जनक जगज्जीवन ।
वसुदेव देवकी नंदन । बालराँगन † बालकृष्ण ४
तुका रावरी शरणी । ठाँव दीजै निज चरण ।
विनय मेरी कीजे श्रवण । भवबंधन ते छुडावो ५

(८)

जो नित्य निरामय अद्वय आनन्दस्वरूप और योगीजनोंके निज ध्येय हैं वही समचरण श्रीविट्ठलरूप देखो भीमातीरपर ईंटपर विराज रहे हैं पुराण जिनकी स्तुति करते नहीं अघाते और वेद भी जिनका पार नहीं पाते वही श्रीपुंडरीकके प्रेमसे साकार बन आये हैं तुका कहता है सनकादिक मुनिगण जिनका ध्यान करते हैं वही हमारे कुलदेव यह श्रीपाण्डुरङ्ग महाराज हैं

* अर्थात् क्षितिधारक—पृथ्वीको धारण करनेवाले इस विषयमें गीता अध्याय १५ श्लोक १३ में भगवान् कहते हैं —'गामाविश्य च भूतानि धारयाम्यहमोजसा अर्थात् पृथ्वीमें आकर मैं सब भूतोंको धारण करता हूँ इसका भाष्य करते हुए ज्ञानेश्वर महाराज कहते हैं मैं पृथ्वीमें घुस बैठा हूँ सीसे इस महाजलसमुद्रमें यह मिट्टीके एक लोंदे सी पृथ्वी घुल नहीं जाती

† बालराँगन यह मराठी शब्दप्रयोग हिन्दी-अनुवादमें भी ज्यों का-त्यों रहने दिया है राँगने का अर्थ है रेंगना और रेंगना राँगना हिंदीमें भी कहते ही हैं अनुवादक

(९)

श्रीविठ्ठल नाम सङ्कीर्तन बड़ा ही मधुर है विठ्ठल ही तो हमारा जीवन है और झाँझ करताल ही हमारा सारा धन है विठ्ठल विठ्ठल वाणी अमियरससञ्जीवनी है तुका रँगा है इसी रङ्गमे अङ्ग अङ्गमें विठ्ठल श्रीरङ्ग है

(१)

मेरी बिठामैया प्रेम रस पनहाती है छातीसे लगाकर अपना अमृतस्तन मेरे मुखमें देती है अपने पाससे जरा भी बिछुडने नहीं देती जो भी माँगता हूँ देती है ना तो कभी करती ही नहीं निठुराई नामको भी नहीं दयाकी मूर्ति है तुका कहता है, वह अपने हाथसे जो कौर मेरे मुँहमे डालती है वह ब्रह्मरस ही होता है

(११)

आषाढी आयी कार्तिकीकी हाट लगी बस ये ही दो हाट काफी हैं और व्यापार अब करनेका कुछ काम नहीं यहाँ भक्तिके भावसे कैवल्यआनन्दकी राशियोंका लेन देन करो विठ्ठल नामका सिक्का यहाँ चलता है उसके बिना कोई किसीको यहाँ पूछता नहीं

(१२)

नैहर है मेरा पंढरी पत्तन । कूटत धान गाऊँ गीत १
राई रखमाई सत्यभामा माता । पंडुरग पिता करें वास टेक
उद्धव अक्रूर व्यास अबरीष । नारद मुनीश, भाई मेरे २
गरुडजी बन्धु लाडिले पुंडलीक । तिनके कौतुक, गेय मेरे ३
मेरे ब गोती सत ओ महत । नित्य सुमिरत सर्वनाम ४

निवृत्ति ज्ञानदेव, सोपान चांगाजा । मेरे जीके हैं जी, नामदेव ५
नागा जनमित्र, नरहरि सुनार । रैदास, कबीर सगे मेरे ६
सुनो सूरदास, माली सावताजी । गीत गुणकजी गावो गावो ७
चोखामेला संत, हृदयके हार । कभी ना बिसार हरि-दास ८
जीवके जीवन एका जनार्दन । पाठक श्रीकान्ह, मीराबाई ९
अन्य मुनि संत महंत सज्जन । सबके चरण माथे धरूँ १
सुख संग जाते पढरी-दर्शन । तदीय कीर्तन, करूँ सदा ११
तुका कहे माता, पिता मेरे ये ही । सुखरूप गृही, गृहाश्रमी १२

(१३)

इन सन्तोंके बड़े उपकार हैं कहाँतक गिनाऊँ ये मुझे निरन्तर जगाते रहते हैं क्या देकर इनका एहसान उतारूँ ? इनके चरणोंमें यदि अपना प्राण भी अर्पण कर दूँ तो वह भी अत्यल्प है जिनका स्वैर आलाप भी हितगर्भ उपदेश होता है वे कितना क उठाकर मुझे शिक्षा देते हैं ब डेपर गौका जो भाव होता है उसी भावसे ये मु` सम्हाले रहते हैं

(१४)

जो ब्रह्मरूप हैं उनके कर्म भी सकल्पविकल्पविरहित होनेसे ब्रह्मरूप ही होते हैं स्फटिकशिला जिस रंगकी वस्तुके पास रखो उसी रंगकी दिखायी पडेगी पर वास्तवमें वह रहती है उपाधिसे अलग ही बच्चे अनेक प्रकारकी बोलियोंसे माताको पुकारते हैं पर उन बोलियोंका यथातथ्य ज्ञान माताको ही होता है ऐसे जो उपाधिरहित अन्तर्ज्ञानी हैं तुका उनकी वन्दना करता है बार बार उनके चरणोंमें गिरता है

(१५)

सन्तोंने मर्मकी बात खोलकर हमें बता दी है हाथमें झाँ मजीरा लो और नाचो समाधिके सुखको भी इसपर न्योछावर कर दो ऐसा ब्रह्मरस इस नाम-सङ्कीर्तनमें भरा हुआ है भक्ति भाग्यका बल भरोसा ऐसा है कि उससे इस ब्रह्मरससेवनका आनन्द दिन दिन बढता ही जाता है चित्तमें अवश्य ही कोई सन्देहान्दोलन न हो यह समझ लो कि चारों मुक्तियाँ हरिदासोंकी दासियाँ हैं इसीसे तुका कहता है मनको शान्ति मिलती है और त्रिविध ताप एक क्षणमें नष्ट हो जाते हैं

(१६)

सदा सर्वदा नाम संकीर्तन और हरि कथा गान होनेसे चित्तमे अखण्ड आनन्द बना रहता है सम्पूर्ण सुख और शृङ्गार इसीमें मैंने पा लिया और अब आनन्दमें झूम रहा हूँ अब कहीं कोई कमी ही नहीं रही इसी देहमें विदेहक आनन्द ले रहा हूँ तुका कहता है हम तो अग्निरूप हो गये अब इन अङ्गोंमें पाप पुण्यका स्पर्श भी नहीं होने पाता

(१७)

नाम संकीतन सुगम साधन । पाप उच्छेदन जडमूल १
मारे मारे फिरो काहे बन बन । आवें नारायण घर बैठे टेक
जाओ न कहीं करो एक चित्त । पुकार अनन्त दयाघन २
'राम कृष्ण हरि विट्ठल केशव ।' मन्त्र भरि भाव जपो सदा ३
नहिं कोई अन्य सुगम सुपथ । कहूँ मैं शपथ कृष्णाजीकी ४
तुका कहे साधा सबसे सुगम । सुधी-जनाराम रमणीक ५

(१८)

कोटि कोटि आनन्द मेरे पेटमें समा गये नामका अखण्ड प्रेम प्रवाह है राम कृष्ण नारायण नाम अख ड जीवन है कहींसे भी खण्डि होनेवाला नहीं इह परलोक दोनों का कहे इसके समतीर हैं

(१९)

हरिपद दासा नाहिं भय चिंता । दु खके निहन्ता नारायण १
नहिं सिर भार ससार उद्वेग । हरें भवरोग पाडुरग टेक
रहे मन धीर सदा समाधान । सुखके निधान सग डे २
तुका कहे मेरे सखा पाडुरग । व्यापि रहे जग इकले ही ३
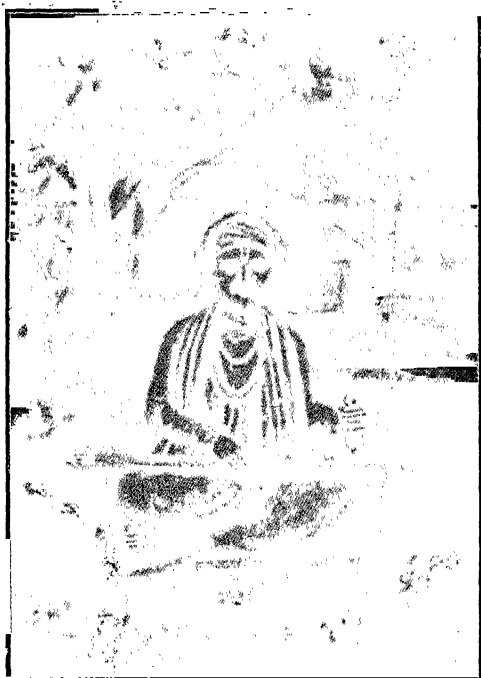
श्रीतु

ॐ

श्रीतुकाराम चरित्र

पहला अध्याय

काल निर्णय

जो जो कुछ धर्मसे है उसकी रक्षा करनेके लिये प्रतियुगमें मैं आया करूँ यह तो स्वभाव प्रवाह ही है और यह पहलेसे ही चला आया है (४९) इसी कामके लिये मैं युग युगमें अवतार लेता हूँ पर इस बातको जो समझे वही बुद्धिमान् है (५७)

—श्रीज्ञानेश्वरी अ ४

श्रीतुकाराम चरित्रकी महिमा

इस प्रथमाध्यायमें श्रीतुकाराम महाराजके जीवनकी मुख्य मुख्य घटनाओंका कालानुक्रम निश्चित करना है तत्त्व-दृष्टिसे विचारें तो

महात्माओंके जीवनका हिसाब ही हम क्या लगा सकते हैं मृत्युको मारकर जो चिरञ्जीव हुए और काल नागको नाथकर उसपर नाचते हुए जो लोक संग्रहमात्रके लिये स्वेच्छासे भूलोकमें विचरते रहे उनका जन्म क्या और मृत्यु ही क्या जीवन्मुक्त महात्मा लोक कल्याणकी विमल सूक्ष्म वासना चित्तमें धारण किये समय समयपर भूलोकमें अवतीर्ण हुआ करते हैं और कुछ सत्सङ्गियोंको अपने सत्सङ्गका असामान्य लाभ दिलाकर जहाँ के-तहाँ ही विलीन हो जाते हैं जन्म मरणका तो हमलोग उनपर मिथ्या ही आरोपण करते हैं यथार्थमें सूर्यभगवान् तो अपने स्थानमें ही स्थिर रहते हैं पर उदयास्तको मान मानकर हम उनपर उनके उगने डूबनेका आरोपण किया करते हैं हमारा दिन मान भी ऐसा ही होता है कि हमारे घरकी छतपर सूर्यका प्रकाश आता है तब हम समझते हैं कि सूर्योदय हुआ और जब हमारे घरसे सूर्यभगवान् नहीं दिखायी देते भी हम सूर्यास्त मान लेते हैं श्रीराम कृष्णादि भगवदवतारोंमें गौर विभूतियोंके चरित्रोंकी भी यही बात है उनका अजन्मा होकर भी जन्मना अक्रिय होकर भी कर्म करना और अमर होकर भी मरना ही थार्थमें उनका चरित्र है तुकाराम महाराजके ऐसे चरित्रका विचार करनेसे उनक चरित्र लिखना असम्भव ही हो उठता है तुकारामजी कहते हैं हम वैकुण्ठवासी हैं यहाँ वैकुण्ठसे आये हैं ऐसे वैकुण्ठवासी तुकारामका चरित्र कहाँसे कब आरम्भ हुआ और कहाँ जाकर कब समाप्त हुआ यह भला कौन सकता है तुकारामजीने स्वय ही बताया है कि कहाँसे आये और किसलिये आये भक्तिका डङ्का बजे कलिकालका दमन हो और सब लोग भक्तिसे भगवान्का जयकार करें यही उनके अवतीर्ण होनेका प्रयोजन था और उनक चरित्र भी उन्हींकी वाणीसे बानी कहूँ वेदनीति करूँ कृति सन्तों की यही भगवान्का न्देशा ले करके ही वह आये थे तुका कहे हरि पठायो संदेस सुखद

सुदेश भक्ति पथ भक्तिका डङ्का बजाने कलिकाल नागको नाथने वेद नीतिका प्रचार करने भगवान्के सुखद सुरम्य भक्ति मार्गका सन्देशा लेकर वह आये थे अर्थात् वह सिद्धरूपसे भगवद्विभूतिरूपसे ही अवतीर्ण हुए थे ऐसे सत्पुरुषका चरित्र सामान्य साधकके चरित्रका सा लिखना क्या समुचित होगा अकाल पड़ा स्त्री पुत्र अन्नके बिना भूखों मर गये मन विकल हुआ चित्तपर विषाद छा गया और फिर इससे वैराग्य हो आया तब भण्डारा पर्वतपर गये ग्र थोंका अध्ययन और नामस्मरण करने लगे स्वप्नमें गुरुने आकर दर्शन दे अनुग्रह किया इससे वह कृतार्थ हुए कवित्वस्फूर्ति हुई मुखसे अभङ्ग गङ्गा प्रवाहित होने लगी हरि कीर्तनोंकी धूम मचायी और अन्तमें परलोक सिधारे इन बातोंके अतिरिक्त श्रीतुकाराम महाराजका चरित्र और हम क्या वर्णन कर सकते हैं ? इन बातोंमें सासारिक दुखोंका जो भाग है वह तो कितने ही ससारियो और साधकोंके भागमें बदा ही रहता है इसी रास्तेहीपर तो सब चल रहे हैं पर इन्हें तुकाराम महाराजका सी दिव्य स्फूर्ति नही होती इसका कारण क्या है ? दुर्भिक्ष अपमान आपदा स्त्री पुत्र विरह इत्यादि बातोंसे अत्यन्त दुखी होकर तुकाराम ससारसे उपराम हुए यही तो हम चरित्रकार तुकाराम चरित्र सुनावेंगे पर ऐसी ऐसी आपदाओंका रोना रोनेवाले असख्य जीव इस ससारमें है पर इन सबको तुकारामकी सी उपरामता अशत भी क्यों नही होती ? नाना प्रकारकी विपत्तियोंसे घबराकर कुएँमें जा गिरनेवाले या अफीम खाकर आत्महत्यापर उतारू होनेवाले अथवा हाय पैसा करते हुए मरनेवाले सींडमें लिपटी मक्खीकी तरह धनके ही पीछे पड़े हुए उसीमें मर मिटनेवाले जीवोंकी इस संसारमें कोई कमी नहीं है कमी है उन्हीं लोगोंकी जो विपत्तियोंपर सवार होते हैं उनसे दब नहीं जाते धनको तुच्छ समझनेवाले विपत्तियोंके पहाड़ोंको ढा देनेवाले तुकाराम ऐसे ही रणबाँकुड़े वीरोंके सरदार थे ऐसे वीर ऐसे वीर शिरोमणि

जिन्होंने मायाको जड मूलसे उखाड़ डाला कहाँसे पैदा होते हैं यही तो प्रश्न है बात यह है कि जो महात्मा हैं वे महात्मा ही हैं उनके सम्बन्धमें कार्य कारण परम्परा जोडनेकी हमारी विचार पद्धति बेचारी बेकार ही हो जाती है तुकाराम जैसे सन्त वीर एक ही जीवनके फल नहीं अनेकजन्म ससिद्ध होते हैं तुकारामने देहूग्राममें और उसके चतुर्दिक् जो पुण्य कार्य किया वही पु य कार्य वह पूर्वजन्मोंमें भी करते रहे इसीसे विपत्तियोंके बडे बड़े दुर्ग को उन्होंने आसानीसे जीत लिया विपत्तियोंके आनेसे उन्हें वैराग्य हुआ यह कहना तो यहाँ शोभा नहीं देता यहाँके योग्य बात यही है कि उनके जन्म सिद्ध अपार ज्ञान भक्ति वैराग्यके सामने विपत्तियाँ बालूकी भीतकी तरह ढह गयीं तुकारामजीने स्वय ही कहा है पिछले अनेक जन्मोंसे हम यही करते आये है ससार दु खसे दुखी जीवोंको विश्वास दिलाकर ढाढस बँधाते हरिके गीत गाते वै णवोंको एकत्र करते और पत्थरोंतकको पिघलाते यहा सब तो करते—आये हैं जन्म जन्म यही करते आये हैं और इस जन्ममें भी यही करना है इनके सिवा और कौन ऐसा कर सकता है ? एक स्थानमें इन्होने कहा है कि भगवन् जब जब आपने अवतार लिया तब तब भक्तिका आनन्द लूटने और वह आनन्द सबको वितरण करने मैं भी आपके सङ्ग आया हूँ प्रभुके प्रत्येक अवतारमें आकर उन्होंने भक्तिका डका बजाया और आगे भी बजाते ही रहेंगे ऐसे जिन श्रीतुकारामने महाराष्ट्र देशके देहू स्थानमें आकर अवस्थान किया उनकी इन सब लीलाओंकी एक माला गूँथकर तैयार करना उसीसे बन पड सकता है जो वैसा ही दिव्यदृष्टिसम्पन्न महात्मा हो अर्थात् जो ऐसे भगवद्विभूतियोंके अगले पिछले सब चरित्रोंमें एक सी प्रवाहित होनेवाली अन्त सलिला लीला धाराको प्रत्यक्ष कर सकता हो यह परम सौभाग्य किसको प्राप्त है हम तो अपने अन्तरङ्ग स्वजनोंके भी अन्तर्गत मनोव्यापारोंका ठीक ठीक पता नहीं लगा सकते उनके

स्वभाव गुण दोष और चेष्टाओंकी गाँठें नहीं खोल सकते उनके क्रम विकासके इतिहासके गोरखधन्धेको नहीं सुलझा सकते उनके चरित्रोंके विविध प्रसङ्गोंका वास्तविक स्वरूप नही जान सकते और यहाँतक कि अपने ही मनकी बातोंतकको नहीं समझ पाते ऐसी अवस्थामें तुकाराम से दिव्य पुरुषोंके चरित्रोंका रहस्य भला क्या जान सकते हैं ? सच है महात्माओंके चरित्र वर्णन करनेका काम आसमानपर खोल चढानेका सा ही साहस है महात्माओंके चरित्र महात्मा ही जान सकते है महात्मा ही लिख सकते हैं स्वय सन्त हुए बिना सन्त चरित्रका रहस्य नही जाना जा सकता तुकाराम जैसे सन्तका चरित्र तुकाराम जैसे सन्त ही लिखें तभी उनका चरित्र कथन यथार्थ हो सकता है इतना सब कुछ सोचते हुए भी मैंने यह चरित्र लिखनेका साहस किया है कविकुलतिलक कालिदासके कथनानुसार मेरा यह प्रयत्न कही ऐसा न हो जैसे कोइ बौना मनुष्य ऊँचे वृक्षकी ऊँची डारमें लगे फलोंको तोडनेके लिये अपने हा ँचे करे इस बातका भय भी मुझे हुआ पर बालकपर बडोंकी कृपा होती है फल तोडनेकी बालककी इच्छा जान बडे उसे अपने कन्धोंपर उठा लेते हैं और उनकी ऊँचाईका सहारा पाकर बालक अपना हठ पूरा कर लेते हैं मैंने यह चरित्र लिखनेका साहस किया है यह ऐसा ही है और साधु सन्तोंके कृपाशीर्वादका ही इसे सहारा है इस बाल हठको पार लगाना भी उन्हींका काम है भक्तोंके चरित्र भगवान्‌को प्रिय होते हैं ज्ञानेश्वर महाराज कहते हैं कि जो मेरे (भगवान्‌के) चरित्रोंका कीर्तन करते हैं वे भी मुझे प्राणोंसे भी अधिक प्यारे लगते हैं (२२७) और जो मेरे भक्तोंकी कथा कहते हैं उन्हें तो मैं अपने परम देव मानता हूँ (२२८) [ज्ञानेश्वरी अ १२] श्रीगीता ज्ञाने री माताके इन वचनोंके अनुसार यह पु य कार्य भगवान्‌को प्रसन्न करनेका सर्वोत्तम साधन जान

चित्तमें दृढ श्रद्धा धारण कर श्रीपा डुरङ्ग भगवान्का स्मरण करके मैं इस वाग्यज्ञको आरम्भ करता हूँ

२ ाल गणनाका महत्त्व

श्रीतुकाराम महाराजका ज म कब हुआ कब उन्हें गुरूपदेश प्राप्त हुआ कब वह यहाँसे चले गये उनके जीवनकी मुख्य मुख्य घटनाएँ कब किस क्रमसे हुई और उनकी कुल आयु कितनी थी इन बातोंकी चर्चा अबतक थोडी बहुत हो चुका है पर सब पहलुओंसे इन सब बातोंका पूर्ण विचार करके निर्णय करनेका काम अभीतक नहीं हुआ है इसलिये इस निबन्धमें यह निर्णय करनेका काम यथासाध्य पूरा किया जाय परमार्थ दृ मैं काल गणनाका विचार कोई बडा महत्त्व नहीं रखता पर इतिहासकी दृष्टिमें इसका बडा महत्त्व है महात्माओंके जीवनचरित्रोंसे मुमुक्षुजन यही जानना चाहते हैं कि उन महात्माओंमें कौन कौन से दिव्य लक्षण थे और वह दिव्य सम्पदा उन्होंने कैसे पायी परिस्थितिसे लडते भिडते हुए वे महत् पदपर कैसे आरूढ हुए वैराग्य उन्हें कैसे प्राप्त हुआ, उन्होंने क्या क्या अभ्यास किया कैसी दिनचर्या और जीवनचर्या बनाया उनकी ज्ञान भक्ति और भगवन्निष्ठा कैसी थी सङ्कटोंसे भगवान्ने उन्हें कैसे उबारा ससारको वे क्या सिखा गये इत्यादि मुमुक्षुओंका तो यही ध्यान रहता है और यही ठीक भी है क्योंकि सन्त चरित्रोंको देख अपना चरित्र सुधारने, सन्तोंके निर्मल चरित्र दर्पणको अपने सामने रखकर उनके भक्ति ज्ञान वैरा यको प्राप्त होने उनके पदचिह्नोंको देख देख उसी रास्तेसे चलनेकी शुभेच्छा भगवत्कृपासे जिन्हें प्राप्त हुई हो उन्हें काल गणनाका सी नीरस सी चर्चा लेकर क्या करना है अमराईमें बैठा हुआ मनुष्य क्षुधित होनेपर आम्रफल तोड़कर खा लेना ही सबसे आवश्यक कार्य समझेगा उसे इस चर्चासे क्या प्रयोजन कि ये पेड किसने कब

कैसे कहाँसे पाकर लगाये और कितने बरसमे ये फले ? क्षुधा निवृत्तिकी चित्तवृत्तिमें इस चर्चाका कोई खास महत्त्व नही है उसका काम क्षुधा निवृत्तिका साधन करना है इधर उधर देखना नही महान् भक्त प्रह्लाद किस शताब्दीमें किस जातिमे किस देशमे कब पैदा हुए और कबतक जिये भागवत ग्रन्थ किसका बनाया है—वेदव्यासदेवका या बोपदेवका अथवा इसकी रचना किस शताब्दीमें हुई इत्यादि बातोंकी चर्चा परमामृतके प्यासे परमार्थके साधकाको नीरस सी ही जान पड़ेगी वह प्रह्लादके जीवन रसको पानेके लिये छटपटाने लगेगा जिससे प्रह्लादने पिताके सब अत्याचारोंको सहकर नारायणके परम रसका पान किया इतनी सी उमरमें इतना महान् तप और ऐसी अटल निष्ठा इसीके ध्यानमें निमग्न होकर वह प्रेमभरे अन्त करणमे प्रह्लादको अपने नेत्रोंमें चित्रित कर लेगा और पुकारते ही दौडे आकर खम्भको फोडकर बाहर निकलनेवाले ऐसे दयालु मेरी विठामाईके सिवा और कौन हो सकते है ?” इस कथा रहस्यको हृदयमे धारण कर तुकारामके समान वह भगवत्प्रेमानन्दमें उछलने और नाचने लगेगा सच्चे भक्तोंका यही मार्ग है और अपने परम कल्याणका यही साधन है इसमें कोई सन्देह नही तथापि आधुनिक पद्धतिसे चरित्र ग्रन्थ लिखनेवाला लेखक काल-गणनाकी उपेक्षा भी नहीं कर सकता इतिहास और समाज शास्त्रकी दृष्टिसे काल निर्णयका बडा महत्त्व है काल निर्णय इतिहासका नेत्र है, काल निर्णयके बिना इतिहास अन्धा रह जाता है ठीक ठीक काल निर्णय न होनेसे कार्य कारण सम्बन्धको समझना असम्भव होता है, कितने ही निराधार भ्रम लोगोंमें फैल जाते हैं और 'कहींकी ईंट और कहीका रोड़ा' लेकर भानमतीका कुनबा जोडा जाता है इसलिये काल निर्णयका काम छोड नहीं दिया जा सकता अतएव इस प्रथम अध्यायमे ही यह काम कर लें तब द्वितीय अध्यायसे श्रीतुकाराम महाराजका कालक्रमानुसार चरित्र वर्णन करेंगे

३ योतिर्विदोंकी हा

आरम्भमें ही मैं यह बतला देना चाहता हूँ कि ति वार और शक सवत् आदिका मिलान प्रसिद्ध ज्योतिर्विदोंसे ठीक ठीक करा लिया है और तभा यह अध्याय लिखा है पूनेके प्रसिद्ध ज्योतिषी श्रीकेतकर श्रीखरे और वालियरके प्रो आपटेने इस काममें सहायता की है पर सबसे अधिक (स्वर्गीय) लोकमा य तिलकका उपकार है जि होंने आठ दिनमें सब गणित करके मुझे जिन शक मितियोंकी आवश्यकता थी उनका निर्णय करके एक कागजपर लिखकर मेरे हवाले किया इस अध्यायमें जो ज्योतिर्गणित है वह सब लोकमान्य तिलकका है जिन ज्योतिर्विदोंने इस कार्यमें मेरी सहायता की उन सबके प्रति मैं यहाँ कृतज्ञता प्रकट कर काल निर्णयके प्रसङ्गकी ओर आगे बढता हूँ

४ प्रयाण कालके बारेमें तीन

श्रीतुकाराम महाराजके जन्म सवत्के सम्बन्धमें कोई निश्चि प्रमाण नहीं मिला है जो है अनुमान है और ऐसे अनुमानोंके चार मत हैं प्रयाण कालके सम्बन्धमें भी तान मत हैं इन सब मतोंका परीक्षण करके यह देखा जाय कि इनमें ग्राह्य मत कौन सा है जन्म काल प्रयाण काल कुछ भी हो तो भी उससे किसीका कु बनता बिगड़ता नहीं काल निर्णयका विषय कोई आग्रहका विषय भी नहीं है गणितके द्वारा ही इस विषयमें निर्णय किया जा सकता है पर जहाँ गणितकी सहायता भी पूरा काम नहीं देती वहाँ तारतम्यसे काम लेना पडता है जन्म काल अथवा प्रयाण काल कोई भी एक काल निश्चित करके तब दूसरा काल निश्चित करना ठीक होगा पहले प्रयाण काल निश्चित कर इस सम्बन्धमें जो तीन मत हैं वे इस प्रकार हैं

(१) प्रयाण कालके सम्बन्धमें जो सबसे प्राचीन लेख मिलता है

वह तुकाराम महाराजके लेखक सन्ताजी जगनाडेके पुत्र बालाजी जगनाडेके हाथका लिखा है इन दोनों पिता पुत्रके हाथकी लिखी अभगोंकी बहियाँ तलेगाँवमें हैं बालाजीके हाथकी बहीमें २१६ वें पृष्ठपर यह लेख है श्रीनृपशालीवाहन शक १५७१ विकृति नाम सवत्सर फाल्गुन बदी २ द्विताया वार सोमवारके दिन तुकोबा गोसाई वैकुण्ठ गये स्वशरीरसहित गये ' इस लेखसे तुकाराम महाराजकी प्रयाण तिथि फाल्गुन वदी २ सोमवार शाके १५७२ है

(२) देहूमें देहूकराके यहाँ पूजामें जो अभगोंकी बही है उसमें अन्तके एक पृष्ठपर यह लेख है— शाके १५७१ विरोधी नाम सवत्सर फाल्गुन बदी द्वितीया वार सोमवार उस दिन प्रात कालमें तुकोबाने तीर्थको प्रयाण किया शुभ भवतु मगलम् ' यही समय महीपतिबाबाने भा भक्तलीलामृत अ० ४ मे दिया है जगनाडोंकी बहियोके लेखोंके बादके ये दोनों लेख हैं और ये ही बहुत माने गये हैं

(३) प्रसिद्ध इतिहासकार (स्वर्गीय) राजवाडेका यह मत है कि फाल्गुन बदी द्वितीया वार सोमवार शाके १५७० में आती है इसलिये प्रयाण काल १५७ शाके मानना चाहिये

५ मतोंकी मीमासा

इन तीनों लेखोंमें फाल्गुन बदी २ समान है और सर्वथा प्रमाण है कारण देहूमें तथा वारकरियोंमें सर्वत्र ही इसी तिथिको, तुकाराम महाराजके प्रयाण कालसे ही, पुण्योत्सव मनाया जाता है वर्षके सम्बन्धमें तीन मत हो गये हैं पर कठिनाई यह है कि शाके १५७ १५७१ १५ २ इनमेंसे किसी भी वर्ष फाल्गुन बदी द्वितीयाको सोमवार नहीं था १५७१ में फाल्गुन बदी २ को सोमवार न पाकर राजवाडे महोदयने सोमवारके लिये प्रयाण काल एक वर्ष पीछे घसीटा है पर १५७ में भी

उस तिथिको सोमवार नहीं मिलता रविवार आता है १५७१ में शनिवार और १५७२ में गुरुवार आता है फाल्गुन बदी २ को इन तीन वर्षोंमेंसे किसीमें भी सोमवार नहीं है पर प्रयाण कालको रखना होगा इन्हीं तीन वर्षोंके भीतर ही शिवाजी महाराजका जन्म शिवनेरीदुर्गमें शाके १५४९ में वैशाख शुक्ल २ को हुआ दादाजी कोंडदेवकी सहायतासे स्वराज्य संस्थापनका उद्योग उन्होंने शाके १५६५ के लगभग आरम्भ किया शिवाजीकी मनोभूमि धर्मभूमि थी जिजाबाई (उनकी माता) और दादाजीसे उन्हें जो शिक्षा मिली वह भी धर्म शिक्षा ही थी शिवाजीके हृदयमें यह विश्वास जमा हुआ था कि स्वराज्य संस्थापनका उद्योग साधु सन्तोंके कृपाशीर्वादके बिना सफल नहीं हो सकता इसीसे चिंचवड निवासी महात्मा देव और देहूके विदेह देही श्रीतुकारामके पावन दर्शनोंका सौभाग्य उन्हें शाके १५६५ के पश्चात् ५६ वर्षके भीतर ही प्राप्त हुआ और कीर्तन सुननेका भी उन्हें चसका लग गया दादाजी पूनेके सूबेदार थे एक संन्यासी महात्माके कहनेसे उन्होंने तुकाराम महाराजको पूनेमें बुलवाया और पूनावासी महाराजके कीर्तन सुनकर मुग्ध हो गये सबके चित्तपर उनके ज्ञान भक्ति वैराग्यका रंग चढ गया जैसा कि महीपतिबाबाने लिख रक्खा है दादाजीकी मृत्यु १५६९ ७० शाकेके लगभग हुई १५६८ तक तो वह अवश्य ही जीवित थे क्योंकि १५६८ का उनका एक निर्णय पत्र प्रसिद्ध है इनका तुकारामजीको पूनेमें लिवा लाना उनके कीर्तनपर पूनावासियोंका मुग्ध होकर जयजयकार करना तुकाराम महाराजकी अनेक कथाओंको शिवाजीका श्रवण करना इत्यादि बातें शाके १५६६ और

* जेधे शकावली और शिवभारत के प्रमाणसे अब श्रीशिवाजी महाराजका जन्म वर्ष शाके १५५१ (संवत् १६८६) माना जाता है उसी प्रमाणसे जन्म दिन फाल्गुन शुद्ध ३ है —अनुवादक

१५७१ के बीचकी हैं शाके १५७ ७१ के लगभग तुकाराम शिवाजी और रामदास तीनोंका मिलन अवश्य हुआ होगा इसलिये इसके बाद और १५७२ के पहले अर्थात् ७ ७१ और ७२ इन्ही तीन वर्षोंमे किसी समय तुकाराम महाराजने प्रयाण किया होगा इन तीन वर्षोंमेंसे कौन सा वर्ष निश्चित होनेयोग्य है यह देखनेके लिये एक बात विचारणीय है

६ प्रयाण काल निर्णय

तुकाराम महाराजने अपनी धर्मपत्नी जिजाबाईको पूर्णबोध नामसे ११ अभगोमे जो उपदेश किया है वह प्रयाणके ४ ५ ही दिन पहले किया होगा यह उन अभगोंको देखनेसे ही स्पष्ट विदित होता है तुकाराम और जिजाबाई वाले अध्यायमें इन अभगोका विस्तारके साथ विचार होने वाला है इसलिये यहाँ इस प्रसगमें जितने अशका विचार आवश्यक है उतना ही करेंगे इन अभगोंमें तुकारामजी जिजाबाईसे कहते हैं, 'घर द्वार गाय बैल बाल बच्चे इन सबपरसे अपना ममत्व हटा लो और अपना गला छुडा लो सबका अपना अपना प्रारब्ध है इसलिये तुम इनके मोहमें फँसकर अपना नाश मत करो घर द्वार भाजन छाजन सब ब्राह्मणोंको दानकर एकदम निश्चिन्त हो जाओ इससे हम तुम साथ ही वैकुण्ठ चले चलेंगे देव ऋषि मुनि सब हम दोनोंका जयजयकार करेंगे यह सुख दोनोंको मिलेगा देवता और ऋषि बडा उत्सव करेंगे रत्न जटित विमानमें बैठावेंगे गन्धर्व नाम गान करेंगे स त महन्त सिद्ध अगवानी करेंगे सुखमात्रकी इच्छा वहाँ पूर्ण होगी जहाँ अपने माता पिता बैठे हैं वहाँ चलें और उनके चरणोंका आलिंगन कर उनपर लोट जायँ जब इन नेत्रोंको माता पिताके दर्शन होंगे उस समयके सुखका मै क्या वर्णन करूँ

इन अभगोंसे यह स्पष्ट ही जान पडता है कि 'पूर्णबोध के ये अभग उन्होंने उसी समय रचे हैं जब वैकु ठकी ओर हा उनका ध्यान लगा था

प्रयाणके पूर्व कुछ दिन वह जिजाईसे क ा करते थे कि हम अब वैकुण्ठ चले !' पर वह उनकी बात समझ न सकीं ये अभग उसी समयके हैं जब वे देवऋषि जडित विमान वे वैकु ठवासी माता पिता' नेत्रोंके सामने आ गये थे शुक्ल दशमीसे ही वैकु ठकी रट गी उसी दिन भगवान् तुकारामसे मिलने वैकुण्ठसे आये उस समय उनका सत्कार करनेयोग्य कोई सामग्री तुकारामके समीप नहीं थी तब उन्होंने इस आशयका अभग कहा है कि हृषीकेश अतिथि होकर घर आये हैं अब इनका क्या देकर सत्कार करूँ पानीमें चावलके कन घोलकर सामने रख दिये इस घटनाके स्मारकस्वरूप फाल्गुन शुक्ल १ को चावलके कनोंका ही भगवान्को भोग लगता है इसे देहूमें अबतक कनिया दशमी कहते भी हैं

और एक बात है वैकुण्ठ सिधारनेका निश्चय करनेपर ही उन्होंने जिजाबाईको पूर्णबोध सुनाकर अपना कर्तव्य पूरा किया यह केवल मेरी ही कल्पना नहीं है निलोबारायने भी कहा है कि पहले स्वर्गको जाते हुए तुकारामने अपनी स्त्रीको उपदेश किया यह उपदेश उन्होंने किस दिन किया यह उन्हींके अभगोंसे मालूम हो जाता है प्रात काल है द्वादशीका पर्वकाल है शुक्लपक्षका आज सोमवार है ऐसे पर्वपर जीको कडा करके सब कुछ दान कर दो फाल्गुन शुक्ल ११ को रविवार १२ को सोमवार १३ को मगल वार १४ को बुधवार पूर्णिमाको गुरुवार बदी १ को शुक्रवार और बदी २ को शनिवार इस प्रकार तिथि वारका यह एक सप्ताह बन जाता है और पिले के कैले डरसे भी यह हिसाब ठीक मिलता है फाल्गुन शुक्ल १२ को सोमवार था यह बात तुकाराम महाराजके अभगसे ही सिद्ध है और इसी क्रमसे जन्त्री मिलाकर देखनेसे भी बदी २ को ब शनिवार ही आता है तब सीधा हिसाब यही है कि शाके १५७ ७१ ७२ इन तीन वर्षोंमें जिस किसी वर्ष फाल्गुन बदी २ को शनिवार हो वही वर्ष तुकाराम महाराज

के प्रयाणका वर्ष माना जाय शाके १५७२ में इस तिथिको गुरुवार है. १५७ में रविवार है केवल १५७१ मे ही इस तिथिको शनिवार है फाल्गुन शुक्ल १२ को सोमवार होना चाहिये सो इसी वर्षमें है और इसी क्रमसे बदी २को शनिवार है इसलिये कि १५७१ ही तुकाराम महाराज के प्रयाणका वर्ष मानना चाहिये कई पुराने कागजोमें १५७१ में ही तुकाराम महाराजके प्रयाण करनेका उल्लेख भी है तात्पर्य फाल्गुन बदी २ (पूणिमान्त मासके हिसाबसे चैत्र कृष्ण २) शाके १५७१ (सवत् १७ ६) शनिवारके दिन प्रात काल तुकारामजी वैकुण्ठ सिधारे यह बात निश्चित हुई अब जन्म वर्ष देखे

७ जन्म-वर्षके बारेमें चार मत

जन्म वर्षके सम्बन्धमें चार मत इस प्रकार है

(१) कवि चरित्रकार जनार्दन रामचन्द्रजीने लिखा है कि तुकाराम देहूमें शाके १५१० में पैदा हुए '

(२) देहू और पण्ढरपुरकी तुकारामकी वशावलीमें उनका जन्म माघ शुक्ल ५ गुरुवार शाके १५२० को लिखा है

(३) इतिहासकार राजवाडेने वाईमे मिली हुई एक प्राचीन वशावलीको प्रमाण मानकर और प्रमाणान्तरोंसे मिलानकर तुकाराम जन्म शाके १४९ में माना है

(४) सन्तलीलामृत में महीपतिबाबाने तुकारामके प्रथम इक्कीस वर्षोंका जो चरित्र विवरण दिया है उससे ये बातें मालूम होती हैं

१३ वें वर्ष तुकारामके सिरपर गृहस्थीका सारा भार आ पड़ा

१७ वें वर्ष उनके मात पिता इहलोक छोड गये और पीछे बड़े भाई सावजीकी स्त्रीका देहान्त हुआ

इस दिन अंगरेजी तारीख ९ मार्च १६५ ई थी

१८ वें वर्ष सावजी ती टिनको गये

२ वें वर्ष इन तीन वर्षोंमें इन्होंने गृ दाराके साथ सुख पूर्वक गृहस्थी चलायी

२१ वें वर्ष दिवाला निकला घोर दुर्भिक्ष पडा तुकारामकी ज्येष्ठा पत्नी और उससे उत्पन्न पुत्र दोनों अन्नके बिना हाहाकार कर मर गये

महीपतिबाबाने यह विवरण देकर इसे तुक राम चरित्रकी पूर्वार्ध समाप्ति कहा है इसका वाच्य र्थ ही हण करें और इन २१ वर्षको पूर्वार्ध मान लें तो तुकारामकी आयु ४२ वर्ष माननी पडेगी महीपतिबाबा ने तुकारामके प्रयाणका वर्ष १५७१ ही बताया है इसमेंसे ४२ वर्ष घटा दें तो जन्मवर्ष शाके १५२९ ३ आता है यदि इस पूर्वार्ध समाप्ति को लक्ष्यार्थसे अज्ञान प्रकृतिका अन्त मानें तो मक ोई भी वर्ष मान लिया जा सकता है पर बहुतोंने वा यार्थ ही हण किया है और जन्म वर्ष शाके १५२ माना है

८ च र तोंक विचार

इन चार मतोंमेंसे कौन ठीक उतरता है यह अब देखन चाहिये कवि चरित्रकारने जन्म र्ष १५१ दे दिया है पर कोई प्रमाण नहीं बताया है इसलिये यह ग्रा नहीं हो सकता देहू और प ढरपुरकी वंशा वलियोंको मैंने देखा है वे ५ ७५ वर्षसे अ प्राचीन नहीं हैं और इनमें जो म वर्ष १५२ दिया है उसके साथ इन्हींमें दी हुई न्म तिथि माघ शुक्ल ५ गुरुवारका मेल नह बैठता माघ शुक्ल पञ्चमीको गुरुवार तो नहीं था इस वर्ष माघ शुक्ल ५ रविवार था और माघ कृष्ण ५ को सोमवार था इसलिये इसे भी प्रमाण नहीं मान सकते

९ इतिहा र राजवाडेका

इतिहासकार राजवाडेने जन्म वर्ष शाके १४९ माना है और इसके

पक्षमें तीन प्रमाण दिये हैं (१) वाईमें मिली हुई वंशावली (२) निबन्धमालामें वामनविष्णु लेलेद्वारा प्रकाशित एक प्राचीन पत्र जिसमें तुकारामके गुरु उपदेशके सम्बन्धमें महीपति नामक किसी पुरुषके बनाये ५ अभग हैं जिनमेंसे एक अभगका आशय यह है कि बाबाजी चैतन्यने शाके १४९३ प्रजापति नाम सवत्सर वैशाख बदी १२ को समाधि ली और उसके तीस वर्ष बाद तुकारामपर अनुग्रह किया प्रजापति सवत्सरसे ३ वाँ सवत्सर शार्वरी (शाके १५२२) है पर तुकारामने एक अभगमे कहा है कि माघ शुक्ल १ गुरुवार देख गुरुने अङ्गीकार किया इसलिये माघ शुक्ल १ को गुरुवार' का होना आवश्यक है शाके १५२२में इस तिथि को गुरुका यह वार नहं मिलता मिलता है शाके १५२ विलम्बी सवत्सर में अथात् उपयुक्त महीपतिके अभगमें तीस वर्षकी जो बात लिखी है उसका अर्थ तीस ही नही पचीस तीस जैसा है इस प्रकार राजवाडेके मतसे बाबाजी चैतन्यने तुकारामको शाके १५२ विलम्ब नाम सवत्सरमे माघ शुक्ल १ गुरुवारके दिन उपदेश किया जन्म वर्ष शाके १४९ और गुरूपदेश वर्ष १५२ मानकर इस बीचके तुकाराम चरित्रके २१ वर्ष का विवरण राजवाडेने वही माना है जो महीपतिबाबा बतलाते हे शाके १५७१ के फाल्गुन मासमें तुकारामने प्रयाण किया अर्थात् उस समय उनकी आयु ८१ वर्षकी था उपर्युक्त महीपतिके अभगमें शाके १४९३ मे बाबाजी चैतन्यकी समाधि है और इसके तीस वर्ष अनन्तर तुकारामको उनका गुरूपदेश प्राप्त होता है इसे सही मान लेनेसे तुकारामका आयु उस समय २५ ३ वर्षकी रही होगी यह स्पष्ट है अर्थात् इस प्रकारसे उनका जन्म वर्ष शाके १४९ मानना पडता है (३) तुकारामने एक अभगमे कहा है जरा कर्णमूलमें आकर बातें करने लगी' इससे भी राजवाडे यह अनुमान करते हैं कि तुकाराम स्वर्ग सिधारनेके समय बहुत वृद्ध हो गये थे

इन तीन प्रमाणोंके अतिरिक्त एक प्रमाण राजवाडेजीकी ओरसे मै

ही पे किये देता हूँ तुकारामजीके शिष्योंमेंसे एक शिवा कसेरे नामक शिष्य लोहगाँवमें रहते थे वहाँ उनका बनवाया हुआ एक कूप है और उसपर शाके १५९४ में खुदा हुआ एक शिलालेख है उस शिलालेखको ोधकर उसपर एक प्रबन्ध मैंने शाके १८३७ में भारत इतिहास सशोधक मण्डलकी सभामें पढा था राजवाडेजी जिसे लोहगाँव बतलाते हैं वह लोहगाँव नहीं है यह बात मैंने उस लेखमें सप्रमाण बता दी थी और वह शिलालेख भी सामने रख दिया था इस शिलालेखसे तुकारामका जन्म शाके १४९ में ही हुआ होगा इसी बातकी पुष्टि होती है

१ उनके परीक्ष

अब राजवाडेके मतानुसार तुकाराम जन्म शाके १४९ में मान लेना कहाँतक युक्तिसगत हो सकता है यह देखें

वाईकी वंशावलीको प्रमाण मानें तो उस प्रमाणमें प्रमाद मौजूद है महीपतिबाबा और देहूकरोंकी वंशावली दोनों ही एक रायसे बतलाते हैं कि विश्वम्भरबाबाके दो पुत्रोंमेंसे हरि बडा था और मुकु द छोटा पर वाईकी वशावलीमें मुकुन्दको बडा और हरिको छोटा कहा है इसके अतिरिक्त वाईकी वशावलीमें तुकारामके दादाका नाम रगनाथ और परदादाका नाम सोमाजी लिखा है पर महीपतिबाबा और देहूकरोंकी वंशावली दोनों ही दादाका नाम कान्हजी और परदादाका नाम शकरबाबा बतलाते हैं यहाँ यह भी ध्यानमें रखना चाहिये कि बाईमें किसी वारकरीके घरकी किसी पोथी में मिली हुई वंशावलीकी अपेक्षा तुकारामके सत् शिष्य और शोधक मही पतिबाबा और तुकारामके वंशजोंके वचन अधिक विश्वसनीय और सम्मान्य हैं इसी ये वाईकी जिस वंशावलीमें ऐसी ऐसा भूलें हैं उसका दिया हुआ वर्ष १४९ भी कहाँतक विश्वसनीय हो सकता है

राजवाडेने जिन महीपतिके अभग उद्धृत किये हैं वह महीपति कौन

थे कोई महीपति नामधारी जरूर थे पर महीपतिबाबा वह नहीं है यह बात उन अभगोंकी ही दो बातोंसे स्प होती है कारण यह महीपति कहते हैं कि तुकारामको ओतुरनामक स्थानमें गुरूपदेश प्राप्त हुआ और भक्त लीलामृतमें महीपतिबाबा लिखते हैं कि तुकारामको यह गुरूपदे देहूमें प्राप्त हुआ दूसरी बात यह है कि यह महीपतिबाबाजी ैतन्य और केशव चैतन्यका एक ही बतलाते हैं और वारकरी सम्प्रदायमे यह मान्यता है कि राघव चैतन्य केशव चैतन्य और बाबाजी चैतन्य तुकारामकी गुरुत्रयी है अर्थात् बाबाजी चैतन्यके गुरु केशव चैतन्य और केशव चैतन्यके गुरु राघव चैतन्य थे इन दोनों बातोंसे यह स्प होता है कि ताहराबादकर श्रीमही पतिबाबाके ये अभग नहीं है यह कोई दूसरे ही महीपति हैं राजवाडे जिन बाईकी वंशावली और महीपतिके अभंगोके आधारोंपर तुकारामकी ८१ वर्षकी आयुकी अट्टालिका खडी करते हैं वे आधार बहुत ही कच्चे है इनको प्रमाण नहीं माना जा सकता

जरा कर्णमूले वाली बातसे राजवाडेजीने अनुमान किया है कि मृत्यु समयमें तुकाराम बहुत वृद्ध हो गये थे कानोंके पासके बाल जब श्वेत होने लगते हैं तब उसे यमराजकी ध्वजा यानी यमराजके आगमनकी प्रथम सूचना मानने और कहनेकी परिपाटी पहलेसे चली आयी है पर अतिवृद्ध होना ही उसका अभिप्राय नहीं है बालोंका श्वेत होना २८ वें वर्षसे ६ वें वर्षतक अपनी अपनी प्रकृतिके अनुसार आगे पीछे आरम्भ हो जाता है तुकारामको वयस्के १८ वें वर्षके बादसे ससारमें दु ख ही दु ख भोगने पड़े इससे ४ वें वर्षके गभग उनके मुँहसे जरा कर्णमूलमें आकर बातें करने लगी ऐसा उद्गार निकला हो तो क्या आश्चर्य है और जरा कर्णमूलमें आकर बातें करने लगी इस वाक्यसे जरा या बालोंके श्वेत होनेका आरम्भ ही सूचित होता है और यही अभिप्राय व्यक्त

करनेके लिये इस प्राचीन उक्तिप्रकारका प्रयोग किया जाता है कथा सरित्सागर द्वितीय लम्बक द्वितीय तरगका २१६ वाँ श्लोक देखिये

अथ तस्य रा प्रशान्तिदूती
मुपयाता क्षितिपस्य णमूलम्
सहसै विलो जातकोपा
दूरे विषयस्पृहा भूव

यह सुभाषित तो प्रसिद्ध ही है

कृतान्तस्य दू ी जरा र्णमूले
ा वक्ताति ोका शृणुध्म्
ीपरद्रव्यवाञ्छा त्यजध्व
भजध्व रमानाथपादारविन्दम्

सस्कृत साहित्यसे ऐसे अनेक अवतरण दिये जा सकते हैं यदि प्रयाण कालमें तुकाराम सचमुच ही बहुत वृद्ध हुए होते तो वृद्धत्व सूचक और भी कु उल्लेख उनके अभंगोंमें मिले होते और राजवाडेजी उन्हें उद्धृत भी करते पर ऐसे उल्लेख कहीं हैं ही नहीं

अब शिवा कसेरेके कूपकी बात रह गयी इस कूपपर शाके १५३४ का लेख है इससे तुकारामजीका जन्म इससे बहुत पहले हुआ होगा ऐसा अनुमान कोई करे तो वह भी नहीं माना जा सकता तुकारामजीने शिवबापर अनुग्रह किया उसके बाद उन्हींकी आज्ञासे शिवबाने वह कूप बनवाया ऐसा महीपतिबाबाने लिखा है पर यह सुनी सुनायी बा ही उन्होंने लिखी होगी कूपके शिलालेखमें शिऊजी नाम है पर यह शि ऊजी तुकाराम जीके शि य शिवजी कसेरा हैं या उनके कोई दादा परदादा या और कोई यह निश्चयपूर्वक नहीं जाना जा सक निश्चय इतना तो अवश्य हो सकता है कि तुकारामके शिष्य शिवजीने तुकारामकी आज्ञासे य कूप बनवाया

होता तो उस शिलालेखमें जहाँ श्रीगणेश और श्रीकालिकाको प्रथम नमन किया गया है वहाँ उनके स्थानमें या उनके साथ ही श्रीपाण्डुरङ्गाय नमः 'श्रीरुक्मिणीविट्ठलाभ्या नमः' भी अवश्य होता तुकारामका शिष्य होकर गणेश और कालिकाको तो स्मरण करे और विट्ठल-रखुमाईको भूल जाय, ऐसा नहीं हो सकता इसलिये यह कूप बनवानेवाला शिवा कसेरा या तो तुकारामका शिष्य शिवा कसेरा नहीं है या कम से कम कूप बनवानेके समयतक वह तुकारामका शिष्य नहीं था यह बात सिद्ध होती है इस तरह तुकारामका जन्म वर्ष शाके १४९० माननेकी पुष्टि इस कूपसे भी नहीं होता

तुकारामकी आयुमर्यादा ८१ वर्ष माननेके विरुद्ध एक बडी बात यह भी है कि जिस समय तुकाराम वैकुण्ठ सिधारे उस समय जिजाई गर्भवती थीं तुकारामके दोनों विवाह उनके माता पिताके रहते ही हुए थे और माता पिता उनके वयस्के सतरहवें वर्ष मृत्युलोकसे विदा हुए, यह महीपतिबाबाने स्पष्ट ही कहा है। राजवाडेजी भी इस बातको मानते है कि तुकारामका प्रथम विवाह उनके वयस्के १२ वें वर्षमें और द्वितीय विवाह चौदहवें वर्षमें हुआ अर्थात् तुकारामकी द्वितीया पत्नी उनसे अधिक से अधिक ५ ६ वर्ष छोटी रही होंगी अर्थात् प्रयाणके समय यदि तुकाराम ८१ वर्षके रहे हों तो जिजाई ७५ ७६ वर्षकी रही होंगी पर इस वयस्में उनके सन्तान होना असम्भव है अपनी बातकी पुष्टिमें राजवाडेजीने निजामुलमुल्क जर्मन तत्त्ववेत्ता गेटी और 'गुरुचरित्र' मे वर्णित बाँझके वृद्धावस्थामें सन्तान होना ये तीन दृष्टान्त उपस्थित किये हैं

राजवाडेजी बतलाते हैं कि निजामुलमुल्क जब ८ बरसके थे तब उनके लडका पैदा हुआ पर इस लडकेकी यानें निजाम अलीकी माता निजामुलमुल्ककी चौथी स्त्री थी कितने वर्षकी था तथा राजपुरुषोंकी

जन्म कथाओंमें कभी कभी कितने पेंच पाँच होते हैं इन सब बातोंका विचार उन्होंने नहीं किया है निजामुल्मुल्क जैसोंके उदाहरण महात्माओंके चरित्रोंमें देना भी प्रशस्त नहीं है दूसरा उदाहरण गेटीका है ६ वर्षतक यह ब्रह्मचारी रहे पीछे इन्होंने विवाह किया और विवाह भी एक युवतीसे किया इसलिये यह दृ न्त भी यहाँ नहीं घटता फिर शीतकटिबन्धके मनुष्योंकी बात कुछ है उष्णकटिब धके मनुष्योंकी बात कुछ और इसलिये भी यह उदाहरण ठीक नहीं है तीसरा उदाहरण गुरुचरित्र में वर्णित स्त्रीका है राजवाडेजी कहते हैं प्रसिद्ध गुरुचरित्र ग्र थमें मासिक धर्मको छूटे बीस पचीस वर्ष बीत चुके थे ऐसी एक वृद्धा ीके सतान होना लिखा है यह स्त्री प्रसूतिके समय ७ ७५ वर्षकी रही होगी यह कथा गुरुचरित्र' के ३९ वें अध्यायमें है वह ी सोमनाथकी पत्नी गगा है इस स्त्रीके ६ वें वर्ष श्रीगुरुकृपासे सतान हुई यह तो गुरुचरित्रमें लिखा है पर राजवाडेजीने उसे ७ ७५ वर्षकी बना डाला है इस कथामें उस स्त्रीके ६ वर्षकी होनेका कई बार उल्लेख हुआ है दूसरे यह कि गगाबाई बाँझ थीं और उ हें पुत्र मुख दर्शनकी बड़ी लालसा थी जिजाई की बात तो ऐसी नहीं थी यौवन प्राप्त होनेके समयसे ही उनके बच्चे होने लगे और उनसे उनका जी भी ऊब गया था तीसरी बात यह कि गगाबाई बाँझ थीं और बच्चा होनेके लिये उन्होंने कितनी मानताएँ मानी थीं पुत्रके लिये वह ईश्वरसे प्रार्थना किया करती थीं और श्रीगुरुने अपनी सिद्धाईका एक चमत्कार दिखाया जो उ हें ६ वर्षकी अवस्थामें पुत्र दिया जिजाईके सम्बन्धमें ऐसी कोई बात नहीं है जिजाईके सन्ततिकी कोई कमी नहीं थी कच्चे बच्चे पालते पोसते इस जंजालसे उनका जी ऊब गया और ऐसी अवस्थामें वयस्के ७५ वें वर्ष जिजाईके सतान हो यह तो असम्भव है इसलिये बात यह है कि प्रयाणके समय तुकारामकी आयु ८१ वष नहीं थी और न जिजाईका मासिक धम ही छूटा था चौथी

यह कि वयस्के २१ वें वर्षमें वैराग्य वरण करनेवाले तुकाराम ८१ वें वर्षमें भी ग्राम्यधर्मरत हों यह बात भी जँचनेलायक नही है वर्णाश्रम धर्मका साधारण नियम यह है कि

शैशवेऽभ्यस्तविद्यानां यौवने विषयैषिणाम्
वार्धके मुनिवृत्तीनां योगेनान्ते तनुत्यजाम्
(रघुवंश सर्ग १ ८)

इस साधारण नियमको तुकारामने न माना हो ऐसी बात तो समझके बाहर है प्राचीन परम्परा यही है कि कोई भी धार्मिक हिन्दू ५० ५५ वयस्के बाद प्राय ग्राम्यधर्ममें मन नही लगाते फिर जो तुकाराम अपने अवतीर्ण होनेका यह प्रयोजन बतलाते हैं कि धर्मरक्षणके लिये हमारा सारा उद्योग है जो अपनी वाणीसे वेदनीति ही कहते है' और वही करते हैं जो सन्तोंने किया' वह तुकाराम अपने इस अन्तिम पुत्रके गर्भमें आनेके समय ८, वर्षके हो ही नही सकते

११ संवत् १६८६ का काल

अब रह गया तीसरा मत जिसके अनुसार तुकारामका जन्म-वर्ष शाके १५२० है इसके पक्षमें ऐतिहासिक प्रमाण काफी हैं और परम्पराकी मान्यता भी है महीपतिबाबाने जो यह कहा है कि २१ वर्षकी अवस्थामें जीवनका पूर्वार्ध समाप्त हुआ वह वाच्यार्थसे भी सही है और इसको प्रमाण माननेके लिये ऐतिहासिक आधार भी है वा यार्थ लेनेसे तुकाराम महाराजकी आयु कु ४१ ४२ वर्ष माननी पडती है और इस प्रकार उनका जन्म वर्ष शाके १५३० ग्रहण करना ठीक है महीपतिबाबाने लिख रक्खा है कि उनके वयस्के इक्कीसवे वर्ष विपरीत काल' आया अर्थात् घोर दुर्भिक्ष पडा और उसमें उनकी प्रथम स्त्रीको अन्नके बिना प्राण त्यागने पड़े तुकाराम महाराजके वयस्का यह इक्कीसवाँ वर्ष (जन्म वर्ष १५३

माननेसे) शाके १५५१ में आता है और इतिहाससे यह बात मिलती है कि शाके १·५१ (सवत् १६८६ वैक्रम या सन् १६२९ ३ ईसवी) में केवल पूनेमें ही नहीं सम्पूर्ण महाराष्ट्रमें घोर दुर्भिक्ष पडा था अब्दुल हमीद लाहौरी नामक एक मुसलमान इतिहासकारने शाहजहाँ बादशाहके शासनकालके प्रथम २ वर्षका एक इतिहास बादशाहनामा' के नामसे लिखा है यह लाहौरी १६५४ ई में मरे यह तुकाराम जीके समकालीन थे बादशाहनामा' में इन्होंने लिखा है पिछले साल (सन् १६२९ ई) बालाघाटकी तरफ बारिश नहीं हुई और दौलताबादकी तरफ तो एक बूँद भी पानी नहीं गिरा इस साल (सन् १६३ ई०) आसपासके सब सूबोंमें नाजकी कमी हुई और दक्खिन और गुजरातमें तो हाय मची यहाँके लोगोंका हाल ऐसा बेहाल हुआ कि कुछ कहनेकी बात नहीं रोटीके एक एक टुकडेपर जानवर और बच्चे बिकने लगे तो भी कोई गाहक न मिलता बड़े बडे दानी एक एक टुकडेके लिये हाथ पसारने लगे लाशोंमेंसे हड्डियाँ निकाल निकालकर उन्हें पीस पीसकर वह पिसान आटेमें मिलाया जाने लगा यहाँतक नौबत आ गयी कि आदमी आदमीको खाने लगे यहाँ क कि माँ बाप अपने बच्चोंको खाने लगे जहाँ तहाँ लाशोंके ढेर दिखायी देने लगे अच्छी से अच्छी जमीनमें भी एक दाना नहीं पैदा हुआ कहीं एक बूँद पानी नहीं एक दाना अन्न नहीं यह हालत इन सूबोंकी हुई (इलियट ऐण्ड डासन भाग ७ पृ २४०) इसीका उल्लेख एलफिन्स्टनके इतिहासमें (पृ ५ ७) और पूना गजेटियरमें (भाग २ पृ ४ २) किया हुआ है तुकाराम महाराजके समकालीन इतिहासकारने शाके १५५१ ५२के उस भीषण दुर्भिक्षका यह र्णन किया है शाके १५५१ का वर्षाकाल वर्षाके बिना ही बीता इससे उसी वर्ष दुर्भिक्षका सामना पडा पर पहलेका मा अन्न हाँ जो था उससे वह वर्ष तो लोगोंने किसी प्रकार रोते गाते बिता दिया पर जब

शाके १५५२ में भी वर्षा नहीं हुई तब लोगोंके दु खका कोई ठिकाना न रहा और यहाँतक नौबत आयी कि हजारों आदमी अन्नके बिना मर गये और आदमी आदमीको खाने लगे इस दुर्भिक्षके विषयमें अपने यहाँ घरका प्रमाण भी मौजूद है राजवाडे महोदयने मराठोंके इतिहासके साधन प्रकाशित किये है इनके १५ वें ख डमें शिवाजी महाराजके समयका पत्र व्यवहार प्रकाशित हुआ है लेखाङ्क ४१३ ४१४ और ४१९ देखिये मौजा निगुरडाके पाटील (गाँवक मुखिया) ने शाके १५५१ के कुआरमें ३१ मौजोंकी अपनी वृत्तिका आधा हिस्सा बेचते हुए लिखा है कि आफत और फितरतके मारे भूखों मर रहे है इसलिये आधी पाटिलाई अपनी खुशीसे बेचते हैं शाके १५५२ में फिर इसी बची हुई पाटिलाईका आधा हिस्सा और बेचा है क्योकि दुर्भिक्षके कारण असह्य कष्ट है खानेको अन्न नही है व्यवहार करनेवाला कोई बनिया नही है इसके द के १५५५ में बचा हुआ हिस्सा भी यही कहकर बेच डाला है कि बड़ा भयङ्कर दुर्भिक्ष है गाय बैल नहीं रहे अन्नके बिना मर रहे हैं ' अस्तु यह सब शाके १५५२ के दुर्भिक्षसे महाराष्ट्रमें कैसा हाहाकार मचा था यह दिखानेके लिये ही लिखा है

महीपति बाने भी उस दुभिक्षका वर्णन किया है पर उन्होंने जो लि है वह सुनी सुनायी बातोंके आधारपर लिखा है अपनी आँखोंसे देखा हाल नहीं प्रत्यक्षदर्शी श्रीसमर्थ रामदास स्वामी थे जिनकी आयु उस समय २१ २२ वष होगी इसी समयके गभग उनका तीर्थयात्राकाल आरम्भ हुआ है उन्होंने इस दुर्भिक्ष वर्णन स प्रकार किया है सब पदार्थ निकल गये केवल देश रह गया लोगोंपर सङ्कटके पहाड़ टूट पड़े कितने स्थान भ्र हो गये कितने जहाँ के-तहाँ मर गये जो बचे वे अपने गाँव लौटकर मर गये खानेको अन्न नहीं ओढ़ने बिछानेको कपड़ा नही रहा घर गृहस्थीकी कोई चीज न रही सब लोग द्वेग उद्भ्रान्त हो गये दुश्चिह्न अभीतक मौजूद हैं कितने जातिभ्रष्ट हो

१२ ान्हजीके शोकोद्गार

तुकाराम महाराजके प्रयाणके पश्चात् उनके छोटे भाई कान्हजीने जो विलाप किया है उसके १८ अभग हैं उन अभगोंको देखनेसे यह कोई भी नहीं कह सकता कि किसा ८१ वर्षके वृद्धका मृत्युपर यह ोक हुआ है इन अभगोंमें इतना करुण रस भरा हुआ है कि उसे देख यही सम जायगा कि तुकाराम सबको अपना चसका लगाकर अका में ही चले गये कान्हजी तुकारामकी पीठपर ही हुए थे अधिक से अ क ३४ वर्ष उनसे छोटे होंगे तुकाराम जब विरागी हुए तब कान्हजी ल कर उनसे अलग हो गये थे इस समय तुकाराम बीस पचीस वर्षके रहे होंगे पीछे जब कान्हजीने तुकार मकी योग्यता जानी तब उ हें बडा पश्चात्ताप हुआ और वह उनके शिष्य बने प्रयाणके समय महाराजकी आयु यदि ८१ वर्ष होती तो कान्हजीके ऐसे अनुतापभरे उद्गार इतने वेगके साथ कभी न निकलते कि सखा जानकर मैंने तुमसे अति परिचयका ही व्यवहार किया अथवा ससारमें मुझ चाण्डालको तुम दु ख दे गये इत्यादि तुकाराम यदि उस सम इतने वृद्ध होते तो उसका यह मतलब होता कि कान्हजीको ४० ५० वर्षतक उनका सत्सङ्ग लाभ हुआ होता कान्हजी भी वृद्ध होते उनके पूर्व कर्म धुलकर नूतन गाम्भीर्यमें परिणत हो गये होते जिसमेंसे ऐसे अनुतापका आवेग कभी न निकलता कान्ह जीके मुँहसे ऐसी ब त भी न निकलती कि मेरी ओढर्न छिन गयी ' मेरा घर डूबा बच्चे कच्चे अनाथ हो गये ' हरा भरा घर उजाड डाला तुकाराम यदि उस समय वृद्ध होते तो ऐसे उद्गार न निकलते और ऐसे

गये कितने विष खाकर मर गये कितने जलमें डूब मरे कितनोंका दहन या दफन भी नहीं हुआ मालूम होता है दुभिक्ष और परचक्र दोनों एक साथ ही टूट पडे थे (रामदास और रामदासी वर्ष १ अङ्क १)

उद्गारोंमें तब कोई स्वारस्य भी न होता इन सभी बातोंसे यही निश्चित होता है कि वृद्धावस्था आरम्भ होनेके पूर्व ही तुकाराम इहलोकसे चले गये कान्हजीका एक उद्गार ऐसा भी है कि बच्चे बिलख बिलखकर रो रहे हैं उनके करुणस्वरसे पृथ्वी विदीर्ण हुआ चाहती है ' तुकारामकी आयु उस समय यदि ८१ वर्ष होती तो उनके सन्तान कोई ४० वर्षके कोई ५ और कोई ५५ के होते और तब कान्हजीको यह भी न कहना पड़ता कि बच्चे दर दर रोते फिर रहे हैं ' ये सभी उद्गार उस हालतमें व्यर्थ हो जाते इन सभी उद्गारोंसे यही प्रकट होता है कि तुकाराम महाराज और तुकाभाई कान्हजीके सन्तान उस समय १५ २ वर्षकी अवस्थाके भीतर बाहर रहे होंगे कान्हजीकी वाणीसे यह भी नहीं झलकता कि तुकारामका गृह प्रपञ्च इस समय समाप्त सा हुआ हो दूसरी बात यह कि अकाल ही जब वियोग होता है तभी करुण रस सोहता है—तभी स्फुरता भी है यह तो रसज्ञ और रसिक जानते ही हैं यह भी नही कह सकते कि ये अभग प्रक्षिप्त हों कारण ये तुकाराम महाराजके साथ रहनेवाले उनके लेखक सन्ताजी जगनाडेकी वहीपरसे श्रीभावेजीके असली गाथा भाग १ में भी उतारे गये हैं

१३ पूर्व परम्परा

इन सब प्रमाणोंसे यह प्रमाणित हुआ कि तुकारामका जन्म वर्ष शाके १४९ जितना आगेका तो नही है जन्म वर्ष १५२० माननेसे चरित्रके सब प्रसङ्गोंकी श्रृङ्खला ठीक जुड जाती है महीपतिबाबाने २१ वें वर्ष पूर्वार्ध समाप्तिकी जो बात कही है वह वाच्यार्थ और लक्ष्यार्थ दोनों प्रकार से ठीक बैठ जाती है, जिजाई तुकाराम महाराजके प्रयाणके समय गर्भवती थीं इस बातमें भी कोई विसङ्गतता नही आती (कारण उस समय उनकी आयु २६ २७ वर्ष रही होगी) महीपतिबाबाका यह कहना कि

इक्कीसवें वर्ष विपरीत काल आया शाके १५५१ के महादुर्भिक्षकी ऐतिहासिक घटनासे मिल ही जाता है और कान्हजीका विलाप करना भी सार्थक होता है और परम्परासे चली आयी ई मान्यताको भी अमान्य करनेकी कोई आवश्यकता नहीं पडती परशुराम पन्त तात्या गोडबोलेने शाके १७७६ में नवनीत' का प्रथम सस्करण प्रकाशित किया उसमें उन्होंने लिखा है कि तुकाराम ४ वर्षकी आयुमें इहलोक छोड़कर परलोक सिधारे सरकारी सहायतासे प्रकाशित इन्दुप्रकाश वाले सग्रह मे कहा है कि शाके १५९ में देहू स्थानमें तुकारामका जन्म हुआ तुकाराम अदृश्य हुए उस समय उनकी आयु ४२ वर्ष थी यही सब सन्त समाजों और तुकारामके वंशजोंमें सर्वत्र प्रसिद्ध है ' इस प्रकार सभी प्रमाणोंसे तुकाराम महाराजका जन्म वर्ष शाके १५३ ही निश्चित होता है और इसीको मानकर तुकारामकी जन्म कु ड ी बन नेसे ज्योतिष जो चरित्र फल बतलाता है वह भी तुकाराम महाराजके चरित्रसे मिलता है इसलिये शाके १५२ (सवत् १६६५) में तुकाराम महाराजका जन्म हुआ इस बातको सब लोग मान लेंगे

१४ गुरूपदे ा वर्ष

अब गुरूपदेशका समय निर्धारित करना है जन्म शाके १५३ में हुआ १५५१ ५२ के दुर्भिक्षमें उनकी स्त्रीका अन्नके बिना देहान्त हुआ उसके पश्चात् उन्हें वैराग्य हुआ अर्थात् गुरूपदेशका समय शाके १५५२ के पश्चात् ही है पर वह शाके १५५८ के पूर्व ही हो सकता है कारण इस प्रकार है बहिणाबाई १५५ में जन्मीं और १६२२ के आश्विन मासमें शुक्लपक्षकी प्रतिपदाको समाधिस्थ हुईं (गाथा बहिणाबाई भाग १ पृ १८३) अर्थात् उस समय उनकी आयु ७२ वर्ष थी यह बात उन्होंने स्वय भी अपने निर्याणकालीन अभगोंमें कही है बहिणाबाई जब

११ १२ वर्षकी थीं तभी तुकारामने स्वप्नमें उन्हें दर्शन दिये बहिणाबाई कोल्हापुरमें थीं अपने पतिके साथ बैठकर जयराम स्वामीका कीर्तन सुना करती थीं इन्हीं कीर्तनोंसे तुकाराम महाराजकी कीर्ति उनके कानमें पडी और तुकाराम महाराजकी ओर उनका ध्यान लगा ऐसी अवस्थामें कातिक कृष्ण ५ रविवारको तुकाराम महाराजने स्वप्नमे जाकर पूर्ण कृपा की कार्तिक कृष्ण ५ को (पूर्णिमान्त मासके हिसाबसे मार्गशीर्ष कृष्ण ५ को) रविवारका योग शाके १५६२ में आता है इसलिये बहिणाबाई के स्वप्नानुग्रहका समय मिति कातिक बदी ५ शाके १५६२ ही है इस समयतक भगवान्‌ने तुकारामकी बहियोंको जलसे उबार लिया' की कथा कोल्हापुरतक फैल चुकी थी इसके पश्चात् बहिणाबाई अपने पति और माता पिताके साथ देहूमें आयी वहाँ कुछ कालतक मम्बाजी बाबाके घर रही मम्बाजीने उन्हें यही कहकर अपने यहाँ टिका लिया था कि आगे सोमवती अमावस्या है ' तबतक यही रहो सोमवती अमावस्याका योग १५६२ के फाल्गुनमें १५६३ के कार्तिकमें और १५६४ के श्रावणमें भी है अर्थात् इन तीन वर्षोंमेंसे किसीसे भी वर्षमें वह देहूमें गयी होंगी तथापि जब १५६२ में कार्तिक बदी पञ्चमीको श्रीतुकाराम महाराजका स्वप्नानुग्रह हुआ है तब यही अधिक सम्भव है कि गुरु दर्शनकी उत्कण्ठा से वह उसी वर्ष फाल्गुनमें ही देहू गयी हों वहाँ जानेपर मम्बाजीने उन्हें बहुत कष्ट दिया उसी कष्ट कहानीमें मम्बाजीकी इस शिकायतका भी जिक्र है कि रामेश्वर भट्ट जैसे विद्वान् भी जाकर तुकाके पैर छूते है यह तो बडा भारी अनर्थ है इन दोनों उल्लेखोंसे यह पता चला कि तुकारामकी बहियाँ रामेश्वर भट्टने डुबायी और भगवान्‌ने उन्हें उबारा यह बात शाके १५६२ के पहले ही सर्वत्र फैल चुकी थी यह कथा बहिणा बाईने १५६२ के कार्तिक मासके पहले सुनी जब यह घटना हुई तभी

कुछ दिनोंमें ही सुनी हो या दो एक वर्ष बाद सुना हो यह मान लेनेमें कोई हरज नहीं है कि यह घटना १५६० के लगभग हुई होगा तुकाराम जीके कवित्व स्फूर्ति हुई और वे अभग रचने लगे इस बातका १५६० में दो तीन वर्ष बीत चुके होंगे तुकाराम अपने कीर्तनोंमें अपने ही बनाये हुए अभग गाते हैं और उन अभगोंसे वेदार्थ प्रकट होता है यह बात फैलते फैलते रामेश्वर भट्टके कानोंतक पहुँची और तब तुकारामको विरोधी लोग कष्ट पहुँचाने लगे इस अवस्थाको यदि १५६ में रखते हैं तो उनके कवित्व स्फूर्ति होनेका समय १५५७ ५८ रखना होगा इस हिसाबसे इसके पूर्व ही पर १५५२ के पश्चात् जिस किसी वर्षमें माघ शुक्ल दशमीको गुरुवार हो वही वर्ष उन्हें गुरूपदेश प्राप्त होनेका वर्ष मानना होगा ज त्री में शाके १५५४ की माघ शुक्ल १ को गुरुवार है इस प्रकार यह सिद्ध है कि शाके १५५४ सवत् १६८९ (अगरेजी तारीख १ जनवरी १६३३ ई०) माघ शुक्ल १ गुरुवारके दिन ब्राह्ममुहूर्तमें भण्डारा पर्वतपर श्रीतुकारामको स्वप्नमें श्रीगुरुने उपदेश दिया

१५ अभग-रचनाका

श्रीगुरूपदेशके पश्चात् तुकारामजीके कवित्व स्फूर्ति हुई तुकाराम जीका एक अभग है जाति शूद्र वैश्य किया व्यवसाय (जाति शूद्र वैश्य केला व्यवसाय) वह किसी अगले अध्यायमें आवेगा उसमें तुकाराम जीने अपने जावनकी मुख्य मुख्य घटनाएँ क्रमसे बता दी हैं पहले घर गिरस्ती सँभाली व्यवसायमें हानि उठायी दुर्भिक्षमें प्रथम प ी अन्न बिना मर गयी वैराग्य हो आया श्रीविट्ठल मन्दिरका जीर्णोद्धार किया ग्र थ पढे इसके पश्चात् स्वप्नमें गुरूपदेश हुआ और इसके अनन्तर कवित्व स्फूर्ति हुई कवित्व स्फूर्ति शाके १५५६ में हुई मानें तो श्रीतुकारामजी के श्रीमुखसे सतत पञ्चदश वर्षपर्यन्त अभग-गङ्गा बहती रही इन पद्रह

वर्षमें सहस्रों अभग उनके मुखसे निकले सब अभग आज नहीं मिल रहे हैं कवित्व-स्फूर्ति होनेपर सबसे पहले उन्होने बाललीलापर ओवियाँ रचीं और स्वय ही बालबोधिनी (देवनागरी) लिपिमें बहीपर लिखी श्रीकृष्णद्वैपायन महर्षि वेदव्यासने श्रीमद्भागवत लिखा उसके दशम स्कन्धमें हरिलीलामृत है और उसमे जगदात्मा गोकुलमें क्रीडा कर रहे हैं यही श्रीकृष्णकी गोकुलकी बाललीलाका प्रसङ्ग है उसकी नौ सौ ओवियाँ हैं जिनका मर्म महीपतिबाबा कहते है कि 'साधु सन्त ही स्वानुभवसे जानते हैं'

ये ओवियाँ ऐसी है कि इन्हे ओवी भी कह सकते हैं और अभग भी अभग यो कह सकते है कि कुछ चरणोके बाद तुका म्हणे (तुका कहे)' कहकर इतना ही टुकडा तोडकर जोडा है इन्हे अभग कहे तो इनमे चरणोंकी सख्याका कोई ठिकाना नही किसीमें तीन चरण है किसीमें तीनसे अधिक और किसीमें तीसतक छोटे बडे कई चरण है रचना ओवीके ढगकी है अभगकी जो यह विशेषता है कि द्वितीय चरणमें स्थायी पद आता है सो इसमे नही है ओवी बद्ध सी रचना है इसलिये हम इन्हे ओवियाँ ही कहते है अभगका हिसाब लगायें तो ये बाललीलाके १० अभग हैं और चरण गिनें तो ९ ओवियाँ है बात एक ही है देहू प ढरीके सग्रहोंमे बाललीला वर्णन पहले दिया है पीछे पाडुरगनमन' के २३१ ओवियोंके तीन अभग दिये है इन्दुप्रकाशसग्रहमें ये तीन अभग पहले और बाललीलावर्णन पीछे दिया है ये तीन और बाललीलाके सौ अभग मिलाकर ओवीके ११२५ चरण होते हैं और कुछ सग्रहोंमे ओवियों का जोड ११ ० ११२५ जितना ही दिया हुआ है यह बहिरंगकी बात हुई वर्णित विषयको देखें तो २२१ ओवियाँ प्रास्ताविक हैं और सबसे पहले तुकारामजीने यही लिखा होगा तुकारामजीके उपास्यदेव श्रीपाण्डुरग

थे ₂सलिये सबसे पहले उन्होंने उन्हींका चरित्र लिखा यह स्वाभाविक ही है मगलाचरण आदिसे यह स्पष्ट ही ध्वनित होता है कि यह रचना करते हुए तुकारामजीको यह ध्यान है कि यह मेरी पहली ही रचना है दो ही एक वर्ष पहले गुरूपदेश हुआ था इससे गुरुवन्दना भी इसमें स्वभावत ही आ गयी है

बाललीलाकी ओवियोंके कुछ काल पश्चात् दधिकाँदौ गुल्लीडंडा गेंद आदिके अभग बने होंगे शेष सब अभंगोंका कालक्रम निश्चित करना कठिन है पर तु बाललीलाके पश्चात् आत्मपरीक्षण दर्शन लालसा परिचयकी घनिष्ठता ध यता पूर्णता और उपदेश ऐसा क्रम यदि इन सब अभगोंका बाँधा जाय तो उसमें बहुत बडी गलती होनेकी सम्भावना नहीं है बाललीलाके अभग तुकारामजीने स्वय ही लिखे पीछे कीतन प्रसग से करतालियों और श्रोताओंका जमघट ज्यों ज्यों बढने लगा और विशेष करके जबसे गगाराम बोवा मवाल और सन्ताजी जगनाडे अभग लिखने वाले मिल गये तबसे तुकारामजीका स्वय लिखना छूट सा गया होगा इन लेखकोंने भी तुकारामजीके सभी अभगोंको लिखा होगा यह तो नहीं कहा ज्ञा सकता एक बार देहूमें एक वृद्ध वारकरीके मुँह सुना कि तुकारामजी ने एक लाख अभग भ डारा पर्वतपर रखे एक लाख इन्द्रायणीको भेंट किये और एक लाख लोगोंको दान किये इसका अभिप्राय इतना ही समझमें आता है कि भण्डारा पर्वतपर तुकाराम महाराज जब श्रीविट्ठलके ध्यान और नाम जपमें निमग्न थे तब भगवान्को सम्बोधन कर असख्य अभग उन्होंने कहे होंगे वह इस समय एकान्तमें थे एकान्तके इन अभगोंको भगवान्के सिवा और कौन सुन सकता था और उस आनन्दके अनुभवमें निमग्न तुकारामजीको भी उन अभगोंको लिख रखनेकी धतक न रही होगी इ द्रायणीके दहपर भी एकान्तवासमें यही हुआ करता था कीर्तन प्रसंगसे अथवा अन्य अवसरोंपर

जो अभग उनके मुखसे निकले उनमेंसे कुछ लगभग साढे चार हजार-अभग लेखकोंकी लेखनीतक पहुँचे महाराजके दयमें स्वानन्दका जो भण्डार भरा हुआ था उसमेंसे बहुत ही थोडा अश हमारे आपके हाथ आया है भगवान्‌के साथ उनका जो एकान्त हुआ उस समयका सारा सुख भगवान्‌ने ही लूटा और चार दाने सौभाग्यसे हमलोगोंको मिले हैं इन चार दानोंसे समूचे भण्डारकी कल्पना जो कोई कर सकता हो वह कर ले श्रीतुकारामजीके श्रीमुखसे जो भक्तिज्ञानगङ्गा अखण्डरूपसे सतत पद्रह वर्षतक प्रवाहित होती रही उसमेंसे चार घड़े पानी जिन उदारात्माओंकी कृपासे हमलोगोंको मिला है उनके अपार उपकार हैं महाराजने स्वय पूर्ण परितृप्त होकर जो चार मुट्ठी उच्छिष्टान्न हमे दिया है उसके परिमलमात्रसे जब समय समयपर कृतार्थताकी तरग सी उठा करती है तब जिन महाभागोंने साक्षात् तुकाराम महाराजके हाथों पद्रह-बीस वर्षतक बराबर प्रसाद पाया हो उन गगाराम सन्ताजी रामेश्वर भट्टादि पुण्यात्माओंके सौभाग्यकी कहाँतक सराहना की जाय ? श्रीतुकाराम महाराजका निज योगैश्वर्य तो अवर्णनीय ही है परमात्माका सम्पूर्ण ऐश्वर्य उनपर प्रकट हुआ वह कर्मी ज्ञानी योगी भक्त सभी कुछ थे गगासागरसंगममें सभी तरग एकमय रूप थीं तुका भये पाडुरग यही सच है उनके अभगोंमें भी सब रग भरे हुए हैं हर कोई अपने अधिकारके अनुसार चाहे जिस रंगसे रञ्जित हो ले

१६ जीवन मानचित्र

यहाँतक जो विवेचन हुआ उससे श्रीतुकाराम महाराजके जीवन क्रमका जो कालमानचित्र चित्रित होता है वह ऐसा है

वयस् वर्ष	विक्रम सवत्	घटना
	१६६५	श्रीतुकाराम जन्म
१३	१६७८	गृहप्रपञ्चका भार तुकारामजीके सिर पडा
१४ १६	१६७९ १६८१	के लगभग तुकारामजीका प्रथम और द्वितीय विवाह हुआ
१७	१६८२	तुकारामजीके माता पिता और भावजका देहान्त
१८	१६८२	तुकारामजीके बडे भाई सावजी विरक्त होकर चले गये
२	१६८५	मनका विषाद दबाकर प्रथम पुत्र सन्ताजी और दोनों प यों के साथ तुकारामजा गृह प्रपञ्चमें हौसलेके साथ आगे बढे
२१	१६८६	विपरीत काल और दिवाला दुर्भिक्षका आरम्भ
२२	१६८७	दुर्भिक्षका भीषण रूप दुर्भिक्षसे प्रथम पत्नीका देहान्त पुत्रकी मृत्यु वैराग्य और भामनाथ पर्वतारोहण
२३	१६८८	श्रीविट्ठल मन्दिरका जीर्णोद्धार कीर्तन श्रवणकी धुन
२४	१६८९	माघ शुक्ल १ गुरुवार श्रीगुरुका उपदे
२६	१६९१ १६९२	के लगभग कवित्व स्फूर्ति
३	१६ ५	रामेश्वर भट्टद्वारा पीडन और सगुण साक्षात्कार
४१	१७ ६	चैत्र कृष्ण २ (पूर्णिमान्त मासके हिसाबसे) शनिवार सूर्योदयके अनन्तर ४ घटिका दिनमें प्रयाण

दूसरा अध्याय

पूर्ववृत्त

पूर्व परम्परासे प्राप्त पैतृक सम्पत्ति मेरी हे पाण्डुरङ्ग तेरी चरणसेवा है उपवास और पारण ही मेरे लिये तेरे मन्दिरद्वार हैं इसीके भोगमात्रका अधिकार हमें मिला है वंश परम्परासे ही मैं तेरा दास हूँ

श्रीतुकाराम

१ देहूक्षेत्रका वर्णन

श्रीतुकाराम महाराजके अधिवाससे पुनीत और त्रिलोकविख्यात देहूग्राम पुण्यक्षेत्र पूना प्रान्तमें इन्द्रायणी नदीके तटपर बसा हुआ है आलन्दीसे पाँच कोस तलेगाँवसे चार कोस और चिंचवडसे तीन चार कोसपर यह पावन तीर्थ है पूनेसे वायव्य दिशामें तलेगाँवसे पूर्व ओर चिंचवडसे उत्तर ओर और आलन्दीसे भी वायव्य ओर है देहूके चारों ओर थोडी थोडी दूरपर छोटे बड़े अनेक पर्वत हैं शेलारवाडी नामक रेलवे स्टेशनसे यह स्थान तीन मील उत्तरकी ओर है स्थान छोटा सा होनेपर भी भाग्योदय इसका महान् हुआ जो यहाँ श्रीतुकाराम महाराज अवतीर्ण हुए तुकारामके समय यह स्थान नाम संकीर्तनसे गूँजता रहता

था और इसी पु यके बलसे आगे चलकर यह स्थान महाराष्ट्रके महाक्षेत्रोंमें परिगणित हो गया महाराष्ट्रका सबसे प्रधान क्षेत्र पण्ढरपुर है तेरहवें शालिवाहन-शतकमें ज्ञानेश्वर महाराजके कारण आलन्दीक्षेत्रकी महिमा बढी सोलहवें शालिवाहन शतकमें एकनाथ महाराजके कारण पैठणकी प्रति । बढी और सतरहवें शालिवाहन शतकमें तुकाराम महाराजके कारण देहू प्रसिद्ध हुआ तुकाराम महाराजके पूर्व देहूमें दो चार छोटे-छोटे मन्दिर थे और इनके आठवें पूर्वज श्रीविश्वम्भर बोवाने वहाँ श्रीविठ्ठ रखुमाई (रुक्मिणीकान्त श्रीकृ ण) का मन्दिर बनवाया था तबसे या यों कहिये कि जबसे उनके कुलमें पण्ढरीकी वारीका नियम विशेषरूपसे चला तबसे देहूग्राम एक पुण्यक्षेत्र बना परन्तु इसका महान् पु य तभी प्रकट होकर चतुर्दिक् विख्यात हुआ जब तुकाराम महाराजने इस धरतीपर पैर रखे तुकाराम महाराजके कारण ही देहूक्षेत्र महाराष्ट्रके महाक्षेत्रोंमें गिना जाने लगा देहूक्षेत्रके सम्बन्धमें तुकाराम महाराजका एक अभग भी प्रसिद्ध है जो तुकाराम महाराजके सभी प्रकाशित अभंगसंग्रहोंमें मौजूद है और सन्ताजीकी बहीमें भी होनेसे जिसकी प्रामाणिकता निस्सन्दिग्ध है इस अभंगमें तुकाराम महारा अपने समयके देहूक्षेत्रका वर्णन करते हैं

धन्य है देहूग्राम पु यधाम जहाँ श्रीपाण्डुरङ्ग विराजते हैं धन्य हैं वहाँके सौभाग्यशाली क्षेत्रवासी जो नित्य नाम सकीर्तन करते हैं इस देहूक्षेत्रमें विश्वपिता वामागमें रुक्मिणीमाताके साथ कटिपर कर रे उत्तराभिमुख खडे हैं सामने गरुड्यानमें अश्वत्थ वृक्ष हाथ जोड़े खड़ा है दक्षिणमें श्रीशङ्करलिंग श्रीहरेश्वर हैं और इन्द्रायणी गङ्गाके तटकी अपूर्व शोभा है वल्लाल वनमें श्रीलक्ष्मीनारायण विराज रहे हैं और वहीं श्रीसिद्धेश्वरका अधिष्ठान है द्वारपर श्रीविघ्नराज विराजे हैं और

बाहरकी ओर बहिरव और हनुमान्‌जी पास पास सुशोभित हैं इसी स्थानमें यह दास तुका श्रीविठ्ठल चरणोंको हृदयमें धारण किये हुए श्रीहरि कीर्तन किया करता है

देहूमें इस समय श्रीविठ्ठलनाथजीका जो मन्दिर है और उसके बाहरकी ओर जो दालान बने हुए दिखायी देते हैं वे सब पीछे बने हैं श्रीविठ्ठल रखुमाई (श्रीविठ्ठलनाथ और श्रीरुक्मिणीमाता) की मूर्तियाँ तो वे ही हैं जो तुकाराम महाराजके पूर्वज श्रीविश्वम्भरबाबाने स्थापित की थीं तुकारामजीके समयतक वह श्रीविठ्ठल मन्दिर जीर्ण होकर गिरनेको हो गया था तुकाराम महाराजने उसका जीर्णोद्धार किया अवश्य ही जीर्णोद्धारका वह काम तुकारामजीकी जैसी आर्थिक अवस्था थी उसके अनुसार, सामान्य सा ही हुआ होगा तुकाराम महाराजके पुत्र नारायण बोवाको तीन गाँवोंकी जागीर मिली तबकी अवस्था कुछ और थी और उस समय तुकाराम महाराजकी कीर्ति भी सर्वत्र फैल चुकी थी उसके बाद ही मन्दिरका बडा विस्तार हुआ और देहूके इगले पाटिल आदि धनिकोंने मन्दिरको इतना बडा और भव्य बनवा दिया तथापि उपर्युक्त अवतरणमें तुकारामजीने देहूका जो वर्णन किया है वह आज भी यथार्थ है सब देवता देवस्थान और उनके पार्श्वस्थान ज्यों के त्यों वर्तमान है पण्ढरपुरमें श्रीविठ्ठल अकेले ही ईंटपर खड़े है श्रीरुक्मिणीजीका मन्दिर वहां पीछेसे बना है और देहूमें श्रीविठ्ठल रखुमाई पास पास ही खड़े है इनकी मूर्तियाँ उत्तराभिमुख है अर्थात् मन्दिर भी उत्तराभिमुख है सामने गरुडथान है गरुड और हनुमान्‌जी भगवान्‌के सामने हाथ जोड़े खड़े है पूर्वद्वारके समीप दक्षिणाभिमुख श्रीविघ्नराज हैं और बाहर बहिरवजीका छोटा सा मन्दिर है मन्दिरके पश्चिम हरेश्वरका मन्दिर है और इनामदारों की बड़ी हवेली है

उसीकी परली तरफ तुकारामजीका खास घर है जिस घरमें जिस कोठरीमें तुकारामजीका जन्म हुआ और जहाँ पीछेसे श्रीविट्ठल मूर्तिकी नवस्थापना हुई उसका छाया चित्र अन्यत्र प्रकाशित है तुकारामजीके खास घर और हवेलीके पश्चिम ओर इ द्रायणीके समीप एक खँडहर है कहते हैं कि यहाँ पह` मम्बाजीबाबाका घर और बाग था श्रीविट्ठल मन्दिरकी परिक्रमामें ही दायीं ओर इनामदारोंकी हवेली और श्रीतुकाराम जीका अपना खास घर है पास ही एक गली है इस गलीसे नीचे उतरनेपर दायीं ओर ही मम्बाजीका खँडहर है ये सब स्थान परिक्रमाके भीतर ही हैं एक बारकी घटना बतलाते हैं कि तुकारामजीकी भैंस मम्बाजीके बागमें घुस गयी मनकी खार मिटानेका यह अच्छा अवसर जान उस मत्सरमूर्ति मम्बाजीने तुकारामजीपर झूठ मूठ यह दोष मढा कि इ होंने जान बूझकर भैंसको काँटेकी बाड हटाकर मेरी फुलवारीमें घुसा दिया यह कहकर उन्होंने उन्हीं काँटोंकी बाडोंसे तुकारामजीको बेतरह मारा जिस स्थानमें तुकारामज पर इस प्रकार मार पडी वह स्थान तुकारामजीके घरकी पश्चिम ओर इ द्रायणीके सम्मुख है इन सब स्थानोंके पश्चिम ओर बल्लाल वन है और उसमें श्रीसिद्धेश्वरका मन्दिर है इस मन्दिरके पूर्व ओर श्रीलक्ष्मी नारायणका मन्दिर है ये मन्दिर छोटे छोटे और पत्थरके बने हैं २न मन्दिरों और तुकारामजीके घरके पूव तथा उत्तर पूर्वमें अन्य लोगोंके घर थे और आज भी हैं देहूक्षेत्र उस समय ऐसा बसा हुआ था इन्द्रायणी नदी देहूक्षेत्रसे लगकर उत्तर ओर बहती है मन्दिरके बाहर और नदीके किनारे पु डलीकका म दिर है वहाँसे उत्तर ओर आगे बढनेसे डेढ मील लम्बा एक डा दह है २स दहके किनारे गोपालपुर बसा हुआ है और वहाँ पुराना पीपलका वृक्ष है इसी वृक्षके समीप महाराजका अन्तिम कीर्तन और फिर महाप्रयाण हुआ यहाँसे और नीचे उतरकर कोई आध मीलपर करजाईका स्थान है

दहका यह बीचोबीच भाग है यहाँ मुरलीधरजीका मन्दिर है महाराज दहपर एकान्तमें जो बैठा करते थे सो इसी स्थानमें यहीं रामेश्वर भट्टने उन्हें बहुत कष्ट दिया तब महाराज एक शिलापर तेरह दिन ध्यानमें पड़े रहे इसी अवस्थामें श्रीकृष्णने बालरूपमें उन्हें दर्शन दिये और उनकी बहियोंको जलमेंसे उबारा इस प्रकार यह शिला भक्तजनोंके लिये अत्यन्त प्रिय और पूज्य हुई तुकारामजीके स्वर्गारोहणके पश्चात् भक्त लोग इस शिलाको ढकेलते हुए श्रीविट्ठल मन्दिरमें ले आये और मन्दिरसे सटा हुआ ही तुकारामजीकी प्रथम स्त्री रखुमाबाईका जो वृन्दावन' है उसके सहारे वह शिला खड़ा कर दी उस वृन्दावनके साथ शिलाका फोटो अन्यत्र दिया हुआ है इन्द्रायणीके तटपर खड़े होकर पश्चिम ओर देखनेसे बायी ओर छ मीलपर गाराडी या घोरवडीका पहाड दिखायी देता है देहूसे ठीक पश्चिममें दो मीलपर भण्डारा पहाड और दायीं ओर दहके पारपर देहूसे आठ मीलपर भामगिरि या भामनाथ अथवा भामचन्द्र पर्वत दिखायी देता है भण्डारा पर्वतका फोटो दिया है और दहका भी एक फोटो है श्रीक्षेत्र देहूका यह संक्षिप्त वर्णन है

२ कुल-गोत्र

अब श्रीतुकाराम महाराजके विश्वपावन कुलका कुछ परिचय प्राप्त करें भगवान्‌के भक्तोंका कुल गोत्र देखनेकी वस्तुत कोई आवश्यकता नहीं होती भगवद्भक्त किसी जाति या कुलमें कहीं भी उत्पन्न हुआ हो वह विश्ववन्द्य ही होता है नारायणने जिसे अपनाया उसका कुल गोत्र धन्य हुआ जिसका देहाभिमान गल गया वह वर्णाश्रम धर्मको पार कर गया तीनों लोकको पावन करनेवाले महात्मा जिस देशमें जिस कुलमें जिस जातिमें जन्म लेते हैं वह देश वह कुल वह जाति अत्यन्त पवित्र है

पवित्र सो वंश, पावन सो देश । जहाँ हरिदास जन्म लेते

अर्थात् वह कुल पवित्र है वह देश पावन है जहाँ हरिके दास जन्म लेते हैं यह स्वयं तुकारामजीकी उक्ति है और यह बिल्कुल सही है, तथापि महात्माओंके चरित्रका सब प्रकारसे साङ्गोपाङ्ग विचार करते हुए, लौकिक दृष्टिसे उनके कुल और जातिका विचार करना पड़ता है तुका वाणी (वणिक्) नाम महाराजका प्रसिद्ध है अर्थात् वह जातिके बनिया थे यही लोग सम सकते हैं पर बात यह नहीं है बनिज यापार उनके घरमें कई पुश्तसे होता चला आ रहा था और तुकारामजीने भी अपने पूर्व वयस्में बनियेका ही काम किया इसीलिये वह बनिया कहाये बनिया जाति उनकी नहीं थी आजकल कुछ जात्यभिमानी विद्वान् उन्हें मराठा क्षत्रिय बनानेके फेरमें पड़े हैं पर अच्छा तो यही होगा कि हम तुकारामजीसे ही उनकी जाति और कुल पूछ लें तुकारामजी कहते हैं

याती शूद्र वैश्य किया व्यवसाय । पांडुरंग पाँय कुलपूज्य

अर्थात् जातिका मैं शूद्र हूँ धन्धा किया वैश्यका और उपासना की अपने कुलपूज्य देव (वि ल) की

अच्छा किया कुनबी है नाथ । नहीं तो मारा जाता दम्भके हाथ

हे ईश्वर तूने मुझे कुनबी बनाया यह अच्छा किया नहीं तो दम्भसे मैं मारा जाता

पाया शूद्र वंश । नहीं लगा दंभ पाश १
अब तो मेरे नाथ । माता पिता पंढरिनाथ ध्रु
घोखूँ वेदाक्षर । सो तो नहीं अधिकार २
सर्वभाव दीन । तुका कहे जाति हीन ३

शूद्र व में मैं जन्मा इससे दम्भसे तो मैं छूटा और अब हे

पण्ढरिनाथ तू ही मेरा माँ बाप है वेदाक्षर घोखनेका मुझे अधिकार नही तुका कहता है मैं सब प्रकारसे दीन जातिसे हीन हूँ *

यही तुकाराम आगे चलकर अपनी करनीसे नरके नारायण हुए, विधिके विधाता बने यह बात और है पर उनका जन्म शूद्र जातिमें हुआ था य० उन्हींके वचनोंसे स्पष्ट है महीपतिबाबाने भक्तलीलामृत' में कहा है कि वैष्णव भक्त तुकाराम शूद्र जातिमें उत्पन्न हुए मोरोपन्त और निबन्धमालकारने ब॰ कौतुकके साथ शूद्रकवि' कहकर ही तुकाराम महाराजका उल्लेख किया है तुकारामजीकी जातिके सम्बन्धमें यह विचार हुआ अब इनके कुलका विचार करें समर्थ रामदास स्वामीकी बखरमें हनुमन्त स्वामीने तुकारामका मोरे कुल नाम (अल्ल) दिया है और महीपतिबाबाने आंबले कहा है इनमेंसे सच्चा कुल नाम कौन सा है मोरे या आंबले ? यह प्रश्न कुछ दिन पूर्व लोग किया करते थे परंतु मैंने नासिक तथा त्र्यम्बकमें देहूकरोंके तीर्थपुरोहितोंके यहाँकी बहियाँ देखीं उनसे मालूम हुआ कि इनका कुल नाम मोरे और उपनाम आंबले है त्र्यम्बकमें श्रीतुकाराम महाराज गये थे यह बात पक्की है

* तुकाराम महाराजके इन उद्गारोंसे कुछ लोग बड़ी अधीरतासे यह अनुमान कर बैठते है कि महाराजका यह ब्राह्मणोंपर कटाक्ष है पर ऐसा नहीं है और ब्राह्मण भी इसे अपनी निन्दा न समझें तुकारामजीने वेदोंके अक्षर नहीं घोखे तथापि पुराणादि ग्रन्थ और अन्य प्राकृत ग्रन्थ उन्होंने देखे थे और ब्राह्मणोंको भी वह अत्यन्त पूज्य मानते थे यह आगे चलकर आप ही प्रसगसे ज्ञात होगा अध्ययनके साथ जो दम्भ दर्पादि विकार उठा करते हैं उन्हीं विकारोंका तिरस्कारभर यहाँ प्रकट किया गया है विद्या विवादाय का जो सामान्य प्रकार देखनेमें आता है उससे अक्षर घोखने का अधिकार न होनेके कारण तुकाजी मुक्त रहे सी बातपर सतोष व्यक्त किया है

पर नासिक और त्र्यम्बक दोनों स्थानोंमें तुकाराम महाराजके पुत्र नारायण बोवा और उनके वशजोंके लेख हैं तुकाराम महाराजके हस्ताक्षरका कागज फटकर नष्ट हो गया है यह देखकर बहुत दु ख हुआ नासिकका लेख मुझसे पहले श्री पा न पटवर्धनने प्राप्त करके प्रकाशित किया था पर उन्हें असली लेख नहीं मिला था नकल मिली थी और नकलमें जो एक भूल थी वह उनके लेखमें भी आ गयी अस्तु नारायण बोवाका नासिकका असली लेख वेदमूर्ति शङ्कर गोवि द गायधनीका बहीमें है उस लेखमें तुकारामजीके पुत्रों और पोतोंके नाम हैं वह लेख इस प्रकार है लि नारोबा गोसावी पिता तुकोबा गोसावी दादा बोल्होबा भाई विठोबा गोसावी माहादजी (गोसावी) विठोबाके पुत्र उधोबा रामजी गणेश गोसावी गोविन्द गोसावी माहादजीके पुत्र आबाजी पित्र य कान्हावा गोसावी उनके पुत्र खण्डोवा माता अवळिबाई कुणब वाणी (कुनबी बनिया) उपनाम आबले गाँव देहू प्रान्त पूना कुल नाम मोरे इस असली लेखमें नारोबा (नारायण बोवा) की माताका नाम अवळिबाइ' है श्रीपटवर्धनके लेखमें यह नाम अवन्तीबाई है जो भूल है तुकाराम महाराजकी स्त्रीका नाम जिजाबाइ उर्फ आवळीबाई था नारायण बोवाने अपनी जाति और कुलके म्बन्धमें स्पष्ट ही लिख दिया है कुणब वाणी उपनाम आबले कुल नाम मोरे त्र्यम्बकमें देहूकरोंके तीर्थोपाध्याय वेदमूर्ति थोंडभट बापूजी काण्णवकी बहीमें नारायण बुवाका जो लेख है वह इस प्रकार है नारोबा पिता तुकोबा गोसावी दादा बोल्होबा भाई माहादाबा और बिठोबा भतीजे रामा और गणो और गोविन्दजी चचेरे भाइ आबाजी माताजी जिजाईबाई जात कुनबी आबले बास देहू प्रान्त पूना इस लेखमें नारोबाने अपनी माताका नाम जिजाईबाई दिया है और जाति कुनबी बतायी है और भी कु लेखोंमें कुणब वाणी

अबले नामके उल्लेख है इन सब लेखोंसे यह निर्विवादरूपसे निश्चित होता है कि तुकाराम शूद्र कुणबवाणी (कुनबी बनिया) थे उनका कुल मोरे था और उपनाम आंबिले आंबले अबले था जाति और कुल देहसे सम्बन्ध रखते हैं जो देहातीत है उनके लिये जाति और कुल क्या साधकावस्थामें तुकाराम महाराजने परमार्थ दृष्टिसे यह भी कहा है कि जिन्हें हृदयसे हरि प्यारे हैं वे मेरी जातिके हैं अस्तु तुकारामजी के देहकी जाति और कुल देखा अब उनके घरानेका विचार करें

३ कुलकी पूर्व प्रतिष्ठा

तुकारामजीका घराना बहुत सुखी समृद्ध और प्रतिष्ठित था देहू गाँवमें इस घरानेकी बड़ी प्रतिष्ठा थी यह इस घरानेसे मिले हुए कागजपत्रोंसे जाना जाता है देहूके ये लोग महाजन थे तुकारामजी उदासानवदासीन होकर यह महाजनी वृत्ति छोड चुके थे पीछे नारायण बुवाने यह काम फिरसे प्राप्त करके सँभाल लिया राजशक ५ कालयुक्त सवत्सर अर्थात् शाके १६ (संवत् १७२५) के फाल्गुन मासमें लिखा हुआ शिवाजी महाराजका एक आज्ञापत्र है इसमें लिखा है तुकोबा गोसावीके पुत्र नारायण गोसावीने कहा है कि पूना परगनेके देहू मौजेकी महाजनी मेरे पिताकी पैतृक वृत्ति है पिताजी गोसावी (गोसाई) हुए इससे महाजनी चलाने की वह उपेक्षा ही करते गये अब हम इसे न चलावें तो वृत्तिका लोप होता है इसलिये महाजनी जो पैतृक वृत्ति है उसे हम चलाना चाहते हैं अतएव पहलेसे जैसे यह वृत्ति चली आयी है वैसे ही उसे हम आगे चलावें ऐसा आज्ञापत्र करा दिया जाय इसपर महाराजने पूना परगनेके देशाधिकारीको यह आज्ञा दी है कि इनकी महाजनी वृत्ति मौरूसी चली आयी है वैसी ही आगे चलायी जाय इस लेखसे यह जान पड़ता

है कि तुकारामजीने महाजनी नहीं चलायी पर यह वृत्ति इनके घरानेमें बहुत पहलेसे चली आती थी तुकारामजीके पोतोंकी लिखी हुई एक फेहरिस्तमें भी श्रीतुकारामबावा वास्तव्य क्षेत्र देहूकी क्षेत्र मजकूरकी महाजनकी ये अक्षर हैं तुकारामजीके पुत्र महादेव बोवा विठ्ठल बोवा और नारायण बोवाका शाके १६११ का फारकतीका एक कागज मिला है इसमें महादेव बोवा अपने दोनों भा२योंको लिखते हैं अपने पैतृक घर दो हैं एक श्रीसमीप एक पेठ (बाजार) में महाजनीका घर हमने महाजनीका घर और महाजनी ली और तुम दोनोंको श्रीसमीपवाला घर और श्रीकी पूजा सौंप दी और एक कागजमें लिखा है कि श्रीविठ्ठलटिकें (देहूमें एक खेतका नाम) श्रीके नाम पहलेसे है यह बात गाँवके पञ्चोंके मुँह पन्त मुतालिक और पन्त प्रधानने पक्की करा ली ' य० लेख शाके १६४२ का है इन सब लेखोंसे यह प्रकट है कि तुकारामजीके घरानेमें महाजनीकी पैतृक वृत्ति थी बाजारमें महाजनीकी हवेली महाजनीका अधिकार और आमदनी थी उसी प्रकार श्रीकी पूजा अर्चाके निमित्त पुरातन इनाम था महाजनीकी हवेलीके अतिरिक्त इनका खास घर श्रीके समीप था जिस गाँवमें बाजार लगता था उस गाँवमें महाजन और शेटे दो अधिकारी होते थे इनके ओहदे बड़े समझे जाते थे इसके भी अतिरिक्त इनकी कुछ खेती बारी साहुकारी और व्यापार भी था तात्पर्य प्रतिष्ठित बडे कुलीन और सामान्य व्यापारी घरानेमें तुकारामका जन्म हुआ परन्तु इस घरानेमें देहूकी महाजनी ही चली आया थी सो नहीं एक और पैतृक वृत्ति चली आयी थी तुकारामजीने पहली वृत्तिका उपेक्षा की पर दूसरी वृत्ति इतनी उत्तमतासे चलायी कि उससे देहूके ही क्यों सम्पूर्ण महाराष्ट्र और अखिल विश्वके महाजन होनेके अ।धिकार सब लोगोंने एकमतसे उन्हें प्रदान किये हैं

यह महाजनी क्या थी इसे अब देखें नया कुछ न करे पूर्वजोंकी परम्परा को ही बनाये रहे इसीमें शोभा है

नया करो नहिं कोई । राखो पूर्वतन सोई ।
पैतृक सम्पत्ति । राखो करके युक्ति

नया कुछ न करे पुराना जो कुछ है उसे हर कोई सँभाल रखे पैतृक वृत्तिका जो स्थान है उसकी हर उपायसे रक्षा करो यह तुकोबाका ही उपदेश है

४ परंपरासे प्राप्त श्रीविठ्ठल प्रेम

श्रीतुकाराम महाराज अपनी अनन्य भक्तिसे त्रिलोकमे वन्द्य हुए तथापि जिस घरानेमें उनका जन्म हुआ उस घरानेका इतिहास देखें तो यह कहना पड़ेगा कि विठ्ठल भक्तोंके घरानेमें जन्म होनेसे विठ्ठल भक्ति उन्हें आनुवशिक सस्कारोंसे ही प्राप्त हुइ थी उनके घरानेमें उनके आठवें पूर्वज विश्वम्भर बोवा प्रसिद्ध विठ्ठल भक्त हुए विश्वम्भर बोवाके समयसे ही देहूग्राम पुण्यक्षेत्र हो गया था विश्वम्भर बोवाने देहूमें विठ्ठल मन्दिर बनवाया और उसमें जो विठ्ठल मूर्ति स्थापित कर पूजी वही मूर्ति तुकारामजीके समयमें और उसके पाँच सौ वर्ष बाद आज भी विराज रही है इस अध्यायके शीर्षकमें जो अभग हैं उनमें तुकारामजीने अपने पूर्वजोंकी भगवद्भक्तिका इतिहास ही बता दिया है तुकाजी कहते है पाण्डुरङ्गकी चरण सेवा मुझे अपने पूर्वजोंसे मिली हुई पैतृक सम्पत्ति है मेरे पूर्वजोंने एकादशी महाव्रतके उपवास और पारण करके श्रीविठ्ठलको भक्तिसे अपने वशमें किया और उनके द्वारपाल बने उन्होंने चरण सेवाका अश हमारे भोगके लिये रखा है और इस प्रकार हमलोग वशपरम्परासे विठ्ठलके दास हैं तुकारामजीके पूर्वजोंने

उनके लिये घर द्वार चीज वस्तु जमीन जायदाद सब कुछ रखा था महाजनीकी वृत्ति भी रखी थी और इस पैतृक सम्पत्तिसे उन्हे अपनी घर गिरस्ती चलानेमें बहुत कुछ सहारा भी मिला पर उन्हें इस पैतृक सम्पत्तिकी अपेक्षा वि ल चरण सेवारूप मौरूसी जागीर ही बहुत अधिक कीमती मालूम होती थी और यही उपयुक्त अभगका भाव है सच है बाल बच्चोंके लिये जमीन जायदाद रख जानेवाले माँ बाप क्या कम हैं ? दुर्लभ हैं वे हा जो अपनी सततिके लिये भगवद्भक्तिकी सम्पत्ति छोड जाते हैं

तुकाराम और समर्थ रामदास जैसे पुरुषोंके हिस्सेमें ऐसी सम्पत्ति उस समय आयी थी तुकारामको बार बार इस बातका ध्यान होता था कि विठ्ठल भक्तोंके घरमें मेरा जन्म हुआ मेरे माता पिताने मुझे विठ्ठलोपासना

* तुकारामजीका जन्म सवत् १६६५ (शाके १५३) में इन्द्रायणी तटपर देहू गाँवमें हुआ उसी साल रामभक्त रामदास स्वामीका ज म गोदातटपर जाब गाँवमें हुआ ये दोनों परम भक्त एक ही साल जन्मे और दोनोंने ही पने आचरण और उपदेशके द्वारा महाराष्ट्रमें भगवद्भक्तिका बडा प्रचार किया राम विठ्ठल दुजा नहीं (राम और विठ्ठल दो नही हैं) इस बातको ध्यानमें रखकर उनके चरित्र और उपदेशकी ओर देखनेसे भक्तोंको एक सा ही आनन्द प्राप्त होता है पूर्वजोंने विठ्ठलचरणसेवाकी पैतृक सम्पत्ति दी इसलिये तुकारामने कृतज्ञतासे जैसे उद्गार प्रकट किये हैं वैसे ही समथ रामदासने भी प्रकट किये हैं समर्थ कहते हैं

बापें केली उपासना आम्हीं लाधलों त्या धना १
रामदास्य आलें हाथा अवघा वश ध य आता २

(बापने उपासना की वही धन हमें प्राप्त आ रामदास्य हाथमें आ गया तो सारा व धन्य हो गया)

रूप दैवी सम्पत्ति दी और मुझे श्रीविट्ठलकी गोदमें डाला, मेरे माता पिताने मेरे पूर्वजोंने भगवान्‌की जो भक्ति की उसका मै वारिस हूँ उन्होंने जो रास्ता बताया उसी रास्तेसे मै चल रहा हूँ उन्हींके आचरण का मैं अनुकरण कर रहा हूँ इत्यादि कितनी शुद्ध निरभिमान और कृतज्ञतापूर्ण भावना है कोइ भी मनुष्य जो अच्छा या बुरा होता है उसके दो ही कारण समझमें आते हैं एक उसके कुलकी रीति नीति और दूसरा अपने अपने पूर्व जन्मजात सस्कार किसीके पूर्व सस्कार शुद्ध होते हैं तो कुलकी रीति नीति अच्छी नहीं होती ऐसी अवस्थामें यदि उसके पूर्व-सस्कार बलवान् हुए तो वह भङ्गमें तुलसी सा होता है किसीका जन्म अच्छे कुलमे हुआ रहता है पर उसके पूर्व जन्मके दुष्ट सस्कार बलवान् हो उठते हैं ऐसी अवस्थामें वह तुलसीमें प्याज' सा लगता है पूर्व सस्कार भी शुद्ध हो और जन्म भी उत्तम कुलमे हुआ हो ऐसा तो बडे ही भाग्यसे होता है ऐसा शुद्ध दु धशर्करासयोग जहाँ होता है वहीं शुद्ध बीजके सु दर मीठे फल की सूक्ति चरितार्थ होती है तकारामजीका सिद्धान्त यही है कि बीज जैसे फल उत्तम या अमगल अर्थात् बीज जैसे हा फल होते हैं फलमात्र है बीजसे ही चाहे वे उत्तम हो या अधम जीवके सस्कार परम शुद्ध हो और ऐसे सस्कारोके विकासके लिये अत्यन्त अनुकूल कुल और परिस्थितिमें उसका जन्म हो, यह तो बहुत बडे भा यसे होता है नौ पीढियोंतक विठ्ठलोपासनाका पुण्यव्रत आचरण करनेवाले कुलमें तुकारामका जन्म हुआ

> पढरीची वारी आहे माझे घरी ।
> आणिक न करीं तीर्थव्रत । १
> व्रत एकादशी करीन उपवासो ।
> गाईन अहर्निशी मुखीं नाम ॥ २

प ढरीकी वारी (यात्रा) करनेका नियम मेरे घरमें चला आता है वही मैं करता हूँ और कोई तीर्थ व्रत नहीं करता उपवासे रहकर एका दशीका व्रत करूँगा और दिन रात मुखसे नाम गाऊँगा

यही तुकारामके कुलका व्रत था तुकारामका एक अभग है (ऐका वचन हें सन्त) उसमें वह कहते हैं अनायास पूर्व पुरुषोंकी सेवा हो जाती है इसलिये इन देवताको पूजता हूँ श्रीविट्ठल हमारे कुलकी कुलदेवी हैं यह हमारे कुलदैवत हैं और उनकी उपासन करना हमारा 'कुलधर्म है इत्यादि उद्गार उनके मुखसे अनेक बार निकले हैं जिसके कुलमें जो उपासना चली आती है उसी उपासनाको निष्ठापूर्वक चलानेसे वह कृतकार्य होता है तुकारामका एक अभग है कुलधर्म ज्ञान (अर्थात् कुलधर्मसे ज्ञान होता है) उसमें वह कहते हैं कि कुलधर्मका पालन करनेसे उद्धारका साधन मिल जाता है ान लाभ होता है गति भक्ति विश्रान्ति सब कुलधर्मसे मिलती है दया परोपकार आदि कुलधर्मके पालन में आप ही हो जाते हैं तात्पर्य तुकोबाराय कहते हैं

तुका कहे कुरुधम प्रकटावे देव ।
यथाविध भाव यदि होय

कुलधर्म देवतामें देवत्व प्रत्यक्ष करा देता है यदि यथाविध (शुद्ध) भाव हो यह तुकोबारायका अनुभव है और यही अनुभव अन्य संतोंका भी है श्रीविट्ठलकी भक्तिका कुलधर्म पालन करते करते ही उ हें देवतामें देवत्व मिला भगव मूर्तिमें भगवान् मिले भगव मूर्ति ही सच्चिन्मय हुई उस मूर्तिका ध्यान करते करते अदर बाहर सर्वत्र विट्ठल ही भर गये

इस पवित्र कुलकी भगवद्भक्तिका अरुणोदय यदि विश्वम्भर बोवाको मानें तो उसका मध्याह्न श्रीतुकाराम महाराज हैं किसी भी महात्माके

चरित्रको देखा जाय तो यह देख पडता है कि जिस कुलको वह धन्य करता है उस कुलमें उसके पूर्व दस पाँच पीढियोंतक भक्ति ज्ञान वैराग्यादि गुणोंकी बराबर वृद्धि होती रहती है ज्ञानेश्वर महाराजके कुलमें उनके परदादा त्र्यम्बक पन्त पहले भगवद्भक्त प्रसिद्ध हुए एकनाथ महाराजके घरानेमें उनके परदादा भानुदास प्रसिद्ध हुए समर्थ रामदासके घरानेमें नौ पीढियोंसे श्रीरामचन्द्रकी उपासना हो रही थी उसी प्रकार तुकाराम महाराजके घरानेमें नौ पुरुषोंसे पण्ढरीकी वारीका व्रत चला आ रहा था और तुकाराम महाराजके दादाके परदादा विश्वम्भर बोवा विख्यात विट्ठल भक्त हो चुके थे पवित्र कुल और पावन देशमें ही हरिके दास जन्म लिया करते हैं पवित्रताके संस्कार पावन रहन सहन शुचि आचार विचार जब किसी कुलमें परम्परासे जमते हुए चले आते हैं तब उन सबके फल स्वरूप तीनों लोकमें सत्कीर्ति पताका फहरानेवाला कोई महात्मा अवतीर्ण होता है इसीलिये हमारे धर्मशास्त्रमें कुलपरम्पराको शुद्ध बना रखनेका इतना कडा विधान है हिन्दू-समाजमें कुलधर्म और कुलाचारकी जो इतनी महिमा है उसका कारण यही है पण्ढरीकी वारी (यात्रा) करनेवालोंको मद्य मांस छोड़ना पडता है इसके बिना उनके गलेमें तुलसीकी माला पड ही नहीं सकती पण्ढरीकी यात्रा एकादशी व्रत मद्य मांस परित्याग हरिपाठादि अभंगोंका पाठ और नित्यभजन प्रत्येक वारकरीके लिये अनिवार्य है यह वारकरी सम्प्रदाय तुकाराम महाराजके कुलमें नौ पीढियोंसे चला आ रहा था इससे उनके कुलके संस्कार कितने शुद्ध और पवित्र हुए होंगे इसकी कुछ कल्पना की जा सकती है उत्तम कुलमें जन्म लेने और निष्ठापूर्वक कुलधर्म पालन करनेसे क्या फल मिलता है यह यदि कोई पूछे तो उसका सबसे अच्छा उत्तर श्रीतुकाराम महाराजका चरित्र है

५ श्रीविश्वम्भर बाबा

तुकाराम महाराजके आठवें पूर्वज विश्वम्भर बोवा बचपनमें ही

पितृविहीन हो गये थे वह और उनकी माता ये ही दो आदमी उस कुटुम्बमें रह गये थे पाछे विश्वम्भर बोवाका विवाह हुआ उनकी स्त्रीका नाम आमाबाई था विश्वम्भर बोवाने अपने पिताकी वणिक् वृत्ति ही आगे चलायी उनका व्यवहार खरा था झूठ कभी न बोलना प्रार वसे जो मिल जाय उसका सत्कार्यमें यय करना साधु सत ब्राह्मण और अतिथि अभ्यागतोंका सत्कार करना घर गिरस्तीके सब काम करते हुए नाम स्मरणमें म न रहना रातको भक्तोंको जुटाकर भजन करना श्रीराम और श्रीकृष्णकी लीला सबको नाना और प्राणीमात्रमें दयाभाव रखकर तन मन वचनसे परोपकारार्थ उद्योग करना उनका नित्यक्रम था विश्वम्भर बोवाका वह ढग देखकर उनकी माता बहुत प्रसन्न होती थीं उनका अ त करण प्रेममय था एक बार उ होंने विश्वम्भर बोवाके बताया कि तुम्हारे बाप दादा प ढरीकी वारी बराबर करते चले आये हैं तुम इस क्रमको कभी न छोडो तो ही ससारमें सफलता प्राप्त करोगे

माताका यह उपदेश सुनकर उन्होंने प ढरी जानेकी तैयारी की उ हें स्वय बडा उत्साह था फिर उसमें माताकी आज्ञा तब क्या पूछना है विश्वम्भर बोवा चार भक्तोंको साथ लिये बडे आनन्दसे भजन करते हुए प ढरी गये वहाँका अपूर्व भजन समारम्भ देखकर उ हें अपनी देह का भ भान न रहा वारकरी भक्तोंका मेला च द्रभागाके निर्मल जलका वह विस्तीर्ण पाट श्रीविट्ठलकी शान्त सु दर सगुण मूर्ति पु डलीक नामदेव चोखामेला आदि भगवद्भक्तोंकी अद्भुत लीलाओंका स्मरण करानेवाले वे पु यस्थान हरिकीर्तन और नामसकीर्तनका वह दृश्य देखकर विश्वम्भर बोवाके चित्तमें प्रेमसमुद्र हिलोरें मारने लगा भगवन्मूर्तिके सामनेसे उनसे उठा न जाय

वह ब्रह्म सनातन । निज भक्तोंका हृदयरत्न
नासिकाग्र दृष्टि किया ध्यान । देखते ही मन तन्मय

सर्वांग सुगंध सभार । कंठम कोमल तुलसी हार
विश्वंभर देख श्याम साकार । आनन्दाकार हृदय
सगुण रूप नैनोंमें भाया । साई हिय अंतर समाया
सर्वत्र ब्रह्मानंद छाया । अनुपम पाया संतोष

वह सनातन ब्रह्म जो निज भक्तोंका हृदयरत्न है नासिकाग्रपर उसका ध्यान करके देखा देखते ही मन तन्मय हो गया सर्वाङ्गमें उनके सुगन्ध लेपन हुआ है कण्ठमे कोमल तुलसी माला पडी है ऐसे उन घनसाँवरेको देखकर विश्वम्भरका मन आनन्दित हो गया दृष्टिसे सगुणरूप देखा उसीको हृदय सम्पुटमे रखा सृष्टिमें ही ब्रह्मानन्दका मजा देखकर चित्तको बड़ा संतोष हुआ

इस प्रकार दशमीसे लेकर पूर्णिमाके काल्यैतक पण्ढरीमे रहकर विश्वम्भर बोवा बडे कष्टसे देहू लौट आये पण्ढरीका सब आनन्द उन्होंने अपनी मातासे निवेदन किया और उनकी आज्ञासे प्रति पखवारे पण्ढरीकी वारी करना आरम्भ किया रात दिन श्रीविठ्ठलका चिन्तन करते हुए उन्होंने क्रमसे आठ महीनेमें पण्ढराकी सोलह वारियाँ की प्रत्येक दशमीको एक समय खाते एकादशीको निराहार उपवास व्रत रहते और रातको जागरण करते हरिकीर्तन श्रवणकर उनका अन्तःकरण प्रेमसे गद्गद हो जाता पण्ढरीको बडे उल्लासके साथ जाते पर जब वहाँसे लौटना होता था तब गद्गद होकर अश्रुपूर्ण नयनोंसे भगवान्की मनोहर मूर्तिको देखकर लौटते हुए उनके पैर भारी हो जाते थे भगवद्भक्तिमे विश्वम्भर बोवा इतने तन्मय हो गये थे अन्तमें भगवान् उनकी भक्तिपर मोहित हुए और साकाररूपमें प्रकट होकर उन्होंने उन्हें हरिनाम मन्त्रोपदेश किया चित्त हरिचरणमें रत हो जानेसे घर गिरस्तीके काममें उनका मन नहीं लगता था और इस कारण जैसा कि दस्तूर है कुछ लोग उनके गुण गाने लगे

और कु उनकी निन्दा भी करने लगे विश्वम्भर बोवाकी अनन्यभक्ति देखकर भगवान्ने उन्हें स्वप्न दिया कि अब तुम्हें प ढरपुर आनेकी कोई आवश्यकता नहीं अब मैं ही तुम्हारे घर आकर रहूँगा स्वप्नके अनुसार विश्वम्भर बोवा गाँवके सौ पचास मनुष्योंको सग लिये देहूके समीप जो आम्रवन था वहाँ गये वहाँ जिस स्थानमें सुगन्धित फूल अरगजाचूर्ण और तुलसीदल पड़े हुए देखे वहीं ठहर गये और वह भूमि खनने लगे तो सगुण श्याम पा डुरङ्ग मूर्ति निकल आयी वामागमें माता रुक्मिणी शोभायमान थीं कटिमें दिव्य पीताम्बर था गलेमें तुलसीके मञ्जुल हार थे ऐसी सुन्दर मूर्ति देखकर सब लोग जयजयकार करने लगे विश्वम्भर बोवा उस मूर्तिको देहूमें ले आये और अपने घरके समीप इन्द्रायणीके तटपर बड़े ठाटके साथ उन्होंने उस मूर्तिकी स्थापना की और मन्दिर बनवाया यहींसे देहूग्राम पु यक्षेत्र हो गया

६ विश्वम्भरजीके पुत्र

विश्वम्भर बोवाके देहावसानके पश्चात् उनकी स्त्री आमाबाई अपने दो पुत्र हरि और मुकुन्दके साथ काल व्यतीत करने लगीं पतिके सत्सगसे उनके भी अन्त करणमें भगवत् प्रेम उदय हो चुका था पतिके पीछे श्रीवि लकी पूजा अर्चा उत्तम प्रकारसे चलाते रहना ही उ हें प्रिय था कु दिन ऐसे ही चला पर पीछे पुत्रोंकी राजसी प्रकृतिके कारण उनके विचारोंमें बाधा पड़ने लगी हरि और मुकुन्दको सेना तुरग शिविका आभरण का शौक लगा क्षात्रवृत्तिकी ओर खिंचकर वे दोनों माँका कहा न मान घरसे चले गये और किसी राजाके यहाँ नौकरी करने लगे यह राजा कौन कहाँका था यह जाननेका कोई साधन नहा है पुत्रोंने माँको भी अपने पास बुला लिया माँ अपनी दोनों बहुओंके साथ वहाँ गयीं

आमाबाई तनसे तो अपने पुत्रोंके पास गयी पर उनका मन देहकी विठ्ठलमूर्तिमें ही लगा रहता था राजसेवा करनेवाले पुत्रोंके ठाट बाटसे उन्हें कुछ भी सुख नही होता था उनकी तो यही इच्छा थी कि लड़के घर ही रहें पैतृक धन्धा ही करें और भगवान्की पूजा अर्चा चलाते रहें परतु बेटे नवयुवक थे यौवन उनके रक्तके अदर खेल रहा था वैभव और प्रतिष्ठा प्राप्त करनेकी धुन उनपर सवार थी इस कारण उन्हे पुत्रोंके पास जाना पड़ा सासारिक स्नेह सम्बन्धका प्रेमसुख कितना निष्ठुर होता है यह उन्हे अभी देखना था मायापाश बड़ा कठिन है मन देहूमें भगवान्के पास है और तन लड़कोंके पास यह उनकी हालत थी बेटे यशस्वी निकले यश दिन दिन बढने लगा कुछ काल बाद श्रीविठ्ठलने आमाबाईको स्वप्न दिया तुम पुत्र मोहसे हमे देहूमे छोड़ आयी हो पर तुम्हारे पुत्र युद्धमें मारे जायँगे और उनका सारा वैभव नष्ट हो जायगा आमाबाईने यह स्वप्न अपने पुत्रोसे कहा पर वे स्वप्नपर विश्वास करनेवाले न थे अन्तको राजापर शत्रुने आक्रमण किया घोर युद्ध हुआ और उसमें हरि और मुकुन्द दोनो ही मारे गये मुकुन्दकी स्त्री सती हुई शोका कुल आमाबाइ बडी बहूको साथ ले देहू लौटीं माताकी आज्ञा उल्लङ्घन करनेका फल बेटोंको मिला और माता पहलेसे भी अधिक विरक्त होकर श्रीविठ्ठलचरणोंमें और भी अधिक अनुरक्त हुई हरिकी स्त्री गर्भवती थी प्रसूतिके लिये उन्हें आमाबाईने उनके नैहर नवलाख डबर भेज दिया वहाँ यथासमय वह प्रसूत हुई लडका हुआ और उसका नाम विठ्ठल रखा गया दुःख शोक और वैराग्यसहित भगवत्प्रेमकी परस्परविरुद्ध लहरोंसे आमाबाइकी चित्तवृत्ति उदासीन हो चुकी थी वृद्धावस्थामें जब शरीर जराजर्जर हो गया तब उनके उपास्यदेवने उन्हे धैर्य दिया उनपर भगवान्का पूर्ण अनुग्रह हुआ और नन्हें पोतेको पीछे छोड वह स्वर्ग सिधारीं

७ स ति विस्तार

हरिके बेटे वि ल द हैं माता पिताके वियोग दु खके कारण यौवनमें हा वैरा य हो गया और भगवद्भक्तिमें ही उनका मन लगा इन वि लके पदाजी नामक पुत्र हुए पदाजीके शकर शकरके कान्हा और कान्हाके पुत्र बोलाजी हुए यही बोलाजी तुकाराम महाराजके पिता थे

८ वशावली

तुकाराम महाराजके ज्येष्ठ पुत्र महादेव बोवाके वशज (वर्तमान) रामभाऊ देहूकरके घरमें प ढरपुरमें तुकाराम महाराजकी जो वशावली मिली वह इस प्रकार है

विश्वम्भर बोवा (स्त्री आमाबाइ)

हरि बोवा (स्त्री बिठाबाई)　　　　मुकुन्द बोवा

विठोबा

पदाजी बोवा

शकर बोवा

कान्हया

बोल्हो बोवा (स्त्री कनकाबाई)

श्रीतुकाराम महाराज चैतन्य
(स्त्री १ रखमाबाई और २ जिजाबाई)

सन्तलीलामृत में महीपतिबाबाने जो वशावली दी है वह और यह

एक ही है तुकाराम महाराजके जो वशज देहूमें है उनके यहाँ भी यही वशावली है केशवचैत यकल्पतरु ग्र थमें निरञ्जन स्वामीने जो वशावली दी है वह भी इसी वशावलीसे मिलती है

देहूके कागज पत्र देखते हुए तुकाराम महाराजके पोते उद्धव बोवाके हाथका एक लेख मिला है वह यहाँ देते है

श्री

वंशावली स्वामीकी मूल पुरुष विश्वम्भर बावा इनके पुत्र दो बड़े हरि छोटे मुकुन्द हरि बावाके पुत्र विठोबा विठोके पुत्र पदाजी पदाजीके पुत्र शकर बावा शकर बावाके पुत्र कान्होबा कान्होबाके पुत्र बोल्हो बावा (इनके) पुत्र बड़े सावजी बावा मझले तुकाराम बावा और छोटे कान्होबा सावजी बावाके कुछ नहीं तुकोबाके पुत्र तीन बड़े महादेव मझले विठोबा छोटे नारायण बावा महादेव बावाके पुत्र आबाजी बावा आबाजी बावाके पुत्र तीन बडे महादेव बावा मझले मुकुन्द बावा और छोटे जयराम बावा १ विठोबाके पुत्र चार बड़े रामाजी बावा और उधो बावा और गणेश बावा और गोविन्द बावा रामाजी बावाके कुछ नही उधो बावाके पुत्र बड़े खडोबा मझले विठोबा छोटे नारायण बावा कन्होबाके गगाधर बावा गगाधर ब वाके खडोबा और खडो बावाके गगाधर बावा

इस प्रकार तुकारामजीकी जाति कुल उनके पूर्वज और उनकी वंशावलीके सम्बन्धमें जो जो विश्वसनीय बात मिली वे इस अध्यायमें समाविष्ट की गयी हैं

तीसरा अध्याय

संसारका अनुभव

भगवान्की यह पहचान है कि जिसके घर वह आते हैं उसकी गृहस्थी पर चोट आती है

श्रीतुकाराम

१ महाराष्ट्र धर्मकी पूर्व परम्परा

तुकारामका जन्म सवत् १६६५ (शाके १५३) में हुआ यह बात पूर्वाध्यायमें यथेष्ट प्रमाणोंद्वारा सिद्ध की जा चुकी है अब जिस समय महाराष्ट्रके क्षितिजपर तुकाराम महाराज जैसे भक्तचूडामणि उदय हुए उस समयके महाराष्ट्रका विहगम दृष्टिसे सक्षेपमें पर्यालोचन करें श्रीज्ञानेश्वर महाराजके समयमें महाराष्ट्र समग्र ऐश्वर्य भोग रहा था महाराष्ट्रकी राजधानी उस समय देवगिरि थी जिसका आधुनिक यवन नाम दौलताबाद है यादव (जाधव) राजा राज्य करते थे और राजशासन उत्तम प्रकारसे होता था श्रीज्ञानेश्वरीके उपसंहारमें ज्ञानेश्वर महाराजने उस समयके यादवराज श्री रामचन्द्र या रामदेव रावका इस प्रकार बड़े सम्मानके साथ उल्लेख किया है वहाँ यदुवशविलास जो सकलकला निवास यायसे पालें क्षितीश

श्रीरामचन्द्र शालिवाहनकी तेरहवीं शताब्दीमें रामदेव राव जैसे धर्मात्मा राजा हेमाद्रि जैसे विद्वान् और बुद्धिमान् राजकार्यकर्ता बोपदेव जैसे पण्डित श्रीज्ञानेश्वर महाराज जैसे अवतारी भागवतधर्मप्रवर्तक नामदेव जैसे सगुणप्रेमी सन्त चोखा मेला गोरा कुम्हार सावता माली जैसे भक्त मुक्ताबाइ जनाबाई जैसी परम भक्त स्त्रियाँ जिस कालमें महाराष्ट्रमें उत्पन्न हु२ वह काल निश्चय ही परम धन्य है शाके १२१२ (सवत् १२४७) में हाराष्ट्र साहित्यमें मुकुटमणिके समान शोभायमान ज्ञानेश्वरी जैसा अद्वितीय ग्रन्थ महाराष्ट्रके महद् भाग्यसे महाराष्ट्रमे निमाण हुआ इस कालके पश्चात् शीघ्र ही उत्तरकी ओरसे मुसलमानी फौज दक्षिणपर चढ आयी और दक्षिण देशपर मुसलमानोंका आधिपत्य स्थापित हुआ तीन चार सौ बरसतक दक्षिणपर मुसलमानोंका अधिकार रहा पर इस कालमे भी यह अधिकार सर्वत्र पूर्णरूपसे प्रस्थापित नहीं था शिरके आदि कई मराठे खानदान ऐसे थे जो अपने गढ और प्रदेश अपने हाथमें ही रखे हुए थे और कभी मुसलमानी बादशाहतके सामने नहीं झुके ये स्वतन्त्र ही थे गुलबर्गाके बाहमनी सुलतान जब तक रहे थे उसी समय तुगभद्राके तटपर विद्यारण्य स्वामी (पूर्वाश्रमके माधवाचार्य) ने हरिहर और बुक्क नामक दो युवा राजकुमारोंको शिक्षा देकर उनके द्वारा विजयानगर राज्य स्थापित कराया मुसलमानोंके बाहमनी राज्यके पाँच टुकड़े हो गये तबसे मराठे वीरों और ब्राह्मण राजनीतिज्ञोंने धीरे धीरे अपने पाँव फैलाना आरम्भ किया और शाके १५४९ (सवत् १६८४) में श्रीशिवाजी महाराजका जन्म होनेके पूर्व महाराष्ट्रके पुनरुज्जीवनके स्प लक्षण दिखायी देने लगे बीचकी तीन शताब्दियोंमें पराधीनताके कारण महाराष्ट्रको अनेक क्लेश भोगने पड़े। तथापि मराठा मण्डलकी तेजस्विता इस कालमें भी बची हुई थी उनका स्वाभिमान बिल्कुल नष्ट नही हुआ था विधर्मियोंका राज्य होनेसे यह काल धर्म ग्लानिका रहा तथापि इसी कालमें अनेक सन्त कवि उत्पन्न हुए और

उन्होंने धर्मनिष्ठाकी बुझती सी ज्योतिको बुझने न देकर प्रज्वलित कर दिया ालिवाहनकी तेरहवीं शताब्दीमें ज्ञानेश्वर नामदेवादि महात्माओंने भागवत धमकी स्थापना करके धर्मका झडा महाराष्ट्रपर फहरा दिया था इन महापुरुषोंका यह उद्योग यर्थ होनेवाला नहीं था इन्होंने जिस उदार धर्मतत्त्वामृतकी वर्षा कर रखी थी उसीसे विधमा राजसत्ताके धर्मग्लानिरूप भयकर दुर्भिक्षमें भी हिंदुओंका हिन्दुत्व बचा रहा इस कालमें जो स त और कवि हुए उन्हींके कर्त यसे धर्मकी रक्षा हुई और विपरीत कालसे जूझते हुए महाराष्ट्र समाजका धैर्य नष्ट नहीं हुआ वह धीरतासे विधर्मके साथ लड़ता रहा और अपने आपको बचाता रहा किसी भी राष्ट्रका जो उत्कर्ष होता है वह स्वदेश स्वधर्म और स्वभाषारूपमें तीन प्रकारसे होता है इन्हीं तीनोंका उत्कर्ष राष्ट्रका उत्कर्ष है और इन्हीं तीनका ह्रास राष्ट्र की मृत्यु है महाराष्ट्र पराधीन तो हुआ पर पराधीनताकी उस प्रतिकूल परिस्थितिमें भी उसने स्वधर्म और स्वभाषाका बाना नहीं छोडा मुसल मानोंकी नौकरी करनेवाले मराठे बीरोंमेंसे जैसे आगे चलकर शाहजी जैसे पराक्रमी कुशल राजनीतिज्ञ उत्पन्न हुए वैसे ही मुसलमानोंकी नौकरी करने वालोंमें ही दामाजी पन्त और जनार्दन स्वामी जैसे परमभागवत भी हुए और उन्होंने ही लोगोंकी धर्मनिष्ठा जागृत रखी विधर्मियोंके शासन काल में आचार विचार भी उलट पलट जाते हैं आचार और विचारका जहाँ मेल होता है वहीं धर्म जीता जागता रहता है बौद्ध सम्प्रदायकी लहरको लौटाते हुए पहले कुमारिल भट्टने आचार धर्मको जगाया और तब शकरा चार्यने ज्ञानका डका बजाया शाके १३ (सवत् १४३५) से श्रीपाद श्रीवल्लभ और श्रीनृसिंह सरस्वतीने धर्मको जगानेका जो काम किया उसका परिचय ाके १४७ के लगभग निर्माण हुए गुरुचरित्र ग्रन्थसे मिल सकता है नृसिंह सरस्वती शाके १३८ बहुधान्य सवत्सरमें फाल्गुन बदी को निजान दमें बैठे (गुरुचरित्र अ ५१) शाके १३९६ के भीषण

दुर्भिक्षमें दामाजी पन्तने बादशाहके कोपसे आनेवाले सकटके सामने उदारता-
से अपनी ाती खोलकर शाही धान्यागार लुटा दिया और सहस्रों मनुष्यों
के प्राण बचाये भगवान् भक्तोंके सदा सहाय हैं यह बात भगवान्ने विठू
महारका रूप धारणकर सबको जँचा दी कान्हूपात्रा वेश्या थी पर उसकी
भी निष्ठा देखकर लोग भक्तिमार्गपर विश्वास करने लगे मगलवेढ्याके
दामाजी पन्तके समान ही देवगढ (देवगिरि दौलताबाद) में जनार्दन
स्वामीके तरने बडा काम किया जनार्दन स्वामीके शिष्य एका जनार्दन
जनी जनार्दन और रामा जनार्दन थे चांगदेव दासो पन्त आदि अनेक
भक्त इस कालमें हुए एकनाथ महाराजके (सवत् १५८५ १६५५)
उदार चरितसे महाराष्ट्रमें फिर भागवत धर्मका प्रचण्ड जय-जयकार हुआ
एकनाथी भागवत (सवत् १६३) रुक्मिणीस्वयवर (सवत् १६२८)
भावार्थरामायण सहस्रों अभग और अन्य कविताएँ महाराष्ट्रमे लोकप्रिय
हो गयीं सप्त श्रृगीपर त्र्यम्बक राय चिंचवडमे मोरया गोस्वाबी शिगणापुर
में महालिङ्गदास इत्यादि महाराष्ट्रके सभी प्रान्तोंमें सवत् १६२५ (शाके
१५) के लगभग अनेक भगवद्भक्त और ग्रन्थकार निर्माण हुए इन
सबके पृथक् पृथक् कार्योंका समवेत फल भागवत धर्मका प्रचार ही था और
उपासना अपनी अपनी भिन्न होनेपर भी अथवा सम्प्रदायोंके भिन्न होते
हुए भी इन सबके द्वारा धर्मके ही जगानेका काम हुआ ज्ञानेश्वर
नामदेवके पश्चात् महान् कार्य एकनाथ महाराजके द्वारा हा हुआ एकनाथ
महाराजने गुरु कृपाकी अलौकिक शक्तिसे अत्यन्त प्रासादिक ग्रन्थ रचे और
उनके दिव्य चरित्रका भी जन समूहपर बडा ही उत्तम सस्कार घटित हुआ
जनार्दन स्वामीके ही सदृश एकनाथ महाराज भी ज्ञानेश्वरीपर प्रवचन किया
करते थे २ससे ८स ग्र थकी ओर सबका ध्यान लगा एकनाथ महाराज
के अवतार कार्यका प्रभाव देवगढ पैठण और पण्ढरपुरपर ही नही पूना
प्रान्तपर भी खूब पड़ा सवत् १६४ में एकनाथ महाराज सैकड़ों बार

करियोंको साथ लिये आलन्दी गये वहाँ तीन महीने रहे नित्य कीर्तन भजन हुआ करता था वहाँ वह किसीसे कुछ लेते नहीं थे एक लिङ्गायत बनियेके रूपमें भगवान् नित्य सबको सीधा पानी दिया करते थे भगवान्ने ही एकनाथ महाराजको ऋणमुक्त किया यह बात पूना प्रान्तमें घर घर फैल गयी और इस घटनाके ५ वर्ष बाद तुकाराम महाराजने यह कहकर इस घटनाका उल्लेख किया है कि प्रत्यक्षके लिये और प्रमाण क्या चाहिये (भगवान्ने) एकाजी (एकनाथ) का ऋण शोध दिया यह तो प्रत्यक्ष ही है नाथ आल दीसे लौटे तबसे आलन्दीकी वारी (यात्रा) होने लगी और १ ही वर्ष बाद सवत् १६५ के लगभग एक देशपाण्डे सज्जनने नेश्वर महाराजकी समाधिके आगे सभामण्डप बनवा दिया एकनाथ महाराजके आगमनसे आलन्दीकी महिमा और भी बढी यात्रा अधिक जाने लगी ज्ञानेश्वरीके जहाँ तहाँ पारायण होने लगे और भागवत धर्मपर लोगों की श्रद्धा और प्रीति खूब बढी एकनाथ महाराजने सवत् १६५५ में पैठणमें समाधि ली और इसके दस ही वष बाद देहूमें तुकारामका जन्म हुआ तुकाराम और रामदास स्वामी एक ही सवत्में अवतार्ण हुए और उनके द्वारा महाराष्ट्रमें कृष्ण भक्ति और राम भक्तिकी दो धाराएँ बहने लगीं गुरु चरित्रका दत्तसम्प्रदाय पण्ढरीका वारकरी सम्प्रदाय समर्थ रामदासका रामदासी सम्प्रदाय आदि सभी सम्प्रदाय भगवद्भक्ति सिखाने वाले भागवत धर्मके ही सम्प्रदाय थे और इनके मुख्य सिद्धान्तोंमें परस्पर कोई भेद नहीं था सबने एक मको ही जगाया तुकाराम और समर्थ जब १९ वर्षके थे तभी अर्थात् शाके १५४९ (सवत् १६८४) में पूना प्रान्तके ही शिवनेरी दुर्गमें श्रीशिवाजी महाराजका जन्म हुआ तुकाराम रामदास और शिवाजी ये तीन महाविभूति हुए और इन्होंने जो कुछ कार्य किया उसके पोषक और सहायक अनेक पुरुष उस कालमें महाराष्ट्रमें उत्पन्न हुए थे महाराष्ट्रमें प्रवृत्ति और निवृत्तिका ऐक्य सिद्ध होनेको था इन

घरकी विठ्ठल मूर्तिकी बड़े प्रेमसे पूजा अर्चा करते सदा भजन पूजनके ही आनन्दमें रहते यही उनका नित्य कर्म था बोलाजीकी यह ख्याति थी कि जगत्का व्यवहार करते हुए वह कभी झूठ नहीं बोलते थे बोलाजी प्रापञ्चिक कार्योंमें भी दक्ष थे कुछ महाजनी कुछ व्यापार और कुछ खेती करके सुखपूर्वक प्रपञ्च साधन करते थे यापारमें दया और सचाई रखते थे उनके प्रथम पुत्र सावजी हुए द्वितीय पुत्रके समय कनकाईको वैराग्यका ही चसका लगा वह एकान्तमें बैठतीं किसीसे अधिक न बोलतीं और प्रपञ्चकी ओर कुछ भी ध्यान न देतीं यह हालत हो गयी थी उनकी कोखसे महाविष्णु भक्त जन्म लेनेवाले थे शायद इसी कारण उन दिनों उ हें नामदेव रायके अभग सुननेकी इच्छा होती थी अथवा वह हरिकीर्तन सुनतीं या विठ्ठल मन्दिरमें अकेली ही श्रीविठ्ठल रखुमाईकी ओर घण्टों टक लगाये बैठी रहती थीं यथासमय उनकी कोखसे श्रीतुकारामका जन्म हुआ भक्तलीलामृतमें महीपतिबाबा प्रेमसे वर्णन करते हैं (तुकाराम महाराज क्या अवतीर्ण हुए)

कनकामाईकी कोखमें महानक्षत्र स्वातीकी ही वर्षा हुई अथवा मुक्तिके परेकी चतुर्था भक्ति ही उतर आयी या यह कहिये कि स्वय वरुण भगवान् ही अवतीर्ण हुए उस उदरशुक्तिकामें नामप्रेमका नीर गिरा

दर्शन करने और कीर्तन सुनने बोलाजी भी कनकाइके साथ कई बार गये होंगे और तुकोबाजीने बचपनमें ही माता पिताके मुखसे ही एकनाथ महाराजकी बातें सुनी होंगी बोलाजी स्वय परम्पराके वारकरी थे वह कब ऐसा अवसर छोड सकते थे कि जब एकनाथ महाराज जैसे परम भक्त और वारकरी सम्प्रदायके तत्कालीन सर्वमान्य महन्त बोलाजीके स्थानसे तीन ही कोसके फासिलेपर आलन्द में आये हों ? अवश्य ही बोलाजीने उनके दर्शन किये होंगे कीर्तन सुने होंगे और उनके सत्सगसे लाभ उठाया होगा

वही हरिप्रेमी हरि भक्त मुक्ताफलरूपसे तुका जन्मे नवधा भक्तिके जो आयास किये वही नव मास पूण हुए और कनकामाईके महद्भाग्यसे परम वैष्णव उनके गर्भमें आकर रहे

कनकामाईके सौभाग्यका क्या कहना है अपनी असीम भक्तिसे भगवान्‌को नचानेवाला और तीनों लोकमें सत्कीर्तिका झण्डा फहरानेवाला सुपुत्र जिसने जना उस पुत्रवतीके महद्भाग्यकी महिमा कहाँतक गायी जाय यह कनकाईके एक जन्मका नहीं असख्य जन्मोंका पुण्य था जो देवलोकके लिये भी दुर्लभ तुकाराम जैसे पुत्रश्रेष्ठका लाभ हुआ

ऐसी कीर्तन भक्तिका डका बजानेवाला समर्थ पुत्र जिसकी कोखसे पैदा हुआ वही तो यथार्थ पुत्रवती है विषयोंसे वैराग्य हो इसीलिये वेदान्तशास्त्रने तथा साधु सन्तोंने भी स्त्रा निन्दा की है परन्तु यहाँ तो यही कहना पडेगा कि

नारी निन्दा मत कर प्यारे नारी नरकी खान ।
इसी खानसे पैदा होते भाष्म राम हनुमान

जिस खानमें ऐसे रत्न पैदा होते हैं उस स्त्री जातिकी निन्दा कौन कर सकता है ? श्रीकृष्णको गर्भमें धारण करनेवाली देवकी और उनका लालन पालन करनेवाली यशोदा जैसी भाग्यवती थीं तुकारामकी जननी भी वैसी ही भाग्यवती थीं तुकारामके पश्चात् कान्हजीका जन्म हुआ सावजी तुकाजा और कान्हजी तीनोंकी बाललीलाओंको अवलोकन कर बोलो बोवा और कनकामैया मन ही मन अपने भाग्यको धन्य समझते हों तो इसमें क्या आश्चर्य है ?

३ बाल्य काल

तुकारामजीके जीवनके प्रथम तेरह वर्ष माता पिताके सरक्षण छत्रकी सुख शीतल छायामें बडे सुखसे यतात हुए बचपनमें तुकाराम बाहरके

लड़कोंसे अवश्य ही अनेक प्रकारके खेल खेले होंगे श्रीकृष्ण और उनके ग्वाल बाल सखाओंकी बाल लीलाओंका उन्होंने बडे ही प्रेमसे वर्णन किया है डडा डोली गेंद तडी मृदङ्ग कबड्डी आती पाती गुल्ली डडा आदि बच्चोंके अनेक खेलोंपर उनके अभग हैं भगवान्से प्रेम कलह करते हुए भी उन्होंने बच्चोंके खेलोंपर मजेदार दृष्टान्त दिये हैं इन सबसे यह पता चल जाता है कि बचपनमें तुकाराम बड़े खेला ी थे भगवान्से झगड़ते हुए उन्हें फसड्डी कह देना कहीं पासा उलटा पड़ा और कहीं पौबारह' चिल्लाना इत्यादि अनेक खेलोंकी परिभाषाओंके प्रयोगोंसे तुकारामजीके बालकपनका खेलाड़ीपन ही प्रकट होता है मनुष्यके जीवनकी विशेष घटनाएँ उसकी रुचि अरुचि उसके भिन्न भिन्न अनुभव उसके अभ्यास उसके अनेक स्थित्यन्तर उसके सङ्गी साथी इन सबका ही प्रभाव उसके भाव विचार और भाषापर पड़ा करता है उसकी भाषासे भी ऐसे प्रभावोंका पता चलता है अवश्य ही इन भेदोंको समझना बडी सावधानी और सूक्ष्मदर्शिताका काम है यहाँ एक उदाहरण देकर बातको स्पष्ट करते हैं उदाहरण भी मनोरञ्जक होगा युक्ताहारविहार क्या है यह तो सभी जानते हैं ज्ञानेश्वर महाराजने युक्ताहारविहार का अर्थ किया है युक्तताकी नापसे नपे हुए गिनतीके कौर और एकनाथ महाराजने भगवान्को भोग लगाकर यथेष्ट भोजन करने को ही युक्ताहारविहार बताया है इसका रहस्य यही जान पडता है कि एकनाथ महाराजके यहाँ था सदावर्त और नित्य ब्राह्मण भोजन हुआ करता था इसलिये उन्होंने युक्ताहारविहार से ऐसा ही अर्थ ग्रहण किया जिससे भगवान्को भोग लगाकर ब्राह्मणोंको तृप्त करनेके सदनुष्ठानमें कोई बाधा न पडती तात्पर्य यह कि मनुष्य जैसी अवस्थामें होता है जैसा उसका अनुभव भाव और स्वभाव बनता है वैसे ही उसके मुखसे भाषा भी निकलती है साधु सन्तोंकी सूक्तियोंमें अलौकिक परमार्थ तो होता ही है पर उसके साथ ही लौकिक

व्यवहारका निर्देश भी होता है यही नहीं प्रत्युत उनकी वाणीमें पारमार्थिक सिद्धान्तके साथ व्यावहारिक दृष्टान्तका ऐसा मेला रहता है कि उनके ग्र थोंसे परमार्थके साथ साथ व्यवहारकी भी अनुपम शिक्षा मिलती है प्राय व्यवहारकी भाषामें ही परमार्थके गूढ़ सिद्धान्त बता दिये जाते हैं उनके दृष्टान्त रूपक और उपमालङ्कारादिमें यवहारकी शिक्षा भरी हुई होती है और सिद्धान्त तो परमार्थके देनेवाले होते ही हैं श्रीतुकारामजीका बचपन खेल खेलवाड़में ही बीता ऐसा कोई न समझे हाँ उनकी वाणीमें खेलाडी पनका रग जरूर है पाण्डुरङ्गका भक्ति तो उनकी घरकी खेती ही थी

४ ससार सुखका अनुभव

बोलाजीने अपने तीनों पुत्रोंके विवाह क्रमसे कर दिये तीनों ही विवाहके अवसरपर बालक ही थे तुकारामजीका जब प्रथम विवाह हुआ तब उनकी आयु बारह वर्ष रही होगी उनकी गृहिणीका नाम रखुमाई था विवाहके पश्चात् दो एक वर्षके भीतर ही जब यह मालूम हुआ कि रखुमाईको दमेकी बीमारी है और उसके अच्छे होनेका कोई लक्षण नहीं तब तुकारामजीके माता पिताने उनका दूसरा विवाह कर दिया तुकाराम जीका यह दूसरा विवाह पूनेके आपाजी गुलबेनामक एक धनी साहूकारकी कन्याके साथ हुआ तुकाजीकी इन गृहिणीका नाम जिजाबाई या आवळी था पुत्रों और बहुओंसे इस प्रकार घर भरा हुआ देखकर कनकाईको अपना ससार-सुख ध य प्रतीत हुआ होगा एक गृहिणीके रहते दूसरा विवाह करना यदि दोषास्पद हो तो भी यह दोष तुकाजीको नहीं दिया जा सकता यह स्पष्ट ही है पुत्रोंको और बहुओंको देखकर कनकाईके दिन आनन्दमें बीतते थे महीपतिबाबाने ठीक ही कहा है

पुत्र स्नुषा धन सम्पत्ती । भ्रतारयुक्त सौभाग्यवती
याहूनि आनद स्त्रियाँचे चित्तीं । नसे निश्चित दुसरा ।

पुत्र बहू धन सम्पत्ति सौभाग्यस्वरूप जीवित पति इससे बढकर स्त्रियोंके लिये सचमुच ही और कोई दूसरा आनन्द नहीं हो सकता बोलाजीकी यह ढलती उमर थी पचासके लगभग होंगे सुखपूर्वक उनका समय कट रहा था सभी बातें अनुकूल थीं रोजगार हाल अच्छा था कोई कमी नहीं दीनवत्सल भगवान्‌की पूर्ण कृपा थी सब प्रकारसे सुखी थे धीरे धीरे बोलाजीके जीमें यह बात आने लगी कि अब सब काम काज लड़कोंको सौंपकर भगवान्‌की ओर ध्यान लगाना चाहिये उन्होंने बड़े बेटेको पास बुलाया और कहा कि प्रपञ्चका सारा भार अब तुम अपने सिर उठा लो पर सावजीके विरक्त चित्तमें यह बात नहीं जमी उन्होंने बड़ी नम्रताके साथ कहा मुझे इस जजालमें मत फँसाइये मैं तो अब तीर्थयात्रा करने जाना चाहता हूँ ऐसा आशीर्वाद दीजिये कि यह शरीर चरितार्थ हो बोलाजीने बहुतेरा समझाया पर सावजीकी समझ गृहप्रपञ्चकी मायासे छूटना ही चाहती थी सावजीसे निराश होकर बोलाजीने सारा भार तुकारामजीके कन्धोंपर रखा इस समय तुकाजी कुल तेरह वर्षके बालक थे इस सुकुमार अवस्थामें ही इस प्रकार उनके सिर घर गिरस्तीका गुरु भार आ पड़ा धीरे धीरे सब काम उन्होंने सँभाल लिये जमा खर्चकी बही लिखने लगे हुण्डी पुर्जी लेने देने लगे दूकानपर बैठने लगे खेती बारी देखने भालने लगे महाजनी भी करने लगे और ये सब काम वह बड़ी दक्षताके साथ करने लगे लोगोंके मुँह इनकी प्रशंसा सुनी जाने लगी सब लोग कहने लगे देखो बालक होकर कैसी चतुराई दक्षता परिश्रम और सचाईके साथ सब काम सँभाले हुए है बही खाता देखकर अपना सब व्यवहार उन्होंने अच्छी तरह समझ लिया था और वे बड़ी कुशलतासे सब काम चला रहे थे बोलाजीने उनको यह सीख दी थी कि लेन देन और सब काम काज ऐसे कौशलसे करना चाहिये कि हानि लाभ सदा दृष्टिमें रहे और ऐसा ही काम करे जिसमें अन्तमें अपना लाभ हो तुका

रामजीने पिताके उपदेशको अपने सिर आँखों रखा और कहा कि मै ऐसा ही करूँगा ऐसा ही करूँगा ये शब्द वैखरीके थे और इनका जो आन्तरिक परम अर्थ था वही तुकारामजीके चित्तमें जाग उठा उ हें जो परम अर्थ मिला वह यही था कि सावधान प्रपञ्चमें जो कुछ लाभ है वह श्रीहरि है और अशाश्वत द्रव्यसग्रह हानि है इस लाभ हानिको ध्यानमें रखकर श्रीहरिपदरूप परम लाभको जोड लो तुकाजीने घरका सब काम बड़ी अच्छी तरहसे सँभाल लिया यह देख उनके माता पिता बहुत सुखी हुए उनकी व्यवहार दक्षता देख उनके भाई बन्द अड़ोसी पडोसी बोलाजीके पास आ आकर उन्हे बधाइयाँ देने लगे चार वर्ष इसी प्रकार बड़े सुखमें बीते माता पिता भाई ब द सभी प्रसन्न थे, धन धान्यसे घर भरा था घरके सब लोग निरामय थे गाँवमें सर्वत्र बडी प्रतिष्ठा थी अभाव नाममात्रको भी नही था सब लोग तुकारामको ध य धन्य कहने लगे

५ मातृसुख

तुकारामजीको इसी समय माता पिता विशेषत मातासे बडा सुख मिला यह बात उनके अभगोसे स्पष्ट ही प्रतीत होती है परमपिता परमात्माको हम चाहे जिस भावसे देख और पुकार सकते हैं कारण वह पिता भी हैं और माता भी परन्तु तुकारामजीने भगवान्को प्राय मा कहकर ही पुकारा है श्रीगीताजीमें माता धाता पितामह' पितासि लोकस्य चराचरस्य कहकर भगवान्को दोनो ही रूपोंमें दिखाया है और माता पिता हैं भी एक से ही तथापि माताके हृदयका प्रेमरस कुछ और ही है श्रुतिमाताने भी पहले मातृदेवो भव कहा पीछे पितृदेवो भव कहा माता मा श दमें जो माधुरी है, जो जादू है जो प्रेमसर्वस्व है वह किसी भी शब्दमें नहीं है माताका हृदय प्रखरतम ग्रीष्मसे भी कभी न सूखनेवाला और सदा भरा पूरा बहता हुआ अमृत सरोवर है माताका प्रेम सब जीवोंका जीवन

है माता परमपिता परमात्माकी करुणामयी मूर्ति है पर परमात्माका वात्सल्य यदि देखना हो तो वह माताके ही कोमल हृदयमें देख सकते हैं बच्चेपर माताका जो प्यार है उसमें कोई लोभ नहीं निर्हेतुक प्रेम उसका नाम है हम जो पलते हैं जीते हैं बढते हैं सो माताके ही स्तन्यदुग्धामृत के पानसे माका यह दूध क्या है ? उसके रोम रोममें सञ्चार करनेवाले प्रेमका केवल बाह्य रूप है तुकाराम कहते हैं तुका कहे माई बाप भगवान्‌के ही रूप अक्षरश सच है फिर भी माका प्यार माका ही है इसीसे तुकाराम बार बार भगवान्‌को विठामाई कन्हैया मैया कहकर ही पुकारते हैं मातृप्रेम जैसे ईश्वरीय भाव है वैसे ही उस प्रेमको पूर्णतया अनुभव करना भी ईश्वरीय प्रसाद है मातृप्रेम सहज है वैसे ही मातृ भक्ति भी सहज ही है और सहज ही सदा बनी रहनी भी चाहिये पर जैसे जलका झुकाव नीचेकी ओर होता है—जल ऊपर नहीं चढा करता वैसे ही इस विचित्र ससारमें माताका प्रेम जैसा सहज देखनेमें आता है वैसा या उतना सहज प्रेम सन्तानका माताके प्रति कचित् ही दर्शित होता है बच्चा जबतक दुधमुँहा है तबतक अनन्यगतिक होनेसे वह माताके प्यारका उत्तर वैसे ही प्यारसे दिया करता है पर वही बच्चा जब बड़ा होता है तब उसके प्रेममें अनेक शाखाएँ फूट निकलती हैं पहले अपने सगी साथियोंसे प्रेम करता है फिर पत्नी प्रेममें बधता है पीछे अपत्य प्रेमके वशीभूत होता है इस तरह प्रेम अपना रग बदलता और स्वय बँटता जाता है और कभी कभी शाखा पल्लवोंमें उलझकर अपने मूलको भी भूल जाता है इसीसे मातृप्रेमसे मुँह मोड़े हुए कुलागार भी कहीं कहीं पैदा हो जाते हैं पर यह प्राकृत जीवोंकी बात है पुण्यात्मा तो ऐसे महाभाग होते हैं कि उनका मातृप्रेम यावज्जीवन अखण्ड बना रहता है और ऐसे अखण्ड मातृ भक्त महात्मा ही महत्पद लाभ करते हैं स्वय महात्मा पुण्डलीक युवावस्थामें विषयासक्तिके वश हो कुछ कालतक माताको भूल ही गये

थे ईश्वरकी महती कृपा हुई जो दैवयोगसे वह कुक्कुट मुकुटके आश्रममें पहुँचे और वहाँ उन्होंने मातृ भक्तिकी महिमा देखी उससे उनकी आँखें खुलीं और पीछे वह ऐसे मातृ पितृ भक्त हुए मातृ पितृ भक्तिकी उन्होंने ऐसी पराकाष्ठा की कि उसीसे भगवान् उनपर प्रसन्न हुए और उनके दर्शनोंके लिये आये आकर ईटासनपर तबसे खड़े ही है तुकारामजी प्रश्न करते हैं पु लीकने किया क्या ? और स्वय उत्तर देते हैं माता पिता को ईश्वररूप माना इसका फल उन्हे क्या मिला ? तुकाराम कहते है ईंटपर परब्रह्म खडा रह गया । यही महाभागवत पुण्डलीक मातृ पितृ भक्तिके प्रतापसे सन्तोंके अगुआ और महाराष्ट्रमें भागवत धर्मके आद्य प्रवर्त्तक हुए । लौकिक पुरुषोंमें भी छत्रपति श्रीशिवाजी महाराज तथा नेपोलियन सिकन्दर आदि दिगन्तकीर्ति दिग्विजयी पुरुप मातृ भक्तिके महान् पु यबलके ही मधुर फल थे मातृ पितृ भक्ति समस्त उत्तम गुणोंकी खान है गुणोंमें सबसे श्रेष्ठ गुण मातृ पितृ भक्ति ही है जिसके हृदयमे इस भक्तिका रस नही उसमें कोई भी गुण नहीं फलता तुकारामका हृदय तो प्रेमह्रद ही था प्रेमनिर्झर हृदयको लेकर ही वह जन्मे थे वयसके १७ वें वर्षतक उन्होंने मातृ पितृ प्रेम अनुभव किया और भक्तिभरे अन्त करणसे माता पिताकी खूब सेवा की पीछे माता पिता स्वर्ग सिधारे बड़ी भावजका देहान्त हुआ भाइ भी घरसे निकल गये अन्नके बिना प्रथम पत्नीका प्राणान्त हुआ प्रथम पुत्र सन्ताजीकी मृत्यु हुई, दिवाला निकला साख जाती रही इस प्रकार अनेक सकट एकके बाद एक उनपर आते गये इससे उनका चित्त दुखी हुआ और फिर वैराग्य हो आया उनका प्रेम जैसा गाढा था वैसा ही उनका वैराग्य भी तीव्र और ज्वलन्त हो उठा कुछ कालतक उनकी प्रेमा वृत्ति सरस्वती नदीके समान गुप्त हो रही उनकी द्वितीया पत्नी ऐसी नही थी जो उन्हें प्रसन्न करके उनके प्रेमको फिरसे जगा देतीं वह थी चिड़चिड़े मिजाजकी बात बातमें गुस्सा होने

वाली केवल कर्कशा ऐसी कर्कशासे उनके वैराग्यको हा पुि मिली होगी ज्यों ज्यों वैराग्य बढने लगा त्यों त्यों उ हें भगवान् भी प्रिय होने लगे भगवान् के सम्मुख होते ही उनकी प्रेम सरस्वती फिरसे प्रकट हुई प्रेमके लिये पात्र भी अब उत्तम मिला वैरा य सङ्गसे दिव्य और पावन बने हुए इस प्रेमप्रवाहने भगवान्को अपनी परिक्रमामें मानो घेर लिया कारामजीने तब बड़े प्रेमसे सद्ग्र थोंका पढा पण्ढरीकी वारियाँ कीं भजन पूजनमें मग्न हुए भगवान्के सगुण दर्शनोंकी लालसा लगाये रहे देह गेहादि समस्त उपाधियोंसे चित्त उचाट हो गया और बस यही एक आस लगी रही कि साधु सन्तोंको दर्शन देनेवाले भगवान् मुझे कब मिलेंगे? इसी एक धुनमें चित्तकी सारी वृत्तियाँ समा गयीं आगकी तेज आँचके लगते ही जैसे दूध उफन आता है वैसे ही दृढतर वैरा यके प्रखर तापसे तपते ही वह करुणघन मेघश्याम पिघल पड़े उतर आये वैकुण्ठ धामसे उस ठाममें जहाँ तुकाराम उनकी प्रतीक्षामें धुनी रमाये हुए थे आत्मा रामने आकर तुकारामको दशन दिये तुकारामको अपने नयनाभिराम मिल गये मातृ पितृ भक्तिरूप प्रेम ईश्वरीय प्रेम हो गया तुकाराम फिर यह अनुभव करने लगे कि नवनील मेघश्यामके रूपमें दर्शन देनेवाले परमात्मा प्राणिमात्रमें ही तो रम रहे हैं प्रत्येक प्राणीके हृदयमें वह विराज मान हैं तब ये जीव उन्हें भुलाकर प्रमादमयी मोहमदिराका पानकर उन्मत्त हो दु खके महागर्तमें क्यों गिरे जा रहे हैं? जीवोंके इस अपार दु खका ध्यान कर उनका चित्त व्याकुल हो उठा उसी विकलतासे उनकी अभग वाणी निकल पडी आत्म परमात्म प्रेम इस प्रकार भूत दया प्रवाह बनकर बह निकला मातृ पितृ भक्ति भगवत् भक्ति हुई और भगवत् भक्ति भूत दयाकी सकल सन्तापहारिणी ज जीव उद्धारिणी भागीरथी बनी तुकारामका सम्पूण चरित इस प्रकार प्रेमके ही प्रवाहका इतिहास है उनके हृदयमें पहले आत्मोद्धारकी भावना जाग उठी वही भावना कृत

कार्य होकर भूतदयासे द्रवीभूत हो प्रवाहित हुई। सन्तोंके हृदयकी मृदुता अनुपमेय है। वह मृदुता फूलोंमें नहीं, चन्द्रकी चाँदनीमें नहीं, नवनीतमें नहीं, कहीं भी नहीं; केवल जहाँकी तहाँ ही प्रेमकलारूपिणी है। समत्वकी अखण्ड समाधि लगाये हुए प्रेमयोगी अन्तमें उसी प्रेममें घुलकर उसीमें मिल जाते हैं। भूतदयासे द्रवित होकर जो उपदेश वचन उनके श्रीमुखसे निकले उनकी लौकिकी भाषामें कहीं कहीं कठोर शब्द भी आये हैं, पर ऐसे प्रत्येक कठोर शब्दके आगे पीछे प्रेम ही प्रेम है। इस कारण भले बुरे सभी जीवोंके कानोंमें पड़कर ये शब्द आनन्दकी गुदगुदी ही पैदा करते हैं। श्रीतुकारामजीके सम्पूर्ण चरित्रमें यह जो दिव्य प्रेम ओतप्रोतरूपसे भरा हुआ है वही प्रेम उनकी आयुके १७ वें वर्षतक उनसे उनके माता पिताको प्राप्त हुआ। 'विठामाई' को सम्बोधन कर जो अभंग उन्होंने रचे हैं उनमें दृष्टान्तरूपसे मातृ प्रेमका अत्यन्त रसपूर्ण और अनुभवयुक्त वर्णन है। इससे यह ज्ञात होता है कि तुकारामजीको मातृ स्नेहका अत्युत्तम सुख मिल चुका था। मातृ प्रेम वर्णनके कुछ अभंगोंका आशय नीचे देते हैं:

'मातासे बच्चेको यह नहीं कहना पड़ता कि तुम मुझे सँभालो। माता तो स्वभावसे ही उसे अपनी छातीसे लगाये रहती है। इसलिये मैं भी सोच विचार क्यों करूँ? जिसके सिर जो भार है वह तो है ही। बिना माँगे ही माँ बच्चेको खिलाती है और बच्चा जितना भी खाय, खिलानेसे माता कभी नहीं अघाती। खेल खेलनेमें बच्चा भूला रहे तो भी माता उसे नहीं भुलाती, बरबस पकड़कर उसे छातीसे चिपटा लेती और स्तन पान कराती है। बच्चेको कोई पीड़ा हो तो माता भाड़की लाई सी विकल हो उठती है, अपनी देहकी सुध भुला देती है और बच्चेपर कोई चोट नहीं आने देती। इसीलिये मैं भी क्यों सोच विचार करूँ? जिसके सिर जो भार है वह तो है ही।'

बच्चेको उठाकर छातीसे लगा लेना ही माताका सबसे बड़ा सुख है माता उसके हाथमें गुड़िया देती और उसके कौतुक देख अपने जीको ठ डा करती है उसे आभूषण पहनाती और उसकी शोभा देख परम प्रसन्न होती है उसे अपनी गोदमें उठा लेती और टकटकी लगाये उसका मुँह निहारती है फिर इस भयसे कि बच्चेको कहीं नजर न लग जाय चटसे उठाकर गलेसे लगा उसका मुँह छिपा लेती है तुका कहता है कहाँतक कहूँ ऐसे कितने लाभ हैं प्रत्येक लाभ श्रीपद्मनाभका ही स्मरण कराता है

*

वह मातृप्रेमकी विह्वलता वह हृदय कुछ और ही है दुश्चित्त होनेसे धीरज नहीं रहता यह दूसरी बात है पर सच्ची बात तो यही है कि माता बच्चेको बहुत नहीं रोने देती

*

मातृ स्तनमें मुँह लगते ही माता पनहाने लगती है तब दोनों ही लाड लड़ाते हुए एक दूसरेकी इच्छा पूरी करते हैं अगसे अगके मिलते ही प्रेमरग गाढा होता है तुका कहता है सारा भार माताके ही सिर है

माताके चित्तमें बालक ही भरा रहता है उसे अपनी देहकी सुध नहीं रहती बच्चेको जहाँ उसने उठा लिया वहीं सारी थकावट उसकी दूर हो जाती है

*

बच्चेकी अटपटी बातें माताको अच्छी लगती हैं चट उसे वह अपनी छातीसे लगा लेती और स्तनपान कराती है इसी प्रकार भगवान्‌का जो प्रेमी है उसका सभी कुछ भगवान्‌को प्यारा लगता है और भगवान् उसकी सब मनोकामनाएँ पूण करते हैं

*

गाय जगलमें चरने जाती है पर चित्त उसका गोटमें बँधे बछड़ेपर ही रहता है मैया मेरी मुझे भी ऐसी ही बना ले अपने चरणोमे ठाँव देकर रख ले

*

मेरी विठा प्यारा माई । प्रम सुधा पनहाई १
स्तन मुख दे रिझाती । न कभी दूर जाने देता ध्रु
जो माँगा हाथ आया । दयामूर्ति मेरी मैया । २
तुका कहे आस । मुख दे सा ब्रह्मरस । ३ ॥

* * *

इस प्रकार अनेक अवतरण दिये जा सकते है परन्तु यहाँ इतने ही पर्याप्त है

६ दु खके पहाड़

अस्तु ससारभार सिरपर उठानेके पश्चात् प्रथम चार वर्ष बडे सुख से बीते पर भगवान्की इच्छा तो यह थी कि तुकाराम ससारबन्धनसे मुक्त होकर लोकोद्धारका कार्य करें इसलिये अब उनपर एक से एक बड़े सकट आने लगे इन दु सह सकटोंका फल यह हुआ कि उनके ससारविषयक सब स्नेह बन्धन ही कट गये उनकी आयु अभी १७ वर्ष ही थी जब उनके माता पिता इहलोक छोड गये और बडे भाई सावजीकी स्त्रीका भी देहान्त हुआ इससे वह बहुत ही दुखी हुए इसके बाद दूसरे ही वर्ष सावजी तीर्थयात्राको चले गये सावजी शुरूसे ही विरक्त थे फिर स्त्रीके देहान्तसे और भी विरक्त हो गये उनकी आयु इस समय बहुत नहीं थी अधिक से अधिक बीसके लगभग रही होगी तथापि दूसरा विवाह करके फिरसे गृहस्थी जमानेका लतखोरपना उन्हें नहीं सूझा उन्हें सूझा यह कि जो होना था सो सब हो चुका अब शेष जीवन हरिभजनमें ही आनन्दसे बिताना चाहिये

यह सोचकर वह तीर्थयात्रा करने चले गये सप्तपुरी द्वादश ज्योतिर्लिङ्ग तथा पुष्करादि तीर्थोंकी यात्रा करते हुए वह काशी पहुँचे और वहीं सत्सग और आत्मचिन्तनमें उन्होंने अपना शेष जीवन लगा दिया इधर तुकाराम भाईके वियोगसे और भी अधिक कष्ट अनुभव करने लगे माता पिता स्वर्ग सिधारे भाई घर छोडकर चले गये इससे उन्हें भी प्रपञ्चभार दु सह होने लगा घर गिरस्तीका सब काम देखते थे पर उसमें उनका मन नहीं लगता था उनकी इस उदासीनतासे लाभ उठाकर जो उनके कर्जदार थे वे नादीहन्द हो गये और जो पावनेदार थे वे तकाजा करने लगे पैतृकसम्पत्ति अस्त यस्त हो गयी परिवार बड़ा था दो स्त्रियाँ थीं एक ब ा था छोटा भाई था बहनें थी इतने प्राणियोंको कमाकर खिलानेवाले अकेले तुकाराम थे जिनका मन अब इस प्रपञ्चसे भागना चाहता था पर घरके लोगोंके अन्न वस्त्रका ठिकाना करनेके लिये उन्होंने बीच बाजारमें बनियेकी एक दूकान खोल रक्खी थी इस दूकानपर वह बैठते थे मुँहसे विट्ठल विट्ठल नाम जपते थे कभी झूठ नहीं बोलते थे व्यापारमें कभी खोटाई नहीं करते थे ग्राहकोंको भी दयादृष्टिसे देखते और मुक्तहस्त होकर माल तौल देते थे दाम किसीने यदि नहीं दिया तो इन्हें भी दामकी कोई परवा नहीं थी कभी दामका नहीं सदा रामका नाम लिया करते थे इस प्रकार चार वर्ष बीते पर इस ढगसे दूकान काहेको चलती ? दूकानसे कुछ लाभ होनेके बदले नुकसान ही हुआ और यह दूसरोंके कर्जदार बन गये रात दिन मेहनत करके भी कुछ हाथ न आता और साहूकार अपने पावनेके लिये छातीपर सवार आखिर घरपर कुर्की आयी घरमें जो कुछ चीज वस्तु थी वह बेची गयी दिवाला निकलनेकी नौबत आयी एक बार आत्मीयोंने सहायता करके बात रख

दी दो एक बार ससुरने भी सहायता की पर उखडे पैर फिर जमे नहीं पारिवारि स्नेह सौख्य भी कुछ नहींके बराबर था पहली स्त्री तो बहुत सीधी थी पर दूसरी जिजाबाई बडी कर्कशा रात दिन किचकिच गाये रहती थी इन कर्कशाके कारण तुकारामको उन्हींके शब्दोंमें बडा दु ख उठाना पडा बडी फजीहत हुई वह रात दिन मेहनत करके भी कगाल ही बने रहे बडे दु खसे कहते है कि इहलोक बना न परलोक माया मिली न राम भवताप अब तुकारामके लिये असह्य हो उठा ! घर कर्कशा बाहर पावनेदारोका तकाजा ! कही भी चैन नहीं जो भी काम करते उसमें अपयशके ही भागी होते एक बार रातके समय बैलपर अनाज लादे आ रहे थे तो रास्तेमें एक बोरा गिर गया घरमें चार बैल थे तीन किसी रोगसे अकस्मात् मर गये जो सकट टालनेके लिये वह इतने व्यस्त और यग्र रहते थे वह भी आखिर उपस्थित हुआ दिवाला निकलनेका जो भय था वह सच होकर हा रहा तब तो गाँवके लुच्चे लफंगे लोग उन्हे और भी सताने लगे उन्हे देखकर कहते लो भगवान्का नाम हरिनामने तुम्हे निहाल कर दिया ' यह कहकर तुकारामको नीचा दिखानेका यत्न करते गाँवमें कोइ ऐसा न रह गया जो उनका हित चाहता एक पैसा भी कहींसे उधार या कर्ज न मिलता बडा साहस करके तुकारामने एक बार मिर्चा खरीद किया और बोरोंमें भरकर कोकण गये वहाँ इनकी सिधाई देखकर ठगोंने न्हें खूब ठगा इश्वरकी दयासे कुछ पैसे वसूल भी हुए तो लौटते हुए रास्तेमें एक आदमी मिला जिसनें सोनेके मुलम्मे दिये हुए पीतलके कड़े सोनेके बताकर इनके हाथ बेचे जो कुछ इनके पास था सब लेकर वह चलता बना जब तुका अपने गाँवमें पहुँचे तब परख हुई और पता लगा

कि ये कड़े तो पीतलके हैं लोगोंने बेवकूफ बनाया और घरमें घरवालीने भी खूब खबर ली इस तरह गाँठके दाम भी निकल गये और ऊपरसे दक्षिणामें जगहँसाइ मिली फिर भी एक बार और जिजाबाईने अपने नामसे रुक्का लिखा और तुकाजीको दो सौ रुपया दिलाया इस रुपयेसे इन्होंने नमक खरीदा और बेचनेके लिये परदेश गये नमक बेचा और दा सौके इन्होंने ढाइ सौ तो बना लिये पर लौटते हुए रास्तेमें एक दरिद्र ब्राह्मण मिला उसने अपना सब दु ख इनके आगे रोया इन्हें दया आ गयी और ढाई सौ जो कमा लाये थे सो उस ब्राह्मणको देकर निश्चिन्त हुए फिर घर लौटे खाली हाथ घरवालीके दु ख और अचरजका क्या पूछना है उसने इनकी शब्द सुमनोंसे यथे पूजा की इसी समय पूना प्रान्तमें भयकर अकाल पडा अन्नके बिना हाहाकार मचा बड़ा ही भीषण अवर्षण रहा एक बूँद पानी नही पानी बिना जानके लाले पड गये काँटा कोयर बिना बैल मरे सहस्रों मनु य भूखों मर गये तुकारामकी ज्येष्ठा पत्नी भी इसीमें होम हुई तुकारामजीकी कोइ ाख न रह गयी घरमें एक दाना भी अन्न नहीं रहा किसीके दरवाजे जाते भी तो कोई खडा न होने देता बाजारमें एक सेरका अन्न बिका अन्नके बिना स्त्री मरा इस दुर्घटनाकी ऐसी ठेस उनके मर्मपर लगी कि जो कभी भूलनेकी नहीं स्त्रीके पीछे उनका पहला लाड़ला बेटा भी चल बसा दु ख और शोककी सीमा और क्या होगी माता पिताके स्वर्ग सिधारनेके बाद चार ही पाँच वर्षके भीतर तुकारामजाकी घर गिरस्ती धूलमें मिल मयी सारी सम्पत्ति गाय बैल स्त्री पुत्र इज्जत आबरू सबपर पानी फिरा दु ख और शोकका म नो महासमुद्र हा उमड़ पडा प्रपञ्च दु खोंके अति दु सह वृश्चिक दशोंसे कलेजा फट गया धरती आग बनकर दहक दहक जलने लगी आकाश फट पड़ा प्रपञ्च मानो प्रलय हो गया

७ वैराग्यबीजारोपण

ससार सच कहिये तो दु खोंका ही घर है जन्म मरणके महा दु खोंके बीचमें घूमनेवाले इस ससारमें जो भी आया वह दु खोंका महमान हुआ ससार दु खरूप है यही तो शास्त्रका सिद्धान्त है और यही जीवमात्रका अन्तिम अनुभव है तुकाराम ससारमें चार वर्ष किसी प्रकार सुखसे रहे तो इतनेमें ही द्रव्यहानि मानहानि अकाल और प्रियजन वियोगका एक से एक बढकर विपदा उनपर टूट पडी और उससे ससारका भयानक स्वरूप उनके सामने प्रकट हुआ सासारिक दु खोंके इन आघातोंसे ससारकी दु खमयता उ ्हे स्पष्ट दिखायी दी और उनका चित्त ऐसे ससारसे उचट गया प्रथम पत्नीसे उनका बडा स्नेह था वह उनकी आँखोंके सामने अन्नके बिना हा हा करती हुई कालका ग्रास बन गयी और उनके प्रेमका प्रथम पुष्प—बालक सन्ताजी देखते देखते मुरझा गया माता पिता भावज स्त्री पुत्र सभा कालकवलित हो गये और कराल कालके सभी दु ख एकबारगी ही सिरपर टूट पडे ्ससे उनके अन्त करणको बड़ा भारी धक्का लगा उनका चित्त उदास हो गया ऐसे समय यदि उनकी द्वितीया पत्नी जिजाइका स्वभाव अच्छा होता तो वह पतिको सान्त्वना देकर प्रेमसे उनके चित्तको हरा भरा कर देती उनके मनका अनुगमन कर ससारसे पंछीकी तरह उड जानेवाले उनके मनको मञ्जुभाषणसे और प्रेमालापसे फिर ससारमें बाँध रखनेका यत्न करती पर इन सब कल्पनाओंसे क्या आता जाता है ? भगवत् सकल्पके अनुसार ही सृष्टिके सब व्यापार हुआ करते हैं सामान्य जीव सासारिक दु खोंकी चक्कीमें पीस दिये जाते है पर वे ही दु ख भाग्यवान् पुरुषोंके उद्धारका कारण बनते हैं भगवान् श्रीरामचन्द्रके दादा राजा अजका युवती प्रेयसी स्त्री इसी प्रकार अकाल ही चल बसी उस समय उन्होने जो शोक किया

है उसका वणन कविकुलतिलक कालिदासने (रघुवश सर्ग ८ में) किया है अजने कहा मेरा धैर्य अस्त हो गया सारे सुख विलास समाप्त हो गये वसन्तादि ऋतु श्रीहीन हो गये गान बन्द हो गये इन आभूषणोंका अब क्या प्रयोजन रहा ? घर तो मेरा शून्य हो गया प्रिये तुम तो मेरी गृहस्वामिनी थीं मन्त्रणा देनेवाला सचिव थीं एकान्तमें प्रेमालापसें रिझानेवाली सखी थीं ललित कलाएँ मुझसें लेनेवाली प्रिया शिष्या थी और मृत्यु मुझसे तुम्हें हर ले गया अरे मेरा सर्वस्व लूट ले गया तुम्हें ले जाकर उसने मुझे राहका भिखारी बना दिया ? अज थे बड़े विलासी राजा और उनका वर्णन करनेवाले भी कोई ऐरे गैरे नहीं स्वय कविमुकुटमणि कालिदास हैं तथापि ऐसा ही शोक सन्ताप प्रिय पत्नीके वियोगपर प्रत्येक वियोगी पतिको अवश्य ही होता होगा इसमे सन्देह नहीं पर सच पूछिये तो ससारमें सच्चा प्रेम है कहाँ यदि हो तो क्वचित् ही है ? सच्चा पत्नी प्रेम जहाँ है वहाँ द्वितीय विवाह कैसा ? द्वितीय विवाहकी कल्पना तक उसके पास नहीं फटक सकती सच्चा प्रेम कभी मरता नही काल भी उसे नहीं मार सकता थोड़ी देरके लिये तो सभी विरही रो पडते हैं ऐसे प्रेमी तो बहुतेरे हैं जो मृत पत्नीको याद कर करके आँखोंसे आँसू बहाते जाते हैं और हाथोंसे द्वितीय सम्बन्धका चिन्तासे अपनी ज म पत्री भी ढूँढ़ा करते हैं इधर विरह दु खकी कविता करते हैं और उधर द्वितीय सम्बन्धके सामान जुटाते जाते हैं ऐसे नामके प्रेमियोंका प्रेम प्रेम थोड़े ही है क्षुद्र कामको प्रेमका मधुर नाम देकर ये लोगोंकी आँखोंमें धूल झोंका करते हैं प्रेम तो निष्काम निर्विषय ही होता है और उसका एकमात्र भाजन परमात्मा है ऐसा प्रेम भक्तोंके ही भाग्यमें होता है भक्तोंमें सचाई होती है वैराग्यके अञ्जनसे जब आँखें खुल जाती हैं तब नश्वर ससारके भेद भावोंमें बँटा हुआ प्रेम वे निग्रहसे बटोरकर एक करके एक परमात्माको ही अर्पण कर देते हैं प्रेमामृतकी धारा भगवान्‌के

सम्मुख प्रवाहित करते हैं अजको सान्त्वना देते हुए मुनिश्रेष्ठ वसिष्ठ कहते हैं

वगच्छति मूढचेत प्रियनाश हृदि पिंतम्
स्थिरधीर तदे मन्यते कुशलद्वारतया समुद्धृतम्

अर्थात् मोहसे जिसका ज्ञान ढका हुआ है वह प्रिय वस्तुका वियोग होनेको हृदयमें काँटा चुभा समझता है पर जो धीर है वह उसे कल्याणका द्वार खुला समझता है महर्षिके इस बोध वचनका बोध महात्माओंके चित्तमें सहज सा ही उदय होता है देवर्षि नारदकी माता उन्हें बचपनमें ही छोड गयी तब उन देवर्षिके हृदयमें ऐसा ही दिव्य भाव उठा उन्होंने कहा

तदा तदहमीशस्य भक्ताना शमभाप्सत
अनुग्रह मन्यमान ाति ि मुत्तराम्
(श्रीमद्भा १ ६ १)

भक्तोंका कल्याण चाहनेवाले भगवान्ने मुझपर यह बडा अनुग्रह किया यह मानकर मै उत्तरकी ओर चला तुकारामजी भी नारदजीकी ही श्रेणीके पुरुष थे उन्होंने भी इस महादु खमें अपनी अलौकिक स्थित प्रज्ञता प्रकट की दु ख कल्याणका द्वार है जगद्गुरु परमात्मा हमें साख देनेके लिये अनेकविध सुख दु खोंमेंसे ले जाकर सज्ञानताके पाठ पढाते है उन पाठोंको हृदयङ्गम न करके हम अज्ञानी मूढ जन उद्दण्ड बालकोंकी तरह उन्हें भुला देते है और निर्लज्ज होकर बार बार उनके हाथकी मार खाते हैं पर जो लोग पु यात्मा होते है वे इन विविध प्रसङ्गोंसे भगवान्का मन पहचानते हैं और अधिकाधिक ज्ञानसे लाभवान् होते हैं उ हे यह दृढ विश्वास होता है कि सर्वज्ञ भगवान् जो कुछ करते हैं, उसीमें हमारा हित है यह शमसुख देनेवाला निर्मल तत्त्व वे अपने हृदयसे लगाये

रहते हैं और इस कारण महान् सकटोंमें भी नि कम्प रहते हैं आँ ािसे वृक्ष उखड़ जाते हैं पर पवत स्थिर रहते हैं सामान्य जीव और महात्माओंके बीच यही तो बडा भारी अन्तर है विपत्तिमें वीरोंका ताव और भी बढता है ऐसे ही भक्तोंकी निष्ठा और भी दृढ होती है तुकारामजीपर जो सकटके पहाड़ टूटे और अकालके कारण बात की बातमें सहस्रों मनुष्योंके मर जानेका जो भीषण दृश्य उनके नेत्रोंके सामने उपस्थित हुआ उससे उन्होंने यह जाना बहुत ही अच्छी तरहसे जान कि यह मृत्युलोक क्या है और कैसा है और यहाँ रहकर क्या होता है ? इससे उनके हृदयमें वैराग्य उत्पन्न हुआ और यह निश्चय हो गया कि इस भवसागरके पार उतारनेवाला पाण्डुरङ्गके सिवा और कोई नहीं है ्स समय उनके मनकी अवस्था उन्हींके शब्दोंसे जानिये

(१)

पिता मेरे अनजानते ही स्वर्ग सिधारे उस समय ससारकी कोई चिन्ता न थी अस्तु हे विट्ठल भगवान् तेरा मेरा राज है इसमें दूसरेका कोई काज नहीं स्त्री मरी अच्छा हुआ मुक्त हो गयी मायासे छूटी बच्चा चल बसा यह भी अच्छा ही हुआ भगवान्ने मायासे छुडाया माता मेरे देखते चली गयी तुका कहता है चलो हरिने चिन्ता हर ली

(२)

अच्छा हुआ भगवन् दिवाला निकला दुर्भिक्षने ग्रासा सो भी अच्छा ही किया अनुताप होनेसे तेरा चिन्तन तो बना रहा और ससार वमन हो गया स्त्री मरी सो भी अच्छा ही हुआ और यह जो दुर्दशा भोग रहा हूँ सो भी अ छा ही है ससारमें अपमानित हुआ यह भी अच्छा ही हुआ गाय बैल और द्रव्यादिक सब चला गया यह भी अ छा

ही हुआ लोक लाज नहीं रही सो भी अच्छा हुआ और यह (तो बहुत ही) अच्छा हुआ जो मैं भगवन् तेरी शरणमें आ गया

* *

(३)

भगवान् भक्तको गृहप्रपञ्च करने ही नहीं देते सब झझटोंसे अलग रखते हैं उसे यदि वैभवशाली बनावें तो गर्व उसे घर दबावेगा गुणवती स्त्री यदि उसे दें तो उसीमें उसकी आशा लगी रहेगी इसलिये कर्कशा उसके पीछे लगा देते हैं तुका कहता है, यह सब तो मैंने प्रत्यक्ष देख लिया अब और इन लोगोंसे क्या कहूँ ?

(४)

इस कुटुम्ब परिवारकी सेवा करते करते ससारके तापसे मै द ध हो चला इससे हे पाण्डुरङ्ग माते तेरे चरण स्मरण हुए अनेक जन्मोंका बोझ ढोता चला आया हूँ इससे छूटनेका मर्म अभीतक नही जान पडा अन्दर बाहर सब तरफसे चोरोंने घेर रखा है पर इस हालतमें भी कोई मुझपर दया नहा करता बहुत मारा मारा फिरा बहुत लुट गया अब तड़पते ही दिन बीत रहे हैं तुका कहता है जल्दी दौडे आओ हे दीनानाथ संसारमें अपना विरद रखो

(५)

पञ्चमहाभूतोंके बीचमें आकर फँसा हूँ अहकारका कैदमें पडा हूँ अपना गला आप ही फँसा रखा है निराला होकर भा निरालापन नही जान पाता हूँ ससारको मैंने सत्य क्यो मान लिया ? मेरा मेरा क्यों पुकारता फिरा ? नारायणकी शरणमें क्यो नहीं गया ? क्यों नही वासनाको रोका ? तुका कहता है अब इस देहको बलि चढाकर सञ्चितको जला डालूँगा

इनमें पहले अवतरणसे य० मालूम होता है कि तुकारामजी जब छोटे थे तभी उनके पिताका स्वर्गवास हुआ और पीछे दुर्भिक्षमें उनकी स्त्री रखुमाई प्रथम पुत्र सताजी और अन्तमें उनकी माता कनकाईकी मृत्यु हुई जब कुछ जाना सुना नहीं था तब पिता मरे अर्थात् अकस्मात् उनकी मृत्यु हुई अथवा मैं जब अबोध था तब मरे या तुकाराम कहीं किसी कामसे गये हुए थे तब उनका मृत्यु हुई याने मरते समय पितासे मिल न सके इनमेंसे कोई भी बात हो सकती है जिसका निश्चय नहीं किया जा सकता जो कुछ हो पर माँ बाप और स्त्री पुत्रके मरनेपर भी ८स धीर पुरुषके मुखसे यही उद्गार निकलता है कि हे विठ्ठल तेरा मेरा राज है इसमें औरोंका क्या काज ? ट्स प्रकार ऐसे महद्दु खसे भी उन्होंने यही सन्तोष पाया कि अब भजनान दमें कोई बाधा न रही दिवाला निकला दुर्भिक्षने पीडा पहुँचायी कर्कशा स्त्रीसे साबका पडा अपमान हुआ धन गया बैल मरे लोकलाज छोड़कर भगवान्की शरण ली यह सब कहते हैं कि अच्छा हुआ क्योकि ससार कै होकर निकल गया अनुतापसे अब तुम्हारा चिन्तनभर रह गया . इन सासारिक दु खोंके कारण ससारसे जी ऊब गया चित्त उससे हट गया और अनुतापसे शुद्ध होकर चित्त भगवान्का ही चि तन करने लगा यही दूसरे अवतरणका अभिप्राय है

नि सार यह ससार । यहाँ सार भगवान ॥

नि सार है यह ससार यहाँ सार (केवल) भगवान् हैं

ससार कालग्रस्त नश्वर और दु खरूप है इसका सारा घटाटोप यर्थ ह भगवान् मिलें तो ही जन्म सफल हैं यही तुकारामजीका दृढ विश्वास हो गया

तुका कहे नाशवान है सकल।
स्मर के गोपाल, सोई हित

कहता है यह सब नाशवान् है गोपालको स्मरण कर वही हित है

*

सुख देखो तो जौ जितना। दुख पहाड जितना
सुख देखिये तो जौ बराबर है और दु ख पर्वतके बराबर

*

दु खसे बँधा है यह ससार।
सुख देखो विचार नहीं कहा।

यह ससार दु खसे बँधा है विचारकर देखें तो इसमें सुख कहा भी नहीं है

*

देह नाशवान् है देह मृत्युका धौकनी है ससार केवल दु खरूप है सब भाई बन्धु सुखके साथी हैं इसलिये तुकारामजीका जी ससारसे हट गया और उ हे अविनाशी अखण्ड सुखकी भूख लगी यह मृत्युलोक अनित्य और असुख है यहाँ आकर मुझे भजो अनित्यमसुख लोकमिम प्राप्य भजस्व माम् यही तो भगवान्‌ने (गीता अ० , ३३ में) स्वय कहा है भगवान्‌ने कहा है शास्त्रोंने भी बताया है और सन्तोंने भी यही उपदेश किया है तथापि यह सत्य ऐसा है कि सबको अपने अपने अनुभवसे ही जानना होता है इसे जाननेके लिये असख्य जन्मोंके पुण्य प्रतापसे मनोभूमिको तपाकर तैयार करना पड़ता है विपत्तापसे तपकर जब भूमि तैयार होती है तभी उसमें उत्तम परमार्थ उपजता है चौथे अवतरणमें

तुकोबारायने यही बताया है संसार तापसे मैं तपा इसीसे भगवान्‌के चरणोंका स्मरण हुआ इस जन्मके सब दु ख सामने आये इसीसे पिछले सब जन्म याद आये असख्य जन्म ऐसे ही दु खोंमें बीते सुखके साथी अन्दरके और बाहरके सब चोर हैं ये किसी काम आनेवाले नहीं यही सोचकर अत्यन्त दीन होकर उन्होंने भगवान्‌के पैर पकड़े चौथे अवतरणका यही सार मर्म है पर दूसरोंने मुझे ठगा यह कहना तो ठीक नहीं सच्ची बात यह है कि अहकारने ही मेरा नाश किया अहवृत्तिके कारण ही मैंने ससारको सत्य जाना और उसके फन्देमें अपने आपको फँसा लिया इतने असख्य जन्म और इस जन्मके इतने वर्ष मैंने यर्थ ही गँवाये अब यह शरीर भगवान्‌के चरणोंमें समर्पण कर दिया यह पाँचवें अवतरणका अभिप्राय है दिग्दर्शनके लिये ये पाँच ही अवतरण पर्याप्त हैं

यह अच्छा हुआ इस अवतरणको देखिये क्या अच्छा हुआ ससार मिथ्या है—यह ज्ञात हुआ और आँखें खुलीं दु खसे आँखें खुलती हैं तब दु ख ही अनुग्रह जान पडते हैं ससारमें यदि सुख होता तो शुकादि उसे गिरि कन्दराओंमें ढूँढते न फिरते खटमलभरी खाटपर मीठी नींदका लगना जैसे असम्भव है वैसे ही अनित्य ससारके भरोसे सुख मिलना भा ग्सम्भव है ये विचार तुकोबारायके अभंगोंमें बारम्बार प्रकट हुए हैं तुकारामजीको सच्चा अनुताप हुआ और उनके अन्त करणमें वैराग्य भर गया वैराग्य परमार्थकी नींव है देहसहित सम्पूर्ण दृश्यमान ससारके नश्वरत्वकी मुद्रा जबतक चित्तपर अकित नहीं हो जाती तबतक वहाँ ज्ञान नहीं ठहर सकता ज्ञानेश्वर महाराज कहते हैं विरक्तिके बिना कहीं ज्ञान नहीं ठहरता (ज्ञानेश्वरी १५ ३६) यह तो सिद्धान्त ही है पर ऐसा वैरा य तभी होता है जब जीव ससारसे बिल्कुल ऊब जाता है यह समस्त ससार अनित्य है इस अनित्यताको जहाँ जान लिया तहाँ वैराग्य हाथ धोकर पीछे पड जाता है (ज्ञानेश्वरी १५ ३९) ऐसा दृढतर

वैराग्य उत्पन्न होना ही तो भगवान्‌की दया है वैराग्य खेल नहीं भगवान्‌की दया हो तो ही उसका लाभ हो भगवान् जिसपर अनुग्रह करना चाहते हैं उसे वह पहले वैराग्य दान करते है ऐसा परम शुद्ध वैराग्य तुकारामजीको प्राप्त हुआ और वहाँसे परमार्थ आरम्भ हुआ

८ कनक पाशसे मुक्त

वैराग्यके साथ चित्तवृत्तियोकी शुद्धिके लिये उन्होंने एकान्तवास आरम्भ किया पहले भामनाथके पर्वतपर गये और पद्रह दिन रहे यहाँ उन्होंने भगवान्‌का नाम स्मरण और ध्यान किया इधर तुकारामके घरसे चल देनेकी बात फैल गयी और जिजाबाइ भी विकल हुई जिजाबाईका मिजाज बडा तेज था पर थी वह मैया बड़ी पतिव्रता तुकारामजीके बिना उन्हे एक क्षण भी कल न पड़ती उन्होंने तुकारामके छोटे भाई कान्हजीको उन्हें ढूँढने भेजा कान्हजी घूमते घूमते भामनाथ पर्वतपर पहुँचे वहाँ तुकारामजी मिले कान्हजी आग्रहपूर्वक उन्हे घर लिवा लाये उन्हें देखकर जिजाबाईको बड़ा हर्ष हुआ पिताके समयसे जिन जिन लोगोंके यहाँ तुकारामजीका पावना था उन सबके रुक्के तुकाराम जीने बाहर निकलवाये और उन्हें ले जाकर वे इन्द्रायणीके दहमें डालने लगे तब कान्हजीने बड़ी नम्रतासे कहा आप तो साधु हो गये पर मुझे बाल-बच्चोंका पालन करना है यह इतना रुपया यदि आप इस तरह डुबा देंगे तो मेरा काम कैसे चलेगा ? यह सुनकर तुकारामजीने उत्तर दिया ठीक है इनमेंसे आधे रुक्के तुम ले लो और अलग हो जाओ अपनी गृहस्थी चलाओ हमारा सब भार श्रीविट्ठलभगवान्‌पर है अब मेरा यही जीवन क्रम निश्चित हो चुका है म याहृ अब पाण्डुरङ्ग ही चलावेंगे हाँ तुम्हारी हानि न हो इतना तो मुझे देखना होगा इसलिये तुम अपना हिस्सा लेकर अलग हो जाओ हमारी चिन्ता मत करो ’ इस तरह तुकारामजीने आधे रुक्के कान्हजीके हवाले किये और बाकी आधे उसी

क्षण इन्द्रायणीको अर्पण कर दिये इन रुक्कोंको दहमें डाल देनेका कारण महीपतिबाबा मार्मिकताके साथ बतलाते हैं

अनुभव न हो तो पुस्तकी ज्ञान यर्थ है वैसे ही दूसरोंके हाथमें जो धन है वह भी व्यर्थ है उससे मन दुश्चित्त ही रहता है यही चिन्ता और दुराशा जाको लगी रहती है कि अमुककी ओर इतना पावना है पर वह देगा या नहीं देगा न जाने क्या होगा इसलिये इन्द्रायणीके दहमें सब कागज पत्र उन्होने स्वय ही डाल दिये

तुकारामजीने अपनी चित्तवृत्ति पाण्डुरङ्गको अर्पण कर दी इस वृत्तिको पीछेसे खींचनेवाली दुष्ट दुराशा वह नहीं चाहते थे ऋणका अनुभव तो उन्हे पूरा मिल ही चुका था कहते हैं

ऋणके भारसे शरीर जड हो गया ससारने (खूब) तड़पाया अब लेन देनके बखेडेसे सदाके लिये मुक्त होकर निर्वेध निर्विघ्न हरिभजनमें लग जानेके लिये उन्होंने सब रुक्के इ द्रायणीके दहमें डाल दिये इसके बाद उन्होंने द्रव्यको स्पर्श नहीं किया दरिद्रताके सब कष्ट सह लिये भिक्षा माँगकर भी गुजर किया पर द्रव्य स्पश कदापि न करनेका निश्चय करके वह धनपाशसे सदाके लिये मुक्त हो गये

९ एका ास और यात्रा

तुकारामजीका दिनचर्या कुछ कालतक इस प्रकार थी प्रात काल प्रातर्विधिसे निवृत्त होकर श्रीविठ्ठलभगवान्के मन्दिरमें जाते पूजा पाठ करते और फिर इन्द्रायणाके उस पार जाकर कभी भामनाथ तो कभी भण्डारा और कभी गोराडाके पर्वतपर पहुँचकर वहाँ ज्ञानेश्वरी या नाथ भागवतका पारायण करते और फिर दिनभर नाम स्मरण करते रहते सन्ध्या होनेपर गाँवको लौटते मन्दिरमें जाकर कीर्तन सुनने और पीछे स्वय कीर्तन करनेमें आधी रात बिता देते पश्चात् उत्तर रात्रिमें थोड़ा सो लेते थे इस प्रकार विरक्तकी स्थितिमें रहकर उन्होंने भूख प्यास जीत ली

निद्रा और आलस्य दोनों गये युक्ताहारविहार होनेसे पूर्ण इ द्रिय विजय हुआ यह सब अवश्य ही धीरे धीरे हुआ सद्ग्रन्थ सेवन, नाम स्मरण कीर्तन और ध्यान धारणादिकोके अभ्यासमें ही उनका सारा समय बीतता था उन्होंने तीर्थ यात्राएँ बहुत सी नहीं की आषाढी कार्तिकी वारी परम्परासे ही होता चली आयी थी सो उन्होंने भी अन्ततक चलायी आलन्दाक्षेत्र पास ही चार कोसपर है और ज्ञाने वर माउली (मैया) पर उनकी निष्ठा भी असीम थी इससे आलन्दी वह बार बार जाते थे निवृत्तिनाथकी समाध त्र्यम्बकेश्वरमे है और चागदेवकी समाधि पुणतांबेमें है एकनाथ महाराजका पैठणक्षेत्र तो प्रसिद्ध ही है ये तीनो क्षेत्र गोदातीरपर है इसलिये वारकरियोके मेलेके साथ तुकारामजी भी इन क्षेत्रोमे हो आये थे एक अभगमें गोदातीरके विषयमे उनका यह उद्गार है कि 'निर्मल गोदातटपर बडे सुखसे दिन बीतता है काशी गया और द्वारका देखनेकी बात उन्होंने एक जगह लिखी है

वाराणसी देखी गया। द्वारका भी।
बात पढरी की तुका और

वाराणसी गया और द्वारका देखी पर ये पण्ढरीकी बराबरी नहीं कर सकती ' उनका एक अभग है तारूँ लागले बदरी (जहाज ब दरमें लगा) इससे मालूम होता है उन्होंने जहाजसे द्वारकाकी यात्रा की थी अस्तु यह यात्रा उन्होंने सवत् १६८८ ८९ में की होगी वैराग्य होनेके पश्चात् दो एक वर्षके भीतर ही काशी द्वारका आदि तीर्थ स्थानोंमें हो आये होगे अस्तु इस प्रकार ससारका अनुभव प्राप्त करके उसकी नि सारताको अच्छी तरह जानकर तुकारामजी परमार्थके अनुगामी बने परमार्थ प्राप्त करनेके लिये उन्होंने जो उपाय किये और उन्हें जो सिद्धि प्राप्त हुई उसका समीक्षण दूसरे खण्डमें विस्तारके साथ करेंगे

मध्य ख ड

अर्थात्

उपासना का ड

चौथा अध्याय

आत्मचरित्र

अत जो सुहृद् और शुद्धमति है अनिदक और अनन्यगति है उनसे गुप्त से गुप्त बात भी सुखसे कहे

ज्ञानेश्वरी अ० ९ ४०

१ सन्त चरित्र श्रवण

कोई महान् पुरुष सामने आता है तो हर किसीको यह जाननेकी इच्छा होती है कि यह महान् कैसे हुआ किस मार्गपर यह कैसे चला, कौन कौनसे गुण इसने प्राप्त किये और उनका कैसे उत्कर्ष किया, इत्यादि, यह जिज्ञासा सात्त्विक होती है कारण इस जिज्ञासाके भीतर एक निर्मल भाव छिपा रहता है वह यह कि हम भी इसका अनुसरण कर सकें। किसी सत्पुरुषके जब हम दर्शन करते है या उनका गुणगान सुनते है तब यही इच्छा होती है कि हम भी इनके गुणोको जाने और जिस मार्गपर

चलकर इन्होंने यह महत् पद लाभ किया उस मार्गपर हम भी चलें महत् पद लाभ हँसी खेल नहीं है महान् पुरुष उसके लिये जो जो कष्ट उठाये रहते है उन कष्टोंको सह लेनेकी सामर्थ्य और पुण्य सबके भाग्यमें नहीं होता इसलिये जिज्ञासा तृप्त होनेपर भी सब लोग महान् पुरुषोंका अनुकरण नही कर सकते बात समझमें आ जाती है पर करते नहीं बनती फिर भा समझना तो आवश्यक होता हा है वेदशा मिं ब्रह्मनि पुरुषोंके अनेक गुण वर्णित है महान् प्रयाससे जिन्होंने उन गुणोंको प्राप्त किया उन महात्माओंका आचरण ही सामान्य जनोंके लिये पथ प्रदर्शक होता है और सात्त्विक श्रद्धा जिनके हृदयमें उत्पन्न हो चुकी रहती है वे उस आचरणको देखकर तदनुसार अपना आचरण बनाते हैं

पर श्रुति स्मृतिके अर्थ। जो आपहा हुए मूर्त।
अनुष्ठानसे विख्यात। ऐसे महान। ८६।
उनके आचरण सोई चरण। देख सत् श्रद्धा करे अनुसरण।
सो पावे सोई परम धन। रखा जैसे ८७।

(ज्ञानेश्वरी अ० १७)

श्रुति स्मृतिके मूर्तिमान् अर्थ बनकर जो स्वकर्मानुष्ठानसे प्रसिद्ध होते हैं ऐसे जो श्रेष्ठ हैं उन्हींके आचरणरूप चरणचिह्न देखकर सात्त्विकी श्रद्धा चला करती है और इससे उसे भी वही फल अनायास ही प्राप्त हो जाता है महात्मा भाजन कैसे करते हैं बोलते कैसे हैं चलते कैसे हैं बर्ताव कैसा रखते है इन सब बातोंको जाननेसे भी बड़ी शिक्षा मिलती है सामान्य जनोंको जो विषय प्रिय होते है उनको उन्हों ने कैसे छोडा, विषय वासनाको कैसे जीता उन्हें वैराग्य कैसे प्राप्त हुआ प्रवृत्तिको जीतकर वे निवृत्त कैसे हुए उन्होने किस ग्रन्थका कैसे अध्ययन किया उन्होने एकान्तवास कैसे किया एकान्तमे उन्होंने क्या साधना की सत्सगमें उ हें

क्योंकर रुचि हुई सत्सगसे उन्होने कौन सा आत्मलाभ किया और कैसे किया उनपर गुरु कृपा कब कैसे हुई उन्होंने निश्चय क्या किया और कैसे सब आघातोंको सहकर उसे निबाहा उनपर भगवान् कैसे प्रसन्न हुए इत्यादि बातें जब मुमुक्षुकी समझमें ठीक ठीक आ जाती हैं तब वह भी अपना जीवनक्रम निश्चित कर सकता है

२ आत्मचरित्र अभग

इस प्रकारके विचार उन लोगोके चित्तमें अवश्य उठा करते होगे जो तुकाराम महाराजके पास नित्य आया जाया करते थे और उनका हरिकीर्तन सुनकर आनन्दित होते थे एक बार इन्ही लोगोने महाराजसे प्रश्न किया महाराज ! आपको वैराग्य कैसे प्राप्त हुआ और आपपर भगवान् कैसे प्रसन्न हुए ? कृपाकर यह हमे बताइये यह प्रश्न सुनकर और श्रोताओंकी शुभेच्छा जानकर महाराजने दो अभगोमे इसका उत्तर दिया ये अभग बड़े महत्त्वके हैं याती शूद्र वैश्य इत्यादि अभग तो महाराज के चरित्रका मानो सम्पूर्ण पूर्वार्द्ध ही है शिष्टाचार यह है कि अपना चरित्र आप ही न कहे पर आपलोग सन्त हैं और प्रेमसे पूछ रहे हैं इसलिये आपलोगोंकी आज्ञाका पालन करना ही चाहिये इस प्रकार प्रस्तावना करके महाराजने कहना आरम्भ किया

न य बोलों परी पाडिलें वचन
कहना नहिं किन्तु, करता पालन ।
आपक वचन, सन्तजना

यह चरण इस अभगका ध्रुवपद है इससे यह जाहिर है कि अपना चरित्र आप ही कहना अनुचित* है इस भावको मूलमें रखकर

* स्वात्मवृत्त मयेत्थ ते सुगुप्तमपि वर्णितम्
व्यपेत लोकशास्त्राभ्या भवान् हि भगवत्पर
(श्रीमद्भा० ७ १३ ४५)

उन्होंने भक्तानुग्रहके लिये ही अपने चरित्रकी मुख्य मुख्य बातें कह दी अब तुकाराम महाराजके मुखसे ही उनका पूर्व चरित्र हमलोग भी ध्यान पूर्वक सुन लें

अभग

जाति शूद्र, किया वैश्य व्यवसाय।
पाडुरग पाँय कुल पूज्य १
कहना नहि किन्तु, करता पालन।
आपके वचन सतजनो ध्रु
माता पिता मेरे छोड गये यदा।
आपदाविपदा आन पडी २।
दुर्भिक्षने मारा छीना धन मान।
गृहिणी बिना अन्न प्राण त्यागे ३
लज्जा बडी ग्लानि हुए कष्ट भारी।
व्यापारमें सारी पूँजी हारी ४
विट्ठल देवल हुआ अति जीर्ण।
उद्धारकी मन बात आयी ५
पहिले कीर्तन पुन एकादशा।
रहा न अभ्यासी चित्त तदा ६।
कुछ किय कउ सतोंके वचन।
विश्वास सम्मान उर धारे ७
जहाँ नामगान गाऊँ पद टेक।
धरूँ चित्त एक भक्ति भाव । ८

अजगर मुनि ह्लादसे कहते हैं मेरा चरित्र लोक· यव ार और शास्त्र मर्यादाके अनुकूल न ीं है (ऐसा जड मूढजन समझते ै) इसलिये वह ताने योग्य न होनेपर भी तुम भगवान्के भक्त हो इसलिये तुम्हे बतला दिया

सत पद तीर्थ किया सुधापान ।
दिये लज्जा मान छोड पीछे ०

बन पड जो भी किया उपकार ।
काया कष्ट कर हरि भजे १०

हित नात वच दृढ माया फंद ।
तोडे भव बन्द हरि कृपा ११

सत्य असत्यमें साक्षी रखा मन ।
बहुमत मान माना नहीं १२

सपनेमें पाया गुरु उपदेश ।
नाममें विश्वास दृढ धरा १३

तब स्फुर आयी कवित्वकी स्फूर्ति ।
हरि पद रति उर धारी १४

'निषेध'की एक लगी भारी चोट ।
दुखी हुआ चित्त काल एक १५

बहियाँ डुबा दीं बैठा दिये धरन ।
आये प्रभु कान्हा समाधान १६

कहाँ लों विस्तार है बहु प्रकार ।
होगी बनी बेर अंत नति १७

अब जो हूँ जैसा आपके सम्मुख ।
भावी जो सुख जान हरि १८

भक्तोंको न भूले कदा भगवान ।
पूर्ण दयावान मेरे हरि १९

तुका कहे सारा यहा मेरा धन ।
श्रीहरि वचन हरि बोल २०

(मूल मराठीसे अनुवादित)

इन अभगोंमें श्रीतुकाराम महाराज अपने जीवनकी कुछ मुख्य बातें इस प्रकार गिनाते हैं

(१) मैं जातिका शूद्र हूँ पर व्यवसाय मैंने वैश्यका किया

(२) मेरे कुल स्वामी पा डुरङ्ग है उन्हींकी उपासना हमारे कुल में परम्परासे चली आती है

(३) पिता माताका स्वर्गवास होनेके बादसे ससारके दु ख मैंने बहुत उठाये अकाल पड़ा उसमें घरमें जो कुछ था वह सब द्र य स्वा । हो गया और द्रव्यके साथ ही प्रतिष्ठा भी धूलमें मिली एक स्त्री अन्न अन्न पुकारती हुई मरी जो जो यवसाय किया उसमें नुकसान ही उठाया इससे बड़ा क हुआ मुझे आप ही अपनी लज्जा आने लगी इस प्रकार ससारसे असह्य ताप हुआ

(४) ऐसी हालतमें मनको बहलानेकी एक बात सूझी श्रीविश्व म्भरबाबाका बनवाया श्रीविठ्ठलमन्दिर टूटा पड़ा था उसका जीर्णोद्धार करनेका विचार मनमें उठा दिन रात परिश्रम करके यह कार्य पूरा किया

(५) साधन पथमें पहले एकादशी व्रत रहने लगा और नाम सकीर्तन करने लगा आरम्भमें अभ्यास न होनेसे उसमें मन नहीं रमता था तब सन्तोंके ग्र थ देखे उनके कुछ बोध वचन क ठस्थ किये सन्त वचनोंपर पूर्ण विश्वास रखा और आदरसे उन्हें हृदयमें धारण किया अर्थका मनन करते हुए अभ्यासमें मन रमाया

(६) कोई भगवद्भक्त हरिकीर्तन करते तो मैं उनके पीछे खड़ा होकर भजनका स्थायी पद गाया करता था और भक्ति भावसे मनको शुद्ध करके मनको मननमें लगा श्रीहरिप्रेमको मनमे भरने लगा

(७) कीर्तन भजन नाम सकीर्तन करनेवाले कोई भी सन्त मिल जाते तो उनके चरणोंमें गिरकर उनका चरणामृत ले पान करता था ऐसा करनेमें मुझे कभी लज्जा नहीं बोध हुई

(८) शरीरसे कष्ट करके जो भी परोपकार बन पड़ता उसे करता था पर काजके साधनेमें देहको घिस डालना अच्छा ही लगता था

(९) इस प्रकार परमार्थकी साधना मैंने आरम्भ की कथा कीर्तनों में और स तोके समागममें बड आन द आने लगा चित्त इन्हींमें रमने लगा परहित स धनमें शरीरको कष्ट करके थका डालनेमें बडा मज आने लगा पर मेरी यह अवस्था मेरे स्वजनोंसे न देखी गयी भाई बन्द और स्त्री आदि सभी उपदेश देने लगे और गृहप्रपञ्चकी ओर खीचने लगे पर मैंने अपने कलेजेको कठोर बना लिया था किसीकी कुछ भी न सुनी गृह प्रपञ्चसे मेरा चित्त जड मूलसे उचट गया था उस ओर देखनेतककी इच्छा न होती थी स्वजन अपनी ओर खींचते थे पर मेरा मन परमार्थ की ओर खीचा जा रहा था लोग प्रवृत्तिमार्ग बताते थे पर मन तो निवृत्तिमार्गमें ही रमता था प्रवृत्ति निवृत्तिकी इस खींचातानीमें सत्यासत्य की पहचानके लिये मैंने अपने मनको साक्षी बनाया और सत्यस्वरूप भगवान् श्रीहरिका ही पथ अनुसरण किया असत्य मिथ्या न वर प्रपञ्चको तिलाञ्जलि दे दी बहुमतको नही माना नित्यानित्यविवेक करके नित्यको ही अपना लिया

(१०) इस प्रकार जब मै श्रीहरि चरण प्राप्तिके लिये कृतसकल्प हुआ तब सद्गुरु श्रीबाबाजी चैत यने स्वप्नमें दर्शन देकर श्रीराम कृष्ण हरि मन्त्रका उपदेश किया मैंने हरि नाममे दृढ विश्वास धारण कर लिया यही विश्वास चित्तमें धार लिया कि श्रीहरि नाम ही तारनेवाला है यही अपने न मी श्रीहरिसे मिलानेव ला है इसीका सहारा मैंने पकड़ लिया

(११) अखण्ड श्रीहरि नाम स्मरणमें जब चित्त लीन होने लगा तब कविता करनेकी स्फूर्ति हुई श्रीहरि कीर्तन करते श्रीहरि प्रसादरूपसे अभंग वाणी निकलने लगी मैंने जाना यह मेरी बुद्धिका प्रकाश नहीं यह भगवान्का ही प्रसाद है वहांकी बात उन्हींसे मेरे द्वारा निकलती है यह जानकर कृतज्ञतासे गद्गद हो श्रीविठ्ठलनाथके श्रीचरण मैंने हृदय में धारण कर लिये

(१२) यही क्रम चला जा रहा था जब बीचमें ही (रामेश्वर भट्ट के द्वारा) निषेध' का आघात हुआ मैं भगवान्को प्रसन्न करनेके लिये भगवान्की ही प्रेरणासे कवित्व कर रहा था पर कुछ लोगोंने मेरे इस प्रयासको अनुचित समझा वे इसका विरोध करने लगे इस विरोधसे मेरा चित्त दुखी हुआ और मैंने अभंगोंकी सब वहियोंको ले जाकर इन्द्रायणीके दहमें डुबा दिया और फिर (तेरह अहोरात्र) भगवान्के द्वारपर धरना दिये उन्हींके ध्यानमें पडा रहा तब नारायणको दया आयी उन्होंने स्वयं दर्शन देकर मेरा समाधान किया और मेरी वहियोंको भी जलसे बचा लिया

३ वैराग्य

इस प्रकार इन अभंगोंमें घर गिरस्तीका भार तुकारामजीके सिर पडा तबसे उन्हें भगवान्का सगुणसाक्षात्कार हुआ तबतककी सभी मुख्य घटनाओंका वर्णन श्रीतुकारामजीके ही शब्दोंमें सुननेको मिला है पहले उन्होंने वैश्य व्यवसाय किया अर्थात् बनियेकी दूकान की कुछ वर्ष उनका यह काम अच्छा चला पर पीछे उनपर एक एक करके अनेक विपत्तियाँ आयी जिनसे वह बहुत ही दुखी हुए और संसारसे उन्हें विराग हो गया माता पिताका देहान्त हुआ दुर्भिक्षमें सब धन स्वाहा हुआ द्रव्यके साथ प्रतिष्ठा भी चली गयी व्यापारमें दिवाला निकला पत्नी अन्न

के लिये तडप तडपकर मर गयी जो भी काम किया उसीमें घाटा उठाया इस तरह सब तरफसे वह प्रपञ्चके दावानलसे घिर गये दु खमय ससारकी दु खमयता उन्होंने अच्छी तरहसे देख ली और उन्हे वैराग्य हो आया गृहादि प्रपञ्चकी पञ्चाग्निसे जब मनुष्य इस तरह झुलस जाता है तब वह परमार्थमें प्रवृत्त होना ही श्रेय समझने लगता है ससार-दु खसे दुखी और त्रिविध तापसे दग्ध जीव ही परमार्थका पात्र होता है यों तो हम सभी ससार दु खसे दुखी हैं और कभी कभी दु खके अति दु सह हो उठनेपर ससारसे क्षणिक वैराग्यका भी अनुभव कर लेते है, पर फिर सीडमें लिपटी मक्खीकी तरह उसी ससारमें लिपटे रह जाते हैं तुकाराम भी ससारसे उपराम हुए पर तुकारामकी उपरामता और हम सामान्य जनोंकी क्षणकालीन उपरमतामें बडा अन्तर है उन्हें जो विराग हुआ वह प्रपञ्चके जडमूलसे हुआ उस वासनाको ही उन्होंने काट डाला जिससे सारा प्रपञ्च निकला क्षणिक वैराग्य जिसे श्मशान वैराग्य कहते है हम सबको नित्य ही हुआ करता है पर श्मशान भूमिसे विदा होते ही वह वैराग्य भी सदाके लिये विदा हो जाता है कारण वह वैराग्य ऊपरी होता है चार आँसू जहाँ गिरे वहीं उसकी इति हुई तुकारामजी प्रपञ्चसे केवल ऊबे नहीं, प्रपञ्चकी तहतक पहुँचे और उसकी वासना मूलीको ही उखाड लाये उन्होंने ही जाना कि ससार नश्वर है और सासारिक सुख केवल भ्रम है उन्होंने ही यह समझा कि प्रापञ्चिक वासनाओंमे कभी न फँसना चाहिये। इस प्रकार उनके हृदयमे उस वैराग्यका बीजारोपण हुआ जो परमार्थ-वृक्षका मूल है

४ साधन पथ

ससारसे उनके विमुख होते ही परमार्थ उनके सम्मुख हुआ परमार्थ प्राप्तिके लिये उन्होंने जो साधन किये उनका भी वर्णन आगे करते है

श्रीविठ्ठल मन्दिरका उन्होंने जीर्णोद्धार किया एकादशी व्रत और हरिजागरण करने लगे, कीर्तनकारों और भजनीकोंके पीछे करताल लिये विशुद्ध भावसे तालधारी बन खडे होने लगे साधु स तोंके ग्र थ देखने और मनन सुख देने वाली उनकी सूक्तियोंको कण्ठ करने लगे लोक लाज छोडकर सन्तोंके चरण सेवक बने शरीरसे जितना बन पडता, पर उपकार करते यही उनका साधन मार्ग था स्त्री बन्धु आप्त स्वजन फिर भी प्रयत्न करते रहे कि तुका परमार्थको छोड फिर प्रपञ्चमें मन लगावें पर इन लोगोंका यह प्रयत्न क्या था तुकारामजीके अविचल निश्चयकी ही परख थी अन्त करणकी शुभेच्छाको प्रमाण मानकर सबकी सुनी अनसुनी करके वह निष्ठाके साथ अपने उपासना मार्गको ही पकड़े रहे इनका ऐसा अटल विश्वास जान श्रीसद्‌गुरु बाबाजी चैतन्यने इनपर अनुग्रह किया स्वप्नमें उपदेश दिया तुकारामके परम प्रिय राम कृष्ण हरि मन्त्रकी दीक्षा दी तुकारामजीने स्वय ही इस प्रकार अपना साधन मार्ग बताया है श्रीविठ्ठल मन्दिरके जीर्णोद्धारसे लेकर श्रीसद्‌गुरु कृपाके हो तक सब साधनोंका साधन उन्होंने भक्ति भावसे चित्तको शुद्ध करके किया इन साधनोंमें अन्तिम और प्रधान साधन नाम स्मरण ही रहा नाम स्मरण उनका कभी न छूटा पर इससे कोई यह न समझे कि अ य साधनोंका महत्त्व किसी प्रकार कम है प्रथम साधन हुआ—श्रीविठ्ठल मन्दिरका जीर्णोद्धार यह मन्दिर देहूमें श्रीविश्वम्भरबाबाके समयसे ही था तबसे वहाँ भगवान्‌की पूजा अर्चा धूप दीप आरती आदि सभी उपचार बराबर होते ही चले आये थे यह विठ्ठल मन्दिर तुकारामजीसे पहले भी था और अब पीछे भी है जीर्णोद्धार उन्होंने जो कुछ किया वह यही किया कि पत्थर इकट्ठे किये मिट्टी पानीमें सानकर गारा बनाया दीवारें उठायीं और यह सब अपनी देहसे पसीना बहाकर किया भगवान्‌की यह कायिक सेवा थी इस कायिक सेवाके द्वारा भगवान्‌के मन्दिरका उन्होंने जो

जीर्णोद्धार किया वह उनका अपना भी जीर्णोद्धार हुआ हृदयके अन्त स्तलमें दबा हुआ भाव ऊपर उठ आया भक्ति जी उठी और इसी भक्तिने उन्हें पीछे भगवान्‌के दर्शन करा दिये तुकारामजीने स्वय ही कहा है निधि जो गडी रखी थी सो इस भाव भक्तिसे हाथ लगी ' जिस भावसे भगवान् रहते हैं जिस भावसे भगवान् मिलते है, उसी भावको उन्होंने मन्दिरके जीर्णोद्धारसे अपने सम्मुख मूर्तिमान् किया चित्तमें भावका उदय होनेसे गारे और मिट्टीका काम करते हुए भी भगवान्‌की सेवा किस प्रकार हुई सो भक्त ही जान सकते है मै तो यही समझता हूँ कि जिन विश्वात्मक विश्वपिता श्रीपाण्डुरङ्गके नामका झण्डा उन्होंने विश्वके ऊपर फहराया वे विश्वात्मा तुकारामजीकी इस प्रथम चरणसेवाके समयसे ही अपनी स्नेहदृष्टि तुकारामजीकी ओर सलग्न किये रहे चन्दन धूप दीप आरती प्रभाती दण्डवत्, भजन पूजन कीर्तन आदि उपासनाके बहिरग है और चित्तमें यदि इनके साथ भाव न हो तो ये सब बहिरग बाहर के बाहर ही रह जाते है चित्तमे यदि भक्ति भाव हो तो ये ही बहिरग उन भक्तवत्सल श्रीविठ्ठलके समचरण सरोजकी प्राप्तिके पक्के साधन बन जाते है तुकारामजीके चित्तमें विमला भक्तिका विशुद्ध भाव उदय हो चुका था और इस भावको सग लिये अन्तरगको बहिरगमें मिलाये उन्होंने श्रीविठ्ठल मन्दिरका जीर्णोद्धार किया एकादशीव्रत लिया महात्माओंके ग्रन्थोको विश्वास और समादरके साथ पढा सतत अभ्यासके लिये उनके वचन कण्ठमे धारण कर लिये कीर्तनकारोंके पीछे तालधारी बन खडे हुए—यह सब किया भक्तिभावसे मनको शुद्ध करके उनका साधन पथ भावमय था भावसे ही भावके भोक्ता भगवान् प्रसन्न हुए और बाबाजी चैतन्यका उपदेशामृत मिला जिससे सभी साधन सफल हुए और सब साधनोंके फलस्वरूप उन्हें भगवन्नामकी रट लग गयी भगवान्‌की पूजा अर्चा सद्ग्रन्थ सेवन सन्त समागम,

एकादशीव्रत श्रीहरि कीर्तन और नाम स्मरण ये सभी श्रीतुकारामजीके साधन पथके अग थे यह बात ध्यानमे रहे इन्हीं साधनोंसे और श्रीगुरु कृपाके बल भरोसे वह आगे ही बढते गये और अन्तको भगवान्की पूर्ण कृपाके अधिकारी हुए

५ सगुण साक्षात्कार

वैराग्य हो आना और तब साधन पथपर चलना क्रमसहित बता कर तुकारामजीने अन्तमें श्रीभगवान्का अनुग्रह होनेकी बात कही है भगवत्कृपाका प्रथम प्रसाद था—कवित्वस्फुरण यह कवित्वस्फुरण सामान्य नहीं अति विलक्षण है तुकारामजीके समय कवित्वका बाना कसे हुए ऐसे बहुतेरे कवि गली गली मारे मारे फिरा करते थे और आज भी हैं जो पूर्वके कवियोंकी कृतियोंका मक्षिकास्थाने मक्षिका का सा अनुवाद करके या साहित्यिक चोरी करके भी अपने कवि या महाकवि होनेका दम भरा करते हैं ऐसे कवियोंको तुकारामजीके कवित्वस्रोतका पता भी नहीं लग सकता अस्तु तुकारामजीने जो कविता की वह अन्त र्यामीकी स्फूर्ति थी उस स्फूर्तिके बिना उन्होंने एक भी अभग नही रचा जो भी रचना की भगवान्की प्रेरणासे भगवान्की प्रसन्नताके लिये या स्वान्त सुख के लिये की उनकी ऐसी अभग रचनाको उनकी न कहकर उनके प्रेमपरिप्लावित अन्त करणसे आप ही निकल पडी हुई अभग प्रेम धारा कहें तो अधिक समुचित होगा उनके अभग श्रीहरि प्रेमके अमृतोद्गार हैं यह अभग बानी सखा भगवन्त की बानी है उनकी ऐसी लोक विलक्षण प्रेम वाणीको जब श्रीरामेश्वर भट्ट जैसे विद्वान् वैदिक ब्राह्मणने 'निषिद्ध ठहराया तब तुकारामजीका व्यथित चित्त हो जाना स्वाभाविक ही था उन्होंने अभगोंकी सब बहियाँ इन्द्रायणीके दहमें डुबा दीं तब 'नारायणने समाधान किया भगवान्ने उन्हें दर्शन दिये

और उनकी बहियोंको भी जलसे उबार लिया तुकारामजीका जी बहुत दिनोंसे जो भगवान्‌के दर्शनोंके लिये छटपटा रहा था सो अब शान्त हुआ उ हें भगवान्‌के मन, वचन नयन सभी अग अयन प्रत्यक्ष हुए उनकी विकलकता दूर हुइ भगवान्‌की बातें अब केवल कही सुनी ही न रहीं देखी भी हो गयी अब वह यह भी कहनेमें समर्थ हुए कि मैंने भगवान्‌को देखा है इन्हा अभगोंके अन्तमें उन्होंने यह कहा है कि

भक्तोंका न भूलें कदा भगवान्। पूर्ण दयावान् मेरे हरे।

भगवत्कृपाका प्रत्यक्ष अनुभव उ हें प्राप्त हुआ स्वानुभवसे अब वह यह कहने लगे कि भक्तोंको श्रीहरि कभी नहीं बिसारते इस सगुण साक्षात्कारकी बात उन्होंने केवल संकेतमात्रसे कही है इस विषयमें उनके कुछ खास अभग भी हैं जिनका विचार किसी दूसरे अध्यायमें स्वतन्त्र रूपसे किया जायगा

६ दूसरे अभगक विचार

कहना नहिं किन्तु करता पालन' कहकर तुकारामजीने उपर्युक्त अभगमें अपने चरित्रकी जो मुख्य मुख्य बातें गिना दी हैं उनमें आत्म स्तुति नाममात्रको भी नहीं है, तथापि अपना चरित्र आप ही कहा इसी एक बातका उन्हें इतना खयाल हुआ है कि दूसरे अभंगमें बड़ी लघुता धारण करके महाराज कहते हैं कि मेरा उद्धार नहीं हुआ कैसे होता ? मैं भी तो आप ही लोगोंमेंसे एक हूँ जैसे आप हैं वैसा ही मैं भी " आपलोग एक दूसरेकी देखा देखी मुझे जो बड़प्पन देते हैं उसके योग्य मैं नहीं हूँ आपलोगोंका ऐसा करना भी ठीक नहीं है मैंने किया ही क्या है ? घर गृहस्थी चलाना मेरे लिये भार हो गया अपने कुकर्मों

मैं ऐसा अभागा पैदा हुआ कि कुछ भी पुरुषार्थ न बन पड़नेसे घर द्वार छोड़कर मुँह छिपाकर मैं जगलमें जा बैठा यह जो भगवान्की पूजा अर्चा करता हूँ सो भी बड़े लोग करते आये हैं इसलिये करता हूँ भाव भक्ति तो कुछ है नहीं ' तुकारामजीने श्रोताओंको इस तरह बहुत समझाना चाहा इसका क्या प्रभाव उन लोगोंके चित्तपर पडा होगा सो अनुम नसे जाना जा सकता है उन्होंने यही सम I होगा कि महाराज जो ऐसी ऐसी बात कह देते हैं सो केवल इसलिये कि लोग उ हें महात्मा समझ उनके पीछे न लग जाय उपाधि न बढे और ईश्वरी प्रसाद जो कुछ मिला है वह सुस्थिर और दृढ करनेके लिये एकान्त मिलता रहे महाराजका जो कुछ चरित्र था वह उनसे छिपा नहो था कीतन करते हुए महाराज जैसे त मय हो ते थे उसे वे लोग नित्य ही देखते थे भगवान्के लिये महाराजने गृहस्थीपर लात मार दी यह भी उन्होंने अपनी आँखों देखा था यह भी वे देखते थे कि राम कृष्ण हरी' के जय निनादसे सारा देहू ग्राम भ डारा मोराडा और भा गिरिके पवत निनादित होते थे सवत्र उनके यशका यह डका बज रहा था कि तुकाराम महाराजको भगवान्ने प्रत्यक्ष दर्शन देकर उनके अभगोंकी पोथियोंको जलसे उबार लिया ऐसी अवस्थामें उनके इस कथनको कि मैं भक्ति भावसे भगवान्की पूजा नहीं करता या मेरा उद्धार नहीं हुआ भक्तोंने किस भावसे ग्रहण किया होगा यह बतलानेकी आवश्यकता हीं

७ मध्यखण्डकी

अस्तु इस प्रकार तुकारामजीने जाति शूद्र वाले अभगमें तीन विशेष बातें कही हैं (१) वैराग्य प्राप्ति (२) साधनमाग और

(२) रामेश्वर भ द्वारा होनेवाला निषेध' और स्वय भगवान् पाण्डुरङ्गके द्वारा उसका निवारण जन्मसे लेकर सगुण साक्षात्कार होनेतकका अर्थात् २ वर्षका चरित्र महाराजने यहीं क८ दिया है इसी क्रमसे हमें उनके चरित्रका विचार करना होगा पिछले अध्यायमें हमलोगोंने उनके जन्मसे लेकर उनकी उम्रके २२ वे वर्ष उन्हे वैराग्य प्राप्त हुआ वहाँतकका चरित्रावलोकन किया है इसके बादके ७ वर्ष महाराजके चरित्रके अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है इसलिये इनका विस्तारपूर्वक विवरण पाठक इस खण्डमें पढेगे तुकाराम महाराजकी उपासनाका मुख्य विषय श्रीपा डुरङ्ग पूर्वके साधु संतोंद्वारा इस उपासनाका प्रशस्त किया हुआ मार्ग तुकारामजीका साधन क्रम गुरूपदेश, कवित्वस्फूर्ति कवित्वका रामेश्वर भट्टद्वारा निषेध तन्निमित्त तुकाजीका धरना पोथियोका डुबाया जाना और उनका ऊपर निकल आना श्रीपाण्डुरङ्गका सगुण दर्शन इत्यादि महत्त्वपूर्ण विषय इस खण्डमे आनेवाले है इसलिये य खण्ड तुकाराम चरित्रका मानो अन्त करण है उनके चरित्रका रहस्य इस खण्डमे पाठक समझ लेंगे मुमुक्षुओंके लिये यह खण्ड आदर्शस्वरूप होगा यह मध्यखण्ड तुकारामजी के चरित्रका हृदय है तुकाराम महाराजके चरणोंका स्मरण कर अब हमलोग यह देखें कि उनकी उपासनाका उपास्य क्या था

ॐ ॐ ॐ

वारकरी सम्प्रदायका साधनमार्ग

पढरीकी वारी मेरा कुलधर्म । अन्य नहि कर्म ताथव्रत १
रहूँ उपवासी एकादशी व्रत । गाऊँ दिन रात हरिनाम ध्रु
नाम श्रीविट्ठल मुखसे उचारूँ । बीज कल्पतरु तुका कहे २

श्रीतुकाराम

१ धन गके चार पडाव

प्रप से जब तुकारामजीका चित्त उचाट आ तब स्वभावत ही परमा थकी ओर झुके चित्तसे जबतक प्रपञ्च बिल्कुल उतर नहीं जाता तबतक परमार्थ नहीं सूझता नहीं भाता नहीं रुचता नहीं ठहरता मनोभूमि जब वैराग्यसे शुद्ध ो जाती है तब उसमें बोया हुआ ज्ञानबीज अकुरित ोता है तुकाराम जन्मसे ही मुक्त थे सलिये यह नियम उनपर नहीं घ‍ता ऐसा यदि कोइ क‍ तो वह ठीक है परतु मुक्त पुरुषका चरित्र भी जब लिखा जायगा तब मानवी ष्टिसे ही ो लिखा ायगा जो जीव मुक्त े उसके लिये साधनोंकी भी क्या आवश्यकता है ?

वह तो सदा साधनातीत है परन्तु मुक्त पुरुषका चरित्र ब मानवी दृष्टिसे लिखा जाता है तभी मुमुक्षुजन उससे लाभ उठा सकते हैं इसीलिये तुकारामको जब वैराग्य हुआ तब उन्होंने क्या क्या साधन किये और वह कैसे भगवत्प्रसाद पानेके अधिकारी हुए यह हमें अब देखना है तुकाराम जिस कुलमें पैदा हुए उस कुलमें परम्परासे वारकरी सम्प्रदाय चला आया था अर्थात् वारकरी सम्प्रदायकी शिक्षा उन्हें बचपनसे घरमे ही प्राप्त हुई पण्ढरीकी आषाढी कार्तिकी यात्रा करना उनका कुल धर्म ही था वैराग्य प्राप्त होनेके पूर्व भी वह अनेक बार पण्ढरी हो आये थे ज्ञानेश्वरी और एकनाथी भागवत तथा नामदेव और एकनाथके अभग उन्होंने बचपनमें ही सुन रखे थे एकनाथ महाराजने आलन्दीका यात्रा की तबसे आलन्दीकी यात्राका प्रचार बहुत बढा बहुत लोग यह यात्रा करने लगे और वारकरी सम्प्रदाय पूना प्रान्तमे खूब फैला आलन्दी पूना देहू और आस पासके ग्रामोंमें घर घर एकादशीका व्रत और जहाँ तहाँ भजन कीर्तन होने लगा तुकारामजीके मनपर इस प्रकार वारकरी सम्प्रदायके सस्कार जमे हुए थे और जब समय आया तब उन्होंने इसी सम्प्रदायका साधन क्रम स्वीकार किया और अन्तमें अपने तपके प्रभावसे वह उस पन्थके आचार्य बने काम क्रोध लोभरूप ससारसे जहाँ चित्त हटा तहाँ वह मोक्षमार्गपर आकर सज्जनोंका ही सग पकडता है और फिर ज्ञानेश्वर महाराज कहते हैं कि वह प्रबल सत्सगसे तथा सत्‌शास्त्रके बलसे जन्म मृत्युके जगलोंको पार कर जाता है (४४१) तब आत्मानन्द जहाँ सदा वास करता है वह सद्गुरु कृपाका स्थान उसे प्राप्त होता है (४४२) वहाँ प्रियकी जो परम सीमा है उस आत्मारामसे उसकी भेंट होती है और तब ससारके सब ताप आप ही न होते हैं (४४३)' (ज्ञानेश्वरी अ १६) सतत सत्सग सत् का अध्ययन गुरुकृपा और आत्मारामकी भेंट—यही वह क्रम है जिससे

जीव ससारके कोलाहलसे मुक्त होता है ठीक इसी क्रमसे तुकारामजी साक्षात्कारकी अन्तिम सीढीपर चढ गये इस मध्यखण्डमें हमें यही दिव्य इतिहास देखना है सज्जनोंका सग और उस सगसे अनायास अभ्यस्त होनेवाले साधनोंका अवलम्बन पहला पडाव है फिर सत् शास्त्रों अर्थात् साधु सतोंके ग्र थोंका अध्ययन दूसरा पडाव है गुरूपदेश तीसरा पडाव और आत्म साक्षात्कार अ तिम पडाव है ये चार मुख्य पडाव हैं और बीच बीचमें छोटे छोटे पडाव और हैं चलिये हमलोग भी तुकारामजीके वचनोंके सहारे मार्ग ढूँढते हुए और उन्हींके पद चिह्नोंपर चलते हुए धीरे धीरे इन सब पडावोंको तय करके गन्तव्य स्थानको पहुँचें

२ वारकरी सिद्धा त पञ्चदशी

मोक्षमार्गपर चलनेवाले सज्जनोंका सग पहला पडाव है मोक्षमार्गपर चलनेवाले मुमुक्षु और साधकोंके सगसे शुभेच्छा प्रबल होती है मुमक्षुको बद्धका सग कभी प्रिय नहीं हो सकता सग सजातियोंका होता है और उसीसे प्रीति और गुणोंकी वृद्धि होती है प्रपञ्चसे जब जी ऊब गया और भगवान्की ओर चित्त खिच गया तब स्वभावत ही तुकारामजीकी यह इच्छा हुई कि ऐसे पुरुषोंका सग हो जिनका चित्त भगवान्में लगा हो (देव वसे ज्याचे चित्तीं त्याची घडावी सगती) पूर्ण सिद्ध पुरुष या सद्गुरुकी भेंट सहसा नहीं होती और यदि हो भी जाय तो होने जैसी नहीं होती इसलिये पहले अपने ही जैसे समानधर्मियोंका सग आवश्यक होता है इस सत्सगमें जो आचार विचार प्राप्त होते हैं वे ही प्रिय होते हैं उन्हींका अनुसरण स्वपूर्वक होता है इस प्रकार देखते हुए तुकारामजीको पहले वारकरियोंका सत्सग लाभ हुआ वही उन्हें प्रिय हुआ और वारकरियोंके साधनोंका ही उन्होंने अवलम्बन किया वारकरी सम्प्रदायका समग्र इतिहास यहाँ लिखनेका अवकाश नहीं है इसलिये

संक्षेपमें इस सम्प्रदायके मूल भूत सिद्धान्त यहाँ लिखे देते हैं यह सम्प्रदाय बहुत प्राचीन है श्रीज्ञानेश्वर महाराजसे भी पहलेका है वारकरी सम्प्रदाय महाराष्ट्रके भागवतधर्मका ही दूसरा नाम है इसके पद्रह सिद्धान्त हैं जो सब वारकरियोंके मान्य हैं यह सिद्धान्त पञ्चदशी इस प्रकार है

(१) उपास्य श्रीपण्ढरपुर निवासी पा डुरङ्ग इस सम्प्रदायके उपास्य देव हैं सिद्धान्त यह है कि सगुण और निर्गुण एक है महाविष्णुके सभी अवतार मान्य हैं पर दशावतारोंमेंसे राम और कृष्ण विशेष मान्य हैं जो विठ्ठल अर्थात् गोपाल कृष्ण उपास्य है

(२) सत्-शास्त्र ग्रन्थ मुख्य उपासना-ग्रन्थ गीता और भागवत हैं गीता ज्ञानेश्वरी भाष्यके अनुसार और भागवत एकादश स्कन्ध नाथ भागवतके अनुसार सनातन धर्म प्रतिपादक वेद शास्त्र पुराण मान्य हैं वाल्मीकिरामायण और महाभारत मान्य हैं सम्प्रदायप्रवर्तक संतोंके वचन भी मान्य हैं हरिपाठ विशेष मान्य है

(३) ध्येय अभेद भक्ति अद्वैत भक्ति अथवा मुक्तिके परेकी भक्ति ध्येय है अद्वैत सिद्धान्त स्वीकार है पर इस कौशलसे इस येयको प्राप्त करना कि अभेदको सिद्ध करके भी संसारमें प्रेमसुख बढानेके लिये भेदको भी अभेद कर रखना

अभेदके भेद किया निज अंग ।
पावे सारा जग प्रेम सुख

ज्ञान और भक्तिकी ऐसी एकरूपता कि जो भक्ति है वही ज्ञान है और वही श्रीहरि विठ्ठल हैं

वही भक्ति वही ज्ञान ।
एक विठ्ठल ही जान

द्वैताद्वैतभावसे एक नारायण ही सर्वत्र व्याप्त है इस अनुभवको प्राप्त करना ही ध्येय है

(४) मुख्य साधन नवविधा भक्ति उसमें भी विशेषरूपसे अखण्ड नाम स्मरण और निरपेक्ष हरि कीर्तन मुख्य साधन है

(५) मुख्य मन्त्र राम कृष्ण हरी यही मुख्य मन्त्र है श्रीहरिके अनन्त नाम सभी स्मरणीय हैं विष्णुसहस्रनाम भी विशेष मान्य है

(६) भक्तराज गरुड हनुमान् और पुण्डलीक

(७) आदिगुरु शङ्कर हरि हरमें पूर्ण अभेद

(८) मुख्यमहन्त—नारद प्रह्लाद ध्रुव अर्जुन उद्धवके समान ही निवृत्ति ज्ञानदेव सोपान मुक्ताबाई एकनाथ नामदेव तुकाराम मुख्य महन्त हैं इन्होंने जिन संतोंको माना है वे भी मान्य हैं

(९) संत नाम स्मरण जय जय राम कृष्ण हरी अथवा जय विट्ठल या विठोबा रखुमाई इन भगवन्नाम मन्त्रोंके समान ही ज्ञानेश्वर माउली तुकाराम ज्ञानदेव नामदेव एका तुका भानुदास एकनाथ, दत्त जनार्दन एकनाथ ये संत नाम मन्त्र भी तारक हैं देव ही संत, संत ही देव यही सिद्धान्त है

(१०) पूज्य संत गो विप्र और अतिथि पूज्य हैं भगवान् श्रीकृष्णने इन्हें पूज्य माननेका जो दृष्टान्त अपने आचरणसे दिखा दिया वह अनुल्लङ्घनीय है द्वारपर वृन्दावन गलेमें तुलसीकी माला और भगवान्‌के लिये तुलसीका हार आवश्यक है

(११) महाव्रत एकादशी और सोमवार आषाढी एकादशी तथा कार्तिकी एकादशीके अवसरपर पण्ढरीकी यात्रा कम-से कम इनमेंसे एक एकादशीको तो पण्ढरीकी यात्रा अवश्य ही करना और इस नियमको अन्ततक चलाये जाना महाशिवरात्रिको व्रत रखना

(१२) महातीर्थ महातीर्थ चन्द्रभागा और महाक्षेत्र पण्ढरपुर

त्र्यम्बकेश्वर आलन्दी पैठण सासवड देहू इत्यादि सतस्थान भी महाक्षेत्र ही हैं गङ्गा गोदा यमुना आदि तीर्थ तथा काशी, द्वारका, जगन्नाथादि क्षेत्र मान्य है

(१३) वर्ज्य पर । परधन, परनिन्दा और मद्य मांस सर्वथा वर्ज्य हैं हिंसा सर्वदा सर्वत्र और सबके लिये वर्ज्य है काया वाचा मनसा अहिंसा व्रत पालन करना आवश्यक है

(१४) आचार जिसका जो वर्ण धर्म जाति धर्म आश्रम धर्म और कुल धर्म हो उसका वह अवश्य पालन करे कुलधर्ममें दक्ष रहे विधि निषेधका पालन करे पर जो कुछ करे वह भगवान्‌को प्रसन्न करनेके लिये करे यह शास्त्रों और संतोंका उपदेश सर्ववन्द्य है ज्ञानेश्वर महाराज कहते है इसलिये अपना कर्म जो जाति स्वभावसे प्राप्त हुआ हो उसे करनेवाला पुरुष कर्म बन्धको जीत लेता है (ज्ञानेश्वरी अ १८ ९३३)

(१५) परोपकार-व्रत सब विष्णुमय जगत् ' यह मानना कि विष्णुमय जगत् है यही वैष्णवोंका धर्म है (तुकाराम) सब भूतोंमे भगवद्भाव' धारण करो (एकनाथ) जो कुछ भी देखो उसे भगवान् मानो यही मेरा निश्चित भक्तियोग है ' (ज्ञानेश्वरी अ० १ ,१८) इस उदार तत्त्वको ध्यानमे रखकर समता और दयाका व्यवहार करके साथ करते हुए तन मन वाणीसे सबके काम आना ही भूतपतिकी सेवा है

३ भागवत धर्म

वारकरी सम्प्रदायके ये मुख्य सिद्धान्त हैं भागवत धर्मके इन सिद्धान्तों को मानकर तथा मानते हुए वारकरी पाण्डुरङ्गकी उपासना आरम्भ करता है तुकारामजीके पूर्व ये ही सिद्धान्त वारकरियोंमे प्रचलित थे और उन्होंने अपने चरित्रबल तथा उपदेशके द्वारा इन्ही सिद्धान्तोंका प्रचार किया भागवत धर्म कोई निराला क्रान्तिकारी धर्म नहीं है वैदिक धर्मका

ही यह सर्वसंग्राहक अत्यन्त मनोहर और लोकप्रिय रूप है महाराष्ट्रमें भागवतधर्म जिस रूपमें प्रचलित है वही वारकरी सम्प्रदाय है कु प्राचीन कमठ यह समझते हैं कि यह सम्प्रदाय वेदोंके विरुद्ध एक नया सम्प्रदाय है और कुछ आधुनिक सुधारकोंकी भी यही राय है पर ये दोनों प्रकारके लोग गलतापर हैं उभौ तौ न विजानीत यथार्थमें यह वारकरी सम्प्रदाय सनातन धर्म ही है वर्णाश्रम धर्म इसे स्वीकार है इसकी यह शिक्षा है कि विहित कर्मका कोई त्याग न करे चे वारकरी मे जात्यभिमान नहीं होता और वह किसीसे डाह भी नहीं करता प्रार ध व जिस जातिमें हम पैदा हुए उसी जातिमें रहकर तथा उसी जातिके कर्म करते हुए प्रेमसे नारायणका भजन करें और तर जायँ इतना ही वह अपना कर्तव्य समझता है भगवान्का भजन ही जीवनका फ है यही इस सम्प्रदायकी शिक्षा होनेसे सब जातियों और वृत्तियोंके लोग एक स्थानमें एकत्र होते हैं और नाम सकीतनका आनन्द लेते और देते हैं सच्ची महत्ता भगवान्के भक्त होनेमें है सदाचार और हरिभजनसे काम है ऐसे प्रेमी वारकरियों अर्थात् मोक्षमार्गी सज्जनोंका सङ्ग तुकारामजीने पकड़ा और उ ी मार्गपर सदा दृढ रहे सम्प्रदाय घरका ही था पर वैराग्य होनेके बाद उ में उनका मनोयोग हुआ

४ अभ्यास

अनुताप होनेके बाद सम्प्रदाय ग्रहण करनेसे उसकी सजीवता प्रतीत होने लगती है तुकारामजीने अन्य वारकरियोंके सत्सङ्गसे बे नागे पण्ढरीकी वारी एकादशी महाव्रत अहोरात्र हरिजागरण कीर्तन भजन और नाम स्मरण हरिकीर्तनकी ताकमें रहना कीर्तन भजन पुराण आदिके श्रवणका अवसर हाथसे जाने न देना कोई भजन या कीर्तन करने खड़ा हो तो भावसे चित्तको शुद्ध करके उसके पीछे खड़े होना ध्रुवपद गाना धीरे

धीरे वीणा हाथमें लेकर स्वय कीर्तन करना और कीर्तनके लिये आवश्यक पाठ पाठान्तर करना ग्र थोंको देखना अर्थका मनन कर स्वय अर्थरूप होकर उसमें रँग जाना और इसी आनन्दमे सदा रहना इत्यादि अभ्यास किया

५ एकादशी महाव्रत

वारकरी सम्प्रदायमे एकादशी महाव्रतकी बडी महिमा है पद्रह दिनमें एक दिन निराहार रहकर दिन और विशेषकर रात हरि भजनमें बिताना ही उपवासका अभिप्राय होता है ससारके सभी धर्मोंमें[१] मनो वाकाय शुद्धिकी दृष्टिसे उपवासका बडा महत्त्व माना गया है हमारे यहाँ सबसे पहले श्रुतिमाताने ही य बताया है कि उपवास परमात्मप्राप्तिका साधन है बृहदारण्यकोपनिषद्मे तमेत वेदानुवचनेन ब्राह्मणा विविदिषन्ति यज्ञेन दानेन तपसानाशकेन यह वचन है इसका यह अर्थ है कि वेदाभ्यास अर्थात् स्वाध्याय यज्ञ तप दान और अनाशक अर्थात् अशनरहित—अन्न जलके बिना रहना ये पाँच भगवत् प्राप्तिके मार्ग हैं महाभारत अनुशासनपर्वके अ० १ ५ १ ६में एक दिन दो दिन तीन दिन एक पक्ष और एक वर्षतकके उपवास बतलाये हैं अनाशक अनशन निरशन उपवास (उप समीप वास

१ यहूदियोंमें तिश्री महीनेकी १ वीं तारीखको सबके लिये उपवास धर्मत आवश्यक है यहाँतक कि उपवास न करनेवालेके लिये शिरच्छेदका दण्ड विधान है मुसलमानोंमें रमजानके रोजे कितनी कड़ाईके साथ पालन किये जाते हैं सो सबको मालूम ही है जैन और बौद्ध धर्ममें भी उपवासकी पद्धति है ईसाई धर्मकी बात यह है कि स्वय ईसाने ४ दिन उपवास किया था आजकल अमेरिकामें उपवास से रोग दूर करनेकी प्रक्रिया डाक्टर बताने लगे हैं आरोग्यके विचारसे वे लोग लघन मानने लगे हैं

रहना) इत्यादि शब्दोंसे यही सूचित होता है कि भगवच्चिन्तनमें समय व्यतीत करना ही उपवासका मुख्य हेतु है भागवतमें एकादशी माहात्म्य वर्णित है नवम स्कन्ध अ ४ ६ में इस विषयमे अम्बरीष राजाका सुन्दर उपाख्यान भी है द्वादशीके दिन दुर्वासा मुनि अतिथि होकर आये उन्हें आनेमें बहुत विलम्ब होनेसे कहीं व्रत भङ्ग न हो इसलिये राजाने तीर्थोदक प्राशन कर लिया बस इसी बातसे दुर्वासा अतिशर्मा हो उठे उन्होंने अपनी जटासे एक कृत्या निर्माण की और उसे अम्बरीषपर छोडा राजा विष्णुभक्त थे विष्णुभगवान्का सुदर्शनचक्र दुर्वासाके पीछे लगा दुर्वासा घबरा गये और अन्तको लौटकर राजाके पास आये एक वर्ष उपवासके पश्चात् दुर्वासाके साथ राजाने भोजन करके पारण किया यह अम्बरीष राजा पण्ढरपुरकी ओर कोई दाक्षिणात्य राजा थे द्वादशी बारस बार्शीमें उसकी राजधानी थी बार्शीमें अब भी भगवान्का सुन्दर मन्दिर है पण्ढरीकी यात्रा करके बहुत से यात्री बार्शीमें भी भगवान्के दर्शन करते और घर लौटते हैं अम्बरीष राजा बड़े धार्मिक उदार और पराक्रमी थे (महाभारत शान्तिपर्व अ १२४) इस प्रकार हमारे यहाँ सामान्यत उपवासका और विशेषत एकादशीका माहात्म्य प्राचीनकालसे चला आता है और भागवतधर्मियोंके लिये तो यह महाव्रत ही है शरीर वाणी और मनकी पवित्रताके लिये ध्यान धारणाकी सुविधाके लिये तथा आत्मचिन्तनके लिये उपवासकी जो पद्धति पहलेसे चली आयी थी और वारकरी मण्डलमें जिसका इतना माहात्म्य है उस एकादशीका महाव्रत तुकारामजीने यावज्जीवन पालन किया उपदेश देते हुए उन्होंने लोगोंसे भी एकादशी करनेको बारम्बार कहा और केवल पिण्डपोषी आलसियोंको तीव्र शब्दोंसे धिक्कारा है

एकादशीके अन्नपान । जो नर करते भोजन ।
श्वान विष्ठा समान । अधम जन है वे ॥

सुना व्रतका महिमान । नेम आचरते जन ।
सुनते गाते हरिकीर्तन । व समान विष्णुके प्रभु ।
सज साज विलास भाग । करते कामिनीका सग ।
होता उनके क्षयरोग । जन्मव्याधि भयकर २

एकादशीको जो लोग अन्न जल ग्रहण करते भोजन करते हैं उनका वह भोजन श्वानविष्ठाके समान है और वे लोग अधम हैं सुनिये इस व्रतकी महिमा ऐसी है कि जो लोग इस व्रतका आचरण करते हैं हरिका कीर्तन करते और सुनते हैं वे विष्णुके समान होते हैं जो लोग चारपाईपर सोते और विलासभोग भोगते है कामिनीका सग करते है उन्हे क्षयरोग होता है यावज्जीवन महाव्याधि भोगते हैं

एकादशीको पान खानेसे लेकर सब प्रकारके विलासोका त्याग बताया है उपवाससे शरीर हलका होता है, मन उत्साही और बुद्धि सूक्ष्म होती है और तुकारामजीको इसमें जो सबसे बड़ा अनुभव प्राप्त हुआ वह यह कि इससे हरि भजनका कार्य बहुत ही अच्छा होता है इसीसे उन्होंने इतनी अवस्थाके साथ इतनी तीव्र भाषाका प्रयोग किया है

तुकारामजी कहते हैं

एकादशी और सोमवारका व्रत जो लोग नहीं पालन करते उनकी न जाने क्या गति होगी क्या करूँ इन बहिर्मुख अन्धोंको देखकर जी छटपटाता है

एकादशीके दिन नाना प्रकारकी मिठाइयाँ और नमकीन चीजें बनाकर खानेकी लोगोंको जो चाट पड गयी है उसे भी तुकाजीने धिक्कारा है कहते हैं जिस एकादशीसे हरि कथा श्रवण और वैष्णवोंका पूजन होता है उस एकादशीका व्रत तुम क्यों नहीं पालन करते ? सांसारिक कामोंके लिये कितने जागरण करते हो ? रातको कीर्तनका आनन्द भोग

करने मन्दिरोंमें क्यों नहीं जाते ? क्या मन्दिरोंमें जानेसे मर जाओगे और उपवास करनेसे क्या तुम्हारा शरीर नहीं चलेगा ? तुकारामजी कहते हैं क्यों इतने सुकुमार बने हो ? यमदूतोंको क्या जवाब दोगे ? एकादशी व्रत करो, भरपेट भोजन मत करो हरि जागरण करो इत्यादि चिल्ला चिल्लाकर कहनेकी तुकारामजीको क्या पडी थी ? तुकारामजी कहते हैं

क्या करूँ मुझसे भगवान्‌ने कहलाया नहीं तो मुझे क्या पडी थी (जो मैं कुछ कहता) ?

अस्तु एकादशी महाव्रत तुकारामजीने यावज्जीवन पालन किया यही नहीं, प्रत्युत इस सम्बन्धमें उन्होंने बडी आस्थाके साथ लोगोंको भी बोध* कराया है

६ सम्प्रदायमें मिल जानेका रह

जो लोग आधुनिक हैं वे यह कहेंगे कि एकादशीका इतना विस्तार करनेकी क्या आवश्यकता थी ? जिसकी श्रद्धा हो वह एकादशी करे न हो न करे जिसके जीमें आवे भोजन करे या फलाहार करे या भूखा रहे उससे क्या आता जाता है ? उसको इतना बढाकर कहनेकी क्या जरूरत थी पर बात ऐसी नहीं है यह धर्मशास्त्रकी आज्ञा है यह तो एक बात है ही पर इसके अतिरिक्त जो मनुष्य जिस समाज या सम्प्रदायमें रहता और बढता है उस समाजके जो मुख्य मुख्य नियम होते हैं उनका पालन करना उसके लिये आवश्यक है क्योंकि इसके बिना वह उस समाजके साथ एकरूप नहीं हो सकता जबतक समाजको यह विश्वास

* तुकाराम महाराजके सदृश ही नामदेव और एकनाथ महाराजने एकादशी तके सम्बन्धमें लोगोंको उपदेश किया है समर्थ श्रीरामदास मीने हरि में कहा है जो रिको पाना चाहता हो वह हरिदिनी रे एकादशी न नहीं वैकुण्ठका महापथ है (एकादशी नव्हे व्रत वैकुंठीचा महापथ)

नहीं होता कि यह भी हमारा ही स नधर्मीय भाइ है ९सीके मेलेमें घुसकर बैठा हुआ काग नही तबतक वह उस समाजसे हिल मिल नही जाता और जबतक वह समाजसे हिल मिल नही जाता तबतक सम्प्रदायके अन्तरग और वास्तविक रहस्यसे व९ कोरा ही रहता है उपवाससे यदि चित्त शुद्ध होता है तो किसी भी दिन उपवास करनेसे हुआ उसके लिये जैसी एकादशी वैसी ही सप्तमी जैसा सोमवार वैसा ही बुधवार ! इस प्रकारके वितण्डावादसे किसीका कोई लाभ नहीं हो सकता सम्प्रदाय जहाँ होगा वहाँ उसके साथ नियम भी होंगे ही सम्प्रदायके अनुष्ठानके बिना ज्ञानकी सिद्धि नही और नियमोंके बिना सम्प्रदाय न९ीं यही ससारका इतिहास देखकर कोई भी समझदार मनुष्य समझ सकता है ९सके अतिरिक्त परम्परासे जो नियम चले आये हैं और सहस्रो लाखों मनु य जिनका पालन करते है ७न नियमोंको एक प्रकारकी स्थिरता और पू९यता प्राप्त होती है एकादशी व्रत करनेवाले भक्तोंका समुदाय किसी देवमन्दिरमें हरिकीर्तनके लिये एकत्र हुआ हो और वहाँ कोई अहमन्य पुरुष ताम्बूल चर्वण करता हुआ आकर बैठ जाय तो य९ बात उस समाजको प्रिय नहा हो सकती सितारके सब तार जब एक सुरमें आ जाते हैं तब जो आनन्द आता है वही आनन्द लोगोंके एकीभूत अन्त प्रवाहमें मिल जानेसे ाप्त होता है पर समाजमें रहकर समाजके ही विपरीत आचरण करनेवाला अहमन्य पुरुष ऐसे आनन्दसे वञ्चित रहता है ९समें उसीकी हानि होती है समाजके नियम समाजमें मिल जानेके आनन्दके लिये अर्थात् स्वहितसाधनके लिये ही पालन किये जाते हैं एकादशी व्रत केवल शरीरको हलका करने या आरोग्य लाभ करनेके लिये ही नहीं पालन किया जाता यह तो केवल देह बुद्धिवालोंकी दृष्टि है यह महाव्रत भगवत्प्र ाद प्राप्त करनेके लिये परमार्थ दृष्टिसे किया जाता है आज एकादशी है व्रत रहना है रातको हरि कीर्तनका आनन्द

लेना है यह भाव ही बहुत बड़ी चीज है और यहीसे चित्तशुद्धि आरम्भ होती है गङ्गा ान निराहार या अल्प फलाहार भक्तोंका समागम हरि प्रेमियोंका मिलन करताल मृदग वीणादि वाद्योंकी मधुर ध्वनि नाम सकीतन भगवत्कथालाप इत्यादि सब लाभ एकादशी व्रत करनेसे प्राप्त होते हैं कम से कम उतने समयके लिये तो प्रापञ्चिक सुख दु ख भूल जाते हैं और भगवान्के आनन्दमें चित्त रमता है स एक दिनका अनुभव दृढ करनेके लिये नित्यके नियम पालन करनेकी ओर भी ध्य न जाता है और जब ानत्याभ्यास सहज सा हो जाता है तब सच्चा परमार्थ लाभ होता है बहुतेरोंका यही अनुभव है तुकारामजीने अपना जो पहला अभ्यास बताया कि आरम्भमें मैं एकादशीको हरि कीर्तन करने लगा इसका यही बीज है

७ वारकरी सन्त समाग

एकादशी और हरि कीर्तनका वसन्त और आम्र म रीकी बहारका सा नित्य म्बन्ध है कीर्तन और नामस्मरणके विषयमें एक स्वतन्त्र अध्याय ही आगे आनेवाला है यहाँ इतना कहना पर्याप्त होगा कि नाम सकीर्तनका जो सच्चा आनन्द है वह सम्प्रदायको स्वीकार करनेसे प्राप्त होता है यह आनन्दानुभव तुकारामजीके रोम रोममें भर गया था तुकारामजी कहते हैं

मेरा आराधन पण्ढरपुरका निधान है उस एक पण्ढरिराजको छोड और कुछ मैं नहीं जानता

भिखारी बनूँगा पर पण्ढरीका वारकरी बना रहूँगा मुखमें श्रीहरिविट्ठलका नाम हो यही मेरा नियम यही मेरा र्म है मेरे जीके

जो जीवन हैं उन्हें इन आँखोंसे देख तो लूँ अब तो विठ्ठल ही मेरे भगवान् है और सब कुछ कुछ भी नहीं है

* *

भव सिंधु कौन सी बड़ी समस्या है जब आगे आगे चलकर भगवान् ही रास्ता बता रहे है भगवान् श्रीपाण्डुरङ्गरूप यह अच्छा जहाज मिला। इसमे बैठनेवालेका कोई भी अग या पैरतक भी भव जलसे भीगने नही पाता अनेक साधु सन्त पहले पार उतर चुके है तुका कहता है, चलो जल्दीसे उन्हींके पीछे पीछे चले '

ऐसी एकनिष्ठ साम्प्रदायिक उपास्य प्रीति तुकारामजीके हृदयमे भर गयी मेरे पाण्डुरङ्ग जैसा सुख स्वरूप' और कौन है ? उनके पास कोई भी जा सकता है, कोई रुकावट नही 'कहीं दौड़ना धूपना नही सिर मुँडाना नहीं कोई झगडा नहीं ' पण्ढरीमे अन्य तीर्थके समान कोई अन्य विधि नही है बस इतना ही है कि चन्द्रभागामे स्नान करो और हरि कथामें लगो' इतनेसे ही 'चित्तको सब समय समाधान है ' वारकरियो का विठ्ठल ही जीवन है, झाँझ करताल ही धन है पर 'भक्ति सुखसे मोहित' ईश्वर ख भगवान्के उस रूपको देखते ही जीमे आता है कि अपना जीवभाव उसपर योछावर कर दे ऐसे भगवत् प्रेमी वारकरियोके सग देहू पण्ढरी या किसी भी यात्रामे जाते हुए जो आनन्द प्राप्त होता है वह अनिर्वचनीय है तुकारामजी कहते है ऐसा समागम पाकर मैं प्रेमसे नाचने लगा '

ससारको कौन देखता है ? हमारे सखा तो हरि जन है ब्रह्मानन्द में ही काल बीतता है और उसीकी इच्छा बनी रहती है

वारकरी वीरोकी महिमा गाते हुए कहते है-

'ससारमे एक विष्णुदास ही लड़ाके वीर है, उनके तनमे पाप पुण्य कभी लिपट नहीं सकते आसनमें शयनमें मनमे उनके सवत्र गोविन्द ही

गोविन्द हैं ललाटमें ऊर्ध्वपु ड् लगा है गलेमें तुलसीमाला विलस रही है उनसे तो कलिकाल भी मारे भयके थर थर काँपता है तुका कहता है उनके नेत्र शख चक्रके ही श्रृगार देखते है और मुखमें नामामृतरूप सार रस ही भरा रहता है

आषाढी कार्तिकी वारीका समय जब निकट आता था तब तुकाराम जीके उत्साहका क्या पूछना है

अब चलो प ढरीको वहाँ चलकर श्रीविठ्ठलको द डवत् करें चलो च द्रभागाके तीरपर चलकर नाचें जहाँ सन्तोंका मेला लगा है वहा चलकर उनकी पदधूलिमें लोटें तुका कहता है हमने अपने प्राण उनके पाँवतले ब लि देकर बिछा दिये हैं

जब अन्य वारकरी प ढरीकी यात्रामें तुकारामजीके सग हो लें तब तुकारामजी उनसे कहते

सुगम मार्गसे चलो और मुखसे विठ्ठल नाम लेते चलो हम सब लगोटिया यार ही तो हैं लाज किसकी करते हो ? आनन्दमें मस्त होकर गला फाड़कर चिल्लाओ हाथमें गरुडाकित ध्वजा पताका ले लो खूब सज धजके चलो तुका कहता है वैकुण्ठका यही अ छा और समीपका रास्ता है ’

प ढरीमें देवदर्शन और सन्तोंके मेलेमें कीर्तनका आन द प्राप्त कर तुकारामजी कहते

बहुत काल बाद पुण्यका उदय हुआ मेरा भा योदय हो गया जो सन्त चरणोंके दर्शन हुए आज मेरी इच्छा पूर्ण हुइ भव दु ख दूर हुआ सुन्दर श्याम परब्रह्म ही सर्वत्र सम्मुख व्याप्त हुआ सन्तोंके आलिंगनसे मेरी काया दि य हो गयी उन्हींके चरणोंपर अब यह मस्तक रख दिया

जिस संगसे भगवत्प्रेम उदय होता है वही संग करनेकी इच्छा भी स्वभावत ही बढती है सदा सन्त संग होनेसे महान् प्रेमकी वर्षा होती है (सतसंगती सर्वकाळ थोर प्रेमाचा सुकाळ) वारकरी भक्तों और सन्तोंके प्रति तुकारामका ऐसा प्रेम और आदर था और उससे उन्हें अपूर्व भगवत्प्रेमका अनुभव भी होता था इसीलिये उनके मुँहसे ऐसे उद्गार निकलते थे कि 'जहाँ साधु सन्तोंका मेला लगता है वहाँ तुका लोट जाता है' अथवा तुका कहता है कि सन्तोंके मेलेमें जाकर उनके चरणोंकी रजको वन्दन करूँगा ' तुकारामजीने एक स्थानमें यहाँतक कहा है कि सन्तोंके द्वारपर श्वान होकर पड़े रहना भी बड़ा भाग्य है क्योंकि वहाँ उच्छि प्रसाद मिलता है और भगवान्का गुण गान सुननेमें आता है

८ कीर्तन-सौख्य

अपने समश्रद्ध समानधर्मा भाइयोंके सम्बन्धमें तुकारामजीके ये उद्गार हैं एक ही उपास्यकी उपासना करनेवाले उपासक बन्धुप्रेमसे एक दूसरेके साथ बँध जाते हैं उनका उपास्य उनके आचार विचार उनकी उपासना पद्धति उनके नित्य नियम आहार विहार रुचि अरुचि भाव स्वभाव विशिष्ट प्रकारके बनते हैं और उनमें स्वभावत ही बन्धुप्रेम उत्पन्न होता है वारकरियोंकी भी यही बात है गाँव गाँव वारकरियोंकी जो मण्डलियाँ हैं उनको देखनेसे यह ज्ञात होगा कि ये लोग प्राय रातको विशेषकर प्रति एकादशी और गुरुवार अथवा सोमवारको एकत्र होकर भजन करते हैं फिर आषाढी कार्तिकीके अवसरपर ये लोग मण्डली बाँधकर ही भजन कीर्तन करते आनन्दसे नाचते गाते हुए पण्ढरी जाते हैं कुछ नियमनिष्ठ वारकरी ऐसे भी होते हैं जो प्रतिमास पण्ढरीकी वारी करते हैं मुख्य वारी आषाढी कार्तिकीकी है और यही साधारणत लोग करते हैं कुछ मासिक वारी करते हैं और कुछ आषाढी कार्तिकीके

अतिरिक्त चैत्रकी वारी भी करते हैं किसी भी मासकी शुक्ला एकादशी देवताओंकी मानी जाती है और कृष्णा एकादशी सन्तोंकी मानी जाती है इसलिये शुक्लपक्षकी सब वारियाँ पंढरीकी होती हैं इस प्रकार अत्यधिक नियमी वारकरियोंके मेलोंमें ही तुकाजाका जीवन बीता इस कारण वारकरियोंके साथ यह भी वारकरियोंके ही मार्गपर चले वारकरियोंका मुख्य साधन भजन और कीर्तन है ऊँच नीच ब्राह्मण चाण्डाल पुण्यवान्-पापी सभी संसारके अधीन होनेके कारण भगवान्‌के सामने दीन हीन ही होते हैं कीर्तनका अधिकार सबको है

दीन आणि दुर्बळाशी। सुखराशी हरि कथा

दीन और दुर्बलोंके लिये हरि कथा सुखकी राशि है

*

कीर्तन चांग कीर्तन चांग। होय अंग हरिरूप ॥१॥
प्रेमछंदें नाचे डोले। हारपले देह भाव ॥२॥

कीर्तन बड़ी अच्छी चीज है इससे शरीर हरिरूप हो जाता है प्रेमछन्दसे नाचो डोलो इससे देहभाव मिट जायगा

कीर्तनानन्दमें मग्न होनेवाले किसी भी भक्तको तुकारामजीका सा यही अनुभव प्राप्त हुआ करता है कीर्तन करनेवाला स्वयं तर जाता है और दूसरोंको भी तारता है भक्त भगवत्कीर्ति गाता है, इसलिये भक्तवत्सल भगवान् उसके आगे पीछे उसके बन्धनोंको काटते हुए सञ्चार करते हैं कीर्तनका रहस्य निम्नलिखित अभंगमें तुकारामजीने बहुत ही अच्छी तरहसे बतलाया है

कथा त्रिवेणीसंगम। देव भक्त आणि नाम।
तेथीचें उत्तम। चरण रज वंदिता ॥१॥

जळती दोषाचे डोंगर । शुद्ध होती नारी नर ।
गाती एकती सादर । जे पवित्र हरिकथा ॥२

(कथा त्रिवेणीसंगम । एक भगवत नाम ।
वहाँकी उत्तम । पदरज अनायास ॥ १ ॥
जलते दोषोंके पर्वत । शुद्ध होते नारीनर ।
गाते सुनते सादर । पवित्र हरिकथा ॥ २ ॥)

हरिकीर्तनमें भगवान्, भक्त और नामका त्रिवेणीसंगम होता है। कीर्तनमें भगवान्के गुण गाये जाते हैं, नामका जय घोष होता है और अनायास भक्तजनोंका समागम होता है। कथा प्रयागमें ये तीनों लाभ होते हैं। इनमेंसे प्रत्येक लाभ अमूल्य है। जहाँ ये तीनों लाभ एक साथ अनायास प्राप्त होते हैं उस हरिकथामें योग दानकर आदरपूर्वक उसे श्रवण करनेवाले नर नारी यदि अनायास ही तर जाते हैं तो इसमें आश्चर्य ही क्या है ? हरिकथा पवित्र, फिर उसे गानेवाले जब पवित्रतापूर्वक गाते और सुननेवाले जब पवित्रतापूर्वक सुनते हैं तब ऐसे हरिकीर्तनसे बढ़कर आत्मोद्धार और लोकशिक्षाका और दूसरा साधन क्या हो सकता है ? प्रेमी भक्त प्रेमसे जहाँ हरिगुण गान करते हैं भगवान् तो वहाँ रहते ही हैं। भगवान् स्वयं कहते हैं

नाहं वसामि वैकुण्ठे योगिनां हृदये न च ।
मद्भक्ता यत्र गायन्ति तत्र तिष्ठामि नारद ॥

ज्ञानेश्वर महाराजने कीर्तन भक्तिके आनन्दका बड़ा ही सुन्दर वर्णन किया है (ज्ञानेश्वरी अ० ९ । १९७-२११) 'कीर्तनके नटनृत्यमें प्रायश्चित्तोंके (अथवा प्राय चित्तके) सब व्यवसाय नष्ट हो जाते हैं। यम दमादि योग साधन अथवा तीर्थयात्रादि जीवोंके पाप धो डालते हैं सही

पर कीर्तन रङ्गमें रँगे हुए प्रेमियोंमें तो को२ पाप ही नहीं रह जाता कीतंनसे ससारका दु ख दूर होता है कीर्तन ससारके चारों ओर आनन्द की प्राचीर खडी कर देता है और सारा ससार महासुखसे भर जाता है कीर्तनसे विश्व धवलित होता और वैकुण्ठ पृथ्वीपर आता ् ' यह कहकर ज्ञानेश्वर महाराज भगवान्‌की उपर्युक्त उक्तिका रहस्य अपनी वाणीसे बतलाते हैं

तो मी वैकुठीं नसे । वेळ एक भानु बिबीं ही न दिसे ।
वरा योगियाचीं ही मनसें । उमरडोति जाय २ ७
परी तया पाशीं पाडवा । मी हरपला गिंवसावा ।
जेथ नामघोष बरवा । करिती माझा २ ८

अर्थात् मैं नित्य वैकुठमें सूर्यमडलमें अथवा योगिजन मन निकुञ्जोंमें रहता हूँ पर ऐसा हो सकता है कि कभी इन तीन स्थानोंमेंसे कहीं भी मैं न मिलूँ परन्तु मेरे भक्त जहाँ प्रेमसे मेरा नाम सकीर्तन करते हैं वहाँ तो मैं रहता ही हूँ मैं और कहीं न मिलूँ तो मुझे वहीं ढूँढो इन मधुर ओवियोंमें ज्ञानेश्वर महाराजने ऊपरके श्लोकका अनुवाद ही किया है तुकोबारायने भी कहा है

माझे भक्त गाती जेथें । नारदा मी उभातेथें १
नारद मेरे भक्त जहाँ गाते हैं वही मैं खडा रहता हूँ

तात्पय कीर्तनमें भगवान् भक्त और नामका सगम होता है और इसीसे कीर्तनमें छोटे बड़े सब अनायास ऐसा अपार भक्तिसुख लाभ करते हैं कि देखकर ब्रह्माजीके भी लार टपकने लगती है तुकारामजीको पहले कीर्तन सुननेका चसका लगा पीछे स्वय कीर्तन करनेकी इच्छा हुई और फिर इस कीर्तन भक्तिका परम उत्कर्ष हुआ

सिवाय कीतन करूँ न अन्य काज । नाचू छोड़ लाज तेरे रग

तेरा कीर्तन छोड मैं और कोई काम न करूँगा। लज्जा छोड़कर तेरे रंगमें नाचूँगा। कीर्तनमें बल्कि यह कहिये कि परमार्थमें प्रथम प्रवेश जब होता है तब लज्जा बड़ी बाधक होती है पर साधक जब कीर्तन रंगमें रँग जाता है तब 'निर्लज्ज' कीर्तन आप ही अभ्यस्त हो जाता है।

९ कीर्तनके नियम

कीर्तन इस प्रकार श्रोता वक्ता सबको हरि मार्गपर ले आनेका मुख्य साधन होनेसे यह आवश्यक होता है कि उसमें नियम मर्यादा भी हो। वारकरियोंमें यह मर्यादा पहलेसे ही थी, तथापि इस मर्यादाका स्वरूप तुकारामजीके वचनोंसे ही जान लेना अधिक अच्छा होगा। 'कथाकालकी मर्यादा' वाले अभंगमें उन्होंने कीर्तनके मुख्य नियम बताये हैं- (१) सप्रेम अन्तःकरणसे जो कोई ताल वाद्य गीत नृत्यकी सहायतासे भगवान्‌के नाम और गुण गाता है उसे भगवद्रूप ही मानना चाहिये और उसे नम्रतापूर्वक वन्दन करना चाहिये। (२) जबतक कथा हो रही हो तबतक कायदेसे बैठे। कथामें बैठे आलस्यवश अँगड़ाई न ले, पुट्ठे टेके करके न बैठे। पान चबाते हुए कथामें न जाय। मुँह स्वच्छ करके कथामें बैठे। नामसंकीर्तनमें चित्त लगावे। कीर्तनके समय और बातें न करे। मानकी इच्छा न करे। अपना बड़प्पन न दिखावे। कीमती वस्त्र पहनकर फिर उन्हें कहीं धूल न लगे इसी चिन्तामें उन कपड़ोंको ही सँभालनेमें न लगा रहे; बड़ोंको ठेलकर छोटे न बैठें। उच्च स्थानमें बैठकर कीर्तन करनेवालेको नीचा न देखे; इन नियमोंका पालन करना चाहिये। (३) किसीके दोषोंका ध्यान न करे। इस प्रकार कीर्तन और कीर्तनकारकी मर्यादा रखते हुए देह बुद्धिके ढंग चित्तमें न आने दे। ये नियम श्रोताओंके लिये हुए। वक्ताके लिये भी उन्होंने नियम बताये हैं। 'वक्ताका सम्मान बड़ा है। सबसे पहले वक्ताका सम्मान करे' अर्थात् श्रोताओंमें यदि कोई योगी यती आदि भी हों तो भी चन्दन अक्षत आदिसे पहले वक्ताका ही पूजन

होना चाहिये वक्ताका मान जितना बडा है उत्तरदायित्व भी उसपर उतना ही बडा है पहली बात यह है कि जो कीर्तनकार हों वे निरपेक्ष कीर्तन करें धन या मान किसीकी भी इच्छा न करें कीर्तनका मूल्य न लें मार्गव्ययादि भी न लें हरि कथा करके जो अपना पेट भरता है, तुकारामजीने उसे चाण्डाल कहा है कीर्तनाचा विकरा तें मातेचें गमन (कीर्तनका विक्रय मातृगमन है)

कन्या गौ करे कथा विक्रय । चाण्डाल निश्चय जान उसे ।

कन्या गौ और हरि कथाको जो बेचता है यथार्थमें वही चाण्डाल है चाण्डाल नाम उसीका है हरि गुण कीर्ति हरिके दासोंकी माता है उसे बेचना लज्जाजनक और नरकप्रद है

कथा करके जो द्रव्य लेते देते । अधोगति पाते नरक वास

कथा करके जो द्रव्य देते लेते है उनकी अधोगति होती है और उन्हें नरकवास मिलता है कीर्तनकारकी वाणी चाहे मधुर न हो उसमें कोई हरज नही तुकारामजी कहते है मधुर वाणीके फेरमें ही मत पडो स्वभावसे ही यदि वह मधुर हो तो यह तो भगवन् आपहीका दान है यह सोचकर उसे भगवान्के ही गुण गानमें लगा दो भगवान्को ऊँची तान या टेढे मेढे अलाप पसन्द नहीं हैं भगवान् भावके भूखे हैं

सुनो नहि कानों ऐसे जो वचन । भक्ति बिन ज्ञान कहें कोई १

बखानें अद्वैत भक्ति भाव हीन । पातें दुख जन श्रोता वक्ता २

भक्तिके बिना जो यर्थ ज्ञान बतलाता है उसकी बातें कानोंसे न सुने भाव भक्तिके बिना जो अद्वैतकी स्तुति करता है उससे श्रोता वक्ता दुःख ही पाते हैं

ज्ञान भक्ति कहे पर भगवद्भक्तभाव तोडनेवाला ज्ञान कोई न कहे एकनाथ महाराजने भी सगुण चरित्रें परम पवित्रें हरिची वर्णावीं दस

पदमें वही बात कही है वाणी ऐसी निकले कि हरिकी मूर्ति और हरिका प्रेम चित्तमें बैठ जाय वैराग्यके साधन बतावे भक्ति और प्रेमके सिवा अन्य व्यर्थकी बातें कथामें न कहे अद्वय भजन अखण्ड स्मरण, करसे ताल देकर गावे बजावे कीर्तन करते हुए हृदय खोलकर कीर्तन करे कुछ छिपाकर चुराकर न रक्खे कीर्तन करने खड़े होकर जो कोई अपनी देह चुरावेगा उसके पापको कौन नाप सकता है ? कीर्तन हो रहा हो और बीचमेंसे ही कोई उठकर चला जाय, कथाकी मर्यादाका उल्लङ्घन करे निद्राका आदर करे, जागरणमें भाग जाय वह अधम है तात्पर्य श्रोता वक्ता कीर्तनकी मर्यादाका पालन करें और जितनी इच्छा हो हरि प्रेमानन्द लूटें

१० साधनाका प्राण सद्भाव

पण्ढरीकी वारी, एकादशी व्रत सत्समागम नाम सङ्कीर्तन इत्यादि साधनोंको चसका लगानेवाली जो मुख्य जीकी बात है वह है शुभेच्छा या सद्भाव भाव हो, शुद्ध भाव हो तो ही साधन सफल होते हैं अन्यथा ये ही साधन तथा ऐसे अन्य साधन भी मान और दम्भके कारण बन जाते हैं गीतामें भगवान्‌ने कहा है, जो श्रद्धावान् होगा उसीको ज्ञान प्राप्त होगा, भाव होगा तो भगवान् मिलेंगे संतोंने स्थान स्थानमें कहा है कि भाव ही तो भगवान् है उद्गम जहाँसे होता है वह निर्झर, अन्तःकरणका अन्तर्भाव हो तो ही साधन फलदायक होते हैं पण्ढरी चन्द्रभागा पुण्डरीक साधु संत देव प्रतिमा, करताल वीणा व्रत जप तप सभी उत्तम और पावन साधन हैं पर जो साधना चाहे उसमें भी तो अपने साधनके विषयमें निर्मल पावन बुद्धि हो जिसके होनेसे ही साधन साध्यको प्राप्त करा देते हैं और तो क्या साधनाके विषयमें यदि श्रेष्ठतम सद्भाव हो तो साधन ही साध्य बन जाते हैं साध्य साधनोंकी एकात्मता प्रत्यक्ष हो जाती है बाह्य उपचारोंसे भगवान् प्रसन्न नहीं होते बाह्य उपचारोंसे मैं किसीके

ध्यानमे नहीं उतरत (ज्ञानेश्वरी अ ९ २६७) मँगनी लिया हुआ भाव नही ठहरता वह केवल बाह्याडम्बर है नटनाट्य। सारा स्वाँग रचा तो इस स्वाँगसे हृदयस्थ नारायण नही ठगे जते भाव जितना अकृत्रिम स्वाभाविक और शुद्ध हो भगवान् उतने ही प्रकट हैं साधन व्यर्थ नहीं हैं साधनोंसे भाव बलवान् होता है यह सच है परतु निर्मल भाव ही साधन वनक वसन्त है भाव भगवान्‌की देन है पूर्व कृतिक फल है पूर्वजोंका पु य बल है भावके नेत्र ज ाँ खुले वहीं सारा वि कुछ निराला ही दिखायी देने लगता है भगवान् भावुकोंके थपर दिखायी देते हैं पर जो बुद्धिमान् अपनेको लगाते हैं वे मर जाते हैं तो भी भगवान्‌का पता नहीं पाते ज्ञानके नेत्र खुलनेसे समझमें आता है उसका रहस्य खुलता है पर भावके विना ज्ञान अपना नहीं हो ज्ञानके विज्ञान होनेके लिये ज्ञानरहस्य हस्तगत होनेके लिये भगव नूसे मिलन होनेके लिये भावका ही होना आवश्यक है चित्त यदि भगवच्चि तनमें रँग जाय तो वह चित्त ही चैतन्य हो जाता है पर चित्त शुद्धभावसे रँग जाय तब

भाव तैस फळ । न चले देवापाशीं बळ ।१

जैसा भाव वैसा फल भगवान्‌के सामने और कोइ ब नहीं चलता

भावापुढें बळें । नाहीं कोणाचें सबळ १

कर देवावरी सत्ता । कोणत्याहूनी परता २

भावके सामने किसीका बल प्रबल नहीं है दैवपर जिसका शासन चलता है उससे बडा और कौन है ?

पत्थरकी ही सीढी और पत्थरकी ही देवप्रतिमा' ह ती है पर एकपर हम पैर रखते हैं और दूसरेकी पूजा करते है नलका भी जल है और गङ्गाजल भी जल ही है पर भावसे ही प्रतिमाको देवत्व प्राप्त होता है और भावसे ही गङ्गाजलको तीर्थत्व प्राप्त होता है यह भाव जिसके पास है उसीके पास भगवान् हैं भाव ही भगवान् है विश्वासाची ध य जाती तेथं वस्ती देवाची (विश्वासकी ज ति ध य है वहाँ भगवान्की बसती है) इसमें सदेह ही क्या है? सदे कुतर्क विकल्प ही महापाप है और भ व ही महापु य है ऐसा निर्मल भ व तुकोबके चित्तमें उदय होनेसे उनके सब साधन सफल हुए उन्होंने स्वय ही एक अभंगमें कहा है 'लागला झरा अखड आ तुका म्हणे साहे झालें अतर (अखण्ड निर्झर झर रह है तुका कहता है कि अन्तर ही सहाय हुआ) आहा आहारे भाइ' वाले मधुर अभंगमें उन्होंने यह वर्णन किया है कि भावुक भक्तोंकी ह कितनी उज्ज्वल होती है

ग ा नहीं जल । वृक्ष नहीं वट पीपल
तुलसी रुद्राक्ष नहीं माल । श्रेष्ठ तनु श्रीहरिकी १ ।

गङ्गा जल नहीं है[1] बड़ पीपल वृक्ष नहीं है[2] तुलसी और रुद्राक्ष माला नहीं हैं ये सब भगवान्के श्रेष्ठ शरीर है इसी प्रकार साधु सत सामान्य न नहीं हैं लिङ्गादि देवप्रतिमाएँ पत्थर नहीं हैं गरुड केवल पक्षी नहीं है नन्दिकेश्वर साँड नहीं है वराह सूअर नहीं हैं लक्ष्मी स्त्री नहीं हैं रामरस रेत नहीं है हारे कक नहीं हैं द्वारावती गाँव नहीं है कारण इनके दर्शन सेवनसे मोक्ष प्राप्त होता है कृष्ण भोगी नहीं हैं

---

१ स्रोतसामस्मि जाह्नवी (गीता १ ३१)

२ अश्वत्थ सर्ववृक्षाणाम् (गीता १ २६)

कल्पवृक्ष पारिजात और चन्दन गुणमें प्रसिद्ध हैं पर सब वृक्षोंमें अश्वत्थ वृक्ष मैं हूँ (ज्ञानेश्वरी अ १० २१५)

शकर जोगी नहीं है ' पर तुकोबाराय ऐसा विमल भाव आपको कहाँसे मिला ? तुका कहता है पाण्डुरङ्गसे यह प्रसाद मिला भगवान् श्रीविठ्ठलदेवके कृपाप्रसादसे तुकोबाको यह शुद्ध भाव प्राप्त हुआ और इसलिये उनके सब साधन सफल हुए इस भावसे उन्हें भगवान् मिले तुका ह्मणे होता ठेवा तो या भावा सापडला ' (तुका कहता है निधि रखी हुई थी सो इस भावसे मिल गयी) अर्थात् इस भावने मुझे अपने स्वरूपका ज्ञान करा दिया भाव न हो तो साधन व्यर्थ हैं तीर्थको जो जल समझता है प्रतिमामें जो पत्थर देखता है सन्तोंको जो मनुष्य समझता है वह अधम है ऐसे लोग जो भी साधन करते हैं तुकाराम स्पष्ट ही बतलाते है कि वे साधन वन्ध्या सहवासके समान व्यर्थ होते हैं तात्पर्य सब साधनोंका साधन साध्य साधनमें सद्भाव है यहाँतकके सब साधन तुकारामजीके आचरणमें आ गये और साथ ही उन्होंने परोपकार व्रत स्वीकार किया उन्होंने यह बात आत्मचरित्रमें ही लिख दी है कि जो कुछ बन पड़ा शरीरको कष्ट देकर वह उपकार किया ' अब उन्होंने परोपकार कैसे किया यह देखें

११ परोपकार व्रत

शरीरसे कष्ट करके जो उपकार बन पड़ता उसे करनेमें तुकाराम तत्पर रहते थे कोई खेतकी रखवाली करनेको कहता तो आप खेतकी रखवाली करते बोझ लादनेको कोई कहता तो चाहे जितना भारी बोझ हो आप उसे लादकर पहुँचा देते घोड़ेको खरहरा करनेके लिये कोई कहता तो आप घोड़ेको खरहरा करते, मतलब यह कि जो भी जो कोई काम बतलाता था तुकारामजी उसे प्रसन्नचित्तसे करते थे मुफ्तमें कोई नौकर मिले तो उसे कौन न चाहेगा ? इसलिये तुकारामजी सबके प्रिय हो गये पर तुकारामजी इन सबको नारायणकी मूर्ति ही समझते थे

और जो कोई काम करते उसे नारायणकी हा सेवा समझकर करते थे मानव नाम रूपकी सुध धीरे धीरे भूलती गयी और काम बतलानेवाली ध्वनि अन्तवासी नारायणकी है यही बोध रह गया ध्वनि सुनते ही जिस स्थानसे वह ध्वनि निकली उसी उद्गमस्थानपर उनकी दृष्टि स्थिर होने लगी नाम रूपको देखते ही नामरूपातीतपर उनका ध्यान जमने लगा यह सातवीं दास्य भक्ति है इस दास्य भक्तिका मर्म देहके लोगोने या जिजाबाईने न जाना हो पर ज्ञातापन जहाँसे प्रकट होता है वहां तो वह पहुँच ही गया यह भूतसेवा भूतोंकी समझमे न आयी हो पर भूतेशने तो समझ ली तुकारामजीको बेगारमे पकड़नेवाले लोग चाहे कभी यह न सोचते हों कि इनसे बहुत कष्ट कराना अच्छा नहीं सो भी तुकारामजी तो यह जानते थे कि भूतसेवा विषमभाव छोड़कर निष्काम कर्म करनेका अलौकिक साधन है भूतसेवा भूतमात्रमे हरिके दर्शन करना सिखलाती है, यही नहीं प्रत्युत भूतमात्रमे जब हरिके दर्शन होने लगते है तभी निष्काम और सच्ची भूतसेवा बन पडती है अस्तु जिजाबाइको अवश्य ही इस बातका बडा कष्ट था कि तुकारामजी घरके काम काजकी ओर कुछ ध्यान नहीं देते और गाँवभरके छोटे बड़े सभी काम कर दिया करते हैं जिजाबाइका पक्ष लेकर कोई कह सकता है कि ठीक तो है, गाँवभरका काम तुकाराम करते थे तो घरका काम करनेमे उनका क्या बिगडा जाता था ? इसका उत्तर यह है कि घरवालोंका काम तो हमलोग सभी सब समय करते ही रहते हैं, पर अपने ही प्रेम और महत्त्वकी बात होनेसे वह यथार्थमे स्वसेवा ही है । परोपकार तो वही कहा जा सकता है कि जिसमें देहकी दृष्टिसे जिन लोगोके साथ हमारा कोई सम्बन्ध नहीं है उनका उपकार हो और उपकार भी कब होता है ? जब प्रतिफलकी केवल स्तुति या आशीवादकी भी इच्छा न करके काया वाचा मनसा केवल भगवत्प्रीत्यर्थ वह कार्य किया जाय ऐसे परोपकार या लोकसेवासे अनेक

लाभ होते हैं एक तो निष्काम कर्म करनेका अभ्यास होता है दूसरे आत्मभावका विकास होता है, यह प्रतीति होने लगती है कि आत्माराम] इस साढे तीन हाथकी देहके अंदर ही बंद नहीं है तीसरे देह ममत्व नष्ट होता जाता है और चौथे सर्वान्तर्यामी नारायण सुप्रसन्न होते हैं ये लाभ घरवालोंकी सेवा करनेकी अपेक्षा ऐसे लोगोंकी सेवासे जो घरवाले नहीं समझे जाते अधिक प्राप्त होते हैं इसलिये तुकारामजीने जो बन पडा वह शरीरसे कष्ट करके उपकार किया' यह कहकर अपने साधनमार्गके एक अभ्यासका ही निदश कर दिया है भावें गावें गीत (भावसे गीत गावे) इस अभंगमें तुकारामजी कहते हैं

जो तू चाहे भगवान । कर ले सुलभ साधन

यदि तुम भगवान्‌को चाहते हो तो यह सुलभ उपाय है कौन सा

तुका कहे कर । थोर बहु उपकार

तुका कहता है थोडा बहुत उपकार किया करो

इस प्रकार भगवत्प्राप्तिके उपायोंमें तुकाजीने पर उपकारका भी अन्तर्भाव किया है इस अभंगमें तुकाजी यही बतलाते हैं कि भगवत्‌प्राप्तिका सुलभ उपाय यही है कि 'चित्त शुद्ध अर्थात् निर्विषय करके भावके साथ भगवान्‌के गीत गावे दूसरोंके गुण दोष न सुने मनमें भी न ले आवे संतोंके चरणोंकी सेवा करे सबके साथ विनम्र रहे और थोड़ा बहुत जो कुछ बन पड़े उपकार करे यह सुलभ उपाय तुकाजीने स्वयं कृतार्थ होनेके पश्चात् लोगोंको बताया है अर्थात् साधनकालमें उन्होंने इस उपायका अवलम्बन किया था परोपकार करते हुए देहभाव सिमट जाता है और प्राणिमात्रमें भगवद्भाव उदय होता है हृदय विशाल होता और अपना परायाभाव लुप्त होता है तथा अंदर हरि बाहर हरि के

अनुभवका दिव्य आनन्द प्राप्त होता है। भूती भगवन्त हा तो जाणतो संकेत 'भूतमात्रमे भगवान् है' यही सङ्केत तुकारामजी जानते थे भूतमात्रमे भगवद्भाव' रखनेसे 'मेरा तेरा' विकार नष्ट हो जाता है और अद्वैतका जो धाम है उस एक निरञ्जन का अनुभव प्राप्त होता है भूताचिये नादे जीवीं गोसावीच सकळ (सब भूतोंके जीवोंमें गोसाईं ही विराज रहे हैं) पर उपकारसे उन्हीं गोसाईंकी ही उत्तम सेवा बनती है भूतोंका उपकार ही भूतात्माका पूजन अर्चन है तुकारामजीने शरीरसे कष्ट करके जो परोपकार किया वह भूतपतिकी ही सेवा की और परोपकारकी जो इतनी महिमा है वह इसीलिये है तुकारामजी कहते हैं—

भूतमात्रमें भगवान् विराजते हैं इसीलिये मैं इन लोगोंसे मिलता हूँ नर नारी सम कर नहीं हृदयका भाव भगवान् जानते हैं उन्हें जनाना नहीं पड़ता

१२ परोपकारके भेद

अब श्रीतुकारामजीके परोपकारके प्रकार देखें इनमेंसे कुछका वर्णन महीपतिबाबाने (भक्तलीलामृत अ० ३१ में) किया है राह चलते कोई पथिक सिरपर बोझ लादे मिल जाता तो आप उसका बोझ अपने सिरपर उठा लेते और कुछ काल उसे विश्राम दिलाते, वर्षामें कोई भाग जाय तो उसे पहनने ओढनेको वस्त्र देते बैठनेके लिये स्थान देते यात्रियोंके पैर चलते चलते सूज जाते और उनपर इनकी दृष्टि पड़ती तो ये गरम पानीसे उन्हें सेंकते गाय बैल दुबल होनेसे काम न देते और इसलिये गृहस्थ यदि उन्हें निकाल देते तो आप उन्हें दाना पानी देते चींटियोंकी चिटारीपर चीनी छोड़ते मनसे भी किसीकी हिंसा न करते चलते हुए कहीं पैरोंतले छोटे-छोटे जीव कुचल न जायँ इसलिये कारुण्यामाजि पाउलें लपवून (कारुण्यमें अपने पैरोंको छिपाकर) चलते

करते, कीर्तन हो रहा हो और गरमीसे लोग परेशान हों तो कीर्तन करते हुए भी आप श्रोताओंपर पखा झलने लगते नदीसे जल भरकर ले आनेवालोंमें यदि कोई थका दिखायी दिया तो उसकी गगरी आप अपने कधेपर उठा लेते और घर पहुँचा देते कोई यात्री बीमार पड़ गया तो उसे आप उठाकर किसी देवालयमे ले जाते और उसका इलाज कराते मनुष्य और पशु पक्षीमे कोई भेद भाव नहीं मानते थे छोटे बडे सबके शरीरोंको नारायणके ही शरीर मानते थे तन मन वचनसे पास धन हुआ तो धनसे भी सबके काम आते थे श्रीमद्भागवतके जड़भरतके समान कैसा भी कष्ट करनेमे वह पीछे नहीं हटते थे ऐसे बर्तावसे तुकाराम सबके अत्यन्त प्रिय हुए कोई ऐसा न रहा जिसे तुकाराम प्रिय न हों तुकारामजीका यह अजातशत्रुत्व देखकर मम्बाजी बाबाने बहुत बुरा माना और उन्होंने उन्हें बहुत कष्ट दिये पर उन मम्बाजी बाबाका भी वदन तुकाजीने दाब दिया परोपकारकी उज्ज्वल भावनासे अपनी स्त्रीकी साडी भी एक अनाथाको दे डाली पर ये दोनों प्रसङ्ग आगे आनेवाले हैं इसलिये यहाँ उनका विस्तार करनेकी आवश्यकता नहीं एक बार एक वृद्धा स्त्रीके कहनेपर तुकारामजीने तेल लाकर उसके घर पहुँचा दिया यह तेल सदासे बहुत अधिक दिन चला यह बात गाँवमें फैल गयी तब सभी अपने अपने तेलके पीपे ले जाकर तुकारामके गलेमें बाँध आये तुकाराम उन सब पीपोंको तेलकी दूकानपर ले गये और सबके घर जा जाकर तेल पहुँचा आये तुकारामकी पीठपर एक बैलका जितना भारी बोझ लदा देखकर सती जिजाईको बडा क्रोध आया एक बार एक किसान उन्हें रस पिलानेके लिये अपने खेतपर ले गया रस पीनेके इस यौतेकी बात जिजाईने घरमेंसे सुन ली थी चलते समय उसने तुकारामजीसे कह रखा था कि वह किसान ऊँखकी फाँदी देगा वह मेरे बच्चोंके लिये घर ले आना तुकारामजी खेतपर पहुँचे बडी भक्तिसे उस किसानने उन्हें रस पिलाया

और ऊखकी फाँदी देकर उन्हें विदा किया तुकारामजी ँख लिये ज्यों ही गाँवमें पहुँचे त्यों ही गाँवभरके बच्चोंने उन्हें घेर लिया और ऊँख माँगने लगे कारामजीने बोझ उतारा और सब ऊँख उन बच्चों ो बाँट दिये तीन ऊँख रह गये जो लेकर वह घर आये जिजाबाइ ताड़ गयीं कि सब बँट गये तुकारामने सब हाल उससे कहा और उसे समझाया कि देखो सब बच्चे अपने ही तो हैं तेरे तीन बच्चे हैं इस लिये पाण्डुरङ्गने तीन ही ऊँख यहाँ भेजे बाकी सब जिनके थे उन्हें बाँट दिये

य निज परो वेति गणना लघुचे साम्

उदारचरितानां वसुधैव कुटुम्बकम्

तुकाराम ऐसे उदारचरित थे अपना परायाभाव उनका न हो रहा था बल्कि मेरा तेरा जीवभाव न हो और उसके स्थानमे सर्वत्र श्रीहरि का भाव उदय हो २सीलि ये इस नश्वर देहके द्वार कष्ट करके भूत सेवारूप भगवत्सेवाका यह व्रत तुकारामजीने स्वीकार किया तुकारामजीका म्पूर्ण जीवन परोपकारमें बीता उन्होंने जो हरि कीर्तन किये और अभग रचे पहले वे श्रीहरिकी प्राप्तिके लि ये थे पीछे परोपकारके लिये हो गये वह

'विष्णुमय जग वैष्णवाचा धर्म ।'

—मानते थे और इसलिये परोपकार उनका स्वभाव ही बन था भूतदया ही उनकी पूँजी बनी दीन दुखि योंको वह अपना हने लगे भगवत्प्रसाद होनेके पश्चात् भी अब मैं उपकारभरके लिये रह कहनेवाले तुकारामजीके जीवनमें परोपकारके सिवा और क्या था तुकोबाके जीवनका प्रत्येक क्षण विठ्ठलभजन और परोपकारमें बीता उनके प्रयाणके पश्चात् भी उनके अभग जड़ जीवोंके उद्धारका कार्य कर रहे तुकारामकी अभंगवाणी उनकी परोपकार बुद्धिका चिरस्थायी स्मारक है

१३ अट्ठाईस अभगोंकी गवाही

तुकारामजी वारकरी सम्प्रदायके स नमार्गपर ही चले यह स्पष्ट है वह मार्ग हमलोगोने यहाँतक देखा पर निश्चयकी दृढताके लिये हमलोग एक बार स्वय तुकारामजीसे ही पूछ लें और फिर यह प्रकरण सम प्त करें। तुकारामजीने जो साधन किये उन्हें उ होंने अपने अभगोंमें स्पष्ट बता दिया है अभगोंमे कही स्वय किये हुए साधनके तौरपर और कहीं दूसरोंको उपदेश करनेके प्रसङ्गसे उन साधनोंको बताया है तुक राम जैसी बानी वैसी करनी वाले बानेके थे इस कारण उनकी वाणीसे उनके किये हुए साधन ही प्रकट होते है छत्रपति शिवाजी महाराजको जिजाबाईको और धरना देनेवाले ब्राह्मणको उपदे करते हुए जो सा न उन्होंने बताये है उ हें हम देखें ऐसे सब साधनबोधक अभंगोंका एक साथ विचार करनेसे निश्चितरूपसे यह जाना जा सकेगा कि तुकारामजी जिस स धनमार्ग पर चले वह साधनमार्ग क्या था

(१) सौंपा निज चित्त । उन्हें जो रुक्मिणी कात १
पर्ण हुअ सकल काम । निवारित भव भ्रम टेक
परनारी परद्रव्य । हुए विषवत् त्याज्य २
तुका कहे फिर । और न लगा व्यवहार ३

मैंने एक रुक्मिणीकान्तको ही चित्तमें धारण कर लिया उसीसे सारा काम बन गया भव भ्रम दूर ह गया परद्रव्य और परनारी विषवत् हो गये तुका कहता है कोई बड़ा उद्योग नही करना पडा बस इतनेसे ही सारा काम बन गया भव भ्रम दूर हो गया ' दो बातें बतलायी चित्तमे भगवान्को बैठाया और परद्रव्य और परनारी विषवत् हो गये इतनेसे ही सारा काम बन गया कौन सा काम भव भ्रम दूर हो गया तात्पर्य हरि चिन्तन और सदाचार ससार निवृत्तिके साधन हैं

(२) कुळीचें दैवत ज्याचे पंढरिनाथ (कुलदेवता जिनके पण्ढरिनाथ है) उनके घरमें दासी पुत्र होकर भी रहूँगा पण्ढरीकी री जिनके यहाँ है उनके द्वारका पशु होकर रहूँगा, दिन रात विठ्ठलचिन्तन जो करते है उनके पैरोंकी पनही बनकर रहूँगा तुलसीका पेड जिनके आँगनमें है उनके यहाँ ड़ बनकर रहूँगा इन उत्कट भक्तिके उद्गारोंसे यह मालूम होता है कि पण्ढरिनाथ पण्ढरीकी वारी पण्ढरिनाथ । चिन्तन और पण्ढरिनाथकी प्रिय तुलसीका पूजन तुकारामजीको कितना प्यरा था उपास्यविषयक परम प्रीति इससे व्यक्त होती है

(३) ख वाटे परि वर्म' (सुख होता है पर उसका रह) बतलाता हूँ मैं भगवान्का रहस्य नही जान सकता, इतना ही जानता हूँ कि निर्लज्ज होकर उसके गुण नाम गाता हूँ अवघें माझें हेंचि धन। साधन ही सकळ '' (मेरा स रा धन यही है और यही सम्पूर्ण ाधन है) निर्ल नाम स्मरण

(४) विठ्ठल आमुचें जीवन (विठ्ठल हमारे जीवन हैं) हमारे विठ्ठल आगम निगमके अर्थात् वेदशास्त्रोंके स्थान (रहस्य) हैं विठ्ठ मेरे ध्यानका विश्रान्ति स्थान है मेरा चित्त वित्त पुण्य पुरुषार्थ सब कुछ विठ्ठ है मेरा विठ्ठल कृपा और प्रेमकी मूर्ति है

विठ्ठल विस्तारला जनीं । सप्तहि पाताळें भरुनी
विठ्ठल व्यापक त्रिभुवनीं । विठ्ठल मुनि मानसीं ।
(विठ्ठल विश्वजन यास । सप्तही पाताळ सतत ।
विठ्ठल व्यापक त्रिभुवन । विठ्ठल मुनि सुमन)

मेरे माँ बाप भाई बहन सब विठ्ठल ही हैं विठ्ठलको छोड कुल गोत्रसे मुझे क्या काम अब वि ल छोड और कुछ भी नहीं है विठ्ठल ही मेरा सर्व. उनके सिवा ब्रह्माण्डमें मेरा और कोई नहीं उपास्यकी एकान्त भक्ति ही उपासकका र्वस्व है

(५) पाडुरगा करूँ प्र म नमन' (पा डुरङ्गको पहले नमन करता हूँ) तुकारामजीके ओवीरूप दो अभग हैं ये हैं बहुत बड़े पर मधुर हैं प्रत्येक अभग ग़ौ चरणोंक है पहला अभग देखा जाय

क्षीण झाला मज ससार सभ्रमें ।

ससारमें भटकते भटकते मैं थक गया तो वह आपकी थकावट दूर हुई विश्रान्ति मिली ? समाधान हुआ ? कैसे हुआ

शीतल या नामे झाली काया ५

इस नामसे काया शीत हुई

हरि नाम और रि गुण ग ओ और सब उपाय दु खमूल हैं मेरा उद्धार हरि कीर्तनसे हुआ लोगों को अपने अनुभवका ही मार्ग बतलाता हूँ

वैकुण्ठ जानेका यह सु दर मार्ग है रामकृष्णका कीर्तन करो दिण्डीपताका लिये उन्हीका सकीर्तन करते हुए यात्रा करो सुजान हो अजान हो जो हो हरिकथा करो मैं शपथ करके कहता हूँ कि इससे तर जाओगे (११ १६)

निराश मत हो यह मत कहो कि हम पतित हैं हमारा उद्धार क होगा ! मुझ जैसा पतित और कोई न होगा , और लोग और करते होंगे पर मेरे लिये कीतन छोड और कोई साधन नहीं और इ साधनसे मैं तर गया

मेरे जीके बध, किये विमोचन । ऐसे नारायण, दयावत २३
यही मेरा नेम यही मेरा धर्म । नित्य जप नाम श्रीविट्ठल २४
कहीं मत देखो, गावो हरिनाम । देखोगे श्रीराम एकाएक ६
भक्त जन हाथ, आते भगवत । बड़े बुद्धिमंत निरे मर्त्य ६
होके भी निर्गुण बनते सगुण । भक्त जन प्रेम वश होके ६

चित्त रंगते ही, चैतन्य ही होता । तब क्या न्यूनता ? निजानन्द ॥ ९३
सुखके सागर, खड़े इटपर । कृपा कर वर वही एक ९४
जीते हम हैं जो, नामके भरोसे । गाते हैं मुखसे हरिनाम
सिखाया संतोंने मुझ मूरखको । उनके वचको उर धरा ९९
पकड़े हूँ दृढ विट्ठल चरण । तुका कहे आन नाहीं काम

मेरे जीको जजालसे छुड़ाया ऐसे दयालु मेरे प्रभु नारायण हैं श्रीविट्ठलका नाम मुखसे उचारूँ यही मेरा नियम यही मेरा धर्म है मलोग और कहा मत देखो श्रीहरिकी था रो उसीमें अकस्मात् तुम उन्हे देख लोगे भावुक भक्तोंके हाथ भगवान् लगते हैं अपनेको बड़े बुद्धिमान् . गानेवाले मर मिटते हैं तो भी भगवान् उन्हें नहा मिलते निर्गुण भगवान् भक्तिप्रिय माधुर्य चखनेके लिये अपनी इच्छासे गुण बनकर प्रकट होते हैं चित्त उनमें रँग जाय तो स्वय ही चैतन्य हो य फिर वहाँ निजानन्दकी क्या कमी रहे वह सुखके सागर ईंटपर ड़े हैं वही ए कृपा करनेवाले हैं हमें उन्हींके नामका विश्वास है इसलिये वाणीसे उन्हाका नाम सकीर्तन करते हैं मुझ मूर्खको स जनोंने ऐसा ही सिखाया है उनके वचनपर विश्वास किये बैठा हूँ श्रीविट्ठलके चरण पकड़े बैठा हूँ तुका कहता है अब और कोई दूसरी इच्छा नहीं है

ये लोग ससारसे ऐसे क्यों चिपके रहते हैं इसीका मुझे बड़ा आश्चर्य लगाता है मेरा तो य अनुभव है कि हरि कथा सुखाची समाधि' (हरि था सुखकी समाधि है) क्या यह परम मृत भोग करना इनके भाग्यमें नहीं है

(६) ग ईन ओविया पण्ढरीचा देव' (ग ऊँ मैं गीत पण्ढरीके भगवन्त) य दूसरा अभग है अब इसे देखें

रँगा मेरा चित्त चरणोंमें नत । प्रेमानन्द रत यही लाम २
जोड़ूँ यही पूँजी ससारसे सारी । राम कृष्ण हरी, नारायण ३

उसके चरणोंमें मेरा चित्त रँग गया इ लिये यही लाभ मैं लेता हूँ संसारमें मैं यही लाभ, राम कृ ण हरी नारायण प्राप्त करूँगा।

भगवदानन्द इतना लभ होनेपर भी ये जीव ससार जालमें मछलियोंकी तरह क्यों छटपटा रहे हैं सत्सग करके हरि गुणगानका परम सुख क्यों नहीं भोगते ? ये विषयोंमें कन्या पुत्र स्त्री और धनके लोभसे अट गये हैं इससे तुम्हें भूल गये हैं परन्तु हे नारायण। तुम्हींने इन्हें अहंभाव खेलवाडमें लगा दिया और स्वय अलग र कर िश्वकी लीला कौतुकसे देख रहे हो जीवजनो पु म गपर आ जाओ तभी यह विठ्ठ कृपा करेंगे पुण्य कर्म कौन सा करें य ज नना चाहते हो तो सुनो पूजावे अतीत देव द्विज (अतिथि देव। और द्विजोंका पूजन करो)

करो जप, तप अनुष्ठान याग। संतोंने जो मार्ग दरसाया २

जप तप अनुष्ठान यज्ञ आदि करो अ ति् संतोंने जो मार्ग चलाये हैं उनपर चलो पर इन सब कर्मोंको मनमें वासना रखकर मत रो

वासनाका मूल, छेदे बिना कोई। समझ न यों ही, मैं तो तरा।

वासनाके मूल के टे बिन ही कोई यह न कहे कि मेरा उद्धार हो गय नि काम सत्कर्माचरणसे हरिभक्ति उत्पन्न होगी मैं तो नाम सकीतनपर इतना मु ध हो गया हूँ कि क्या कहूँ

अमृतत्व बीज, निज तत्त्वसार
गुह्याद्गुह्यतर रामनाम ३२।
यही महासुख, लेता सबकाल।
करता निर्मल हरि कथा ३४।
कथा देती दिलाती, सबको समाधि।
तत्काल ही बुद्धि विमलाती ३५

नासे लोभ मोह, आशा तृष्णा माया ।

जब गान गाया, हरिनाम ३६

यही रीति अ., किय पा ।

रगाय श्री, निज । ४८ ।

विट्ठलके प्यारे, हमहैं दुलार ।

दैत्य मतवार, कांप रहे ४६ ।

सत्य मान सत सज्जन बचन ।

गहो नारायण, पदांबुज ।

'अमृतका बीज, आत्मतत्त्वका सार, गुह्यका भी गुह्य रहस्य श्रीराम नाम है यही सुख मै सदा लेता रहता हूँ और निर्म. हरि कथा किया करता हूँ. हरि कथामे सबके समाधि लग जाती है. लोभ, मोह, आशा, तृष्णा, माया सब हरि गुण गानसे रफूचकर हो जाते हैं। पाण्डुरङ्गने इसी रीतिसे मुझे अङ्गीकार किया और अपने रगमें रँगा डाला. हम विठ्ठलके लाडिले लाल है. जो असुर है वे कालके भयसे काँपते रहते है; सत वचनोंको सत्य मानकर तुमलोग नारायणकी शरणमे जाओ.

प्रेमियोंका सङ्ग करो. धन लोभादि मायाके मोहपाश है. इस फन्देसे अपना गला छुड़ाओ । ज्ञानी बननेवालोके फेरमे मत पडो, कारण 'निन्दा अहंकार वादभेद' मे अटककर वे भगवान्से बिछुड़े रहते हैं 'साधुओंका सङ्ग करो सतसङ्गसे प्रेम सुख लाभ करो '

सत सग-हरि कथा सकीर्तन । सुखका साधन राम नाम

प्रतीतिकी यह सीधी सादी बानी कितनी मीठी है ! ऊपर उल्लिखित दोनों अभग तक कण्ठ करने योग्य है इस गङ्गाप्रवाहमें नित्य निमज्जन करे

(७) साधका ची दशा उदास असावी' (साधक की अवस्था उदास रहनी चाहिये उदास किसे कहते हैं ? जिसे अन्दर बाहर कोई

उपाधि न हो उसकी जिह्वा लोलुप न हो भोजन और निद्र नियमित हों अर्थात् व युक्ताहारविहार हो ी विषयमें वह फिसलनेवाला न हो

एकाती लोकांतीं स्त्रियाशी भाषण । प्राण गेलू जाण करूँ नये
एकान्त लोका त कहीं स्त्री भाषण । न करे ाण जाय जाय

एकान्तमें या लोकान्तमें (भीड भड़क्केमें) प्राणोंपर बीत आवे तो भी स्त्रियोंसे भाषण न करे

इस प्रकार सदाचारका पालन करते हुए

सग सज्जनाचा उच्चार नामाचा । घोष कीर्तनाचा अहर्निशी

सज्जनोंका सग नामका उच्चारण और कीतनका घोष अहनि किया रे ' इस प्र ार हरि भ नमें रमे सदाचारमें ढी । रहकर भगवद्भक्तोंके मेलेमें कोई केवल भजन रे तो वह भजन कुछ भी काम न देगा वैसे ही कोई सदाचारमें पक्का है पर भजन न करता तो वह भी बेकार है सदाचारसे रहे और हरिको भजे उसीको गुरु कृपासे ज्ञान भ होगा

(८) काळ सारावा चिंतनें (चिन्तनसे समय काटो) एकान्त वास गङ्गा स्नान देव पूजन तुलसी परिक्रम नियमपूव करते हुए हरि चिन्तनमें समय यतीत करे इन्द्रियोंको नियमसे नियत कर आहार, विहार निद्रा और भाषणमें सयत रहे देह भगवान्को अर्पण करे प्रपञ्चका भार सिरपर उठाकर कराहता न बैठे परमाथ लाभ ही महाधन है यह जानकर भगवान्के चरण रे

(९) 'धिक् जिणें तो बाइले आधीन' (स्त्रीके अधीन होकर जीने ो धिक्कार है)—जो मनुष्य स्त्रैण है वह न परलोक साध कता है न इहलोकमें मान प्राप्त कर सकता है अतिथि पूजन रे द्वारपर कोई अतिथि आया और उसे विमुख होकर जाना पड़ा तो वह जो जाता है

यजमानका सत् लेकर ाता है द्वारपर कोई भूखा ड़ा चिल्ला रहा हो और गृहस्थ घरमें बैठा भोजन रे ऐसा भोजन भी किसीसे कैसे करते बनता है उस अन्नमे रुचि भी कहाँसे आ ाती है काम क्रोध लोभ निद्रा आहार और आ स्यको जीते मानके ि ये न कुढे विवेक और वैराग्य बलवान् हो नि दा और वाद सर्वथा त्याग दे

(१) युक्ताहार न लगे आणीक साधन (युक्ताह रके ि ये और साधन क्या !)

लौकिक यवहार, चलाआ अखड । न लो भस्मदड, वनवास
कलिम धार, नाम सकीर्तन । उससे नारायण आ मिलेंगे

लौकिक व्यवहार छोड़नेका कुछ काम नहीं वन-वन भटकने या भस्म और दण्ड धारण करनेकी कोई आवश्यकता नहीं कलियुगमें (यही उपाय है कि) कीर्तन करो इसीसे नारायण दर्शन देंगे

रहते जो नहीं, एकादशी व्रत । जानो उन्हें प्रेत, जीते भूत
नहीं जिस द्वार तुलसी श्रीवन । जानो वह श्मशान गृह कैसा

एकादशी तका नियम जो नहीं पा न करता उसे इस लोकमें रहनेवा ा प्रेत सम ो ि स घरके द्वारपर तु सीका पेड़ न हो उ घरको श्मशान सम ो

(११) पाराविया नारी माउली समान (परनारी माताके मान) जाने परधन और परनि दा तजे रामनामका चिन्तन करे सत-वचनोंपर विश्वास रखे सच बोले तुकारामजी कहते हैं इन्हीं साधनोंसे भगवान् मिलते हैं और प्रयास करनेकी आवश्यकता नहीं ।

(१२) भक्ति सह ीत । गावो शुद्ध करि चित्त १
यदि चाहो भगवान । कर लो सुलभ साधन ध्रु
करो मस्तक नमन । धरो संतोंके चरण २

दूसरांके दोष । मन कानम न पोष ३
तुका कहे कर । थोड बहु उपकार ४

' चित्तको शुद्ध करके भावसे गीत गावे यदि तुम भगवान्को चाहते हो तो य‌ह भ उपाय है मस्तक नीचा करो सन्तोंके चरणोंमें लगो औरोंके गुण दोष न सुनो न अपने मनमे लाओ तुका कहता है कुछ थोडा बहुत उपकार भी किये चलो

(१२) साधनं तरी ी च दोन्ही (साधन तो यही दो हैं) इन्हे साधो भगवान् दया करेंगे ये कौन से दो साधन हैं ?

परद्रव्य परनारी । या चा घरी विटाळ २

परद्रव्य और परनारीका छूत माने

(१४) येथे दुसरा न सरे आटी देवा भेटी जावया अर्थात् भगवान्से मि ने जाने लिये और साधन करनेकी आवश्यकता नहा

ध्यावो प्रभु एक चित्त । करके रिक्त कलेवर

तनको खाली करके चित्तसे उसी एकका ध्यान करो · तनको भूलकर चरणोंका चिन्तन करो

(१५) तुका कहे छूटे आस । तहा वास, प्रभुका

जहाँ कोई आ न रही वहीं भग न् रहते हैं आशाको जडसे उखाड़कर फें दे

(१६) नावडावे जन नावडावा मान (रुचे नहिं जन रुच नहिं म न)—देह सम्ब धी व्यसनों आदतों लतों और सकल्पोंमे मन न रहे।

रुचे नहि रूप रुचे नहि रस । रहे सारी आस चरणोंमें

(१७) हित व्हावें तरी दम्भ दूरी ठेवा (यदि हित चाहत हो तो दम्भको पास न आने दो)—लोगोंके लिये लोग अच्छा कहे इसलिये

परमार्थ करना चाहते हो तो मत करो भगवान्‌को चाहते हो तो भगवान्‌को भजो

दवाचिये चाडें आलवावें देवा। आस देह भावा पाडोनिया

भगवान्‌की लगन हो तो देहभावको शून्य करके भगवान्‌को भजो जन और मनके फन्देमें मत फँसो इनसे िपकर नारायणका चिन्तन भोग रो

(१८) निर्वैर व्हावें सर्व भूतासवे (निर्वैर सर्वभूतेषु हो) यह एक साधन भी बहुत ही अच्छा है

(१) नरस्तुति आणि कथेचा विकरा (नरस्तुति और कथा । विक्रय) ये दो पाप ऐसे हैं कि भगवन् मेरे द्वारा कभी न होने दो। और

भूतां प्रति द्वेष संतांकी बुराई । हो न यदुराई, कदा काळ

'प्राणियोंके प्रति मात्सर्य और सन्तनिन्दा यह भी हे गोविन्द मुझसे कभी न हो

(२) कळे न कळे ज्या धर्म (धर्मको ो जानते हैं या नहीं जानते) ऐसे सुजान अजान सबको तुकाराम एक ही रास्ता बतलाते हैं माझ्या विठोबाचें नाम अट्टहासें उ ार (मेरे विठ्ठलका नाम अट्टहासके सा उच्चारो)

तो या दाखवील वाटा । जया पाहिजे त्या नीटा
कृपावंत मोठा । पाहिजे तो कळवळा । २

'वह (स्वय ही) जिसके लिये ो मार्ग ठीक है वह दिखा देगा वह बड़ा दया है पर हृदयकी वह लगन होनी चाहिये '

भगवत्प्रेम चित्तमें धारण करो मन और वाणीपर विठ्ठलकी ही धुन हो हृदयमें सच्ची गन हो तो जि के लिये जो मार्ग रल और सुगम है उसे वह स्वयं दि ा देगा

(२१) हेंचि भवरोगाचें औष (यही भवरोगकी ओषधि है) इस ओषधिके सेवनसे क्या होगा

जन्म जरा नासै व्याध। न रहे और कोई उपध।
करती वध षड्वर्ग

जन्म मृत्यु जरा और रोग न हो जाते हैं और कोई विकार नहीं होता षड्विकरोंका भी वध हो जात है ऱस ओषधिमें सब गुण ही गुण हैं दोष कु भी नहीं जितना सेवन करें उतना लाभ है तब तो ह ओषधि बड़ी अच्छी है य क्या है तुकारामजी बतलाते हैं

सावरे प्यारेको रे देख। छ चार अठारह भये एक।
दु सग न कर क्षण एक। नाम मत्र घोख विष्णु-सहस्र

नेत्रोंसे साँवरे प्यारेको देख देख उन्हें जिनमें ओं। चारों वेद और अठारह पुराण एकीभूत हैं एक क्षण भी दु सङ्ग न कर विष्णुसहस्रनाम जपा कर यही वह ओषधि है अब इसका अनुपान भी जान लो नहीं तो ओषधि सेवनसे क्या लाभ ? अनुपान सुनो

कही न जाय छोड निज घर न लगे बाहरकी रे बयार
बहु बोलना कम कर। सग अपर छोड दे रे

अपना घर (हार प्रेम) ोडकर बाहर न जाय बाहरकी हवा न लगने दे बहुत न बोले और भगवत्सग छोड़ दूसरा सग न करे अपना हृदय श्रीहरिको दे डाले चित्त हरिको देनेसे वह नवनीतके म न मृदु होता है

कुछ अनुपान अभी और बतलाना है

नहाओ अनुताप ओढ लो दिशा। स्वेद कढ जाय सारी आशा
पावोगे स्वरूप आदि था जै। तुका कहे दशा मोगो वैराग्य

अनुताप-तीर्थमें स्नान करो दिशाओंको ओढ लो और आशारूपी पसीना बिल्कुल नि जाने दो और वैराग्यकी दशा भोग करो इससे पहले जैसे तुम थे से हो जाओगे

(२२) सारी दशाएँ इससे सधती । मुख्य उपासना सगुणभक्ति ।
प्रकटे हृदयकी मूर्ति । भावशुद्धि जानकर

व दशाएँ इससे सध जाती हैं मुख्य उपासना गुणभक्ति है भावशुद्धि होनेपर हृदयम जो श्रीहरि है उनकी मूर्ति प्रकट हो जाती है

श्रीहरिके सगुणरूपकी भक्ति करना ही जीवोंके लिये मुख्य उपासना है मुमुक्षु जिस मूतिका नित्य ध्यान करता है वह हृदयमें रहनेवाली मूर्ति मुमक्षुका चित्त शुद्ध होनेपर उसके नेत्रोंके सामने आ जाती है इस सगुणसाक्षात्कारका मुख्य साधन हरि नामस्मरण ही है और सगुण साक्षात्कारक अनन्तर भी नामस्मरण ही आश्रय है . नाम स्मरणसे ही हरिको प्राप्त करो और हरिके प्राप्त होनेपर भी नामस्मरण करो बी और दोनों एक हरिनाम ही हैं इस सगुणभक्तिसे सब दशाएँ साधी जाती हैं भव बन्धन कट जाते हैं जन्म मृत्युका चक्कर छूट जाता है योगी जिसे ब्रह्म मानते और मुक्त जिसे परिपूर्ण आत्मा कहते हैं वही हमारे सगुण श्रीहरि हैं उनका नाम-संकीर्तन ही हमारा साधन और साध्य है उसी नारायणको हम भक्तलोग सगुण, निर्गुण जगज्जनिता जगज्जीवन वसुदेव देवकी नन्दन बालरॉगन बाल कृष्ण' हकर भजते हैं

(२३) धरना देनेवाले ब्राह्मणको तुकारामजीने ११ अभंगोंमें जो बोध है उसमे भी यही बतलाया है कि इन्द्रियोंको जीतकर मनको निर्विषय करो और भगवान्‌की शरण लो शरण जानेकी रीति बतलायी देहभावको शून्य करके भगवत्प्रेमसे ही भगवान्‌को भजो

(२४) श्रीशिवा ी महाराजको भेजे हुए पत्रमें भी

आ हीं तेणें सुखी । म्हणा विठ्ठल विठ्ठल मुखीं १
कंठीं बिरवा तुळसी । व्रत करा एकादशी २

हमे ₂सीमें सुख है कि आप मुखसे विठ्ठ विठ्ठल क₂ कण्ठमें तुलसीकी माला धारण करें और एकादशी । व्रत पालन करें ही मुख्य उपदे है

(२५) प्रयाणके पूव जिजाबाईको ११ अभंगोंमें जो पूर्ण बोध करा । है उसमें भी बा बच्चोंके मोहमें न पड़कर म अपना गला छुड़ा लो यही पहले कहा है और फिर बतलाते हैं कि भगवान्के दर्शन चाहती ो तो साधन करो न श न्की आ पहले छोड दो लीप पोतकर स्थान स्वच्छ रखो तुलसीकी सेवा करो अतिथि और ब्राह्मणोंका पूजन करो स पूर्ण भ क्ति भावसे वै णवोंकी दासी बनो और मुखसे श्रीहरिका नाम लो '

(२६) ऐका पण्डितजन (नो हे प डितो) विद्या पढकर विद्वान् क्या रते हैं प्राय वि सी राजा रईस या निककी अतिरिक्त स्तुति करके अपनी विद्या उसके पैरोंपर रख देते हैं ऐसे प डितोंसे तुकाराम कहते हैं नरस्तुति मत करो तब पेट कैसे भरेगा अन्न आ छादन हें तों प्रार । अ धीन (अन्न-व तो ारब्धके अधीन है) सारा प्रप प्रारब्धके सिर पटको और श्रीहरिको ढूँढ़नेमें गो कैसे ढूढें क्या रें

तुका म्हणे वाणी । सुखें वेंचा नारायणी

अपनी ाणी नारायणके लिये सुखपूर्व च करो ।

पण्डित ब्दकी व्याख्या कारामजीने गीताके अनुसार ही की है

पंडित तो भला । नित्य भजे जो विठ्ठला १
अवघें सम ब्रह्म पाहे । सर्वांभूतीं विठ्ठल आहे २

'सच्चा पण्डित वही है जो नित्य विठ्ठ को भजता है और यह देखता है कि यह सम्पूर्ण समब्रह्म है और सब चराचर जगत्में श्रीविठ्ठल ही रम रहे हैं।'

(२७) अब अन्तमें एक मधुर अभंग और लीजिये जो सबके लिये बोधप्रद है इसमें उपासनाकी शपथ करके तुकारामजीने यह बतलाया है कि परम साधन नाम संकीर्तन ही है उपास्यदेवको उठा लेना कितनी बड़ी बात है हृदयमें वैसी सच्ची लगन हो वैसी दृढ़ता हो, वैसी कृतकार्यता हो तभी उपास्यदेवकी शपथ करके कोई बात कही जा सकती है। ऐसी बातका मर्म और महत्त्व उपासकोंके ही ध्यानमें आ सकता है

नाम संकीर्तन सुलभ साधन । पाप उच्छेदन जड़मूल ॥ १ ॥
मर मार फिरो काहे बन बन । आवे नारायण घर बैठे ॥ ध्रु० ॥
जाओ न कहीं करो एक चित्त । पुकारो अनंत दयाघन । २ ॥
'राम कृष्ण हरि विठ्ठल केशव' । मंत्र भरि भाव जपो सदा ३ ॥
नहीं कोई अन्य सुगम सुपथ । कहूँ मैं शपथ कृष्णजीकी ४ ॥
तुका कहे सूधा सबसे सुगम । सुधी जनाराम रमणीक ॥

'नाम संकीर्तनका साधन है तो बहुत सरल पर इससे जन्म-जन्मान्तरके पाप भस्म हो जायँगे इस साधनको करते हुए बन-बन भटकने कु काम नहीं है नारायण स्वयं ही सीधे घर चले आते हैं। अपने ही स्थानमें बैठे चित्तको एका रो और प्रेमसे अनन्तको भजो । राम-कृष्ण हरि वि ' य मन्त्र सदा जपो इसे छोड़कर और कोई साधन नहीं है यह मैं वि की पथ रके हता हूँ । कहता है, यह साधन सबसे सुगम है द्धिमान् धनी ही इस नको यहाँ हस्तगत कर लेता है

यह प्रकरण यहाँ समाप्त हुआ सत्सग सत् सद्गुरुकृपा और साक्षात्कार परमार्थमार्गके ये चार पड़ाव हैं इनमेंसे पहला पड़ाव सत्सग है यहाँत हमलोग पहुँचे तुकाराम वार री घरानेमें पैदा हुए वारकरी म्प्रदायमें भरती हुए और उसी प्रदायको उन्होंने बढाया इससे वारकरियोंका सत्सग ही उन्हें लाभ हुआ यह सम् दाय मुट्ठीभर लोगोंका न ीं है सम्पूर्ण महार ष्ट्रके अधिवासियोंका यह धर्म है इसलिये वारकरी स प्रदायके मुख्य तत्त्व सिद्ध तप दर्शी के रूपसे सकलित करके पाठकोंके सामने रखे हैं अनन्तर एकादशीव्रत वारकरियोंके भजन मेले और कीर्तन प्रकार ्न तीन मुख्य बातों । विचार किया तुकाराम भावके बलसे इस मार्गपर चले और इसी मार्गपर चलनेका उपदेश उन्होंने सबको किया इसलिये हमलोग भी उनके सत्सगसे उन्हींके सादिक वचनों ो सुनते हुए यहाँतक आये अ तमें उन्होंने अपने मनको सवसाधारण जनको अजान और जानको रा को और अपनी सहधर्मिणी जिजाबाईको ो उपदेश किया उससे भी यह जाँच लिया कि कारामजीने अपने लिये कौन सा साधनमार्ग निश्चित किया था सम्प्रदायके परम्परागत मार्गपर ी तुकाराम चले और इससे यह ज्ञात हुआ ि उनका साधनम र्ग और सम्प्रदाय साधनमार्ग एक ही है उदास वृत्तिसे रह र करे और तन मन भगवान्को अर्पण करे परस्त्री परधन परनिन्द और परहिंसासे सवदा दूर रहे सदाचारमें अटल रहे काम क्रोध मोह आशा दम्भ और वादको सवथा तजकर चित्तको करे सन्तवचनोंपर विश्वा र हुए ब प्राणियोंके सा ि रहे एकादशीका महाव्रत पण्ढरीकी वारी और हरिकीतन कभी न छोड़े श्रद्धाके सा सम्प्रदायके इस मार्गपर चलते हुए परम प्रेमसे श्रीपाण्डुरङ्गका भजन करे यहाँतक यही मार्ग देखा अ सत्शास्त्रकी ओर आगे बढ़ें

तुकारामजीका ग्रन्थाध्ययन

अक्षरोंको लेकर बड़ी माथापच्ची की इसलिये वि भगवान् मिलें यह कोइ विनोद नहीं किया है वि जिससे दूसरोंका कवल मनोरञ्जन हो

विश्वास और आदरके सा सन्तोंके कु वचन कण्ठ कर लिये

श्रीतुकाराम

१ विषय प्रवेश

तुकारामजीका ग्रन्थाध्ययन शीष देख र बहुत से लोग अचरज करेंगे कि क्या तुकारामने भी ों । अध्ययन किया था ? ग्रन्थोंसे उन्हें क्या ाम वह कभी ि सी पाट ालामें जाकर या किसी गुरुके पास बैठकर कुछ पढे भी थे उनपर तो भगवत्कृपा हुइ भगवत् स्फूर्ति इ नेसे उनके मुखसे ऐसी अभगवाणी निकली ' यह अन्तिम वाक्य सही है उन्हें भगवत् स्फूर्ति हुइ और इससे अभगवाणी उनके मुखसे हुई य सोलहों आने च है पर प्रश्न यह है कि भगवत् स्फूर्ति होनेके पूर्व उन्होंने कुछ अध्ययन भी किया था या नहीं भगवत्-स्फूर्ति कारामजीको ही क्यों हुई देहूमें अन्यत्र ौर भी तो बहुत से युवक

थे पर बोये बिना कुछ उगता नहीं और क किये बिन कुछ मिलता नहीं मका यह मुख्य सिद्धान्त है तुकारामने भी भगवान्‌से मिलनेके लिये अनेक साधन किये तुकाराम पाठ ालामें ाकर पढ़े थे और परमार्थ सिखानेवाले गुरु भी उन्हें मिले थे उनकी पाठशा ा थी पण्ढरीका भागवत सम् दाय और उनके गुरु थे उनके पूर्वमें होनेवाले भगवद्भक्त पु डलीकने महारा में भागवतधर्म ा विश्ववि ालय स्थापि किया बसे प ढरीके विद्यालयसे संयुक्त आलन्दी सासवड त्र्यम्बकेश्वर पैठण इत्यादि स्थानोंमें अनेक विद्यालय स्थ पित हुए इस ि द्य यसे अनेक भगवद्भक्त निर्माण होकर हर निकले थे और उन्होंने महाराष्ट्रमें र्वत्र भागवत र्मका जय जयकार वि य था तुकार मके द्वार देहूका विद्यालय ापित होना बदा थ पर इसके पूर्व उन्होंने प ढरी आलन्दी ौर पैठणके वि ोंमें यो गुरुओंके समीप स्वय भी अ यन वि य

तुकाराम वारकरी सम्प्रद यकी पाठशालामें तैयार हुए और इ म्प्रदायमें प्रचलि मुख्य मुख्य ग्रन्थों ा उन्होंने भक्तिपूर्वक अध्ययन किया हमें इस अध्यायमें य ी देखना है कि तुकारामजीने किन किन ोंका अ यन वि या ि न किन स तोंके वचन ठ वि ये उनके प्रि ग्रन्थस्थ कौन से थे उन्होंने थोंका ध्ययन किस ार ि या और उनमेंसे क्या ार ग्रहण किया परन्तु इ के पूव में यह देखना चाहि ये कि थाध्ययनका सामा महत्त्व क ा है

२ अध्यय के द त्कार

द्गुरु कृपा होनेके पूर्व और कृ क पीछे भी न्थाध्ययन के लिये ही आवश्यक होता है बने सब मयोंमें ाध्ययनका महत्त्व माना है पहले अपरा विद्य और पीछे पर विद्य परोक्ष ज्ञ न और पीछे अपरोक्षज्ञान पहले ाास्त्राध्ययन और पीछे अनुभव

ातनसे अ है मु ोपनिषद्‌में द्वे विद्ये वेदितव्ये

ऋग्वेदो यजुर्वेद सामवेदोऽथर्ववेद शिक्षा कल्पो व्याकरण निरुक्त छन्दो ज्योतिषमिति अपरा विद्या गिनाकर यह कहा है कि यया तदक्षरमधि गम्यते (जिससे वह अक्षर ब्रह्म जाना जाता है) व पराविद्या है अपरा विद्या प्राप्त कर लेनेपर ही परा विद्य प्राप्त होती है ब्दादेवा परोक्षधी अर्थात् वेद ोंके अध्ययनसे ही अपरोक्षानुभव प्राप्त होता है यही सिद्धान्त है ज्ञान जैसे जैसे जमता है वैसे ही वैसे विज्ञानका आनन्द

होता जाता है श्रीज्ञानेश्वर महाराजने अमृतानुभव में पहले शब्दका मण्डन करके पीछे यह दिख दिया है कि अपरोक्षानुभवके अनन्तर उसका किस प्रकार ख न हो जाता है परन्तु शब्दका मण्डन करते हुए उन्होंने य कहा है कि शब्द बड़े कामकी चीज है तत्त्वमसि शब्दके द्वार ही जी को अपने स्वरूपका स्मरण होता है शब्द जीवको स्वरूप स्थितिपर ले आनेवाला दर्पण है (अमृतानुभव प्र ६ १) इसी प्रकार ब्द विहितका माग और निषिद्धका अस माग दिखाने वाला मशालची है शब्द बन्ध और मोक्षकी सीम निश्चित करनवाला इनके विवादका निर्णय रनेवाला न्यायाधी है (अमृ प्र ६ ५) इ द ा अभिप्राय वेद से है वेद' शब्दका ही पर्याय है ब्दसे ही जी त्मा ि त्मासे मिलता है जीवा माका परमात्मासे मि होनेपर यद्यपि ब्द पीछे हट आता है (यतो वाचो निवर्तन्ते) थापि आत्मारामके मन्दिरमें पहुँचा अ नेवाला द पथ प्रदर्शक है और इसलिये उसका ाा लिये बिना जीवके ि ये और कोई गति नहीं है

३ शब्दका अभिप्राय

ब्द का अभिप्राय वेद से ही है थापि वेदोंका रहस्य जो , पुराण और सन्त वचन बतलाते है उनका भी समावेश इ शब्द में हो जा ा है अर्थात् 'शब्द से वेद पुरा सन्त-वचन भव बन्ध मोच शब्द साहित्य मात्र ग्रहण करनेसे यही निष्कर्ष निकलता है

कि ब्दका आश्र किये बिना जीवको स्वहितका मार्ग मिलन दुर्घट है इ पवित्र ब्द ाहित्यसे ीवको प्रवृत्ति निवृत्ति विधि निषेध बन्ध मोक्षका यथाथ ज्ञान ाप्त होत है और अपने मू पता है तुकारा जीने मंग्रन्थोंके रूपसे वेद पुराण और सन्त-वचनोंको ही जहाँ तहाँ ग्रहण किया है

विश्वीं विश्वंभर । बोले वेदांतींचा सार १
ज ीं जगदीश । शास्त्रें वदती सा काश २
व्यापिलें हें नारायणें । ऐसीं गर्जती पुराणें ३
जनीं जनार्दन । सत बोलती व चन ४
सूर्यांचिया परी । तुका लोकीं क्री । करी ५

विश्वमें विश्वम्भर हैं साररूप वेदान्त यही कहता है जगत्में जगदी हैं यही धीरे धीरे ास्त्र बत ाते हैं इस सबको नारायणने व्यापा है यही पुराणों ी गर्जना है जनमें जनादन हैं य सन्तोंकी ी है सूयके ान वही (श्रीहरि) ोकमें क्रीडा कर रहे हैं

वेद शा पुराण और न्त-वचन रहस्य एक ही है और व यही है कि विश्वमें विश्वम्भर हैं वही वि म्भर जो वि ो अपने एकांशसे भरते हैं वेदोंने यह आत्मस्फूर्तिसे बताया ोंने ण्डन म डनपूर्वक चर्चा करते हुए सावकाश ताया पुराणोंने गरजकर ताया जिसमें आबालवृद्ध और आचाण्डाल ोग सुन लें और स्वय अनुभव

ऐतिहासिक दृष्टिसे देखनेवाले इस गमें देख सकते हैं तुकारामजीने ि दुस्थानके इतिहासके चार किये हैं (१) वेदोपनिषत्काल (२) स्त्रों या ष दर्शनोंका ा ( ) रा ोंका काल और (४) साधु सन्तोंक का न चारों ाल-विभागोंमें ैदिक धर्मकी परम्पर वच्छिन्नरूपसे चली आयी है और विश्वीं विश्वंभर (विश्वमें विश्वम्भर) ही मारे धमका है

प्राप्त करके सन्तोंने बताया चारोंके नेका ढग अ अलग हो कता है भाषा भिन्न भिन्न हो सकती है शैली भी विविध हो कती है पर सिद्धान्त एक ही है सिद्धान्तकी दृष्टि से उनमें एकवाक्यता है वेद जिसे आत्मा कहते हैं पुराण राम-कृष्ण शिवादि रूपसे जि ा वर्णन करते हैं उसीको हमारे वार री भक्त विट्ठल नामसे पुकारते नामोंमें भेद भले ी हो पर परमात्म वस्तु एक ही है नाम रूपके भेदसे वस्तु भेद नहा होता श्रुतिने जिसे पहचाननेके लिये ॐ शब्दका सङ्केत किया उसीको वारकरी भक्तोंने विट्ठल कहा श्रुतिने जिसका निर्गुण निराकारत्व बखाना, सन्तोंने उसीका सगुण साकारत्व बखाना क्ष्य ए ही रहा जबतक लक्ष्यमें भेद नहीं है तबतक वर्णन करनेका पद्धतियोंमें भेद होनेपर भी क्ष्य और सिद्धान्त की एकता भङ्ग नहीं हो सकती वेदों अथ शास्त्रोंका प्रमेय और पुराणोंका सिद्धान्त ए ही है और वह यही है कि सबतोभावसे परमात्माकी रणमें ाओ और निष्ठापूर्वक ीका नाम गाओ तुकाराम ीने यहा कहा है वेदोंने अनन्त विस्तार किया है पर अर्थ २ ना ही सा ा है कि वि लकी शरणमें जाओ और निष्ठापूर्व उसीका नाम गाओ सब स्त्रोंके विचारका अन्तिम निर्धार यही है अठार२ पुराणोंका सिद्धान्त भी तु कहता है कि यही है

वेद शा और पुराण सिद्धान्तके सम्बन्धमें विसवादी या परस्पर विरोधी नहीं बल्कि एक ही सिद्धान्त को प्रकट करनेवाले हैं और इसलिये हमलोग यह हा रते हैं कि हमारा सनातन र्म वेद ा पुराणोक्त है और हमारे नित्य मोंका स ल्प भी वेद शास्त्र पुराणोक्त फल-प्राप्त्यर्थ होता है जो परमात्मा वेदप्रतिपाद्य हैं उन्हींको सा चौ अठराचा गोळा (चार वेद और अठार पुराणोंका गोला) भक्त उनके श्याम रूपको आँखों देखना चाहते हैं तुकाराम कहते

ऐके रे जना । तुझ्या स्वहिताच्या खुणा ।
पढरीचा राणा । मना माजी स्मरावा १
सकल शास्त्रांचें हें सार । हें वेदांचे गव्हर ।
पाहता विचार । हाचि करिती पुराणें २

सुन रे जी अपने स्वहितकी पहचान न ले रीके राणाको मनमें स्मरण कर सब ोंका य सार है यही वेदोंका रह है पुराणोंका भी यही विचार है

वेद पुराण और सन्त चन ब नारायणपर होनेसे इनमेंसे किसीका भी अध्ययन वैदिक र्म । ही अध्ययन है वेदोंको देखिये स्त्रोंको समझिये पुराणोंको पढिये अथवा साधु सन्तोंकी उक्तियोंको ध्या मे ले आइये स । र एक ही है यह म्पूण साहित्य इसीलिये नि ण हु । है कि जन्म मृत्युका च छूटे ससारको नश्वर जान ीव स्वकर्माचरण करे परमात्मबोध लभकर नि संशय स्थितिको प्रा करे मृत्युको मार र जीये सहज सच्चिद नन्दरूप हो जाय जल एक ही है वापी कूप त ागादि के बाह्य उपाधि हैं ोई नदी किनारे रहकर नदीके से अपना म कर ले ो सरोवरके जलसे काम चला ले को कुएँका जल से न करे ज्ञान उदकके मान है जिसे पिपासा हो वह ज साधनोंका उपयोग र तृप्त ो यही शब्द साहित्यका मुख्य ेतु है नदी कूप रोवर सागर बक हेतु एक ही है और वह य ी है ि तृषात्त जीव तृप्त हो लें उपाधि का अभिमान या उप ास करके ाद विव द करना प्यास गने । क्षण नहीं है चोखमेला रैदास चमार, सजन कसाई न्हूपात्रा से कनि जातिमें उत्प ीव भी ची तृष लगनेसे सत ङ्गसे प्राप्त ब्रह्मानन्दरूप आकण्ठ पानकर र गये परमार्थकी सच्ची तृषा गनेपर ाि रूप विद्यादि आगन्तु ारणोंकी मीमा रने ो जी ही न चाहता

एकना जैसे ब्राह्मण अपने ब्राह्मणत्व अभिमान नहीं रखते और चो मिला जैसे अति शूद्र अपने हीनपन से लज्जित भी न ीं होते ज्ञानेश्वर ए नाथने ब्राह्मणसमा न ीं स्थापित किये नामदेव तुकारामने पिछ्ड़ी हुई जातियोंके सङ्घ न ीं बनाये और रैदास चोखामेळाने अछूतोद्धारक म डल भी नही खड़े िये प्रत्युत सब जातियोंके ब मुमुक्षु जीवोंके ि ये सब सन्तोंने अपने कीर्तनोंमें ग्रन्थोंमें और अभगोंमें अपनी व णीका उपयोग कि है और सर्वत्र यही आ य प्रकट कि है कि यारे यारे ल्हान थोर भलत याती नारी अथवा नर (आओ आओ टे बड़े सब आओ चाहे ि स जातिके रहो नर हो नारी हो आओ) तात्पर्य वेद शास्त्र पुराण और सन्त वचन जीवोंके उद्धारके ि ये निर्माण हुए हैं और जिस किसीका मन भगवान्के लिये बेचैन हो उठा हो उसके ि ये इन्हींमेंसे किसी एक या अन प्रकारों अवलम्बन रना आवश्यक है क्योंकि इसके बिना परोक्ष ज्ञान नहीं प्राप्त ो कता तुकारामजीने इनमेंसे पुराणों और सन्त-वचनोका अवलम्बन किया और उनका सार हृदयमे सग्रह कर लिया

४ अध्ययनके विषय पुराण और सन्त वचन

तुकारामजीने वेदोंका अध्ययन नहीं िया घोकाया अक्षर मज नाही अधिकार ' (अक्षर घोखनेका मु े अधि कार नहीं) यह उन्होंने स्वय ही तीन ार कहा है पर उन्होंने य नहीं क ा कि ब्राह्मण ी वेदके अधि कारी क्यों ? हम शूद्रोंको यह अधिकार क्यों नहीं ? इसके लिये इ ब्रा णोंसे कभी लड़े नहीं ऐसे यर्थक व द उपास्य करने अ क्षुद्र मन उन नहीं ा वह यह जानते थे कि ब्राह्मणोंको वेदाधिकार होनेपर भी सभी ब्रा ण वेदाध्ययन न करते और जो करते हैं वे सभी ससार-सागरसे मुक्त नहीं होते और हों भी तो ोई हर्ज न ी उनसे

औरोंका मुक्तिन्द्वार ब द नहीं ो ज ता ि यो ैश्यास्तथा शूद्रास्तेऽपि यान्ति परां गतिम् इस भगवद्वचनके अनुसार उनके लिये मोक्षके द्वार खुले ही ि हें वेदोंका अधिक र था उनमेंसे बहुत ी थोड़े वेदोंका अध्ययन करने ले थे और इनमेंसे बिरला ही को२ वेदार्थ ानकर अर्थरूपको प्राप्त हो ा थ इसके अतिरिक्त वेदार्थ अत्यन्त गहन है ास्त्र अपार है और जीवन बहुत अल्प ऐसी अवस्थामें वेदोंका रहस्य यदि भ पुराण ग्र ेमें त ा प्र कृत ग्रन्थोंमें मौजूद है तब इस सुगम मार्गको छोड़ र मन परोसकर रखे हुए भो नसे विमुख होकर झूठ मूठ परेशानी उठ नेकी क्या आवश्यकता है ? फिर ो ब ी ए बा यह है कि जिसके चि की ी गन लग गयी वह सा नोंके गड़ेमें नहीं पड़ा र ा ो साधन इज ीप और भ ोते हैं उन्हा अ न कर अपन ार्य सा लेता है इस प्रकार ारामजीने पुराणों और सन्तवचनोंको ही अपने अध्ययनके ि ये चुना और उनके प्रेमी स्वभावके लिये ही चुनाव उपयुक्त ा और इतनेसे भी उनका काय पूण हुआ वेदोंके अक्षर उन्हें ठ रनेका अधि कार न ी था तो भी वेदोंका अथ अक्षर परब्रह्म उन्हे ा हुआ इस प्रकार ब्दत तो नहीं पर अथत उन्होंने वेदोंका अ ययन किया और यही तो चाहि ये थ

५ अध्ययन ा रुख

तुका मजीने अपने जीवनके कुछ वर्ष ग्रन्थाध्ययनमें व्यतीत ि ये इसमें सन्दे नहीं उन्होंने अपने आ मचरित्रपर अभगोंमें हा ही है कि विश्वास और आदरके साथ सन्तोंके चनोंका पाठ किया पढ़े हुए शब्दका ान बत ाता हूँ जैसा पढाया ैसा पढन मनु य जानता है इत्यादि अभगोंमें य ी बात उन्होंने कही है दूसरोंको उपदे रते हुए भी उनके मुखसे इसी प्रकारके उद्गार निकले हैं वेदों ो पढ र हरिगुण गाओ ग्रन्थोंको दे कर कीर्तन रो जिन ग्रन्थोंको उन्होंने

देखा वि ास और आदरके साथ दे । ग्रन्‍ र्तांके प्रति आदरभाव रखकर तथा उनके द्वारा विवेचित सिद्धान्तों और कथित सन्त कथाओ पर पूर्ण विश्वास रखकर तुकारामजीने उन ग्रन्थोंको पढा यह उन्होंने स्वय ही बताया है उनके पिताने उन्हें जमा खर्च, बाकी रोकड बही खातेमें लिखने यो य ि साब किताबका ज्ञान करा दिया था र जब उन्हे परमार्थकी भूख गी ब उन्होंने परमार्थके ग्रन्थोको बड़ी आस्थासे देखा प्रपञ्चमें म देनेवाली ि द्या जीवनको सफल करानेवाली विद्या नहीं ै य व ध जब उन्हे हुआ तब वह परमार्थक ग्र थ देखने लगे भगवान्‌के लिये अक्षरोको ले र बड़ी माथा पच्ची की प्रपञ्च मिथ्यात्व प्रतीत होनेपर वैराग्य दृढ हुआ और तब भगवत् प्राप्तिके लिये प्राण व्याकुल हो उठे तब

> मागील भक्त कोणे रीती । जाणानि पावले भगवद्भक्ती ।
> जीवें भावें त्या विवरी युक्ती । जिज्ञासु निश्चिती या नाव
> (न थभागवत १९ २ ४)

पूर्वके भक्त वि स प्रकार भगवद्भक्तिको प्राप्त हुए यह जानकर तन मन प्राणसे उन साधनोंका जो विचार रता है उसीको जिज्ञा कहते हैं

इसी प्रकार तुकाजी पूवक भक्त किन साधनोंसे भगवान्‌के प्रिय हुए इसका विचार करने लगे और य विचार ग्रन्थोंमें ही होनेसे उ है ग्रन्थोंका अवलोकन करना पड़ा पूर्वके भक्तोंकी क ाए जानकर उनका अनुकरण करनेके लिये उन्होंने पुराणों और सन्त वचनोंका परिचय प्राप्त किया सन्तोंके वचनोंको देखते देखते उनका मनन होने लगा मननसे अनायास पाठान्तर हुआ मनन करते करते अक्षर मुखस्थ हो गये पाठान्तर और मननसे अर्थरूप हो गये वही हते कि केवल शब्द ठ करनेसे क्या होगा अर्थको देखो अर्थरूप होकर रहो एकनाथ भी कहते

शब्द सांडूनिया मार्गे शब्दार्थी माजी रिगे ।
जें जें परिसतु तें तें होय अगें । विकल्पत्यागें विनीतु
(ना ाग त ३५९)

शब्दको पीछे छोड़ दो और ब्दके अर्थमें प्रवे करो जो जो सुनो वह विनीत होकर विकल्पको त्याग कर स्वय हो जाओ

जिसे जिसकी चा होती है उसे वह जहाँ भी मिले व ाँसे निका ले ा है ाराम ाी ाो भगवान्की चा ाी इसीकी धुन थी इसलिये देवताओं और भग ान्का परिचय रानेवाले देवतुल्य सन्त नोंकी क ाएँ जिन ग्रन्थोंमें ीं वे ही ग्रन्थ उ हें प्रिय हुए और इन ग्र ोंमेंसे विशेषकर ऐसे ही वचन उन्हें कण्ठ हो गये जो हरि प्रेम बढानेवाले हैं

करू तैसें पाठ तर । करुणाकर भाषण १
जिहीं केला मूर्तिमत । ऐसा सतप्रसाद ॥ध्रु
सोज्ज्वल केल्या बाटा । आइत्या नीटा मागिल्या २
तुका हणे घंऊ धावा । करू हावा ते जोडी ३

संतोंके ऐसे चनोंका पाठ करें जिनमें करुण प्रार्थना ाो जिन सन्तोंने भगवान्को सगुण साकार होनेको विव किया ऐसे सन्तोंके वचन उनक प्रस द ही हैं इन तोंने पूर्वके स तोंके माग ड़ बुहारकर स्वच्छ किये हैं ये मार्ग पहलेसे ाी हैं पर इन सन ोंने इन मार्गोंको और सुगम र दिया है अब ल्दी र भगवान्को पुकारें और उनके चरणयुग प्राप्त करें

इस अभगको और विचारें तो क र मजीके मनका भाव स्प हो ायगा परम र्थविषयक स स्तों ग्र थ स्कृत और प्राकृत भाषाओंमें थे र उन ब्में उ हें वे ही न्थ प्रिय थे ि नमें करुणाकर भाषण थे ात् जिनमें भगवान्की करुणप्रार्थन थी भगवान् और भक्तका प्रेम जिनमें व्यक्त हुआ ा ो प्रेमसे भगवान्की बलैया लेनेमें

थे केव ा ीय प्रक्रिया बतलानेवाले ीय ग्रन्थ उन्हे नहीं रुचते थे करुणाकर भाषण भी नये पुराने अनेक कवियोंके काव्योंमे प्र ि त किये हुए मिलेंगे पर कवल इतनेसे उनको सन्तोष नहीं हो सकता था उ ह तो ऐसे सगुणभक्तोंके करुणा र भाषणों का पाठ रना था ि न्होंने भगवान्को मूर्तिमान् किया हो, अर्थात् ि हे सगुण साक्षात्कार हुआ हो जिन्होंने भगवान्को प्रत्यक्ष दे ा हो भगवान्से प्र ा ाप ि या हो इन सगुण भक्तोंके करुणाकर भाषणों का पाठ करनेका हेतु भी तु ारामजीने उपर्युक्त अभगके चौथे चरणमे बता दिया है उन सन्तोको ो लाभ हुआ अर्थात् भगवान्को 'मूर्तिमान्' करके जो प्रेम सुख उन्होंने प्राप्त कि ा वही प्रेम ख तुकाराम चाहते थे और उनका उत्साहबल इतना दिव्य था कि वह यह समझते थे कि 'भगवान्को गुहार कर' हम उसे प्राप्त कर लेंगे जिन सन्तोंको भगवान्का सगुण साक्षात्कार हुआ उन्हींके वचनोंका पाठ करनेका हेतु तुकारामजीने इस प्रकार व्यक्त कर ही दिया है पर सन्त भी तुकारामजी ऐसे चाहते थे जो पूर्व परम्पराको लेकर चले हो कोई नया धर्मप थ चलानेवाले, नया सम्प्रदाय प्रवर्ति करानेवाले कोई नया आ दोलन उठानेवाले महात्मा वह नहीं चाहते थे धर्मक्रान्ति या बगावत उन्हे प्रिय नहीं थी पहलेसे ही जो मार्ग बने हुए हैं पर बीचमे का वशात् जो लुप्त या दुर्गम हो गये उ हे फिरसे स्वच्छ और सुगम बनानेवाले महात्माओंके ही वचन उन्हे प्रिय थे 'आम्ही (हम) वैकुण्ठवासी' अभगमें तुकारामजीने अपने अवतारका प्रयोजन बताया है उसमें भी यही कहा है कि प्राचीन का मे ऋषि जो कुछ कह गये उसीको सत्यभावसे वर्तनेके लिये हम आये हैं और सन्तोंके मार्ग ड बुहारकर स्वच्छ करेंगे यही हमारा काम है

पुढिलांचे सोयी माझया मना चाली ।
माताची आणिली नाहीं बुद्धि ॥

पूर्वके सन्तोंके मार्गपर चलें यही मेरी मन प्रवृत्ति है मैंने अपनी बुद्धिसे को. नया मत न ी ग्रह ग किया है तुकारामजी कहते हैं मेरा साक्षीका यवहार है तुकाजीने बा क्रीडाके जो अभग रचे उनमें उ होंने यही क. है कि ि ोंके ब भरोसे गीत गाऊँगा दूसरे एक स्थानमें काजी कहते हैं कि मेरी वाणी क्या है मूर्खकी बकवाद है ब चेकी ोतली बातें हैं इस प्रक र अपनेको कवि त्व ीन बतलाते हुए य. भी बतल देते हैं कि आप सन्तजनों जूठन सेवन करके आपलोगोंका हारा पाकर ही मेरे मु से दिक वाणी नि ली (आधारें वदली प्रसादाचीं ाणी उि सेवनीं तुमचिया) तु जीने फिर भग ानूसे यही प्रार्थना की है कि स गेले तया ठाया देवराय पा वी (पूवके सन्त जहा पहुँचे व ी हे भगवन् मु पहुँचाओ)

तात्पर्य पूवपरम्पर ो लेकर चलनेवा त ा भग ान्को मूर्ति मान् करनेवाले पहुँचे हुए तोंके ही चनोंका पाठ काजी कर थे और उन न्तों ो बो भगवद्दशन हुए वे ी दर्शन काराम चाहते थे कौन ऐसे सन्त थे और कौन से ग्र थ तुक राम प्रिय हुए यह विचार प्रसङ्गसे आप ी आगे आनेवाला है पुराण थों और साधु-सन्तोंक ग्र थोंक ी स ारा तुकाजीने लिया और उनका र अपने दयमें सग्र किया बृ दार यकमें हा है शब्दोंका अध्ययन बहुत न करे कारण वाणीकी वह व्यर्थकी न है ग्रन्थोंके सिद्धान्त ध्यानमें आनेपर ग्रन्थोंका प्रयोजन नहीं रहता ग्रन्थोंके सिद्धान्त जहा ज्ञात हुए और यह गन लगी कि महात्माओंके अनुभव मुझे भी प्रा हों आत्यन्तिक ख अधिकारी मैं भी बनू और इसके लिये जी हाँ पटाने लग वहाँ ग्रन्थाध्ययन ीरे धीरे कम होने ही लगता है और अन्तर अभ्यास तब आरम्भ होता है पीछेकी अवस्थामें तुकारामजीने ही कहा है

पाहों ग्रंथ तरी आयुष्य नाहीं हातीं ।
नाहीं ऐसी मती अर्थ कळे १

(देखूँ ग्रंथ सारे तो आयु नहीं हाथ ।
मति भी न दे साथ अथ जानू १ ।)
होईल तें हो या विठोबाच्या नावें ।
अर्जिलें तें भावें जीवीं धरूँ । २
(होना हो सो होय विठ्ठल आसरे ।
भाय भक्तिसे रे उर धरूँ २)

स थ देखना चाहं तो आयु अपन हाथमें नहीं इतनी बुद्धि भी नहीं जो अर्थ समझमे आवे इसलिये विटोबाके नामपर जो हो सो हो जो कु (ज्ञान) मिलेगा उसे भावपूवक जीसे लगा रखूगा ग्रन्थके साररूप रिको जब चित्त ले लेता है तब ग्रन्थका कार्य समात हो जाता है अस्तु तुकारामजीने कौन से ग्रन्थ देखे किन सन्तोंके वचनोका पाठ किया, या पठित ग्र थोंमेंसे क्या सार ग्रहण किया य अब देखें

६ महीपतिबावाके उद्गार

तुकारामजीके ग्रन्थाध्ययनका वर्णन महीपतिबावाने अपने भक्त लीलामृत (अ ३) में अपनी प्रेम परा वाणीसे इस प्रकार किया है

नामदेवके अभगोंका नित्य पा करते हुए (काराम) नाचते गाते थे एकादशीका व्रत रहकर सन्तोंके सा जागरण करते थे, उन्होंने अन्य सन्तोंके भी ग्रन्थ देखे विख्यात यवन भक्त कबीरका वचनामृत बड़ी प्रीतिसे पान रते थे श्रीज्ञानेश्वरने अपने श्रीमुखसे जो महान् अ त्म ग्रन्थ कहा उसकी शुद्ध प्रति इ वैष्णव वीरने प्रा की और उसका अध्ययन किया सन्त एकनाथने भागवतपर जो टी की उसका भी शुद्ध ग्रन्थ इन्होंने डे प्रयाससे प्राप्त किया इस ग्रन्थका मनन करनेके

लिये तुकाराम भ डा पर्वतपर एकान्त स्थानमें जाकर बैठा करते थे पूर्वाभ्य समं तुकारामजीके सहायक स्वय कैवल्यदानी भगवान् थे पव पर बैठकर ग्र थका पारायण करके अब व॰ अर्था वय ध ानमें लाते थे ग्रन्थके वचन स्मरण रखने और ठ करनेमें तुकारामजीको विशेष परिश्रम न ीं करना पड़ता । दिन रात मनन करते थे ॰ससे अक्षर क ठस्थ हो जाते थे एकनाथ महाराजके प्रासादिक वचन जिसमें भरे हुए हैं उस भ वार्थ रामायण । भी नि ीतिसे पारायण करते थे. श्रीमद्भागवतकी सरस कथाए उन्होंने पढीं और कि हीं महापुरुषके मुखसे भी सुनीं श्री रिकी लील विशेष अभ्यास के साथ दे ी सुनी श्री ानेश्वरके योगवासि अमृतानुभव ग्र थोंका मनन कर अथकी ख ज की और पुराण भी बहुत श्रवण किये

महीपतिबावाने जिन ग्र थोंका उल्लेख किय है उन्हें काराम ीने एकान्तमं बैठकर दे । और उनका अर्थ ढूँढा ॰समें सन्दे नहीं नामदेवक अभग पाठ रत हुए वह नाचा करते थे ह तो स्प ी है सर्वप्रथम नामदेवके ही अभगों । पाठ और मनन किया कबीरके दोहे उन्होंने बड़ी ीतिसे पढे य॰ बात ॰ससे भी स्पष्ट हो ी है कि तुकारामजीने स्वय भी ैसे ही दोहे रचे हैं ज्ञानेश्वरके ग्रन्थोंकी शुद्ध प्रति ँ' उन्होंने प्रा कीं महीपतिबावाका थन बड़े ही महत्त्व । है ज्ञानेश्वरके ज्ञानेश्वरी अमृतानुभव और योगवा ( ) ग्र थों उन्होंने मनन किया और अथ ढूँढ़कर रखा महीपतिबावाने इ ी क्रमे आगे चलकर क॰ा है कि रिप ठके श्रेष्ठ अभग जि हें श्रीज्ञानेश्वरने स्वमुखसे कहा उन अभगोंको ैणव वीर का प्रेम और आदरके साथ गाया करते थे ' अर्थात् ानेश्वरी अमृतानुभव योगवासिष्ठ और हरि पाठके अभग ानेश्वर हार जके ॰न चार ग्रन्थोंका ारामजीने नन पूवक अभ्य न किया था अब रही । एकना महाराजकी

नाथभागवतका शुद्ध ग्रन्थ उन्होंने बड़े प्रयाससे प्राप्त किया और भण्डारा पर्वतपर निजन स्थानमें बैठकर इन ग्रन्थोंका पारायण किया ना के भा र्थरामायण का भी उन्होंने नि प्रीतिसे पारायण किया भागवत की सरस क ए पढीं किन्हीं महापुरुषद्वारा वर्णित कथाएँ भी श्रीकृष्ण लीलाप्रेम र्थ आयास के सा सुनी महीपतिबावाने तुकारामजीके अध्ययनका यह जो सुन्दर वर्णन किया है वह यथार्थ है बावाकी ोधक बुद्धि और मार्मिकता देखकर साश्चर्य आनन्द होता है तु रामजीके ग्रन्थाध्ययनके सम्बन्धमें महीपतिबावाने जो कु लिखा है उसका समर्थन करनेके लिये तुकारामजीके अभगोमे ही कोई अन्त प्रमाण मौजूद हों तो उन्हें अब देखें नामदेव कबीर ज्ञानेश्वर और एकनाथके ग्रन्थोंको तो तुकारामजीने आस्थापूर्वक देखा ही था पर और भी उन्होंने क्या क्या देखा था यह भी हमलोग क्रमसे देखें मेरे विचारमे तुकारामजी मूलसस्कृत भागवत और गीता प्राकृत टीकाओंकी सहायताके बिना स्वय सम सकते थे और कितन ही सस्कृत स्तोत्र सुभाषित भर्तृहरिके नीति और वैरा य तक आदि ग्रन्थ भी उन्होंने देखे थे तात्पर्य तुकाराम बहुश्रुत थे और उनके अभगोंसे यह अनुमान होता है कि वह सस्कृत भी सामान्यत अच्छी जानते थे

७ भागवतधर्मके मुख्य ग्रन्थ गी ा और भागवत

तुकाराम भागवतधर्मके विद्यालयमे भर्ती हुए यह पहले कह ही चुके हैं पिछले अध्यायमे य भी दिखा चुके हैं कि उन्होंने भ गवतधर्मका आचार स्वीकार कर लिया अब जिन ग्र थोंमे भागवतधर्मके तत्त्वोंका प्रतिपादन किया आ हो उन ग्रन्थोंका अध्ययन भी सम्प्रदायके साथ आप ही प्राप्त होता है भागवत र्मके मुख्य ग्रन्थ दो हैं—गीता और भागवत वेद-शास्त्रोंका सम्पूर्ण रहस्य गीता ग्र थमें सञ्चित किया हुआ है ौर ीता

का श्री णचन्द्र चरित्र भागवतमें र्णित है श्रीकृष्णके ज्ञानाधि ारी भक्त दो हैं एक अर्जुन और दूसरे उद्धव भगवान् श्रीकृष्णने अर्जुनको गीतामें और उद्धव ो श्रीमद्भागवतके ए ादश स्कन्धमें गवतधर्मका रहस्य ाया है इसीको मराठीमें य ाक्रम श्री ाने र और एकनाथने विशद किया है भागवतधमके गीता और भागव मुख्य आधारस्तम्भ हैं और उनमें पूर्ण एकवाक्यता है दोनों ग्रन्थोंकी शिक्षा एक है दोनोंका यही एक उपदेश है कि सब कर्म कृष्णार्पणबुद्धिसे करके हरिभक्तिके द्वारा स्वय तर जाय और दूसरोंको भी ारे कुछ विद्वान् यह हा रते हैं कि गीता प्रवृत्तिपरक है और भाग निवृत्तिपर पर थमें दोनों ग्रन प्रवृत्ति निवृत्ति परदा फाड़नेवाले थ हैं दोनों ग्रन्थोंमें ान और भक्तिका मधुर मिलन हुआ है

ीता भागवत करिता श्रवण । आणिक चिंतन विठोबाचें
तुका म्हणे मज घडो त्यांची सेवा । तरी माझ्या दैवा पार नाहीं

जो गीता और भागवत श्रवण करते हैं और श्रीहरिका चिन्तन करते हैं क ा है कि उनकी सेवाका अव र मुझे मिले ो मेरे सौभा यकी सीमा न रहे पाडर करूँ नमना वाले ओवीरूप चरणाभंगमें भागवतका स्वतन्त्र उल्लेख भी किया है

त्य जो कुछ है व्यासादिने बता दिया है मैं उ ोंका उच्छि अपनी वाणीसे ा हूँ व्यासने हा है कि भव सिन्धुके पार जानेके लिये भक्ति ही मुख्य है जनोंके उद्धारके लिये ही भागवत निर्माण किया

तुकारामजीके थनानु ार गी और भागवतका भक्ति ी सार है गीता और भागवतका कार मजीको कितना दृढ परिचय ा ह अब दे ा जाय

८ गीताध्ययन

मूलगीता तुकाराम नित्यगाठ करते थे और इससे उनके अभगोपर जहाँ तहाँ गीताकी छाया पडी स्पष्ट दिखायी देती है कुछ उदाहरण नीचे देते है

गीता निर्दोष हि सम

अभग ब्रह्म सर्वगत सदा सम । जेथें आन नाहीं विषम ।

ब्रह्म सर्वगत सदा सम है ज ाँ और कुछ भी विषम नहीं है ’

गीता अन्तकाले च मामेव रन्

अभग अंतकाळ याच्या नाम आले मुखा ।

तुका म्हणे सुखा पार नाहीं ।

‘अन्तकालमे जिसके मुखमे नाम आ गया उसके सुखका कोई पार नहीं

गीता प पत्रमिवा भसा

अभग म मी व्यवहारीं असेन वर्तत ।

जसें जळाआंत पद्मपत्र

यवहारमें मै ऐसे रहता हूँ जैसे जलमे कमलपत्र ।’

गीता ‘द्वाविमौ पुरुषौ लो और उत्तम पु षस्त्व न्य

अभग क्षरा अक्षरावेगळा । तुका राहिला सावळा ।

क्षर अक्षरसे अलग व वेलाग है

गीता—ते भु वा ग ोक विशा

क्षीणे पुण्ये मर्त्यलोक विशन्ति

अभग जरी मागों पद इंद्राचें । तरी शाश्वत नाहीं त्याचें

स्वर्ग भोग मागू पूर्ण । पु य सरल्या मागुती यणें

यदि इन्द्रका पद ाँगूँ ो व॰ शाश्वत न ीं है पूण स्वर्गभोग ाँगूँ तो पुण्य समाप्त होनेपर लौटना पड़ेगा

ाव र्थं उदपाने (गीता २ ४६) इस श्लोकका भावार्थ ज्ञानेश्वरीके अनुरूप तुक रामजीने इस प्रकार किया है

त्यानी गगंचिया अतावीण काय चाड ।
आपलें तें काड तृषेपाशीं

गङ्गाका अन्त पाये बिन मारा क्य म रु जाता है ार व तो प्यास ानेसे है

ॐ दिति नि र्देश क अभिप्रा तुकाराम ी यह बतलाते हैं

ॐ तत्सत् इति सूत्राचें सार । कृपेचा सागर पाडुरग १ ।
(ॐतत्सत् इति सूत्रका सार । कृपाके सागर पाडुरग १ ।)

गीता कर्मेन्द्रियाणि ास्ते स्मरन्
इन्द्रियार्थानि मूढात्म मिथ्या उच्यते

अभग त्यागें भोग माझ्या यतीऊ अतर ।
मग मी दातारा काय करूँ ।

ऐसे त्यागसे भोग मेरे अ तरमें आ जायँगे व मैं क करूँग

गीता रेदात्मनात्मानम्

अभग आपणचि तारी आपण चि मारी ।
आपण उद्धरी आपणया

आप ही तारनेवाला है आप ी ारनेवाला है अपना अ प ही उद्धार करनेवाला है

गीता वा सि ी ीनि ा वि ाय
वानि ारि ो ारि
रीराणि विहा ी ी
न्यन्यानि संयाति नि देही

अभग जीव न देखे मरण । धरी नवी सांडी जीर्ण ।

जीव मरण नहीं देखता नया धारण करता और पुराना छोड़ देता है

गीता—अपि चेत् दुराचारो भ ते । नन्यभाक्
साधुरे मन सम्य व्यवसितो हि

अभग न हार्वी तीं जालीं कर्मे नरनारी ।
अनुतापें हरी स्मरता मुक्त

जिनके हाथों ऐसे कर्म हुए जो भी न हो वे नर हों या नारी अनुतापसे हरिका स्मरण कर मुक्त होते है ’

गीता अनन्याश्चि यन्तो । × × ×
× × × योगक्षे म्य हम्

अभग—ससारींचें वोझें वाहता वाहविता ।
तुजविण अनता नाहा कोणी ।१
गीतेमाजी शब्ददुदुभिचा गाजे ।
योगक्षेम काजकरणें त्याचें

स रका बोझ ढोने । और ढोवानेवा । हे अन त तेरे बिना कोई नहीं है गी में दुन्दुभीका नाद निनादि ो रहा है योगक्षेम च ना उसीका काम है

अस्तु इन उदा रणोंसे यह पता लग ायगा कि मूल गीतासे तुकारामजी । कितना दृढ परिचय था तुकारामजीके पा जो कोई परमार्थविषयक उपदे सुननेके लिये आता कारामा उसे गीताकी पोथी देते और ते कि गीता और वि णुसहस्रनाम पाठ किया करो कारामजीने अपने ामा । और शि य म जी गाडे ये ढीकरसे गीता पाठ करनेको ा था बहिणाबाईको उन्होंने स्वप्न दिय कि राम कृष्ण

हरी मन्त्रका जर करो और उसी समय गीताकी पोथी उनके हाथमें दी और कहा कि इसका नित्य प ठ किया करो यह बात स्वय बहिणाबा ने अपने अभगमें कही है त त्वय तुकारामजी गी ाका नित्य पाठ किया करते थे और गीत की बहुत सी प्र तियाँ स्वय ि खकर अथवा शि योंसे लिखाकर अपने पास रखते थे ये प्रतियाँ जिज्ञासुओंको देनेके काम आती ी यह भी हो सकता है कि गीताकी ऐसी प्रतियाँ लिख लिखकर लोग उन्हें अर्पण करते हों इस प्रकार तुकारामजी स्वय नित्य गीता पाठ करते थे और दूसरोंसे भी कराते थे

९ भागवत परिचय

गीताके समान ही मूल भागवत भी उ ोंने अ छी तरह दे ा था गीता पढना ज्ञानेश्वरी पढना है और भागवत पढना एकन थी भागव पढना है ऐसी साम्प्रदायिक परिपाटी होनेपर भी तुकारामजीने मूल गीता और मूल भ गवतको अच्छी तरह देखा था इसमें को स देह नहीं तुकारामजीके अभगोंमें या सभी तोंकी कविताओंमें जिन प्रह्लाद ध्रुव गजेन्द्र अजामिल अम्बरीष उद्धव दामा गोपी ऋषि पत्नी आदि भक्त भक्तिनोंके बारम्बार नाम आते हैं उनकी कथाएँ भागवतपुराणमें ही हैं ध्रुवाख्यान भागवतके चतुर्थ स्क धमें (अ ८ ९) है जडभरतकी था पञ्चम स्क धमें (अ ९ १० ११) अज मिलकी कथा ष स्कन्धमें (अ १ २ २) प्रह्लाद चरित्र स म स्क धमें (अ ५ से १) गजे द्र मोक्षका वणन अ म स्क धमें (अ० २ २) अम्बरीषका आख्य न नवम स्क में (अ ४ ५) और दशम स्कन्धमें सम्पूर्ण श्रीकृष्ण चरित्र है सारके ब ग्र थोंमें भक्ति खाणवस्वरूप श्रीमद्भागवत ग्रन्थ अत्यन्त मधुर है उ में भी द म स्कन्ध मधुर र और उ में फिर श्रीकृष्णकी बाल लीला मधुरतम है श्रीकृष्णकी बाल लीलाओंके म्बन्धमें आगे विस्तारपूर्वक वणन आ नेवाला है इसलि ये यहाँ

लेखनीको रोक रखते हैं अन्य सन्तोंके समान तुकारामजीको भागवतसे स्फूर्ति मिला एकादश स्क धपर एकनाथ महाराजका भाष्य है और द्वादश स्कन्धमे कलिमन्तारक नाम सकीर्तनकी महिमा वर्णित है श्रीमद्भागवत भगवतधर्मका वेद है श्रीज्ञानेश्वर महाराजने व्यासदेवके पद चिह्नोंको ढूँढते हुए और भाष्यकार (श्रीमत् शङ्कराचार्य) से मार्ग पूछते हुए गीतारहस्य विशद किया है, तथापि ज्ञानेश्वरीपर भागवतकी ही छाप अधिक पड़ी है भारतवर्षमें श्रीकृष्णभक्तिका प्रचार प्रधानत भागवतसे ही हुआ है भागवत ग्रन्थ तुकारामजीने अनेक बार समग्र सुना देखा और अपनी भाषामें दोहराया है भागवतके अने श्लो उन्हें कण्ठ हो गये, उनका मम उनके हृदयमें उतर आया और उसकी भक्तकथाएँ उनकी भक्तिके लिये उद्दीपक हुई। इस विषयमे किसीको कुछ स देह न रह जाय इसलिये अन्त प्रमाणोंके द्वारा ही यह देखा जाय कि तुकारामजीके विचार और वाणीपर भागवतका कितना गहरा प्रभाव पड़ा था

(१) चतुथ स्क ध (अ० ८) मे नारदजीने ध्रुवको भगवत् स्वरूपका ध्यान बताया है इसी प्रकार भागवतमे अ यत्र श्रीम द्विष्णुका वर्णन है दशम स्क धमे श्रीकृष्णका रूप वर्णन भी वैसा ही है तुकाराम जीने श्रीपण्ढरपुरनिवासी श्रीविठ्ठलका जो रूप वणन किया है वह भागवत के उस रूप वणनके साथ मिलाकर देखनेयोग्य है

श्रीवत्साङ्क घनश्याम पुरुष न मालिनम्
शङ्खच गदापद्मैरभि यक्तचतुभुजम् ४
किरीटिन कुण्डलिन केयूरव यान्वितम्
कौस्तुभाभरण ग्रीव पीत कौशेय वाससम् ८

वनमालिनम्=तुळशीहार गळां, रुळे माळ कंठीं वैजयन्ती।

गलेमें तुलसीका हार है वैजयन्ती माला लटक रही है

मेघश्याम पीतकौशेयवाससम्ः कासे सोनसळा पाघर पाटोळा ।
घननीळ सावळा वाइयानो १

(काछे पीताबर पीतपट धार ।
घननील सावरे मेरे कान्हा ।)

किरीटिन कुण लिनम्ः मकर कुडलें तळपती श्रवणीं ।
मुकुट कुडलें श्रीमुख शोभलें । इत्यादि

(मकर कुडल जगमगै स्रवन । मुकुट कुडल श्रीमुख सो हन ॥)

कौस्तुभाभरणग्रीव म् कठीं कौस्तुभमणि विराजीत ।
ठमें कौस्तुभमणि सो॰ रहा है

(२) 'भक्ति हरौ भगवति प्रवहन्' ध्रुव

(प्रवहन् पद ध्यानमें रखिये)

प्रेम अमृताची धार वाहे देवा ही सामोर

प्रेमामृतकी धारा भगवान्के सामने भी ऐसी ही प्र ाहित होती है

(३) ाय देहो देहभाजा ोके
न्कामा ते विड्भुज ये
पो दिव्य पुत्र ा
शु ये ौह नन्तम्

(५ ५ १)

विड्भु ने वि भक्षण करनेवाले श्वान शूकर आदि च्छ योनियोंमें जो क दायक विषय भोग ा होते हैं वे ही यदि नर देह प्राप्त होनेपर भी बने रहें तो य॰ तो बहुत ही घृणास्पद है इसलिये (ऋषभदेव कहते हैं) पुत्रो दिव्य तप करके चित्तको शुद्ध करो इ से अन ब्रह्म सुख ा करोगे इस श्लोकके सा य अभग मि कर देखिये

तरीच जन्मा यावें दास विट्ठलाचे व्हावें १
नाहीं तरी काय थोडीं । श्वान सूकरें बापुडीं । ध्रु
जाल्याचें तें फळ । अंगीं लागो नेदी मळ २ ।
तुका म्हणे भले । ज्याच्या नावें मानवले ॥ ३ ।

(मनुष्य) म तो ही ले जो विट्ठलनाथके दास ो नहीं तो कुत्ते और सूअर (विड्भुज) क्या कम है ? जन्म लेना तभी सफल है व अङ्गमें मै न लगने दे (सत्त्व शुद्धयंत्) तुका कहता है वे ही भले हैं जिनका मन भगवन्नाममे ग गया '

(४) ससारमें गृह सुत दारा और द्रव्यादिके पीछे भटकनेवाले मनुष्यको इस भवारण्यमं प्रचण्ड बवण्डरसे उ ़नेवाली धूलसे भरी हुई दिशाएँ नहीं सूझ ी

चिच ात्योहि तपासुधूत्रा
दिशो न जानाति जस्वलाक्ष
(५ १३ ४)

तुका म्हणे इहलोकीं च्या वेव्हारें ।
नय डाले धुरें भरूनि राहे

तुका कहता है इस ोकके यवहारसे आखें धुएसे भरी हुई न रखो

(५) ष स्कन्धमें अजामिलके कथा प्रसङ्गमे कहा है
वै स नरक याति नेक्षितो यमकिङ्करै
(२ ४८)

ोपसीद रे दयाभिगुप्तान्
(२)

इन दो चरणोंसे बिल्कुल मिलता हुआ कारामजी यह अभग है

यम साग दूता । तु हा नाहीं तेथें सत्ता
जेथ होय हरिकथा । सदा घोष नामाचा । १
नका जाऊँ तया गावा । नामधारका च्या शिवा
सुदर्शन यावा । घरटी फिरे भोंवती । ध्रु
चक्रगदा घेऊनी हरी । उभा अस त्याचे द्वारी

यमराज अपने दूतोंसे कहते है कि हाँ हरि कथा होती है नाम-सकीर्तन होता है वहाँ घुसनेका तुमलोगोंको कोई अधिकार नहीं है नामधारकोंके मङ्गलग्राममें तुमलोग मत जाओ वहा प्रत्येक गृहपर सुदर्शनचक्र घूमता रहता है प्रत्येक द्वारपर श्रीहरि चक्र और गदा लिये खडे रहते हैं

* ❀ ❀

(६) मन्येधन भिज रूपतप ुौ
स्तेज भा गौरुष द्धियो
नाराध ाय हि भवन्ति परस्य पु ो
क तु ो भग ान् गजयूथपाय
(७ ९ ,)

विप्राद्द्वि ड्गुणयुताद ि दन भ
प दारि ि न्दविमुखाच ् पच रिष्ठम्
न्ये ्पि मनो नेहि ाथ
ा पुनाति स न भूरि ान
(, १)

परम भक्त प्रह्लद हते हैं धन अभि न रूप तप पाि डत्य (श्रुत) ओज तेज प्रताप बल पौरुष प्रज्ञा और अ ाङ्गयोग ये गुण भगवान्‌की प्रसन्नताके कारण न ीं होते गजेन्द्र पशु ा और उसमें इन गुणोंमेंसे एक भी गुण नहीं ा भगवान् के उसकी भक्ति पाकर

प्रसन्न हुए (अब दूसरे श्लोकमे यही बतलाते हैं कि भक्तिके सिवा भगवान् और कुछ नहीं चाहते) उपर्युक्त बारहो गुण यदि किसी ब्राह्मणमे हैं पर वह कमलनाभ भगवान्की सेवासे विमुख है तो उसकी अपेक्षा वह चाण्डाल श्रेष्ठ है जिसने अपना मन, वचन, कर्म अर्थ और प्राण भगवान्को समर्पित कर दिया है। कारण हरि भक्त चण्डाल भी अपने कुलको पावन करता है पर गर्वका पुतला बना हुआ नास्तिक ब्राह्मण अपना भी उद्धार नहीं कर सकता ये दोनों श्लोक तुकारामजीके दो अभङ्गोंमे भावरूपसे आ गये है—

नव्हती ते संत करिता कवित्व । पांडित्य
संताचें ते आप्त नव्हती संत ॥ १ ॥ अभिजन
नव्हती ते संत वेदाच्या पठणें । श्रुत
नव्हती ते संत करितां तपतीर्थाटण ॥ तप इ० इ०

संत वे नहीं जो कवित्व करते हैं जिनका बड़ा परिवार है, जो वेदपाठ या तप तीर्थाटन आदि करते हैं।

अब दूसरा अभंग देखिये

अभक्त ब्राह्मण जळो त्याचें तोंड । काय त्यासी रांड प्रसवली ॥ १ ॥
वैष्णव चांभार धन्य त्याची माता । शुद्ध उभयतां कुळ याती ॥ ध्रु० ॥
ऐसा हा निवाडा जाळास पुराणीं । नाहीं माझी वाणी पदरिची ॥ २ ॥
तुका म्हणे आगी लागो थोरपणा । दृष्टि त्या दुर्जना न पडो माझी ॥ ३ ॥

जो ब्राह्मण होकर भी भगवान्का भक्त न हो उसका मुँह काला उसे मानो राँडने जना हो चमार है पर यदि वह वैष्णव है तो उसकी माता धन्य है जिसने उसे जन्म देकर उभय कुल पावन किये पुराणोंमे ही यह निर्णय हो चुका है यह मै कुछ अपने पल्लेसे नहीं कह रहा हूँ तुका कहता है उस बड़प्पनमे आग लगे (जिसमे भगवद्भक्ति नहीं) उसपर मेरी दृष्टि भी न पड़े

इ अभगमें उपर्युक्त दूसरे श्लोकका अर्थ स्पष्ट ही प्रतिफलित हुआ है और साथ ी तुकारामजी यह भी बत । देते हैं कि य निर्णय पुर णोंमें ही हो चुका है किस पुराणमें कहाँ य निणय हुआ है यह बतलानेकी अब कोई आवश्यकता न र ी भागवत पुर णके उपर्युक्त श्लोकमें य़ निर्णय किया हुआ सामने मौजूद है

(७) प्रह्लाद दैत्यपुत्रोंको उपदेश करते हुए कहते हैं (स्क ध ७—६)—

पु ो षशत ायु ्ध जिता न
नि यदसौ रा ्या शे ध पित ६
मुग्धस्य । ये ैमारे ी तो याति विंशति इत्यादि

तुकाराम गातों वासुदेव' अभगमें क़ते हैं—

अल्प आयुष्य मानवी देह । शत गणिलें तें अध रात्र खाय ।
पुढें बालत्व पीडा रोग क्षय । इत्यादि

मानवी देहकी आयु अल्प है १ वषकी आयु गिनें तो आधी आयु तो रात हा खा जाती है फिर बा ालमें कुछ आयु निक जाती है शेष पीड़ा रोग और क्षय चट कर जाते हैं

(८) अष्टम स्क (अ २ ३)में गजे द्रका आख ान है उ के सा कारामजीके गजेन्द्र म्ब धी उल्लेख मि ाकर देखने योग्य हैं गजे द्रकी । और उस मर्म तुकारामजी बत ाते हैं

गजेंद्र तो हत्ती सहस्र वरुषें । जळामाजी नक्रें पिडालासें १
सुहृदा सांडिलें कोणी नाहीं साहे । अतीं वाट पाहे विठो तुझी २
कृपेच्या सागरा माझ्या नारायणा । तया दोघाजण तारियेलें ३
तुकाम्हणे नेलें वाहोनि विमानीं । मीही आइकोनी विश्वासलों ।४

गजे द्रको जलमें एक सहस्र षसे ग्राहने पकड़ रखा था गजेन्द्रके ोई हृद् उसे छुड़ा नहीं के ब अ में हे विठलना

वह आपकी प्रतीक्षा करने लगा हे कृपानिधान मेरे नारायण ! उन दोनोंका आपने उद्धार किया आप उ हें विमानमें बैठाकर ले गये यह नकर मु े भी यह भरोसा हो गया

एक हजार वर्षतक गज-ग्राहका युद्ध हुआ यह बात भागवतमें भी है तय र्नियुद्ध्यतो समा सहस्र यगमन् ' को ह द् छुड़ा न ी सके अपरे गज स्त तारयितु न चाशकन् ' गजे द्र और ग्राह दोनों ो भगवान्‌ने तारा यह बात भागवतमें ही कही है 'विमानमें बैठा ले ने की बात भागवतमे इस रूपमें है तेन युक्त अद्भुत स्वभवनं गरुडा सनोऽगात् ' इस प्रकार तुकारामजीने भागवतकी जिन जिन भक्तकथाओं का उल्लेख अपने अभगोंमें किया है उन कथा ओंको उल्लेख करनेके पूर्व मूल भागवतमें अच्छी तरह देख लिया है अर्थात् भागवतके साथ तुकारामजीका प्रत्यक्ष और दृढ परिचय था यह स्पष्ट है

तुकारामजीकी यह बात भी विशेष मनन करनेयोग्य है कि भगवान् उन्हें विमानमें बैठाकर ले गये यह नकर मुझे भी यह भरोसा हो गया भगवान् भक्तको विमानमें बैठाकर अपने धाम ले जाते हैं यह गजेन्द्र अम्बरीष आदि भक्तोंके चरित्रोंमें देखा और इसक मुझे भी भरोसा हो गया ' तुकारामजीका यह उद्गार उन्हींकी वैकुण्ठगमनकी कथाके साथ मिलाकर देखनेयोग्य है

(९) तैरे द्भ ि यत्क्रियतेऽपृथक्त्वात्

व य तद्भ ति मूलनिषेचन यद्

(८ ९ २९)

हि स्कन्धशा ा तरोर्मू से नम्

ए रा विष्णो सर्वेषामात्मन हि

(८ ५ ४९)

श्रीमद्भागवतमें मूलसेचनका दो बार आया हुआ यह दृष्टा त रसी अर्थके साथ तुकारामजीके अभगमें भी इस प्रकार आया है

सिचन करिता मूळ वृक्ष ओलावे सकळ १
नको पृथकाचे भरी पन्। एक सार धरी ।२

मूलका सिञ्चन करनेसे उसकी तरा समस्त वृक्षमें पहुँचती है पृथक्के फेरमे मत पड़ो जो सार वस्तु है उसे पकडे रहो ज्ञ नेश्वरीमें भी यही दृष्टा त अ या है मूलसिञ्चनसे जैसे सहज ही ाखा पल्लव स तोषको प्राप्त हे ते हैं परन्तु अपृथक्त्वात् पद भागवतमे ही है और उसीसे पृथक्के फंरमें मत पड़ो यह तुकोक्ति निकली है

(१) अह क्तपराधीन (९ ४ ६३)

अरे भक्तपराधीना । तुका म्हणे नारायणा १

(११) वशीकुर्वन्ति भक्त्या सति य त्पतिं था
(९ ४ ६६)

पतिव्रते जैसा भतार प्रमाण । आम्हा नारायण तैशापरी ।

पतिव्रताके िये जैसे पति ही प्रमाग है वैसे ही हमारे लिये नारायण है

(१२) भर्जिता थिता ध ना ा ो ाय ने यते
(१ २२ २६)

बीज भाजुनि केला लाही । आम्हा ज म मरण नाहीं

बीज भूँजकर ला. बना ड ली तब ज म मरण कहाँ रहा ?

(१३) एकाद स्क धके दूसरे अध्यायमें कायेन वाचा मन सेन्द्रियैर्वा (३६) इ श्लोकसे लेकर विसृजति हृदय न यस्य साक्षात् प्रणयरशनया धृताङ्घ्रिपद्म ' (५५) इस श्लोकतक भागवत धर्मका वर्णन है इ में आद्य और अ त्य दोनों पदोंका अथ कार मजीके अभगमें है

प्रेमसूत्रदोरी । नेतो तिकडे जातो हरी ॥ १॥
मनेसहित वाचा काया । अवघें दिलें पंढरिराया ॥ २॥
(प्रेमसूत्रडोर । जाते हरि खींचा जिस ओर ॥
मन सह तन वचन । किया सब हरि अर्पण ।)
प्रणयरशना। प्रेमसूत्रकी डोर।

(१४) भागवतके निम्नलिखित श्लोकका तो तुकारामजीने पदशः भाषान्तर किया है

न पारमेष्ट्यं न महेन्द्रधिष्ण्यं
न सार्वभौमं न रसाधिपत्यम्।
न योगसिद्धीरपुनर्भवं वा
मय्यर्पितात्मेच्छति मद्विनान्यत्॥

यह श्लोक एकादश स्कन्ध (अ० १४। १४) में है। कुछ हेर फेरके साथ ऐसा ही श्लोक षष्ठ स्कन्धमें भी है (अ० ११। २५)। इस श्लोकका अर्थ यह है कि जिसने मुझे आत्मार्पण किया है वह मेरा भक्त मेरे सिवा और कुछ भी नहीं चाहता। पारमेष्ट्य अर्थात् परमेष्ठीपद अथवा सत्यलोक, महेन्द्रधिष्ण्य अर्थात् इन्द्रपद, सार्वभौमपद, रसाधिपत्य अर्थात् पातालका आधिपत्य, योगसिद्धि, अपुनर्भव अर्थात् मोक्षकी भी वह इच्छा नहीं करता। इन पारमेष्ट्यादि छः पदोंको सामने रखकर तुकारामजीने देखिये कैसे इस श्लोकका अनुवाद किया है

परमेष्ठीपदा । तुच्छ करीती सर्वदा ॥ १॥
परमेष्ठी पदको भी सदा तुच्छ समझते हैं (कौन?)
हेंचि ज्याचें धन । सदा हरीचें चिंतन ॥ ध्रु०॥
सदा हरिका चिन्तन ही जिनका धन है
इंद्रादिक भोग । भोग नव्हे तो भवरोग ॥ २॥

इन्द्र दिकोंके जो भोग हैं वे भोग नहीं भवरोग हैं

सार्वभौम राज्य । त्यासी काहीं नाहा काज ३

सार्वभौम राज्यसे उन्हें कोई काम नहीं है

पाताळींचें ाधिपत्य । ते तो मानिती त्रिपत्य ४

पातालके अधिप होनेको वे विपत्ति ही समझते हैं

याासिद्धिसार । त्यासी वाटे तें असार ५

योगसिद्धियोंके सारको वे नि र स झते हैं

मोक्षायेव सु । सुख नव्हे तेंचि दु ६

मोक्षतकके सुखको वे सुख न ीं दु ख ही स ते

तुका म्हणे हरी वीण । त्यांसि अवघा वाटे शीण ७

तुका कहता है रिके बिना वे ब कुछ व्यथ म ते हैं

इतने स्प प्रमाण पानेके पश्चात् ोई भी य न ीं कता कि श्रीमद्भागव के ाथ तुकार मजीका ह परिचय न ।

१ पुराणोंपर श्रद्धा

भागवतके अतिरिक्त अ य पुराणाको भी कारामजीने बड़े प्रेमसे पढा था पुरा ोंके म्बन में उन्होंने अनेक बार ो प्रेमोद्गार ट किये उनसे यह मालूम ो ा है कि पुराणोंका भी उनके चित्तपर गहरा प्रभाव पड़ा था

ए स्थानमें उन्होंने क ा है मैंने पुराण देखे दशनोंमें भी ढूँढ़ ोज की पर तीनों भुवनमें ऐसा (मेरे नारायण ैसा) कोई दूसरा न देखा एक दूारे र ानमें कहते हैं पुराणों । इति ास देखा उसके मीठे रसका सेवन किया और उसीके आधारपर यह विता कर रहा यह व्यर्थका प नहीं है एक स्थानमें तुकाराम भगव नूसे प्रार्थना

करते है कि हे भगवन्! मै यहाँ (इन चरणोमे) अनन्य अधिकारी कब कैसे बन सकूँगा यह मै नहा जानता पुराणोके अर्थोका जब ध्यान करता हूँ तो ी तड़पने गता है भक्तिके बिना भगवान् न ी मिलने के तुकाराम कहते हैं कि यही बात पुराण बतलाते हैं पुराणोंमे यह प्रसिद्ध है कि असख्य भक्तोंको भगवान्ने उबारा है पुराण बतलाते है कि भगवान् ऐसे दयालु हैं पुराणोके वचन मेरे लिये प्रमाण हैं

इस प्रकार अनेक स्थानोमे तुकारामजीने अपना पुराण प्रेम व्यक्त किया है पुराणोंकी भक्त कथाएँ पढकर तुकाराम तन्मय हो जाते थे इनकी ी उत्कट भगवद्भक्ति मेरे चित्तमे कब उदय होगी यही सोच उनको होता था और वह व्याकु हो उठते थे पुराणोंका अमृतरस पान करते हुए वह प्रेमाश्रुओंसे भीग ते थे ध्रुवकी ध्यानंनिष्ठा देखकर व श्रीविट्ठलरूपके ध्यानमें निमग्न हो जाते थे न म स्मरणसे कितने असख्य भक्त तर गये, यह सोचकर वह और भी अधिक उल्लासके साथ नाम कीर्तनमें नि ज्जित ो ाते थे श्रीमद्भागवतादि पुराणोंके समवलो न ा ऐसा मृदु और मधुर सुसस्कार रामजीके शुद्ध चित्तपर पड़ा नामाचे पवाडे गर्जती पुराणें (पुराण गरजकर नामके गीत गाते हैं) वाले अभगमे कारामजीने यह कहा है कि आदिनाथ र नारद परीक्षित वाल्मीकि आदि नामके अलौकिक रागमें त मय हो गये और म जैसोंको मार्ग दिखा गये अस्तु यहाँतक मलोगोंने यह देखा कि गीता तथा भागवतादि पुराणोंका अध्ययन तुकारामजीके ज्ञानार्जनका कितना बड़ा अङ्ग था

११ विष्णुसहस्रनाम पाठ

भागवतधर्मि ोंमे विष्णुसहस्रनाम भी प लेसे ही हुत प्रिय और मान्य है इसके नित्यपाठकी परम्परा भी बहुत चीन है यह विष्णु

सहस्रनाम महाभारतके अनुशासनपर्वका ४ १ वाँ अध्याय है भगवान्के ध्यानपूर्वक नाम सङ्कीर्तन चित्तशुद्धिका उत्तम उपाय है नाम स्मरण वेदोंमें भी विहित है ऋग्वेदके अन्तिम अध्यायमे यह वचन है मर्ता अमर्त्यस्य ते भूरि नाम मनामहे विप्रासो जातवेदस श्रीमद्भागवतमें तो अनेक स्थानोंमें विशेषकर अजामिलकी कथाके प्रसङ्गसे (स्कन्ध ६ अ २) नाम माहात्म्य बड़े प्रेमसे गाया गया है नाम स्मरणके लिये विष्णुसहस्रनाम बडा अच्छा साधन है ज्ञानेश्वरीमें (अ १२ ९) ज्ञानेश्वर महाराजने यह स्पष्ट उल्लेख किया है कि सहस्रों नामोंकी नौकाओंके रूपमें सजकर मैं ससारके पार पहुँचानेवाला तारक जहाज बना हूँ नामदेवराय के अभगोंमें भी सहस्रनामके बटोहियोंको कन्धेपर चढा लिया ऐसा उल्लेख है गीता और विष्णुसहस्रनामके नित्यपाठकी परिपाटी बहुत प्राचीन है नाम स्मरण भवसागर पार करनेका मुख्य साधन है यह भागवत धर्मका मुख्य उपदेश है भागवतमें सहस्रश यह उपदेश किया गया है गीतामें भी सतत कीर्तयन्तो माम् (अ० ९ १४) यज्ञाना जपयज्ञोऽस्मि' (अ० १० २५) ओमित्येकाक्षर ब्रह्म (अ ८ १३) इत्यादि प्रकारसे नाम स्मरणका निर्देश किया गया है विष्णुसहस्रनाममाला नाम स्मरणके लिये बनी बनायी चीज मिल गयी इससे लोग उसका उपयोग करने लगे और उसका इतना प्रचार हुआ तुकारामजी भी विष्णुसहस्रनामका नित्य पाठ किया करते थे वारकरी सम्प्रदायमें यह बात प्रसिद्ध है कि तुकारामजीने विष्णुसहस्रनामके एक लक्ष पाठ किये तुकारामजीके अभगोंमे ७ ८ बार विष्णुसहस्रनामका नाम आया है

(१) सहस्रनामकी नौकाको ठीक कर लो जो भवसागरके पार करा देती है

(२) षट्शास्त्र चार वेद अठारह पुराणोंकी एकीभूत प्रतिमा स्वरूप इस रामरूपको आँखोंमें भर लो और विष्णुसहस्रनाममन्त्रमाला फेरो

(३) इस्तनमकी प्रत्येक पुकार उत्तरोत्तर अधिकाधिक म देनेवाली है

(४) सहस्रनामका रूप भक्तोंका पक्षपाती है

( ) मेरी पूँजी सहस्रनाममाला है

(६) एक नाम भी जहाँ असीम है वहाँ सहस्र नामोकी माला गूँ डाली

(७) जिसके रूप न आकार वह नाना अवतार धारण करता है उसीने अपने सहस्र नाम रख लिये

(८) सहस्र नामसे पूजा करना कलश ही चढाना है

तुकारामजीका यह कहना है कि विष्णुसहस्रनाम नौकाका मैंने ारा लिया आपलोग भी लीजिये, इससे भव सिंधुको पार कर जाओगे इ सहस्रनामावलिमें श्रीकृष्णके जो केशव पुरुषोत्तम गोविन्द, माधव अच्युत देवकीनन्दन वासुदेव गरुडध्वज नारायण दामोदर मुकुन्द, हरि भक्तवत्सल पापनाशन आदि नाम हैं ये ही तुकारामजीके अभंगोंमें बार बार आते हैं इन नामोपर उन्हे अभंग भी सूझे हैं

( ) धर्मो विदुत्तम

धर्माची तू मूर्ति । पाप पुण्य तुझे हाती

धर्मकी तुम मूर्ति हो पाप पुण्य तुम्हारे हाथमें है

(२) गुप्त कगदाधर

घेऊनिया चक्रगदा । हाची धंदा करीता । १
भक्ता राखे पायापाशीं । दुर्जनासी संहारी २

चक्र और गदा लिये वह यही किया करता है कि भक्तोंको अपने चरणोंके पास रखता और दुर्जनोंका संहार करता है

रा

च गद धर पदका यह विवरण है . दर्शनचक्रसे वह अम्बरीष जैसे भक्तोंको अपने चरणोंके समीप रखत और गदासे क स जैसे दुर्जनोंका सहार करता है

(३) ाशोऽमृ पु

जीवाचें जीवन । अमृताची तनु । ब्रह्मा डभूषण । नारायण ॥ १ ॥

१२ हिम्नादि स्तोत्र ौर सुभाषित

तु ारामजीके अभगोंमें स्कृ श्लो ोंके प्रतिरूप या अनु ाद अ जाते हैं िनसे उनकी बहुश्रु और धारणा क्तिका प लग ा है

( ) विष जगत् विष्णुमय जगत वैष्णवाचा धम ।

(२) ा गायन्ति ि ि ार

माझे भक्त गाती जेथें नारदा मी उभा तेथें १ ।

मेरे भक्त हाँ गाते हैं हे न रद मैं हाँ खड़ा रहता हूँ

(३) र ा न भय

कामातुरा भय लाज ना विचार ।

ामा र ो न भ ै न ल ा न विचार

(४) क्षमा ारे स्य दुज विं रिष्यति

तृणे पतितो हि स्वय ोपश ि

क्षमाशस्त्र जया नराचिये होतीं । दुष्ट तयाप्रति काय करी १

तृण नाहीं तेथें पडला दावाग्नी । जायता विझानी आपसया । २ ।

क्षमा स्त्र जिस मनु यके ाथमें है दुष्र्जन उ का क्य बिगाड़ सकते हैं ज ाँ तृण ी नहीं है व ाँ दाव ग्नि लगकर क्या करेगी ? आप ही बुझ ायगी

(५) मूक रोति च प लङ्घयते ि रिम्

उलंघितें पांगुळ गिरी । मुकें करी अनुवाद ।

(६) तिष्ठा शूकरीविष्ठा गौरव न तु रौरवम्

मानदंभचेष्टा । हे तों सूकराची विष्ठा । १

( ) परोपकार पुण्याय पापाय परपीडनम्

पुण्य परउपकार पाप तें परपीडा ।
आणिक नाहीं जोडा दुजा यासी

पुण्य परोपकार है और पाप परपीड़ा है इसका और कोई जोड़ा नहीं है ।

(८) मृगमीनसज्जनानां तृण सन्तोषविहित वृत्तीनाम्
लुब्धकधीवरपिशुना निष्कारणवैरिणो जगति

काय केलें जळचरीं । ढीवर त्यांच्या घातावरी । १ ।
हाता ठायांचा विचार । आहे यांति नेराकार ॥ध्रु०॥
श्वापदांत वधी । निरपरार्धे पारधी । २ ।
तुका म्हणे खळ । संतां पीडितीं चांडाळ । ३

जलचर बेचारोंने क्या किया जो धीवर उनकी घातमें रहता है ? पर यह ऐसा ही है यह जाति स्वभाव है इसकी देह ही इनके वैरकी है (वैसे ही) व्याध निरपराध मृगोंको मारा करता है (और) तुका कहते है खल जो हैं चाण्डाल वे संतोंको ही सताया करते हैं लुब्धक धीवर पिशुन तीनों दृष्टान्त तुकारामजीने उठा लिये हैं और उन्हे अभंग-वाणीमें क्या खूबीसे बैठाये है

भर्तृहरिके नीतिवैराग्यशतक और आचार्यके पाण्डुरङ्गाष्टक षट्पदी और महिम्नादि स्तोत्र तुकारामजीके अवलोकन और पाठमें रहे होंगे । पाण्डुरङ्गाष्टकमें इस आशयका एक श्लोक है कि भगवान्ने कटिपर जो हाथ रखे हैं वह यह बतलानेके लिये कि भक्तोंके लिये भवसागर कमरके नीचे ही है

अखिल ब्रह्मा में भी वह न समा सकेगी, मेरुकी लेखनी सागरकी स्याही और भूमिका कागज तो पूरा पड़ ही नहीं सकता '

१३ तु[illegible]रामजी [illegible] संस्कृत-ज्ञान

तात्पर्य गीता भागवत कई अन्य पुराण तथा महिम्नादि स्तोत्रोंको तुकारामजीने बहुत अच्छी तरहसे पढ़ा था जिन लोगोंकी यह धारणा हो कि तुकाराम लिखे पढ़े नहीं थे वे आश्चर्य करेंगे तुकाराम जीने भण्डारा पर्वतपर ज्ञानेश्वरी और नाथभागवतादि ग्रन्थोंके अनेक पारायण किये थे वह मराठी बहुत अच्छी तरहसे लिख सकते थे बाल-लीलाके जो अभंग उन्होंने बनाये उन्हें उन्होंने अपने हाथसे लिखा अब वह संस्कृत जानते थे या नहीं और यदि जानते थे तो कितनी जानते थे यह प्रश्न रहा गीता और भागवतके अवतरण देकर उनके साथ उनके अभंगोंका जो मिलान किया गया है उससे यह प्रश्न बहुत कुछ हल हो जाता है समानार्थक अवतरण सैकड़ों दिये जा सकते हैं परन्तु हमने केवल ऐसे ही अवतरण दिये हैं जिनसे यह बात निर्विवादरूपसे स्पष्ट हो जाय कि तुकारामजी मूल संस्कृत ग्रन्थोंको देखते थे और मूलके वचन गुन गुनाते हुए ही कई अभंग उन्होंने रचे हैं तुकारामजीने स्वयं कहा है कि मैंने अक्षरोंपर बड़ा परिश्रम किया पुराणोंको देखा और दर्शनोंमें खोज की इससे यह स्पष्ट है कि मूल संस्कृत ग्रन्थोंको उन्होंने केवल सुना नहीं, स्वयं देखा और पढ़ा था देखनेमें भी अन्तर हो सकता है व्याकरणके नियम चाहे उन्होंने न घोखे हों, उन नियमोंकी उन्हें कोई आवश्यकता भी नहीं थी पर भागवतादि ग्रन्थ मूल संस्कृतमें वह पढ़ते थे और उनका अर्थ समझनेमें उन्हें कोई कठिनाई न होती थी उसके पूर्व उन्होंने किसी उत्तम विद्वान्के मुखसे श्रवण भी किया होगा और उससे संस्कृतके साथ उनका परिचय बढ़ा होगा कुछ लो

यं कहते हैं कि ैराग्य हो निके पश्चात् तुकार मजी कु कालतक पैठणमें रहे वहाँ उ ोंने एक विद्व न् भगवद्भक्तके मुँहसे साथ सम्पूर्ण भागवत नी और पीछे भण्डारा लौग्नेपर उ होंने भागवतके अथ बोधके लिये उसके अने पारायण वि ये भागवतसम्प्रदायके भागवतसहिताके सप्ताह बहुतोंने देखे होंगे अथवा चातुर्मास्यमें भागवतपुराण भी श्रवण किया होगा यह परिपाटी अति प्राचीन है तुकारामजीने भी ताह और पुराण ने होंगे सप्ताहमें अनेक आस्थावान् श्रोता भागवतकी पो ी ामने रखकर शुद्ध पाठ भी किया करते हैं और नित्य पुराण श्रवण करते करते बुद्धिमान् पुरुषोंको ही क्यों ि यों ो भी महत्त्वके अच्छे अच्छे श्लोक क ठ हो जाते हैं कुछ ोगोंका य मत है कि इसी तरहसे तुकार मजीका भी कुछ श्लोक याद हो गये अ यथा सस्कृतका उ हें ो नहीं था पर ऐसा समझ बैठना युक्तियुक्त नहीं है स्वय तुकारामजी ही व क ते हैं कि पुराणोंको देखा दर्शनोंको ढूँढ व हमें उसमें स देह करने ा कोई कारण नहा है पुराणोंको दे ा याने भावार्थ समझनेके लिये मैंने स्वय पुराणोंको पढा और दशनोंको ढूँढा याने शा ग्रन्थोंमें ढूँ खोज की और इनका तात्पर्यार्थ यही समझा कि विठोबाकी णमें जाओ नि नि ासे नाम सकीर्तन करो। तु ारमजीने दो च र बार ो य कहा है कि वेदोंके अक्षर पढनेका मु े अधि ार न ीं इसका भी म जानना ही होग उनके नका अभिप्राय य है कि स तोंके वचन मैंने याद वि ये भागवतके कुछ श्लो और स्तोत्र कण्ठ किये इसी प्रकार यदि मु े वेद-वचन ण्ठ करने ा अधिकार होता ो उपनिषदोंको देखकर उनसे भी नित्यपाठके योग्य वचन सग्र मैं कर लेता शा पुर ण उन्होंने स्वय देखे वेदोंको भी दखते यदि अधिकार होता य ी इसका स्प अभिप्र य है वह तनी सस्कृत जान गये थे कि भागवतादि ग्रन्थों ो मूल में ही देखकर उनक भावार्थ समझ लेते उनकी श्रद्धा और

बुद्धि अ ौ िक थी शास्त्र पुराणोंके भावार्थको तुरत ग्रहण कर लेनेयोग्य उनकी अ त करण प्रवृत्ति थी इस कारण इन ग्रन्थोंको देखते देखते उन ग्रन्थोंका अर्थबोध होने योग्य मस्कृत भाषाका ज्ञान प्राप्त हो जाना उनके लिये कुछ भी कठिन नहीं था शास्त्रों और पुराणोंका रहस्य वि द करनेवाले प्राकृत ग्र थ भी मौजूद थे और उन ग्र थोंको भी उ होंने देखा था इसलिये मूल ग्र थोंको देखकर उनका भावार्थ जान लेना उनके से प्रज्ञा प्रतिभावान् पुरुषके लिये सहज ही था वेद श स्त्र पुराणोंका रहस्य ज्ञानेश्वरी और नाथभागवतमें व्यक्त हुआ था और इन ग्र थोंको तुकाराम जीने अपने हृदयसे लगा रखा था तुकारामजीका अ चार उत्तम ब्राह्मणोंके भी अनुकरण रने योग्य था , देवपूजादिके म त्र उन्हें कण्ठ थे पूजा समाप्त करते हुए म त्रहीन क्रियाहीनम्' इत्यादि कहकर प्रार्थना की जाती है तुकारामजी कहते हैं

असो म त्रहीन क्रिय । नका चर्या विचारू । १ ॥

सेवेमध्यें जमा धरा । कृपा करा सेवटीं । २ ।

कम मेरा मन्त्र न हुआ हो रीत अनरीत जो कुछ हो कुछ मत विचारिये सेवामें इसे जमा करिये और अन्तमें कृपा कीजिये '

भोजन समयमें हरिर्दाता हरिर्भोक्ता इत्यादि कहा करते हैं तुकाराम ीने उ ीको अपनी वाणीमें यों कहा है दाता नारायण स्वय भोगिता आपण । ' तु ारामजीका एक बड़ा ही सु दर अभग है कासयानें पूजा रू के ाराजा' एक बार ऐसा हुआ कि तुकारामजी सब पूजा सामग्री पास रखकर पूजा करने बैठे पूजा आरम्भ भी नहीं होने पायी और तुकारामजीको ध्यान लग गया पूज्य पूजक और पूजा साहित्य यह त्रिपुटी नहीं रही तीनों एकाकार हो गये जिस अभगकी बात कह रहे थे व इसी समयका अभग है यह आचार्यके परा पू ा नाम प्रकरणके भावमें है इससे कु लोग बड़ी अधीरतासे यह ह देते हैं कि तुकाराम

जी मूतिपू क न ीं थे पर इस अभगसे यदि कोई बात साबित होती है तो वह यही कि तुकारामजी बड़े आस्थाव न् और नियमी मूतिपूजक थे और च दन अक्षत फूल धूप दीप दक्षिणा आर ी भजन, नैवेद्यके साथ नित्य श ोक्त रीतिसे भगवान्की प्रतिमाक पू न करते थे नित्यकर्मके वह बड़े पक्के थे जरा भी ढिला‍ई उनमें नहीं थी उन्हींका वचन है कार्ही नित्यनेमाविण अन्न ख य तोचि श्वान (कुछ नित्य नियमोंके बिना ो अन्न खाता है वह कुत्ता है) केवल भ डारेपर जाकर ग्रन्थ पढे एकाक र भगवान्की शाब्दिक प्रार्थना की और रातको गाँवके देवालयमे दो पहर कीतन कर लिया तन ही तुकार मजीका कार्यक्रम न ा था कुलपरम्परागत श्रीपा डुरङ्गकी पू ा भी वह नित्य नियमपूर्वक और अत्यन्त श्रद्ध के साथ करते थे चैत यघन भगव न्की मूर्ति भी चैत यघन है भगवान् सामने खड़े हैं षोड उपचारोंके सा प्रेमपूर्वक उनका पूजन करना परमानन्दप्रद जीव धर्म है ऐसे आन दमग्न होकर व भगवान्की पूजा करते थे पूजामें सब मन्त्र पुराणोक्त ही है भगवान्की पूजा करनेका अधिकार ब जीवोंको है तुकारामजीकी सश्रद्ध सम त्र पूजा उनका पवित्र रहन सहन उनक सस्कृत और प्राकृत भाषाओंके अध्यात्म ग्र थोंक अव ोकन नित्यपाठ और कार्तन यह सब तना आस्थायुक्त था कि ऐसे आचारवान् पुरुष ब्राह्मणोंमें भी बहुत कम मिल सकते हैं बहुजनसमाजपर उनके स चरित्रक बहुत ही अ छा प्रभाव पडा और उनकी भगवद्भक्तिका डका सर्वत्र बजने गा पुराणमत भिमानियोंको तुकारामजीका य यश दु सह होने लगा उनकी ओरसे रामेश्वर भ न मके एक पुरुष तुकारामजीसे लड़ने झगड़नेके लिये आगे ब वह प्रसङ्ग आगे आवेगा तुकारामजीके सस्कृत ग्र थोंके अ य नका यहाँत विच र हुआ अब उनके प्रा त ग्र ाध्ययनकी बा देखें

१४ ज्ञानेश्वरी

ज्ञानेश्वरीके साथ तुकारामजीका कितना गाढ़ा परिचय था यह दिखलानेके लिये ज्ञानेश्वरीके कुछ वचन और साथ ही उनसे मिलान करनेके लिये तुकारामजीके वचन उद्धृत करते हैं

(१) राम हृदयमें हैं पर भ्रान्त जीव बाह्य विषयोंपर लुब्ध होते हैं। ज्ञानेश्वरी (अ० [illegible]) में इनके लिये जोंक और दादुरकी उपमाएँ दी हैं। गौका दूध कितना पवित्र और मीठा होता है और होता भी है कितना पास- त्वचाके एक ही परदेके अन्दर, पर जोंक उसका तिरस्कारकर अशुद्ध रक्तका ही सेवन करती है'' ([illegible]) अथवा कमलकन्द और मेंढक एक ही स्थानमें रहते हैं तो भी कमलमकरन्दका सेवन भौंरे ही करते हैं और मेंढकके लिये कीचड़ ही बचता है ([illegible]) शतचरण अभंगमें तुकारामजीने भी यही दृष्टान्त दिया है- 'नामनिन्दकके लिये भगवान् वैसे ही दूर हैं, जैसे जोंकके लिये दूध।''

(२) ज्ञानेश्वरी अ० १२ [illegible] ० में यह ओवी है कि 'सहस्रों नामोंकी नौकाओंके रूपमें सजकर मैं संसारमें तारक बना हूँ।' तुकारामजीका अभंग है कि सहस्र नामोंकी नौकाको ठीक कर लो जो भवसिन्धुके पार ले जाता है।'

([illegible]) बीज फूटकर पेड़ होता है, पेड़ गिरकर बीजमें समाता है। (ज्ञानेश्वरी १७ [illegible]) तुकाराम कहते हैं पेड़ बीजके पेटमें और बीज पेड़के अन्तमें

(४) पण्डित बालकका हाथ पकड़कर स्वयं ही अच्छे अक्षर लिखता है (ज्ञाने० १२ ३०८) तुकाराम बच्चेके लिये गुरुजी ही पटिया अपने [illegible] में लेते हैं

(५) सूर्यके तेजके सामने जुगुनूकी चमक क्या ? (ज्ञाने० १ ६७) तुकाराम सूरजके सामने जुगुनू पुट्ठे दिखाते

(६) 'अखिल जगत् महासुखसे तन ाता है (ज्ञाने ९ ५ ०) तुका कहता है, अखिल जगत् भगवान्‌से तन गया है उसीके गीत गाओ यही काम बाकी है '

(७) यहाँ वे ही लीलामात्रसे (अनायास) तर गये जि होंने मेरा भजन किया उनके लिये मायाज इसी पार समाप्त हो गया (ने ७ ,७) तुकाराम मुखसे नारायण नाम गाने लगे तब भव बन्धन कहाँ रहा ? भव सिन्धु तो इसी पार समाप्त हो जायगा

(८) स त ज्ञानके देवालय है सेवा उसक द्वार है इसे दखल कर । (ज्ञाने० ४ १६६) तुकाराम स तोंके चरणोंमें चुपचाप पड़े रहो

(९) देवता भाट बनकर मृत्युलोककी स्तुति करने लगते हैं (ज्ञाने ६ ४५६) तुकाराम स्वर्गके देवता यह इच्छा करते हैं कि मृत्युलोकमें हमारा ज म हो

(१) इन्द्रियाँ आपसमें कलह करने लगेंगी (ज्ञाने ६ १६) तुक राम मेरी इन्द्रियोंमें परस्पर कलह लगी

(११) अपने ही रीरके रोम कोई नहीं गिन सक । वैसे ही मेरा विभूतियाँ असख्य हैं (ज्ञाने १० २१) तुकाराम विराट्के शरी में वैसे ही, गिनने लगें तो अगणित के हैं

(१२) मेरी जिससे प्राप्ति हो वही शुद्ध पु य है (ज्ञाने ९ ३१६) तुकाराम जि मे नारायण हैं वही शुद्ध पु य है

(१३) उस अनन्यगतिसे मेर प्रेम है (१ १३७) तुक राम नारायण अन यके प्रेमी है

(१४) जब गर्भिणी ीको परोसा गया तभी गर्भवासी अर्भककी तृप्ति हुई (ज्ञाने० १३ ८४८) तुकाराम माताकी तृप्तिसे ही गर्भस्थ बालक तृप्त होता है

(१) अपनी को स्वत त्र इच्छा न रखकर भगवान्‌की इच्छाके अनुकूल ो जाय यह बतलाते हुए ज्ञा ेश्वरजी जलका दृष्टा त देते हैं माली जलको जिधर ले जाता है जल उधर ही शान्तिके साथ जाता है वैसे ही तुम बनो ।' तुकारामजी कहते है 'जल जिधर ले जाइये उधर ही जाता है, जो कीजिये वही हो जाता है राइ याज और ऊख एक ही जलके भिन्न भिन्न रस हैं ।'

ज्ञानेश्वरजीके दृष्टान्तको यहाँ तुकारामजीने और भी मधुर और विशद कर दिया है उपाधि-भेदसे रा (तामस), प्याज (राजस) और ऊख (सात्त्विक) मे जल त्रिविध होनेपर भी जल तो एक ही है जलकी जैसी अपनी कोइ इच्छा या आग्रह नहीं वैसे ही मनुष्यको निष्काम होना चाहिये

(१६) नवें अध्यायमे गुह्य ज्ञान बतलाते हुए ज्ञानदेव सञ्जयकी खावस्था वर्णन करते हैं

(श्रीकृष्णार्जुनसवादमे) चित्त मगन होकर स्थिर हो गया णी जहाँ की तहाँ स्तब्ध हो गया, आपादमस्तक सारा शरीर रोमाञ्चित हो उठा आँखे अधखुली रह गयी और उनसे आनन्दजल बरसने गा और अ दर आन दकी जो लहरे उठीं उनसे बाहर शरीर काँपने लगा (५२७,५२८) ऐसे महासुखके अलौकिक रससे जीवदशा नष्ट होने लगी (५३)

तुकाराम कहते हैं

स्थिरावली वृत्ति पांगुळला प्राण ।
अंतरींची खूण पावुनिया ॥ १ ॥
पुजाळले नेत्र जाले अर्धोन्मीलित ।
कंठ सद्गदित रोमांच आले ॥ ॥
चित्त चाकाटलें स्वरूपामाझारी ।
न निघचि बाहेरी सुखावलें ॥ २ ॥
तुका म्हणे सुखें प्रेमेसी डुल्लत ।
विराला निश्चित निश्चिताने ॥ ३ ॥
(स्थिर हुई वृत्ति, रुद्धगति प्राण ।
निज पहिचान, जब पायी ॥ १ ॥
आस्फालित नेत्र, हुए अर्धोन्मीलित ।
कंठ गद्गदित, रोमहर्ष हु ॥
चित्त सुचकित, स्वरूप निमग्न ।
कहं न गमन, ऐसा सुखी ॥ २ ॥
तुका कहे प्रेम सुखसे डोलत ।
निमुक्त निश्चित, निश्चित हो ॥ ३ ॥)

(१७) संसारमें रहते हुए अपना अक्रियत्व कैसे जाना जाय यह बतलाते हुए ज्ञानेश्वरजीने बहुरूपिये (अ० ३ १७६) और स्फटिकका दृष्टान्त (अ० १ . २४ .) दिया है ये दोनों दृष्टान्त तुकारामजी 'नटनाट्य अवघें संपादिलें सोंग' (नटनाट्य सारा रचाया स्वाँग) इस अभंगमें एकत्र ले आये हैं

(१८) फूलोंकी सेजपर सुखकी नींद । (ज्ञानेश्वरी) खटमलकी चारपाईपर सुखकी कल्पना (तुकाराम) ।

(१९) अद्वैतानुभवसे देह भाव छूटनेपर देहके रहते हुए भी देहसे अलग होनेके भावको प्राप्त होनेपर कर्म बाधक नहीं होता। ज्ञानदेव इसपर मक्खनका दृष्टान्त देते हैं। दही मथकर जब उसमें मक्खन निकाल लिया जाता है तब वह मक्खन छाछमें डालनेसे किसी प्रकार भी नहीं मिल सकता। इसी बातको तुकारामजी यों कहते हैं कि 'दहीसे मक्खन जब अलग कर लिया तब दोनों एक दूसरेमें मिलाये नहीं जा सकते।'

(२०) प्यासा प्यासको ही पी जाये, भूखा भूखको ही खा जाय (ज्ञा० ४-६३) तुकाराम प्यास प्यासको पी गयी, भूख भूखको खा गयी।

(२१) सब प्राणी मेरे ही अवयव हैं, पर माया योगसे जीवदशाको प्राप्त हुए हैं (ज्ञाने० ७ ६६) तुकाराम एक ही देहके सब अङ्ग हैं जो सुख दुःख भोगते भुगताते हैं।

(२२) गीताके 'अनित्यमसुखं लोकमिमं प्राप्य भजस्व माम्' (अ ९ ३३) इस श्लोकपर ज्ञानेश्वरी टीका (४८९—५०७) और तुकारामजीके 'बरे या जनाचें थोर वा आश्चर्य वाटत। विषयवदां भुलले जीव' ये दो अभंग मिलाकर पढ़नेसे यह बहुत ही अच्छी तरहसे ध्यानमें आ जाता है कि तुकारामजीके विचारोंपर ज्ञानेश्वरीके अध्ययनका कितना गहरा प्रभाव पड़ा हुआ था। ये जीव भगवान्‌को क्यों नहीं भजते, किस बलपर उन्मत्त होकर विषय भोगमें पड़े हुए हैं इनकी इस दशापर ज्ञानेश्वर तुकाराम दोनोंको ही बड़ी दया आयी है

ज्ञा० अरे, ये मुझे न भजें ऐसा कौन-सा बल इन्हें मिल गया है, भोगमें ऐसे निश्चिन्त होकर कैसे पड़े हैं (४९३)

तु० इनमें कौन सा ऐसा दम है जो अन्तकालमें काम दे। किस भरोसे ये निश्चिन्त हैं? यमदूतोंको वे क्या जवाब देंगे?

ज्ञा० विद्या है या वयस् है इन प्राणियोंको सुखका कौन सा ऐसा बल भरोसा है जो मुझे नहीं भजते ? (४९४) जितने भी भोग हैं वे सब एक देहके ही सुख साधनमें लगे हैं और देहका यह हाल है कि यह कालके मुँहमें पडी हुई है (४९५)

तु० ससारमें कालका कलेवा बनकर कौन सुखी हुआ है ?

ज्ञा० जहाँ चारों ओर दावानल धधक रहा था वहाँसे पाण्डव कैसे न बच निकलते ? ये जीव इतने उपद्रवोंसे घिरे हुए हैं तो भी कैसे मुझे नहीं भजते ?

तु० क्या ये जीव मृत्युको भूल गये इन्हें क्या चसका लगा है ? बन्धनसे छूटनेके लिये ये देवकीनन्दनको क्यों नहीं याद करते ?

(२०) चाहे कोई कितना ही दिमाग खर्च करे वह चीनीसे फिरसे ऊख नहीं बना सकता वैसे ही उसे (भगवान्‌को) पाकर कोई जन्म मृत्युके इस चक्करमें नहीं पड सकता (ज्ञा० ८ २ २)

तु० —साखरेचा न है ऊँस । आम्हा कैंचा गर्भवास ? १

चीनीका जब फिरसे ऊख नहीं बनता तब हमें गर्भवास कैसे हो सकता है

(२४) भगवान्‌के गुण गाते गाते वेद मौन हो गये और शेषनाग भी थक गये ज्ञानमें वेदोंसे भी बड़ा कोई है ? या शेषनागसे भी बड़े और कोई बोलनेवाले हैं ? पर वह शेषनाग भी शय्याके नीचे जा छिपते हैं और वेद नेति नेति कहकर पीछे हट जाते हैं यहाँ तो सनकादि भी बौरा गये (ज्ञा० ने० ९ २७० ७१)

तु० त्याचा पार नाहीं कळला वेदासी ।
आणिकही ऋषी विचारिता ।
सहस्रमुखें शेष शिणला बापुडा ।
चिरल्या घडा जिह्वा त्याच्या ।

(आणि) शेष स्तुती प्रवर्तला ।
जिह्वा चिरूनी पलग झाला ।। १ ।।

वेदोंने उनका पार न । पाया ऋषि भी विचारते ही रह गये सहस्रमुख शेष बेचारे थक गये उनके धड़की जिह्वाएँ बन गयी तो भी पार नहीं पा स और शेष स्तुति करते क ते जिह्वा चीरकर पर्यंक गये

(२१) ज्ञानेश्वरीमे (अ ६ ७ से ७८ तक) यह वर्णन है कि देहाभिमानी जीव किस प्रकार शुकनलिका यायसे आप ही अपने पैर अटकाकर अ त्मघा करता है इस शुकनलिका यायपर कारामजी हते हैं

आपही तारक, आपही मारक । आप उद्धार , अपना र ॥
शुकनलिन्याय, फासा आपही आप । देखता स्वरूप मक्त नीघ ॥

य जीवात्मा आप ही अपना तारक, आप ही अपना मारक है आप ही अपना उद्धार है रे मुक्त जीव ! जरा सोच तो सही कि शुकनलि । न्यायमे तू कहाँ अटका हुआ है

(२६) बड़ोंके हाँ छोटे बड़े सभी एक-सा भोजन पाते हैं (ज्ञाने० १८ ४८)

तु समर्थां मी नाहा वर्णावर्ण भेद । सामग्री ते सिद्ध मरे घरी । १

न म्हण सुहृदसोयरा आवश्यक ।
राजा आणि रक सारिखचि ॥ २ ।

सम ोंके यहाँ वणावर्ण भेद नहीं होता सिद्धोंके यहाँ सभी सामग्री सिद्ध ही होती है वहाँ अपने सगे-सम्बन्धियोंकी बात नहीं है क्योंकि रा और रक सभी वहाँ समान

११ एक पुरानी पोथी

यहाँतक लिख चुकनेके पश्चात् देहूमें एक पुरानी पोथी ऐसी मिली जिसमें ज्ञानेश्वरीके बारहवें अध्यायकी ओवियाँ और उनमेंसे कई ओवियोंके नीचे उन्हीं अर्थके तुकारामजीके अभङ्ग लिखे हुए थे बारहवें अध्यायमें सगुण भक्तिका उत्तम प्रतिपादन है और इस कारण वारकरी सम्प्रदायमें इसकी विशेष मान्यता है यह पोथी तुकारामजीके ही खानदानमें उनके किसी पोते परपोतेने लिखी होगी सम्पूर्ण पोथी यहाँ उद्धृत करना असम्भव है तथापि नमूनेके तौरपर दो चार अवतरण यहाँ देते हैं

१ ज्ञा० व्यक्त और अव्यक्त, निःसंशय तुम्हीं एक हो भक्तिसे व्यक्त और योगसे अव्यक्त मिलते हो (२३)

तु०—जो कोई जैसा ध्यान करता है दयालु भगवान् वैसे बन जाते हैं सगुण निर्गुणके नाम तो ईश्वर ये चरण धरे हैं

योगी लखकर जिसका आभास पाते हैं वह हमे अपनी दृष्टिसे सामने दिखायी देता है

२ ज्ञा० एकदेशीय स्वरूप और सर्वव्यापक स्वरूप दोनों समान ही हैं (२५)

तु० म्हाण विठ्ठल ब्रह्म नव्हे । त्याचें बोल नाईं कावे

जो कहता है कि विठ्ठल ब्रह्म नहीं हैं वह क्या कहता है यह सुननेकी जरूरत नहीं

३ ज्ञा० जो ॐकारके परे है वाणीके लिये जो अगम्य है (३१)

तु० यदि मैं स्तुति करूँ तो वेदोंसे भी जो काम नहीं बना वह मैं कर सकता हूँ? पर इस वैखरीको उस सुखका चसका लग गया है रसना वही रस चाहती है

४ ज्ञा कर्मेन्द्रियाँ सुखपूर्वक उन अशेष कर्मको करती रहती हैं जो वर्णविशेषके भागके अनुसार प्राप्त होते हैं (७९) और भी जो जो कायिक वाचिक मानसिक भाव है उन सबके लिये मेरे सिवा और कोई ठौर ठिकाना नहीं है (८०)

तु अपने हिस्सेमें जो काम आया वही करता हूँ, पर भाव मेरा तेरे ही अंदर रहे शरीर शरीरका धर्म पालन करता है पर भीतरकी बात रे मन तू मत भूल

*

कहीं किसी औरका प्रयोजन नहीं सब जगह मेरे लिये तू ही तू है तन वाणी और मन तेरे चरणोंपर रखे हैं अब हे भगवन् और कुछ बचा न देख पडता

५ ज्ञा अभ्यासके बलसे कितने अन्तरिक्षमें चलते हैं, कितनोंने व्याघ्र और सर्पके स्वभाव बदल डाले हैं (१११) अभ्याससे विष भी पच जाता है समुद्रपर भी चला जा सकता है कितनोंने तो अभ्यासके बलसे वेदोंको भी पीछे छोड़ दिया है (११२) इसलिये अभ्यासके लिये तो कुछ भी दुष्कर नहीं है इसलिये अभ्याससे तुम मेरे स्थानमें आ जाओ (११३)

तु अभ्याससे एक एक तोला बचनाग खा जाते हैं दूसरोंसे आँखों देखा नहीं जाता अभ्याससे साँपको हाथमें पकड़ लेते हैं दूसरे देखकर ही काँपने लगते हैं आयाससे असाध्य भी साध्य हो जाता है, इसका कारण तुका कहता है कि अभ्यास है

१६ एकनाथ महाराजके ग्रन्थ

अब एकनाथ महाराजके ग्रन्थोंसे तुकारामजी कितना घनिष्ठ परिचय था यह देखा जाय एकनाथी भागवत भावार्थरामायण फुटकर

अभङ्ग इत्यादि साहित्य बहुत बडा है नाथ भागवत और अभङ्ग ही तुकारामजीके पाठ और अवलोकनमे विशेषरूपसे रहे होंगे अन्त प्रमाणके लिये अनेक अवतरण दिये जा सकते हैं पर अधिक विस्तार न करके कुछ ही प्रमाण यहाँ देते है

(१) मेरे भक्त जो घर आये वे सब पर्वका ही द्वारपर आये ऐसे तीर्थ जब घर आते हैं वैष्णवोंके लिये वही दसमी दिवाली है (नाथ भागवत ११ १२६६)

सन्त जब घर आते हैं तब दसरा दिवालीका सा आनन्द मिलता है यह अनुभव तो सभीको है पर इस अनुभवको मूर्तरूप प्रदान किया एकनाथ महाराजने उन्होंने एक अभङ्गमें भी कहा है

आजी दिवाळीदसरा । श्रीसाधु सत आले घरा ॥ १ ।

आज ही दिवाली और दशहरा है श्रीसाधु सन्त जो घर पधारे हैं

तुकारामजीके अभङ्गका यह चरण तो अत्यन्त लोकप्रिय है

साधु सत येती घरा । तोची दिवाळी दसरा । १ ।

साधु सन्त घर आये वही दशहरा दिवाली है

(२) आत्मबोधके लिये वैसी छटपटाहट हो जैसे जलके बिना मछली छटपटाती है (ना० भा० ७ २२)

तु जीवनावेगळी मासोळा । तुका तैसा तळमळी

जलके बाहर मछली जैसे छटपटाती है तुका भी वैसे ही छटपटाता है

(३) 'सत आधी देव मग' (एकनाथ)

पहले सन्त पीछे देव ।

देव सारावे परते । सत पूजावे आरते । १ (तुकाराम)

देवताओंको परली तरफ कर दे पहले सन्तोंको पूजे

(४) राडवा केलें काजळकुंकू । देखोनि जग लागे थुंकूं।

(ना० भा० ११ १६७)

राँडका काजर लगाना माँग भरना देखकर संसार उसपर थूकता है।

कुंकवाची उठाठेव । बाळकाबाई काशाला ?   (तुका०)

राँड को सिंदूर लेकर क्या करना है ?"

(५) लब्ध्वा जन्मामरप्रार्थ्यं मानुष्यम्।

(श्रीमद्भा० ११ २३ २२)

श्रीमद्भागवतकी इस कल्पनाको एकनाथजीने (अ) और फैलाया है —

याळागीं नरदेह निधान । जेणें ब्रह्मसायुज्यीं घडे गमन ।
देव वांछिती मनुष्यपण । देवाचें स्तवन नरदेहा ।२१९।
मनुष्यदेहींचेनि ज्ञानें । सच्चिदानंदपदवी घेणें ।
एवढा अधिकार नारायणें । कृपावलोकनें दीधला ।२२

इसलिये नर देह ऐसा स्थान है कि जिससे ब्रह्म सायुज्यकी गति मिलती है। इसीलिये देवता मनुष्य जन्म चाहते हैं और नर देहकी स्तुति करते हैं (२१९) मनुष्यदेहमें ही वह ज्ञान प्राप्त हो सकता है जिससे वह सच्चिदानंद पदवीको प्राप्त करे। नारायणने अपनी कृपा दृष्टिसे (नर देहको) इतना बड़ा अधिकार दे रखा है।

तुकारामजी कहते हैं

इहलोकींचा हा देह । देव इच्छिताती पाहे । १
धन्य आम्ही जन्मा आलों । दास विठोबाचे झालों ।ध्रु०
आयुष्याच्या या साधनें । सच्चिदानंदपदवी घेणें । २
तुका म्हणे पाठवणी । करूं स्वर्गींची निशाणी । ३ ।

इहलोककी यह देह देखो देवता भी चाहते हैं इस देहमें जन्म मिलनेसे हम धन्य हुए जो श्रीविट्ठलके दास हुए इसमें जो आयु मिली है वह सच्चिदानन्द पदवीको प्राप्त करनेका साधन है स्वर्गकी पताका तुका कहता है कि भेंटमें भेजी जायगी

(६) केवळ जीं अपवित्र। रिसें आणि वानरें।
त्या पूजिला गौळियाची पारें। ताकपिरें रानटें
(न भा १४ २९०)

रीछ और बन्दर जिनमें कोई पवित्र। नहीं और छाछ पीनेवाले असभ्य ग्वाल बाल इनका मैंने पूजन किया'

गौळियांची ताकपिरें। कोण पोरें चांगलीं? (तुकाराम)

ग्वालोंके छाछ पीनेवाले बच्चे कौन से बड़े अच्छे हैं

(७) चौपड़के खेलमें गोटीका मरना और जीना जैसा है ज्ञानीकी दृष्टिमें जीवोंका बन्ध मोक्ष भी वैसा ही है

सारी कौन सी मरे पीछे अपने पुण्यबलसे वैकुण्ठधाम पहुँचती है? और कौन नरक सङ्कटमें गिरती है? बद्ध मुक्तकी बात ही मूल मिथ्या है' (नाथभागवत ९, ७६८)

सारी जीयी मरी, खोटी बात सारी।
बद्ध मुक्त वारी बात कोरी (तुकाराम)

सारी मरी जीयी यह बात झूठी है वैसे ही बद्ध मुक्त होनेवाली बात भी तुका कहता है कि कोरी बात ही है

(८) क्या गृहाश्रममें भगवान् नहीं हैं? तब वनमें पागल होकर क्यों भटकते हैं वनमें यदि भगवान् होते तो हरिन खरगोश बाघ क्यों न तर जाते आसन मारकर ध्यान लगानेसे यदि भगवान् मिलते तो मुर्दोंका क्षणमात्रमें उद्धार क्यों न होता? एकान्त गुफामें रहनेसे

यदि भगवान् मिलते तो चूहे तरनाकोइ घर घर चाचा क्यों करते रहते ?
(नाथभागवत अ ५)

कहा साप खाता अन्न । करे क्या ध्यान, बक भी ? ।१।
कपट भरा भीतर । भरा उदर, मत्सर ।।ध्रु ।
करे चूहा भी एकांत । गदहा भी भभूत, रमावे ? ।२।
तुका जल नक्रालय । काग भी नहाय, कहो ता ? ।३
(तुकाराम)

क्या साँप अन्न खाता है ? (नहीं, वायु भक्षण करके ही रहता है) और बकजी कैसा ध्यान करते हैं इनके भीतर केवल कपट भरा है, पेटमें बुराई भरी है चूहा भी बिलमें एकांतमें रहता है गदहा भी सर्वाङ्गमें भभूत रमा लेता है। जलमें ही घड़ियाल रहता है। कौआ जल स्नान करता है पर इससे क्या ? इनके भीतर कपट भरा हुआ है, पेटमें बुराई भरी हुई है। इससे इनका कोई साधु या परमार्थके संबंध नहीं होता वायु भक्षण ध्यान, एकान्तवास, भस्म लेपन जलमें बैठकर या खड़े होकर अनुष्ठान या स्नान ये सब ईश्वर प्राप्तिके साधन हैं सही पर इनको करते हुए भी यदि बुद्धि निर्मल न हो तो इनसे कोई लाभ नहीं हो सकता

(९) अद्वैत भक्ति और अभेद भक्तिके भाव और शब्द ज्ञानेश्वरीमें हैं इसी भक्तिको एकनाथने मुक्तीवरी भक्ति' (मुक्तिके ऊपरकी भक्ति) कहा है नाथ भागवतमें ये शब्द दस पाच बार आये हैं (अ , ओवी ७१ से ८१० तक) इसी 'मुक्तिके ऊपरकी भक्ति उल्लेख कारामजीके एक अभङ्गके एक चरणमें है

मुक्तीवरील भक्ति जाण । अखंड मुखीं नारायण

मुखमें अखण्ड नारायण-नाम ही मुक्तिके ऊपरकी भक्ति जानो ?

(१०) देहको मिथ्या कहके त्यागोगे । तो मोक्ष सुखसे पाओगे ।
इसे अच्छा जानके भोगोगे । तो अवश्य जावोगे नरकको ।
इसलिये इसे न त्यागे न भोगे । बीचोबीच विभागे ।
आत्मसाधनमें यह लगे । स्वभावमें परम स्वहितार्थ ।
(नाथभागवत अ० ९ । २५२ २५३)

देहको घृणित समझ कर त्याग दें तो मोक्ष सुखसे ही वञ्चित होना पड़े, यदि इसे अच्छा समझ कर भोगें तो सीधे नरकका रास्ता नापना पड़े। इसलिये इसे न त्यागे न भोगे, मध्यभागमें विभाग करे, इसे निज स्वभावसे आत्महितके लिये आत्मसाधनमें लगावे।

देहको सुख न देवे भोग । न देवे दुःख, न करे त्याग ।
देह न हीन न है उत्तम । तुका कहे तुम, करो हरि भजन ॥
(तुकाराम)

शरीरको सुखभोग न दे, दुःख भी न दे, उसका त्याग भी न करे। शरीर न बुरा है न अच्छा है। तुका कहता है, इसे जल्दी हरि-भजनमें लगाओ।

नाथका भावार्थरामायण भी तुकारामजीने देखा था, इसमें सन्देह नहीं। भावार्थरामायणसे दो अवतरण लेते हैं।

(११) वैराग्यकी बातें तभीतक हैं जबतक कोई सुन्दर स्त्री नेत्रोंके सामने नहीं आयी है। (भावार्थरामायण अरण्य अ० ३)

वैराग्यकी बातें बस तभीतक हैं जबतक किसी सुन्दर स्त्रीपर दृष्टि नहीं पड़ी। (तुकाराम)

(१२) श्रीरामनामके विना जो मुख है वह केवल चमकुण्ड है, भीतर जो जिह्वा है वह चमड़ेका टुकड़ा है। (भा० रामायण)

'जिसके मुँहमें नाम नहीं वह मुँह चमारका कुंडा है।' (तुकाराम)

नाथ और तुकराम दोनोंके ी अभगोंके सग्रह प्रसिद्ध हैं नाथके अभगोंका पाठ और अध्ययन तुकारामजीने किया था और इसका तुकारामजीके चित्त और वाणीपर बड़ा प्रभव पड़ा था नाथ और तुकारामजीकी कु उक्तियाँ मिलाकर देखें पहले नाथकी उक्ति देते हैं पीछे तुकारामजीकी पाठक इसी क्रमसे दोनोंको मिलाकर पढ़ें

(१) एक सद्गुरुकी ही महिमा गाया करे, अन्य मनु योंकी स्तुति कुछ काम न देगी

एक विट्ठलकी ही महिमा गाय करे मनुष्यके गी न गाये।

(२) चितनासी न लगे वेळ। कांहीं तया न लगे मोल

वाचे सदा सर्वकाळ। रामकृष्ण हरी गोविंद ।१

चिन्तनके लिये कोई समय नहीं गता उसके लिये कु मूल्य नहीं देना पड़ता सब समय ही 'राम कृष्ण हरि गोविन्द' नाम जिह्वापर बना रहे

चितनासी न लगे वेळ। सर्व काळ करावें।

चिन्तनके लिये कुछ समय नहीं चाहिये सब समय ही करता रहे

(३) सदा राम कृष्ण हरि गोविन्द का चिन्तन करो यही एक सत्य सार है व्युत्पत्तिका भार केवल यर्थ है

—यही एक सत्य सार है व्युत्पत्तिका भार बेकार है

(४) द्रव्य लेकर जो कथा कीर्तन करते हैं वे दोनों ही नरकमें जाते हैं

कथा कीर्तन करके जो द्रव्य देते या लेते हैं वे दोनों ही नरकमें जाते हैं

(५) गीता और भागवतपर एकनाथ और तुकाराम दोनोंका ही असीम प्रेम था दोनोंने ही नाम स्मरणका उपदेश दिया है और दोनोंके हृदयमें हरिहरैक्यभाव था

आयुष्यअतवरी नाम स्मरण । गीताभागवत चें श्रवण
त्रि गुशिवमूर्तिचें ध्यान । हेंचि दणें सर्वथा

जबतक जीवन है तबतक नाम स्मरण कर गीता भगवत श्रवण करे और हरि रमूर्तिका ध्यान करे

गीताभागवत करिता श्रवण । आणिक चिंतन विठोबाचें॰

गीता भागवत श्रवण करते है और विठ ब क चिन्तन करते हैं ›

(६) आपके नाम ी महिमा २ पुरुषोत्तम मैं नहीं समझ प ।
आपके नामकी महि मा इ पुरुषोत्तम मैं नहीं सम पाता

(७) कर्माकर्मके फेरमें म पड़ो मैं भीतरी ब त बतलाता हूँ श्रीरामका नाम अट्ट । के स थ उच्चारो

धर्मको जो समझते हैं और जो नहीं समझते सब नो मैं र स्य । बात बतलाता हूँ मेरे विठोबाके नाम अट्ट ासके थ उच्चारो

(८) स्त्रीके अधीन होकर पुरुष स्त्रैण न बने उसके इशारेपर नाचकर अपना परमार्थ ो न दे एकनाथ और तुकाराम दोनोंका यही उपदे है

ीके अधीन जि । जी न हो जाता है उस अ मको नरकमें जाना पड़ता है स्त्री । रुख देखकर वह चलता है और किसीकी बा उसे अच्छी नहीं ग ी (एकनाथ) ीके अधीन ि सका जीवन होता है उसको दे नेसे भी असगुन होता है ये ब जन्तु ससारमें न जाने किसि ये मदारीके बन्दरकी तर ीते हैं ीकी मनोवाञ्छाको ही ो त्य म ता है वह त्रैण सचमुच ही पूरा अभागा है (तुकाराम)

यहाँ मदारीके ब दर' की बात पढकर ाने-वरीकी वह ओवी याद आती है जिसमें कहा है स्त्रीके चित्तका ो आराधन करता है उसीके रुखपर नाचता है मदारीका बन्दर जैसा है (अ १३ ७९३)

(१) हरि हरके अभेदके सम्बन्धमें दोनोंके ही अभङ्ग देखने योग्य हैं एकनाथके तीन अभङ्गोंका एक एक चरण लेनेसे तुकारामजीका एक अभङ्ग बनता है

हरिहरा भेद । नका करूँ अनुवाद
धरिता र भेद । अधम तो जाणिजे ।१।

यह एक अभङ्गका प्रथम चरण है दूसरे एक अभङ्गका तीसर चरण ऐसा है

गोडीसी साखर साखरसी गोडी ।
निवडिता अर्थघडी दुजी नव्हे

एक तीसरे अभ का चरण इस प्रकार है

एका वलांगीची आढी । मूर्ख नेणती बापुडी ।१

इन तीनों चरणोंका भाव यह है कि हरि और हरमें भेदकी कल्पना कर उसका फैलाव मत करो जो ऐसा भेद धारण करेगा उसे अधम समझो । मिठासमें चीनी है और चीनीमें मिठास है अर्थको विचारो तो चीज एक ही है

एक आडीकी ही आड है इस बातको मूर्ख बेचारे नहीं जानते

इन तीनों चरणोंमें जो भाव हैं वे तुकारामजीके जिस अभङ्गमें एकीभूत हुए हैं उस अभङ्गको अब देखिये

हरिहरा भेद । नाहीं नका करू वाद १
एक एकाचे हृदयीं । गोडी साखरचे ठायी ।ध्रु
भेदकासी नाड । एक वेलांटी च आड २
उजवा वाम भाग । तुका म्हणे एकचि अंग २

हरि हरमें भेद नहीं है झूठमूठ वाद मत करो दोनों एक दूसरेके हृदयमें हैं जैसे मिठास चीनीमें और चीनी मिठासमें है भेद

करनेवालोंकी दृष्टिके जो आड़े आती है व. एक आड़ीकी ही आड़ है दाहिना और बायाँ दो थोड़े ही है अङ्ग तो एक ही है

(१) देव उभा मागें पुढें । वारी साकर्ने भक्तांचें (एकनाथ)

भगवान् आगे पीछे खड़े ससारका सकट निवारण करते हैं

देव उभा मागें पुढें । उगवी काढें सकट (तुका)

भगवान् आगेपीछे ड़े सकटसे उबारते हैं

(११) सद्गुरु महिमाके विषयमे एकनाथ महाराज हते हैं

उनके उपकार कभी उतारे नहीं जा सकते प्राण भी उनके चरणोंपर रख दूँ तो यह भी थोड़ा है

स त स्तवनमे तुकाराम महाराज कहते हैं

इनसे उऋण ोनेके लिये इन्हे क्या देना चाहिये य ाण भी चरणोंपर रख दूँ तो थोड़ा है

(१२) पण्ढरीका वह वारकरी ध य है उसका ज म धन्य है जो नियमपूर्वक पण्ढरी जाता है और वारी टलने नहीं देता ( )

पढरीचा वारकरी । वारी चुकों नेदी हरी (तुका)

प ढरीका वारकरी वारी और हरीको नहीं भूलता

(१३) दोंचि अक्षरांचें काम । वाचे म्हणा रामनाम (ए)

(दो ही अक्षरोंका काम । वाचा कहो राम नाम)

दोंचि अक्षरांचें काम । उच्चारावा रामराम (तु ।)

(दो ही अक्षरोंका काम । उचारो श्रीराम राम ।)

(१४) बार बार लोगोंसे कहता हूँ,

सबसे यही दान माँगता ह ।

बार-बार यही कहता हूँ

जगतसे यही दान माँगता हूँ (एक)

(१५) भागवत सम्प्रदायमें हरि ९रका समान प्रेम है और एकादशी था सोमवार दोनों ही व्रतोंका पालन विहित है

जो सोमवार और एकाद ी व्रत रहते हैं उनके चरण मैं अपने मस्तकसे वन्दन करूँगा शिव विष्णु दोनों एक ही प्रतिमा है ऐसा जिनका प्रेम है उ हे वन्दन करूँगा (एक०)

एकादशी और सोमवारका व्रत जो नहीं पालन करते उनकी न जाने क्या गति होगी (तुका०)

(१६) जो मुझे नाम और रूपमे ले आये उन्होंने मुझपर बड़ी कृपा की हे उद्धव ! उन्होने मुझे यह सुगम मार्ग दिखाया (एक)

(भगवान्) नाम रूपमें आ गये ९ससे सुगम हो गये (तुका०)

(१७) कही क ी ऐसा जान पड़ता है कि एकनाथ महाराजके अभङ्गका मनन करते हुए कहो उनकी ७क्तिकी पूत्तिके तौरपर और कहीं प्रेमसे उनकी बातका उत्तर देनेके लिये तुकारामजीने अभङ्ग रचे है एकनाथ महाराजका एक अभङ्ग है देवाचे ते आप्त जाणावे ते सत (भगवान्के जो आप्त हैं वे ही स त है) ९सी अभङ्गकी मानो पूर्तिके लिये तुकारामजीने 'नव्हती ते सत रिता कवित्व (सन्त वे नहा हैं जो कविता करते हैं) इत्यादि अभङ्ग रचा है । बा गावाईका मू सर्वसग्रहगाथा' मुझे शिऊरमे उनके वशजोंके पाससे मिला उसमे बीचहीमें एक प नेपर एकनाथ महाराजका ब्रह्म सवगत दा सम इत्यादि अभङ्ग लिखा हुआ था । इस अभङ्गका ध्रुवपद है ऐसे ासयानें भेटती ते साधु' (ऐसे महात्मा कैसे मिलते हैं) इसी अभङ्गके नीचे तुकारामजीका 'ऐसे ऐसियाने भेटती ते साधु' (ऐसे महात्मा ऐसे मिलते हैं) इत्यादि अभङ्ग दिया हुआ है

(१८) ज्ञानेश्वरीका नाथ भागवतपर और ९न दोनों ग्रन्थोंका तुकारामजीके अभङ्गोंपर विलक्षण परिणाम घटित हुआ देख पड़ता है ।

अर्जुन जब मोहसे विक हो उठा तब स्ने की कठिनत ' ब ाते हुए ज्ञानदेव कहते हैं—

भौंरा चाहे जैसे कठिन काठको मौजके साथ भेद र उसे खोखला कर देता है पर कोमल कलिमे आकर फँस ही जाता है (२ १) वह प्राणोंको उत्सग कर देगा पर कमल-दलको नहीं चीरेगा स्नेह कोमल होनेसे ऐसा कठिन है (१ २ अ १)

भौंरेका यह दृष्टा त एकनाथ महाराजने ग्रहण किया है साथ ही उसमे उन्होंने गृहस्थोंका नित्य परिचित बालकका मधुर द ा त जोड़ा है

जो भौंरा सूखे काठको स्वय कुरेद डा ता है वह कोमल कमलके बीचमे आकर प्रीतिकी रीतिमें लग जाता है केसरको जरा भी धक्का न ी लगने देता ऐसे ी बच्चा जब बापका पल्ला पकड़ लेता है तब बाप वहीं खड़ा रह जाता है इसलिये नहीं कि बाप इतना दुर्बल है ि क इस कारणसे कि वह स्नेहमे फँसकर वहीं गड़ जाता है (नाथभागवत २ ७७७ ७७)

तुकारामजीने अपने अभङ्गमे इन दोनों दृष्टान्तोंका उपयोग किया है

जो भौंरा काठको कुछ नहीं समझता उसे फू फँसा लेता है प्रेम प्रीतिका बँधा किसी तरहसे नहीं छूटता बच्चा पल्ला पकड़ लेता है तो बाप बालकक सामने लाचार हो ज त है तुका क ता है भावसे या भयसे भगवान्‌को भजो

तुकारामजीक एक और अभ है जिसमें ब चेका दृष्टान्त फिरसे आया है

प्रीतीचा कळह । पदरासी घाली पीळ ।
सरा नेदी ळ । मार्गे पु पित्यासी १
काय लागे त्यासी बळ । हेडाविता कोण काठ ।
गोंविती सबळ । जाळी स्नेह सूत्राची

प्रेमकी क ह है बच्चा पल्ला पक कर ऐंचता ऐंठता है बाप ो इधर उधर हिलने नहीं देता है यदि बाप चाहे तो बच्चेको टक दे सकता है इसमें कौन से बड़े ब की जरूरत है? झटका देनेमें देर भी कितनी लगेगी, पर स्नेह सूत्रके जाल ऐसे है कि ब वान् भी उनमें फँस जाते हैं

एकनाथ महार जकी शै ीमे फैलाव काफी रहता है कारामजीकी वाक्शैली सूत्र जैसी चुस्त और साफ होती है ज्ञानेश्वरी और नाथ भागवतका अध्ययन तुकारामजीने हुत अ छी तरहसे किया ज्ञानेश्वरीको नाथ भागवत विशद करता है इन दोनों ग्रन्थोंका जिसने उत्तम अध्ययन किया हो वही तुकारामजीके सूत्ररूप वचनोंकी गुत्थियोंको खुल सकता है उदाहरणके तौरपर यह अभङ्ग लीजिये

गादेकाठीं हाता आड । करुनी कौतुकवतुक १ ।
देखयानीं एक केलें । आइत्या नेलें जित्रनापें । ध्रु ॥
राखानिया हाता ठाव । अल्प जीव लावूनी ॥ २ ।
तुका म्हण फिटे वणी । हे सज्जनें विश्राती । ३

गोदावरीके किनारे एक कुआँ था बरसातके ज से लबालब भरा था और अपनी शानमें मस्त था मैं भी वहा अपने जरा से प्राणको लिये जगह दबाये बैठा था पर देखनेवालेने एक उपकार किया वे मुझे नदीके बहते जलमे ले गये व ाँ मेरी तृप्ति हुई यह विश्राम सत्सङ्गसे ही मिला

इतनसे पूर्ण अर्थ बोध नहा होता देखनेवालोंने उपकार किया ये दे नेवाले कौन है? गोदावरी कौन है और यह कुआँ क्या है? दे नेव ले सन्त हैं ये ही नदीके बहते ज में ले गये यह इन्होंने बड़ा उपकार किया इस उपकारकी कृतज्ञता प्रकट करनेके लिये

यह अभङ्ग रचा गया है यह स तपरक है ससार सागरको पार करनेके अनेक उपाय है उनमें मुख्य ज्ञान और भक्ति है भक्ति मार्ग स्प निर्विघ्न और नित्य निमल है, ज्ञान मार्ग मध्यम और कलाहीन है भक्ति मार्ग ही गोदावरी अखण्डप्रवाह कलकल नादिनी नदी है और ज्ञान मार्ग ही कुआँ' है नाथ भागवतके ११ वें अध्यायमें ४८ वें श्लोकपर नाथ म्हार जका जो भा य है उसमें इस अभङ्गका मू है

प्रायेण भक्तियोगेन ‹ ङ्गेन वि नोद्ध
नो ायो वि ते ध्यङ् प्रा ण हि सत हम्

इसी श्लोकपर व भाष्य है श्लोकका भाव य है कि स ङ्गसे मिलनेवाले भक्तियोगके बिना भगवत् प्राप्तिका अन्य उत्तम उपाय प्राय नहीं है कारण स तोंका उत्तम आश्रम मैं ही हूँ यह भगवद्वचन है इसपर नाथ भा य इस प्रकार है

खेतमें पानी देना हो तो मोट और पाट दो ही उपाय हैं मोटसे कुएँमसे पानी निकालो तो बहुत कष्ट करनेपर थोडा ही पानी मिलता है फिर मोटके साथ रस्सा और एक जोडी बैल भी चाहिये फिर बराबर ना ना' करते बैलोंको ठोंकते पीटते खींच खाँच करते पानी निकालो तो उससे थोड़ी ही जमीन भीजेगी पर नदीके पाटकी यह बात नहीं है हाँ उसके ज प्रवाहके अ नेके लिये रास्ता बन गया वहाँ रात दिन घड़घड़ाता हुअ जल ब ता ही रहेगा (१५ १ ३२ २४)

यह मोटसे पानी निकालना ी ान माग है

मोटेचें पाणी तेसें ज्ञान । करूनि वेदशास्त्रपठण ।
नित्यानित्यविवेकासी जाण । पडित विचक्षण बसती १५३५

मोटसे पानी निकालना जैसा है वैसा ही ज्ञान है वेद और शास्त्र पढकर ये विचक्षण पण्डित नित्यानित्यविवेक करने बैठते हैं तब क्या हो है?

'एक कर्मांकडे ओढी । एक सन्यासाकडे ओढी

एक कर्मकी ओर चित है दूसरा सन्यासकी ओर कोई तप बतलाता है कोई पुरश्चरण कोई वेदाध्ययन कोई दान और कोई योग बतलाता है जिसकी मतिमें जो आया उसीको उसने ज्ञानका सार तलया

ज्ञान मार्गकी ऐसी गति होती है अनेक प्रकारके विघ्न आते हैं विकल्प व्युत्पत्ति उड़ जाती है वहाँ मेरी निजप्राप्ति' नही होती (१५४)

पर मेरी भक्तिकी यह बात नहीं है नाममात्रसे (मेरे भक्त) मुझे पाते हैं ' (१५४२)

गङ्गा प्रवा जैसी हरि नामकी घड़घड़ाहटमे विघ्न बेचारोंके लिये कोई ठौर ठि ाना नहीं रहता इसलिये भक्तिसे बढकर और कोई मार्ग न ीं है

यदि ऐसा है तो ब लोग भक्ति क्यों नहीं करते ? इसका उत्तर यह है यदि कोटि जन्मोंकी पुण्य सम्पत्ति गाँठमे हो तो मेरे सन्तोंकी ङ्गति मिलती है और सत्सङ्गतिसे ही भक्ति उल्लसित होती है (१५५१)

अस्तु एकनाथ महाराजकी इन ओवियोंके भाव जब अन्त करणमें भरे हुए थे उसी समय तुकारामजीके चित्तमे यह अभङ्ग स्फुरित हुआ होगा बात बिल्कु स्पष्ट है ग्र था ययन त ा अन्य साधनोंसे प्राप्त होनेवाले ानके भरोसे जब मै बैठा हुआ था तब सन्तोंने दया करके मुझे परमात्माकी भक्तिरूप महागङ्गामे ाकर छोड़ दिया यही बात तुकारामजीको अपने अभङ्गमे कहनी थी तुकारामजीने ए नाथ

महाराजको जीके मरे जीवन एक जनार्दन क०कर क२ स्थ नामें स्मरण करके उनका वाक्ऋण शोध किया है

१७ नामदेव अभङ्ग

अब नामदेवकी ओर चलें नामदेवके अभङ्गोंकी गाथा सुव्यवस्थितरूपसे छपी नहीं है इसलिये तथा तुकारामजी नामदे के ही अवतार थे इसलिये भी उनका सम्ब व अवतरण देकर दिखानेकी विशेष आवश्यकता नहीं है जिन जिन विषयोंपर नामदेवके अभङ्ग हैं प्र य उन सभी विषयोंपर तुकाराम ीके भी अभङ्ग हैं नामदेवजीकी सगुण भक्ति अत्युत्कट हार्दिक प्रेमसे भरी हु है उनकी मधुर भक्ति मधुरतम है इ सम्बन्धमें नामदेव जैसे नामदेव ी हैं नामदेव अपने घरके सब लोगोंसहित, दासी जन के भी हित व । पा डरङ्गके हैं और भगवान्से उनकी अर्जुन ी सी सख्यभक्ति है न देवके घरके आदमी जैसे ी भगवान् उनके साथ रात दिन रहनेवाले खेलनेवाले बोलनेवाले प्रेम कल० करनेवाले घरके ी आदमी बन गये हैं मैंने पाया नि मम साधू भागवत धर्म' इसीके लिये नामदेवका अवतार हआ था नामदेव इस युगके उद्धव ी थे भगवान्के सा थ इन ी बडे प्रेमकी घुल घुलकर बातें हुआ करती थी अरी मेरी मा⁻ सतनकी छाँ२ मिरत पनहाइ प्रेमामृत ' इत्यादि कहते हुए व० भगवान्से बडे ी मीठे लाड़ ड़ाते थे और भगवान् भी अपना षड्गुणैश्वर्य भू कर उनके प्रेममें पग जाते थे भक्त भगवान्की वह प्रेम सरस को लता नामदेवकी ही वाणीसे जाननी चाहिये नामदेव भगवान्से कहते हैं कि तुम पक्षिणी हो मैं अण्डज हूँ तुम मृगी हो मैं मृगछौना हूँ तुम मैया हो मैं ब । हूँ म कृष्ण हो मै रुक्मिणी हूँ, तुम समुद्र हो मैं द्वारका हूँ म तुलसी हो मैं मञ्जरी हूँ भगवान्के स थ नामदेवका ऐसा वि क्षण सख्य था य देखकर तथा मृदुतामें नवनी को मात करनेवाली उनकी मधुर

वाणी सुनकर पाषाण भी अपना छोड़कर द्रवित हो जाय' बाकी सब बातोंमें नामदेवजीके ही संशोधित और परिवर्द्धित संस्करण तुकारामजी थे। तुकारामजीकी वाणीमें भगवद्भक्त, लोकोद्धारक महापुरुषकी जो दिव्य स्फूर्ति जो ठसक, जो प्रखरता और जो ओज भरा है, वह अलौकिक ही है। पर यहाँ हमे नामदेव-तुकारामकी परस्पर तुलना नहीं करनी है नामदेव ही तुकारामके रूपमें धर्म कार्यार्थ अवतरित हुए, इसलिये नामदेवका जो बड़ा काम बाकी था वही तुकारामजीने किया, यही कहना उचित है। दोनोंके अभंगोंमें जो साम्य है, उसका अत्र किञ्चित् अवलोकन करें। कई चरण दोनोंके अभंगोंमें बिल्कुल एक से हैं, जैसे 'देवावीण ओस स्थळ नाहीं' यह नामदेवका चरण है, और तुकारामजीने कहा है 'देवाबीण ठाव रिता कोठें आहे ?' दोनोंका मतलब एक ही है अर्थात् भगवान्से खाली कोई स्थान नहीं। एकाध शब्दका हेर फेर है, पर एक सामान्य कथन है और दूसरा प्रश्नरूपमें है। नामदेवका चरण है 'पंढरीच्या सुखा अंतपार नाहीं लेखा' तुकारामजीका समचरण है 'गोकुळीच्या सुखा अंतपार नाहीं देखा।' नामदेव कहते हैं 'वीतभर पोट लागलेंसे पाठीं' (बित्ताभर पेट पीठसे जा लगा है)' और तुकाराम कहते हैं, 'पोट लागलें पाठीशीं। हिंडविते देशोदेशीं' (पेट पीठसे लगा है और देश देश घुमा रहा है); 'झूठ' पर दोनोंके चार चार अभंग हैं। नामदेवने भक्तिकी उत्कटतासे सारा झूठ स्वयं ही ओढ लिया है। कहते हैं 'मेरा गाना झूठा, मेरा नाचना झूठा मेरा ज्ञान झूठा और ध्यान भी झूठा।' और तुकारामजी कहते हैं, 'लटिकें तें ज्ञान लटिकें तें ध्यान। जरी हरि कीर्तन प्रिय नाहीं' (वह ज्ञान झूठा और वह ध्यान भी झूठा जो हरि-कीर्तन प्रिय न हो।) तुकारामजीने झूठ स्वयं नहीं ओढा है झूठोंके पल्ले बाँध दिया है।

(१) नामदेवके एक अभगका आशय है हम पण्ढरीमे थे, यह हमारी पुरातन पैतृक भूमि है रानी रखुमाई हमारी माता और पाण्डुरङ्ग हमारे पिता हैं (ध्रु) पु डलीक हमारे भाई और चन्द्रभागा बहिन है ! नामा कहता है अन्तमे घर अपना चन्द्रभागाके किनारे है ।

इसी आशयका तुकोबाका अभग यों है हमारी पैतृक भूमि पण्ढरी है, घर हमारा भीमा तीरपर हैं पा डुरग हमारे पिता और रखुमाई हमारी माता हैं (ध्रु) भाई पु डली मुनि और बहिन चन्द्रभागा हैं तुकाका यह पुरातन परम्परागत अधिकार है जो चरणोंके पास रहता हूँ ।

(२) भगवन् ! मेरा मन अपने अधीन करके विना दाम दिये स्वामित्व क्यों नहीं भोगते हो ? मै मुफ्तका नौकर तो मिला हूँ जो निरन्तर आपकी सेवा करनेके लिये उधार खाये बैठ हूँ और तुम्हारे ऊपर कुछ भार भी तो नहीं रखता । (नामदेव)

इसी भावको, देखिये तुकारामजीने किस प्रकार व्यक्त किया है

दान देकर लोग सेवक ढूँढते हैं । हम तो बिन कु िये ही सेवक बनना चाहते हैं

(३) बड़े आदमीका लड़का यदि चीथड़ा ओढे तो सब लोग किसको हँसेंगे ? तुम तो अविना ी त्रिभुवनके राजा हो और तुम्हीं मेरे स्वामी हो (नामदेव)

बड़ेका लड़का यदि दीन दुखी दिखायी दे ो हे भगवन् ! लोग किसको हँसेंगे ? ड़का चाहे गुणी न हो स्वच्छतासे रहना भी न जानता हो तो भी उसका लालन पालन तो रना ी होगा (ध्रु) तुका कहता है, वैसा ही मैं भी एक पतित हूँ पर आपका मुद्राङ्कित हूँ (तुकाराम)

(४) भोगावरी आम्हीं घातला पाषाण ।
मरणा मरण आणियेलें ।
(विषयोंका भाग जला डाला सारा ।
मृत्युको ही मारा, निःसशय ।)

दोनोंके ही एक एक अभगका प्रथम चरण है आगेके चरण दोनोंके एक दूसरेसे भिन्न हैं ।

(५) 'विठाई माउली वोरसोनी प्रेमपान्हा घाली' ये शब्द-प्रयोग दोनोंके ही अभगोंमें बार बार आये हैं ।

(६) 'तत्त्व पुसावया गेलो वेदज्ञासी' (तत्त्व पूछने वेदज्ञके पास गये) यह नामदेवका अभग और ज्ञानियाचे घरी चोजविता देव (ज्ञानीके यहाँ भगवान्‌को ढूँढते) यह तुकारामजीका अभग दोनोंका ही एक ही आशय है । वेदज्ञ शास्त्री, पण्डित, कथावाचक आदि सबको देखा पर तेरा प्रेमानन्द उनके पास नहीं है इसलिये तेरे ही चरणोंको चित्तमें और तेरा ही नाम मुखमें धारण किया है । इन अभगोंमें दोनोंका यही अनुभव व्यक्त हुआ है

१८ कबीरकी साखी

उत्तर भारतके सन्त कवियोंमें कबीरसाहबकी साखियोंका तुकारामजीको विशेष परिचय था, तुकारामजीने स्वय भी उनके ढगपर कुछ दोहे रचे हैं, तथा कु... अन्त प्रमाणोंसे भी यह बात स्पष्ट है

(.) तुकारामजी एक अभगमें कहते हैं —

धर्म भूताचो त दया । सत कारण ऐसिया
नव्हे माझें मत । साक्षी करूनि सागे सत

प्राणिमात्रपर दया ...रना ही धर्म है यही सन्तका ...क्षण है मेरा म... नहीं साक्षी करके सन्त ऐसा कहते हैं

यह कौन सन्त हैं जिन्होंने साक्षी करके प्राणिमात्रपर दया करनेको धर्म बताया है और इसीको सन्तका लक्षण कहा है यह वही सन्त हो सकते है जिनकी साखी आँखी ज्ञानकी है और जो सब जीवोंको साँइके सब जीव हैं' बतलाते हैं सन्तका लक्षण भी यही बतलाते हैं

सदा कृपालु दुख पर हरन, वैर भाव नहिं दोय।
क्षमा ज्ञान सत भाखिये, हिंसारहित जो होय

(२) कबीर

खाँड खिलौना दो नहीं, खाँड खिलौना एक।
तैसे सब जग देखिये, किये कबीर बिबेक

तुकाराम

खडा खवाळी साखर, जाला नामाचाचि फेर।
न दिसे अतर, गोडी ठायीं निवडित १

मिसरी, बूरा और चीनीमे नामोका ही फेर है मिठासको देखें तो कोई अन्तर नहीं''

(३) कबीर

कामीका गुरु कामिनी लोभीका गुरु दाम।
कबिराके गुरु सत हैं, संतनके गुरु राम

तुकाराम

लोभीके चित धन रहे, कामिनी चितमें काम।
माताके चित पूत बसे, तूकाके मन राम

तुकारामजीके समयमे कबीर भारतवर्षमें सर्वत्र विख्यात थे कबीर (शाके १३६२ १४४) और तुकारामके बीच सौ सवा सौ वर्ष अन्तर था तुकारामजी एक बार काशी भी गये थे तब वहाँ उन्होंने कबीरकी कविता सुनी होगी

१९ चार खेलाडी

रामजीके डण्डोंके खेलपर सात अभंग हैं। इनमेंसे एक अभंग है 'खेळ खेळोनियां निराळे' (खेल खेलकर अलग)। इसमें खेल खेलकर भी अलग रहे हुए प्रपञ्चके दावमें न आये हुए चार खेलाड़ियोंका उन्होंने वर्णन किया है ये चार खेलाड़ी हैं—नामदेव ज्ञानदेव (उनके भाई बहिन), कबीर और एकनाथ तुकाराम इन्हीं चार सन्तोंको सबसे अधिक यानें गुरुस्थानीय मानते थे। ये ही इनके प्यारे चार खेलाड़ी हैं।

(१) एक खेलाड़ी है दरजीका लड़का नामा, उसने विठ्ठलको मीर बनाया खेला, पर कहीं चूका नहीं, सन्तोंसे उसे लाभ हुआ।

(२) ज्ञानदेव मुक्ताबाई, वटेश्वर चाङ्गा और सोपान आनन्दसे खेले, कृष्णको उन्होंने मीर बनाया और उसके चारों ओर नाचे। सब मिलकर तन्मय होकर खेले, ब्रह्मादिने भी उनके पैर छुए।

(३) कबीर खेलाड़ीने रामको मीर बनाया और यह जोड़ी खूब मिली

(४) ए खेलाड़ी है ब्राह्मणका डका एका उसने लोगोंको खेल चसका लगा दि , जनार्दनको उसने मीर बनाया और वैष्णवोंका मेल कराया। तन्मय होकर खेलते खेलते वह स्वयं ही मीर बन गया

प्रत्ये खेलाड़ीका एक एक मीर यानें उपास्य था। इन चारोंके अतिरिक्त और भी हुत से खे ाड़ी हुए पर उनका वर्णन करनेमें तुकारामजी कहते है कि मेरी वाणी समर्थ नहीं है ' पर कार मबी अपने श्रोताओंसे कहते हैं ि या चौघांची तरी रि सोई रे' (इन चारोंके पीछे-पीछे तो चलो) नामदेव ज्ञाने र बीर और एकना का अनुसरण तो रो इस अभंगका ध्रुवपद स प्रकार है

एके घा॰ खेळता न पडसी डाईं । दुचाळयानें ढकसिल भाई रे
त्रिगुणांचे फरी तु थोर कष्टी हासी या चौघ ची तरि वरि सोई रे

एक भावसे खेल खेलोगे तो (प्रप के) दाँवमे न फँसोगे दुविधासे चलोगे तो ठगे जाओगे त्रिगुणके फेरसे तुम बड़े उठाओगे इसलिये इन चारोंका आश्रयकर इनके मार्गपर चलो तुकरामजी जिनके मार्गपर चलनेका उपदे लोगोंको दे रहे हैं उनपर उनका कैसा हो अटल विश्वास, गहरा प्रेम और महान् आदर होगा इसमें स दे ही क्या है एसा प्रेम और आदर होनेसे ही तुकारामजीने उनके न्थोंका बड़ी बारीकीके स थ अध्ययन किया यह हमलोगोंने यहाँतक देखा ही है

२ अध्ययनका सार

भागवत र्म परम्पराके प्राचीन तथा अर्वाचीन साधु सन्तोंकी जो कथाएँ तुकारामजीने पढीं या नीं उनका कारामजीके चित्तपर बड़ा असर पड़ा इनसे उनके सिद्धा त दृढ हुए विचार स्थिर हुए हरि प्रेम बढा और जीवनकी ए पद्धति निश्चित हो गयी सन्त-कथा श्रवण भक्ति बल बढा और विश्वास श्रीविठ्ठलमे निर्म निश्चल हुआ सन्तोंका सहारा मिला सन्त कथाएँ कामधेनुके समान इष्ट मको पूरण करनेवाली भगवत् प्रेमका आन द बढानेवाली सन्मार्ग दिख नेवाली निश्चयका बल देनेव ली और सिद्धा तोंको ऊँचा देनेवाली होती हैं सन्त कथाओंसे तु ारामजीने अपना इष्टभ व निक ल ि या और ल भवान् हुए शीलवान् साक्षात्कार त था र्म नीति प्रवण सन्तोंके चरित्रोंसे आत्महितके कौन कौन से रहस्य तुकारामजीने प्राप्त किये य एक बार उन्हींके खसे सुनें

(१) मानी भक्तीचे उपकार । ऋणिया म्हणवी निरंतर

भगव न् भक्तिके उपकार मानते हैं भक्तके ऋणी हो जाते इस अभंगमें अम्बरीष बलि, अर्जुन और पुण्डलीकके देकर

यह बात सिद्ध की है अम्बरीषके लिये भगवान्ने दस बार जन्म लेकर 'दासका दास्य किया ।' भक्तिका उपकार उतारनेके लिये भगवान् राजा बलिके यहाँ द्वारपाल हुए अर्जुनके सारथी बने उसके पीछे पीछे चले और पुण्डलीकके द्वारपर तो अट्ठाइस युगसे खड़े ही हैं।

(२) 'कनवाळू कृपाळू' । भगवान् भक्तके लिये चाहे जो कष्ट उठाते हैं, यह बात अम्बरीष और प्रह्लादके चरित्रोंमें तथा द्रौपदी वस्त्र हरण और दुर्वासाके धर्म छल प्रसङ्गमें प्रत्यक्ष है।

(३) हरिजनांची कोणा न घडावी निंदा ।
साहत गोविंदा नाहीं त्याचें ॥

'हरि-भक्तोंकी कोई निन्दा न करे, गोविन्द उसे सह नहीं सकते।' भक्तोंके लिये भगवान्का हृदय इतना कोमल होता है कि वह अपनी निन्दा सह सकते हैं पर भक्तकी निन्दा नहीं सह सकते। भक्तोंसे कोई छल छन्द करे तो यह भी उनसे नहीं सहा जाता।

दुर्वासा अम्बरीषको छलने आये तो भगवान्का सुदर्शन चक्र उनको जलाता फिरा। द्रौपदीको जब क्षोभ हुआ तब भगवान्ने उसकी सहायता की और कौरवोंको ठण्डा ही कर दिया। पाण्डवोंसे वैर करनेवाला बभ्रु भगवान्से नहीं सहा गया और पाण्डवोंके लिये बलरामको भी उन्होंने दूर (पृथ्वी परिक्रमा करने) भेज दिया। पाण्डव पुत्रोंकी हत्या करनेवाले अश्वत्थामाके मस्तकमें उन्होंने दुर्गन्ध रख ही छोड़ी।' इसलिये भगवान्की भक्ति करो और भक्तोंको अपनाओ।

(४) शुकसनकादिकीं उभारिला बाहो ।
परीक्षिती लाहो साता दिवसां ॥

'शुक-सनकादि हाथ उठाकर कहते हैं कि परीक्षित् सात दिनमें तर गये।' भक्तोंपर भगवान्की ऐसी दया है। द्रौपदीने जब पुकारा तब भगवान् इतने अधीर हो उठे कि गरुड़को भी उन्होंने पीछे छोड़

दिया भक्तके पुकारनेकी देर है भगवान्‌के पधारनेकी नहीं इसलिये रे मन जल्दी कर

उठते बैठते भगवान्‌को पुकार पुकार सुननेपर भगवान्‌से फिर नहीं रहा जाता

(५) भगवान्‌के प्रेमकी महिमा सुनो भीलनीके बेर वह खाते हैं वह प्रेमके बड़े भूखे हैं प्रेमका अभाव ही उनके लिये अकाल (दुर्भिक्ष) है सुदामाके चावल वह ऐसे ही फाँक गये उन्होंने भक्ति ग्र ण की

(६) प्रह्लाद कथाका स्मरण करके तुकाराम ी कहते हैं

भक्तकी आवाज आते ही उ लकर कूद पड़े और म्भेको तोड़कर बाहर निकले ऐसी दय मेरी विठामाईके सिव और कौन है

(७) दीन दुखी पीड़ित संसारियोंके हे देवराणा म्हीं रफदार हो म सङ्कटोंसे तुम्हींने प्रह्लादको अने रसे उबारा है

(८) माझ्या विठोबाचा कैसा प्रेम-भाव (मेरे विठ्ठलन थका कैसा प्रेम भाव है) यह बतलाते हैं

भगवान् भक्तके आगे पीछे उसे सँभाले रहते हैं उसपर ो कोई आघात होते हैं उनक निवारण करते रहते हैं उसके योगक्षेमका सारा भार स्वय वहन करते हैं और हा पकड़कर उसे र दिखाते हैं तुका कहता है इन बातोंपर जिसे विश्वा न हो वह पुराणोंको आँ खोलकर देखे

(९) भगवान् जिन्हें अपनाते हैं वे संसारकी ष्टिमें पहले निन्द्य भी रहे हों तो भी पीछे वन्द्य हो जाते हैं

अंगीकार ज्याचा केला नारायणें । निंद्य तेही तेणे व केले १
अजामेळ मिळी तारिली कुंटणी । प्रत्यक्ष पुराणीं केली घ्रु
हत्याराशी पात अपार । वाल्मीक किंकर वद्य केला २
तु म्हणे येथें भजन प्रमाण । काय थोरपण जाळावें तें ३

नारायणने जिन्हें अ ीकार किया वे जो निन्द्य भी थे वन्द्य गये भगवान्ने अजामिल भीलनी और कुटनीतकको तारा और उ हें साक्षात् पुराणोंमें वन्द्य किया ब्रह्महत्याके राशि अपार पाप जिसने किये उस वाल्मीकि किङ्करको भगवान्ने वन्द्य किया । तुका कहता है, यहा भक्ति ही प्रमाण है और बड़प्पन लेकर क्या होगा ।'

भगवान्का जो भक्त है वही यथार्थमें वन्द्य है और वही श्रेष्ठ है । भगवान्का अङ्गीकार करना ही वन्द्यताका प्रमाण है ज्ञानदेवने भी कहा है, भगवद्भक्तिके बिना जो जीना है उसमें आ ा लगो । अन्त करणमें यदि हरि प्रेम नहीं समाया तो कुल, जाति वर्ण रूप विद्या इनका होना किस कामका ? इनसे उलटे दम्भ ही बढता है । अजामिल, कुटनी और वाल्मीकिका पूर्वाचरण और शबरीकी जाति नि द्य थी, नारायणने इन्हें अङ्गीकार किया इसलिये ये जगद्वन्द्य हुए

(१) तुज करिता न इ ऐसें काहीं नाहीं ।' मनुष्यकी पसद कोई चीज नही है भगवान्को जो पसद हो वही शुभ है, वही वन्द्य है और वही उत्तम है ।

नीति ससारमें सुव्यवस्था बना रखनेके लिये नीतिके कुछ नियम बाध देते हैं पर अन्तिम निर्णयको देखें तो मूल सूत्र भगवान् ही हाथमें है । भगवान् जिसे अङ्गीकार करेंगे वही श्रेष्ठ और वन्द्य होगा । भगवान्की मुहर जिसपर लगगी वही सिक्का दुनियामें चलेगा भगवान्के दरबारका हुक्म ही दुनियामें चलता है ।

भगवान्ने गीतामें स्वय ही कहा है

सर्वधर्मान् परित्यज्य मामे शर
अह त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि

यह सब धर्मो । सार है हरि शरणागति ही शुभाशुभ कर्म बन्धोंसे मुक्त होनेका एकमात्र मार्ग है जो रणागत हुए वे ही तर गये ।

भगवान्‌ने उ हें तारा उन्हें तारते हुए भगवान्‌ने उनके अपर ध नहीं देखे उनकी जाति या कुलका विचार न ी किया भगवान् केवल भावकी अनन्यता देखते हैं अनन्य प्रेमकी गङ्गामें स शुभाशुभ कर्म शुभ ही हो जाते है भगवान् पूर्वकृत पापोंको क्षमा कर देते हैं और अनन्यता होनेपर तो कोई पाप हो ही नहीं सकता और इस प्रकार भक्त अनायास कर्मबन्धसे मुक्त हो जाता है अजामिल, गणिका भीलनी ध्रुव उपमन्यु, गजेन्द्र प्र ाद पा व इत्यादि सब भक्तोंको भगवान्‌ने उनके कुल, जाति और अपराधोंका विचार न करके तारा है

तुम्हारे नामने प्रह्लादकी अग्निमें रक्षा की ज म रक्षा की विषको अमृत बना दिया पाण्डवोंपर जब बड़ा भारी सङ्कट आया ब हे नारायण तुम उनके सहायक हुए तुका हता है कि इस अनाथके नाथ तुम हो य सुनकर मैं तुम्हारी शरणमें आया हूँ

(११) भक्त भी ऐसे होते है कि भगवान्‌का अखण स्मरण करते हैं—

पहा त पांडव अखड वनवासी ।
पर त्या देवासी आठविती । १ ॥
प्रह्लादासी पिता करितो जाचण ।
परि तो स्मरं मनीं नारायण २
सुदामा ाह्मण दरिद्रें पीडिला ।
नाहीं विसरला पांडुरंगा ३
तुका म्हण तुझा न पडावा विसर ।
दु खाचे डोंगर झाले तरी ४

देखो पाण्डवोंको अखण वनवास भोग रहे हैं, पर भगवान्‌का स्मरण बराबर करते हैं प्रह्लादको उसका पिता इतना देता है पर प्रह्लाद मनसे नारायणका ही स्मरण करता है सुदामा ब्राह्मणको दरिद्रताने

पीस पर उसने पाण्डुरङ्गको नहीं भुलाया तुका कहता है, पर्वतप्राय दु हो तो भी तुम्हारा विस्मरण न हो

(१२) भगवान् भक्तपर दु खके पहाड़ ढाहते हैं उनकी घर गिरहस्तीका सत्यानाश कर डालते हैं अर्थात् ससारके बन्धनोंसे छुड़ा लेते हैं

विपद सन्तु न शश्वत्तत्र तत्र जगद्गुरो ।

इसी कुन्तीके वचनका ही अनुवाद तुकारामजीने 'हरि तू निष्ठुर निर्गुण' अभगमें किया है और उसमें हरिश्चन्द्र नल शिवि कर्ण बलि श्रियाल आदि सुप्रसिद्ध भक्तोंके हृदयद्रावक दृष्टान्त दिये हैं।

(१३) तुज भावें जे भजती । त्यांच्या ससारा हे गति

'जो भक्तिपूर्वक तेरा भजन करते हैं उनके प्रपञ्चकी यही गति होती है ।' पर भक्त भी पीछे हटनेवाले नहीं हैं अनन्य शरणागतिसे वे बाल-बराबर भी इधर उधर नहीं होते । इसीलिये

वैष्णवोंकी कीर्ति पुराणोंने गायी है आदिनाथ शङ्कर नारद से मुनीश्वर शुक जैसे महान् अवधूत और कोई नहीं है तुका कहता है यह आर्तोंकी विश्रान्ति और सर्वश्रेष्ठ हरि भक्ति है

(१४) नारायणीं जेणें घडे अतराय (नारायण जिनके कारण छूटते हैं) ऐसे माँ बापको भी भक्त भगवान्के लिये छोड़ देते हैं फिर स्त्री पुत्र, धन मान किस गिनतीमें हैं ? प्रह्लादने पिताको छोड़ा विभीषणने भाईका त्याग किया और भरतने माता और राज्य दोनोंको त दिया भगवान्के भक्त ऐसे त्यागी, विरक्त और एकनिष्ठ होते हैं

(१५) न मनावें तसें गुरुचें वचन । जणें नारायण अतर तें

गुरुका भी ऐसा वचन न माने जिससे नारायण बिछोह हो यही दि लानेके लिये तुकारामजीने तीन बड़े मार्मिक उदाहरण दिये हैं —एक रा बलि दूसरा ऋषि पत्नियोंका और तीसरा गोपियोंका।

शुक्राचार्य भगवद्भक्तिमें बाधक होने लगे इ लिये राजा बलिने उनकी एक आँ फोड डाली और अपने गुरुको एक आँखसे अन्धा कर दिया ऋषि पत्नियोंने ऋषियोंकी आज्ञाका उल्लङ्घन किया और अन्न उठाकर े गयीं

विधि नियम शास्त्राचार और नीति व धन इन सबका पालन अत्यावश्य है यह बात कारामजी किसीसे कम नहीं जानते थे उन्होंने इन ब धनोंको तोड़नेवाले दुराच रियों और दाम्भिकोंको बहुत बुरी तरहसे फटकारा है विषय सुखके लिये आचार धर्मका उल्लङ्घन करनेवालों े लिये नरककी ही गति है इसमे सन्देह ही क्या है पर सता गति स्वरूप परमात्माकी प्राप्तिके लिये सर्वत्र न्योछावर करना पड़ता है ह भक्ति का सिद्धान्त है भक्ति शा ी दृष्टिसे धर्माधर्मविवेक तुकारामजी इस प्रकार बतलाते हैं

देव जोडे ते करावे अधर्म । अतरे तें कर्म नाचरावें १

जिससे भगवान् मिलें वह (लोक दृष्टिमें) अ र्म भी हो तो करे िससे भगवान् छूट जायँ वह कम न करे

बलि ऋषि पत्नी और गोपियोंकी अनन्य भक्तिपर भगवान् मुग्ध ो गये अनन्य प्रेमके में हो गये और इन भक्तप्रेमियोंके हाथों लोकदृष्टिमें अधर्म हुआ तो भी भगवान्ने उन्हें अनन्य भक्तिके कारण वह दिया जो और किसी े न दिया अन्दर बाहर सम्पूर्ण वही हो गया

(१६) भगवत्-प्राप्तिका मुख्य साधन नाम स्मरण है नाम स्मरणसे असख्य भक्त तर गये तुकारामजीने अपने अने अभगोंमें इनके उदाहरण दिये हैं एक अभगमें आदिनाथ र अ भक्त गुरु नारद महाक ल्मीकि सात दिनमें हरि गुण नाम सकीर्तनसे सद्गति पाये हुए परीक्षित् तथा एक दूसरे अभगमे उपमन्यु गणि और प्रह्लादके नाम आये है

(१७) भक्तोंके लिये हे भगवन्! आपके हृदयमे बड़ी करुण है यह बात हे विश्वम्भर! अब मेरी समझमे आ गयी एक पक्षीका नाम रखा जो आपका नाम था और इससे गणिकाका उद्धार हुआ कुटनीने बड़े दोष किये पर नाम लेते ही आपको करुणा आ गयी। तुका कहता है हे कोमलहृदय पाण्डुरङ्ग आपकी दया असीम है।'

(१८) कालरूप होएसे डरे हुए जीवोके पुकारते ही भगवान् कैसे दौड़े आते हैं। यह दिखानेके लिये जनक, राजा शिवि गणिका अजामिलके उदाहरण दिये हैं

(१९) 'भक्तोंके यहाँ भगवान् अपने तनसे काम करते हैं धर्माके यहाँ जूठन उठाते हैं। भीलनीके जूठे फल खाते हैं और वे उन्हें अत्यन्त प्रिय हैं। क्या भगवान्को अपने घर खानेको नहीं मिलता जो द्रौपदीसे सागकी पत्ती माँगते हैं? इन्होने अर्जुनके घोड़ोको नहलाया अर्जुनके कितने सङ्कट निवारण किये तुका कहता है ऐसे भक्त ही भगवान्के प्यारे हैं। कोरे ज्ञानका तो, मुँह काला!

इन पुराणोक्त भक्तजनोंके समान ही आधुनिक भागवत भक्तोंकी कथाएँ भी तुकारामजीको अत्यन्त प्रिय थीं और इनकी कथाओंसे भी तुकारामजीने यही तात्पर्य निकाला कि नाम स्मरण भक्ति ही सब साधनोंसे श्रेष्ठ है। तुकाराम महाराजके पूर्व महाराष्ट्रमे जो जो सन्त भगवद्भक्त हुए उन सबके बारेमें तुकारामजीने अनेक बार प्रेमोद्गार निकाले है ऐसे अनेक भक्तोंके नाम 'मङ्गलाचरण' मे दिये हुए १९वें अभगमें आये हैं और तुकारामजीने यह कहकर ये नाम लिये है कि मेरा गोत्र बहुत बड़ा है उसमे सभी सन्त और महन्त हैं और मै उनका नित्य स्मरण करता हूँ

(२) पवित्र तें कुळ पावन तो देश।
जेथें हरिचे दास जन्म घेती ॥ १

वह कुल पवित्र है वह देश पावन है जहाँ रिके दास जन्म लेते हैं वणाभिमानसे कोई पावन नहीं हुआ और कनिष्ठ जातियोंमें भी साधु महात्मा हुए हैं तुकारामजी इते हैं .

अ त्यजादि भी हरि भजनसे तर गये, पुर ण उनके भा बन गये लाधार वै्य था गोरा कुम्हार था वागा और रैदास चमार थे कबीर जुलाहा था लतीफ मुसलम न था विष्णुदास सेनानाई था कान्हूपात्रा वेश्या था दाहू धुनिया था पर भगवान्‌के चरणोमे भगवद्भजनमे कोई भेद नही चोखामेला और बङ्का महार थे पर सर्वेश्वरके साथ उनका मेल था नामाकी दासी जनाकी कैसी भक्ति थी ि पण्ढरिना उसके साथ भो न करते थे मैराल जनकका कुल क्या श्रे था पर उसकी भक्ति महिमाका बखान कहाँतक करूं ? तात्पर्य यह है कि विष्णुदासोंके लिये जात कुजात नही है, यह वेद शास्त्रोका निर्णय है तुका इता है आपलोग ग्रन्थोंमें देखिये कितने पतित तर गये जिनकी कोई सख्या नही

(२१) भगवान् भावके भूखे हैं, ऊँच नीच भेद उनके हाँ नहीं है

भगवान् ऊँच नीच नहीं देखा करते भक्ति जहाँ देखते हैं वहीं ठहर जाते हैं दासी पुत्र विदुरके यहा उन्होने चावलकी नियाँ खायीं दैत्यके गहाँ रहकर प्रह्लादकी रक्षा की । कबीरसे छिपकर उनके व बुन दिया करते थे । साँवता मालीके साथ खुरपेसे खुरपते थे नर रि नारके यहा सुनारी करते थे नामाकी जनाके साथ गोबर बटोरते थे और धर्माके यहाँ ाड़ते बुहारते और पानी भरते थे नामाके सा नि सङ्कोच होकर भोजन करते और ज्ञानदेवकी भीत खींचते थे सारथी बनकर अर्जुनके घोड़े हाँके और प्रेमसे सुदामाके चाव खाये ग्वालोंके यहाँ स्वय ही गौएँ चरायीं और बलिके द्वार पहरा दिये एकनाथका ऋण पटाया और अम्बरीषके लिये गर्भवास भोगा मीराबाईके लिये वि पी गये

और दामाजीका देन भरा। गोरा कुम्हारके मटके बनाये, मट्री ढोयी और नरसी मेहताकी हुण्डी सकारी। और पुण्डलीकके लिये तो भगवान् अभीतक खड़े ही हैं। उनकी लीला धन्य है।'

(२२) 'भक्तऋणी देव बोलती पुराणें' (पुराण कहते हैं कि भगवान् भक्तोंके ऋणी हैं)। पुराणोंका यह वचन कैसे सत्य है, यह बतलाते हुए तुकारामजीने कबीर, नामदेव एकनाथ और भानुदासके दृष्टान्त दिये हैं। कबीर एक नया बुना हुआ कपड़ा बेचनेके लिये बाजार चले; रास्तेमें एक दीन याचक मिला, आधा वस्त्र फाड़कर उन्होंने उसे दे दिया। पीछे एक ब्राह्मण मिले (जो ब्राह्मणवेषधारी भगवान् ही थे) आधा वस्त्र कबीरने उन्हें दे डाला और खाली हाथ घर लौटे। भगवान्ने उस वस्त्रका मूल्य कबीरको देना चाहा पर कबीरने उसे नहीं लिया।

नामदेवके पास जितना कपड़ा था वह उन्होंने रास्तेके पत्थरोंको भगवान् जानकर बाँट दिया तब भी ऐसी ही बात हुई थी।

एकनाथकी बात तो तुकारामजी कहते हैं कि 'प्रत्यक्ष ही है' कि आलन्दीमें तीन मास बराबर वारकरी भक्तोंको एकनाथ खिलाते पिलाते रहे इससे उनपर ऋण हो गया उसे भगवान्ने ही उतारा।

भानुदासने खेतमें बोनेके लिये जो बीज रख छोड़ा था उसीको पीसकर उन्होंने सन्तोंको खिला दिया तब भगवान्को स्वयं ही उनके खेतकी बोवाई करनी पड़ी।

भक्त संसारमें विख्यात हों और उनके द्वारा जड़ जीवोंका उद्धार हो सके लिये भगवान्ने अनेक अद्भुत लीलाएँ दिखाकर भक्तोंके काम किये हैं

'नामदेवके लिये भगवान्ने अपना देवालय घुमा दिया भगवान्ने उनके हाथों दुग्ध पान किया इससे नामदेव जगत्में विख्यात हुए।

नरसी मेहताकी हुण्डी सकारी धना जाटके खेत बो दिये मीराबाईके लिये विषपान किया लाखा कोलाटका ढोल पीटा कबीरके कपड़े बुन दिये कुम्हारके बच्चेको जिला दिया अब तुका आपके चरणोंमें बार बार विनती करता है कि हे पण्ढरिनाथ मुझपर भी दया करो

२१ उपसहार

यह प्रकरण बहुत बढ गया। परन्तु तुकारामजीके अध्ययनका यथार्थ स्वरूप हर पहलूसे पाठकोके ध्यानमे आ जाय इसीके लिये इतना विस्तार किया है। इससे नये और पुराने दोनो प्रकारके विचारवालोंको अपने कुविचार बदलने पड़गे। पुराने विचारके अनेक लोगोंकी यह धारणा थी कि तुकारामजीको ग्र थ पढनेकी कोइ आवश्यकता नहीं थी उन्होंने कोई ग्रन्थ पढे भी नहीं इतना ही नही बल्कि वह लिखना पढना भी नहीं जानते थे पर यह धारणा गलत है यह बात उपर्युक्त विवेचनसे स्पष्ट हो गयी होगी और सबके ध्यानमे यह बात आ गयी होगी कि तुकारामजी केवल लिखना पढना जानते थे बल्कि उन्होंने गीता भागवतादि सस्कृत ग्रन्थों तथा ज्ञानेश्वरी नाथ भागवतादि प्राकृत ग्रन्थोंका बड़ी आस्था और सूक्ष्मताके साथ अध्ययन किया था कुछ थोड़े से ही ग्रन्थ उन्होंने देखे पर बहुत अच्छी तरहसे देखे इस विषयमें भी अब किसीको कोई सन्देह नहीं रह जायगा कि भागवत जैसे ग्रन्थोंको पढते पढते उन्हें सस्कृत भाषाका इतना बोध हो गया था कि वह भागवतके श्लोकोंका भावार्थ अनायास समझ लेते थे 'पुराण देखे दर्शन ढूँढे यह उन्हींका कथन है और इससे यह पता चलता है कि उनका अध्ययन कितनी उच्च कोटिका था उस मानेमे भी तुकाराम जैसे शूद्रको समाजसे ऐसा अध्ययन करनेका अवसर मिलता था और तुकाराम जैसे प्रज्ञावान् पुरुष उससे लाभ उठाते थे इस बातको देखते हुए भी जो लोग यह कहा करते हैं कि हिंदू समाजने स्त्री शूद्रादिको बूझकर
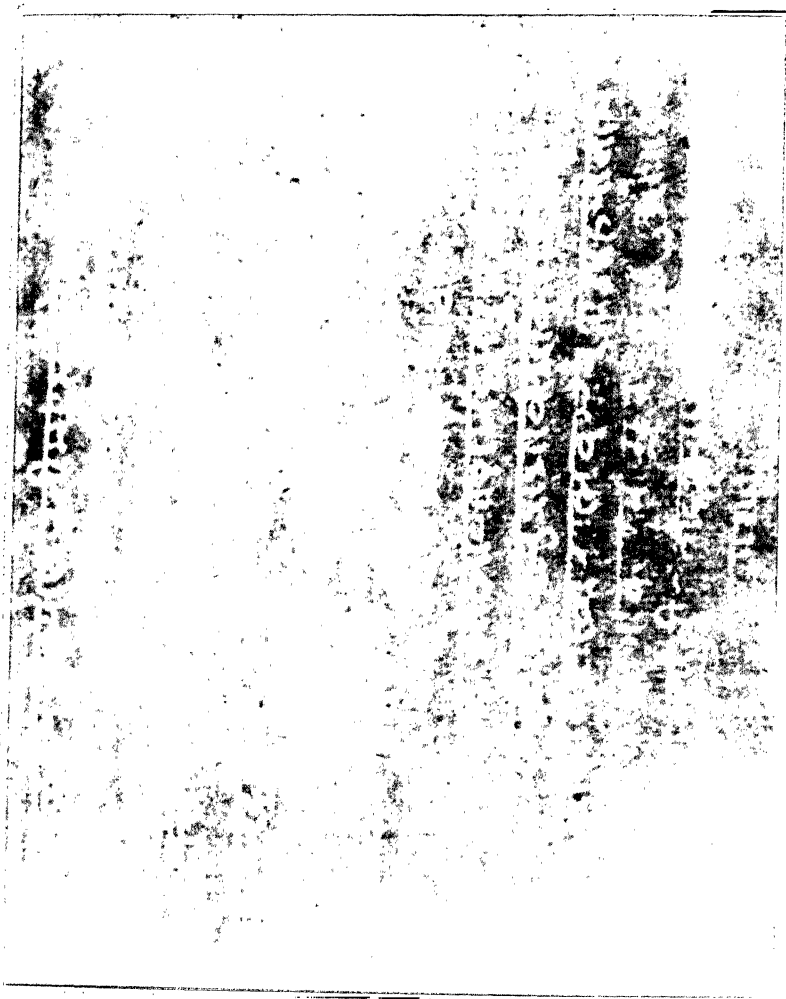
अज्ञानमें ही रखा उनका यह कहना केवल मिथ्या प्रलाप है *। इसी प्रकार तुकाराम महाराजकी शि या बहिणाबा समर्थ रामदास स्वामीकी शिष्याएँ आक्का और वेणू ज्ञानेश्वरकालीन मुक्ताबाई और जनाबाई आदिके शिक्षा अध्ययन और ग्र थकर्तृत्वको देखते हुए यह कैसे कहा जा सकता है कि हिन्दू-समाजने स्त्रियोंके मानसिक उत्कर्षकी ओर ध्यान नहीं दिया ! ज्ञानस्रोतस्वतीसे ज्ञानामृत लेकर पान करनेका अधिकार सबको सभी समय है परन्तु ज्ञानगङ्गोदक पान करनेकी इच्छा और अवसर सभीको नहीं होता, इस कारण क्या ब्राह्मण और क्या शूद्र सभी जातियोंपर अविद्याका प्रभाव ही अधिक पड़ा हुआ सर्वत्र दिखायी देता है अस्तु

तुकारामजीकी साक्षरता और अध्ययनके विषयमें पुराने विचारके लोगोंकी जैसी एक भ्रान्त धारणा थी वैसी उन आधुनिक विद्वानोंकी मति भी ठीक नहीं है जो तुकारामजीको ज्ञानेश्वर और एकनाथकी परम्परासे अलग कराया चाहते है ज्ञानेश्वर और एकनाथकी वाक्तरङ्गिणीमें तुकाराम किस चावसे डुबकियाँ लगाते थे यह हमलोग देख चुके हैं कोई भी ग्र थकार अपने पूर्वजोंसे प्राप्त सञ्चित नको सुरक्षित रखकर ही उसकी वृद्धि करता है इससे किसीकी प्रतिष्ठामें कोई बाधा नहीं पड़ती बाप दादोंसे मिली हुई सम्पत्तिको अपने

* तुकारामजीके पूर्व संवत् १ २१ में शिङ्गणापुरके कवि महालिङ्गदासने 'विक्र तीसी' नामका एक ओवीबद्ध ग्रन्थ लिखा जो २ वर्ष पहले मैं देख चुका हूँ संवत् १७५५ में अवन्तिसुत काशीने द्रौपदीस्वयंवर ... ग्रन्थ लिखा जो प्रसिद्ध ही है ये दोनों लेखक शूद्र थे

[शूद्रोंको या स्त्रियोंको ज्ञान प्राप्त न हो यह लक्ष्य तो हिन्दू-समाजका कभी नहीं था प्रत्युत अपने अपने धर्मको करते हुए सब परमात्माको प्राप्त करें यही हिन्दू-समाजका प्रधान लक्ष्य रहा है भाषान्तरकार]

अधिकारमें करके उसे भोगते हुए और बढाना सत्पुत्रोंका तो काम ही है ज्ञानेश्वर महाराजने व्यासदेवग्रथित गीताको ग्रहणकर उसे अपनी प्रतिभाके आभूषण पहनाये एकनाथ महाराजने ज्ञानेश्वरी और भागवतको आत्मसात् करके उनसे अपनी वाणी रञ्जित की और तुकाराम महाराजने ज्ञानेश्वर एकनाथद्वारा निर्मित रत्नोंकी खानिका स्वत्वाधिकार प्राप्त किया और उनसे अपने अभगांके हीरे निकालकर उनसे ससारको चकित कर दिया यह क्रम अनादिकालसे चला आया है और ऐसे विजयवीर्यशा ी पूर्वजोंके कुलमे हमलोग उत्पन्न हुए हैं यह अपना धन्य भा य सम ना चाहिये परन्तु कुछ लोग जो तुकारामजीको ज्ञानेश्वर एकनाथसे अलग करना चाहते हैं उनकी यह चेष्टा देखकर बड़ा अचरज होता है ज्ञानदेव नामदव एका तुका श्रीपाण्डुरङ्ग भगवान्‌के कानके चार मोतियोंकी चौकडी है जो सर्वजनमान्य, सर्वप्रिय और सर्वपूज्य है इसे कोई तोड़-फोड़ नहीं सकता श्रीज्ञानेश्वर हाराज सब सन्तोंके मुकुटमणि हैं ज्ञानामाईका दुग्धपान कर बहुतेरे अध्यात्म बलसे बलवान् हुए ज्ञानेश्वरके शि ष्य विसाजी खेचर नामदेवके गुरु थे अर्थात् ज्ञानेश्वर नामदेवके परम गुरु थे एक और नामदेव विक्रमकी १६ वीं श ाब्दीमें हुए हैं उन्होंने ओवियोंमें महाभारतके कुछ पर्व कुछ अभग और कुछ सन्त चरित्र लिखे हैं नामदेवके अभगोंका ो ग्रह पा है उसमें मूल नामदेव और इन पीछेके नामदेव दोनोंकी कविताएँ एक दूसरीमें मि गयी हैं और उनसे बड़ा भ्रम फैलता है तथापि ज्ञानेश्वर समकालीन नामदेव ही सर्वसन्तमान्य नामदेव हैं इसमें कोई स देह नहीं ज्ञानेश्वर नामदेव और एकनाथ इसी परम्परामें तुकारामजी आ जाते हैं इस अध्यायमें हमलोग यह देख चुके हैं कि ज्ञानेश्वरी और एकनाथी भागवतके साथ कारामजीका कितना घनि अन्तरङ्ग परिचय था इस घनिष्ठताको कोई कैसे

कर सकता है कैसे तुकारामको ज्ञानेश्वर और एकनाथसे अलग कर सकता है ? नामदेव और तुकाराम ही भक्ति पन्थके प्रवर्तक हुए और ज्ञानेश्वर एकनाथका इससे कोई सम्बन्ध नहीं, यह त्रिखण्ड पण्डितोंका मत भी भरपूर प्रमाणोंके सामने एक क्षण भी नहीं ठहर सकता।

यह भागवत सम्प्रदाय बहुत प्राचीन है, ज्ञानेश्वर महाराजसे भी बहुत पहलेका है इस सम्प्रदायके मुख्य प्रचारक अवश्य ही ज्ञानेश्वर नामदेव एकनाथ और तुकाराम हुए। श्रेष्ठ पुरुषोंमें भागवत धर्मकी निष्ठा है पर व्यक्तिनिष्ठ सम्प्रदाय नहीं है, यह भगवान् श्रीकृष्णके उपासकोंका सम्प्रदाय है श्रीकृष्णकी उपासना इस सम्प्रदायका परमधर्म है। जो कोई भी श्रीकृष्ण भक्त होगा वह इस सम्प्रदायमें सम्मान्य है उसकी जाति या वर्ण कुछ भी हो। ज्ञानेश्वर महाराज केवल इस कारण मान्य नहीं हैं कि वह ब्राह्मण थे प्रत्युत इस कारणसे पूज्य हैं कि वह परम कृष्ण भक्त थे नामदेव और तुकाराम भी इसी कारणसे मान्य हैं। भागवत सम्प्रदायमें जाति पाँतिका बखेड़ा नहीं है और जाति द्वेष और जातिस्मर भी नहीं है। उपर्युक्त चार प्रधान महामान्य महन्तोंके समान ही नरहरि सुनार, रैदास चमार सजन कसाई सूरदास कबीर वेश्या कान्हूपात्रा, चोखामेला महार भानुदास, कान्हू पाठक मीराबाई, गोरा कुम्हार दादू धुनिया शेखमहम्मद, मुक्ताबाई और जनाबाई, बेदरके हाकिम दामाजी दौलताबादके किलेदार जनार्दन स्वामी, साँवता माली तुलाधार वैश्य आदि सभी भगवद्भक्तोंको यह सम्प्रदाय परमपूज्य मानता है हरिभक्तकी जाति नहीं पूछी जाती, वृत्ति नहीं पूछी जाती, पूर्व चरित्र भी नहीं पूछा जाता हरि भक्तिकी कसौटीपर जो कोई बावन तोले पाव रत्ती उतरे उसीको सन्त मानते हैं इन सच्चे सन्तोंमें भी ज्ञानेश्वर नामदेव एकनाथ तुकारामको सन्तोंने ही महाराष्ट्रमें अग्रगण्य माना है जातिके अभिमान या द्वेषसे इस चौकड़ीको कोई तोड़कर

अलग करना चाहे तो यह सम्भव नहीं है ज्ञानदेव नामदेव एका तुका' अथवा निवृत्ति ज्ञानदेव सोपान मुक्ताबाई ' एकनाथ नामदेव तुकाराम' ये भजन ही जो महाराष्ट्रकी सर्वसम्मतिसे बने हुए भजन है इस बातके साक्षी हैं कि यह चतुष्टय एक है एकात्म भावसे इ हें वन्दनकर हम यह प्रकरण समाप्त करते हैं

यहाँतक तुकारामजीके ग्र थाध्ययन । विचार हुआ सस्कृतग्र थोंमे गीता भागवत कुछ पुराण भर्तृहरिके शतक और महिम्नादि स्तोत्र और मराठीमें ज्ञानेश्वरी नाथ भागवत नामदेव कबीरादि सन्तोंके पद्योंक सूक्ष्म अ ययनका तुकारामजीके आचार विचारपर तथा भाषापर भी बडा भारी प्रभ व पड़ा है यह बात पाठकोंके ध्यानमें अ छी तरहसे आ गय होगी जिनके ग्र थोंका उन्होंने अनेक बार आदर और विश्वासके साथ पारायण किया जिनकी उक्तियों और उनके अन्तर्गत भावना प्रधान सुविचारोंके साथ वह मनसे २ ने तन्मय हो गये जिनकी कथित भक्ति ज्ञान वैराग्यपूर्ण सत्कथाओंके साथ उनका पूण तादात्म्य हो गया उन्हींकी विचार पद्धति और भाषाशैलीका अभ्यास उन्हें भी हो गया इसमें आश्चर्यकी कोई बात नहीं यह तो वही हुआ जो होना चाहिये था परमार्थकी रुचि उत्पन्न होनेपर कुल परम्पराप्राप्त था सहजसुलभ पण्ढरीके वारकरी सम्प्रदायका साधन पथ तुकारामजीने हृदयकी सच्ची लगनके साथ ग्रहण किया और इसी पथपर चलते हुए इस पन्थके ज्ञानेश्वर नामदेव एकनाथादि पूर्वाचार्यके न्थोंका उन्होंने अध्ययन किया और इनके द्वारा निर्दि मार्गसे जाकर भगवत्कृपाके पूण अधिकारी हुए और अन्तमे भक्तिके उत्कर्षसे सद्धर्मके आचरणसे तथा प्रबोधकी चि से उन्हींकी मालिकामें जा बैठे

सातवाँ अध्याय

गुरु कृपा और कवित्व स्फूर्ति

सपनेमें पाया गुरु उपदेश। नाममें विश्वास दृढ धरा।

तुकाराम

१ विषय प्रवेश

बड़ी उत्कण्ठाके साथ तुकारामजीका अभ्यास चल रहा था। वे सबसे यही जानना चाहते थे कि कब भगवान् मुझपर कृपा करेंगे। क्या भगवान् मेरी लाज रखेंगे? वह यह जाननेके लिये अत्यन्त अधीर हो उठे थे कि 'क्या मेरा भी उद्धार होगा?' 'क्या नारायण मुझपर अनुग्रह करेंगे?' वे चाहते थे किसी ऐसे महात्माके दर्शन हो जायँ जिनसे यह आश्वासन मिले कि हाँ, भगवान् तुझपर कृपा करेंगे। उनका चित्त विकल था यह जाननेके लिये कि कब मेरी बुद्धि स्थिर होगी, कब भगवान्का रहस्य मैं जान लूँगा, कैसे यह शरीर छूटनेसे पहले नारायणसे भेंट होगी, कब उनके चरणोंपर लोटूँगा, कब उनके लिये गद्गद कण्ठ होकर मैं अपना देह भाव भूलूँगा, कब वह मुझे अपनी चारों भुजाओंसे गले लगावेंगे, कब ये नेत्र उनका स्वरूप देखकर शान्ति और तृप्ति लाभ करेंगे, बस यही एक धुन थी। वह अपने ही मनसे पूछते कि कब मुझे ऐसे सत्पुरुष मिलेंगे जिन्होंने भगवान्के दर्शन किये हों, जिनके लिये प्रपञ्च छोड़ा, बहीखाता इन्द्रायणीमें डुबा दिया, धनको गोमां...

समान माननेकी शपथ की घर द्वारतक छोड दिया स्वजनोंमे कुख्याति लाभ की एकान्तवास किया और वायुवेगसे ग्रन्थाध्ययन तथा राम कृष्ण हरी'का सतत भजन किया वह विश्वाधारक पाण्डुरङ्ग कहाँ कैसे मिलेंगे ? यह कौन बतलावेगा ? वह सत्पुरुष कब मिलेंगे जिन्होंने पाण्डुरङ्ग के दर्शन किये हों ? इसी प्रतीक्षामें तुकारामजीके प्राण उथल पुथल कर रहे थे भगवान् कल्पवृक्ष है चिन्तामणि है चित्त जो जो चिन्तन करे उसे पूरा करनेवाले हैं यह अनुभव जो सभी भक्तोंको प्राप्त होता है, इस समय तुकारामजीको भी प्राप्त हुआ उन्हें महात्माके दर्शन हुए, स्वप्नमें दर्शन हुए और उन्होंने तुकारामजीके मस्तकपर हाथ रखा तुकारामजीको जो मन्त्र प्रिय था वही राम कृष्णमन्त्र उन्होंने इनको दिया और तुकारामजीके जो परमप्रिय इष्ट थे पाण्डुरङ्ग उन्हींकी निष्ठापूर्वक उपासना करनेको उन्होंने इनसे कहा तुकारामजीको यह विश्वास हो गया कि मैं जिस रास्तेपर चल रहा था वह ठीक ही था राम कृष्ण हरीका भजन पहलेसे ही हो रहा था पर वही मन्त्र अब अधिकारी महात्माके मुखसे प्राप्त हुआ उपासनाका रहस्य खुला निश्चय दृढ हुआ चित्त समाहित हो गया न्यायालयसे मामलेका क्या फैसला होगा यह तो पक्षकारोंको पहलेसे ही मालूम रहता है वकील भी बतलाते रहते हैं पर जबतक जजके मुहसे फैसला नहीं सुना जाता तबतक चित्त स्वस्थ नहीं होता कुछ वैसी ही बात यह भी है अधिकारी पुरुषके मुखसे जब मन्त्र सुना जाता है अथवा धीर पुरुषसे जब कोई आशीर्वाद मिलता है तब उससे जीवको शान्ति मिलती है उसे अपने रास्ता सही होनेका विश्वास हो जाता है ग्रन्थ पढकर भी जो बात समझमे नहीं आती वह एक क्षणमें ध्यानमे आ जाती है बुद्धि जहाँ पहुँच नहीं पाती उस पदका साक्षात्कार होता है स्वानुभवप्राप्त साक्षात्कारसम्पन्न महात्माके एक क्षण समागमसे सब काम बन जाता है पारमार्थिक

कृतविद्य महापुरुषके दर्शनमात्रसे परमार्थ रोम रोममें भर जाता है। तुकारामजीके पुण्यबलसे उन्हें ऐसा अपूर्व शुभ संयोग प्राप्त हुआ।

२ सद्गुरु बिना कृतार्थता नहीं

सद्‌गुरु प्रसादके बिना कोई भी अपना परमार्थ सिद्ध नहीं कर सका है। जो लोग यह समझते हैं कि हमने ग्रन्थोंका अध्ययन कर लिया है, परोक्ष ज्ञान हमें मिल चुका है, हमें अपनी बुद्धिसे ही ज्ञानका रहस्य अवगत हो चुका है, अब हमें किसीको गुरु बनानेकी क्या आवश्यकता है? हम जो कुछ जानते हैं उससे अधिक कोई गुरु भी क्या बतलावेगे? जो लोग ऐसा समझते हैं वे अन्तमें अहङ्कारके जालमें ही फँसे हुए दिखायी देते हैं। गुरु कृपाके बिना रज तम धुलकर निर्मल नहीं होते। ज्ञान अर्थात् आत्म ज्ञानमें पूर्ण और दृढ़तम निष्ठा भी नहीं होती। ज्ञानका साक्षात्कार होना तो बहुत दूरकी बात है। ज्ञानेश्वर महाराज(अ० १० १७ में)कहते हैं कि 'समग्र वेद शास्त्र पढ़ डाले, योगादिकोंका भी खूब अभ्यास किया, पर इनकी सफलता तभी है जब श्रीगुरुकी कृपा हो।' कमाई तो अपने ही परिश्रमकी होती है तथापि उसपर जबतक श्रीगुरु कृपाकी मुहर नहीं लगती तब तक भगवान्‌के दरबारमें उसका कोई मूल्य नहीं होता। अत्यन्त सूक्ष्म और विशुद्ध बुद्धिके द्वारा ज्ञान प्राप्त होनेपर भी दीपकसे पैदा होनेवाले काजलके समान ज्ञानसे उत्पन्न होनेवाला अहङ्कार सद्‌गुरुके चरण गहे बिना निःशेष नष्ट नहीं होता। श्रीराम और श्रीकृष्णको भी श्रीगुरु चरणोंका आश्रय लेना पड़ा, तब औरोंकी तो बात ही क्या है? वेद, शास्त्र, पुराण और सन्त सब इस विषयमें एकमत हैं। श्रुतिकी यह आज्ञा है कि 'श्रोत्रिय' अर्थात् श्रुति शास्त्र निपुण और 'ब्रह्मनिष्ठ' अर्थात् स्वानुभवसम्पन्न सद्‌गुरुकी शरण लो, उससे ब्रह्मविद्याका अनुभव प्राप्त करोगे। 'शाब्दे परे च निष्णातं ब्रह्मण्युपशमाश्रयम्' ऐसे सद्‌गुरुकी शरण

लेनेको भागवतकारने कहा है और गीतामें भगवान्‌ने भी तद्विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया' कहा है आचायवन् पुरुषो वेद आत्मवेत्ता महापुरुषके चरण गहनेको वेदोंने कहा है और श्रीमत् ङ्कर चार्य भी यही कहते हैं

डङ्गादिवेदो मुखे श स्त्रविद्या
वित्वादि सुप करोति
गुरोरङ्घ्रिप नश्चेन्न न
तत विं किं किं किम्

म द् भाग्यसे सद्‌गुरुके दर्शन होते है और जब ऐसे दर्शन हो तब अनन्य मन हो उनकी शरणमें जाना और यथा देवे तथा गुरौ अ ात् भगवान्‌के समान ही उनका पूजन और भजन करना सनातन रीति है सद्‌गुरु सदा तृप्त ही रहते हैं इससे अधिकारी जीवोंपर उन्हे करुणा आती है कहते हैं

मेरा पेट तो भरा पर अब ऐसी प्यास लगी है कि अ य जीवोंकी आस पूरी करूँ नावका भार आखिर जलपर ही रहता है वह भार चाहे ह का हो या भारी इससे क्या

अपरम्पार स्वानन्द समुद्रमे चलनेवाली गुरुरूप नौकाके लिये दो चार यि ोंका भार ही क्या ? दो चार चढ लिये य दो चार उतर गये तो इसका उसपर बोझ ी क्या ? सच तो यह है ि सद्‌गुरुको सत् शिष्यके मिलनका ही आनन्द है इससे अद्वैत नुभवक आन द द्वैतरूपमें वह भोग सकते हैं गीता ने रीमें अजुनके प्रश्न करनेपर भगवान् य कहकर अपन आनन्द व्यक्त करते हैं कि हे अजुन तुम प्रश्न करके मुझे मेरा व आनन्द दिला रहे हो जो अद्वैता नन्दके भी परे है (ज्ञानेश्वरी १५ ४९) अबाध शब्द परिपूर्ण

स्वानुभव उत्तम प्रबो क्ति दैवी दयालुता और परमा शान्ति ये पाँचों गुण श्रीगुरुमें नि वास करते हैं एकनाथी भागवत (अ ३) में श्रीगुरुके ल ण बत ाते हैं कि 'वह दीनोंपर तन मन और वाणीसे बड़े दयालु होते हैं ि ष्यके भव बन्धन काट डालते हैं अ ङ्कारकी ावनी उठा देते हैं वह द ज्ञानमें पारङ्गत होते हैं ब्रह्मज्ञानमें सद ्रमते रहते हैं, नि भावसे शिष्यको प्रबोध क ानेमें समर्थ होते हैं

गुरु प्रसादके बिना ही कोई सन्त पदवीको प्राप्त हुआ हो ऐसा एक भी पुरुष नहीं है सभी सन्तोंने गुरु प्रसादका महत्त्व और माधुर्य बखाना है गुरु भक्तिके सहस्रों अवतरण दिये जा सकते हैं, पर विस्त र भयसे सक्षेप ही करना पड़ता है गुरु स्तुतिका साहित्य बहुत बड़ा है वह अनुभवका साहित्य है और अत्यन्त हृदयङ्गम है ! जिसे गुरु प्रस द मिला हो गुरु सेवाका परमान द जिसने भोग किया हो वही उसकी माधुरी जान सकता है ज्ञानदेव और एकनाथ दोनोंने ही गुरु भक्तिकी अपूर्व और अपार माधुरी पायी थी इन्होंने सद्गुरु समा ाम और सद्गुरु सेवाका आन द खूब ूटा दोनोंके ग्र थोंमें सब मङ्गल चरण श्रीगुरु स्तवन पर हैं और वे अ यन्त मधुर हैं श्रीमद्भगवद्गीताके १३ वें अध्यायमें ७ वें ्लोकका 'आचार्योपासनम्' पद देखते ही श्रीज्ञाने ्वर महाराजकी गुरु भक्तिकी धारा हाप्रवाहके रूपमें ो उमड पड़ी है वह सौ ओवियोंको पार करके भी उनके रोके नहीं रुकी है उनकी गुरु भक्तिका आन द जि हें लेना हो वे श्रीज्ञानेश्वर चरित्रमें उपासना और गुरु भक्ति' अध्याय पूरा पढ जायँ उसी प्रकार एकनाथ महाराजकी गुरु भक्तिका जि हें दर्शन करना हो वे एकनाथ चरित्र देखें गुरु भक्तके लिये गुरु और उपास्य एक होते हैं ज्ञानेश्वर और एकनाथने श्रीगुरु मूर्तिमें ही भगवान्के दर्शन किये तुकारामजीने भगवान्हीको श्रीगुरु देखा गुरु साक्षात् परब्रह्म हैं और परब्रह्म परमात्मा ही गुरुके सगुण

रूपमें साधकको कृतार्थ करते हैं गुरु प्रसादके बिना कोई साधक कभी कृतार्थ नहीं हुआ श्रीगुरु बोलते चालते ब्रह्म हैं उनकी चरणधूलिमें लोटे बिना कोई भी कृतकृत्य नहीं हुआ

३ स्वामी विवेकानन्दका अनुभव

आधुनिक कालके सुविख्यात सत्पुरुष स्वामी रामतीर्थ और स्वामी विवेकानन्द भी श्रीगुरुके शरणागत होकर ही कृतार्थ हुए स्वामी विवेकानन्द अपने भक्ति योग विषयक प्रबन्धमें कहते हैं गुरुकी कृपासे मनुष्यकी छिपी हुई अलौकिक शक्तियाँ विकसित होती हैं उन्हें चैतन्य प्राप्त होता है और उनकी आध्यात्मिक वृद्धि होती है और अन्तमें वह नरसे नारायण होता है आत्म विकासका यह कार्य ग्रन्थोंके पढनेसे नहीं होता जीवनभर हजारों ग्रन्थोंको उलटते पलटते रहो उससे अधिक से अधिक तुम्हारा बौद्धिक ज्ञान बढेगा पर अन्तमें यही जान पड़ेगा कि इससे अध्यात्म बल कुछ भी नहीं बढा बौद्धिक ज्ञान बढा तो उसके साथ अध्यात्म बल भी बढना ही चाहिये यह कोई कहे तो वह सच नहीं है ग्रन्थोंके अध्ययनसे इस प्रकारका भ्रम होता है पर सूक्ष्मताके साथ अवलोकन करनेसे यह जान पड़ेगा कि बुद्धिका तो खूब विकास हुआ तो भी अध्यात्म शक्ति जहाँ की तहाँ ही रह गयी आध्यात्म शक्तिका विकास करानेमें केवल ग्रन्थ असमर्थ हैं और यही कारण है कि अध्यात्मकी बात करनेवाले लोग बहुत मिलते हैं पर कहनीके साथ रहनीका मेल हो ऐसा पुरुष अत्यन्त दुर्लभ है किसी जीवको आध्यात्मिक सस्कार करानेके लिये ऐसे ही महात्माकी आवश्यकता होती है जो जीवकोटिसे पार निकल गया हो यह ताकत ग्रन्थोंमें नहीं है आध्यात्मिक सस्कार जिसका होता है वह है शिष्य और संस्कार करनेवाला है गुरु भूमि तपकर खेत जोतकर तैयार हो और बीज भी शुद्ध हो ऐसे उभय-संयोगसे ही

अध्यात्मका विका होता है अध्यात्मकी तीव्र क्षुधाके लगते ही अर्थात् भूमिके तैयार होते ही उसमें ज्ञान बीज बोया जाता है सृष्टिक यही नियम है आत्मप्रकाश ग्रहण करनेकी क्षमता सिद्ध होते ही प्रकाश पहुँचानेवाली शक्ति प्रकट होती है सत्यज्ञानानन्द स्वरूप सद्गुरुको ससार ईश्वर तुल्य मानता है शि य शुद्धचित्त, जिज्ञासु और परिश्रमी होना चाहिये जब शिष्य अपनेको ऐसा बना लेता है तब श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ, निष्पाप, दयालु और प्रबोधचतुर समर्थ सद्गुरु उसे मिलते हैं सद्गुरु शिष्योंके नेत्रोंमे ज्ञानाञ्जन लगाकर उसे दृष्टि देते हैं। ऐसे सद्गुरु बड़े भावसे जब मिले तब अत्यन्त नम्रता विमल सद्भाव और दृढ विश्वासके साथ उनकी शरण लो, अपना सम्पूर्ण हृदय उ हें अर्पण करो उनके प्रति अपने चित्तमें परम प्रेम धारण करो उ हे प्रत्यक्ष परमेश्वर समझो इससे भक्ति ज्ञानका अपना समुद्र प्राप्तकर कृतकृत्य होगे महात्मा सिद्ध पुरुष ईश्वरके अवतार ही होते हैं वे केवल स्पर्शसे एक कृपा कटाक्षसे केवल सङ्कल्पमात्रसे भी शिष्यको कृतार्थ करते हैं, पर्वतप्राय पापोंका बोझ ढोनेवाले भ्रष्ट जीवको भी अपनी दयासे क्षणार्धमे पुण्यात्मा बनाते हैं। वे गुरुओंके गुरु हैं मनु यरूपमें प्रकट होनेवाले साक्षात् नारायण हैं मनु य इ हींके रूपमें परमात्माको देख सकता है भगवान् निर्गुण निराकार हैं। पर हमलोग जबतक मनुष्य हैं तबतक हमे उन्हें मनु यरूपमे ही पूजना चाहिये। तुम जो चाहो कहो चाहे जितना प्रयत्न करो, पर तुम्हें मनुष्यरूपी (सगुण) परमेश्वरका ही भजन करना होगा निर्गुण निराकारका पाण्डित्य चाहे कोई कितना ही बघारे सगुणका तिरस्कार करे, अवतारोंकी नि दा करे सूर्य चन्द्र तारागणोंको दिखाकर बुद्धिवादसे उ हींमे देवत्व देखनेको कहे पर उसमे यथार्थ आत्मज्ञान कितना है यह यदि तुम देखो तो वह केवल शून्य है हमलोग मनुष्य है परमात्मा हमसे सगुणरूपमें सद्गुरुरूपमे ही

मिलते हैं इसमें कुछ भी सन्देह नहीं।' (स्वामी विवेकानन्दके समग्र ग्रन्थ भाग २ पृ० ५१६-५२१ मूल अंग्रेजीसे)

स्वामी आगे और कहते हैं 'भगवान्‌से मिलनेकी इच्छा करनेवाले मुमुक्षुके नेत्र श्रीगुरु ही खोलते हैं। गुरु और शिष्यका सम्बन्ध पूर्वज और वंशजके सम्बन्ध जैसा ही है। श्रद्धा, नम्रता, शरणागति और आदरभावसे शिष्य गुरुका मन मोह ले तो ही उसकी आध्यात्मिक उन्नति हो सकती है। और विशेषरूपसे ध्यानमें रखनेकी बात यह है कि जहाँ गुरु-शिष्यका नाता अत्यन्त प्रेमसे युक्त होता है वहीं प्रचण्ड अध्यात्म-शक्तिके महात्मा उत्पन्न होते हैं। स्वानुभूति ज्ञानकी परम सीमा है। वह स्वानुभूति ग्रन्थोंसे नहीं प्राप्त हो सकती। पृथ्वी-पर्यटनकर चाहे आप सारी भूमि पादाक्रान्त कर डालें, हिमालय, काकेशस, आल्प्स पर्वत लाँघ जायँ, समुद्रकी गहराईमें गोता लगाकर बैठ जायँ, तिब्बत देश देख लें या गोबीका जंगल छान डालें, स्वानुभवका यथार्थ धर्म-रहस्य इन बातोंसे श्रीगुरुके प्रसादके बिना त्रिकालमें भी नहीं ज्ञात होगा। इसलिये भगवान्‌की कृपासे जब ऐसा भाग्योदय हो कि श्रीगुरु दर्शन दें तब सर्वान्तःकरणसे श्रीगुरुकी शरण लो, उन्हें ऐसा समझो जैसे यही परब्रह्म हों, उनके बालक बनकर अनन्यभावसे उनकी सेवा करो, इससे तुम धन्य होगे। ऐसे परम प्रेम और आदरके साथ जो श्रीगुरुके शरणागत हुए, उन्हींको और केवल उन्हींको सच्चिदानन्द प्रभुने प्रसन्न होकर अपनी परमभक्ति और अध्यात्मके अलौकिक चमत्कार दिखाये हैं।'

४ हीरेकी खोज

तुकारामजीका परमार्थ ऊपर-ही-ऊपरका नहीं था, इसलिये उन्होंने ऐसी जल्दबाजी नहीं की कि जो मिला उसीको उन्होंने गुरु मान लिया। बहुतोंको उन्होंने कसौटीपर कसकर देखा और दूरसे ही प्रणाम कर विदा

किया जहाँ तहाँ ब्रह्मज्ञानकी कोरी बातें ही सुन पड़ीं कहीं उसका मूर्त लक्षण नहीं देख पड़ा वह सच्चा ब्रह्मज्ञान चाहते थे हाथ पसारकर उन्होंने यही याचना की थी कि

निर्मल काणा राशीं हाय एक रज । तरी द्यावा मज दुर्बळाशीं ।

निर्मल ब्रह्मज्ञान यदि किसीके पास हो तो उसका एक रज कण मुझे दे दो ।'

बड़ी दीनताके साथ उन्होंने यही पुकार की थी पर जहाँ तहाँ उन्होंने दिखावके पर्वत देखे, बिना नींवकी ही दीवार देखी । पाखण्ड और दम्भ देखकर वह चिढ़ गये उन्होंने पाखण्डी गुरुओं और दाम्भिक संतोंकी अपने अभंगोंमें खूब खबर ली है ।

काम क्रोध लोभ चित्तीं । वरिवरि दाविती विरक्ती ।
तुका म्हणे शब्दज्ञानें । जग नाग्वियेलें तेणें ॥ १ ॥

चित्तमें तो काम क्रोध लोभ भरा हुआ है पर ऊपरसे विरक्त बने हुए है कोरे शब्दज्ञानसे संसारको धोखा दे रहे है

डोई वाढवूनि केश । भूतें आणिती अंगास ॥ १ ॥
तरी ते न होती संतजन । तेथें नाहीं आत्मखुण । २

सिरपर जटा बढाये हुए हैं भूत प्रेत बुला लेते है पर वे संतजन नहीं है वहाँ कोई आत्मलक्षण नहीं है ।'

रिद्धिसिद्धीचे साधक । वाचासिद्ध होती एक ।
त्याचा आम्हासी कंटाळा । पाहों नावडती डोळा

कोई ऋद्धि सिद्धिके साधक हैं कोई वाक् सिद्ध हैं पर इन सबसे हमारा जी ऊबा हुआ है इन्हें हम आँखों नहीं देखना चाहते ।'

दावुनि वैरा याची कळा । भोगी विषयाचा सोहळा
ज्ञान सागतो जन सी । अनुभव नाही आपणासी । १

वैरा यकी चमक दिखा देते हैं पर विषयोंको ही भोगते रहते हैं लोगोंको ज्ञान बतलाते हैं पर स्वय अनुभव कुछ भी नहीं करते

* *

ऐसे दाम्भिक अधकचरे और पेटू आदमी जहाँ तहाँ भी कौडीके तीन तीन मिलते हैं तुकारामजीकी शुद्ध और सूक्ष्म दृष्टिको स च्चे झूटेका निपटारा करते कितनी देर लगती साधारण मनुष्य ऊपरी दिखावमें फँसते हैं पर तुकारामजी फँसनेवाले नहीं थे न व्हती ते सत करिता कवित्व वाले अभगमें व९ बतल ते हैं कि जो कविता करते हैं वे सत नहीं हैं सतोंके घरवाले सत नहीं हैं अपना घर भरकर दूसरोंको निराशाका भाव बतलानेवाले सत नहीं हैं केवल कथा बाँचनेवाले कीर्तन करनेवाले माला मुद्रा धारण करनेवाले भभूत रमानेव ले जगलोंमें रहनेवाले कमठ जप तप करनेवाले सत नहीं हैं ये सब बाह्य लक्षण हैं इनसे किसी की साधुता नहीं ज नी जाती

तुका ह्मणे नाहीं निरसला देह । तववरी हे अवघे सासारिक

जबतक देहका निरास नहीं हुआ देहबुद्धि न नहीं हुइ तबतक ये सब सास रिक ही हैं तुक रामजी इन्हें अपने मुखसे सत नहीं कह सकते जबतक इनके अदर द्र यका लोभ और बड़ाईकी इच्छा है जिनका बाह्य वेष साधुका सा है पर अन्त करण विषया क्त है उन्हें तुकाराम जी दूरसे हीरेके समान चमकनेवाले ओले कहते हैं ऐसे बने हुए स अनेक होते हैं पर इनमेंस को२ भी तुकारामजीकी आँखोंमें धूल नहीं झोंक सका

स चे सत बहुत दुर्लभ हैं सतोंको ढूँढ़ते ढूँढ़ते तुकारामजी थक गये

उन ी आ ा निरा ा हो गयी उस समय उनके मुखसे ये उद्गार निकले हैं

ज्ञानियोंके यहाँ भगवान्को ढूँढना चाहा पर देखा यही कि अहङ्कार इन ज्ञ नियोंके पीछे पड़ा है वेद परायण पण्डितों और पाठकोंको देख कि एक दूसरेको नीचे गिरानेमें ही लगे हुए हैं देखनी चाही इनकी आत्मनि ा पर उलटी ही चे ा दिखायी दी योगियोंको देखा उनमें भी ान्ति नहीं मारे क्रोधके एक दूसरेपर गुरगुराया करते हैं इसलिये हे विट्ठल अब मुझे कि ीका मुहताज मत करो मैंने इन सब उपायोंको छोड तुम्हारे चरण दृढतासे पकड़ लिये हैं

५ गुरु ही क्षुको ढूँढ़ते हैं

सत दुर्लभ तो हैं पर अलभ्य नहीं च दन महँगा मिलता है पर मिलता तो है कस्तूरी चाहे जब चाहे हाँ मि ्रीकी तर सस्ती नहीं मिलती पर जिसके पास उसके दाम हैं उसे मिलती ही है हीरे जैसे रत्नों को गरीब बेचारे देख भी नहीं सकते पर धनी उ हें खरीद सकते हैं इसी प्रकार जिसके पास प्रचुर पु य धन है उसे सत्सङ्ग लाभ होता है सत्सङ्ग दुर्लभ है पर अमोघ भी है भाग्यश्रीका जब उदय होना होता है तभी सत मि ते हैं इनमें जि हें भगवान्की आ ा होगी वे स्वय ी चले अ वेंगे और कृतार्थ करेंगे मुमुक्षुको गुरु ढूँढ़ना नहीं पड़ता गुरु ही ऐसे शि योंको जो कृतार्थ होनेयो य हुए हों ढूँढ़ करते हैं फलके परिपक्क होते ही तोत बिना बुलाये ही आकर उसपर चोंच मारता है उसी प्र र विरक्त जीवको देखते ही दयाकुल गुरु दौड़े आते हैं और आत्म-र स्य बतलाकर उसे कृतार्थ करते हैं सब स सद्गुरुस्वरूप ही हैं तथापि सब स्त्रियाँ माताके समान होनेपर भी स्तनपान करानेवाली म ा एक ही होती है से ही सब द्गुरुके मान होनेपर भी स्वानुभवामृ पान

करानेवाली इश्वरनियुक्त सद्गुरु माता भी एक ही होती हैं और मुमुक्षु शिशु जब भूखसे याकु होकर रोने लगता है ब सद्गुरु मातासे एक क्षण रहा नहीं जाता और वह दौडी चली आती और शि को अमृतपान कराती है गुरु ईश्वरनियुक्त होते हैं गुरु शि यका सम्बन्ध अनेक जन्म ज मान्तरोंसे चला आता है और यह गुरु निश्चित मयपर निश्चित शिष्य को कृतार्थ किया करते हैं तुकारामजीके सद्गुरु ब बा ी चै य इसी प्रकारसे भगवदि छानुसार यथाकाल यथोचित रीतिसे तुकारामजीके सामने प्रक हुए और उ हें उन्होंने अपना प्रसाद दिया

६ बाबाजी प्रोपदेश

तुकारामजीको गुरूपदे प्राप्त हुआ उस प्र ङ्गके उनके दो अभग हैं पहला अभग विशेष प्रसिद्ध है उसीका आशय नीचे देते हैं

गुरुराजने सचमुच ही मुझपर बडी कृपा की पर मुझसे उनकी कु भी सेवा न बन पड़ी स्वप्नमें गङ्ग ान (इ ायणी ान) के लिये जाते हुए रास्तेमें वह मिले और उन्होंने मस्तकपर हाथ रखा उन्होंने भोजन के लिये एक पा घी माँगा पर मुझे सका विस्मरण हो गय कु अन राय हो गया इसीसे उन्होंने जानेकी जल्दी की उन्होंने गुरु परम्पराके नाम बताये राघव चैत य और के चैतन्य अपना ना बताया बाबाजी चै य और राम कृ ण हरी मन्त्र दिया माघ शुक्ल दशमी गुरुवारको गुरुका वार सोचकर (इस प्रकार गुरुने) मुझे अङ्गीकार किया

इससे निम्नलिखित बातें मालूम हु

(१) सद्गुरुने तुकारामजीपर अनुग्रह किया और उ हें रामकृ ण हरी ा मन्त्र दिया

(२) यह उपदेश उ हें स्वप्नमें इन्द्रायणीमें ान रनेके लिये जाते हुए प्रा हुआ गुरुने उनके मस्तकपर हा रखा

(३) सद्गुरुने भोजनके लिये एक पा घी माँग पर तुकारामजी घी लाकर देना भू गये ागनेपर तुकारामजीको इस बातका बड़ा दु ख आ कि सद्गुरुकी कुछ भी सेवा न बन पडी और उ हें यही सम पड़ा कि सेवामें प्रत्यवाय होनेसे ही सद्गुरु ल्दीसे चले गये

(४) सद्गुरुने अपनी गुरु परम्परा ब ायी—राघव चै न्य केशव चै न्य और अपना नाम बाबाजी चैतन्य बताया

(५) यह गुरूपदेश तुक रामजीको म घ क्ल द मी गुरुवारको मिला

(६) इस प्रकार सद्गुरुने तुकारामजीको अङ्गीकार किया

तु ारामजा फिर कहते हैं

गुरुराज मेरे मनका भाव जानकर वैसा ही उपाय करते हैं उन्होंने वही सरल मन्त्र बताया जो मु े प्रिय था जिसमें कोई बखेडा नहीं इसी मार्गसे च र अने साधु सत भवसागरसे पार उतर गये जान अजान जो ैसे ि य होते हैं गुरु उ हें वैसा ही उपाय बत ाते हैं शि योंमें कोई नदीके उतारमें तैरने ले कोई सङ्गीके सङ्ग चलनेवाले कोई ा पर चढनेवाले और कोई क रब द कसे रहनेवाले होते हैं जो जैसे होते हैं उन्हें उनके अधिकारके अनुसार वैसा ही उपाय बताया जाता है

तुका कहता है गुरुने मु े कृपासागर पा डुरङ्ग ही जहा दिया इससे तीन बातें मिलीं

(७) मेरे मनका भ व ानकर सद्गुरुने ऐसा प्रिय और सर मन्त्र दिया कि कहीं कोई बखेडा नहीं

गुरूपदेश पानेके पूर्वसे ही तुकारामजी बड़े प्रेमसे श्रीविठ्ठलकी उपा ना करते थे और रा कृ ण हरी ही मन्त्र ा करते थे वि उनके कु देव थे उपास्यदेव । ही प्रिय मन्त्र गुरुने बताया

इससे ोई बखेड़ा नहीं हुआ यदि गुरुने गणे की उपासना और गणे का मन्त्र दिया हो । अथवा अ य किसी देवताके म त्रकी दीक्षा दी होती या योग यागादि साधन करनेको कहा होता तो अव य ही बखेडा होता पहलेसे जो साधना ो रही है उसीको आगे चलानेका गुरुने उपदे दिया इससे तुकारामजीका उत्साह द्विगुण हो गया ऐसा यदि न हो । तो यह ग । आ पड़ । कि पहलेसे जो उपासना चली आ रही है वह कैसे छोड़ दी जाय और गुरुकी बतायी उपासना भी कैसे न की जाय इससे सशय को आश्रय मि सकता था मन विचलित होकर गड़बड़ा सक । था पर गुरुने मु ` कृपासागर प डुरङ्ग ही जहाज दिया मेरा जो प्रिय था वही राम कृष्ण हरी मन्त्र दिया और जो उपासना मैं कर रहा था उसी को निष्ठाके स थ आगे चलानेका उपदेश दिया इससे कोई बखेड़ा नहीं पैदा हुआ

(८) नेक साधु स ज्ञानेश्वर नामदेव एकनाथादि इसी मार्गसे चलकर भवसागर पार कर गये

तु ोबारायको ैसे वि लकी उपासना प्रिय थी राम कृष्ण हरी नाम प्रिय था वैसे ही निश्वर नामदेव एकनाथादिका नित्य ग्र थ सत्सङ्ग भी प्रिय था क्योंि न्हींके थोंका वह नित्य पठन श्रवण और मनन किया करते थे सद्गुरुका ऐसा अनुकूल उपदेश मिलनेसे यह क्रम भी उनका बना रहा गुरुने उ हें दत्तात्रेयका मन्त्र देकर श्रीगुरु चरित्रके पारायण करनेको क । हे त तो उससे भी उनका काम बन जाता पर पूर्व सस्कारसे जो उपासना दृढ हो चुकी थी वह एकदम ोड़ देनी पड़ती और नया साधन नये ढगसे करन पड़ता इससे भी कुछ न कुछ बखेड़ा ी होता इस प्रकार स्वभ से ही प्रिय उपास्य प्रिय मन्त्र और प्रिय सम्प्रदाय परम्परा छोड़नेकी कोई आवश्यकता नहीं पड़ी प्रत्युत उसीको और दृढ रनेका उपदे गुरुसे प्त होनेके कारण कोई बखेड़ा नहीं हुआ

(९) मुझे मेरा प्रिय माग ही सद्गुरुने दिखा दिया पर ॰सका यह मतलब नहीं है कि मेरे सद्गुरु यही एक मार्ग जानते थे या बतलाते थे गुरुराज ो समर्थ हैं वह जान अजान सबको मार्ग बतलानेवाले हैं ो शि य ि स अधिकारका हुआ उसे उसी अधिकारक उपदेश देते हैं उतार सागडी ापे पेटी उतार सग जहा कमरब द ये सभी उपाय बत॰ ाते हैं ॰स चरणका बल्कि य॰ कहिये कि इस अभगका रहस्य सम नेके लिये ज्ञानेश्वरीका आश्रय लेना पड़ेगा गीताके दैवी ह्येषा गुणम ी (अ ७ १४) और तेषा ॰ समुद्धर्ता (अ १२) इन श्लोकोंपर ज्ञाने॰वर महारा की जो ओवियाँ हैं उ हें सामने रखकर इस चरणका अर्थ ठीक लगता है जान अजान सबको अपने अपने अधिकारके अनुसार ही माग बताया जाता है जो अकेले हैं (अथात् ब्रह्मचारी स यासी आदि) उ हें योगमार्ग दिखाते और जो परिग्र ी (गृहस्थ) हैं उ ॰ नाम नौक पर बिठाते हैं माया नदीको तैरकर पार करते हुए को॰ उत र के रास्तेसे जाते हैं अहभाव त्याग कर ऐक्यके उतार से ज ते हैं (ज्ञानेश्वरी ७ १) को॰ वेदत्रयीको सगी बन कर उनके सग चलते हैं (८४) को॰ यजनक्रि का कमरबन्द कमरमें कस लेते हैं (८९) और को॰ आत्म निवेदनके जहा पर चढते हैं तुकारामजाके कथनका तात्पर्य भी य ी है कि समर्थ सद्गुरुके पास सभी साधन मौजूद हैं पर ि यकी रुचि देखकर वैसा इष्ट उसे बतलाते हैं मुझे श्रीगुरुने ऐस ही प्रिय मन्त्र बताया इसलिये इन विविध साधनोंका को॰ मेल न॰ी प

और भी चार पाँच स्थानोंमें गुरूपदेश सम्बन्धी उल्लेख हैं एक स्थानमें कहा है कि श्रीगुरुने कर स्पर्श करके सिरपर हाथ फेरा और कहा कि चि ता मत करो एक दूसरे स्थानमें कहा है कि श्रीगुरुने राम कृष्ण-मन्त्र बताया सब समय वाणीसे यही उच्चार करता हूँ श्रीसद्गुरुने

स्वप्नमें तुकार मजीको द न देकर राम-कृष्ण म त्र बताया इसके सिवा और कुछ भेदकी ब त बतायी हो तो उसे तुकाराम ीने नहीं प्रक किया है स म्प्रदायिक रहस्य खुल्लमखुल्ला को बतलाता भी नहीं

७ दिन र गोसाईं

बाबाजी चैतन्यने तुकारामजीको स्वप्नमें जैसे उपदेश दिया ऐसी ही घटना सके २ वष बाद नगर ि लेमें भिंगारसे उत्तर पूर्व १४ कोसपर द्धेश्वरमें भी हु थी जिसका उल्लेख मराठीसाहित्यमें मौजूद है नुभवदिनकर नामक सु दर थके कर्ता दिनकर गोसावी (गोसाईं) समर्थ श्रीरामदासस्वामीके शिष्य थे यह भिंगारके जो ी थे नका कुल नाम मुळे था पर ज्योतिषी होनेके कारण य पाठक कहलाने लगे दिन रका ऐन यौवनकाल था जब उ हें वैरा य प्र स हुआ और वह अपना ाँव छोड़कर वृद्धेश्वरकी सुरम्य क दरामें ाके १५७४ में जा रहे उस एकान्त स्थ नमें उन्होंने एक वर्ष यथाविधि पुरश्चरण किया शाके १५७५ ी फाल्गुनी पूर्णिमाकी रातमें नाम स्मरण करते हुए उन्हें निद्रा ग गयी दिनकर स्वामी कहते हैं वह जाग्रत्स्वप्ननिद्र न्त तुर्या अवस्था थी मन अ भावसे विनीत था और नेत्र उ मीलित थे उस समय समर्थ श्रीर मदासस्वामीके भेषमें भगवान् श्रीरामच द्र सामने प्रकट हुए और उन्होंने उनके मस्तकपर अपना बायाँ थ रखा और दिनकर गोसावी तुरत जाग पड़े उ हें परम आनन्द हुआ पर ही मूर्ति जागतेमें दर्शन दे इसके लिये उनका चित्त विक हो उठा और स्वानुभवके आनन्दसे ह चित्त तत्का उसी क्ष्यमें ध्यान सलग्न हो गया

माताके न दिखायी देनेसे न हे ब चेकी अथवा गौके समयपर घर न आनेसे छड़ेकी या धन खर्च हो जानेपर कृपणकी जो हालत होती है ही हा त दिनकरकी हुई कुछ स्वप्न कुछ जाग्रति कुछ सुषुप्ति तीनों

ही अवस्थाएँ कुछ कुछ थीं तीनोंकी सन्धि थी उस सन्धिमें चित्त तुयावस्थामें ज ाँ का तहँ विरत होकर तटस्थ हो गया और भगवान् श्रीरामचन्द्रने समथ श्रीरामदासस्वामीके रूपमें दिनकरके मस्तकपर बायाँ हा र । स्वप्नमें जिस मूर्तिके दर्शन हुए थे वह मूर्ति चित्तमें बैठ गयी और उन्होंने य निश्चय किया कि जाग्रत्में उस मूर्तिके दर्शन जबतक नहीं ोंगे तबतक अ न जल ग्रहण नहीं करूँगा व० एक वर्ष क इ हालतमें रहे बाह्योपाधि उनकी छूट यी स्वप्न मूर्ति अदर बाहर व्य प गयी २स प्रकार जब एक वर्ष पूरा हुआ तब सवत् १७ १ फाल्गुन मास की पूर्णिमाको साक्षात् समर्थ प्रक‍ हुए तब दिनकरके आन दकी कोई सीमा न रही समर्थने उनके मस्तकपर दाहिना हाथ र । और उन्हें कृतार्थ किया दाहिना हाथ सद्गुरुके सिवा और कोई भी नहीं र सकता यह सम्पूर्ण कथा स्वानुभवदिनकर ग्र थ (कलाप १६ किरण ४)में लिखा है

तुकारामजीके स्वप्नानुग्र और दिनकर गोस्व मीके स्वप्न नुग्रहमें विलक्षण साम्य है महीपतिबाबा कहते हैं कि श्रीपा डुरङ्गने बाबाजी चैत यके रूपमें तुकारामजीपर अनुग्र० ि या और स्वानुभवदिनकर य बतलाया है कि श्रीरामच द्रने र मदासके रूपमें दिनकर गोस्वामीपर अनुग्र किय तुक रामजीके गुरु बाबाजी चैतन्य उनपर अनुग्रह करनेके कि ने ही वष पहले समाधिस्थ हो चुके थे और सोते जागते पा डुरङ्गकी ओर ही तुकारामजीकी आँखें लगी ीं इस कारण तुकारामजीको पा डुरङ्गके इस प्रकार दर्शन हुए और दिनकर गोसाईंको स्वप्नमें देखी हुई मू ि ो जागते हुए प्रत्यक्ष दे नेकी ही लगी हुई ी २स कारण ठीक एक वर्ष पूरा होते ही श्रीगुरु मूर्ति उनके स मने प्रत्यक्षमें प्र ट हुइ इन दोनों उदाहरणोंसे यह बात सिद्ध होती है कि जिसे जिसकी लगन लगती है उसे

उसके स्वप्नमें और जागृतिमें भी दर्शन होते हैं य॰ क्या चमत्कार है अथवा किस प्रकार महात्मा लोग दूसरोंके स्वप्नमें प्रवेशकर उ ॑॰ ज्ञानदान कर आते हैं यह हमारे जैसे प्राकृत जीव भ । कैसे समझ सकते हैं पर तुकाराम और दिनकर गोसाईं जैसे निष्काम भगवद्भक्त जब यह बत ाते हैं कि स्वप्नमें गुरुने दर्शन देकर हमें उपदेश दिया तब उसपर अविश्वास करनेका कोई कारण नहीं है ऐसी ब तोंमें विश्वासके बिना प्रतीति नहीं होती और ीतिके बिना विश्वास भी नहीं होता ॰सि ये भावुकजन पहले विश्वास करते हैं पीछे उनके पूर्वभा यसे अथवा भगवत्कृपा बलसे प्रतीतिका समय भी कभी न कभी आता है स्वप्नमें ही क्यों गर्भतकमें उपदे दिये जानेकी कथाएँ हमारे पुराणोंमें हैं इन कथाओंको मिथ्य तो नहीं कह सकते महात्मा चारों देहोंसे अलग और पूर्ण स्वाधीन होनेके कारण चारों देहोंपर उनका हुक्म चलता है वे इन देहोंके मालिक होते हैं अर्थात् चाहे जो दे वे जब चाहें धारण कर सकते हैं और चाहे जिस दे ो ब चाहें छोड़ सकते हैं बाबाजी चैत यने स्थूल देहका त्याग करनेके पश्चात् भ ारा पर्वतपर आत्मोद्धारके लिये सतत छटपटानेवाले तुकारामको शुद्धचित्त और अधिकारी जानकर उनपर अनुग्र॰ किया और ो उपासना ह कर रहे थे उसीको आगे भी करते रहनेके लिये प्रोत्साहित किया इस प्रकारका प्रो स न श्रे कोटिके जीवोंसे कनिष्ठ ोटिके जीवों ो मिला करता है सच पूछिये तो गुरु और ि यके बीच ऊँच नीचका कोई भेद भाव बाकी नहीं रहता जैसे दो ा ाब पास पास ल ालब भरे हुए हों और इनमेंसे प ले किसी एकका पानी दूसरेमें आ ाय और उस एकको दूसरा गुरुत्वका मान प्रदान करनेकी तैयारी करे न करे इतनेमें ही दोनोंकी लहरें एक दूसरेमें आने जाने लगें और दोनों मिल र एक महासरोवर बन जायँ वैसा ही कुछ गुरु शि यका सम्बन्ध होत है दोनों एक दूसरेसे मिलकर एक हो जाते हैं शिष्य गुरु पदपर

ब आरुढ ो । है और कब दोनों एक हो जाते हैं यह ब लानेमें ि तना समय ग सक । है उतन समय भी दोनोंके एक होनेमें नहीं गता उद्धरेदात्मनात्मानम् ही सत्य है तथापि सबके ऊपर मुहर गुरुकी ही लग ी है सा क जिस साधन मागसे जा रहा हो उस मार्गपर च ते हुए उसे किसी ऐसे मार्गदर्शक पुरुषकी आवश्यकता होती है ि सने वह म ग देखा ो जो उस मा के अन्तिम गन्त य स्थानतक हो आय हो वही गुरु है उसके मिलनेसे मोक्ष माग के पथिकका ढाढस बँधता है उसे य निश्च हो जा । है कि हम ि स रास्तेपर च रहे हैं वह रास्त ग नहीं है मोक्ष मार्गमें ऐसे अनेक गुरु मि जाते हैं साधु सत ऐसे ही मार्गदर्शक होते हैं अन्तमें जो गुरु मिलते हैं वह इसे पूर्णकाम रके अनुभव सुख इसके पल्ले बाँधकर इसे पूर्ण बनाते हैं वही सद्गुरु हैं सद्गुरुका ार्य अत्यल्प पर अत्य उपकार होता है ह जी त्माको शिवात्मासे मि देते हैं

८ गुरु नाम ार बार क्यों नही ?

इस विषयमें अब को सदे न ी रह गया कि तुकारामजीके गुरु बाबा ी चैत य थे तुकार मजीने स्वय ही कह है बाब जी सद्गुरु दास तुका ज्ञानदेव नामदेव और एकनाथके ग्रन्थोंमें बार बार जैसे गुरुका नाम आत है वैसे तुकारामके अभंगोंमें नहीं अ ता यह बात सही है पर इससे किसी किसीका जो य खयाल होता है कि तुकारामने कोई गुरु ही नहीं किया किसी गुरुसे उपदेश नहीं लिया अथवा भगवान्‌ने ही उ स्वप्न देकर अपना नाम बाबाजी चैत य बता दिया यह खयाल बिल्कुल गलत है एक अभगमें तुकारामजीने कहा है सद्गुरुसेवन जो है वही अमृतपान है और एक दूसरे अभगमें उन्होंने स्पष्ट ही कहा है गुरु कृपाका हा बल था जो पा डुरङ्गने मेर भार उठ लिया

(तुका म्हणे गुरु कृपेचा अधार पाडुरंगें भार घेतला मा ा) गुरुकी आज्ञा और तुकारामजीके मनकी पसन्द एक रूप हुई ध्याननिष्ठ दृढ हुई नाम सङ्कीर्तन साधन स्थिर हुआ गुरूपदेश उन्हें स्वप्नमें मिला इससे अन्य सतोंके समान उन्हें गुरुका सङ्ग लाभ नहीं हुआ ज्ञानेश्वरके सामने निवृत्तिनाथकी, नामदेवके सामने विसाजी खेचरकी और एकनाथके सामने जनार्दनस्वामीकी मूर्ति अहोरात्र क्रीडा कर रही थी गुरुके साथ सम्भाषण करनेका सुख इन सतोंने खूब लूटा उनके दर्शन स्पर्शन और पाद सेवनका नित्य आनन्द प्राप्त करने और उनके शुद्ध स्वरूपको जाननेका परम मङ्गल अवसर इन्हें नित्य ही मिलता था प्रतिक्षण उन्हें प्रतीति होती थी कि निर्गुण ब्रह्म ही गुरुरूपमें सगुण होकर आये हैं तुकारामजीको गुरूपदेश स्वप्नमें मिला उस समय गुरुने उनसे पावभर घी माँगा था पर तुकारामजीको उसकी सुध न रही और आगे भी गुरु सेवाका कोई अवसर नहीं मिला गुरु भी पाण्डुरङ्गका ही ध्यान करनेको बताकर गुप्त हो गये इसी कारणसे तुकारामजीके अभङ्गोंमें गुरु वर्णन नहीं हुआ है और गुरुका नामोल्लेख भी दो ही चार बार हुआ है गुरूपदेशके पश्चात् उन्होंने पाण्डुरङ्गका जो ध्यान किया उन्हें जो सगुण साक्षात्कार और निर्गुण बोध हुआ वह सब गुरुके उपदिष्ट मार्गपर चलनेसे ही हुआ पाण्डुरङ्ग स्वरूपमें ही गुरुस्वरूप मिल गया और गुरुकी आज्ञासे ही पाण्डुरङ्गकी सेवा की गयी इस कारण पाण्डुरङ्गकी भक्तिमें ही गुरु भक्ति भी हो गयी इसीलिये तुकारामजीके अभङ्गोंमें गुरुका नामोल्लेख बहुत कम हुआ है तथापि जितनेमें ऐसे उल्लेख हैं उनसे यही निश्चित होता है कि तुकारामजीको स्वप्नमें बाबाजी चैतन्यने गुरूपदेश दिया गुरूपदेश स्वप्नमें ही हुआ रत है स्वरूप जागृति होनेपर उपदेशकी आवश्यकता नहीं रहती और मोह निद्रामें जब जीव रहता है तब उसे उपदेशकी इच्छा ही नहीं होती अर्थात् मुक्तावस्था और बद्धावस्था ये दोनों अवस्थाएं गुरूपदेशके लिये

उपयुक्त नहीं गुरूपदे उसी मुमुक्षावस्‍ के लिये है जब ीव न ो आत्म रूपमें ग रहा है न विषयों ी मोह निद्रामें सो रहा है अर्थात् ध्यम स्वप्नकी अवस्थामें है

९ गुरु चैतन्यत्रयी

जिन बाबाजी चै न्यने तुकाराम ीको स्वप्नमें उपदे दिया उनके विषयमें और भी कु ज्ञात होता तो अ ा होत पर दुर्भाग्यवश ऐसी ोई ब नहीं ज्ञात हो ी दो चार कथाएँ उनके विषयमें प्रसिद्ध हैं पर उनमें परस्पर विरोध ही अधिक है इसलिये ऐसे टूटे फूटे अधूरे और परस्पर विरो ी आधारपर तर्कसे चरित्रकी हवेली उठाना ठीक नहीं सत चरित्र को कपोल कल्पित उप य स न ी है आधारके बिना यहाँ कोई बात नहीं क ी जा सकती माघ शुक्ला दशमीको तुकारामजीको गुरूपदेश मिला इसलिये वारकरी म डल इस तिथिको विशेष पवित्र मानता है और उस दिन स्थान स्थानमें भजन पूजन कीर्तनादिद्वारा उत्सव मनाया जाता है यही एक बात प्रस्तुत प्रसङ्गमें निश्चित है तुकारामजीके गुरु ौन थे कहाँ रहते थे वह समाविस्थ कब हुए उनकी पूर्व परम्परा क्या थी इत्यादिके बारेमें वारकरियोंको कुछ भी ज्ञात नहीं है और इस विषयमे कोई ग्र थ भी नहीं मिला है स्वप्नमें थोडी देरके लिये गुरुके दर्शन हुए और उन्होंने उपदेश दिया राघव चैत य के व चैत य कहकर पू परम्पराका संकेत किया और अपना नाम बाबाजी बताया तुकारामजीको राम कृष्ण हरी मन्त्र दिया जो उ हें प्रिय था और फिर अन्तर्धान हो गये बस इतना ही बाबाजी चैतन्यके विषयमें प्रमाण है इसके अ रिक्त और कोई विश्वसनीय बात नहीं ज्ञात होती ानिये ा स्वप्नीं गुरूचा उपदेश (स्वप्नमें गुरुका उपदेश माना) तुकारामजीके इस कथनसे य नहा जान पड़ता कि उनके गुरु फिर कभी उनसे स्वप्नमें या जागतेमें मिले ों अ ात् तुकारामजी ो गुरुसे इस उपदे के ब द और भी कु मिला

य नहीं कहा जा सकता ऐसी अवस्थामें तुकारामजीके गुरुके विषयमें चरित्रकार भी और क्या लिख सकता है ? इसके सिवा अन्य बा ोंपर स्वय मेरा विश्व स नहीं है वारकरियोंका भी विश्वास नहीं है तथा उनकी कोई आ श्यकता भी नहीं प्रती होती यह स्पष्ट बतलाकर अब उन कथाओंको भी जरा देख लें जो बाबाजी चै यके विषयमें प्रसिद्ध हुई हैं

चैत यकथाकल्पतरु नामक एक ग्र थ प्रकाशित हुआ है यह ग्र थ निरञ्जन बुवा नामक किसी पुरुषने सवत् १८४४ (शाके १७ ९) प्लवङ्ग नाम सवत्सरमें लिखा और कार्तिक शुक्ल एकादशीको िखकर पूर्ण किया इसमें राघव चैत य और केशव चैतन्यके विषयमें कुछ बातें हैं ग्र थके अन्तमें यह कहा है कि यह ग्र थ एक प्राचीन र ग्रन् के अ धारपर लि ा है वह प्राचीनतर य सवत् १७३१ (शाके १५९६) में परम भक्त कृ णदास वैरागीने लिखा इन कृ णदास वैरागीका ोई ग्र थ उपल नहीं है जिससे य ग्र थ मि ाकर देखा जाय अस्तु निरञ्जन बुवाके इस ग्रन्थमें ६ अध्य य और ७६ ओवियाँ हैं इसमें तुकारामजी ी गुरु परम्परा इस प्रकार दी है श्रीवि णु ब्रह्मदेव नारद यास र घव चैत केशव चैत य उर्फ बाबाजी चैतन्य तुकाजी चैतन्य राघ चैतन्यको स्वय वेद यासने उपदेश दिया राघव चैत यने उत्तम नाम नगरमें मा डवीपु प वतीके तीरपर' बहुत कालतक तप किया ह थ पैरके नखोंकी नालियाँ बन गयीं रीरपर धूलके तह के तह जमा हो गये जटा बढकर पृ वीको छूने लगी रीर सूख गया ऐसा तीव्र तप देखकर श्रीवेदव्यास प्रकट हुए और उन्होंने उ हें प्रणवके साथ नमो भगवते वासुदेवाय मन्त्रका उपदेश दिया उत्तम नगरका आधुनिक नाम ओतुर है यह गाँव पूना जिलेमें जुन्नरसे चार कोसपर है वहाँसे चार मीलपर पुष्पावती उर्फ कुसुमावती और कुकडीनदीका सङ्गम है राघव चैतन्यको ओतुर ग्र ममें गुरूपदेश प्राप्त हुआ उनका राघव चैत नाम गुरुका ही

दिया हुआ था गुरूपदेशके पश्चात् र घव चै यने और भी ीव्र तप किया कु का पश्चात् वहाँ तृण मल्ल (तिनेवल्ली ?) के दे पा डे नृसिंह भट्टके द्वितीय पुत्र विश्वनाथबाबा उनसे मिले नृसिं भट्ट बड़े मनि ब्राह्मण थे तृणामल्लका शिवालय यवनोंने भ्र किय तब नृसिं भट्ट वहाँसे च ते बने और घूमते फिरते पुनवाडी (तत्कालीन पूना) पहुँचे व ाँ वह अपनी सहधर्मिणी आनन्दीबाईके साथ खपूर्वक काल व्यतीत करने लगे इनके तीन पुत्र हुए त्र्यम्बक विश्वनाथ और बापू नृसिंह भट्टका जब देहा त हुआ तब तीनों पुत्रोंमें कलह हो गया विश्वन थ उदासीन थे त्रिका स्नान सध्या करते थे धर्ममें बड़े उदार थे पर घरका काम कुछ भी न देखते थे ' उनके दोनों भाइयोंने सला करके उन्हें घरसे निकाल दिया विश्वनाथबाबाकी सहधर्मिणी गिर ाबाई भी अपने पतिके साथ हो लीं पति पत्नी तीथयात्रा करते हुए ओतुर ाममें आये दोनों ही विपत्तिके मारे भटक रहे थे प्रार ब से वहाँ राघव चै यसे उनकी भेंट हो गयी और राघव चैत यने उनपर कृपादृ की विश्वन थ बाबा ऋ वेदी ब्राह्मण थे ससारमें इ होंने बहुत दु ख उठाया भाइयोंने इन्हें घरसे निका दिय ीने भी इन्हें दरिद्र पाकर कठोर चन सुन नेमें कुछ कमी न ी सोहागके पूरे अल ार भी इनके जुगाये न जुटे कभी कोई अच्छी सी स डीतक नहीं ा दी आधी घडी भी कभी इनके स थ से न ीं बीता यही उसका रोना था सुनते नते विश्वनाथब ब के कान थक गये राघव चैतन्यके दर्शन पाकर व उनकी शरणमें गये उस समय उनकी आयु २५ वर्ष थी कु ाल बाद इनके एक पुत्र हुअ उसका नाम नृसिंह भट्ट रखा गया ाके ऋणसे इस प्रकार उद्धार हुआ और चित्त भी शुद्ध हो गय तब विश्वनाथबाबाने गुरुसे सन्यास दीक्षा माँगी गुरुने उ हें स यास दिया और उनका न म के व चैत य रखा गुरु और ि ष्य दोनों ही ओतुर ग्रामसे कुछ दूर एक वनमें

जा बसे और वहाँ अज्ञान द भोगने लगे कुछ काल बाद दोनों ही तीर्थ यात्राके लिये निकले नासिक त्र्यम्बकेश्वर द्वारका प्रयाग काशी गन्नाथ आदि क्षेत्रोंकी यात्रा करते हुए कलबुर्गा पहुँचे वहाँ जलकी अतिवृष्टिसे त्रस्त होकर वे एक मसजिदमें पहुँचे वहाँ भीतके एक बीचके आलेमें उन्होंने अपनी खड़ाऊँ रखी उस मसजिदके मुल्लाने आकर जब देखा कि खडाऊँ आलेमें रखी हैं तब उन यात्रियोंपर वे रह बिगड़ा उसने शहरके काजीसे इसकी फरियाद की बात निजामशाहके कानोंतक पहुँची और उस गाँवके छोटे बड़े सभी मुसलमानोंके आग लग गयी और जहाँ तहाँ बिना कारण ब्राह्मणोंपर अत्याचार होने लगे स्वय निजाम मसजिदमें पहुँचे कहते हैं उस अवसरपर उन दो यतियोंने कोई स ेत किया जिसके करते ही मसजिद जो उड़ी सो वहाँसे आध मीलपर जाकर ठहरी यह चमत्कार देखकर निजाम चकित हुए और यह विश्वास हुआ कि ये दोनों फकीर कोई बड़े पीर हैं तत्काल ही दोनों यति अ तधान हो गये निजाम उनसे मिलनेके लिये बहुत व्याकु हुए आल दगुञ्जोटी नामक स्थानमें निजामको उनके दर्शन हुए निजामने अभय दान माँगा यतियोंने उ हे अभयवचन दिया निजामने इन यतियोंके सम्मानार्थ उस मसजिदमें दो स्मारक बनवाये और उनपर राघवदराज और के वदराज नाम खुदवाये राघव चैतन्य इस घटनाके कुछ काल बाद ही लोकोपाधिसे छूटनेकी इच्छा करते हुए समाधिस्थ हुए उ होंने अपने शि यको आतुर जानेकी आज्ञा दी राघव चैत यकी समाधि आलन्दगुञ्जोटीमें है व ांसे तीन कोसपर मान्यहा नामक ग्राममें केशव चै न्यने अपने लिये एक मठ बनवाया और कु क लतक इस मठमें रहे यहाँ रहते हुए वह बार बार गुरु समाधिके दर्शनोंके लिये आल दगु ोटी ाय करते थे र घव चैत य बड़े रूप न् पुरुष थे उनके दि य रूपका कविने वणन किया है कि च द्रके

समान दर मुख था उसपर हेमवर्ण जटा सोहती थी सर्वाङ्गमें भस्म रमाये रहते थे बड़ी ही दर दिगम्बर मूर् थी केशव चैत य पीछे हाँसे ओतुर चले गये उनके शि योंने मान्यहाल ग्र ममें उनकी पादुका स्थापित की यही केशव चैत य तुकोब रायके गुरु थे बाबाजी इनका पूर्वाश्रमका नाम था इस ग्र थके तीसरे अ यके अन्तमें कहा है सब ोग इन्हे केशव चैत य कहते हैं भावुक ब बा चैत य कहते हैं दोनों नाम एक ही हैं जो अति आदरके साथ लिये जाते हैं अन्तिम अध्यायमें पुन यह उल्लेख है कि पूर्वाश्रममें ाबा भी कहते थे ' पहले तीन अध्यायोंमें यह विवरण है इसके बाद चौथे और पाँचवें अध्यायमें के व चैत यके चरित्रकी कुछ बातें कहकर छठेमें तुकारामजीको गुरूपदेश प्राप्त होनेकी बात उनके अल्प चरित्रके साथ कही गयी है केशव चैत यके पुत्र नृसिंह भट्ट और नृसिं भ के पुत्र केश भट्ट हुए के व चैतन्यने केशव भ पर अनुग्रह किया और जगदुद्धारके लिये अनेक चमत्कार भी दिखाये के व चैत यने सवत् ६२८ (ाके १४९३) प्रजापतिनाम सवत्सरमें ज्येष्ठ कृष्ण द्वादशीको ओतुर ग्राममें समाधि ली समाधि लेनेके पश्चात् भी उन्होंने अनेक चमत्क र किये अपने पूर्वाश्रमके पोते केशव भट्टको सम्पूर्ण भागवत न यी समाधि लेनेके पश्चात् ही वह का ीमें प्रकट हुए और एक ब्राह्मणपर कृप की इसी प्रकार कई वर्ष बाद तुकारामजीको स्वप्न देकर उ होंने गुरूपदे दिय निरञ्जन बुवाने राघव चैतन्य और केशव चैतन्यके बारेमें ो कुछ लिखा है यहाँ क उसीका साराश हमने ब ाया है इसके सत्यासत्यकी जाचका और कोई धन अबतक उपलब्ध नहीं हुआ है कृष्णदास वैरागीके जिस ग्रन्थके आधारपर निरञ्जन बुआने अपना ग्र थ लिखा वह ग्रन्थ सवत् १७३१ में लिखा होनेसे अर्थात् तुकाराम महाराजके प्रयाणके पचीस वर्ष बादका ी लिखा हुआ होनेसे बहुत कु प्रम णभूत हो स ता थ पर वह आज उपलब्ध

न होनेसे चैतन्यविजयकल्पतरु ग्र थकी कौन सी बात कृ णदास लिख गये हैं और कौन सी बात निरञ्जन बुवा किसी अन्य आध रपर कह रहे हैं यह जाननेका इस समय को‍ स धन नहीं है

श्रीराघव चैत य सिद्ध पुरुष थे और श्रीकृष्णके परम भक्त थे इसमें स देह नहीं हमारे गोमा तकस्थ मित्र श्रीवि राय कामतने उनका अत्य मधुर श्लोक दस वर्ष पहले हमारे पास भेज था

पुञ्जीभूत ॆ ोपाङ्गना ा

मू्र्तीभूत भ धेय यदूनाम्

सान्द्रीभूत गुह्यवि ु ाि ा

श्या ाभूः ॆ सन्निधत्ताम्

गोपियोंके पु ीभूत प्रेम यादवोंके मूर्तिमान् भाग्य श्रुतियोंके एकत्र घनीभूत गुह्य धन ऐसे जो मेरे साँवरे ब्रह्म हैं वह निर तर मेरे समीप रहें

राघव चैत यकी और भी कु कविताएँ हैं ऐसा ना है केशव चैत यका एक पद मुझे बहिणाबाईकी गाथामें मिला उसका आ य यह है कि विषयोंके लोभसे मन भटक रहा है गृह पुत्र कलत्रमें ही ख मान बैठा है पर अब इसका दु मु से नहीं सहा ाता इसलिये हे कमलापति हरि आपसे विनय करता हूँ हे दीनानाथ दीनब धु अ पकी शरणमें हूँ इस भवसागरको पार करनेका कोई उपाय नहीं दीख ा साधु सङ्ग या साधु सेवा मु से कुछ भी न बन पड़ी शिश्नोदर यापारके ही प्रवाहमें बहता रह हूँ अब इसमेंसे हे भगवन् मुझे उबारो हे दीनानाथ दीनब धु मैं आपकी शरणमें हूँ मुझे चित्त शुद्धिका रास्ता दिखाओ वेद ा पुराणोंकी गति सुझाओ निर र नवविधा भक्तिमें गाओ इसीमें आपकी भी ाोभा है हे दीनानाथ दीनब धु मैं आपकी रणमें हूँ

बग लके चै न्य दायसे सम्ब ध नही

कुछ लोग बगालके श्रीकृष्णचैतन्य सम्प्रदायके साथ श्रीतुक र म ीका सम्ब जोड़ते हैं परन्तु य मा यत ठीक नहीं जान प ती बगालमें श्रीकृष्ण चै य या गौर ङ्ग प्रभु पद्र वीं शत ब्दीमें विख्यात श्रीकृ ण भक्त हुए बगालभरमें उन्होंने श्रीकृष्ण भक्तिका प्रचार किया और आ भी बगालमें श्रीकृष्णका नाम जो इ ना यारा है वह उन्हींके प्रभ वका फल है श्रीचैतन्य मह प्रभुका अत्यन्त प्रेम रसभरित चरित्र अग्रेजी भाषामें स्वर्गीय शिशिरकुमार घोषने लिखा है अग्रे ी जाननेवाले पाठक उसे अवश्य पढें उस ग्र थके २६२ वें पृष्ठपर (न् १८९८ ई का सस्करण) शिशिर बाबू लिखते हैं पूनाके स तुकाराम गौराङ्ग प्रभुके अथवा उनके यके शि य थे य बत नेकी को आवश्यकता न ी अर्थात् ह बात स्प ी है इस बातके समर्थनमें उन्होंने ये बातें लिखी हैं कि गौराङ्ग प्रभु प ढरपुर होकर गये थे प ढरपुरमें तुकारामजी रहते थे ौराङ्ग प्रभु स्वप्नमें उपदे दिया करते थे इत्यादि इन बातोंसे कुछ गोंकी यह धारणा हो गयी है कि स्वय गौराङ्ग प्रभु अथ । उनके किसी शि यसे तुक रामजीने उपदे ग्रहण किया था परन्तु बगालके चैत य म्प्रदायके साथ तुकारामजीका कुछ भी सम्बन्ध नहीं दीख पड़ता तुकारामजीका जिस समय न्म हुअ उस समय कृ ण चैतन को समाधिस्थ हुए ७१ वर्ष बीत चुके थे चैतन्य प्रभुक समय सवत् १५४२ ५९ है इसके ७५ र्ष बाद तुकाजीका जन्म हुआ कृ ण चैतन्य ही बाबा चैतन्य होकर तुकारामजीको स्वप्नमें उपदेश दे गये ऐसा हें ो कृष्ण चैत ी पूर्वपरम्परा ही होगी जो बाबाजी चैत य तुकारामजीसे क गये अर्थात् राघव चैतन्य और के व चैत य पर य बात किसीको स्वीकार न होगी इसलि ये यह बात भी नहीं मानी जा सकती कि ीचैतन्य

तुकारामजीके गुरु थे अब यदि को२ यह क२ कि राघव चैत य ही कृष्ण चैत यके शि य थे तो श्रीकृ ण चैतन्यके प्रसिद्ध शि ष्योंमें राघ चैतन्य नामके कोई भी शि य नहीं हैं और इस बातका कहीं कोई प्रमाण नहीं है कि राघव चै न्यके गुरु कृ ण चैत य थे इसलिये कृष्ण चैत य अथवा उनके कोई शि य तुकारामजीके गुरु थे य बात प्रमाणित नहीं हो ा फिर दूसरी बात य है कि बगा उत्क में श्रीकृष्ण चैतन्यका ` सम्प्रद य है वह मध्वाचार्यके द्वैत सम्प्रदायसे निकला है इ सम्प्रदायमें राधा कृष्णकी भक्ति प्रधान है तुकाराम ीकी उपासन में अथवा यह कहिये कि महारा के किसी भी भक्तकी उपासनामें र धाकी विशेष महिमा न ीं है तुकारा ीका भक्तिमार्ग भी द्वैत नहीं अद्वैत है तुकाराम ीके अभगोंमें अद्वैत सिद्ध त स्र ही है इसलिये किसी भी द्वैत सम्प्रदायके सा तुकारामजीका नाता नहीं ोड़ा जा सकता चैत य सम्प्रद य और म । रा ीय भागवत सम्प्रदाय दोनों ही कृष्ण भक्तिके सम्प्रदाय हैं सही पर चैत य सम्प्रदायकी कोई भी विशि ष्टता तुकारामजीके अभगोंमें नहीं है और महाराष्ट्रीय भागवत र्मके प्रवतक ानेश्वर नामदेव एकनाथादि कृष्ण भक्तोंके आचार विचारोंसे रत्तीभर भी भिन्नता तुकार मजीके चरित्र और अभगोंमें नहीं है फिर ऐसी कौन सी बात है जिससे यह कहा ज के कि उनके चित्तपर ` संस्कार थे वे महाराष्ट्रके नहीं म रा से बाहरके थे ऐसी निर धार ात कहनेमें हेतु भी क्या हो स ता है बगा के श्रीकृष्ण चैतन के ति हमारा पूण प्रेम ौर आदर है पर य भी स्प बतला देना आवश्यक है कि चैत य म्प्रद यके साथ उनका कु भी लगाव मानना सर्वथा निराधार है कृ ण भक्तिके वै णव सम्प्रद भारत र्षमें अनेक हैं पर प्रत्ये स प्रदायकी अपनी कोई न को२ विशि है पण्ढरपुरके वै णव म्प्रदायकी भी कुछ विशि है य विशि ष्टता पहले ज्ञानेश्वरीमें प्रकट हुई और उसी कीरपर न मदेव ए ना

आदि भी चले इन सबकी सब बातोंमें ए मति है महाराष्ट्रीय स्वभावमें जो एक प्रकारकी है एक प्रकारका ऐसा अपमान है कि अपना छोड़ना नहीं और दूसरेका सा लेना नहीं और तुकारामजीके स्वभावमें भी मराठोंकी ो लगन और तेजी है उ को देखते हुए भी बगालके चै न्य सम्प्रदायके सा तुकारामजीका कु भी मेल नहीं बठता

११ वित्व-स्फूर्ति

कारामजीने आत्मचरितके अभगोंमें यह कहा है कि स्वप्नमें गुरूपदे होनेके पश्चात् ही मुझे कवित्व स्फूर्ति हुई यह पाठकोंको स्मरण होगा तुकारामजीकी इस उक्तिसे ही यह स्पष्ट है कि गुरूपदेशके पूव उन्होंने कोई कविता नहीं की यह कवित्व स्फूर्ति उन्हें नामदेवकी प्रेरणासे हुई युत्पत्तिके बलपर कविता करनेवाले कवि बहुत होते हैं पर प्रसादगुण दैवी स्फूर्तिके विना नहीं उत्पन्न होता तुकारामजीको कवित्व स्फूर्ति से इ विषयमें उनके दो अभग हैं एकमें तुकाराम कहते वि नामदेव पा ुरङ्गके साथ स्वप्नमें आये और यह काम ये कि कविता रो वाणी र्थ व्यय न करो ले हुए शब्दोंमें कविता किये चलो तुम रा अभिमान श्रीविठ्ठलनाथने ओढ लिया है कहकर उन्होंने मुझे सावधान किया नामदेवने तकोटि अभगोंकी सख्या पूर्ण करनेको कहा जो अभग उन्होंने रचे थे उनसे जो बाकी रहे वे मैंने पूरे किये दूसरे अभंगमें तुकारामजीने भगवान्से प्रार्थना की है वि हे भगवन् आप मुझे अपनी शरणमें लेंगे तो मैं आपके सङ्ग संतोंकी पक्तिमें आपके चरणोंके पास रहूँगा कामनाक ठाँव छोड़कर आया हूँ अब उदास करो आपके चरणोंमें सबके अखीरमें भी मुझे स्थान मिले तो भी न्तोष है मेरी चित्तवृत्ति अभी मलिन है आपका आधार

मिलनेसे मुझे विश्रान्ति मिलेगी नामदेवकी बदौलत तुकाको स्वप्नमें भगवान् मिले वही प्रसाद चित्तमें भरा हुआ है

दोनों अभगोंका स्पष्टाथ ऊपर दे दिया है उससे यही समझ पडता है कि तुकारामजीको स्वप्नमें पाण्डुरङ्ग और नामदेवके दर्शन हुए और नामदेवने भग न्के सामने तुकारामजीसे कहा कि अब लोगोंसे तुम यर्थकी बातचीत करनेमें अपनी वाणी मत खच करो कविता करो मुखसे अभग पर अभग नि लते चलो पाण्डुरङ्गने तुम्हारा अभिमान ओढ लिया है वह सदा तुम्हारे पीछे खड़े रहेंगे और तुम्हारी वाणीमें प्रेम प्रसाद स्फूर्ति भरते रहेंगे नामदेवने शतकोटि अभग रचनेका सकल्प किया था पर यह सकल्प पूरा होनेमें कुछ कसर रह गयी थी वह तुकारामजीने पूरी की इस प्रकार शतकोटि सख्या * पूर्ण हुई दूसरे अभगमें तुकारामने भगवान्से जो प्राथना की है उसमें तुकाराम अपनी यही इच्छा प्रकट करते

* महीपतिबाबाने भक्तलीलामृत अ० २ में शतकोटि सख्याका हिसाब यों दिया है नामदेवने चौरानवे कोटि चालीस लाख अभग रचे पीछे नौ अभग ललितके रचे और बाकी पाँच कोटि कावन लाख ग रचनेको तुकारामसे क तुकारामजीके मुखसे कि ने अभग निकले इसकी गणना रना सम्भव है इस सम्बन्धमें दो अभग प्रसिद्ध हैं वेदाचे अभग केले श्रुतिपर यह अभग इन्दुप्रकाश-ग थाके चरित्र भागमें है समें यह कहा है तुकारामजीने एक कोटि अभग भक्तिपर एक कोटि ज्ञानपरक एक कोटि अनुभवपरक पचहत्तर वैराग्यपरक पचहत्तर नामपरक स प्रकार साढ़े चार कोटि और हजार उपदेशपरक ठ जार रूपवणनपर श्रुति आत्मबोध आदिपर रचे कुल हिसाब इसमें पाँच कोटि सत्तर दिया है २ के सिवा एक अभग मुझे और मिला है जिसमें यह है कि तुकारामजीने सात कोटि अ रचे जिनमेंसे साढ़े कोटि स्वय गणेशजीने

कि भगवान् मुझे अपने चरणोंमें शरण दें और मैं ज्ञानदेव नामदेव एकनाथ बीर आदि महात्माओंका सत्सङ्ग भ रूँ उनके अनुभवोंको अनुभव रू उन्हींके थ रहूँ चाहे उनकी पंक्तिमें मुझे सबके बाद ही मिले क्योंकि वे पुण्यपुञ्ज सिद्ध महात्मा हैं और मेरी चित्तवृत्ति अभी मलिन है पर भगवन् आपका और इन संतों आश्रय मिलनेसे मेरी मति हो जायगी और मैं आपके निजरूपमें समरस होकर परमानन्द प्राप्त करूँगा स्वप्नमें भगवान् मिले इसके लिये तुकाराम नामदेवके कृतज्ञ हैं कहते हैं कि नामदेवकी ही यह कृपा है जो स्वप्नमें भगवान् मिले स्वप्नसे जागनेपर कारामजीने इस स्वप्नको अन्य स्वप्नोंके मिथ्या नहीं माना वह सत्य स्वप्न था भगवान् और भक्तके मिलनकी एक विशेष अवस्था थी और तुकारामजीने यह अनुभव किया कि उस मिलन और भगवत्कृपाका आनन्द स्वप्नके बाद भी हृदयमें भरा हुआ है तुकारामजीने यह जाना कि सचमुच ही भगवान्का मुझपर अनुग्रह हुआ है

पने हाथसे लिखे जो कुछ हो स समय हमारे किये तो तुकाराम महाराजके साढ़े पाँच हजार हैं

आठवाँ अध्याय

चित्तशुद्धिके उपाय

तुका मन राखो, अकुस-अधीन ।
प्रतिदिन नवीन, जागरण १

❀

एकातमें बैठ शुद्ध करो चित्त ।
सो सुख अनत, पार नाहीं १
यके हियमें, रहेंगे गोपाल ।
साधन सुफल, घर बैठे २

१ ध्यात्म-सार

जीव ब्रह्म ही है ब्रह्मसे भिन्न नहीं और यही यदि सिद्धान्त और तोंका अनुभव है तो इसकी प्रतीति सब जीवोंको क्यों हो सवगत और सदा सम है परमात्म समीप अन्तरमें भूतमात्रके हृदयमें हैं वह सवभूतान्तरात्मा हैं सर्वव्यापी और सर्वसाक्षी हैं जलमें थलमें काष्ठ और पाषाणमें सवत्र रम रहे हैं उनसे कोई खाली नहीं वह यदि सत्य है तो स ो सब स वह सुलभ क्यों नहीं होते रमात्मसुख यदि पवित्र और रम्य वैसे ही सुखोपाय और

धर्म्य है (ज्ञानेश्वरी अ ९ ५५) तो सब जीव उसीपर क्यों नहीं टूट पड़ते कौड़ी-कौड़ीके लिये जो लोग रात दिन मरा करते हैं वे अनायास मिलनेवाले इस परम सुखके पीछे क्यों नहीं पडते उससे किनारा काटकर र दु खसागर है भवनदी दुस्तर है मायामो दुर्घट है विषय सना बड़ी कठिन है इत्यादि रोना नित्य रोते हुए भी ये लोग ससारमें ही क्यों अटके रहते हैं अपना सहजसिद्ध अमरपद छोड़कर ये मृत्युके नामको क्यों रोया करते हैं उन्हें मोक्ष दुर्लभ और परमार्थ दुर्गम क्यों जान पडता है जप तप ध्यानादि नानावि साधनोंके क्यों उठाते हैं निजका स्वानन्द सा ाज्य छोड विषयकी नकली चमकवाले काँचके टुकड़े बटोरनेवाले कगा बने क्यों फिरते हैं

सत्पुरुषोंको यही तो बडा अचरज गता है जीव जो ऐसी उलटी बोली बोलते हैं उसे सुनकर उन्हें बड़ी हँसी आती है मृत्युलोककी यह उलटी रहन सहन देखकर वे विस्मित होते हैं वे यह कहते हैं यह भाषा छोड़ दो इसे उलट र बोलो उलटकर देखो इस समझको छोड़ो कि मैं जी हूँ सासारिक हूँ दुखी हूँ और यह कहो कि मैं ब्रह्म हूँ मैं क्त हूँ मैं सुखी हूँ तो तुम सचमुच ही ब्रह्म मुक्त और सुखी हो चाभीको दाहिने घुमा रहे हो सो बायें घुमाओ तो ताला खुल जायगा जा रहे हो उधर पीठ फेर दो आगे न देख पीछे देखो बाहरकी ओर आँ गाये हो सा अदरकी ओर गाओ प्रवाह छोड उद्गमकी ओर मु ो तो सचमुच ही तुम मुक्त हो खी हो ब्रह्मस्वरूप हो इसमें कठिनाई ही क्या है यही तो परमार्थ है जीव अपने सकल्पसे ही बँधा है सकल्पसे ही मुक्त है मैं बद्ध जीव हूँ यही रोना रो रहे हो इसीसे मरण पाप पुण्य वि धि निषे और बन्ध मोक्षके चक्करमें पड़े हो पर पैरोंको छुड़ाकर नलिका त्रसे उड़ जानेवाले तोतेकी तरह यह जीव

दि अह और मम दोनों सकल्प छोड़ दे तो यह उसी क्षण ही है कौन किसको बाँधता है कौन किसको छुड़ाता है यह सब संकल्पकी माया है न जैसा सकल्प रता है वैसा ही चित्र उसपर खिंच है स ल्प कल्पना सार वासना वृत्ति मन माया य सातों ए रूप हैं जिस सकल्पसे जीव बँधा है उसके छूटते ही जीव मुक्त है अह और ममकी दो रस्सियोंसे यह बँधा है इन रस्सियोंको काटते ही जीव स्वभावत ही मुक्त है सकल्पके खादके जलते ही जीवका कालापन कट जाता है और वहा उज्ज्वल सोना होता है कल्पनाका ही बन्धन होता है और कल्पनाका ही मोक्ष होता है और जीव जहाँ का तहाँ बन्धमोक्षरहित निर्विकल्प निरञ्जन आनन्दस्वरूप सदासे है ही परन्तु

ह ाना पुरुषा ध यास्य र
प्राप्य मा निवर्तन्ते मृत्युससारवत्मनि

(गी ९)

जीवकी ऐसी श्रद्धा हो तो तत्क्षण ही मुक्त है पर जीवकी ऐसी श्रद्धा सहसा नहीं होती इसीलिये परमार्थके लिये उसे इतना प्रपञ्च करना पड़ता है अनेक साधन करने पड़ते हैं अनेक उठाने पड़ते हैं

२ चिरञ्जी पद

यह सारा वेदान्त कारामजीने सैकड़ों बार पढा सुना और भी था वह अपने निश्चित साधन म र्गपर चले जा रहे थे पण्ढरीकी ारी एकादशी व्रत कथा ीर्तन श्रवण सद्ग्रन्थ पाठ इत्यादि वह नियमपूवक करते थे गुरुका प्रसाद उन्हें मिल चुका था नामदेवरायने स्वप्नमें उन्हें दर्शन दिये और कवित्वकी स्फूर्ति प्रदान की बसे कीर्तन करते हुए था अ य अवसर पर भी उनके मुखसे अभग धाराप्रवाह निकलते ही जाते थे श्रोता गद्गद होकर उ हें धन्यवाद देते थे चारों

दिशाओंमें उनकी कीर्ति फैल रही थी बहु लोग उन्हें सत कहकर पूजने लगे थे उनके चरणोंमें मस्तक रखकर कोई उनके वक्तृत्वकी कोई कवित्वकी और कोई उनके साधुत्वकी भूरि भूरि प्रशसा किया करते थे इस प्रकार उनकी प्रतिष्ठा बढती ही जा रही थी उस समय उनकी २ २८ वर्षकी आयु रही होगी इ वयसमें इतनी लोकमान्यता विरलेको ही नसीब होती है पर अधकचरे पारमार्थिक इतनेसे ी सन्तु होकर गुरु बन जाते और ि य बनानेकी दूकान खोल देते हैं गुरुपनेके अ म्बरपर चढते हैं और अन्तमें बुरी तरहसे नीचे गिरते हैं ऐसे उदाहरण हमारे आपके सामने भी बहु हैं चार पाँच वष स धन किया स्वप्नमें दो चार ष्टान्त मिल गये साक्षात्कारकी झ क सी मिल गयी स हो गये कृतकृत्य सीधे-सादे भोले भाले आ पास जमा होने लगे स्तुति-स्तोत्र गाने गे बस गुरुजी ज गये और ऋद्धि सिद्धिका जरा स चमत्कार देखकर उसीमें अटक गये जिस रास्तेसे ऊपर चढे थे वह रास्ता भी भूल गये होते होते जितना ऊपर चढे थे उससे दूना नीचे जा गिरे ऐसी विडम्बनाएँ अनेक हुआ करती हैं जिसका परमार्थ सा न दम्भसे ही आरम्भ होता है उनकी छोड़ दीजिये पर जो शुद्ध अन्त करणसे परमार्थ साधनेकी चेष्टा रते हैं उनमेंसे भी कितने ही इसी रह घहराकर नीचे जा गिरते हैं ऐसे ोगोंके लिये एकनाथ महारा ने चिरञ्जी पद के नामसे ४२ ओवियोंका एक फड़कता हुआ प्रकरण लिखा है साधकोंके सावधान रहनेके लिये वह बड़ा ही उपकारक है इसमें एकनाथ महाराजने यह या है वि विष केवल सासारिकोंका ही नहीं करते प्रत्युत साधकको भी अनेक प्रकारसे धोखा देते हैं सा कके लिये सबसे पहले यह आवश्यक है कि उसे अनु ाप और वैराग्य हुआ हो वह देहसुखसे यदि येगा तो उसके परमार्थकी जड़ ही कट जायगी

त्यग केला पूज्यते कारणें । सत्सग सोडूनि पूजा घेणें
शिष्यममता धरोनि राहणें । हें ैराग्य राज

अर्थात् पूज्य होनेके लिये जो त्याग किया जाता है सत्सग छोडकर जो पूजा ली ाती है और ि ष्योंकी ममता जो नहीं छूटती वह राजस वैराग्य है य वैरा य परमार्थको डुबानेवा । होता है घर छोड़ा और बनव । ी पुत्र छोड़े और शि य बटोरे तो इससे क्या बना विषय भोगेच्छा जिस वैरा यसे निर्मू हो और प्रारब्धकी गतिसे जो भोग प्राप्त हों उनमेंसे भी मनको नि सग अलग निकाल लेते बने वैसा सात्त्विक वैराग्य ही साधकके लिये आवश्यक है विषय भोग और ौकि प्रतिष्ठाको सा सवथा त्याग दे शब्द स्पर्श रूप रस और गन्ध ये पाँचों विषय वि स प्रकार साधकको ठगते हैं य देखिये जब लोग किसीमें जरा सा भी वैराग्य देख पाते हैं ब वे उसकी स्तुति करने और उसे पूजने गते हैं कभी कभी तो यहाँ क कहने लगते हैं कि यह भगवान्के अवतार हमें त रनेके लिये आये हैं महारा कहकर उसे सम्बोधन करते हैं अपने ये गीत साधकको यारे गते हैं दूसरी बातें अब उसे अच्छी नहीं लगतीं पर बड़े मजेकी बात यह है कि ये ही ोग पीछे उसकी निन्दा भी करने लगते हैं पर यह स्तुतिके ही शब्दोंमें भूला र ता है और स्वहितसे हाथ ो बैठता है ब्द इस प्रकार साधकको न करता है इसके आसपास इकट्ठे होनेवाले भक्त इसे बैठनेके लिये उत्त आसन देते हैं सोनेके ि ये पलग ला देते हैं पहननेके लिये उत्तम से-उत्तम वस्त्र अपण करते हैं देवी देवताओंके ोग्य इन्हें भोग गाते हैं नर नारी सेवा श्र ू ा रते हैं हा पैर सिर दबाते हैं उस मृदुस्पर्शमें अटक जाता है फिर उसे देहकष्ट ठिन जान पड़ते हैं इस प्रकार स्पर्शविषय साधककी साधनामें बा हो है इसी प्रकार

लोग साध को मे । मिठाई उत्तमोत्तम खिलाते हैं उसकी जिस चीजपर इच्छा चलती है व ी वे ला देते हैं गलेमें फूलोंके हार पहनाते हैं भालमें केसर कस्तूरीकी खौर और चन्दनका लेप गाते हैं मधुर गायन सुनाते हैं इत्यादि प्रकारसे रूप रस ग भी उसे धोखा देते हैं और साधक सावधान न होनेसे इन भक्तों की ममतामें फँसता है कोम काँटेके समान इसका कोमल वैराग्य ऐसी सगतसे टूटकर न हो जाता है य लोक प्रतिष्ठाके पीछे पड़ता है इस प्रकारसे सहस्रों साधक अपनी हानि कर बैठते हैं इस कार गिरे हुए साधक फिर ऊपर नहीं उठ सकते हाँ जरी कृपा उपजेल भगवतीं तरीच मागुता होय विरक्त यदि भगवान्‌को द । आ जाय तो ही वह फिरसे विरक्त हो सकता है ' सच्चा विरक्त कैसा होता है एक ना महाराज उसके लक्षण बतलाते हैं—

जो न प्रिय होता है उसे वह त्याग देता है सत्सङ्गमें सदा स्थिर रहता है प्रति । पानेके लिये कभी बेचैन नहीं होता अपना कोई नया पन्थ नहीं चलाता वह सम । है कि उससे अहता बढ़ेगी जीविकाके लिये ह किसीकी ठकुर ाती नहीं करता प्रापञ्चिक ोगोंमें बैठना व्यथ ब चीत रना अपना बडप्पन दिखाना अच्छा खाना यह सब उसे पसन्द नहीं होता वह लोकप्रियता नहीं चाहता वस्त्रालङ्कार नहीं चाहता परान्नका स्वाद नहीं चाहता द्रव्य जोड़ना नहीं चाहता स्त्रियोंमें बैठना या स्त्रियोंको देखना या स्त्रियोंसे पैर दबवाना या उनका बोलना उसे पसन्द नहीं अपनी स्त्रीसे भी मतलबभरका ही वास्ता रखना चाहिये. आसक्त होकर चि को कदापि उसमें लगाये न रहना चाहिये नर नारी श्रूष रते हैं भक्तिममता उप ते हैं पर जो शुद्ध पारमार्थिक है व ि योंकी सो ब कभी नहीं करता अखण्ड एकान्तमें रहना चाहिये प्रमदाके । तो कभी नहीं जो नि निरभिमान है उसीका

सङ्ग करना चाहिये परिवारके भरण पोषणके लिये और कुछ न मिले तो न सही सूखा अन्न ही सही ऐसी स्थिति में जो रहना है ही शुद्ध वैरा य है

ऐसी स्थिति नाहीं ज्यासी। तेव कृष्णाप्राप्ति कैंची त्यासी।
यालागीं कृष्णभक्तासी। ऐसी स्थिति असावी ३८

ऐसी स्थिति जिसकी न हो उसे कृष्ण प्राप्ति कैसी इसलिये कृष्ण भक्त जो हो उसकी ऐसी स्थिति होनी चाहिये

एकनाथ महाराजने यह कैसा अच्छा रास्ता दिखा दिया है सच्चे विरक्तमें ये सब क्षण स्वभावत ही होते हैं जिनका वैराग्य सुकुमार हो वे इस आदर्शको सद अपने सामने रखें चा चलनमें ढीले ढाले रहनेवाले अन में फँसते ही हैं और ऐसे लोगोंकी सख्या सद सवत्र ही हु काफी ो ी है तुकोबाराय जैसे सच्चे आदर्श विरक्त अत्यन्त दुर्लभ होते हैं और उन्हींको कृष्ण मिलनका आनन्द और चिरञ्जीव पद प्रा होता है कारामका वैराग्य अत्यन्त ज्वलन्त था आत्म संशोधन सम्बन्धी उनकी साव नता अख ड थी अन्तरङ्गमें कौन कौन चोर घु बैठे हैं उ हें ढूढ ढूँढ़कर पकड़ना और कान पकड़ पकड़कर निकाल बाहर करनेके काममें उनकी तत्पर । अ ामान्य थी आत्म परीक्षणका ऐसा अभ्यास ही व चीज है जिससे चित्त द्धि होती है मलिन स्कार धुल जाते हैं और नये जमने नहीं पाते साधकको हाथ धोकर इसके पीछे पडना पड़ है अब हमें यह देखना है कि तुकारामजीने यह अभ्यास कैसे किय ग्रन्थाध्ययन हुआ गुरूपदेश हुआ थापि आत्म शोधनका कार्य अपने आप ही करना पडता है इसके लिये सदा चौकन्ना रहना पडता है मन सरपट भागनेवा घोड़ा है वैराग्यके लगामसे उसकी चाल काबूमें करके उसे वशमें करना होगा मनोनिग्रहके बिना सब स धन व्यर्थ होते हैं मनोजय न होनेसे बड़े बड़े उग्र तप भङ्ग हो

गये बड़े बड़े वीर चारों कोने चित गिरे हैं और बड़े बड़े पण्डित ज्ञानके शिखरसे गिरकर रसातल पहुँचे हैं मन बड़ा बली है दुजय है धर है कारामजी कहते हैं कि बड़े बड़े बुद्धिमानोंको इसने चौपट किया है इसलिये विषयोंकी ओर दौड़नेवाले इस मनोव्याघ्रपर आसन जो इसे पीछे खींचेगा वही पुरुष सबसे बड़ा करामाती है बा कुछ भी नहीं है पर मन अपने हाथमें हीं है यही तो सबका रोना है इसलिये

मार्गे परतवी तो बळी । शूर एक भूमडळें

इसे जो पीछे फिरा लेगा ी बली है ही एक इस भूमण्डलमें सूरमा है

अस्तु तुकारामजीने मनसे कैसे कैसे युद्ध किया भगवान्‌की कृपा और सहायतासे उसे राहपर ले आनेके लिये क्या क्या उपाय किये आशा ममता णा प्रति । गर्व लोभ इत्यादि वृत्तियोंको सावधानतासे कैसे जीता और इस प्रकार चित्तशुद्धिका माग धैय और निग्रहसे कैसे किया यही अब दे है

३ सिद्ध साधनसे १

लोकप्रि रह

भावुकोंके चित्तमें यह शङ्का उठ सकती है कि तुकारामजी तो सिद्ध पुरुष थे उनका तो ससार कल्याणके लिये वैकुण्ठधामसे अवतार हुआ था उन्हें चित्तशुद्धिके साधनोंकी क्या आवश्यकता पडी तुकारामजी जब स्वय ही यह । रहे हैं कि ससारको वेदनीतिका मार्ग दिखाने भगवद्भक्तिका डका बजाने और संतोंका माग परिष्कृत करनेके लिये हम कुण्ठधामसे भगवान्‌का स देशा लेकर आये हैं ब साम न्य जनोंके समान उन्होंने चित्तशुद्धिके उपा ढूँढे और उन उपायोंद्वारा साधना करके वे

लोक ल्याण कार्य करनेमें समर्थ हुए इत्यादि बातोंमें क्या रखा है ससारका उद्धार करनेके लिये जिनका आगमन हुआ उनका चित्त अशुद्ध ही कब था जो उन्हें उसे शुद्ध करनेकी आवश्यकता पड़ी व तो मूलतः ही मनके स्वामी थे उन्हें मनोजय करने या मलिन वृत्तिको शुद्ध करनेके लिये कुछ साधना करनी पड़ी यह कहना ही विपरीत जान पड़ ा है इस रणको पढते हुए भावुक पाठकोंके चित्तमें ऐसी ङ्का उठ सकती है इसलिये उसक समाधान पहले ही करना उचि है भगवान् और भगवद वतारस्वरूप महात्माओंके जो चरित्र हैं वे उनकी मनुष्यरूपमें अवतीर्ण होकर की हुई लील एँ हैं उनके चरित्रभरमें ाओंको विभूतिमत्त्व स्प ही दिखा ी देता है विभूतिमत्त्वके बिना उनके चरित्र इतने पावन उज्ज्वल और लोक कल्याण रक हो ही न ीं सकते थे विभूतिमत्त्व के बिना ऐसी निर्विघ्न यसिद्धि इतनी ते स्विता इतना य उन्हें प्राप्त हो ही नही सकता था मनने जो चाहा कर दिखाया यह सामान्य बात नहो है यह सब सच है थापि विभूतियोंको भी मनु यदेह धारण रनेपर नुष्योचित लोक यवहार करना ही पड़ ा है ऐसा दि न हो तो सामा य जीवोंको उनके चरित्रसे कोई लाभ न ोता कोई बोध ण करनेका अवसर ही न मि । महात्माओंके चरित्रोंके दो अङ्ग होते हैं एक दैवी और दूसरा मानवी दैवी अङ्ग देखकर हमलोग साश्चर्य कौतुक अनुभव कर हैं और उससे उनका विभूतिमर प चानते हैं और मानवी चरित्र हमारे अनुकरण करनेके लि ये उदाहरणस्वरूप होता है श्रीमद्भगव द्गीतामें भग न् श्रीकृष्णने विश्वरूप दिखाकर अपने ईश्वरत्वकी प्रतीति करा दी और

त्मोंनु मनुष्य

यह बतलाकर वर्णाश्रमादि धर्मसे लोक स र्थ नियम भी बाँध दिये भैंसेसे वेद कहलवाना भीतको चलाना इत्यादि चमत्कारोंके द्वारा

ञाने महाराजने अपना ऐ र्य दिखा दिया और पैठणके ब्राह्मणोंसे शुद्धिपत्र करनेके उद्योगके द्वारा मनुष्योचित व्यवहारका दृष्टान्त भी सामने रखा तुकोबारायने इहलोकसे चलते चलाते अन्तमें सदेह वैकुण्ठ करके अपना विभूतिमत्त्व ससारको दिखा दिया और जीवनभर साधककी अवस्थामें र कर ससारको भगवद्भक्तिका सीधा माग भी बतला दिया भूत दया ही सतोंकी पूँजी है' इस अपनी कहनीको उन्होंने अपनी रहनीसे ही चरितार्थ कर दिखाया है इस बातको तुकोबारायके चित्तशुद्धिके उपायोंका विवरण पढते हुए ही नहीं उनके सम्पूर्ण चरित्रको अवलोकन करते हुए पाठक ध्यानमें रखें कोबाराय जितना अपना हृदय खोलकर बोले हैं उतना और कोई नहीं बो है सबको एक ही जगह जाना होता है कोई कूदता फाँदता जाता है कोई धीरे धीरे चलता है शेर एक ी ाँगमें रह हाथ पार करता है कोई पिपी मार्गसे जाते हैं कोई विहङ्गम मार्गसे जाते हैं कोई गणितज्ञ चार ही कडियोंमें हिसाब र सवालका वाब निकाल लेता है किसीको बारह कड़ियाँ हिसब लगाना पड़ता है प लेकी बुद्धिम ाकी प्रशसा की जाती है पर हिसाब फैलाकर सम्पूर्ण में दिखानेकी रीति सभी विद्यार्थियोंकी समझमें आती है चार ही कड़ीमें सवालका जवाब ले आनेकी रीति जानते हुए भी जो क्षक बीचकी कोई डी न छोडकर सम्पूण क्रम समझाकर दिखा देता है अत्यन्त लोकप्रिय होता है उसकी ायी रीति सबकी समझमें आती है उसीके बताये मार्गसे सब चलते हैं और जो कोई उसके पाँ पर पाँव रखकर चल है वह भी गन्तव स्थानको पहुँचता है तुकारामजीका यही मार्ग था और ऐसे मार्गदशक होनेके कारण ही वह अत्यन्त लोकप्रिय ए

ससारतापें तापलों मी देवा ।

हे भगवन् ससारके तापसे मैं दग्ध हो चुका यहाँसे लेकर

तुका झाला पाडुरग ।

तुका पाण्डुरङ्ग हो गया —तक बीचमें जो जो पड़ाव हैं उन सबको तुकोबारायने अपने अभगोंमें स्पष्ट दिखाया है

पतित मी पापी शरण आलों तुज ।

मै पतित पापी तेरी रणमे आया हूँ यहाँ प पत्थर गड़ा और

बीज भाजुनी केली लाही ।
आम्हं जन्ममरण नाहीं

बी भूँजकर लाई बना डाला अब हमें जन्म मरण नहीं र यहां आकर यात्रा समाप्त हुई आखि री पत्थर गड़ा इसके बीचमें मील-मीलपर पत्थर गाड़कर उ होंने भक्ति ार्गके इस रास्तेमें ऐसी सुविध कर दी है कि तुकारामजीकी अभगवाणी हृदयमें धारणकर कोई भी इस पन पथिक मी मीलपर गड़े हुए पत्थरोंको देखते हुए चलता चले आजतक बहुतोंने बहुत रास्ते बनाये होंगे पर ोटे बड़े जान अजान ब्राह्मण चाण्डाल सब दुर्बल पु यवान्-प पी बके लि ये निभड़क जानेयोग्य ऐसा गम प्र स्त और आनन्द देनेवाला रास्ता जैसा तुकारामजीने दिया वैसा और किसीने कहीं न बनाया भूमि तो वेदोनारायणकी ही है पर तुकारामजीने कु पुराने और कुछ नये स्वय फोड़कर तैयार किये हुए प थर देकर य रा र्ग—रा मार्ग नहीं सतमार्ग तैयार किया है इस मार्गपर जिसे जो अभी हो वह मिलता है माग भी परिचि पड़ता है तुकारामजीकी सोहबतसे मनका उत्साह बढता है मार्ग होनेपर भी म जान पड़ है हाँ अपने मन सङ्कल्प पूर होता है जो चाहिये वही मिलता है अनायास ही रास्ता हो जाता है रास्तेमें

सुरम्य उपवन हैं चाहे जितना रमिये और त्रिविध ापसे मुक्त होइये स्थान स्थानमें अभग दर्पण गे हुए हैं उनमें निश्चिन्त होकर अपना रूप निहारिये और उसकी ै निक कर उसे स्वच्छ कीजिये चलता रास्ता होनेसे सग साथकी कमी नहीं निर्भय और रम्य मार्ग है तुकारामजीने जी जान लड़ाकर बड़े क उठाकर यह दिव्य मार्ग निर्माण किया है उनके स थ हम लोग यहाँतक चले आये हैं आगे भी उन्हींका सग पकड़े चलते चलें उन्होंने कैसे कैसे कष्ट सहे २सकी कथा उ ेंके मुखसे नें वह स्वय अनेक कष्टोंको पार कर गये हैं पर इस मार्गपर उनकी दृष्टि है चोर डाकू इस मागपर बहुत कम आते हैं चलिये तो अब तुकारामजीने कैसे मनोजय किया लोक लाज कैसे छोडी जन सम्ब ध तोडकर वह एकान्तवासमें कैसे रमे घरमें घुसे हुए अहङ्कारादि चोरोंको उन्होंने कैसे खदेडा भगवान्से कैसे सहायता माँगी और पायी एकान्तवास और सत्सगमें कितने प्रेमके साथ उन्होंने नाम सङ्कीर्तन किया जो सब साधनोंका सार है यह सब उनके चरित्रका मनोरम भाग उन्हींके मुखसे निश्चिन्त होकर श्रवण करें और उन्हींकी कृपासे हम ोग भी उनके पीछे पीछे चलें

४ मनोजयका उपाय

तुकारामजीने अपने मनको कितना मनाया है मनोजयके बिना परमार्थ मिथ्या है ससारका साम्राज्य मिल सकता है पर मनोजय करना बडा ही कठिन है इसलिये सावभौम राज्य प्राप्त करनेवाले चक्रवर्ती राजाकी अपेक्षा मनको अपने में रखनेवाले साधुकी योग्यता सभी दे ोंमे बहुत बड़ी मानी जाती है यूरोपमें ईसा और सुकरातकी जो प्रति ा हुई वह किसी राजाकी कभी न हुई हमारे इस पुण्य भारतवष देशमें भी असख्य पैदा हुए पैदा होकर मर मिटे राव भी हुए रक भी हुए और सब आये और चले गये पर शुकाचार्य भी म हरिश्चन्द्र नूमान् भरत,

ङ्कराचार्य सीदास मीराबाई रामदास एकनाथ काराम ज्ञानदेव छत्रपति शिवाजी अहल्याबाई इत्यादि मनोजयी पुरुषोंका जो मान है वह दूसरोंका नहीं है २सका ारण यही है कि मनपर जीन कसकर अन्त त्रुओं को पछाडनेवाले ीरकी योग्यता घोड़ेपर वार होकर युद्धमें शत्रु सहार रने ले योद्धाकी अपेक्षा कहीं अधिक है प्रह्लादने अपने पितासे कहा पिताजी पहले अपने चित्तमें बैठे हुए ासुरभ वको निकालिये क्योंकि वही आपक यथार्थ त्रु है सम मनो बत्स्व न सन्ति विद्विष मनको समत्वमें रखिये उच्छृङ्खल और कुमार्गकी ओर सहज ही भागे जानेवाले मनसे प्रबल और कोई त्रु नहीं है मनकी समता बनाये रहना ही अनन्तकी पूजा है ' (भागव ७ ८ १) योगवासि और भागवतमें मनो निग्रहके उत्तम सा न बताये हैं भागवतके (कन्ध ११ २३) भिक्षुगीतको पाठक अवश पढ हमारे सुख दु खके कारण दूसरे लोग नहीं देवता नहीं ग्र कर्म काल भी नहीं प्रत्युत हमारा ही मन है ससार मन कल्पित है त्रिगुणात्म अनन्त त्तियाँ मनसे उठती हैं दान धर्म म नियम कर्म ज्ञान त तप इन सबका उद्देश्य मनको ही नियत करन है

परो हि यो ो धि

अर्थात् नकी समाधि समता ही पर योग है जिसका मन समाहित है न्त स्थिर है उसे दानादि करनेकी कोई आवश्यकता नहीं और जिसका मन समाहित नहीं है उसके लिये ये साधन अनुपयुक्त हैं इन्द्र चन्द्रादि दे मनके अङ्कि हुए पर मन कि ीके वशमें नहीं रहता ऐसे दुजय मनपर जो सवार होगा वह बलवानोंसे भी बलवान् है मन कालमे नहीं समाता मनको रोग नहीं होता मन कृश नहीं होता मनको पकडना चाहें तो उसका ठौर ठिकाना नहीं मिलता ऐसे मनको कोई में भी कैसे करे ए ना महाराजने कहा है

जेविं हिरेंनि हिरा चिरिजे ।
तेवीं मनेंचि मन धरिजे

जैसे हीरेसे हीरा चीरा जाता है वैसे ही मनको मनसे ही धरना होता है ' मनोजयका यह सर्वोत्कृ उपाय है हीरेसे हीरा चीरा जाता है वैसे ही मन मनसे ही जीता जाता है मनको पुचकारकर हरि गुरु भजनमें जोतना उसीमें रमाना स्वरूपमें गाये रहना यही एकमात्र नोजयका उपाय है

मना सज्जना भक्तिपर्थेंचि जावें ।

रे सज्जन मन भक्तिके ही रास्तेपर चला कर समर्थ रामदास स्वामीका उपदेश है इस मनोबोधके २ ५ श्लोकोंद्वारा उन्होंने मनको मना-मनाकर हरिभजनका चसका लगाया है मन चञ्चल और दुर्निग्रह है यह अर्जुनने व कहा भगवान्ने

अभ्यासेन कौन्ते ैराग्येण च गृह्यते

(गीता ६ ५)

यही मनोजयका उपाय या है इसपर ज्ञानेश्वर महाराज कहते

वैराग्याचेनि आधारें । जरी लाविलें अभ्यासाचिये मोहरे
तरी केतुलेनि एकें अवसरें । स्थिरावेल ४१९
यया मनाचें एक निकें । जे देखिलें गोडीचिया ठाया सोके
म्हणोनि अनुभवसुखचि कवतिकें । दावीत जाइजे ४२

वैराग्यके सहारे यदि इस मनको अभ्यासमें लगाया जाय तो कुछ बाद वह अवश्य स्थिर होगा (४ ९) मनकी एक बात बड़ी अच्छी है ि ची इसे चसका है उसमें ग ही है इसलिये इसे आत्मानुभवका सुख बराबर देते रहना चाहिये (४२)

ए ओरसे वैरा यकी धूनी रमाकर चि से विषयोंका त्याग करना और दूसरी ओरसे हरि चिन्तनका आनन्द लेना इस प्रकार वैराग्य और अभ्यास दोनों अस्त्र ोंकी मारसे मनोदुर्ग द करना होता है गुरुभक्त गुरुभक्तिका अभ्यास करें प्रेमी सगुण भक्तिका अभ्या रें और ज्ञानी स्वरूपानुस धानका अभ्यास करें सब त्पर्य और फल एक ही है गुरु सगुण और निगुण तीनों तत्त्वत एक ही हैं यथारुचि कोई भी अभ्य स दृढ हो जाना चाहिये इस मनमें एक बड़ा भारी गुण यह है कि यह जहाँ लग ता है वहाँ लग ही जाता है फिर वहाँसे हटता नहीं उसे दि यह प्रपञ्च ही यार है तो उसे बराबर यह समझाते रहना चाहिये कि यह विश्व रचना दग्धपटवत् है और ऐसा वैराग्य करना चाहिये कि मन विषयोंसे ऊब ज य और दूसरी ओरसे उसे परमार्थका च गाते हुए रि भजनमें समाधि देनी चाहिये मनसे ही मनको मारना हरि भजनमें लगाकर उन्मन करना हरिस्वरूपमें मिलाकर मनको मनकी तरह र ने ही न देना यही तो मनोजय है एकनाथ महाराज कहते हैं

या मन ची एक उत्तम गती । जरी स्वयें लागल परमार्थी ।
तरी दासी करी चारी मुक्ती । दे बांधोनी हातीं पर

इस मनकी एक उत्तम गति है यदि यह कहीं परमार्थमें गया तो चारों मुक्तियोंको दासियाँ बना छोड़ता है और पर को बाँधकर हाथमें ा दे है ऐसे परब्रह्म हस्तग ो जाता है इतना बड़ा मनके करनेसे होता है

गति अधोगति मन ची हे युक्ति । मन लावी एकांतीं साधुसगें

मनकी बड़ी अधोगति है पर इस युक्तिसे उ मनको सत्सङ्गसे एकान्तमें ओ

५ पर विजय

मनोजयका रहस्य और महत्त्व ध्यानमें रखकर अब यह देखें कि काराभजीने मनको कैसे जीता

मन करा रे प्रसन्न । वैसिद्धींचें साधन
मोक्ष अथवा बंधन । सुख समाधान इच्छा ते

अरे मनको प्रसन्न करो ो सब सिद्धियोंका साधन है जो ही मोक्ष बन्धन कारण है (उसे प्रसन्न कर) उ सुख-समाधानकी करो

उत्तम गति अथवा अधोगति देनेवाला मन है मन ही सबकी है साधक पाठक पण्डित श्रोता वक्ता सबसे तुकाराम हाथ उठाकर यह कह रहे हैं कि मनको ोड़ और कोई देवता नहीं पहले इसे लो मनको प्रसन्न करना उसे विषय प्रवाहसे खींचकर हरि भजनके लङ्गरमें बाँधना है मनकी बड़ी रखवाली करनी पड़ती है ँ-जहाँ हाँ ाँसे इसे बड़ी सावधानीके साथ ंच लेना पड़ता है

तुका म्हणे मना पाहिजे अंकुश । नित्य न दीस जागृतीचा

तुका कहता है कि मनपर अङ्कुश चाहिये जिसमें जागृतिका नित्य नवीन दिव उदय हो

नित्य जागकर इ मनको सँभालना पड़ता है मदोन्मत्त हाथी ैसे अंकुशके विना नहीं सभलता ैसे ही यह चञ्चल मन अ ण्ड सावधान रहे विना ठिकाने नहीं रहता तुकारामजीने मनको भी देव कहा कभी कभी दुजन कहा पर हर बार भगवान्को यादकर उसे सँभालनेका भार उन्हींपर रक्खा नुष्य अपनी बुद्धिसे इस मनको कहाँतक रोक है कितना सावधान रह स है ए क्षणमें

पचासों जगह चक्कर लगा आनेवाले २स मनको भगवान् द करें तो ही रोक कते हैं

आवरिता मन नावरे दुजन । घात करी मन माझें मज
अतरीं ससार भक्ति बाह्यात्कार हणोनि अतर तुझ्यापायीं

मनको रोकन चाहें तो यह दुर्जन नहीं रुकता मेरा मन मुझे ही हानि पहुँचाता है इसके अन्तरमें ससार भरा हुआ है भक्ति केवल बाहर है इसलिये यह अ तर आपके चरणोंमें रखता हूँ

य मन ससारकी बातें ही सोचता रहता है हे भग न् मेरे-तेरे बीच यही एक बडी भारी बाधा है मैं तो भजन पू न करता हूँ पर अदर मन ससारक ही ध्यान करता रहत है वह ध्यान नहीं छूटता यह तो मुझे भक्तिका ढोंग ही लगता है हे नारायण आओ दौड़ आओ म्हीं इस अन्तरमें आकर भरे रहो

काम क्रोध आड पडले पर्वत । राहिला अनत पैलीकडे १
नुल्लघवे मज न सापडे वाट । दुस्तर हा घाट बैरियांचा २

काम क्रोधके पवत आड़े आ पड़े हैं और भगवान् अनन्त परली रह गये मैं इन पहाड़ोंको नहीं लाँघ सकता और कोई नहीं मिलता वैरियोंका यह घाट तो बड़ा ही दुस्तर है

इस मनके कारण हे भगवन् मैं बहुत ही दुखी हूँ क नके इन विकारोंको तुम भी नहीं रोक सकते

आवरितां तुझे तुज नावरती । थोर वाटे चित्तीं आ य हें ३
तुका हणे माझ्या कपाळाचा गुण । तुला हांसे कोण समर्थासी ४

तेरे (ये विकार) तेरे रोके भी नहीं रुकते यह तो चित्तको बड़ा

लगता है का कहता है यह मेरे ललाटकी कर्म रेखा है तुझे कोई क्या हँसेगा

नकी अनन्त ऊर्मियोंको देखकर कभी कभी तुकारामजी अत्यन्त निराश हो जाते थे तुका म्हणे मा । न चले सायास (अब मेरा स नहीं चलता) यह भगवान्से दि ोलकर कह देते थे

आ । कैंचा मज सखा नारायण । गेला अंतरोन पाडुरग

अब नारायण मेरे स । कहाँ रहे वह तो मु छोड़कर चले गये

भग न् मैं तो दु ी हुआ हूँ पर आप दुखी होइये

मेर मन ऐसा चञ्चल है कि एक घड़ी एक भी स्थिर नहीं रहता अब हे नारायण तुम्हीं मेरी ध लो मु दीनके पास दौड़े आओ

इस मनको जितना ी बद रखो उतना वह बेकाबू हो जा है

इसे हुत रे को बद कर रखो ो यह खी उठता है फिर चाहे जिधर भागता है इसे भ ि नहीं श्र ण प्रिय नहीं विषय देखकर उसी ओर भागता है

सोते जागते इसे क ाँतक रोका य

मज राखे आता । तुका म्हणे पढरिनाथ ॥

हे पण्ढरीनाथ अब तुम्हीं मेरी रक्षा करो

नित्य २स मनका विचार करता हूँ तो देखता यह हूँ कि यह तो बेबस विषय लोभी है अपने बलसे इसे रोक रखना चाहता हूँ पर इस उलझनको सुलझानेका कोई उपाय न देख निरा होता हूँ अनत उठती चित्ताचे तरग' (अनन्त उठतीं चित्तकी तरगें) य हे भगवन् क्या आप नहीं नते

कोण तुम्हांवीण मनाचा चालक । दुजें सागा एक नारायणा

आपके बिना इस मनका दूसरा कौन चालक है हे नारायण तो बताइये

आपके सिवा और कोई यदि मनका चालक हो तो कृपाकर ठिकाना ब दीजिये तो आपको क्यों क दें उसीको जाकर पकड़ें

मनका निरोध करता हूँ पर विकार नष्ट नहीं होता ये विष द्वार बड़े ही दुस्तर हैं यदि आप अन्तरमें भरे रहते तो मैं निर्वि होकर तदाकार ो जाता

मनका निरोध करनेका बड़ा यत्न किया पर मनके दु वि नहीं होते विषयोंके द्वाररूप ये इन्द्रियाँ बड़ी कठिन हैं ये सदा ही बाहरसे विषयोंको अदर ले आया करती हैं मन और इन्द्रियोंका सख्य बड़ा पुराना होनेसे ज्यों ही ये इन्द्रियाँ विषयोंको ले आती हैं त्यों ही यह मन श्रवण मननादि साधनोंके जमा किये हुए विचार क्षणार्धमें भुलाकर वि ार बन जा है अतएव हे नारायण आप ही अन्त करणको व्यापे रहें तो ही निस्तार है अन्तरमें आपको आसन जमाये देखकर ये विषय बाहर-के बाहर ही रहेंगे हे भगवन् हे करुणाकर न रायण वेगसे आओ मेरे अन्तरमें भरकर आप ही यहाँ सदा विराजें आप कहेंगे कि तुम इन इन्द्रियोंको सम्हालो हम मनको देख लेंगे देखिये भगवन् ऐसा न कहिये

एकका भी दमन मु से नहीं होता बका नियमन कैसे करूँ

इन्द्रियों दमन करते बनत नहीं मन वशमें आत नहीं सारा अ धकार ही अन्धकार है

तुका म्हणे झाली अधळयाची परी । आता मज हरी बाट दावी

तुका कहता है कि अन्धेकी सी हालत मेरी हो गयी है हे हरे मुझे (पकड़कर) रास्ता बताओ

बीचमें ही कभी वह मनको मीठे शब्दोंद्वारा मनाते भी थे कहते रे मन ! तू अब पण्ढरीकी ग्रै लगा फिर तू जो कहेगा मैं म नूँगा

मन एक करीं । म्हणे मी जाईन पढरा ।
उभा विटेवरी ो पाहेन सावळा १

रे मन एक काम कर —यह कह दे कि मैं प ढरी जाऊँगा और वहाँ ईंटपर खड़े श्यामको देखूँगा

रे मन क कि मैं रा कृष्ण हरी' कहूँगा उल्लासके साथ हरि कथा सुनूँगा संतोंके पैर पकड़ूँगा तू इतना जरूर कर कि

मैं रगशिलापर (हरि प्रेमसे) नाचूँगा तब तू भी अदरकी मै छोड़कर तैयार रह और तालपर ता ी बजाता चल

रे मन इन इन्द्रियोंके पी भटकते भटकते अब तू थक गया होगा तुझे अखण्ड विश्रान्तिका स्थान दिखाता हूँ हम तुम वहाँ चलकर अखण्ड सुख सम्भोग करें

रे मन अब भगवान्‌के चरणोंमें लीन हो जा इ द्रियोंके पीछे मत दौड वहाँ सब ख एक साथ हैं और वे कभी कल्पान्तमें भी नष्ट होनेवाले नहीं जाना आना दौडना भटकना चक्करमें पडना यह सब वहाँ छूट जाता है वहाँ पर्वतोंपर चढनेका ोई परिश्रम नहीं करना पडता अब मुझे तु से इतना ही कहना है कि तू कनक और का ताको विषतुल्य मान तु क ता है उपकार करना तेर हाथमें है तू चाहे तो हम-तुम भव सि धुके पार उतर सकते हैं

मनको इस तरह मझाकर तुकाराम फिर उसकी फरियाद भगवान्के पास ले जाते भगवान्पर ही सारा भार छोड़ते शरणागत हो जाते भगव न्पर क्रोध भी करते कहते

तुम्ही देवा माझा करा अगीकार ।

भगवन् आप मुझे अङ्गीकार कीजिये ऐसा अब मैं नहीं कहूँगा जो होन था वह तो हो चुका आपकी और मेरी भी पत तो ती रही

आ । दाहीं पक्षीं लागलें लाछन । देवभक्तपण लाजवीलें

अब ो दोनोंको लाञ्छन लग ही गया आपका देवपना और मेरा भक्तपना दोनों ही लाञ्छित हुए

आपके लिये सब ठीक ही है क्योंकि आप वि नाथ हैं ड़े हैं लोग यह कैसे कहें कि आपकी पत जाती रही पर मेरी हाल जो ई आखिर क्या हुई बताऊँ सुनो

एकान्तमें अकेला यह मन एक पल भी एक स्थानमें स्थिर नहीं रहता पैरोंमें महत्त्वकी बेडियाँ पड़ गयीं गलेमें स्नेहकी फाँसी लगी देहको तो ऐसी आदत पड़ गयी है कि जो सुख देखा वही उसे चाहिये और मुँ ऐसा हो गया है कि कदन्न उसे स्वीकार नहीं तुका कहता है कि मैं अवगुणोंकी खानि बना हूँ निद्रा और आलस्यका तो पू ही क्य है '

मैं आखिर किस काम आ लोग मुझे साधु मानने लगे महात्मा कहने गे यह महत्त्व मुझे क्या मि । मेरे पैरोंमें बेड़ियाँ पड़ गयीं कारण त तो मेरी यह है कि स्त्री पुत्र घर द्वारके ममत्व स्नेहकी फाँसी मेरे गलेमें लगी हुई है यह मनक हाल हुआ ौर तन यह हाल है कि जो ख सामने आता है वही यह ाँग ता है जीभ भी ऐसी

चटोरी हो गयी है कि यह कदन्न खा ही नहीं कती इसे उत्तम मिष्टान्न और षड्र भो न चाहिये निद्रा और आलस्य दिन दिन बढते ही जा रहे हैं इस प्रकार ब दोषोंका घर बन बैठा हूँ थोड़ी देर एकान्तमें बैठकर स्थिर होकर तेरा ध्यान करन चाहूँ तो यह मन एक पल भी स्थिर नहीं रहता भगवन् बताओ मेरा भक्तपना अब कहाँ रहा और आपका भगवान्‌पना भी ँ रहा दोनोंहीपर तो स्याही पुत ग ी

न संडवे अन्न मज न सेववे वन १
म्हणउनी नारायणा । कींव भाकितों करुणा २

अन्न छोड़ा नहीं जाता मुझसे वन सेया नहीं जाता इसलिये हे नारायण यही कहता हूँ कि करुण करो '

मेरे अदर क क्या दोष हैं उन सबको मैं जानता हूँ पर क्या करूँ मनपर बस नहीं चलता इन्द्रियोंको खींचते नहीं बनता वाणीसे कहता तो बहुत कुछ हूँ पर कथनी जैसी करनी नहीं बन पड़ती ऐसी विषम अवस्थामें जब मन और इन्द्रियाँ एक तरफ हो गयी हैं और दूसरी तरफ मैं हूँ मेरी उनकी ऐसी तनातनी है तब आप ही मध्यस्थ होकर इस कलहको मिटाइये इसके सिवा और को उपाय नहीं है

माझे मज कळों येती अवगुण । काय करूँ मन अनावर १
आता आड उभा राहे नारायणा । दयासिंधुपणा साच करीं ध्रु
वाचा वदे परा करणें कठीण । इद्रिया आधीन झालों देवा २
तुका म्हणे जैसा तेसा तुझा दास । न धरी उदास मायबापा ३

मेरे दुगुण मुझे जान पडते हैं पर क्य करूँ मनपर बस नहीं चलता अब आप ही हे नारायण बीचमें आ जाइये और अपने दयासिन्धु होनेको सत्य कर दिखाइये वाणी तो कहती है पर करना कठिन

है मैं इनि योंके इतना अधीन हो गया हूँ तुका कहता है मैं ` भी हूँ तुम्हारा दास हूँ मेरे माँ बाप मुझे उदा मत करो

मैं जैसा हूँ ऐसा ही तुम मुझे अपना लो और अपने दयासिन होनेको सत्य कर दिखाओ मनको रोको मनको रोको कहकर भगवान्‌से कितनी विनती की पर मन नहीं रुकता नहीं स्व धीन होता और दयासिन्धु चुपचाप बैठे हैं कुछ बोलतेतक नहीं इस भावनासे खड़ब कर तुकाराम कहते हैं

काय करूँ आता या मना न संडी विषयाची वासना ।
प्रार्थिताही राहे ना । आदरें पतना नेऊं घाली १
आत धांवे धांवे ग श्रीहरी । वाया गेलों नाहीं तरी ।
दिसे कोणी आवरी । आणि दुजा तया ी ध्रु
न रहे एके ठायीं एक घडी । चित्त तडतडा तोडी ।
भरले विषय भोंवडी । घालू पाहे उडी भवडोहीं २
आशा तृष्णा कल्पना पापिणी । घात मांडला माझायाणीं ।
तुका म्हणे चक्रपाणी । काय आजूनी पाहसी ३

क्या करूँ अब इस मनको विषयकी वासना तो नहीं छोड़ता मनानेसे भी नहीं मान ठीक पतनकी ओर लिये जा रहा है हे श्री रि अब दौ ो दौड़ो नहीं तो मैं अब गया और ोई नहीं दिखायी देता जो इस मनको रोक रखे एक घड़ी भी एक स्थानमें नहीं रहता बन्धन तड़ तड़ तोड़कर भागता है विषयोंके भँवरभरे भव सागरमें कूदा चाहता है आ ातृष्णा कल्पना पापिनी मेरा ना करनेपर ली हुई हैं और तुका कहता है हे चक्रपाणि तुम अभी दे ही रहे हो

पत्थरका भी कलेजा निक पड़े ऐसे रुणा स्वरसे मनको सयत करनेके ि ये काराम नारायणसे इतना गिड़गिड़ाये पर नारायण चुप ।

तुकाराम इतने वि इतना रनेवाले फिर भी भगवान् मौन साधे बैठे यों क्या इसका है कि भगवान् यह चाहते थे कि तुकाराम ऐसे ही विकल होकर प्रयत्न करते रहें क्या इसी विकल प्रयत्नमें मनोजयका बीज है ायद भगवान् बा इसीलिये तटस्थ थे भगवान् यह देख रहे थे कि कारामजीकी लगन इतनी बरदस्त है वि उ पर भगवत्कृपा करनी ही होगी यही नि य करके भगवान् तुकारामजीके मनोजयके उद्योगको ौतुकके सा देख रहे थे

तुका म्हणे नाहीं चालत तातडी ।
प्रासकाळघडी आल्यावीण

तुका कहता है अधीरतासे कुछ नहीं होगा बतक उसका समय न

अत्यन्त कोमलहृदय भक्त-वत्सल भगवान् पाण्डुरङ्ग इसीलिये मौन साधे तुकारामजीकी ओर अत्यन्त प्रेमसे देख रहे थे बीच बीचमें प्रसादकी दिखा देते थे पर बतक इष्टकाल उपस्थित नहीं हुआ है बतक कारामको चित्त शुद्धिके उद्योगमें ऐसे ही लगे रहने दो इसी विचारसे भगवान् तटस्थ बने हुए थे चित्त द्धिके पूर्ण होते ही आस्थाकी भूमिके पकर तैयार होते ही वह करुणा घनश्याम बरसे पर उस मधुर मङ्गलमय प्रसङ्गकी ओर चलनेके पूर्व अभी मलोग यह देख लें और समझ लें कि तुकाराम अपने चित्तके सब विकारोंको दूर करके चित्तको पूर्ण शुद्ध करनेके कैसे कैसे उपाय रहे थे

६ , ी और

परमार्थ पथमें बन ी और न तीन बड़ी खाइयाँ हैं पहले ो इस प पर चलनेवाले पथिक ही बहुत थोड़े होते हैं फिर ो होते हैं

उनमेंसे कु तो प ली पैसेकी खाईमें ही खो जाते हैं इससे जो बचते हैं वे आगे बढते हैं इनमेंसे कुछको दूसरी खाई (ीकी) खा जाती है इससे बचकर ो आगे बढे वे ती री खाई (मानकी) में खपते हैं इन तीनों खाइयोंको जो पार कर जाते हैं वे ही भगवत्कृपाके पात्र होते हैं पर ऐसा पुरुष विरला ही होता है

विरळा ऐसा कोणी । तुक त्याचे लोटांगणीं ।
'ऐस विरला जो कोई हो, तुका उसके चरणोंमें लोटता है ।'

तुकारामजीका मन सयम बड ही प्रच ड था इससे पहली दो ाइयोंको तो वह अन यास पार कर गये तीसरी खाईको पार रनेमें उन्हें भी कुछ कठिनाई पडी ऐसा जान पड़ता है तुकाराम रणधीर महावैष्णव वीर थे उनका वीरताका बाना ऐसा कसा हुआ था कि कहींसे उसमें कोई ढिलाई नहीं पहलेसे ही वह कसौटीपर कसा हुआ था इसलिये वह तीनों खाइयोंको पार र गये पहले नकी खाई आती है पर तुकारामजीने वैराग्यकी थम अवस्थामें ही नको पत्थरके समान तु ाननेका निश्चय कि अपना सब बही खाता इन्द्रायणीके दहमें बाकर लेन देनके झगड़ेसे मुक्त हो गये त्रपति श्रीशिवाजी महाराजने उनके पास हीरे-मोती भेजे थे तुकारामजीने उ हें देखातक नहीं और लौटा दिया वैराग्य लाभके पश्चात् अन्ततक उन्होंने धनको स्पश नहीं किया इससे यह जान पडता है कि उ हें धनका मोह कभी हुआ ही नहीं दूसरा मोह स्त्रियोंका होता है इस विष में भी उनका चरित्र आरम्भसे ही अत्यन्त उज्ज्वल था अपनी स्त्रीका भी जहाँ स्मरण नहीं वहाँ पर-स्त्रीकी ही क उनकी दिनचर्या ही ऐसी थी कि रातको श्रीविठ्ठल-मन्दिरमें कीर्तन ाप्त होनेपर घंटे दो घंटे वह यदि सो ही गये तो मन्दिरमें या अपने घरमें सो लेते थे उषाकालमें उठकर स्नान करके श्रीविठ्ठल-पूजा करके

सूर्योदयके समय इन्द्रायणीके पार हो जाते थे सो रातको फिर गाँवमें आते और आते ही कीर्तन करने ग जाते दिनभर भण्डारा पर्वतपर ग्रन्थाध्ययन और नाम स्मरणमें रमे रहते थे इस दिनचर्यामें दिन को भी स्त्रीसे मिलने अवसर नहीं मिलता था इस कारण जि बाईको बड़ा क थ और टपर या अड़ोस पड़ोसमें अन्य स्त्रि योंके पास अपना रोना रोती हुई प्राय दिखायी देती थीं जि स पुरुषमें ऐस प्रखर वैराग्य हो उसे स्त्रीका मोह क्या पर पुरुषको मोहनेवाली स्त्रि याँ तो उ हें रीछनी सी जान पडती थीं

तुका म्हणे तैशा दिसतील नारी । रिसाचिया परी आम्हा पुढें

तुका क ता है वैसी नारियाँ हमारे सामने आती हैं तो रीछनी सी लगती है रीछनी गुदगुदी करके प्र ण हरण करती हैं वैसे ही परमार्थी पुरुष इ जाने कि स्त्रि योंका सङ्ग नाश करनेवाला है और उनसे दूर रहे यही तुकारामजीके मनका निश्चय था स्त्रैण पुरुषोंकी दो चार अभङ्गोंमें उन्होंने खूब खबर ली है साधक कैसा होना चाहिये यह बतलाते हुए कहते हैं

एकातीं लोकातीं स्त्रियासी भाषण । प्राण गेला जाण करूँ नये

एकान्तमें लोकान्तमें (भीड़-भडक्केमें) भी स्त्रियोंसे भाषण प्राण जाय तो भी न करे

साधकमें इतनी ता होनी चाहिये तभी तो उसका वैराग्य टि है इस दृढताके न होनेसे नये पुराने सैकड़ों गुरु बाबाजी महार परम्पराभिमानी और सुधारक दयादाक्षिण्य और वनितोद्धारकी बातें करते करते कहाँ से हाँ जाकर गिरते हैं यह तो हमलोग नित्य ही देखा करते काराम या समर्थ रामदास जैसे वैर यशिखामणि सत्पुरुषोंका ही यह है कि स्त्री-जातिकी उन्नतिका उप करें यह अधकचरोंका काम नहीं है जिन्होंने अपना उद्धार नहीं किया या नहीं वे दूसरोंका उद्धार

क्या करेंगे उद्धार और उन्नतिके नामपर केवल अपनी अधोगति कर लेंगे इसलिये इन बातोंमें साध कोंको साधन अवस्थामें अत्यन्त सावधान रहना चाहिये इसीमें उनका कल्याण है अस्तु कारामजी राग्यके मेरुमणि थे एक बारकी कथा है कि वह भण्डारा पर्वतपर हरि चिन्तनमें निमग्न थे ब एक ी अपने मनसे हो या किसीके उभारनेसे ो राम जीकी परीक्षा करने उनके पास एकान्तमें गयी उ अवसरपर तुकाराम जीके मुखसे दो अभङ्ग निकले हैं ए उ स्त्रीका भाव जाननेपर भगवान्‌से निवेदन किया है और दूसरेमें उस स्त्रीसे उन्होंने अपना नि बताया है वे दोनों अभङ्ग प्रसिद्ध हैं

स्त्रियांचा तो सग, न ो नारायणा । काष्ठा या पाषाणा मृत्तिकेच्या
नाठवे हा देव, न घडे भजन । लाचावलें मन आवरेना घ्रु
दृष्टिमुखें मरण द्रिय या द्वारें । लावण्य तें रें दुः मू २
तुका म्हणे जरि अग्नि जाला साधु । तरी पावे बाधूं सघट्टणें ३

हे नारायण स्त्रि योंका सङ्ग न हो काठ पत्थर और मिट्टीकी भी स्त्रीकी मूर्तियाँ सामने न हों उनकी माया ऐसी है कि भगवान्‌का स्मरण नहीं होता भगवान्‌का भजन नहीं होता उनसे परचा हुआ न समें नहीं आता उनके नेत्रोंके कटाक्ष और मुखके हा भा इन्द्रियोंके रास्ते मरणके कारण होते हैं उनका ावण्य केवल खका मूल है कहता है अग्नि यदि साधु भी ो जाय तो भी उसका र्ग (जलानेका कारण) ही होता है इसलिये इनसे बचाओ इनका जिसमें न ो

कारामजी फिर उस स्त्रीको सम्बोधन कर कहते हैं

पराविया नारी, रखुमाईसमान । हें गेलें नेमून, र्यीचेंचि १
जाइ वो तू माते । न करी साय । आ ीं विष्णुदास तैसे नव्हों

न साहावे मज तुझें हें प न । नको हें वचन, दुष्ट वदों ।२।

तुका ह्मणे तुज, पाहिजे भ्रतार । तरी काय नर, थोडे झाले ।३

पर स्त्री रुक्मिणीमात के मान है तो पहलेसे ही निश्चित है इसलिये माँ म जाओ मेरे लिये कोई चे न रो हमलोग विष्णु दास हैं वह नहीं हैं तुम्हारा यह पतन मु से नहीं सहा जाता फिर ऐसी बुरी बात मत कहो का तो यही कहता है कि यदि तुम पति चाहती हो तो संसारमें नर क्या कम हैं

तुकारामजीने उसे भी रखुमाई कहा मात कहा अपना निश्चय ब या और विदा किया तात्पर्य परमार्थमें कन और कान्ताकी जो दो बड़ी भारी बाधाएँ हैं वे तुकारामजीके चित्तमें कभी बिंध नहीं सकीं इससे इस विषयमें उन्हें मनोनि का कोई विशेष प्रयत्न करनेका कारण ही नहीं था जन्मते ही वे शीलवान् और विरक्त थे पर न और परदाराकी इच्छा पामरोंके ही चित्तमें उठा करती है तु रामजीने उनके सम्बन्धमे है कि पर ीको ता कहते हुए उनका चित्त आप ही अपनेको लज्जित कर । है जो लोग ऐसी अशुभ वृत्तियोंसे पीडित हैं पर जो विवे और वैराग्यसे उनका निरो करते हैं उनकी वीरता भी प्रशंसनीय है परन्तु जिनके दयाका में ऐसी हीनवृत्तियोंके बादल उठते ही नहीं वे ी सच्चे सदाचारी हैं ि स सदाचारमें फिसलनेका भय या सशय रहता है वह सच्चा सदाचार ही नहीं है पापकल्पनाकी हवा भी पु यपुरुषोंके चित्तको लगने न ीं पाती ऐसे पुरुष ही शुचि और पवित्र ोते हैं तुकाराम ऐसे ही पुरुष थे यह कहनेकी आवश्यकता नहीं जिनकी निष्कलङ्क शुचितासे देहू सा गाँव पुण्य क्षेत्र हो गया और इन्द्रायणी पतित पावनी हुई जिनके दर्शनसे हजारों जीव तर गये जिनके नाम सकीर्तनसे प्रसिद्ध पापी पुण्यात्मा हो गये वह कोबाराय विशुद्ध शुभ्र

पुण्यराशि थे यह इनेकी कोई अ वश्यकता नहीं तात्पर्य कनक और कान्ता, जिसके चक्करमें सारा ससार पडा हुआ है तुकाराम उनसे सदा ही विमुक्त रहे उनका वैराग्य अचल था

मनु यमात्र मानकी इ छा करता है कौन नहीं चाहता कि लोग हमे अच्छा कहें लोगोंमें हमारी बात और इज्जत रहे केव दो ही ऐसे हैं जिन्हें मानकी परवा नहीं होती ए व जो किसी व्यसनमें फँसा दुराचारमें धँसा रहता है और दूसरा ह जो सत्यासत्यमें मनको क्षी रखकर नारिय के वृक्षके समान सी ही बढा जाता है ये दोनों ही नि सङ्ग और निर्लज्ज बने रहते हैं पहला रहता तो है सङ्गमें ही पर व्यसन दुराचारसे व इतना पाषाण दय हो जाता है कि उसे ोक निन्दा या लोक स्तुतिकी कु भी परवा नहीं रहती दूसरा चित्त शुद्धिके लि ये तथा अपने उद्योगकी सिद्धिके लिये जान बू जनसमुदायसे अलग ही र है और आत्मवि ास होनेसे नि दा स्तुतिकी परवा नहीं करता दोनों ही प्रकारोंके मनु य ससारमें बहुत ही क हैं बाकी सब लोग ौकिक मानके ही पीछे लगे हुए हैं आचार विचार लोक लाज या वैदिक कर्मानुष्ठानमें सबका बस यही ध्यान रहता है वि लोग हमें अच्छा हें इसके परे वे और कुछ नहीं देख सकते नहीं सम सकते गृहाचार और लोकाचारका पालन प्राय इसीलिये किया जाता है कि यदि ऐसा नहीं करेंगे तो लोग बदनाम करगे सबसे हिले मिले रहना सबके यहाँ आना जाना बात चीत दावत पार्टी लाइब्रेरी सभा सोसायटी व्याख्यान वंत्र ना और मान गा हुआ है हीं यह न हो ऐसा नहीं है चन्दा भी लोग नाक भौं सिकोड़कर दे डालते हैं इसीलिये कि अपनी बात रहे मे माफकत बनी रहे ामान्य जनोंका यही ौकिक आचार है जीवनका कोई महान् ध्येय नहीं कोई बड़ा र्मानुष्ठान नहीं समय कोई मूल्य न न्मकी सार्थकताका कुछ ध्यान नहीं जबतक जीवन

है जी रहे हैं न उस जीवनका कुछ ब है न उस जीनेका सिवा इसके कि एक दिन पैदा हुए और एक दिन मरे जायँगे ऐसे ही जीव लौकिक मानके बड़े भोक्ता होते हैं जो काय कर्ता पुरुष हैं इनका काम ऐसे लौकिक मानके पीछे पड़े रहनेसे नहीं च सकता अस्तु तुकोबाराय सत्यासत्यमें मनको स क्षी रखकर अपने परमार्थ मार्गपर चलते गये लोग बात कहते हैं इसका विचार करनेकी उन्होंने आवश्यकता ही नहीं रखी लौकिक मानका ही त्याग कर दिया यह त्याग उन्होंने तीन प्रकारसे किया (१) ोगोंका ही त्याग किया (२) एकान्तमें रहने लगे और (३) निन्दा स्तुतिकी कुछ परवा नहीं की यह सब उन्होंने कैसे किया यही आगे देखना है

७ 'अर तिर्जनससदि

परमार्थके साधकको चाहिये कि लोगोंके फेरमें कभी न पडे लोग दोमुँहे होते हैं ऐसा भी कहते हैं वैसा भी कहते हैं प्रपञ्चमें रहिये तो हेंगे कि दोषी है और प्रपञ्च छोड दीजि ये तो कहेंगे कि आलसी है आचार पालन कीजि ये तो कहेंगे कि आडम्बर है और अ चार ोड़ दीजिये तो कहेंगे महाभ्र है सत्सङ्ग कीजिये तो बडे भग बने हैं कहकर उपहास करेंगे और सत्सङ्ग न करें तो कहेंगे कि बड़ा अभागा है निर्धनको दरिद्र कहेंगे और नीको उन्मत्त कहेंगे बोलिये ाे वा और न बोलिये तो अभिमानी मिलने जाइये तो खुशामदी और न जाइये तो अभिमानी विवा करें तो म्पट न करें तो नपु नि सन्तान ो कहेंगे चा है और जहाँ बाल गोपाल दिखायी देंगे वहाँ कहेंगे यह तो पापकी जड है मृदङ्ग जैसे दोनों तरफसे बजता है वै ही लोग दोमुँहसे ब करते हैं ात्पर्य वमनकी तरह भी ग्रहण करते नहा बनते इ लिये जो अपन हित चाहता हो वह जनको

त्याग कर हरि भजनका सरल मार्ग आदर और प्रेमसे स्वीकार करे ससारमें तो धनवान्‌का ही मान होता है अपने माता पिता भाई-बहिन स्त्री पुत्रतक भी द्र य होनेसे ही अधिक मानते हैं य अ भव तो सभीको है इसके अपवाद भी हैं पर उनसे सिद्धान्त ही पु होता है पर प्रश्न यह है कि नके पीछे प कर उसीमें सारा जीवन लगा देनेका अन्तिम फल क्या है साथमें तो लँगोटी भी नहीं जाती मृत्यु-समयमें अपने प्यारे भी तो किसी काम नहीं आते तुकारा ी कहते हैं धनको अशाश्वत भाग्य सम ो ' अ ाश्वतमात्रसे तुकारामजीका जी से उचाट हुआ और श्वत परमात्म सुख प्राप्त करनेका निश्चय हुआ वैसे ही जन और जनाचारमें समय और बुद्धि लगाना उनके लिये भार हो गया सङ्गसे जी ऊबा और नि सङ्ग प्रिय होने गा

न ो नको मना गुतू माय जाळीं ।
ळ आला जवळी ग्रासावया

हे मन ायाजालमें म फँसो काल अब सना चाहता है इस प्रकार मनको उपदेश देते हुए ाराम श्रीपाण्डुरङ्गकी रणमें गये एकान्तमें हरि-नाम सकीर्तनका सुख यथे लूटते बनता है और लोग भी वहाँ तग करने नहीं आते इसलिये काराम एकान्तमें ही रमने लगे तुकारामजीका एक अभग है देवाचा भक्त तो देवासीच गो (भगवान्‌का भक्त भगवान्‌को ही यारा होता है) इ अभगमें तुकारामजी बतलाते हैं वि भगवान्‌का प्यारा भक्त औरोंका प्यारा नहीं होता लोग उसे पागल समझते हैं कोई भी उसे अपना नहीं कहता वह निर्जन वनमें या ऐसे ही स्थानोंमें रहता है जहाँ लो नहीं रहते वह प्रात भूत रमाता और कण्ठमें तुलसी-माला है उसका यह भेष देखकर अपने पराये सभी उसकी निन्दा करते हैं सब कारामजीने

मानो पना ही चरित्र संक्षेपसे कहा है और फिर कहते र सबसे हुआ इसीलिये वह दुर्लभ होकर भगवान्‌को प्रिय आ तुका कहता है इस सारसे जो रूठा उसीने सिद्ध पन पर पैर

तुकाराम गाँवमें केवल कीतनके लिये आते थे पर इतनेसे भी उपाधि हुई तुकाराम यह सोचते थे कि ब लोग कीर्तन श्रवण रें नाम-सुख भोगें और आत्मोद्धार कर लें पर कितने ही लोग ऐसे थे कि घर ही सो रहते गौर कितने ऐसे भी थे कि कीर्तन सुनने आते थे पर लगाकर कभी सुनते नहीं थे इसलिये कारामजी कहते हैं

मैं अपना ही विचार रूँ तो अ है इनके उद्धारका विचार करू तो इससे इन्हें क्या मेरी भी इ हें क्या परवा अपना अपना हित तो भी जानते हैं इनकी इच्छाके विरुद्ध इन्हें भगवन्नाम कीतनमें लगाते दु होता है हरि कीतन कोई सुनें न नें या अपने घर सुखसे सो रहें जो इच्छा हो करें तुका कहता है मैं अपने लिये करुणा प्राथना हूँ जिसकी जो सना होगी वही उसे फलेगी

८ कुतर्कियोंके र

इस प्र र भगवान्‌को प्रसन्न करनेके लिये ही वह अब कीतन करने लगे पर इस अवस्थामें भी अनेक प्रकारके तर्क कुतर्क लेकर लोग उनके पास आते कोई वाद उपस्थित करते या कोई ङ्क उठाते और उन्हें तग करते कारामजीको यह भी बडी उपाधि जान पडी

कोणाच्या आधारें करू मी विचार ।
कोण देईल धीर, माझ्या जीवा

किसके आधारपर मैं विचार करूँ मेरे जीको धीरज कौन देगा सतोंकी आज्ञासे मैं भगवान्‌के गुण गाता हूँ मैं शास्त्री नहीं वेदवेत्त नहीं सामान्य शूद्र हूँ ये लोग आकर मुझे तग करते हैं मेरा बुद्धिभेद

किय चाहते हैं बतलाते हैं कि भगवान् निगुण निराक र हैं इसलिये हे भगवन् अब तुम्हीं बताओ तुम्हारा भजन करूँ या न करू

कलियुगीं बहु कुशल हे जन । छळितील गुण तुझे गाता ३
मज हा सदेह झाल दोहींसवा । भजन करू देवा किंवा नको ४

कलियुगमें लोग बड़े कुशल हैं तुम्हारे गुण ो गायेगा उसे ये सतावेंगे इसलिये मुझे यह स देह हो गया है कि अब म ारा भजन रूँ न रूँ । हे नारायण अब यही बाकी रह गया है कि इन लोगोंको ोड़ दूँ या मर जाऊँ

किसीके घर मैं तो भीख माँगने नहीं जाता फिर भी ये काँटे जबर्दस्ती मुझे क देने आ ही जाते हैं मैं न किसीका कु खाता हूँ न किसीका कुछ गता हूँ जैसा समझ पड़ता है भगवन् तुम्हारी सेवा करता हूँ

नाना प्रकारके शुष्क वाद करनेवाले अहम य विद्वान् और भग त् भजनका विरोध करनेवाले पाख डी मानो हाथ धोकर तुकारामजीके पीछे पड़े थे तुकारामजीकी निष्ठाको कसौटीपर सनेके लिये मानो उन्होंने रण ककण बाँधा ा प्राय प्र येक साधकको उत्पीडन करनेके ि ये ऐसे लोग सदा सर्वत्र ही तैयार र ते हैं पर इन शब्द-छलवादियों और पाखण्डियोंका यही उपयोग होता है कि उनके द्वारा सा कका वैराग्य होता है भक्तका भक्ति प्रेम और भी बढता है साधकको अपने दोष ढूँढ़नेमें भी इनसे बडी सहायता मिलती है तुकारामजीने एक अभगमें जो य कहा है वि निन्द घर पडोसमें होना चाहिये (निन्दकाचें र असावें शेजारीं) इसका भी यही मर्म है निन्दक पी कुतर्की यी अ दि जीवोंकी आगे जो भी गति होती हो पर इसमें

न्दे नहीं कि साधकके अ त्मोद्धार सा नमें इनसे डा । नि है इसलिये उसके लिये ये ए प्र ारसे गुरु स्थानीय ही है अस्तु

पाखण्डी मेरे पीछे पड़े हैं हे विठ्ठल मैं उनसे क कहूँ जो मैं नहीं जानता वही ये मु से छलपूवक पू ते हैं मैं इनके पाँ गिरता हूँ तो भी नहीं छोड़ते तेरे चरणोंको छोड़ और कुछ मैं नहीं जानता मेरे लिये सब जग तू ही तू है

* *

नको दु सग । पडे भजनामधी भग १
तुज निषेधिता । म न साहे सवथा २
एक माझ्या जीवें । वाद करूँ कोणासवें ३
तुझे वर्णुं गुण । कीं हे राखो दुष्ट जन ४
काय करूँ एका । मुखें साग म्हणे तुका ५

दु सङ्ग न हो उससे भजन भङ्ग होता है नीचा दिखाते हैं यह मु से जरा भी नहीं सहा जा अपने अकेले ीसे मैं किस वि ससे वाद रूँ ेरे गुण ब नूँ या इन दुष्टजनोंको रखूँ तुका कहता है ओ एक मुखसे क्या क्या रूँ

९ एकान्तवास पर

एकान्तवासमें अनुपम ाभ और अपार आनन्द है केवल एकान्त ही आधी समाधि है ोगोंकी भीड़से जब तुकारामजीका चि उचटा तब उन्हें एकान्त अधिक प्रिय हुआ निरोधका वचन मुझसे नहीं सहा जाता' क्योंकि उससे ीको बड़ा हो । है जन छोड़कर एकान्तमें बैठ रहना मुझे अच्छा लगता है सङ्ग चित्त-वृत्ति निरोधमें बड़ा बाधक है

संगे वाढे शीण न घडे भजन
त्रिविध हे जन बहु देवा

जनसङ्गसे आलस्य ही बढता है भजन नहीं बनता भगवन् ये त्रिविध जन ही अधिक हैं इनके अनेक -छन्द देखनेमें आते आनन्दकन्द भगवान् गोविन्दका ही छन्द जो चाहे वह इन नाना छन्दोंके फन्दोंमें न पड़े एकान्तमें एकनिष्ठभाव स्थिर रखते बनता है हरि-प्रेम जमाते बनता है ाब्दिकोंको अपने हितक बोध नहीं होता और तो रि प्रेमी उन्हें त्रु जान पड़ता है इसलिये अब अकेले ही चुप चाप बैठ रहना अच्छा है ए ान्त सुखकी माधुरी क्या बखानी स्वय चखकर देखनेसे ही उसका स्वाद मिल सकता है ए प्रिय होना ही ज्ञान भाग्यका महालक्षण है ज्ञानेश्वर महाराज गीता ज्ञानेश्वरीके अध्याय १३ वेंमें ज्ञानीके लक्षण ते हैं

पवित्र तीर्थ शुद्ध नदीतट रमणीय उपवन और गुहा आदि स्थानोंमें रहना जिसे अच्छा लगता है (६१२) जो गिरिगुहाओंमें और सरोवरोंके किनारे ही आदरपूवक बस जाता है और नगरमें आकर रहना पसन्द नहीं करता (६१३) जिसे एक न्तवास अत्यन्त प्रि होता है ससद्से जिसे अरति हो जाती है उसी को ज्ञानकी मनुष मूर्ति जानो

ज्ञानीका य लक्षण तुकारामजीपर ठीक ठीक घटता है जनपदसे उनका चित्त हटा नगरमें रहना उन्होंने छोड़ ही दिया गोराडा भामनाथ या भण्डारा इन्हींमेंसे किसी पवतपर वह सारा दिन रहते थे भण्डारा पव पर पश्चिम तरफ एक गुहा है और उसके पास ही ए रन है सी थानमें वह रहते थे पर्वतके शिखरपरसे चारों ओरका श्य बड़ा ही सुहावना है—दूर-दूरत छोटे बड़े अने पर्वत हैं चारों ओर हरियाली

भ ७ रा पहाड

ायी हुई है बीचमें इन्द्रायणी बह रही हैं और जहाँ तहाँ छोटे बड़े अनेक जल-प्रवाह दिखायी देते हैं ऐसे सुशोभित उ भण्डार पर्वतको तुकारा जीके समागमसे तपोवन होने सौभाग्य प्राप्त हुआ उनके हरि नाम क्कीर्तनसे भण्डारा पर्व गूँजता था वहाँकी तरु लताएँ और पशु पक्षी तुकारामकी पुण्य-मूर्तिके नित्य दर्शन कर आनन्दित होते थे और उनका आनन्द तुकारामजीके दयमें भी प्रतिध्वनित होता था श्रीविठ्ठलरंगमें रँगे हुए भ डारा पर्वतके इन तपोनिधि ी दिव्य मूर्तिके जिन नेत्रोंने दर्शन किये होंगे वे नेत्र धन्य हैं और ो और वहाँके वृक्ष पौधे लताएँ फू उ पुण भूमिमें विहार करनेवाले पशु पक्षी और हाँके चिरकालसे मौन स धे हुए पाषाण भी य हैं तुकारामजीको एकान्तवास बहुत ही प्रिय और पथ्यकर हुआ निर्मलीकी जड़ पानीमें । देनेसे प नी जैसे स्वच्छ हो जाता है वैसे ही एकान्तवाससे उनके चित्तकी मलिन वृत्तियाँ स्वच्छ ो गयीं उन । अन्त करण रमणीय और प्रसन्न हा गया गीताके ठे अध्य यमें चौ देशे प्रति ाप्य आसन गानेके लिये शुचि देश का जो सङ्के किया है उसपर भाष्य करते हुए ज्ञानेश्वर महाराजने एकान्तवास का बड़ा ही मनोर वणन किया है 'व शुचि अर्थात् पवित्र देश ऐसा सुरम्य होता है वि वहाँ ख समाधानके लिये एक बार बैठनेसे फिर (जल्दी) उठनेकी इच्छा नहीं होती वैराग्य दूना हो जाता है संतोंने जो स्थान बसाया वह सन्तोषका सहाय मनका उत्साहवर्धक और धैर्यका देनेवाला हो है ऐसे स्थानमें ो अभ्यास करता है वह हृदयमें अनुभव वरण करता है रम्यताकी यह महिम वहाँ अखण्ड रहती है (१६४ १६६) तात्पर्य एकन्तवासके शुचि प्रदेशमें ज्ञान वैरा यका ब दूना होता है इच्छ हो या न हो तो भी अभ्यास स्वय ही हृदयमें प्रवे करता है चित्तके मलिन सस्कार नष्ट हो जाते हैं और चित्त प्रसन्न होता है इतना सुख और समाधान होता है कि दिन रात कैसे बी ते हैं सो भी नहीं जान

पड़ता भगवत्प्रेमके तरङ्गोंमें विहार करते करते जीव भाव ही विलीन हो और अ ण्ड अ यानन्दका अनुभव प्रा होता है इसीलिये तो साधु स गिरि कन्दराओंमें नगरसे दूर जला यके तीरपर सर्वसङ्ग परित्याग करके बैठ जाते हैं नगरोंमें बैठे बैठे चाहे जितने प जाइये या लिख डालिये व्याख्यान सुनिये या दीजिये दिन रात चर्चा कीजिये तो भी ब्दोंके खिलवाड़के सि । और कुछ भी इनसे हाथ न आवेगा अनुभव और उसका आनन्द इनसे बहुत दूर है नर नारियोंमें भरे हुए नगरोंमें अनेक प्रकारके ससग होते हैं उनसे गुण दोष अपने अदर भी अ ही ते हैं दों । कोलाह खूब होता है पर नि शब्द आनन्द नहीं मिलता एकान्तके बिना ज्ञान नहीं ठहरता अनुभवका दिव्य नहीं प्राप्त होता सभी सत्पुरुष इसीलिये अपने जीवनके कु वर्ष एकान्तवासमें बिताते हैं घर गिरस्तीके सम्बन्धमें इस आशयकी एक कहावत भी है कि कमाना रक और खान देहातका इसी प्रकार परमार्थके विषयमें भी कह सकते हैं कि सत्सङ्गसे उपार्जन करे और एकान्तमें भोगे एकान्त के बिना परमार्थ अङ्गीभू नहीं होता मन निमल नहीं होता कारामजी ने जो कुछ अध्ययन किया प्राय एकान्तमें किया देहू गाँवमें उनका आना जान गा रहता था पर इतनेसे भी उनका चित्त दुखी हुआ और इसका बदला उन्होंने ए न्तमें बैठकर ही चुकाया एकान्तवासके अपने अनुभवके स न्धमें उनके दो अभग हैं

वृक्षवल्लीं आम्हा सोइरीं वनचरें ।
पक्षीये सुस्वरें आलवीती, १
येणें सुखें रुचे एकाताचा वास ।
नाहीं गुणदोष आग येत ध्रु

आकाशमंडप पृथिवी आसन ।
रमे तेथें मन क्रीडा करूँ २
कथाकुमंडल देहउपचारा ।
जाणवीतो वारा अवसरू ३
हरिनामें भोजनप्रवडी विस्तार ।
करूनी प्रकार सेवू रुची ४
तुका म्हणे होये मनासी सवाद । .
आपलाची वाद आपल्यासी ५

इस एकान्त उपवनमें वृक्षवल्ली और नचर ही हमारे अपने लोग हैं पक्षी भी सुस्वर गायन कर मनाते रहते हैं इसी सुखके कारण एकान्तवास अच्छा लगता है किसीके गुण दोष अपनेको नहीं लगते ऊपर आका म डप ना है नीचे पृथ्वी । आसन है जहा मन रमता है वहीं बैठकर आनन्द करता हूँ हरि नाम रसके उत्तम भोजन तै ार कर यथारुचि सेवन करता हूँ तुका कहता है मन ही मन वाद सुख भोगता ँ आप ही अपनेसे वाद विवाद कर लेता हूँ ये सब सुख एकान्तमें प्राप्त होते हैं इसलि ये एकान्त मुझे प्रिय है

खेळों मनासवें जीवाच्या सवादें ।
कौतुकें विनोदें निरंजनीं १
पची पडिलें तें रुचे वेळोवेळां
होतसे डोहळ आवडीसी ध्रु
एकाताचें सूख जडलें जिव्हारीं ।
वीट परिचारीं बरा आला २
जग ऐसी बुद्धि नव्हे आता कदा ।
रुपट गोविंद झालों पायीं ३

आणिक ते चिंता नलगे करावी ।
नित्य नित्य नवी आवडी हे ४
तुका म्हणे घडा राहिला पडोन ।
पाडुरगी मन विसांवलें ५

निरञ्जन (ायातीत) के चरणोंमें बैठकर कौतुक और विनोदके सा अपने जीकी बातें किया करता और नके साथ खेलता रहता हूँ जो पच जाता है वही बार-बार रुचता है वह रुचि बराबर बढती ही जाती है एकान्तका ख ही अब हृदयमें बैठ गया है जनसग और उपाधियोंसे चित्त उचट गया है अब जग जैसी बुद्धि ही नहीं रही भगवान्‌के चरणोंका लम्पट हो गया हूँ अ और कोई चिन्त नहीं करनी पड़ती य मा र्य ऐसा है कि नित्य नया आनन्द मिलता है तुका कहता है अब यही अभ्यास हो गया है श्रीपाण्डुरङ्गमें नको विश्राम मिल गया है

श्रीपाण्डुरङ्गके चरणोंमें आपको वह विश्राम सुख मि ा कि आपके मनकी सारी चिन्ता और याकुल दूर हो गयी और श्रीपाण्डुरङ्गके चरणोंमें अ पको वह अ नन्द मिलने लगा जिसके निरन्तर भोगते रहनेकी इच्छा ही बढती जाती है और यही इच्छा यही रुचि नित्य नये स्वाद ले रही है ह नित्य नया आनन्द भोगिये खूब भोगिये काल आनेपर इसी आनन्दके गर्भसे श्रीकृष्णका जन्म होनेवा ा है तब हमें भी उनके जन्मपर बधाईकी मिठाइयाँ मिलेंगी उन्हींके लिये हम अधीर हो उठे हैं

१ अहकार कैसे गला ?

जीवमें अहकार स ज ही होता है आत्मस्वरूपको वह ढाँके रहता है इसीलिये बतलाते हैं कि अहकार तामस है इस तमोमय अहकार के अनन्त प्रकार हैं देह मैं हूँ जीव मैं हूँ ब्रह्म मैं हूँ ये सब अहकारके

ही भेद देह मैं ँ इसे मलिन अहकार सकते हैं और ब्रह्म मैं हूँ इसे अहकार कह सकते हैं देह मैं हूँ कहनेके साथ ही अहकार की लाखों चिनगारियाँ निकलती हैं न विद्या गुण कीर्ति आदि जीवके अ कारके विषय होते हैं देश भाषा धर्म वण जाति कु आदि भी अहंकारके विषय बनते हैं वेदान्त यह बतलाता है कि गुण दोष प्रकृति स्वभाव हैं इसलिये जीवको उनसे कोई ष विषाद न होना चाहिये एककी स्तुति और दूसरेकी निन्दा करनेका भी वस्तु कोई कारण नहीं है पर मजा यह है कि ज्ञानी अज्ञानी सबके सिरपर यह अहकार सवार रहता है प्रकृतिके परे जो परमात्मा हैं उनकी ओर जबतक आँ ँ नहीं लग जातीं तबतक यह अहकार किसीको भी नहीं छोड़ता जीव और परमात्माके बीच यह परदा लटक रहा है जबतक यह नहीं हटता तबतक परमात्माके दर्शन भी नहीं होते ज्ञानेश्वर महाराज कहते हैं कि बहु घन त्याग दो अपना ब्दज्ञान भूल जाओ सबसे छोटे बन जाओ ऐसा करनेसे मेरे समीप आओगे (ज्ञानेश्वरी ९ ३७८) यह सच है पर भगवत्कृपाके बिना अहकार सवथा दूर नहीं होता जैसे जैसे अहकारका एक एक परदा फटता जायगा वैसे वैसे परमात्मा सम्मुख होते जायँगे जब सब परदे फट जायँगे तब उनसे मिलन होगा अहकार विद्वानोंके पीछे तो सबसे अधिक लगता है ज्यों ही कोई कला या विद्या प्राप्त हुई त्यों ही उसके आडमें अपना आसन जमाता है को२ गुण या विद्या न होते भी अहकारका उग्र हो उठना केवल अज्ञान और मूर्खत्वका क्षण है चित्तमें ऐसे अहकारको पालते पोसते हुए ऊपरी दिखावमें नम्र धारण करना धूर्तोंकी एक धूर्तता है उससे कल्याणका साधन कुछ भी नहीं होता अहकार मौजूद है और इसे जानकर क्लेश भी होता है यह साधकका लक्षण है और अहकार है तो कहाँ है इसका कोई स्मरण ही नहीं यह

नवान्का क्षण है अस्तु तुकारामजी ो पहले पह जब लोग जानने और मानने गे उन जहाँ तहाँ सम्मान होने गा लोगोंपर उनकी वाणीका प्रभाव पड़ता दीखने लगा ब अहकारकी कुछ उपाधि उन्हें भी होने लगी थी पर तुकारामजी गाफिल नहीं थे उन्होंने इस चोरको अदर घुसते देख लिया और भगवान्को पुकारा ऐसा पुकारा कि अहकारकी त्ति ही उनकी मिट गयी। भगवत्प्रेम जैसे जैसे बढता है कर्ता भगवान् हैं मैं नहीं ह जो कुछ है भग न्का है मेरा नहीं यह भाव ैसे ैसे बलवान् ो उठता है तैसे तैसे अहकारकी हवाका हना भी बन्द होता ाता है

पदोपदीं नारायणा । तुमची करीन भावना

पद पदपर हे नारायण तुम्हारा ही ध्यान करूँगा इस अन्तरङ्ग अभ्याससे यह सब नारायणरूप भासने गता है और उसके सा अहकार भी नष्ट होता जाता है अहकारादि सब जीव भावोंके नष्ट होनेका एक ही उप य है और वह है चित्तको प्रेमानन्दके साथ नारायणके ध्यानमें लगा देना तुकारामजीने भक्तिके बलसे ही इन सब वृत्तियोंको जीता अहकार लोकप्रियता मान ये सब ोकैषणाओंके बादल उत्कट भक्तिके सूर्योदयके हो ही गल गये इस उत्कट भक्तिका उन्हें जो अभ्यास करना पड़ा ह उन्हींके मुखसे नें एकान्तमें भगवान्को पुकारते हुए उनके मुखसे जो वचन निकले हैं उन्हें साव होकर ण करें

हीन माझी य ती । वरि स्तुति केली संतीं १
गीं वसू पाहे गर्व । माझें हराव सर्व ध्रु
मी एक जाणता । ऐसें वाटतसे चित्ता २
राख र गेलों वाया । तुका म्हणे प रिराया ३

जाति मेरी हीन होनेपर भी तोंने मेरी स्तुति की ह से मेरे

अन्दर ‍ स बैठना चाहता है इसलिये कि मेर सर्वस्व हरण करे चित्तको ऐ न पड रहा है ि मैं ही एक ज्ञाता हूँ तुका कहता है ‍ पण्ढरिन थ मेरा जीवन व्यथ न हो रहा है. अब रक्षा करो प्रभु र करो

*

मजपुढ नाहीं आणीक बोलता । ऐसें काहीं चित्ता वाटतसे १
याचा काहा तुम्ही देखावा परिहार । सर्वज्ञ उदार पाडुरगा ध्रु
कामक्रोधें नाही साडिलें आसन । राहिले वसो न देहामध्यें २
तुका म्हणे आता जालों उतराई । कळों यावें पाइ निरोपिलें ३

चित्तको कुछ ऐसा जान प रहा है मानो मेरे सामने और कोई वक्ता ही नहीं है हे सर्वज्ञ उद र पा डुरङ्ग इसका कुछ परिहार तो कीजिये काम क्रोधने अभी आसन नहीं छोड़ा देहमें जमे ही हुए हैं तु ा कहता है अब मेरे ऊपर कु भार न रहा आप जानें आपके चरणोंमें सब निवेदन कर दिया

इस कार भगवान्‌के सामने अपना हृदय खोलकर र देना और हरकाममें उनसे सहायता माँगना बडी उत्कट भक्ति है चित्तमें अहङ्कारकी ऐसी वृत्तियाँ उठती हैं ि नसे यह भासने गता है कि मैं बड़ा पणि हूँ मैंने बहुत पढा है कितने ग्रन्थ देख ाले हैं मैं उत्तम वक्ता हूँ ाता हूँ उत्तम कीर्तनकार हूँ इत्यादि परन्तु भगवन् ये वृत्तियाँ सर्वस्व छीननेवाली हैं इसलिये आप ही दय कर इनका परिहार कीजिये हे नारायण आप सर्वज्ञ हैं उदार हैं समथ हैं आप इस अहङ्कारको मेरे चित्तसे निका बाहर कीजिये

कथनी पठ ीं करुनि काय । वाचुनि रहणी वाया जाय १

कथनी पठनी करके क्या होगा बिना रहनीके सब व्यर्थ ही है

ग्रन्थावलोकन खूब किया और लोगोंको ज्ञान भी खूब बताया पर वह ज्ञान र नीमें आचरणमें यदि न आया तो उससे या लाभ मुखसे तो अमृ वाणी निक रही है पर स्वय भूखसे व्याकुल हैं ो ऐसी वाणी हुई तो क्या और न हुई ो क्या चीनीकी चासनीमें यदि पत्थर दें तो उस पत्थरको उस चासनीसे क्या मधुमक्खी जमा कर रखती है पर उसके तेको कोई और ही मार ले जाता है ोभी कौड़ी कौड़ी ोड़कर द्रव्य स ह कर ा है और उसे जमीनमें अपने हाथसे गा है पर वह दूसरोंके हाथ आता है इसके हा और मुँहमें मिट्टी ही लगती है इस प्रक र अनेक मार्मिक न्त देकर तुकारामजी कहते हैं

आपुलें केलें आपण खाय । तुका वदी त्य चे पाय ६

अपना किया जो आप ाता है तुका उसके चरण वन्दन करता है

महाप्रयास करके गुरु मुखसे ानाजनकर जो उ को स्वय भक्षण करता हो अपने ज्ञानभोगसे जो आप ही तृप्त होता हो जिस ज्ञान आचरणमें उतर आया हो वही क्ता धन्य है स्वय ज्ञान भोगकर जो दूसरोंको ान भोज देता है वह ानदाता धन्य है हरिकीर्तन करते हुए ज्ञानानन्दकी वर्षा करके श्रोताओंके अन्त रणोंको शान्त और निर्मल रनेवाला जो हरिभक्त कीर्तनकार उस ानानन्दकी वृष्टिमें भींगकर हुअ हो तुकारामजी कहते हैं कि उसके चरणोंका मैं दासानुदास हूँ मुझमें यह सा थ्य नहीं ोग मेरी था सुनकर डोलने लगते हैं पर मुझे अपनी वाणी नीरस ही ान पडती है क्योंकि भगवन् आपक उसमें प्रसाद नहीं आपका उसमें अ सन नहीं

अब हे पा डुरङ्ग और क्या कहूँ कोरी बातोंसे ही इस वैखरीकी खातिर कीजिये वह प्रेमा भक्ति दीजिये जो सौभाग्यकी सीमा है को अपना प्रसाद दीजिये

११ दो निवेदन

भगवन् मैं नित आपके गुण बखानता हूँ श्रोताओंपर भक्तिभाव दे हूँ लोग मेरी प्रशसा करते हैं पर मेरे अ दर वह रस नहीं कहनी ैसी करनी नहीं

म्हें देखनेकी इच्छा करता हूँ पर इसके अनुकूल आचरण न ीं बन जैसे कोई बाहरी वेष बना ले सिर मुँड़ा ले द ड धारण कर ले पर मन न मुँड़ावे

मैं अपने ही चतुर बन बैठा हूँ पर हृदयमें कोई भाव नहीं है के यह अहङ्कार हो गया है कि मैं भक्त हूँ अब यही बाकी रह गया है कि नष्ट हो जा ँ क्योंकि काम क्रोध अदर आसन जमाये हुए बैठे ही हैं लोगोंके गुण दोष ढूँढ़ते निकालते मेरे ही अदर आ र बैठ गये बुद्धिमें प्राणियोंके प्रति मात्सर्य आ गया का कहता है लोगोंको मैं उपदेश देता हूँ पर मैं तो एक दोषको भी पार नहीं कर पाया

मैं कीतन करता हूँ नाचता हूँ गाता हूँ पर अन्त करण मेरा अभी पत्थर सा ही कठोर बना हुआ है वह प्रेम ही अभी नहीं मिला जो उसे पिघला दे प्रेमकी बातें तो मैं बहुत कहता हूँ पर प्रेमसे चित्त अभी नृत्य नहीं करता नेत्रोंसे प्रेमाश्रुधारा नहीं बह नि ती चिन्तनसुखसे हृदय अभीतक प्रेममय नहीं हो उठता

बोलविसी तैसे आणी अनुभवा । नाहीं तरी देवा विटबना

ैसे बुलवाते हो वैस अनुभव यदि नहीं होता तो हे भगवन् विडम्बना ही नहीं तो और क्या है

मीठा हो पर उसमें मिठा न हो तो वह मीठा क्या रीर श्रृङ्गार हो पर उसमें प्राण नहीं स्वाँग हो पर उसमें नहीं रूप हो पर

उसमें ण नहीं सम्पत्ति हो पर सन्तति नहीं तो इनके होनेमें क्या र है? कारामजी क ते हैं कि ऐसा ही मेर हा हो रह है और अदर प्रेमभावका पता ही न ीं गता कि कहां है इससे अच्छा तो तुकारामजी कहते हैं कि यही है कि लोगोंमें मेरी बदनामी हो स धु कहकर जो लोग मेरी सेवा करते हैं वे सब निन्दा करते हुए मेरा तिरस्कार करें क्योंकि ऐसा होनेसे मैं तुम्हारी सेवा एकान्त मनसे कर कूँगा

पापकी मैं गठरी हूँ अपने पैरोंमें मैंने अपनी चरणसेवारूप चोर बैठा र ा है द ड दो मुझे हे नारायण और मेरा मान अभिमान उतारो हे भगवन् धूतता करके लोगोंसे मैं अपनी सेवा करा हूँ तुका तेरा हुआ न ससारका दोनोंसे गया केवल चोर बना रहा

स चे हरि प्रेमसे अ तरग रँगने लगा सारा खेल श्रीहरिका है वही कर्ता हर्ता भ ा है जीवके अहभावके लिये कहीं रा सी भी नहीं नरकका द्वार अभिमान भगवान्से अलग करनेका ही क म करता है सत्य जैसे जैसे तुकारामजीको प्रतीत होने लगा तैसे तैसे जन मान पानेकी इच्छ उनकी समूल नष्ट ो गयी लोग साधु महात्मा कहकर भजते हैं देवता कहकर पूजते हैं स्तुतिस्तोत्र गाते हैं प्रेम और आ हसे उत्तम मि ान्न भोजन कराते हैं इस समूचे लोकादरकाण्डसे कारामजीका जी ऊब गया उनके ध्यानमें यह बा आ गयी कि यह जन मान मुझे धरतीपर पटककर मेरे परमार्थका सत्यानाश करनेवाला है जि स मान सेवा स्तुति और गौरवके लिये ज्ञानी भी तरसा करते हैं उसके तापसे कारामजी चित्त दग्ध होने लगा जन मानका व ताप उनके ि ये दुस्सह हो उठा

भक्ता म्हणे जन । परी नहीं समाधान १
माझें तळमळी चित्त । अँतरलें दिसे हित २
कृपेच्या आधार । नाहीं दम्भ ज फार ३

जन कहते हैं तुम भक्त हो पर इससे समाधान नहीं होता चित्त विकल रहता है हित दूर ही रह जाता है कृपाका आधार नहीं केवल दम्भ बढ गया है

नव्हे सुख मज न लगे हा मान । न राहे हे जन काय करू १
देह उपचारें पोळतसे अग । विषतुल्य चाग मिष्टान्न हें ध्रु
नाइकवे स्तुति वानिता थोरीव । होतो माझा जीव कासावीस २
तुज पावे ऐसी स ग काही कळ । नको मृगजळा गोवूमज ३
तुका म्हणे आर्ता करीं माझें हित । काढावें जळत आगींतूनी ४

इसमें मुझे कोई सुख नहीं है ऐसा मान मु` नहीं चाहिये पर ये लोग नहीं मानते क्या करूँ देहके इन उपचारोंसे शरीर झुलस रहा है यह उत्तम मिष्टान्न विष सा लग रहा है लोग बडी प्रशसा करते हैं पर मुझसे वह सुनी नहीं जाती जी छटपटाया करता है तुम जिसमें मिलो ऐसी कोई कला बताओ मृग जलके पीछे मत लगाओ तुका कहता है अब मेरा हित करो इस ती हुई आगसे निकालो

लोक म्हणती मज देव हा तों अधम उपाव १
अ ता कळेल तें करी शीस तुझे ह तीं सुरा ध्रु
अधिकार नाहीं । पूजा करिती तैसा क हीं २
मन जाणे पाप । तुका म्हणे मायबापा ३

लोग मुझे (ईश्वर) बतलाते हैं य तो अधर्म ही पल्ले बाँध लेना है अब जैसा समझ पड़े वैसा करो य शी तुम्हारे हाथमें और कृपाण भी तुम्हारे हाथमें है लोग मु` जैस पूजते हैं वैसा तो मेरा कोई अधिकार नहीं है क्योंकि तो पापोंको नता है का कहता है म्हीं मेरे बाप हो

ससार तो बाहरी रग देखता है उ ीपर मोहित होता है पर मन इ तो मन ही जानता है लोगोंसे अपनी पूजा कराना तो अधर्म है अधोगतिका माग है और फिर मैं तो इसके यो य नहीं इसलिये कहते हैं कि मु ` द ड दीजिये अपना सिर मैंने आपके हाथोंमें दे दिया है अधमका उच्छेद करनेके ि ये ही ो आपका अवतार है

तुम्हारे गुण तो गाता हूँ पर अन्त करणमें तु हारा भाव नहीं है केवल ससारमें शोभा पानेका यह एक ढग हो रहा है पर तुम पतितपावन हो अपनी इस बातको सच्च करो मुखसे मैं दास क ाता हूँ पर चित्तमें माया लोभ अ स भरी हुई है तुका कहता है मैं जैसा वेष दिखाता ˘ वैसा अदर ले भी नहीं है ’

बिना सेवा किये ही दास हा । हूँ ौर धूर्ततासे अपना पेट

˘ म्हारे चरणोंमें झूठ भी कहीं च कता है हे पाण्डुरङ्ग अदरका हाल तो तुम जानते हो

तुम्ही कृपा केली नाही । माझें चित्त मज वाही २
तुका मज देवा । मज वाय क चाळवा ४

म्हारी कृपा मैंने नहीं प्राप्त की मेरा चि ही इसमें मेरा साक्षी है मु तुकाको हे भगवन् क्यों नष्ट होने देते हो

कळों आल भाव माझ मज देवा ।
प य वाण जीवा आट केली १
जोडूनी अक्षरें केली तोंडपिटी ।
न लगे शेवटीं हाती क ी घु
देव जोडे म्हणून सागतसे लोकां ।

माझा मीच देखा दुः पावे २॥
तुका म्हणे माझे गेले दोन्हीं ठाव
ससार न पाय तुझे देव । ३

मेरा भाव क्या है सो मुझे अब मालूम हो गया हे भगवन् मैंने जो कुछ किया वह तुम्हारे चरणोंके बिना जीवको केवल दिया अक्षर जोड़कर गाल बजाया उससे अ तमें कुछ भी हाथ न आया लोगोंसे कहता फिरा कि भक्तको भगवान् मिलते हैं पर मैं स्वय ही दु ख भोग रहा हूँ तुका कहता है इस तरह मेरे दोनों ठाँव गये ससारसे थ धो बैठा ौर तुम्हारे चरण भी नसीब नहीं हुए

❀ ❀ ❀

काय आता आम्ही पोटचि भरावें ।
जग चाळवावें भक्त म्हणू ॥ १ ॥
ऐसा तरी एक सागाजी विचार ।
बहु होतों फार कासावीस ध्रु
ाय कवित्व ची घालूनियां रूढी ।
करू जोडाजोडी अक्षराची २
तुका म्हणे काय गुपोनि दुकाना ।
राहों नारायणा करूनि घात ३

तो क्या अब पेट ही भरनेका धन्धा करूँ ? भक्त कहलाऊँ और जगके पी चलू और कुछ नहीं तो यही एक बा ब दीजिये जी बहुत ही छटपटा रहा है उसे कु तो न्ति मिले क्या कविता बनाने की रूढि अक्षरोंको जोड़ा करूँ तुका कहता है हे नारायण बताओ करू क्या दूकानका जाल बुनकर आत्मघात करके रहूँ

❀ ❀ ❀

नामाचा महिमा बोलिलों उत्कष ।
अगा काही रस नयचि तो १ ।
तुका म्हणे करा आपुला महिमा ।
नका जाऊ धर्मावरी माझ्या २

नामकी महिमा बडे उत्कर्षके साथ बखानी पर उसका रस कुछ भी अपने अदर नहीं प या तुका कहता है भगवन् अब आप अपनी महिमा दिखाइये मेरे मका ख्याल म कीजिये

ग्र थोंको देखा और सुना वे ही देखी सुनी बातें मैंने लोगोंसे कहीं पर मेरे ही अन्त करणमें नहीं बैठी जो बो जैसे सीखे वैसे मुँहसे निकाले पर वैसा रस तो नहीं मिला ' अनेक सङ्कल्प चित्तमें भरे हुए ९ स ल्पका तो नहीं हुअ यह करूँगा वह करूँगा इत्यादि बातें मन अभी सोचता ही है बुद्धिमें स्थिर । नहीं बुद्धि नाहा स्थिर तुका म्हणे धीर तात्पर्य ग्र थोंका ज्ञान मैं कीर्तनमें लोगोंको बड़े आवेशके साथ हूँ सही पर मेरा चित्त अभी हरिप्रेमसे नहीं भीगा बुद्धि सायात्मिका नहीं हुई नानाविध सङ्कल्पोंसे ग्रसी हुई है और मेरी यह हालत है कि कहता कुछ हूँ और करता कु और हूँ नामकी महिमा लोगों ो बतलाता हूँ पर वह नाम रस मेरे अन्त करणमें नहीं उतरा

तोतेको जो सिखा दीजिये वही वह पढा करेगा मेरी भी वैसी ही दशा है स्वप्नके राज्य भोगसे कोई राजा नहीं नता परमार्थवि यक मेरा अनुभव भी वैसा ही स्वप्न है वाणी ही ऐसी अ क्कु क्यों हुई जिससे भगवान्के चरण तो दूर ही रह गये पढे हुए ब्दोंका ज्ञान ँ पर उससे मुझे क्या ाभ '

सतोंसे भी काराम िनय करते हैं

यह बड़ा अलङ्कार मुझे ेभ नहीं देता मेरे लिये तो यह नकली है मैं तो आपलोगोंकी चरणरजका एक कण हूँ आप संतोंके पैरोंकी

जूती हूँ मुझे निजस्वरूपकी कुछ भी पहचान नहीं भजन कर लेता हूँ सो भी दूसरोंकी देखा देखी मुझे रकी पहचान नहीं अक्षरकी पहचान नहीं महाशून्यकी पहचान नहीं आत्मानात्मविवेक नहीं तुका क्या है कुछ भी नहीं आपके चरणोंमें वह अपना मस्तक रखता है इतना ही उसका अधिकार जानिये इसलिये सत नामसे मुझे अलङ्कृत मत कीजिये मैं उसका पात्र नहीं सत वही है ि से आत्मस क्षात्कार हुआ हो जिसने क्षर अक्षर और सबका अपने अदर लय करनेवाले हाशून्य को जाना हो जि सकी बुद्धिमें आत्मानात्मविवेक सिद्ध हुआ हो नामका अल ार उसीको ोभा देता है मुझे नहीं

महात्मा काराम सतोंसे प्रार्थना करते हैं कि आप लोग कृपा कर मेरी स्तुति न करें स्तुति अभिमानका विष पिलाकर मुझे मार डालेगी भगवान् अभिमानको क्षमा नहीं करते मुझे यदि अभिमान हुआ तो मेरे श्रीविठ्ठलना मुझे छोड़ देंगे और आप लोग भी छोड देंगे

न करावी स्तुति माझी सतजनी। होईल यावचनीं अभिमान १
भारें भवनदी नुतरवे पार। दूरावती दूर तुमचे पाय ध्रु
तु म्हणे गर्व पुरवील पाठी। होईल माझ्या तुटी विठोबाची २

सत सजन मेरी स्तुति न करें उनके स्तुति वचनोंसे मुझे अभिमान होगा उस भारसे भव नदीके पार उतरते नही बनेगा और आपके चरण दूरसे और दूर हो जायँगे तुका कहता है गर्व हाथ धोकर मेरे पीछे पड जायगा और मेरे विठ्ठलनाथ मुझसे बिछुड जायँगे

१२ सत्सङ्ग

अब हमलोग सत्सङ्गका विचार करें तुकारामजीको कीर्तनके प्रसङ्ग से सत्सङ्ग लाभ हुआ भगवान्के गुणानुवाद सुनने और गानेका अवसर मिला

कथा त्रिवेणी सगम । देव भक्त आणि नाम

यह आनन्द अद्भुत है वाद करनेवाले नि दा करनेवाले छलने वाले और पाखण्ड रचनेवाले इन सबकी सङ्गतिसे तुकारामजीको ही हुआ पर इसकी तिपूर्ति सज्जनोंके सङ्गसे हो गयी ससारमें प्रेमी भावुक और श्रद्धालु सभी स्थानोंमें सदा ही होते हैं ऐसे लोग कीतन प्रसङ्गसे तुकारामजीकी ओर खिंचे चले आये २नके सत्सङ्गमें तुकारामजीके आनन्दक क्या पूछना है

तुका म्हणे येणें आनदा आनदु । गोविंदें गोविंदु पिकविला

तुका कहता है इससे आनन्द ही आनन्द हो गया गोविन्द (बीज) से गोविन्दकी फस तैयार हो गयी

तुकाराम सत्सङ्गके लाभ बतलाते हैं

हरिदास जब मिलते हैं तब सब पाप ताप दै य और छूट है तुका कहता है वै णवोंके चरण दर्शन रनेसे मन ो समाधान आ

❀ ❀ ❀

वैराग्याचें भाग्य । सतसग हाचि लाभ १
सत पेंचे हे दीप । करी साधका निष्प प ध्रु
तुका प्रेमें न चे गाये । गाणियांत विरोनि जाये २

सत्सङ्ग लाभ ही वैराग्यका सौभाग्य है सत कृपाके ये दीप को निष्पाप कर डा ते हैं इन सतोंके बीचमें तु प्रेमसे नाच -गाता है और नोंमें ीन ो जाता है

❀ ❀ ❀

जिसके हृदय सम्पुटमें नारायण भर गये अथवा जो भावुक और ि सी हैं । कहता है मैं उ हें वन्दन करता हूँ

❀ ❀ ❀

सत चरणोंकी रज जहाँ पड़ती है वहाँ वासनाका बीज सहज ही जाता है तब राम नाममें रुचि होती है और घड़ी घडी ख बढने गता है ण्ठ प्रेमसे गद्गद होता नयनोंसे नीर बहता और हृदयमें नामरूप प्रकट होता है का कहत है यह बडा ही लभ सु दर साधन है पर पूर्व पुण्यसे ही यह प्राप्त होता है '

सत चरणोंकी रजक अनुभव मुझे अपने अदर प्राप्त हुआ इसके सेवनसे ह ख मिल िसमें कोई दु ख नही होता '

* *

काया वाचा मनसा मैं हरिदासोंका दास हुआ कारण हरि दासोंके हरि कीर्तनमें प्रेम ी प्रेम भरा है करताल ौर मृदङ्गका कल्लोल है। दु बुद्धि सब न हो जा ी है और हरि कीर्तनमें समाधि लग जाती है

सत मि नकी बड़ी इच्छा थी बड़े भाग्यसे वह मिलन हुआ तुका कहता है इससे सब परिश्रम सफल हो गया

यहँ सत ब्दका अर्थ अच्छी रहसे समझ लेना चाहिये तुकारामजीने इन अभगोंमें हरिदास (हरि कीर्तन करनेवाले) भावुक प्रेमी वारकरी इन सबको ही सत कह है सत शब्दका इतना व्यापक योग ो तुकारामजीने किया इससे क्या सम ा जाय ? क्या उस समय सतोंकी इतनी भरमार हो गयी थी या तुकाराम अपना सिधाईसे सबको ही सत समझते और कहते थे ? नहीं ये दोनों कल्पनाएँ गलत है सच्चे ो सदा ही दुलभ होते हैं ऐसे सत तुकारामजीके समयमें थे और तुकारामजीका उनसे समागम भी हुआ था चि तामणि देव पूनेके अनगढ ह नगरके शे म म्मद बोबले बाबा और दैठणकर बोवाके साथ उनकी भट मु कात थी और वृद्धावस्थामें समर्थ रामदाससे भी उनकी

भेंट हुई थी पर ऐसे सत तो विरले ही होते सच्चे संतोंके लक्षण कारा ीने अपने अभगोंमें दिये हैं तुकाराम सत किसको मानते थे संतोंकी उनकी कसौटी क्या थी इसका वणन पहले आ चुका है संतोंके सम्बन्धमें उनकी कसौटी सामान्य नहीं थी फिर यह भी नहीं है ` काराम किसीको अज्ञानसे या भोलेपनसे सत कहते उन्होंने बने हुए भेषधारी साधुओं पाखण्डियों और दाम्भिकोंकी खूब खबर ली है कारामजीकी सत्यनि । इतनी ज्वलन्त भक्ति इतनी आन्तरि और वाणी न्यायमें ऐसी निठुर थी कि झूठ उन्हें जरा भी स नहीं था उनके समय में न ` स ोंकी ही रे पेल थी और न तुकाराम ही भोले भाले थे उन्होंने सत ब्दका प्र ोग इतना ढी ढाला क्यों किया है इसका समाधान य है वि कई स्थानोंमें तो उन्होंने इस ब्दका प्रयोग गौरवाथ किया है सब वारकरी तुकाराम नहीं थे किसी भी स प्रदायमें सामान्य जन समूह जैसा हो है वैसे ही वारकरी भी थे पर सम्प्रदाय प्रवर्तकोंको अपना सम्प्रदाय बढानेके लिये सामान्योंमें भी जो कुछ विशेष हुए जिनमें उत्साह दक्षता आदि गुण कु अधिक मात्रामें दीख पड़े उन्हें गौरवान्वित कर और अधिक कार्यक्षम बनानेके हेतु उ हें सम्मान देकर उ साहित करना होता है इसमें कोई धूर्तता या झूठ हो ऐसी बात नही है जो ोग मझते हैं कि हमारा सम्प्रदाय जनसमाज और रा के लिये कल्याणकारक है इसका प्रचार ोना आवश्यक है इससे लोगोंका उद्धार होना चाहिये वे हर तरहसे उस सम्प्रदायका बढानेका उद्योग करते हैं इसके लिये उन्हें

इस समय भी ऐसा ही होता है देशका म करनेवालोंको देश-भक्त र गौरवान्वित किया जाता है शि जी महाराजकी सी देश भक्ति जिसमें हो वही सच्च देश भक्त है पर देशकी किञ्चित् ी से रनेवालों ो भी देश भक्त गौरवान्वित रना अनुचि नहीं जा स

उत्तम मध्यम कनिष्ठ सब प्रकारके लोगोंको सम्हाले रहना पड़ता है इस न्यायसे नामदेव एकनाथके समयसे यह रिवाज सा चला आया था कि गलेमें माल डाले नियमपूर्वक प ढरीकी वारी करनेवालोंको कथा कीर्तन भजनमे रमनेवालोंको श्रीविठ्ठलनाथकी प्रेमसे उपासना करनेवाले वारकरियोंको विशेषकर कीर्तनकारोंको था भजनम डलि योंके नेताओंको सत ही कहकर गौरवान्वि किया जाता था तुकारामजीने भी इसी प्रकारसे अनेक स्थानोंमें स शब्दका प्रयोग गौरवार्थ ही किया है जो श्रीविठ्ठलके दास हैं भजन करनेवाले वारकरी भक्त हैं भजन कीर्तनमें जिनका साथ होनेसे कीतनका आन द सबको प्राप्त होता है लोक कल्याण साधक कीर्तन सम्प्रदायकी वृद्धिमें जिनसे सहाय । मिलती है उन्हें कृतज्ञताके साथ गौरवान्वित करना सौजन्यका ही लक्षण है तुकारामजीके सङ्ग करताल बजाते हुए भजन करनेवाले भक्त या उनका कीर्तन सुननेवाले श्रोता सभी तो तुकाराम नहीं थे दे भक्तोंमें शिवाजी जैसा को विरला ही होता है वैसे ही वारकरियोंमें भी तुकाराम कोई विरला ही हो सकता है । इसके अतिरिक्त अपना भक्ति प्रेमान द जिनक सङ्ग होनेसे बढता है ज्ञान वैराग्य प्रज्वलित हो उठता है जिनके मि नेसे हृदयमे भक्ति रसकी बाढ आती है उनमें को दोष भी ो तो भी उन दोषोंकी उपेक्षा करना या काल पाकर ये दोष नष्ट होनेवाले हैं यह जानकर उनका प्रेम बनाये रहना सज्जनोंका तो स्वभाव ही है समुदायमें सब प्रकारके लोग होते ही हैं तुकारामजी कहते हैं

हरि भक्त मेरे प्यारे स्वजन हैं उनके चरण मैं अपने हृदयपर धरूँगा कण्ठमें जिनके तु सीकी माला है ो नामके धारक हैं वे मेरे भव नदीमें ारक हैं आ स्यके साथ हो दम्भसे ो अथव भक्तिसे हो जो हरिका नाम गाते हैं वे मेरे पर ोकके साथी हैं का कहता है मैं उनके उपकारोंसे बँधा हूँ इसलिये स ोंकी शरणमे आया हूँ '

हो का दुराचरी । वाचे नाम उच्चारी १
त्याचा दास मी अंकित । कायावाचामनेसहित ध्रु
नसो भाव चित्ती । हरिचे गुण गता गीती २
करी अनाचार । वाचे हरिनाम उच्चार ३
हो क भरूतें कुळ । शुचि अथवा चाडाळ ४
म्हणवी हरिचा दास । तुका म्हणे धन्य त्यास ५

चाहे वह दुराचारी ही क्यों न हो पर यदि वाणीसे रि नाम लेता है तो मैं काया वचा मनसा उसका दास हूँ वथा उसके अधीन हूँ उसके चित्तमें भक्तिका कोई भा न हो बिना भावके हरि गुण गाता हो अनाचार करता हो पर हरिनाम उच्चारता हो च हे जिस कुलमें उत्प हुआ हो शुचि हो या चा डा हो पर अपनेको रिका दास कहता हो तो तुका कहता है व न्य है

कोई कैस भी हो दुराच री अनाचारी अभक्त अकुलीन जैसा भी हो वह यदि हरि नाम लेनेवाला है ता तुकारामजी उसे धन्य कहते हैं कहते हैं मैं उसका दास हूँ इसमें स्वकी तीन तें हैं एक तो यह कि हरि नाममें इतनी साम र्य है कि कोई कितना भी पतित क्यों न हो इसके द्वारा उद्धार प है

रि चेत्सुदुरा रो भजते न्यभाक्
साधुरे न्त व्य रि ो हि

(गीता ९)

कोई मनुष्य पहले दुराचारी रहा हो पर पीछे ब वह हरिभजनके मार्गपर आ जा ब उसे साधु ही समझना चाहिये कारण उसका निश्चय पवित्र है वह स मार्गपर आरूढ है अर्थात् यथाका उसका उद्धार होगा ही इसलिये यदि वह दुराचारी भी र तो भी वह अब अनुताप तीर्थमें

नहा चुका नहाकर वह सर्वभावसे मेरे अदर आ गया (ज्ञानेश्वरी ९ ४२) दुराचारीके लिये दुराचारीके नाते य बात रही तुकारामजी कहते हैं कि हरिका नाम लेने और गानेवाला मुझे अपनी ही जातिका प्रतीत होता है हरि भक्त ही क्यों रिके मागपर जो आ गया वह भी रामजी कहते हैं कि मेरा सखा है ीसरी बात ह है कि दूसरोंके दोष देखनेमें मेरा कोई लाभ नहीं बनियेकी दूकानसे गुड़ लेना है तो गुड़ ले गे उसकी जा ्पाँ पूछनेसे क्य म ब दूसरोंके गुण दोष मैं क्यों कहता फिरूँ उनमें कोई दोष भी हो तो मु ` उससे क्या दूसरोंके दोष देखूँ भी तो वे दोष मेरे अदर उनसे भी अधिक हैं ? मुझसे अ क दुष्ट और लबार और कौन है ? मैं दोषोंकी राशि हूँ अपने ही घरमें ब इतना कूड़ा भरा हुआ है तब उसे साफ न कर दूसरेके घर ड़ू देने जाना कौन सी बुद्धिमानी है अपने भी और दूसरोंके भी गुण दोष देखनेसे तुकारामजीका जी गया था अब मेरे गुण-द ष मत बखानिये यह वह दूसरोंसे भी कहा करते थे कीतनके प्रसङ्गसे यदि कोई गुण दोष चर्चा निकल ही पड़ी तो वह किसी यक्तिकी निन्दाके रूपमें नहीं ईर्ष्या द्वेष नहीं बल्कि इसी आन्तरिक प्रेमसे होती थी कि वे दोष नि यँ मानके लिये या दम्भके लिये मैं किसीकी छलना नहा करता यह श्रीविठ्ठलके इन चरणोंकी पथ करके कहता हूँ

अस्तु तुकारामजीने अपनी अन्त शुद्धिके द्वारा अपने भ न कीर्तन प्रेमी सङ्गियोंको पूज्य मानकर उनके सङ्गसे अपना भगवत् प्रेम बढानेका लिया इनमें कोई साधारण भक्त रहे होंगे तो कोई बड़े अधिकारी पुरुष भी रहे होंगे काराम ीको अनेक ऐसे सज्जन मिले जि नसे उन्होंने कोई न कोई गुण सीखा उनसे हरि चर्चा और सत्सङ्गका उन्हें बड़ा लाभ हुआ विश्रामके स्थान प्रेम मूर्ि सत् शील ब्रह्मनिष्ठ हरि भक्तोंके सा उनका समागम उनके घरपर भण्डारा-पर्वतपर कीर्तनके अवसरपर तथा

मन्दिरोंमें समय सम पर ो । ही रहा जो सत नहीं थे उ हें भी सत मानकर था उनमें जो कोई गुण हो । उसे ग्रहणकर वह अपना भगवत्प्रेम बढानेका अभ्यास अन्त करणपूर्वक बराबर करते ही र ते थे संतोंके यहाँ प्रेम ही प्रेम रहता है दु खका नाम भी नहीं रहता क्योंकि उनका धन स्वय श्रीविठ्ठल है स प्रेम ख ही ले देते रहते हैं स ोंका भोजन या है अमृत पान है सदा ीर्तन ही करते रहते हैं ारामजी कहते हैं ऐसे दयालु स मु निरन्तर सावधान र ते हैं उनके उपकार कहाँ बखानूँ इस प्रकार सतोंकी महिम तुकारामजीने बार बार गायी है हरि कथा माताका अमृ क्षीर जिनके सत्सङ्गसे काराम कहते हैं कि मैं सेवन कर पाता हूँ उन मेरे दयालु हरि भक्तोंके दासोंका मैं दास हूँ दीन और दुब के लिये राशिस्वरूप रि कथा माता सतोंके समागममें ही पन्हाती हैं अस्तु इस प्रकार संतोंके सङ्गसे तुकाराम ीने अपने अन्तरङ्गमें स होकर भ उठाया

१३ स्मरणानन्द

यहाँतक हम ोगोंने यह देखा कि तुकारामजीने अखण्ड सावधान रहकर किस प्रकार मनोजयका अभ्यास किया नसे कैसे कैसे गड़े किये और निपटे कनक-कान्ताके विषयमें उनका कैसा ज्वलन्त वैराग्य था वाद और ना करनेवालोंकी उपाधिसे था जनस दूसे उकताकर उन्होंने एकान्त-वास कैसे स्वीकार किया एकान्त सुखसे उनका चित्त कैसे हुआ अहङ्कार से नष्ट हुआ अपने दोष वह कैसे भगवान्के चरणोंमें निवेदन करते थे और उनक कैसा त्सङ्ग था अब आत्म शुद्धिके प्रयत्नों का जो शिरोरत्न है उ नाम सङ्कीतनके विषयमें कु लिखकर य प्रकरण मास करेंगे

एकान्तसे उन्हें जो आनन्द मिला वह एकान्तका फल तो था ही पर इसमें साक्षात् सुखका जो अंश था वह नाम स्मरणके अभ्यासका ही फल

था केवल एका तसे जन ससर्ग या बाह्योप बियोंसे होनेवाले दु खका ना हो सकता है और उससे ान्तिका सुख मि सकता है पर यह ख अप्रत्यक्ष है प्रत्यक्ष खका जो झरना तुकारामजीके हृदयमें रने लगा वह नाम सङ्कीतनके अभ्यासका ही फल हो सकता है कीर्तन भजनादिमें समशी साधु सतों और भावुक भक्तोंके सत्सङ्गसे तो व नाम स्मरणका लाभ उठाते ही थे पर जब एका त मिला तब उससे सारा समय नाम स्मरणके लिये ही खाली मिला हरि कीर्तनमे सत समागमका था करताल वीणा मृदङ्गादिकी सहायतासे होनेवाले नाद ब्रह्मका आन द तो अपूव है ही पर उतनेसे काम नहीं चलता अख ड नाम स्मरणका आनन्द अहर्निश प्राप्त हुए बिना चित्त शुद्धिका साक्षात्कार नहीं हो सकता एक पहर कीर्तन हुआ उतने कालतक तन्मयता हो गयी, पर बाकी समयमें भी मनको कहीं न कहीं समाधि दिये बिना उसके -छन्दसे छुटकारा नहीं मिल सकता तुकाराम विष्णुसहस्रनामके पाठ तो किया ही करते थे पर २ससे भी अधिक उन्होंने यह किया कि अखण्ड नाम स्मरणका चसका गा लिया यही उनका साधनसर्वस्व है नाम स्मरणका चसका लगना बड़ा कठिन है पर जहाँ एक बार यह चसक लगा वहाँ फिर एक प भी नामसे खाली नहीं जाता नाम स्मरण य है कि चित्तमें रूपका ध्यान हो और मुखमें नामका जप हो अन्त करणमें ध्यान जमता जाय ध्यानमें चित्त रँगता जाय चित्तकी तन्मयता हो जाय यही वाणीमें नामके बैठ जानेका क्षण है चित्तमें (ध्यान) न हो तो न सही पर वाणीमें तो हो यह नाम स्मरणकी पहली सीढी है तुकारामजीका नामाभ्यास यहींसे आरम्भ हुआ और जिस अवस्थामें उसकी पूर्णता हुई उस अवस्थामें कारामजी कहते हैं कि वाणीने इस नामका ऐसा चसका लगा लिया है कि मेरी वाणी अब नामोच्चारसे मेरे रोके भी नहीं रुकती इस बीचके अभ्या का जो आनन्द है वह अनुभवसे ही जाना सकता है उसे

कहकर ना असम्भव है कुलाचार सम्प्रदाय परम्परा पुरा और साधु संतोंके ग्रन गुरूपदेश सबने तुकारामजीको यही तलाया कि नाम स्मरण ही श्रे साधन है यह हम गेग पहले देख ही चुके हैं। केवल कहनेसे क्या होगा उसे करके दिखाना होगा तु ारामजीने नामका अभ्यास किया और वह य हुए श्रीपा डुरङ्गका रूप देखने या ध्यानमें लानेसे तुकारामजीके चित्तमें प्रेमानन्द हिलोरें मारने गता था और वह य उस आन दमें नाचते गाते हुए तल्लीन ो जाते थे

कटिपर र धरे तुम्हारी मूर्तिको देखकर मेरा जी ठण्डा होता है ऐसी इच्छा होती है कि इन चरणोंको प ड़े रहूँ मुखसे गीत हूँ थसे ताली बजाता हूँ प्रेमान दसे तुम्हारे मन्दिरमें नाचता हूँ तुका कहता है तु हारे नामके सामने ये सब बेचारे मुझे तुच्छ जान पड़ हैं

वह मूर्ि देखी जो मेरे दयकी िश्राि है

तु हारे प्रेम खके सामने वैकुण्ठ बेचारा क्या है

'धन्य है य काल ो गोवि दके सङ्कल्प वहन र आ आनन्द रूप होकर बहा जा रहा है

गुण गाते हुए नेत्रोंसे प देखते हुए तृि नहीं होती पाण्डुरङ्ग मेरे कितने सुन्दर हैं वर्णश्यामकाि कैसी शोभा देती है सब ङ्गलोंका यह सार है मुख सिद्धियोंका भण्डार है का क ता है यहाँ सुखका ो२ ओर छोर नहीं '

श्रीविठ्ठ रूपमें चित्त ि व इतनी तन हुई हो पाण्डुरङ्गको दय सम्पुटमें स्थिर करनेका ऐसा अभ्यास हो रहा हो तब इस

अभ्यासके लिये अखण्ड नाम स्मरण और ध्यानसे बढकर और भी कोई उपाय भी किसीने ब या है नाम स्मरण सबके लिये सब समय अत्यन्त भ है

नाम घेता न लग मोल । नाममंत्र नाहीं खोल

न म लेते कुछ मूल्य नहीं देना पडता और नाम म त्रमें कोई गूढ़ बात भी नहीं है' और यह साधन भी ऐसा है कि तुरत फल देनेवाला है, नकद व्यवहार है मुखीं नाम हाती मोक्ष ऐसी साक्ष बहुतासी' (मुखमें नाम हो तो हाथमें मुक्ति रखी हुई है बहुतोंको इसकी प्रतीति मिल चुकी है) पर दूसरोंका हवा । क्यों ? तुकारामजी कहते हैं राम नामसे हम कृतकृत्य हुए यह तुकाराम अपना अनुभव बतलाते हैं जीभको एक बार नामकी चाट लग जानी चाहिये फिर प्राण जानेपर भी नामको वह नहीं छोड़ती नाम चिन्तनमें ऐ वि क्षण माधुर्य है चीनी और मिठास जैसे एक हैं वैसे ही नाम और नामी भी एक ही हैं पर यह अनुभव नाम स्मर न द भोगनेव ोंको ही प्राप्त होता है नाम केवल साधन नहीं है नाम छ द से साध्य साधनकी एकता प्रत्यक्ष होती है तुकारामजीने अप र नाम सु लूटा बल्कि यह कहिये कि अख नाम सुख भोगनेके लिये और यह सुख दूसरोंको दिलानेके लिये ही उनका अवतार हुआ था उठते बैठते खाते पीते सोते ागते चलते फिरते उनका नाम चिन्तन चला ही करता था और चिन्तनसे तद्रूपता का अनुभव भी उन्हें होता था नाम चिन्तनसे जन्म जरा भय याधि सब छूट जाते हैं भव रोग जैसा रोग भी जाता है फिर और चीज ही क्या है तुकारामजीने नामका आनन्द कैसे लिया उससे उनके ससार पाश कैसे कट गये हरि प्रेमका चसका ब नेसे रसना कैसी रसीली हो गयी इन्द्रियोंकी दौड़ कैसे थमी अनु म स्वय कैसे घर ढूँढ़ता आ चला आया इस विषयमें

सहस्रों अवसरोंपर उन्होंने अपने मधुर अनुभव अनुपम माधुरीके सा वर्णन ि ये हैं भगवान्की बिको देखते चित्तमें उसका ध्यान करते हुए नाम रङ्ग चित्तपर आ जाते थे और नाम रङ्गमें चित्तके रँगते रँगते श्रीरङ्ग अन्त करणमें आकर प्रकट होते और नाम नामीकी एकरूपतामें तुकाराम घुल जाते थे एक वि लके सिवा तब और कु नहीं रह जाता था तुकारामजीके यहाँका यह परमामृत भोजन देखकर जिसके लार न टपके ऐसा भी कोई अभागा हो सकता है ? अब तुकारामजीके श्रीमुखसे नामामृत माधुरीका किञ्चित् आस्वादन हमलोग भी कर लें

न म घेत मन निवे । जिव्हे अमृतचि स्रवे ।
होताती बरवे । ऐसे कुन लाभ चे १
मन रगलें रगलें । तुझ्या चरणीं स्थिरावलें ।
केलिय विठ्ठलें पा ऐसी जाणावी २

नाम लेते मन शान्त होता है जिह्वासे अमृत रने गता है और लाभके बड़े अच्छे कुन होते हैं मन म्हारे रगमें रँग ग । तुम्हारे चरणोंमें स्थिर हो गय श्रीविठ्ठलनाथने ऐसी कृपा की इसलिये ऐसा हुआ

बैसू खेळूं जेवूं । तेथें ना तुझें गावू १
रामकृष्णनाममाळा । घालू ओवूनिया गळा २

जहाँ भी बैठें खेलें भोजन कर वहाँ ारा नाम गायगे रा कृ णके नाम ी मा गूँथकर गलेमें डालगे

सग आसनीं शयनीं । घडे भोजनीं गमनीं २
तुका म्हणे काळ । अवघा गोविन्दें सुका ४

अ न न भो न गमन सर्वत्र ब काममें श्रीवि का सङ्ग रहे तुका कहता है गोविन्दसे अखि काल मुक है

इन्द्रियांची हाव पुर । परि हें उरे चिंतन
इन्द्रियोंकी हवस मिट जाती है पर यह चिन्तन सदा बना रहता है

ळ नन्दें सरे । उरलें उरे चिंतन
ब्रह्मानन्दसे काल समा हो ाता है जो कुछ रहता है वह चिन्तन ही रहता है

समर्पिली वाणी । पाडुरगीं घते धणो १
धार अखडित । ओघ चालियेल नित्य २
यह समर्पित वाणी पाण्डुरङ्गकी ही २च्छा करती है इस रसकी अ है इसका प्रवाह नित्य है

बोलणेंचि नाहीं आत देवाविणें काहा १
एकसरें केला नेम । देवा दिले क्रोध काम २
अब भगवान्‌को छोड़ और कुछ बो ना ही न्‍ है ब यही एक नियम बना लिया है ाम क्रोध भी भगवान्‌को दे चुका

*

पवित्र अन्न । हरिचिंतनीं भोजन १
तुका म्हणे चवी आलें । जेंका मिश्रित श्रीविठ्ठलें २
वही अन्न पवित्र है जि सका भोग रि चिन्तनमें है का है वही भोजन स्वादिष्ट है जिसमें श्रीवि मिश्रि हैं

लागलें भरतें । ानन्दाचें वरतें १

तुका म्हटे वाट । बरवी साण्डला नीट ४

ब्रह्म नन्दकी बाढ आ गयी तुका कहता है य अच्छा रास्ता मिला

मुझमें इतनी बुद्धि नहीं जो मैं तुम्हारे उस ध्यानक वणन रूँ जिसक वर्णन करते करते वेद भी मौन हो गये अपनी मतिके अनुसार गढकर तु रे सुन्दर चरणकमल चित्तमें धारण कर लिये हैं तुम्हारा यह श्रीमु ऐसा दीखता है जैसे सुखका ही ढ । हुआ हो इसे देख मेरी भूख यास हर जाती है तुम्ह रे गीत गाते गाते रसना मीठी हो गयी चित्तको समाधान मिला तुका कहता है मेरी दृष्टि इन चरणोंपर कुङ्कुमके इन कुमार पदोंपर गडी है

इसके समान सुख त्रिभुवनमें नहीं है इससे मन यहीं स्थिर हो ग तुम्हारे कोमल चरण चित्तमें धारण कर लिये कण्ठमें एकावलि नाम माला डाल ली काया शीतल हुई चित्त पीछे फिरकर विश्रान्ति स्थानमे पहुँच गया अब वह आगे (ससारकी ओर) नहीं आता है क ता है मेरे सब हौसिले पूरे हुए सब कामनाएँ श्रीप ण्डुरङ्गने पूरी कीं

नाम लेनेसे क ठ आर्द्र और रीर शीतल हो । है इन्द्रियाँ अपना व्यापार भूल जाती हैं य धुर सुन्दर ना अमृतको भी त करता है इसने मेरे चित्तपर अधिकार कर लिया है प्रेम रससे रीरकी कान्तिको सन्नता और पुष्टि मिली य नाम ऐसा है कि इससे क्षणमात्रमें त्रिविध ताप होते हैं

यह ना स्मरण ऐसा है कि इ से श्री रिके चरण चित्तमें रूप नेत्रोंमें और नाम मुखमें जाता है और यह जीवको रि प्रेमका

आनन्दामृत पान कराकर उसक जीवत्व हर लेता है ब विठ्ठ ही रह जाते हैं अद्वयानन्दका भोग ही रह जाता है तुकाराम स्वानुभवसे बतलाते हैं कि नाम स्मरणसे वह चीज ज्ञात होती है जो अज्ञात है वह दिखायी देने लगता है जो पहले नहीं देख पड़ता वह वाणी निकलती है जो पहले मौन रहती है वह मिलन होता है जो पहले चिरविरहमें छिपा रहता है और यह सब आप ही आप होने लगता है

तुका म्हणे जों जों भजनासी वळे ।
अग ों तों कळे संनिधता

'तुका कहता है भजनकी ओर चित्त ज्यों ज्यों कता है त्यों-त्यों भगवत्सान्निध्यका पता लगता है पर यह अनुभव उसीको मिल सकता है जो इसे करके देखे नामको छोड़ उद्धारक और कोई उपाय नहीं है यह कारामजीने श्रीविठ्ठलनाथकी पथ करके कहा है कहनेकी हद हो गयी अस्तु तुकारामजीके तीन अभग इस प्रसङ्गमें और देकर यह प्रकरण समाप्त करते हैं

विषयका नि शेष विसरण हो गया चित्तमें ब्रह्मरस भर गया मेरी वाणी मेरे में न रही ऐसा चसका उसे नामका लग गया लाभकी अभिलाषा लिये वह मनके भी आगे चली से कृपण धनके लोभसे चलता है तुक कहता है गङ्गासागर सगममें मेरी सब उमङ्ग एकामयी हो गयीं

प्रेमामृतसे मेरी रसना सरस हो गयी और मनकी वृत्ति चरणोंमें लिपट गयी सभी मङ्गल वहाँ आकर न्योछावर हो गये आनन्द-जलकी वहाँ वृष्टि होने लगी सब इन्द्रियाँ ब्रह्मरूप हो गयीं उसीमें स्वरूप

का कहता है हाँ भक्त रहते हैं वहाँ भगवान् भी विराजते हैं इसमें कोइ सन्देह नहीं

अनन्त प्रकारके आनन्द हमारे अदर समा गये प्रेम । प्रवाह च । नामनिर्झर रने लगे राम कृष्ण नारायणरूप अखण्ड जीवनमें कोई ण्ड नहीं तुका कहता है इह परलोक उसी जीवनके दो तीर हैं

नामकी महिमा अनेकोंने अने स्थानोंमें गायी है पर तुकारामजीने बका मा कर दिया तुकारामजीकी सी अमृतरस तरङ्गिणी अन्यत्र कहीं नहीं मिलेगी क रा जीके गोमुखसे मधुर गम्भीर नादके सा बहनेवाली नाम न्दाकिनीमें सारा विश्व समा गया है नामामृ सेवनसे तुकारामजी की रसना रसमयी हो गयी वा गी मनके आगे बढ चली ब इन्द्रि ह्मरूप हो गयीं तुकाराम और नाम एक हो गये इन नाम भक्तोंको छोड़कर भगवान् अन्यत्र कहाँ र सकते हैं भक्त भगवान् और नाम त्रिवेणी सगम हुआ तुकारामजीका असीम नाम प्रेम दे भगवान् मुग्ध हो गये और उ हें तुकारा जीके सामने तु ारामजीने जिस रूपमें चाह उसी रूपमें आकर प्रकट होना पडा अच्युताचा योग न दें (ना के न्दसे अच्युतसे मिलन होता है) यह उन्हींका वचन है और इसी वचनके अनुसार अच्युत भगवान्को नाम रूप धारण करके कारामजीसे मिलने आना पडा तुकारामजीको श्रीपा डुरङ्गका साक्षात् दर्शन हुआ सगुण साक्षात्कारका महायोग प्रा हुआ य दिव्य चरित्र पाठक आगेके न प्रकरणोंमें देखगे सा नोंकी इति होनेपर साध्य आप ही साधकके पास चला आता है कैसे सो पाठक चित्तको स्थिर रके देखें भोग र और स्वानन्दको प्राप्त हों

नवाँ अध्याय

सगुण भक्ति और दर्शनोत्कण्ठा

१ तीन अध्यायोंका उपोद्घात

पिछले अध्यायमें यह देखा गया कि तुकारामजीने चित्त शुद्धिके लिये कौन कौन से उपाय किये किन मा नोंसे जीवात्मा परमात्माके बीचका परदा हटाया और कैसे अख ड नाम स्मरणके द्वारा साधनोंकी परमावधि की पहले कहे अनुसार सत्सङ्ग सत् ास्त्र और सद्गुरु कृपा ये तीन मजिलें पार करके अब साक्षात्कारकी चौथी मजिलपर पहुँचना है बही खाता डुबाकर धरना देकर तुकाराम बैठ गये व उस ध्यानावस्थामें नारायणने आकर समाधान किया यह जो कुछ तुकारामजी कह गये हैं वही प्रसङ्ग अब हमलोग देखें इस प्रसङ्गमें भक्तिमार्गकी श्रेष्ठता सगुण निर्गुण विवेक तुकारामजीकी सगुणोपासना श्रीविठ्ठलके दर्शनोंकी ा सा इस लालसाके साथ भगवान्से प्रेम कलह भगवान्से मिलनेकी टपटाहट इत्य दि बातें बतलानी हैं भगवान्के सगुण दर्शन होनेके पूर्व भक्तके अन्त करणकी क्या हालत होती है यह हम इस अध्यायमें देख सकेंगे इसके बादके प्रकरणमें तुकारामजीके णप्यारे पण्ढरिनाथ श्रीविठ्ठलभगवान् के स्वरूपका पता लगानेका प्रयत्न करना होगा। श्रीविठ्ठलस्वरूपका बोध होनेपर उसके बादके प्रकरणमें वह दि य कथा भाग हमलोग देखेंगे जिसमें रामेश्वर भट्टके कहनेसे तुकारामजीने बही खाता डुबा दिया तेरह दिन और तेरह र श्रीविठ्ठलके चिन्तनमें निमग्न होकर एक शिलापर पड़े रहे और फिर उन्हें श्रीविठ्ठलके जगदुलभ दर्शन हुए यथार्थमें ये तीनों

प्रकरण एक सगुणसाक्षात्कार प्रसगके अदर ही आ सकते थे पर साक्षात्कारका वास्तविक स्वरूप पाठकोंके ध्यानमें अच्छी तरह आ जाय इसके लिये एक प्रकरणके तीन प्रकरण करके इस विषयका साङ्गोपाङ्ग विचार करनेका सकल्प किया है पहले दर्शनकी उत्कण्ठा फिर जिनके दर्शनकी उत्कण्ठा है उन श्रीवि लनाथके स्वरूपकी ढूँ ोज और इसके पश्चात् अत्युत्कट भक्तिकी अवस्थामें उसी स्वरूपमें भगवान्‌के दर्शन इस क्रमसे होनेवाली ये तीन बातें ीन करणोंमें क्रमसे ही ले आनी हैं पाठक सावधान होकर ध्यान दें यह विनय करके अब हमलोग सगुण साक्षात्कारके प्रसङ्गका पूव रग देखना आरम्भ करें

२ भक्ति मार्गकी श्रे

नर-जन्मकी सार्थक भगवान्‌के मिलनमें ही है संतोंके मुखसे तथ वचनोंसे यह जानकर मुमुक्षु भगवत्प्राप्तिका माग ढूँ है मार्ग तो अने हैं मुमुक्षु यह सोचता है कि अपनी मन प्रवृत्तिके लिये कौन सा मार्ग सहज भ और अनुकूल है और जो म र्ग ऐसा दिखायी देता है उसीपर व आरूढ होता है भगवत्प्राप्तिके चार मार्ग मुख्य हैं योग-मार्ग कर्म मार्ग ज्ञान माग और भक्ति मार्ग श्रुति का ड त्रयरूपिणी है अर्थात् कम उपासना और ज्ञ न ये तीन माग बतानेवाली है और चौथा योग माग पतञ्जलि ऋषिने स करके बताया है आजत सहस्रों मुमुक्षु इन्हीं चार मार्गोंमेंसे अपनी भता और प्रियताके अनुसार कोई न कोई मार्ग चुनकर उसपर चले हैं और कृतार्थ हुए हैं साध्य एक ही है और वह परमात्मपद है सा नोंमें सबने अपनी पसदका उपयोग किया है चारों मार्ग अ छे हैं तथापि इस कलियुगके लिये ा कारोंने भक्ति मागको ही श्रेष्ठ बताया है और सहस्रों सत महात्मा भी यही कह गये हैं भग न् श्रीकृष्णने गी ामे और भागवतमें भी भक्ति मार्गका उपदेश

मुख्यत किया है गीता और भागवत भक्ति भवनके आ र स्तम्भ हैं भगवान्ने गीतामें कर्म ज्ञान और योग इन तीनों मार्गोंको भ क्ति मार्गमें ही कर मिला दिया है भगवान्ने अर्जुनको अपना जो विश्वरूप दिखाया वह न वेदयज्ञाध्ययनैन दानैर्न च क्रियाभिर्न तपोभिरुग्रै (अ० ११ ४८) चारों वेदोंके अध्ययनसे यथाविधि यज्ञोंके अध्ययनसे दानसे श्रौतादि कर्मोंसे या घोर तपादि सा नोंसे कोई भी नहीं देख सका था वह केव अर्जुनकी भक्तिसे ही भगवान्ने प्रसन्न होकर दिखाया भगवान्की भक्तिसे ही भगवान्का रूप दिखायी देता है गीताके उपसहारमें भी भगवान्ने जो गुह्याद्गुह्यतर ज्ञानम् बताया वह भी यही था कि

गच्छ सवभावेन भार

सबके हृदयमें जो विराजते हैं उन ईश्वरकी रणमें जानेका ही यह उपदेश है और सब कुछ कह चुकनेके पश्चात् सर्वगुह्यतम भूय कहकर जो अन्तिम धुर और अर्जुनके मुँहमे और अर्जुनके निमित्तसे सबके मुँहमें डाला है वह धुरतम भक्ति रसका ही है

मन्मना मद्भक्तो ि मा नमस्कुरु ’
सर्वधर्मान्परित्यज्य ामेक ण
अनित्य सुख लोकमिमं प्राप्य भजस्व माम्

अर्थात् यह लोक अनित्य है दु खका देनेवाला है यहाँ आकर मेरा भजन करा यही गीताका उपदे है यही गीताका रहस्य है सब संतोंने भगवद्वचनको सामने रखकर स्वानुभवसे भूतहितके लिये इसी भक्ति मार्गका निर्देश किया है तुकारामजीका हृदय भक्तिके अनुकूल था और भागवत सम्प्रदायके सत्सङ्गसे उनकी भक्ति प्रवण चित्त वृत्ति और भी भक्तिमय हो गयी उनका यह विश्वास अत्यन्त दृढ हो गया कि भगवान् भक्तिसे ही मिलेंगे और उससे म कृतकृत्य होंगे भगवान्में निष्काम

श्रीतु चरित्र

निश्चल विश्वास हो औरोंकी कोई आस न हो उन्हें निश्च कैसे हुआ यह हम उन्हींकी वाणीसे नें

योगाभ्यास करना अच्छा है पर योग धनकी क्रिया मैं नहीं जानता और उतनी साम य भी मु में नहीं है और फिर मुख्य यह है कि भगवान्‌के सिवा मेरे चित्तमें और कुछ भी नहीं है

योगाभ्यास करनेकी सामथ्य नहीं सा नकी क्रिया मालूम नहीं अन्तरङ्गमें केवल तुमसे मिलनेका प्रेम है

दूसरी बात यह कि भक्तिका भेद जो जानता है उसके द्वारपर अ महासिद्धियाँ लोटा करती हैं जाओ कहनेसे भी नहीं जातीं योगकी सिद्धियाँ भक्त न भी चाहे तो भी उसके अदर आकर बैठ जाती हैं जब यह बात है तब योगाभ्यास अलग करनेकी आवश्यक ही क्या रही योग भा य अपनी सब क्तियोंसमेत आप ही घर बैठे चला आता है अस्तु योगकी केवल क्रिया करनेसे चित्त शुद्धि नहीं होती ऐसे किसी योगीके पास जाइये तो व मारे क्रोधके गुर्राते ही दिखायी देते हैं सच्चा योग तो जीव परमात्म योग है भक्त भगवान्‌का ऐक है जो भक्तियोगसे सिद्ध होता है

अन्य माग उन युगोंके लिये ठीक थे पर कलियुगमे तो भक्ति-माग ही बसे अधिक कल्याणकारक है मैं मार्गके विधि विधान ठीक समझमें नहीं आते और उनका आचरण तो और भी कठिन है

सब रास्ते सँकरे हो गये कलिमें कोई साधन नहीं बनता उचित विधि विधान समझमें नहीं आता और हा से तो होता ही नहीं

भक्ति पन्थ सबसे सुलभ है इ पन्थमें सब म श्रीहरिके समर्पित

होते हैं इससे पाप पुण्यका दाग नहीं लगता और जन्म मृत्युका व धन कट जाता है

भक्ति पन्थ बड़ा सुलभ है यह पाप पुण्योंका बल हर लेता है इसस आने जानेका च छूट जाता है

और फिर यह भी बात है कि योग । ज्ञान या र्मके मार्गपर चलने वालेको अपने ही बलपर चलना पड़ता है भक्तिम र्गमें य बात नहीं इस मार्गपर चलनेवालेके सहाय स्वय भगवान् होते हैं

उभारोनि बाहे । विठो पालवीत आहे ।
दासा मीच साहे । मुखें बोले आपुल्या २

दोनों हाथ उठाकर भगवान् पुकारकर कहते हैं कि मेरे जो भक्त हैं उनका मैं ही सहाय हूँ न मे भक्त प्रणश्यति (गीता ९ ३१) तेषा मह समुद्धता मृत्युससारसागरात्' (गीता १२ ६) यह भगवान्ने स्वय ही कहा है तात्पर्य भक्तिमार्ग सबसे श्रेष्ठ मार्ग है अन्य उपाय है पर उनके अनुपान कठिन हैं और भक्तिमार्ग ही ऐसा मार्ग है कि जीव अनन्यभावसे भगवान्की शरणमें जब जाता है तब भगवान् उसे (गोदमें) उठा लेते हैं मन्त्र तन्त्र प प व्रत ये सब विकट मार्ग है इनमें सफलता अनिश्चित है

तपें इद्रियां आघात । क्षणें एक वाताहात ३
मत्र चळे थाडा । तरी घडचि हाय वेडा ४
व्रतें करिता साग । तरी एक चुकता भग ५

तैसी नव्हे भोळी सेवा । एक भावचि कारण देवा २

तपसे इन्द्रियोंपर आघात होता है एक क्षणमें न जाने क्य ो

ज य मन्त्रमें दि रा भी इधर उधर हो गया कि भला चङ्गा आदमी भी पागल हो जाय साङ्ग त करो पर यदि एक भी भू हुई ो सब गुड़ गोबर हो जाय पर यह भोली भाली सेव ऐसी नहीं है इसमें तो भगवान्‌को बस हृदयका भाव चाहिये

इससे को२ यह न समझे कि तुकारामजी व्रत जप तपादिको बुरा बतलाते हैं इनमें कु भी बुरा नहीं है ये साधन भी भगवान्‌में चित्त लगाकर किये यँ तो ये भक्तिरूप ही हैं ओवी सदृश अभङ्गोंमें उन्होंने कहा है

> करा जप तप अनुष्ठान याग । संतीं जे मारग स्थापियेले
> सत्य मानूनिय सता च्या वचना । जारे नारायणा शरण तुम्हीं

जप करो तप करो अनुष्ठान करो यज्ञ याग करो संतोंने जो जो मार्ग चलाये हैं उन सबको चलाओ सतोंके वचनोंको सत्य मानकर तुम लोग नार यणकी रणमें जाओ

ज्ञान मार्ग देखिये तो दुलभ ानकी बातें करना चाहे सुलभ हो पर इससे अनुभव तो कुछ भी नहीं होता शुद्ध ज्ञान तो अत्यन्त दुलभ है किसी भी वासन का छूत न लगा ो ऐसा शुद्ध ज्ञान जब मैं ढूँढ़ने चला तब यह देखा कि ज्ञानकी पीठपर प्राय अहङ्कारका भूत सवार रहता है इसलिये आठों पहर चिन्तनमें ही मङ्गल जानकर मैंने भजन मार्ग ही स्वीक र किया

मनोवागतीत जो तुम्हारा स्वरूप है वह जीवके ध्यानमें कैसे उतरे इसका विचार करते हुए तुकार म कहते हैं इस देहके द्वारा योग याग तप करनेसे या ज्ञानके पीछे पड़नेसे तुम नहीं मि ते इसलिये भोली भाली भक्तिके द्वारा तुम्हारी सेवा करनेमें ही ल्याण है यही मैंने निश्चय किया भक्तिके मानसे मैं भगवान्‌को नापता हूँ और ि सी नापसे भगवान् नहीं

नापे सकते भगवान् अनन्त हैं उनक अन्त उनका पार वेदोंसमेत कोई भी नहीं पा सका योग ज्ञान कर्म उसे नहीं जान सके इसलिये मैंने भक्तिको ही पकडा है

ज्ञातापनसे मैं बहुत डरता हूँ' ज्ञानसे ज्ञानका अभिमान कहीं सिर पर न चढ बैठे इस भयसे मैंने ज्ञानका ार्ग ही छोड दिया मुझे प्रेम निर्झर चाहिये तुम्हारी भक्तिका रस चाहि ये इस प्रेम मृ की इस भक्ति रसकी बराबरी और कौन कर सकता है

यासी तुळे ऐसे काहीं । दुजें त्रिभुवनीं नाहीं
काला भात दही । ब्रह्मादि दुर्लभ २

त्रिभुवनमें कोई दूसरी चीज ऐसी नहीं जिसकी इसके सा तुलना की सके हरि-कीतनके इस दही और भातके काँदौका जो आनन्द है वह ब्रह्मादिके लिये भी दुर्लभ है फिर तुकारामजी कहते हैं आजतक अद्वैत ज्ञानकी बात मैंने बहुत कह डालीं पर हे प्यारे प ढरिनाथ तुम भगवान् हो और मैं भक्त हूँ यह जो ना । है यह कभी न टूटे और भक्तिका रग कभी फीका न पड़े यही म्हारे चरणोंमें मेरी विनती है

तुका म्हणे हेंचि देईं । मीतूंपणा खड नाहीं
बोलिलों त्या नाहीं । अभेदाची आवडी ४

तुका कहता है मुझे बस यही दो कि तुम तुम बने र ो और मैं मैं बना रहूँ इसमें न पड़े जिस अभेदको मैंने बखाना उसमें मेरी रुचि नहीं है '

३ ज्ञान-योग क्तिमें माये

अभेदकी रुचि नहीं' यह बात तुकारामजीने अभेदको अनुभ किये बिना दापि न कही होगी भक्तिका आसन नीचा और ज्ञानका

आसन ऊँचा ज्ञानमार्गी लोग भले ही कहा करें पर ज्ञानेश्वर एकनाथ तु राम जैसे ानी भक्त मुक्तिके परेकी भक्ति अर्थात् परा भक्तिका आनन्द केव ज्ञानानन्दसे अधिक मानते हैं मोक्षकी हमें इच्छा नहीं उसे हमने गठरीमें गठिया रखा है भक्त मोक्ष नहीं चाहते मोक्ष हमारे द्वार खि ठौना है मेक्ष भक्तोंके द्वारपर भिक्षुक बनकर भिक्षा पानेके लिये खड़ा है २त्यादि उद्ग र तुकार मजीके मुखसे अनेक बार निकले हैं पर इसका मतलब नहीं है कि मोक्षसे उनका कुछ वैर था मोक्ष तो सहज स्थिति है इसका निश्चय होनेपर ही उ होंने भक्तिके आनन्दकी इतनी महिमा बखानी है नसम्मिश्र भक्ति या ज्ञानोत्तर भक्ति य कहिये परा भक्ति ज्ञानके द्वार स्वरूपबोध होनेके पश्चात्की ही स्थिति है इस स्थितिको प्रा होनेपर ही तुकारामजीने भक्तिके परमानन्दका ख विलास भोग करनेकी इच्छा की तुकारामजी जैसे महाभागव परम भक्तोंने योग ज्ञान और कर्मके मार्गोंको तिरस्कृत नहीं किया है ये सब मार्ग उत्त हैं पर भक्ति मार्गपर चलनेसे इन सब मार्गोंपर चलनेका फल मिल है और प्रेमका अलौकिक आनन्द भी प्राप्त होता है गेग कहते हैं चित्त वृत्ति निरोधको और इसका उपाय पातञ्जलयोगमें ही ई रप्रणिधाना । भी हा है ईश्वरप्रणिधानके द्वारा कारामजीकी चित्तवृत्तियोंका कितना निरोध हुआ था यह देखा जाय तो तुकारामजी योगी नहीं थे यह कौन कह सकता है ? इसी प्रकारसे सङ्ग और फलाशा छोडकर कर्म करना

स सूत्रका अ ै तुकारामजी यों बतलाते हैं

योगाच त भाग्य क्षमा आधीं दमा न्द्रिय १

अवघीं भाग्य येती घरा ते सोयरा जालिया २

योग भाग्य है क्षमा सके लिये पहले इन्द्रियों दमन करो न्को अपना लो तो भाग्य घर बैठे चले आवेंगे

ही यदि निष्काम कर्मयोगका सार है तो केवल भगवान्‌को प्रसन्न करनेके लिये कम करनेवाले तुकाराम र्मयोगी नहीं थे यह भी कोई कह सक है जीव परमात्मा योग ही यदि ज्ञान योगका अन्तिम साध्य है तो विठ्ठल दुजा नाहीं (तुका और विठ्ठल दो नहीं हैं) यह अनुभव बतलानेवाले ज्ञानके इ शिखरपर पहुँचे हुए तुकाराम ज्ञानी नहीं थे भी कौन कह सकता है तात्पर्य क ज्ञान और योगका भक्तिसे कोई विरोध नहीं ये द अलग अलग हैं और भगवान्‌से इनका अलगाव हो तो ये मार्ग भी अलग अलग हो जाते हैं पर यथार्थमें ये सब माग एक ही अनुभवके निदर्शक हैं तुकाराम गेगी थे कर्मी थे और ज्ञानी थे और सबसे बड़ी बात यह कि यह सब होते हुए वह परम भक्त थे इसी कारण उनके चित्त और वाणीमें इतना गाढा प्रेमरंग भरा आ है इस भक्तिका स्वरूपवणन शब्दोंद्वारा नहीं हो कता प्रेमका स्वरूप अनिर्वचनीय है

'प्रेम नये बोलतां सागता दाविता । अनुभव चित्ता चित्त जाणे

प्रेम बोला नहीं जा सकता बताया नहीं स ता उठाकर हाथपर रखा नहीं जा सकता यह चित्तका अनुभव है चित्त ही ान सकता है कर्म ान योगको जिस भक्तिसे पूर्णता ाप्त होती है जिससे कम ान योग सार्थक होते हैं वह भक्ति —व प्रेम तुकारामजीके हृदयमें परिपूर्ण था हेंचि माझें तप अभङ्गमें उन्होंने य ब या है कि भगवान्‌का चिन्तन करना उनका नाम लेना उनके रूपमें तन्मय हो जाना ही मेरा तप है यही मेरा योग यही मेरा यज्ञ यही मेरा ान यही मेरा ध्य न यही मेरा चार और यही मेरा सर्वस्व है कर्मके आदि अन्तमें भगवान्‌का अखण्ड चिन्तन ही उन्होंने अपना स्वधर्म है कर्म ज्ञान-योगमें जो-जो कमी हो उसकी पूर्ति हरि प्रेमसे हो जाती

है इसलिये भक्ति योग ही सबसे श्रे योग है ारामजीने यावज्जीवन भक्ति सुख भोग किया और भक्तिका ड ा बजाकर भक्तिकी महिमा गायी भक्तिका ही प्रचार किया नारायण भक्तिके व होते हैं

प्रेम सूत्र दोरी नेतो तिकडे जातो हरी

प्रेम सूत्रकी डोरसे जिधर ले ते हैं उधर ही भगवान् जाते हैं भक्ति मार्गको श्रेष्ठ माननेके जो कारण कारामजीने बताये हैं हो कता है कि किसी किसीको ये न जँचें ऐसे जो लोग ों उ हें तुकारामजी यह उत्तर देते हैं कि यह म ग मुझे रुचा इसलिये मैंने इसे स्वीकार किया मत तो ज ाँ तहाँ बिखरे पड़े हैं मेरे लिये जो उपयुक्त थे उन्हींको मैंने उठा लिया ' भिन्न भिन्न रुचिके लोग हैं उनके सङ्ग म कहाँ कहाँ नाचते फिरें ? अच्छा तो यही है कि अपना ो विश्वास हो उसीका यत्न करें अपनी ईश्वर निष्ठा बनाये रहे दूसरोंके रास्ते न जाय भक्ति सुख कभी बासी होनेवा ा नहीं उसक सेवन नि नया स्वाद और सुख देनेवाला है

भक्ति प्रेम-सुख औरोंसे न ी जाना चाहे वे पण्डित बहुपाठी य ज्ञानी हों आत्मनिष्ठ जीव मुक्त भी ों तो भी उनके लिये भी भक्ति सुख दुलभ है का कहता है कि नारायण यदि कृपा करें तो ही यह रहस्य जाना जा सकता है '

४ सगुण निर्गु विवे

संतोंका सिद्धान्त यही है कि सगुण निर्गुण एक है तथापि उन्होंने भक्तिकी महिमा बहुत बखानी है अद्वैतमें द्वै और द्वैतमें अद्वै है जो निर्गुण है वही सगुण है और जो सगुण है वही निगुण है यही निश्चय और नुभव होनेसे उभयविध आनन्द उनकी वाणीमें भरा हुआ है सत

द्वैतवादी नहीं और अद्वैतवादी भी नहीं वे द्वैताद्वै शून्य शुद्ध ब्रह्मके साथ समरस बने रहते हैं ज्ञानेश्वर महाराजने कहा है तुम्हे सगुण कहें या निर्गुण सगुण निर्गुण दोनो एक गोविन्द ही ो हैं तुकारामजीने भी वही कहा है

सगुण निर्गुण जयाची ही अं । तोचि आम्हासगें क्रीडा करी ।

सगुण और निर्गुण दोनों जिसके अङ्ग हैं वही हमारे सङ्ग खेला करता है ' जो निर्गुण है वही भक्तजनोंके लि ये अपना निर्गुण भाव छोड़े बिना सगुण बन है परब्रह्म तो मन वाणीके अतीत है ऐसा नहीं है जो अक्षरोंमें दिखायी दें या कानोंसे सुन पड़े' ज्ञानेश्वर महाराज क ते है वहाँ पहुँचनेसे पहले द लौट आते हैं सकल्पकी आयु समाप्त हो जाती है विचारकी हवा भी वहाँ नहीं चलती वह उन्मनावस्थाका लावण्य है, तुर्याका तारु य है वह अनादि अगण्य परमतत्त्व है विश्वका वह मूल है और योगद्रुमका फल है वह केवलानन्दका चैतन्य है वहाँ आकारका प्रान्त और मोक्षका एकान्त आदि और अन्त सबका लय हो ज ता है महाभूतोंका बी और महातेजका तेज है वही हे अर्जुन मेरा निजस्वरूप है (ज्ञानेश्वरी अ ६ ३१९ ३२३) ऐसा जो अचिन्त्य अरूप अनाम अगुण सर्वरूप सर्वगत परमात्मतत्त्व है वही निराकार निर्विकार निगुण परब्रह्मस्वरूप चतुर्भुज होकर प्रकट हुआ ब नास्तिकोंने भक्तोंको सताना आरम्भ किया उसो ी ोभा इस रूपको प्राप्त हुई है (ज्ञानेश्वरी अ ६ ३२४) हुआ है हुई है कहना भी कु खटकता ही है हुआ है नहीं बल्कि वह वही है

योगी एकाग्र दृष्टि करके जिसकी झलक पाते हैं वह हमें अपनी दृष्टिके सामने दिखायी देता है सुन्दर श्याम अङ्ग कान्तिकी प्रभा छिटकाते हुए

वही कटिपर कर धरे सामने खड़े हैं तुका क है वह अचे ही भक्तिसे प्रसन्न होकर निज ौतुकसे चेत रहा है ’

भगवान् स्वय कहते हैं ब्रह्मणो हि प्रतिष्ठाहम् (गीता १४ २) अर्थात् मेरे अतिरिक्त ब्रह्म और कु नहीं है (ज्ञानेश्वरी) सगुण ही निर्गुण है और गुण ही अगुण है ऐसा वि क्षण श्रीहरिका स्वरूप है इसलिये ध्यानमें मनमें राम कृष्ण की ही भक्तजन भक्ति किया करते हैं स्वय भगवान्ने ही गीताके बारहवें अध्यायमें बताया है कि अव्यक्तकी उपासना मोक्ष ी देनेवाली है पर उसमें बहुत है (क्लेशोऽधिकतरस्तेषाम्) और व्यक्तकी उपासना सुलभ और श्रे है व्यक्त और अव्यक्त हो म्हीं एक निर्भ्रान्त अर्थात् एकके ही ये दो रूप हैं दोनों मिलकर एक ही हैं पर भक्त भक्ति खके लिये व्यक्तकी ही उपासना करते हैं अव्यक्त अर्थात् निर्गुण निराकार निरुपाधिक विश्वरूप ब्रह्म व्यक्त अर्थात् सगुण स कार सोपाधिक राम कृष्णादि रूप भगवान् ङ्कराचार्यने व्यक्ता यक्तका विवरण इस प्रकार किया है कि अव्यक्त वह ो किसी भी प्रमाणसे व्यक्त न किया जा सके (न केनापि प्रमाणेन व्यज्यते) और व्यक्त वह जो इन्द्रिय गोचर हो व्यक्तकी उपासना सुलभ सुखकर और साध्य होनेके साथ मोक्षरूप फल देनेके थ सा भक्ति प्रेमानुभवका आनन्द भी देनेवाली है आचार्य उपासनाका क्षण बतलाते हैं यथाश मुपास्यस्य स मीप्यमुपगम्य तैलधारावत्समानप्रत्ययप्र हेण दीघकाल यदा न तदुपासनम् अर्थात् समानरूपसे गिरनेवाली तै धाराके समान एकाग्र दृष्टिका उपास्यकी ओर दीर्घकाल लगे रहना ही उपासना है देहवान् जी ोंके लिये यक्तकी उपासना ही सुखकर होती है विश्वरूप देखकर भी अर्जुन चतुभुज सौम्य श्रीकृष्णरूप देखनेके लिये लालायित हो उठे किरीटिन गदिनं चक्रहस्तमिच्छामि त्वा द्रष्टुम तथैव

उपनिषदोंकी जिससे भेंट नहीं हुई उस विश्वरूपको दे कर अर्जुन कहते हैं

विश्वरूपके ये जलसे देखकर नेत्र तृप्त हो गये अब ये कृष्णमूर्ति देखनेके लिये अधीर हो उठे हैं उस साक र कृ णरूपको छोड इ इ और कु देखनेकी रुचि नहीं उस रूपको देखे बिना इ इं कु अच्छा नहीं गता भुक्ति मुक्ति सब कुछ हो पर श्रीमूर्तिके बिना उसमें कोई आनन्द नहीं इसलिये इस सबको समेटकर अब तुम वैसे ही स कार बनो (ज्ञानेश्वरी ११ ६ ४ ६ ६)

सब भक्तोंकी चित्त वृत्ति ऐसी ही होती है यदि कोई कहे कि अव्यक्त सर्व यापक है और व्यक्त तो एकदे ीय है तो ज्ञानेश्वर महारा बतलाते हैं कि सोनेका ढ हो या एक रत्ती ही सोना हो दोनोंमे सोनापन तो समान ही है अथवा अमृतका कुम्भ हो या एक घूँट अमृत हो दोनोंमें अमृतका गुण तो एक ही है वैसे ही विश्वरूप और चतुर्भुज दोनों ही जीवको अमर करनेके लिये एक से ही हैं गीताके बारहवें अध्यायमें स्वय निज जनान द जगदादिकन्द भगवान् श्रीमुकुन्दने ही कहा है कि यक्तका उपासना ही श्रेयस्कर है ए नाथ महाराजने भागवतमें (स्कन्ध ११ अध्याय ११ लोक ४६ की टीकामें) कहा है कि सगुण निर्गुण दोनों समान हैं तो भी निर्गुणका बोध होना कठिन है मन बुद्धि और वाणीके लिये वह अगम्य है वेद-शास्त्रोंको उसकी पहचान नहीं है पर सगुणकी यह बात नहीं सगुणका स्वरूप देखते ही भूख प्यास भूल जाती है और मन प्रेममय हो जाता है सोना और सोनेके अलकार एक ही चीज हैं पर सोनेकी एक ईंट नववधूके गलेमें लटका दी जाय तो क्या वह भली म लूम होगी ? या उसी सोनेके विविध अलकार उसके अङ्ग प्रत्यङ्गपर शोभा दे सकेंगे ? इनमेंसे शोभा किसमें है दूसरी बात यह कि घी पतला हो या जमा हुआ

हो ‍ै वह घी ही पर पतले घीकी अपेक्षा जमा हुआ दानेदार घी ही ॥भपर रखनेसे स्वादि मालूम होता है इसी प्रकार निर्गुणके समान ही सगुणको समझो और उसका स्वान द लाभ करो भगवान्‌के सगुण ध्यान भजन पूजनमें जो परम आनन्द है वह अ य किसी साधनसे मि नेवाला नही सगुण भजनके द्वारा अद्वै आप ही सिद्ध होता है समर्थ रामदास स्वामीने कहा है रघुनाथजीके भजनसे मुझे ज्ञान हुआ भक्त्या मामभिजानाति य भगवान्‌ने भी कहा है इस सम्बन्धमें एकनाथ महारा ने बड अच्छा सिद्धान्त बताया है जो सदा ध्यानमें रखना चाहिये

> दीपकळिका हातीं चढे । तैं घराभीतरी प्रकाश स प
> माझी मूति जें ध्यानीं जडे । तैं चैतन्य आतुडे अवघेंचि

दीपक हाथमे ले लेनेसे घरमें सब जगह उजाला हो जाता है वैसे ही मेरी मूर्ति जब ध्यानमें बैठ जाती है तब समग्र चैतन्य दृष्टिमें समा जा । है

भगवान्‌की मू का दर्शन स्पशन भ न पू न कथा कीतन ध्यान चिन्तन करते रहनेसे जिस उपास्य दे की व मू है व उपास्य देव ध्यानमें बैठकर चित्तपर खेलने लगते हैं स्व देकर आदे सुनाते हैं ऐसी प्रतीति होती है कि वह पीठपर हैं और उनका प्रेम ब है व उनसे मि नेके लिये जी छटपटाने गता है व प्रत्यक्ष दर्शन भी होते हैं और यह अनुभूरि होती है कि वह निरन्तर हमारे समीप हैं और अन्तमें यह अवस्था आती है कि अदर ब हर वही हैं और वही सब भूतोंके द में हैं उन्हे छोड़ ब्र में और कोई नहीं मेरे अदर वही हैं और मैं भी वही हूँ तब सगुण निर्गुण कोई भेद नहीं रहता सगुण भक्तिमें ही निर्गुणानुभ होता है और सब भेद भाव मिट जाते

ऐसे मरस हुए भक्त भक्तिका आनन्द लूटनेके लिये भगवान् और भ द्वै केवल मनकी मौजसे बनाये रहते ऐसे भक्तको देखिये तो उसका कर्म भक्तका सा होता है पर स्वय परमात्मा ही होता है यह देखनेवाले देख लेते हैं इसी अभिप्रायसे तुकारामजीने है कि

अभेदूनि भेद राखियेला अगीं । वाढावया जगीं प्रेमसु

अभेद करके भेदको बना रक्खा इसलिये कि ससारमें प्रेमसुखकी वृद्धि हो महाराष्ट्रके सभी सत ऐसे ही हुए जिन्होंने सगुणमें निर्गुण और निर्गुणमें सगुण द्वैतमें अद्वै और अद्वैतमें द्वैत देखा और देखकर दाकार हुए आप उन्हें द्वैती कहें तो कोई जं नहीं अद्वैती कहें तो भी कोई उजुर नहीं सगुणोपासक भी कह सकते हैं और निर्गुणानुभवी भी सकते हैं क्याकि वे हैं ऐसे ही जो अद्वैतानुभवमें द्वैत खका भी आनन्द लिया करते हैं अद्वैत और भक्तिका समन्वय करनेवाला ही तो यह भागवतधर्म है ज्ञानेश्वर समर्थ और तुकाराम तीनोंका अनुभव एक सा ही है

( ) ज्ञानेश्वर महाराज कहते हैं

हवाको हिलाकर देखनेसे वह आकाशसे ग जान पडती है पर तो ज्यों का त्यों ही रहता है वैसे ही भक्त शरीरसे कर्म करता हुआ भक्त सा जान पड़ता है पर अन्त प्रतीति से वह भगवत्स्वरूप ही रहता है (ज्ञानेश्वरी अ ७ ११५ ११६)

(२) समर्थ र मदास स्वामी कहते हैं

देह ो उपासना लगी रहती है पर विवेकत उसका आपा नहीं रहता संतोंके अन्त करणकी ऐसी स्थिति होती है (दासबोध दशक ६ समास)

(३) तु राम महाराज कहते हैं

आधीं होता सतसग । तुका झाला प ङुरग
त्याचें भजन रहीना । मू स्वभाव जाइना

पहले स ङ्ग था पीछे का स्वय ही पाण्डुरङ्ग हो गया पर इस अवस्थामें भी उसका भजन न ी छूटता जिसका जो मूल स्वभाव है वह कहाँ ायगा

इन तीनों उद्ध रोंसे यही स्प होता है कि शुद्ध ब्र ान और निष्ठायुक्त भ न दोनोंका पूर्ण ऐक्य भक्तमें होता है भक्तिका अद्वैतसे कोई ड नहीं यही नहीं बल्कि उनकी एकरूपता है द्वैताद्वैत सगुण निर्गुण भगवान् और भक्त जीव और ब्रह्म ये सब भेद केवल सम के हैं तत्त्वत वे नहीं हैं इसलिये स धु संतोंने जिस भावसे सगुणोपासनाकी महिमा बखानी है उसी भावसे हमलोग भी सगुण प्रेमकी कथा श्रवण करनेके लिये प्रस्तुत हों तुक रामजीने भगवान्से विनोद किया है कहीं स्तुतिके स थ स थ व्याजत नि दा भी की है वि क्षण कल्पनाएँ की हैं प्रेमसे गालियाँ भी नायी हैं अवश्य ही मू त भगवान्के साथ अपना जो ऐक्य है उसे भू कर ये गालियाँ न दी होंगी महाराष्ट्रके सभी सतोंके मान तु ारामजीको अद्वैत सिद्धान्त सर्वथा स्वीकार था यह बात जिनके ध्यानमें नहीं आती उन्हें इस बातका बड अ श्चर्य होता है कि तुकारामजीने भगवान्से इतनी घनिष्ठ ा कैसे बरती सिद्धान्त अद्वैतका और मजा भक्तिका यही तो भागवतधर्मका रहस्य है इसे ध्यानमें रखते हुए अब हमलोग सगुणभक्तिका आनन्द लेनेके लि ये तुकारामजीका सङ्ग पकडें

५ विट्ठल शब्दकी व्युत्प

वि ल-शब्दकी युत्पत्ति विदा ज्ञानेन ठान् शून्यान् लाति गृह्णाति

वि अर्थात् ज्ञानशून्य याने भोले भाले अज्ञजनोंको जो अपनाते हैं वही विट्ठल हैं य व्याख्या विट्ठल श दकी धर्ममि धु कार काशीनाथ बाबा पाध्येने की है तुकारामजीके अभगका एक चरण है वीचा केला ठोबा म्हणोनि नाव विठोबा (वी' का ठोबा (वाहन) किया इसलिये नाम विठोबा हुआ) वी' याने पक्षी गरुड गरुडको जि ने अपना वाहन बनाया उसका नाम विठ्ठ हुआ कुछ लोग ऐसा भी अथ करते हैं कि वी (विद्) याने ज्ञान उसका ठोबा याने आकार अर्थात् ज्ञानका आकार ज्ञान मूर्ति परब्रह्मकी सगुण साकार मूर्ति व्युत्पत्ति शास्त्रसे विष्णु ` विठ्ठ विठोबा होता है प्राकृत भाषाके याकरणमे विष्णु' का विठु' रूप होता है जैसे मुष्टिसे मूठ (मुट्ठी) पृष्ठसे पाठ (पीठ)' वैसे ही विष्णु से विठु हुआ ल' प्रत्यय प्रेमसूचक है और वा' आदरसूचक कोई विट्ठलको विटस्थल' याने वीट (ईंट) जिसका स्थल है याने जो ईंटपर खड़ा है ऐसा भी अथ लगाते हैं सफेद मिट्टी होनेसे उस स्थानको प ढरपुर कहते हैं वहाँ ईंटके भट्ठे रहे होंगे पुण्डलीकने भगवान्के बैठनेके लिये उनके सामने जो ईंट रख दी इसका कारण भी यही हो सकत है कि चारों ओर ईंटके भट्ठे होनेसे जहा तहाँ ईंटें पड़ी र ती होंगी और लोग बैठनेके लिये भी उनका उपयोग करते होंगे विठोबा ब्दका धात्वर्थ कुछ भी हो पर विठोबा कहनेसे पण्ढरीमें ईंटपर खड़े भगवान् श्रीकृष्णकी मूर्ति । ही ध्यान होता है श्रुतिने परमात्माका ॐ' नाम रखा उसी प्रकार भक्तोंने उन्हा परमात्मा के व्यक्त रूपको श्रीकृ णको वि नाम प्रदान किया है ज्ञाने र महाराजने ॐ तत्सदिति निर्दे । व्याख्यान करते हुए वके सम्बन्धमें जो कुछ है वही भगवान्के वि नामपर भी घट है

उस ब्रह्मका कोई नाम नहीं कोई जाति नहीं पर अविद्यावर्गकी

रातमें उसे पहचाननेके लिये वेदोंने एक केत बनाया है जब पैदा होता है व उसका कोई नाम नहीं होता पीछे उसका जो नाम रखा जाता है उसी नामपर वह हाँ कहकर उठता है ससार दु खसे दुखी जीव जो अपना दुखड़ा सुनानेके ये आते हैं वे जिस नामसे पु रते हैं वह यह नाम यह सकेत है ब्रह्मका मौन भङ्ग हो अद्वै भावसे वह मिले ऐसा मन्त्र वेदोंने करुणा करके निकाला है उस एक केतसे आनन्दके साथ जिसने ब्रह्मको पुकारा सदा उसके पीछे रहनेवाला वह ब्रह्म उसके सामने आ जाता है (ज्ञानेश्वरी अ १ ३२९ ३३)

अनाम अजात ब्रह्मकी पहचान ससार दु खसे दुखी जीवोंको हो इसके लिये श्रुतिने जो नाम संकेत किया ह प्रणव ब्दसे जाना है वैसे ही सतोंने जीवों ो श्रीकृष्णकी पहचान करानेके लिये उसीका विठ्ठल नामसे निर्दे किय है और इस नामसे ो कोई पुकारता है श्रीकृष्ण भी उसके स मने प्रकट होते हैं श्रीहरिव या श्रीमद्भागवतमें श्रीकृष्ण ो इस नामसे न भी पुकारा हो और भक्तोंने चाहे उनका य एक नया ही नाम र हो तो भी नामकी नवीनतासे अ युत श्रीकृष्ण ा कृ णपन तो च्युत नहीं होता कई पुराणोंमें प ढरपुरके श्रीविठ्ठलके उल्लेख हैं पद्मपुराणमें (उत्तरखण्ड गी ाम हात्म्यमें)

द्विभु विठ्ठ वि भुक्तिमुक्तिप्रदायकम्

यह उल्लेख है गरु पुराणमें विठ्ठलं पा डुरङ्गे च व्य टाद्रौ रमासखम् अर्थात् प ढरपुरमें वि णुको विठ्ठल कहते हैं ऐसा कहा है स्कन्दपुराणमें भीमाम हात्म्यके अदर पाण्डुरङ्ग इति ख्यातो विष्णुविपुल भूतिद यह उल्लेख है और फिर उसी पुर णके चन्दला माहात्म्यमें श्रीविठ्ठलका कमला लभो देव करुणारसशेवधि कहकर वणन किया है इस प्रकार ब्रह्म डपुराण भार्गवपुराण ्त्यादि पुराणोंमें और श्रीमत् ङ्कराचार्यकृत

पा डुरङ्गस्तोत्रादिमें भी श्रीपण्ढरपुरनिवासी पाण्डुरङ्ग भगवान्‌का वर्णन आया है पण्ढरी क्षेत्र और श्रीविठ्ठल देवता अत्य त प्राचीन हैं पुराणोंके जो अवतरण ऊपर दिये उनसे यह स्प है कि वि णु ही विठ्ठल है

६ ज्ञानेश्वरीमें विट्ठल-नाम यों नहीं ?

श्रीवि -स्वरूपका विचार अगले अध्यायमें किया जायगा यहाँ विठ्ठल अर्थात् विष्णु और सो भी श्रीविष्णुके पूर्णावतार श्रीकृ ण हैं इस बातको ध्यानमें रखते हुए एक आक्षेपका विचार कर लें और आगे बढ़ें कुछ आधुनिक विद्वानोंका यह तर्क है कि ज्ञानेश्वरीमें कहीं भी विठ नाम नहीं अ या है इससे यह जान पड़ता है कि ज्ञानेश्वर महाराज विठ्ठलके उपासक नहीं प्रत्युत निर्गुण ब्रह्मके ही उपासक थे ज्ञानेश्वर और एकनाथ दोनों ही अत्यन्त गुरुभक्त थे और ग्रन्थ प्रणयनके समय उनके गुरु भी उनके सम्मुख उपस्थित थे इसी कारण उनके ग्र थोंके मङ्गलाचरण गुरु स्तुतिसे ही भरे हुए हैं तथापि उनके ग्रन्थोंमें श्रीकृष्ण प्रेमके जो अनुपम निर्झर हैं उनकी ओर ध्यान देनेसे एक अ धा भी यह जान सकेगा कि उनका सगुण प्रेम कितना अलौकिक था श्रीकृष्णार्जुन प्रेमका वर्णन करते हुए ज्ञानेश्वर महाराजने अपनी श्रीकृष्ण भक्ति व्यक्त करनेकी लालसा पूरी कर ली है (ज्ञानेश्वर चरित्र पाठक देखें) और फिर जहाँ जहाँ श्रीकृष्णकी स्तुति करनेका अवसर मिला है वहाँ-वहाँ ज्ञानेश्वर महाराजकी वाणी कितनी प्रेममयी हो गयी है य॰ ज्ञानेश्वरीके पाठक सम सकते हैं . विस्तार बढनेके भयसे अव रण यहाँ नहीं देते जो लोग देखना चाहें वे ज्ञानेश्वरीमें चौथे अध्यायकी १४ ओवियाँ और नवें अध्यायकी ४२५ से ४७५ तककी ओवियाँ अवश्य देखें नवें अध्यायकी ५२१ वीं ओवीमें महारा श्रीकृष्णका श्यामसुन्दर परब्रह्म भक्तकाम कल्पद्रुम श्रीआत्म राम' कहकर वर्णन करते हैं ग्यारहवें अध्यायके उ रार्धमें और बारहवें अध्यायमें

उस चतुभुज रूप का धुर वर्णन भी पढनेयोग्य है बार वेंके उपसहारमें भगवान्‌का य इस प्रकार गाते हैं

ऐसे वह निजजनान द गदादिक द श्रीमुकु द बोले सञ्जय धृतर से कहते हैं र जन् वह मुकु द कैसे हैं निर्मल हैं नि कलङ्क हैं गेकक्रुपाल हैं रणागतके स्नेहाश्रय हैं र य हैं सुरव्र दसहायशी और लोकला न गील हैं प्रण प्रतिप न उन । खे है व भक्तजनवत्स प्रेमिजनप्राञ्जल हैं सत्यसे और सकल क ।निधि हैं । वैकु ठके व श्रीकृष्ण निज भक्तोंके चक्रवर्ती हैं ' (२३९ २४१ २४३ २४४)

ऐसी सुधा रससानी प्रेम मधुरवानी सगुण प्रेमीके सिवा और किसकी हो सकती है ? निर्गुण बोध और सगुण प्रेम दोनों एक सा उसी पुरुषमें मिलते हैं जो पूर्ण भक्त हो च दनकी द्रुति या चन्द्रकी चाँदनी जैसी अद्वैत भक्ति है पर यह अनुभव करनेकी चीज है कहनेका नही (ज्ञानेश्वरी १८ ११५) वसुदे दे कीनन्दन (ज्ञाने ४ ८) ही सवरूपा ार सर्वदृष्टिनेत्र और सवदे निवास (ने १८ १४१) परमात्म हैं और भक्तोंकी प्रीतिके अमूर्त होकर भी व्यक्त हुए हैं भक्त प्रीतिसे भगवान् व्यक्त हुए इसीसे जगत्‌का कार्य बना न ˆ तो भ । इ हैं ोई पकड स ा है ज्ञानेश्वर महारा कहते हैं कि यदि भगवान् प्रीत होकर यक्त न हों तो योगी उन्हें पा नहीं सकते वेदार्थ उ हें जान नहीं सकते ध्यानके नेत्र भी उन्हें देख नही सकते (ज्ञानेश्वरी ४ १२) परमात्मा सगुण स र प्र ट हुए यह बहु ही अच्छा हुआ वही परमात्मा पुण्डलीककी भक्तिसे प्रसन्न होकर पण्ढरीमें ईंटपर कटिपर कर धरे ड़े हैं भक्तोंने अपनी रुचिके अनुसार उनका नाम वि रखा है जैस ˆ स भ व हो भगवान् वैसे ही हैं भक्तोंका यह भाव रहता है कि सर्वि द् न परमात्मा हैं उसी रूपमें उन्हें परमात्माकी प्रतीति होती

है वह सर्वव्यापक हैं आका से भी अधिक यापक और परमाणुसे भी अधिक सूक्ष्म हैं अखि वि में व्यापकर भक्तोंके हृदयमें विराज रहे है समर्थ रामदास स्वामी कहते है

जगीं पाहता सर्वहो कोंदलेंस ।
अभा या नरा दृढ पाषाण भासे

ससारमें देखिये तो व सर्वत्र स ाये हुए है पर अभागे मनुष्यको यह सब कडा पत्थर सा गता है नामदेवराय जनाबाई आदि सब सत श्रीविठ्ठलके उपासक थे नाथ महाराज श्रीकृ ण अर्थात् श्रीविठ के ही भक्त थे ज्ञानेश्वरीमें जैसे श्रीविठ्ठलका नामोल्लेख नहीं है वैसे ही ए नाथी भागवतमें भी एक ओवीको ोड और कहीं भी विठ्ठल नामका उल्लेख नही है ि स ओवीमें य नामोल्लेख है वह ओवी इस प्रकार है

पावन पांडुराक्षितीं । जे कां दक्षिणद्वारावती ।
जेथ विराजे विठ्ठलमूर्ति । नाम गर्जती पढरी

(२९ २४५)

व पा डुरङ्ग पुरी पावन है वह दक्षिणकी द्वर ा है वहाँ श्रीविठ्ठल मूर्ति विर ज रही है प ढरीमें उनका नाम गूँ ा रहता है ' एकनाथी भागवतमें बस यही एक बार श्रीविठ्ठलका नाम आया है तथापि क्या ज्ञाने री और क्या ए नाथी भागवत दोनों ही ग्रन्थ श्रीकृष्ण प्रेमसे ओतप्रोत हैं और जो श्रीकृष्ण हैं वही श्रीविठ्ठल हैं इस कारण ही वारकरी मण्डलमें ये दोनों ग्र थ वेद तुल्य माने जाते हैं एकनाथ महाराजके परद दा भानुदास महाराज विख्य त वि ल भक्त हुए पैठणमें उनक बनवाया लमन्दिर है इसी मन्दिरमें एकनाथ महाराज कथा बाँचते थे यही श्रीवि मूर्तिके सामने उनके कीर्तन होते थे श्रीविठ्ठलकी स्तुतिमें एकनाथ महाराजके सैकडों अभग हैं ना महारा परम

भागवत श्रीकृ ण श्रीवि लके परम भक्त थे फिर भी नाथ भागवतमें श्रीवि ा नाम एक ही ओवीमें आया है और ज्ञानेश्वरीमें तो विठ्ठलका नाम ही नहीं है इस बातको बड़ा तूल देकर अनेक आधुनिक पण्डित यह कहा करते हैं कि ज्ञानेश्वरी ो तत्त्व ान और निर्गुणोपासनका ग्र थ है वारकरी सम्प्रदायसे उसका कु भी सम्बन्ध नहीं यह बड़े आश्चर्यकी बात है ज्ञानेश्वरीको कोई केवल तत्त्व ज्ञानका थ भले ही समझ ले पर वारकरियोंके लिये तो ज्ञाने री और एकनाथी भागव ये दोनों थ उपा ना ग्रन्थ हैं वारकरी श्रीकृष्णके उपासक हैं और ये ग्र थ श्रीकृष्णके परम भक्तोंके ग्रन्थ होनेसे उनके लिये प्रमाणस्वरूप हैं ानेश्वर और एकना श्रीकृष्ण श्रीविठ्ठलके पूर्णभक्त और उनके ग्रन्थ श्रीकृष्ण श्रीविठ्ठलकी भक्तिसे ओतप्रोत हैं इसीसे वारकरियोंको अ यन्त प्रिय और मा य हैं ज्ञानेश्वर एकनाथसे नामदेव तुकाराम ो अ ग रनेकी इनकी चे व्यर्थ है यह पहले स माण सिद्ध किया जा चुका है रुक्मिणी रखुमाई श्रीकृष्णकी पटरानी थीं उनकी चित् क्ति उनकी आदिमाया थीं यह सर्वश्रुत ही है श्रीकृ ण रुक्मिणी ही श्रीविठ्ठल रखुमाई हैं वि रखुमाई ही वारकरियोंका नाम मन्त्र है ज्ञानेश्वरी और नाथ भाग श्रीकृष्ण (श्रीविठ्ठल) भक्तिप्रधान ग्र थ हैं यह बात आधुनिक विद्वान् ध्यानमें रखें तो ज्ञानेश्वर एकन थसे प ढरीके भक्ति प थको अलग करना असम्भव है ह बा उ हें भी स्वीकार करनी पड़ेगी ज्ञ नेश्वर नामदेव जनाबा२ एकनाथ काराम ये सभी वि भक्त हैं श्रीविठ्ठलकी उपासना तुकाराम महाराज याव ीवन करते रहे

७ मूर्ति पूजा रह

श्रीविठ मूर्ति भक्तोंके प्र णोंका ण है पणि भगव नलालके मतसे पण्ढरपुरकी यह मूर्ति छठी शताब्दीसे पहलेकी है निर्गुण ब्रह्म और

सगुण भगवान् दोनों इस श्रीवि मूर्तिमें हैं य मूर्ति भक्तोंको चैतन्यघन प्रतीत होती है इस मूर्तिके भजन-पूजनसे तथा ध्यान धारणासे भावुक भक्तोंको भगवान्के सगुणरूपके दर्शन होते और अद्वयानन्दका अनुभव भी प्राप्त होता है पहले हुआ है और अब भी होता है श्रीविठ्ठल भक्ति योग ज्ञानकी विश्राम भूमिका है यह भी कोई पूछ सकते हैं कि द्वैतानन्दके लिये मूर्तिकी क्या आवश्यकता पर मैं उनसे पूछता हूँ कि मूर्ति पूजासे भक्तिरसास्वाद मिला और अद्वयानन्दमें भी कुछ कमी न हुई तो इस मूर्ति पूजासे क्या हानि हुई भगवान्‌ भक्त और भजनकी त्रिपुटी अद्वयानन्दके स्वानुभवपर खड़ी की गयी तो इसमें क्या बिगड़ा

देव देऊळ परिवारू । कीजे कोरूनी डोंगरू ।
तैसा भक्तीचा वेव्हारू । का न व्हावा

(अमृतानुभव प्र ९ . ४१)

देव देवल और देव भक्त पहाड़ खोदकर एक ही शिलापर खुदवाये सकते हैं वै । यवहार भक्ति । क्यों नहीं हो सकता

एक ही चित्र शिलापर श्रीशङ्कर मार्कण्डेय और शिव मन्दिर या श्रीविष्णु गरुड और विष्णु-मन्दिर यदि चित्रित हों तो क्या एकके अंदरकी २स त्रिविधतासे हरि हर भक्ति रसास्वादनमें कुछ बाधा पडती है ? सुवर्णके ही श्रीराम सुवर्णके ही हनुमान् और उनपर सुवर्णके ही फूल बरसानेवाला सुवर्ण रीर भक्त हो तो इस त्रिपुटीसे अद्वैत सुखकी क्या हानि होती है यह सब तो उपासकके अधिकरपर निर्भर करता है मूलका मूल बना रहे और ऊपरसे व्याज भी मिले तो इसे कौन छोड़ दे

और कसमें कोई कसर न हो और अलङ्कारकी ाोभा भी प्राप्त हो तो इस आनन्दको छोडकर केवल सोनेका प सा छातीसे चिपकाये रहनेमें कौन सी बुद्धिमानी है भक्तके अद्वैतबोधमें कुछ कमी न हो और वह

भगवान्‌की प्रतिमाके स मने बैठ र भजन पूजनादिके द्वारा भक्ति-सुखामृत भी पान करे तो इससे व क्या कभी अद्वयानन्दसे वञ्चित होगा भक्ति खके लिये भक्त हो भगवान् और भक्त बनकर पूजनादि उप सना कर्म रता है परन्तु यह कौश ज्ञमें बिना हिलमिल गये नहीं सम पडता और यह बोध न होनेसे गुणोपासन और प्रति । पूजनका रहस्य भी कभी ध्यानमें नहीं आ । मूर्ति पूजाका यह रहस्य न जाननेके कारण ही बहु से लोग मूर्ति पूजा का नाम लेते ही चौंक उठते हैं और यह पू बैठते है कि क्या तुकाराम से ानी महात्मा भी मूर्तिपू क थे उनके स प्रश्नका यही उत्तर है कि ाँ वह मूर्तिपूजक थे और यावज्जीवन मूर्तिपूजक ी थे हमार आपका यह समाज मूर्तिपू क ी है यही क्यों सारा नु य समा ही यथार्थमें मूर्तिपूजक है वेदोंमें वरुण सूर्य उषा आदि देवताओंकी मूर्तियोंके स्तोत्र हैं निराकारवादी ब ईश्वर प्रार्थना करते हैं ब उनके चित्त चित्रपटपर कोई न कोई रूप ही चित्रित हो । होगा और दि नहीं होता तो उनका प्रार्थना करना ही य है भगव न् अमूत हैं और मूत भी भक्त ही अपने अनुभवसे इ बातको जानते हैं ई र दि सर्वत्र है तो मूर्तिमें क्यों नहीं ारामजी पू ते हैं

अवघें ब्रह्म रूप रिता नाहीं ठाव । प्रतिमा तो देव कसा नव्हे

स कु ब्रह्मरूप है कोई स्थान उससे रिक्त नहीं तब प्रतिमा ईश्वर नहीं यह कैसे हो सकत है

ईश्वर सर्वव्यापी है पर प्रति ामें नहीं यह हना ो प्रतिमाको ईश्वरसे भी बडा मानना है चाहे जिस पत्थरको तो भगवान् हकर हम नहीं पूजते ब्राह्मणोंद्वारा वेद मन्त्रोंसे जिसमें प्राण प्रतिष्ठा की गयी हो उसी मूर्तिको भगवान् र हम पूजते और म ते हैं भाव ही तो भगवान् हैं और भक्त भ भगवान् भी पत्थरमें कट होते हैं उ

पत्थरपन न होता है और सच्चिदानन्दघन परमात्मा वहाँ प्रकट होते हैं
कारामबाबा कहते हैं

पाषाण देव पाषाण पायरी । पूजा एकावरी पाय ठेवी १
सार तो भाव सार तो भाव । अनुभवी देवतेचि झाले २

पत्थरकी ही भगवन्मूर्ति है और पत्थरकी ही पैडी है पर एकको पूजते हैं और दूसरेपर पैर रखते हैं सार वस्तु है भाव वही अनुभवमें भगवान् ोकर प्रकट होता है

गङ्गाजल और अन्य सामान्य ज ोंके बीच कौन सा बडा भारी अन्तर है ? पर भावनासे ही तो गङ्गाका श्रेष्ठत्व है तुकारामजी कहते हैं भावुकोंकी तो यही बात है धर्मा र्मके पचड़ेमें और लोग पडा करें जिसके निमित्त ो पूजनादि किया ाता है वह किसी भी मार्गसे किसी भी रीतिसे किया जाय वह प्राप्त उसीको होता है पत्र पुष्प फल तोय कुछ भी कोई भी कहीं भी कैसे भी पर विमल अ त करणसे अर्पण करे तो वह मुझे ही प्राप्त होता है तदह भक्त्युपहृतमश्नामि प्रयतात्मन ' (गीता९ २६) यह स्वय भगवान्का ही वचन है शिव पूजा ि वासि पावे माती मातीशी सामावे (शिवकी पूजा शिवको प्राप्त होती है और मिट्टी मिट्टीमें समा जाती है) अथवा विष्णु पूजा वि णूसि अर्पे पाषाण राहे पाषाणरूपें . ' (विष्णुकी पूजा विष्णुके अर्पित होती है और पत्थर पत्थरके रूपमें रह जाता है) यह तुकारामजी कह गये हैं भगवान्की भ सुडौल सुन्दर मधुर मूर्ति देख सहस्रों भक्त आनन्दित हुए और मूर्ति चैतन्यघन होकर उन्हें प्राप्त हुई

ध य भावशीळ । ज्याचें हृदय निर्मळ १
पूजी प्रतिमेचा देव । सन्त म्हणती तेथें भाव ध्रु
तुका म्हणे तैसे देवा । होणें लागे त्याच्या भावा २

न्य हैं भावशी जिनका हृदय निर्म है प्रतिमाके देवता जो पूजता है सत क ते हैं कि उसीमें भाव है का कहता है भक्तोंका जो भाव है भगवान्‌को वैसा ही होना पड है

श्रीविठ्ठल मूर्तिमें तुकारामजीकी निष्ठा ऐसी अविचल थी कि कहते हैं

म्हणे विठ्ठल पाषाण । त्याच्या तोंडावरी व्हाण

जो विठ को पत्थर कहता है उसके मुँहपर जूता '

म्हणे विठ्ठल ब्रह्म नव्हे । त्याचे बोल नाइकावे

जो कहत है वि ब्रह्म नहीं उसकी बात ोई न ने

ये सब उत्कट प्रेमके उद्गार हैं ए नाथी भागवत (अ श्लोक ४६) में कहते हैं

निर्गुणका बोध कठिन है मन-बुद्धि वाणीके लिये अगम्य है स्त्रोंके सकेत सम नहीं पडते वेद तो मौन साधे हैं सगुण मूर्तिकी यह बात नहीं वह सुलभ है क्षण है उसके दर्शनसे भू प्यास भूल जाती है मन प्रेमसे रकर न्त हो जाता है जो नि सिद्ध सच्चिदानन्द हैं प्रकृति परेके परमानन्द हैं ही स्वानन्द-कन्द स्व लीलासे सगुण गोविन्द बने हैं मेरी मूर्तिके दर्शनोंसे नेत्र कृतार्थ होते हैं जन्म मरणका उठ जाता है विषयोंके पा कट जाते हैं

प्रेममय अन्त करणसे मूर्ति पूजा करनेवाले भक्तोंके लिये भगवान् मूर्तिमें ही प्रकट ो हैं इस बातके अनेक उदाहरण हैं एकनाथ महाराज कहते हैं

अब भी इस बातका प्रत्यक्ष प्रमाण है कि दासके चनसे प्रतिमामें आनन्दघन भगवान् स्वय प्रकट हुए

(भागवत ७-४ २)

एकना महाराजने अपने अभगोंमें भी कहा है

मी तेच्चि माझी तिमा । तेथें नाहीं आन धर्मा १
तथें असे माझा वास । नको भेद आणि सायास २
कलियुगीं प्रतिमेपरतें । आन साधन नाहीं निरुतें ३
एका जनार्दनी शरण । दोनीं रूपें देव आपण ४

मैं जो हूँ वही मेरी प्रतिमा है प्रतिमामें कोई अन्य धर्म नहीं वहीं मेरा वास है इसमें कोई भेद मत मानो और यर्थ कष्ट मत उठाओ कलियुगमें प्रतिम से बढकर और कोई साधन नहीं एका (एकनाथ) जनार्दनकी शरणमें है ये दोनों रूप आप भगवान् ही है '

देव सर्वाठायी वसे । परि न दिसे अभाविका १।
लीं स्थलीं पाषाणीं भरला । रिता ठाव कोठें ठरला २

भगवान् सब ठौर है पर अभक्तोंको वह नहीं देख पडते जलमे थलमें पत्थरमें सर्वत्र वह भरे हुए हैं उनसे रिक्त कोई स्थान नहीं बचा है

अस्तु तुकारामजीके तथा उनके सह अन्य संतोंके सगुणोपासन और मूर्तिपूजनके सम्बन्धमें जो विचार हैं उ ह सक्षेपमें यहाँतक सूचित किया यह कहनेकी आवश्यकता नहीं कि उनके आचार भी इन्हीं विचारोंके अनुसार थं पण्ढरीकी श्रीविठ्ठलमूर्तिके उपासक विश्वम्भरबाबाके समयसे कुल देव श्रीवि की नित्य पूजा अर्चा करनेवाले विठ्ठल मन्दिरका जीर्णोद्धार करनेवाले और अन्ततक विठ्ठल मन्दिरमे रि कीर्तन रने वाले तुकारामजी मूर्ति पूजक नहीं थे ऐसा कौन कह सकता है तुका रामजीके पुत्र नारायण बोवाकी देहूकी सनदमें भी ये स्प शब्द हैं तुकोबा गोसाईं श्रीदेवकी मूर्तिकी पूजा अपने हाथों करते थे

८ तु रा जीकी दर्शनो॰

श्रीवि मू कि की पूजा अर्चा ध्यान धारणा और अ ण्ड नाम स्मरण करते करते क रामजीको भगवान्के साक्षात् दर्शनकी बडी तीव्र ला सा हुई ि सकी मूर्तिकी नित्य पूजा करते हैं उसके दर्शन कब होंगे दर्शनोंके लिये उनका चित्त याकु हो उठा प्र ाद और ध्रुव ैसे बाल भक्तोंको बचपनमें ही सगुण भगवान्के दर्शन हुए न मदेवसे भग न् प्रत्यक्षमें बातचीत करते थे जनाबा२के स चक्की च ते थे ऐसे भक्तवत्स मेरे प्यारे प ढरिन थ मुझे कब मिलेंगे ? प्रत्यक्ष दर्शनके बिना ब्रह्म ज्ञान उन्हें शु क सा लगने लगा ब्रह्म ज्ञानकी बातें कहने और सुननेमें अब उ हें अ न द न ी आता था उनकी बाँहें भगवान्से मिलनेके लिये आगे बढना चाहती थीं नेत्र उ हींकी ओर टकटकी बाँधे रहना चाहते थे नेत्रोंसे यदि भगवान् न दिखायी देते हों तो इनकी आवश्यकत ा क्य है नेत्र यदि भगवान्के चरणोंको न देख सकते हों तो ये फूट जायँ ऐसे ऐसे भाव ही उनके चित्तमें उठा करते थे दिन दिन मिलनकी यह लगन यह विकलता बढती ही गयी उस समयकी उनकी मनोऽवस्था बतानेवाले कुछ अभङ्ग हैं

हे प ढरिन से मिलनेके लिये जी याकु हो उठा है इस दीनका ोस दौडपर कब कृपा करोगे म लूम नहीं मेरा मन तो थक गया रा देखती देखती आँखें भी थक गयीं तुका कहता है मु तुम्हारा मुख देखनेकी ही भूख लगी है '

*

मार्गकी प्रतीक्ष करते रते नेत्र थक गये , इन नेत्रोंको अपने चरण कब दिखाओगे म ा मेरी मैया हो दया की छाया हो हे विठ्ठल किसीको तुमने उबार लिया और किसीको किसीके दे

कर दिया ऐसा कठोर हृदय तुम्हारा क्यों हुआ ? तुका कहता है मेरी बाहें हे पाण्डुरङ्ग तुमसे मिलनेको फडक रही हैं

तुम्हारे ब्रह्मज्ञानकी मुझे इच्छा नहीं तुम्हारा यह सुन्दर सगु रूप मेरे लिये बहुत है पतितपावन तुमने बडी बेर लगायी क्या अपना वचन भूल गये ससार (घर गिरस्ती) जलाकर तुम्हारे आँगनमे आ बैठा हूँ इसकी तुम्हें कुछ सुध ही नहीं है तुका कहता है मेरे विट्ठल रिस मत करो अब उठो और मुझे दर्शन दो

*

जीकी बड़ी साध यही है कि तुम्हारे चरणोंसे भट हो इस निरन्तर वियोगसे चित्त अत्यन्त विकल है

आत्मस्थितिका विचार क्या करू क्या उद्धार करूँ ? चतुर्भुजको देखे बिना धीरज ही नहीं बध रहा है तुम रे बिना कोई बात हो यह तो मेरा जी नहीं चाहता कहता है अब चरणोंके दर्शन कराओ

*

तुका कहता है एक बार मिलो और अपनी छातीसे लगा लो

ये आँखें फूट य तो क्या हानि है जब ये पुरुषोत्तमको नहीं देख पातीं तुका कहता है अब पाण्डुरङ्गके बिना एक क्षण भी जीनेकी इच्छा नहीं

तुका कहता है अब अपना श्री दिखाओ इससे इन आँखोंकी भूख बुझेगी

तुका कहता है कि अब आकर मि ो पीठपर हाथ फेरकर अपनी ातीसे गा लो

विरहसे लकर सूख गया हूँ अस्थिपञ्जर रह गया है अब तो हे प ढरिन थ अपने दर्शन दो

मुझसे अ कर मिलोगे दो एक बात करोगे तो इसमें तुम्हारा क्या खर्च हो जायगा ? तुका कहता है तुम्हारी बड़ाई मुझे न चाहिये पर दर्शनोंकी तो उत्क ठा है

जो लोग अरूपकी इच्छा करते हों उनके लिये आप अरूप बनिये पर मैं तो सरूपका प्रेमी हूँ '

भगवन् आपके निराक र रूपसे जिन्हें प्रेम हो उनके लिये आप निराकार ही बने रहिये पर मै ो आपके सगुण साकार रूप रसका प्यासा हूँ आपके चरणोंमें मेरा चित्त ा है मैं ो अज्ञानी ही हूँ भला ब ा भी कहीं आपसे दूर र नेयो य बननेके लि ये सयानोंकी बराबरी कर सकता है ?' ानी पुरुषोंकी बराबरी मैं अजान होकर कैसे कर क हूँ ब ा ब सयाना हो ाता है ब माता उसे दूर रखती है अ ान ि तो मा ाकी गोद कभी नहीं छोड़ता जो ब्र ज्ञानी हों उन्हें मोक्ष (छुटकारा) दे दो पर मुझे मत छोड़ो मुझे मोक्ष न चाहिये तुम्हारे ामका जो ने लगा है वह अब छूटने ाला नहीं रसन म्हारे ही नामकी रसिक हो गयी है आँखें तुम्हारे ी चरणोंके दर्शनकी प्यासी हैं भाव अब मेरा बदलनेवाला नहीं इसलिये तु अब मेरे इस प्रेम-रसको सूखने दो अपनेसे मु अब दूर मत रो ,मैं तुम्हार मो नहीं चाहता तुम्हींको चाह हूँ

मौन का धरिलें विश्वाच्या जीवन । उत्तर वचना देई माझ्या १

हे विश्वजीवन ऐसे मौन साधे क्यों बैठे हो मेरी
दो

मेरा पूर्वसञ्चित सारा पुण्य तुम हो—

तू माझें सत्कर्म तू माझा स्वधर्म । तूचि नित्यनेम नारायणा ४

तुम्हीं मेरे सत्कर्म हो तुम्ही मेरे स्वधर्म हो तुम्हीं नित्य नियम हो हे नारायण ' मैं तुम्हारे कृपा वचनोंकी प्रतीक्षा कर रहा हूँ

तुका म्हणे प्रेमळाच्या प्रियोत्तमा । बोल सर्वोत्तमा मजसवें ५

तुका कहता है प्रेमियोंके हे प्रियोत्तम ! हे सर्वोत्तम मुझसे बोलो

शरणागतको महाराज पीठ न दिखाओ यही मेरी विनय है जो तुम्हें पुकार रहे हैं उन्हें चट उत्तर दो जो दुखी हैं उनकी टेर सुनो उनके पास दौड़े आओ जो थके हैं उन्हें दिलासा दो और हमें न भूलो यही तो हे नारायण मेरी तुमसे प्रार्थना है ।'

कम से कम एक बार यही न क दो कि क्यों तग कर रहे हो यहाँसे चले जाओ हे नारायण तुम ऐसे निठुर क्यों हो गये स सतोंसे तुम पहले मिले हो उनसे बोले हो वे भाग्यवान् थे क्या मेरा इतना भाग्य नहीं आजतक किसीको तुमने निरा नहीं किया और मेरे जीकी लगन तो यही है कि तुमसे मिलूँ इसके बिना मेरे मनको
पड़ेगी

भगवन् हम यह क्या जानें कि तुम्हारा कहाँ क्या भेद है वेद बतलाते हैं कि तुम अनन्त हो तुम्हारा कोई ओर छोर नहीं तब किस ठौर तुम्हें ढूढ़ सप्त पाताल के नीचे और स्वर्गसे भी ऊपर तुम रहते हो मच्छर तुम्हें इन आँखोंसे कैसे देखे हे पण्ढरिनाथ ! हे विठ्ठलनाथ

तुम इतने बड़े हो पर अपने प्यारे भक्तोंके लिये चाहे जितना छोटा रूप रण कर लेते हो

होई मज तैसा मज तैसा । साना सुकुमार हृषीकेशा
पुरवी माझी आशा । भुजा चारी दाखवी २

हे हृषीके मेरे लिये भी वैसे ही बनो वैसे ही छोटे कुमार और मेरी आ । पूरी करो चार भुजाओंवाली छवि दिखाओ

अब तुम्हारी ही शरण ली है क्योंकि तुम्हारा को भी दास विफ मनोरथ नहीं हुआ मैं भी तुम्हारा दास हूँ मेरी इ भी पूरी होगी ही पर दयानिधे मुझपर तुम्हारी दृष्टि पड़े और ईंटपर खड़े हे पण्ढरिनाथ अब जल्दी दौडे आओ

अकालपीडित भूखे' के सामने मि न्न परोसा हुआ आ अथवा घातमें बैठी हुई बिल्ली मक्खनका गोला देख ले तो उसकी जो हालत होती है वही मेरी हालत हुई है तुम रे चरणोंमें मन चाया है मिलनके ि ये प्राण सूख रहे हैं '

म थके ँदोंकी कौन खबर लेता है हे पाण्डुरङ्ग तुम्हारे बिना मुझपर ममत्व रखनेवाला इस विश्वमें और कौन है किससे हम अपना सुख दु कहें कौन हमारी भूख प्यास बु ावेगा

ह रे ताप ो हरने ला और कौन है म अपना सवा किससे वें ौन हमारी पीठपर ारसे हाथ फेरेगा इसलिये अब नी हीं विनती है कि

धाव घाली आई । आ पाहतेसी काई १
धीर नाहीं माझ पोटीं । झालों वियोगें हिंपुटीं ध्रु
करावें शातळ । बह झाली हळहळ २

तुका म्हणे डोई । कधी ठेवीन हे पाई २

दौडी आओ मेरी मैया अब क्या देखती हो अब धीर नही रहा वियोगसे याकुल हो रहा हूँ अब जीको ठण्डा करो अबतक रोते ही बीता है कब यह मस्तक तुम्हारे चरणोंमें रखूँगा यही एक ध्यान है

९ भगवान्से म कलह

भगवान्के दर्शनोंके लिये जी छटपटा रहा है ऐसी अवस्थामें तुकारामजी भगवान्पर कभी गुस्सा होते कभी प्रेम भिक्षा माँगते कभी बड़ा ही विचित्र युक्तिवाद करते कभी उ निठुर कहते कभी कहते मेरे स्वामी बड़े भोले बड कोमल हृदयवाले है कहकर उसी प्रेम ध्यानमें मग्न हो जाते कभी कहते देखो पा ड़रङ्ग कैसे खी उठे हैं पर नामकी चुटिया हम पकडे हुए है और य कहते हुए अपनी विजय मनाते और कभी अपनेको पतित समझकर लज्जासे सिर नीचा कर लेते कभी भगवान्को सतोंकी पञ्चायतमें खीच ते और उन्हें छली कपटी दरिद्री दिवालिया ठहराते और कभी क्यों मैंने घर गिरस्तीपर लात मार दी क्यों ससार सुखकी होली जला दी इत्यादि कहकर दीन होकर बैठ जाते कभी गालियोंकी झड़ी लगाते और कभी कहते तुम मातासे भी अधिक ममता रखनेवाले हो चन्द्रसे भी अधिक शी हो प्रेमके कल्लोल हो और इस प्रकार उनकी दयालुताका ध्यान करते करते उसीमें लीन हो जाते कभी अपनेको पतित कहते कभी भगवान्से बराबरी करते कभी भगवान्को निर्गुण कहते कभी सगुण कहते कभी द्वैतकी भावना करते भी अद्वैतरंगमें रँग जाते इस प्रकार तुकारामजी भगवान्का प्रेम-सुख अनन्त प्रकारसे भोग करते उनके भगवत्प्रेमके अनेक रग थे अनेक ढग थे उनके हृदयके वे प्रेम कल्लोल कुछ उन्हींके ब्दोंमें देखें

जिनसे हे भगवन् तुम्हे नाम और रूप प्रा हुआ वे हम पतित

ही तुम्हारे सच्चे भगवान् हैं हमलोग हैं इसीसे तो तुम्हारी महिमा है अधेरेसे दीपकी शोभ है रोगोंके होनेसे न्वन्तरिकी ख्याति है विषके होनेसे अमृतका महत्त्व है और पीतलके होनेसे ही सोनेका मूल्य है

हम तुम्हारे कहाते हैं पर तुम हमारा यह उपकार नहीं मानते कि हमारी ही बदौलत तुम्हें नाम रूपका ठिकाना है क्या कभी इ उपकारकी याद करते हो

एक जगह तुकारामजी कहते हैं भगवन् हम भक्तोंने तुम्हारी इतनी ख्याति बढायी नहीं तो तु हें कौन पूछता

सोलह जार तुम बन सकते हो सोलह जार नारियोंके लिये तुम सो हजार रूप धारण कर सकते हो पर इस तुकाके लिये एक रूप धारण करना भी तुम्हारे लिये इतना कठिन हो रहा है

भगवन् मेरी जागृति और स्वप्नका मे नहीं है तुम्हारी उदार मैं समझ गया मैं तो तुम रे चरणोंपर रखूँ और तुम अपने गलेका हार भी मेरी अञ्जलि में न लो समझा जो भी नहीं दे कता वह भोजन क्या करावेगा

भगवन् पहले जो भक्त तर गये वे अपने पुरुषार्थसे तर गये उन्होंने अपना सर्वस्व तुम्हें दिय तब तुमने अपना दय उन्हें दिया पर ऋण चुकानेमें कौन सा बड़ा भारी है मेरे जै पुरुषार्थहीन पति को म तारोगे भी उदार कहानेयोग्य होगे

भगवन् आ तुमने मेरा प्रे भङ्ग किया अब मेरी जीभ यदि क्षु हुई तो मैं सतोंमें तुम्ह री फजीहत राऊँगा ऐसे निठुरपनेका ब वि करोगे म्हारा वि । कोई कैसे करेगा

िसके स्वामी दुर्ब हों उस सेवकका जीना लज्जा नक है देश

विदेशमें जिसकी बातकी ाक है उसका कुत्ता भी अच्छा है जिसका नाम लेते ससार थरथर काँपने लगता है उसके द्वारपर कुत्ता होकर रहनेमें भी इज्जत है । यह विचार हे भगवन् मेरे चित्तमे क्यों उठा यह तुम्हीं ानो जिसकी बात वही जाने ।

सचमुच ही इस बडप्पनको धिक्कार है ! इस महिमाका मुँह काला ारपर खड़ा मैं कबसे पुकार रहा हूँ पर हाँ तक क नेकी जरूरत आप नहीं समझते शिष्टाचारकी इतनी सी बात भी आपको नहीं मालूम काई अतिथि आ जाय तो श दोंसे उसको सन्तोष दिलानेमें क्या खर्च हुआ जाता है ? हे श्रीहरि यह सब तुम्हीको शोभा देता है ह मनुष्य तो इतने बेहया नही हैं

जबतक तुम्हारे मुँहसे दो बातें मैं न सुन लूँगा तबतक ऐसे ही बकता झकता रहूँगा पर तुम्हें पुण लीककी पथ है जरा भी जबान हिलायी तो

भगवन् ! म भरमाने भटकानेमें बड़े कुशल हो और मैं भी बडा लतखोर हूँ हमारा भा य ऐसा जो तुम्हें मौन साधे बैठ रहना ही अच्छा लगता है हमारे सा तुमने दुराव किया इसलिये हमने ह विनोद किया

सचमुच ही भगवन् तुमसे ही तो मैं निकला हूँ तब तुमसे अलग कैसे रह सकता हूँ ? मुझमें कौन सी कमी है वही बता देते चलो संतोंके सामने वहा तुमसे निपटूँगा

तुम अमर हो यह सही है पर तुका कब अमर नहीं है तुम्हारा यदि कोई नाम नहीं तो मेरा भी नामपर कोई दावा नही तुम्हारा यदि कोई रूप नहीं तो मेरा भी रूपपर कोई हक नहीं और जब तुम लीला करते हो तब मैं क्या अलग रहता हूँ ? तो क्या तुम झूठे हो तुका कहता है तो मैं भी वैसा ही हूँ

भगवन् ! तुम्हारे प्रेमकी खातिर तुम्हारी एक बातके लिये तुम्हारे

दर्शन पानेके लिये मैंने इन्द्रियोंका होलिका दहन किया ससार-सुखका ि दान किया,' यह जानकर तो दशन दो

भगवन् तुम बडे या मैं बड़ा जरा यह भी दे लूँ मैं पतित हूँ, यह बात ो बनी बनायी है और तुम जो पतित पावन हो सो तुमने साबित करके अभीतक नहीं दिखाया मैं भेद भावको अपने प्राणोंसे लिपटाये बैठा ँ पर तुमसे भी उसका छेदन नहीं बन पड़ता है मेरे दोष इतने बलवान् हैं कि उनके सामने तुम्हारी कुछ न ी चलती मेरा मन दसों दि ाओंमें भटकता रहता है पर म उसके भयसे बहुत दूर (मनसस्तु परा बुद्धिर्यो बुद्धे परतस्तु स) ा छिपे हो तब बताओ तुम बड़े हो या मैं बड़ा

भगवन् मेरे सब न प्रियजन मर गये और तुम कैसे नहीं मरे ? तुम्हें देखते ही मेरे पिता गये दादा गये परदादा गये तुम्हीं हे विठो ैसे बचे हो यह अब ` बताओ मेरे पी ` बचपन यौवन वृद्धपन है पर विठो इन सबसे म कैसे बचे हो यह मुझे बताओ

भगवन् तुम वैसे अच्छे हो पर इस मायाकी मुरव्वतमें आकर स्त्री द्धिवाले बन गये हो इसकी सोहबतमें तुमने ये सब रग ढग सीखे हैं

तुम तो बड़े अच्छे थे पर इस राँडने तुम्हें बिगाड़ा जिसकी जो चीज है उसे वह य देने नहीं देती का ता है खाने दौड़ती है '

भगवन् मैंने आजतक तुम्हारी कितनी स्तु ` की कितनी नि दा की पर तुम पूरे हो बात ही नहीं करते नामतक नहीं लेते तो ` अब मैं मसे कहे दे हूँ

माझे लेखीं देव मेला । असो त्याला असेल ,

मेरे लिये तो भगवान् मर गये जिनके ि ये अब हों उनके लिये हुआ रें

क्या किसी पर्वकाल तिथि नक्षत्रका विचार कर रहे हो सा॰त देख रहे हो . मेरा चित्त तुमसे मिलनेके लिये टपटा रहा है मैं अन्यायी हूँ दोषोंकी खानि हूँ इसलिये मुझपर क्रोध मत करो इस अनजान बालकको रुलाओ मत

भगवन् तुम घरके लेनेवाले हो जहाँ-तहाँ लेनेकी ही बात है कोई बिना कुछ लिये देता नहीं तब तुम्हीं अकेले उदार क्यों बनो ?

आधीं बरी हात या नावें उदार । ...सण्याचे ...पकार फिटाफिट

पहले ही जिसका हाथ ऊपर रहता है उसको उदार कहते हैं उधार लियेका उपकार क्या ? वह तो पटेपार है सच्ची उदारता दिखाओ, मुझसे जो सेवा बन पड़ती है वह तो मैं करता ही हूँ

भगवन् मैं क्या सचमुच ही पापी हूँ

पापी म्हणों तरी आठवितों पाय । दोष बळी काय तयाहूनी ?

पापी कहूँ तो आपके चरणोंका स्मरण करता हूँ मेरा पाप क्या आपके चरणों से भी अधिक बलवान् है

'उपजना-मरना' तो हमारी बपौती है इससे छुड़ाओ तब तुम्हारी बडाई जानें

भगवन् ! आप सदाके बली और हम सदाके दुर्बल यह क्या ? हमने क्या दुर्बल बने रहनेका पट्टा लिख दिया है ? हम याचक और आप दाता ऐसा ही नाता सदा क्यों रहे ? हमारे भी कुछ उपकार रहने दो; अकेले बने रहनेमें क्या बडाई है ?

भगवन् हम विष्णुदास हैं हमारा सब बल भरोसा तुम हो, पर इस कालको देखते हैं हमारे ही ऊपर हुकूमत चला रहा है

क्या भगवन् तुम भी कैसे नपुसक बने हो जैसे कोई क्तिहीन हो ऐसे म लूम होते हो

भगवन् हम पतित आप पतितपावन ैसी धर्म नीति हमें ान पड़ी वैसे हम चले अब आपको यह उचित है कि हमारा उद्धार करें अपने औचित्यको आप सँभालें काया वाचा मनसा मैं तो आपका ही ध्यान करता हूँ अब आपका जो धम हो उसे आप निबाहें

भगवन् पहलेके सत जिस मार्गपर चले उसी मार्गपर मैं चल रहा हूँ मैं कोई खोटाई नहीं कर रहा हूँ मैं तो आपका बच्चा हूँ न ब चेसे क । जोर आजमाना

भगवन्! आप समर्थ हैं मैं दीन हूँ तुका कहता है तुमसे वाद करना समारमें निन्दित होन है बड़ास हुज्जत करनेमें केवल नाम राई होती है इसलिये मैं हुज्जत नहीं करता बस यही है कि आप अपना काम पूरा कीजिये

क्या इस कालमें आपकी सा य कु काम नहीं करती भगवन् मेर सञ्चित आपसे ब न् है इसलि ये क्या अ प चुप हो गये या क्या आपने अपनी गदा और च कहीं खो दिये और अब उसके भयसे जित हो रहे हो? देखो दीनान थ अपने विरदकी ाज रखो

भ वन् अब मेर तिरस्कार करते हो? ऐसा ही करना था ो पहले अपने चरणों स्नेह क्यों गाया? अबतक तो मैं अदबसे बात कर था पर अब मैं पू ता हूँ कि हमारे प्राण ही लेने थे तो आकारमें ही क्यों आये

भगवन्! मैंने अपना सम्पूर्ण रीर आपके चरणोंमें समर्पित किया है और आप क्या मेरा छूत मानते हैं या मेरे सामने आते हुए जाते हैं?

मैं अनन्य हूँ भला एक भी ऐसा गव मेरे विरुद्ध खड़ा कीजिये जो यह कहे कि तुम्हारे सिवा और भी कही तुकारामका मन रम है '

भला मेरे ैसे किसीको भी आपने तारा है हाथके कगनको आरसी क ा ? मैं ` जैसे-का तैसा ही बना हुआ हूँ '

हातींच्या काकणा कासया आरसा । उरलों मो जेसा-तैसा आहे

हम भक्तोंके कारण` तुम्हें देवत्व प्राप्त हआ यह बात क्या म भूल गये पर उपकार भूल जाना तो बडोंकी एक पहचान ही है

समर्थासी नाहीं उपकारस्मरण । दिल्या आठवण वाचोनिया

समर्थोंको स्मरण कराये बिना उपकार स्मरण नहीं होता '

मै अब ऐसे माननेवाला भी नही प्रेम दान कर मु ` मना लो !

भगवन् मैं पतित हूँ और आप पतितप वन पहले मेरा नाम है पीछे आपका

जरो मा नव्हतों पतित । तरा तू कंचा पावन यथ ४
म्हणोनि माझें नाम आधीं मग तू पावन कृपानिधि २

यदि मैं पतित न होता तो आप कहाँसे पावन होते इसलिये मेरा नाम पहले है और पीछे आप हैं हे पावन कृपानिधे

भगवन् इस मको अब मत बदलिये

नवें करू नये जुनें । सभाळावें ज्याचें त्यानें १

नया कुछ न रे सनातनसे जिसके जिम्मे जो काम है उसे वह सम्हाले

भगवन् मैंने आपकी ब ी निन्द की पर वह जीकी टपटाहट है झगडनेकी मुझे बान पड गयी है कोइ द छूट गये हों तो क्षमा करें मेरा स र्म क्या है सो मैं जानता हूँ

आपके चरणोंमें मैं क्या जोर आजमाउँ मेरा तो यही अधिकार है कि दास हो र करुणाकी भिक्षा माँगूँ '

तुम्हारे श्रीमुखके दो द सुन पाऊँ म्हारा श्रीमुख देख लूँ बस ही एक आस गी है भगवन् आप जल्दी क्यों नहीं आते

विठाबाई । विश्वम्भर । भवच्छेदके
कोठें गुतलोस अगे विश्वव्यापके १
न करी न करी न करी आत। आळस आहेरु
व्हावया प्रगट कैचें दुरी अतरु २

विठामाई विश्वम्भरे भव छेदके हे विश्व पके तु कहाँ उल पडी हो अब आल न करो न करो न करो तिरस्कार न करो प्रकट होनेके लिये दूर पास क्या '

भगवन् मु से आप कुछ बो ते नहीं क्यों इतना दुखी कर रहे हैं प्राण क ठमें आ गये हैं मैं आपके वचनकी बाट ोह रहा हूँ मैं भगवान्का कहाता हूँ और भगवान्से ही भेंट नहीं इसकी मु बडी लज्जा आती है

भगवन् मेरे प्रेमका ार मत तोडो आपकी कृपा होनेपर मैं ऐसा दान हीन न रहूँगा पेट भरनेपर क्य ससारसे य कहना पड़ता है कि मेर पेट भर तृप्ति चे रेसे ही मालूम ो ती है चे रेकी प्रसन्नता ही उ की पहचान है '

अ तु इस प्रकार तुकारामजी प्रेमावे में भगवान्से उत्तर प्रत्यु र और विनोद परिहास किया करते थे कभी कोई कोई ब्द बा बड़े कठोर होते थे पर उनके अदर आन्तरि प्रे का ो गा । र भरा रहता था वह उन विठ्ठ जननीसे थोड़े ही छिपा र था भगवान् तो अंदरकी जानते हैं तुकारा उनसे जैसे गड़ते थे वैसे गड़ना प्रेमके

बिना थोड़े ही नता है उत्कट प्रेमके बिना गड़नेकी भी हिम्मत कहाँसे हो सकती है तुकारामजीने भगवान्से हुज्जत की हँसी मजाक किया अपनी दीनता भी दिखायी और राबरीका दावा भी किया उनके हृदयके ये विविध उद्गार उनका उत्कट भगवत्प्रेम ही यक्त करते हैं उनके जीकी ब यही एक लगन थी कि भगवान् अपने सगुण रूपक दशन दें जबतक भगवान्के प्रत्यक्ष दर्शन नहा होते, केव सुनते हैं कि वेद ऐसा कहते हैं अनुभव कुछ भी नहीं तबतक केवल २स कहने सुननेमें क्या रखा है तीको वस्त्रालङ्कार पहनाकर चाहे जितना सिंगारिये पर जबतक पतिका सङ्ग उसे नहीं मिलता तबतक वह मन ही मन कुढा करती है वैसे ही भगवान्के दर्शन बिना तुकारामजीको कु भी अच्छा नही लगता था

पत्रीं कुशलता भेटीं अनादर। काय तें ‍उत्तर येईल मानूं १

आलों आलों ऐसी दाऊनियाँ आस। बुडों बुडतयास काय द्यावें २

चिट्ठी पत्रीमें तो कु क्षेमका समाचार लिखते हैं पर स्वय आकर मिलनेकी इच्छा नहीं करते ऐसे कुशल समाचारको मैं क्या समझूँ अब आता हूँ और तब आता हूँ ऐसी आशा दिलाना और जो डूब रहा है उसे डूबने देना क्या उचित है यह उन्होंने भगवान्से पूछा है

केवल नानाविधि प ोंका नाम ले लेनेसे ही भोजन नहीं होता इसलिये भगवन् अपने दर्शन दो! प्रभु! दर्शन दो यही एक पुकार वह मचाये हुए थे

भगवन् मसे यदि मेरी प्रत्यक्ष भेंट नही हुइ और कोरी बातें ही करते रहे तो ये सत मुझे क्या कहेंगे इसको भी तनिक विचारो

मज ते हांसतील सत। जिन्हीं देखिलेति मूर्तिमत

म्हणानि उ ेगिलें चित्त। आहाच भक्त ऐसा दिसे

वे स मुझे हसेंगे जिन्होंने तुम्हें मूर्तिम देखा है हेंगे—यह भक्त ऐसा ही है (केवल भक्ति ी बातें कर है भगवान्से इसकी भट क ाँ) इससे चित्त और भी उद्विग्न होता है

मेरे यश और कीर्तिका डका बजनेसे ही मु न्तोष नहीं हो सकता मैं तुम्हारे चरण नहीं देखूँगा तबतक मेरे चित्तको कल न पड़ेगी और लोगोंका भी चित्त सुखी न होगा

सकलिकांचें समाधान । नव्हे देखिल्याव चून १
रूप द खवीरे आता । सहस्र भुजाच्या मडिता २

आपके दर्शन बिना सबको समाधान न होगा इसलिये हे सहस्रभुज अब अपना रूप दिखाओ

तुम्हारा रूप ब मैं एक बार देख लूँगा तब मैं उसीको अपने चित्तपर सदाके लिये ींच लूँगा और तब स भी मुझे नेंगे जिसने भगवान्के साक्षात् दर्शन नहीं किये सतोंमें उसकी मान्यता नहीं स और भक्त वही है जिसे भगवान्का सगुण साक्षात्कार हुआ हो का हता है भोजनके बिना तृप्ति कहाँ ?

१ मिलन मनोरथ

भग न्मिलनकी ला सा इस प्रकार बढती ही गयी ब जागनेमें भी कारामजी उसी मिलनके प्रस का सुख स्वप्न देखने लगे अब मैं (भागलों मी आता) वाले अभगमें वह कहते हैं

भगवान् आलिङ्गन देकर प्रीतिसे इन अङ्गोंको रगे और अमृतकी दृ डाल र मेरे जीको ठडा करेंगे गोदमें उठा लगे और भूख प्यासकी पूछेंगे और पी म्बरसे मेरा मुँह पोंछेंगे प्रेमसे मेरी ओर देखते हुए मेरी ठुड्डी पकड़कर मु सा त्वना दगे तुका कहता है मेरे

ाँ बाप हे विश्वम्भर अब ऐसी ही कुछ कृपा करो ऐसे ऐसे मीठे विचारोंमें उनका मन म होने गा प्रत्यक्ष मिलनकी अपेक्षा उस मिलनके प्रसङ्गकी पूर्व आ ओंमें कुछ और ही सुख होता है मिलनमें एक बार ही आकण्ठ प्रेमोत्कण्ठा स्थिर हो जाती है पर मिलनके पूर्वके मनोरथ बडे बड़े मनोहर दृश्य दिखाकर विलक्षण सुख वेदनाओंका अनुभव कराते हैं बच्चोंके लिये खिलौने खरीदने चलिये उस क्षणसे खिलौने बच्चोंके हाथोंमें आनेके क्षणतक ब ोंके मुख कैसे कैसे सुखोंकी कल्पनाओंमे आनन्दोत्फुल्ल हो उठते हैं खिलौने हाथमें आ जानेके पीछे वह आनन्द नहीं रहता उस आन दमें ब चे कैसी कैसी उछल कूद मचाते हैं पीछे वह बात नहीं रहती फिर तो ान्ति आ जाती है कहते हैं वस्तु लाभके सुखकी अपेक्षा उसकी प्रतीक्षाका सुख अधिक है वि क्षण है अब यह आनन्द देखिये

प लेके सत वर्णन कर गये हैं कि भगवान् भक्तिके वश छोटे बन गये सो कैसे बने वह हे के व ! मेरे माँ बाप ! मुझे प्रत्यक्ष बनकर दिखाइये आँखोंसे देख लूँगा तब तुमसे बातचीत भी करूँगा चरणोंमें लिपट ऊँगा फिर चरणोंमें दृ ि गाकर ाथ जोड़कर सामने खडा रहूँगा तुका कहता है यही मेरी उत्कण्ठ वासना है नारायण मेरी यह कामना पूरी करो '

पहले यह बता गये कि भगवान् मिलेंगे तब व क्या करेंगे और इस अभंगमें यह ब लाया कि मैं क्या करूँगा मैं भगवान्‌को आँखें भरकर देखूँग प्रेमसे हृदय भरकर उनके पैर पकड़ूँगा चरणोंपर दृष्टि रखकर हाथ जोड़ सामने खड़ा रहूँगा और भगवान्‌से दय खोलकर भरकर तें करूँगा तुकारामजीके अनेक अभग हैं जिनमें उनकी भगवन्मिलनकी उत्कण्ठा सा यक्त हुई है एक स्थानमें वह कहते

हैं वि भगवान्‌की जो से मैं अ तक रता रहा वह सही थी या उसमें कुछ गलती थी यह मैं उन्हींसे पूछूँगा और उनसे कहूँगा कि अब आप अपने मुखसे मु सेवा बतावें यह मैं चाहता हूँ और अभिलाषा मेरी यह है कि

बोलें परस्परें बाढवावे सुख । पहावें श्रीमु डोळेभरी ३
तुका म्हणे सत्य बोलतों वचन । करूनी चरण साक्ष तूझे ४

आपकी मेरी ब तची हो और उससे सुख बढे आँखें भरकर आपका श्रीमुख देखूँ तुका कहता है यह मैं आपके चरणोंको साक्षी रखकर सच सच कहता हूँ याने और कुछ मैं नहीं चाहता

भगवन् आप कहेंगे कि तुमने स्त्रोंको पढा है पुराणोंको देखा है सतोंका सङ्ग किया है ीर्तन प्रवचन नकर था ब्रह्मविद्याके ग्रन्थोंका अध्ययनकर तुमने यह जाना है कि ब्रह्मका स्वरूप क्या है उस यापक रूपको छोड़ अब मेरी छोटी सी मूर्ि किसलिये देखना च हते हो सुनिये

कासयासी आम्हीं व्हावें जीव मुक्त । स डुनिय थीत प्रेमसु १
सु आम्हासाठीं केलें हें निर्माण निदैव तो कोण हाणे लाथा २

य प्रे सुख छोड़कर हम जीव मुक्त किसलिये हों आपने हमारे ति ये यह ख निर्माण वि या है कौन ऐस अभागा होगा जो इसे मार दे

मेरी उत्क ठा कामना क्या है सो ए बार स्प ब्दोंमें तुमसे कहे देता हूँ

नको ब्रह्मज्ञान आत्मस्थितिभाव । मी भक्त तू देव ऐसें करी १
दावीं रूप मज गोपिकारमणा । ठवू दे चरणावरी था ध्रु

पाहेन श्रीमुख देईन आलिंगन । जीवें लिबलोण उतरीन २
पुसता सागेन हितगुजमात । बैसोनि एका त सुखगोष्टी ३
तुका म्हणे यासी न लावी उशीर । माझें अभ्यतर जाणोनिया ४

ब्रह्मज्ञान आत्मस्थितिभाव मु न चाहिये ऐसा करो कि मैं भक्त बना रहूँ और आप भगवान् बने रहें हे गोपिकारमण ! अब मुझे अपना रूप दिखाओ जिसमें मैं अपना मस्तक आपके चरणोंपर रखूँ तुम्हारा श्रीमुख देखूँगा तुम्हें आलिङ्गन करूगा तुम्हारे ऊपरसे राइ नोन उतारूगा म पूछोगे तब अपनी सब बात कहूँगा एकान्तमें बैठकर तुमसे सुखकी ब तें रूगा तु कहता है मेरे हृदयका हाल जानकर अब देर करो

मु अनाथके लिये ह नाथ अब तुम एक बार चले ही आओ क्या कहूँ

तुम्हारे लिये जी तडप रहा है दय अकुला रहा है चित्त तुम्हारे चरणोंमें लगा है तुम्हारे बिना अब रहा नहीं जाता है

भगवान्से मिलनेकी ऐसी लालसा गी कि अब उसके बिना एक क्षण भी चैन नहीं पुकारते पुकारते कण्ठ सूख गया आयु तो बीत चली इस सोचसे भगवान्के सिवा अब चित्तमें और को२ सङ्कल्प ही न रहा ब सकल्प जब नष्ट हो गये अकेले भगवान् रह गये तब वह शेष माता लक्ष्मी और वह गरुड ध्यानमें स्थिर हो गये तब तुकारामजी उनसे प्रार्थना करते हैं

गरुडके पैरोंपर बार-बार स्तक रखता हूँ हे गरुडजी उन हरिको शी ले आइये मु दीनको तारिये भगवान्के चरण

जिन लक्ष्मी ीके हाथोंमें हैं उनसे गिड़गिड़ाता हूँ कि हे श्री क्ष्मीजी उन हरिको ीघ्र ले आइये और मुझ दीनको तारिये तुका कहता है हे शेषनाग आप हृषीके को जगाइये '

हे नारा ण तुम्हें उन गोपालोंने अपने पु यवान् नेत्रोंसे कैसा देखा होगा। उनके उस सुखके लोभसे मेरा मन चाया है मुझे वह आनन्द कब मिलेगा? तुम्हारे श्र मुख ी ओर टकटकी गाये रहनेका आनन्द कैसा होगा? अनुभवके बिन मैं उसे क्या जानूँ तुम्हारा रूप इन आँखोंसे कब देखूँगा तुम्हारे आलिङ्गनका आनन्द कब लाभ करूँगा चित्त प्रतिक्षण यही सोचता है

२स मधुर अभगका भाव कितना धुर है उन गोपालोंने तुम्हें कैसा देखा होगा इस उक्तिमें कैसा पद चि ो एक क्षणके लिये ठहरा लेता है कैसा पदसे ोपालोंके उस सुखसे और पु यवन्ती (पुण्यवान्)' पदसे उनके नेत्रोंसे तुकाराम ीको बड़ी ई र्या हुई यह तो स्प ही है पर कैसा' जो क्रियाविशेषण है उसे इस थानमें ऐसा वि क्षण अर्थ गाम्भीय प्राप्त हुआ है कि चित्तको ठहरकर और ठहरना पड़ है वह श्यामघननी उनका व पीताम्बर वह मुकुट वे कु वह चन्दनकी खौर ह निम कौस्तुभमणि और वह वैजयन्तीमाला सुखनिर्मित श्री ख ऐसे वह राजस कुमार मदन मूर्ति श्रीकृष्ण सामने खड़े हैं और उनके सखा गोपाल पपौ निमेषालसपक्ष्मपङ्क्तिभिरुपोषिताभ्यामिव लोचनाभ्याम् (रघु सर्ग २ १९) इस कालि दासोक्तिके अनुसार अनिमेष लोचनोंसे उनके सु दर मुख कमलकी ओर आनन्दानुभवसे ि र होकर देख रहे हैं—यह सम्पूर्ण दृश्य तु ारामजीके नेत्रोंके सामने नाच र उन्होंने कैसा पद लिखा इस पदसे सूचित हो है इसी पदसे

भाव भी प्रकट होता है कि मेरा भा य कब खुलेगा जब मुझे भी आनन्दका अनुभव होगा गोपालोंके उस सुखसे मेरा मन भी है मेरी व आस कब पूरी होगी मैं अपने नेत्रोंसे श्रीकृष्णको जीभर देखूँगा श्रीकृष्ण अपनी बाँहोंसे मु कब अपनी छातीसे लगावेंगे तुकारामजी कहते हैं कि प्रति ण मेरे चित्तमें यही लालसा लगी रहती है

तुकारामजीके जीकी यह लालसा जानकर भक्तवत्सल भगवान् श्रीकृष्णने उनपर शीघ्र ही कृपा की

दसवाँ अध्याय

श्रीविट्ठल स्वरूप

धरियेलें रूप कृ ण नामबुथी । परब्र क्षितीं उतरलें १

उत्तम हें नाम र'मकृ ण जगीं तरावयालागीं भवनदी २

श्रीकृष्ण नामके भीतर भगवान्‌ने नि रूप धारण किया परब्रह्म भूमण्डलपर उतर आया भव नदी पार करनेके लिये जगत्‌में यह राम कृष्ण-नाम उत्तम है

देवकीनन्दने । केलें आपुल्या चिंतनें १

मज आपुलिया ऐसें । मना लावूनिया पिसें २

देवकीनन्दनने अपने चिन्तनसे मनको पागल बनाकर मुझे अपना जै बना लिया

१ विट्ठल अर्थात् ीकृष्णका -रूप

पिछले अध्यायमें मलोगोंने य देखा कि तुकारामजी भगवान्‌के सगु रूपके दशन करना चाहते थे अब य देखें कि वह भगवान्‌के कि रूपक दशन चाहते थे किस रूपके प्रेमी थे जिसके चित्तमें जिस रूपका ध्यान ो है उसी रूपमें भगवान् उसे दर्शन देते हैं सिद्धान्त है इसलिये किस रूपका ध्यान करते थे कौन सा रूप उन्हें अत्यन्त प्रिय था किस रूप चरित्र और गुणोंके गी उन्होंने गाये हैं खाते-पीते

उठते बैठते जागते सोते घर बाहर तथा समाधि व्युत्थानमें भगवान्‌के कि रूपकी ओर उनकी ओै लगी थी यह देखें लोग कहेंगे कि तुकारामजी श्रीपाण्डुरङ्ग (श्रीविठ्ठल) के भक्त थे यह तो प्रसिद्ध ही है इसमें ढूँढ़ खो करनेकी कौन-सी बा है ? इसपर मेरा उत्तर यह है कि यह बात सचमुच ही ढूढ़ खोज करनेकी है कम से कम मुझे जिस दिन इ का पता लगा उस दिन एक बड़ी उलझन सुलझ गयी वह क है सो आगे लिखते हैं तुकारामजीके कु देव विठ्ठल थे बचपनसे ही वह विठ्ठ की उपासनामें थे उनके अभङ्गोंमें भी सर्वत्र पाण्डुरङ्ग (विठ्ठल) का ही नाम-कीर्तन है जिससे यह स्पष्ट है कि वह विठ्ठलका ही ध्यान करते थे विठ्ठल पदसे (वि णु विठु विठ्ठल विठोबा) श्रीविष्णुका ही बोध होता है वि णु पदका अर्थ है व्यापक व्याप्नोतीति विष्णु सर्वव्यापी अत्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् भगवान् महाविष्णु महावि णुकी उपासना वेदोंमें भी है वेदोंका विष्णुसूक्त प्रसिद्ध है महाराष्ट्रमें भगवद्भक्तोंको विष्णुदास वै णव कहते हैं म विष्णुदासोंको अपने चित्तमें भगवान्‌का चिन्तन करना चाहिये विष्णुमय जग देखना वैष्णवोंका र्म है वै णव वई े जो भगवान्‌पर ही ममत रख े इत्यादि वचन तुकारामजीके प्रसिद्ध ही हैं कारामजीने विठोबा नामकी युत्पत्ति गरुडवाहन गरुडध्वज लगायी है यह हम पहले देख ही चुके हैं अब

तुम क्षीर सागरमें थे पृ वीमें असुर भर गये इसलिये वालोंके घर तुम्हारा अवतार हुआ पु डलीक तुम्हें प ढरीमें ले आ ये भक्तिसे तुम हाथ लगते हो

भगवान् विष्णुने युग युगमें असख्य अवतार ारण किये हैं य पा डुरङ्ग बुद्धिके जाननेवाले और लक्ष्मीके पति हैं न्होंने अनेक

अवतार कि ये पर कृष्ण स्तु भगवान् स्व म् (श्रीमद्भाग १ ३ २८) इ वचनके अनुसार श्रीवि णुके पूर्णावतार श्रीकृष्ण ही हैं श्रीविष्णु शुद्ध सत्त्वके क्षीर सागरमें यन र रहे थे और ए बार पृथ्वीपर कसादि असुरोंने बड़ा उत्पात मचाया तब गोकुलमें ग्वालोंके घर र जिन्होंने लिया उन श्रीकृष्ण परमात्म को ही पुण्डलीकने अपनी भक्तिके बलसे प ढरीमें ईंटपर खडा किया है वेदोंने जिन भगवान्की स्तुति की है वही नन्दके य ाँ अवतरे

निगमाचें वन । नका शोधू करू शीण १
यार गौळियाचें घरीं । बांधलेसे दावेवरी २

निगमके वनमें भटकते भटकते क्यों थके जा रहे हो वालोंके र चले आओ यहाँ रस्सीसे बँधे हैं

भगवान् विष्णुके पूर्णावतार श्रीकृ ण ही श्रीवि हैं

गीता जेणें उपदेशिली । ते हे विटेवरी माउली

गीताका जिन्होंने उपदे किया वही मेरी मै । इस ईटपर ड़ी हैं

श्रीतुकारामजीके हृदयकी प्रियमूर्ति यह थी यही श्रीवि श्रीकृष्णकी मूर्ति उसीके दर्शनोंकी ल सा उ हें गी थी

उद्ध और अक्रूरको अम्बरीष ो रुक्माङ्गद और प्र ादको जो रूप तुमने दिखाया वही मु े दिखाओ हारा श्रीमुख और श्रीचर मैं देखूँगा जरूर देखूँगा उसीमें मन लगा अधीर हो उठा है पाण्डवोंको ब-जब कष्ट हुआ तब तब स्मरण रते ही तुम आ गये द्रौपदीके लि ये तुमने उसकी चोलीमें गाँठ बाँध दी ग पियोंके साथ कौतुक करते हो गौओं और ा ों ो सुख देते हो अपना व ी रूप मुझे दिख दो

तो अनाथके नाथ और णागतोंके आश्रय हो मेरी यह कामना पूरी करो

उद्धव और अक्रूरको नित्य दर्शन देनेवाले पा डवोंका दु खमें दर्शन देनेवाले द्रौपदीकी लाज रखनेवाले गोपियोंकी मनोवाञ्छा पूरी करनेवाले गौ ग्वालोंको सङ्ग सुख देनेवाले श्रीकृ णके ही दर्शनोंके लिये काराम तरस रहे थे स्पष्ट ही कहते हैं श्यामरूप चतुर्भुज मूर्ति श्रीकृष्ण नाम ही चित्तका सङ्कल्प है वह श्रीमुख और श्रीचरण मु दिखाओ उन्हें देखनेके लिये मेर मन उतावला हो गया है

विट्ठल आमुचें जीवन । आगमनिगमाचें स्थान

'वि ही हमारे जीवन हैं ि ही आगम निगमके स्थान हैं '

कृष्ण माझी माता कृष्ण माझा पिता ।

कृ ण ही मेरी माता कृष्ण ही मेरे पिता हैं

विठल और श्रीकृष्ण दोनों नाम जहाँ तहाँ एक ही लक्ष्यके बोधक हैं जीके जीवन एक श्रीकृष्ण ही हैं तुकारामजी श्रीकृ णका ध्यान करते थे और अब हम यह देखेंगे कि वह ध्यान बालरूप बालकृष्ण था बाल्यकालके तीन मुख्य भाग होते हैं सात वर्ष क केव बा चौदह वर्षतक कौमार और इक्कीस वर्ष पौग श्रीकृ णकी जिन प्रेममय लील ओंके पीछे भक्तजन पागल हो जाते हैं वे लीलाएँ प्राय पहले सात वर्षकी हा हैं

एक अभङ्गमें तुकारामजीने गूलरके कीडा' का दृष्टान्त देकर पुरुषोत्तम श्रीअनन्तकी विराट्ता दिखायी है गूलर फलमें असख्य कीड़े होते हैं उन कीडोंको उ ना सा गूलर फल ही ब्रह्म ड प्रतीत होता है ऐसे असख्य फल गूलरके वृक्षमें होते हैं ऐसे असख्य वृक्ष इस नव खण्ड

पृथ्वीपर हैं हम जिसे ब्रह्मा स झते हैं ऐसे असख्य ब्रह्माण्ड उस विराट् पुरुषके एक रोमपर हैं और ऐसे असख्य रोम उ विराट् पुरुषके शरीरपर हैं और ऐसे अनन्तकोटि विराट् पुरुष जि सके पेटमें समाये हुए हैं उन पर पुरुषको हम कहा ढूढ कहाँ देखें

तो हा नदाचा बाळमुकुद । तान्हा म्हणवी परमानद

वही यह न दके बा मुकुन्द हैं वही परमान द यहाँ दुधमुँहे नन्हे बालक बने हैं

अनन्त ब्रह्माण्ड जिसके एक रोमपर हैं ऐसा वह महाकाय (परमपुरुष) यह देखिये वालोंके यहाँ ग्वालोंके घर देहली लाँघते हुए हाथोंको देहलीपर टेककर चलते हैं और वही बड़े बड़े दैत्योंको धरतीपर र गिराते हैं पुराण उ हींके गीत गाते हैं तुका कहता है उनमें सब लाए हैं

तत्त्वज्ञानके भूखे विद्वानोंके लिये श्रीकृ णने गीता गायी है कथाओंके प्रेमियोंके लि ये महाभारत मौजूद है पर आजतक जो गो भगवद्भक्त और साधु सत श्रीकृष्णपर मुग्ध हुए वे उनके दिव्य प्रेममय ब चरित्रोंपर ही मुग्ध हुए हैं नन्द नन्दन कहानेवाले वह नन्हे न्हा बसीके बजानेवाले गोप गोपियोंको प्रेमके दिवाने बनानेवाले गोपालोंकी छाकें खानेवाले वह दही दूध माखन चोर

विश्वके जनिता । कहें यशोदासे माता '
(विश्वाच जनिता । म्हाणे यशोदेशी माता)

अनन्त ब्रह्माण्ड जिसके उदरमें है वह हरि न दके घर बा हैं कैसी अचरजकी बात है कन्हैयाकी पहेली कुछ समझमें नहीं आती ।

पृथ्वीको जिसने सन्तुष्ट वि । शोदा उसे खिलाती हैं विश्वव्यापक जो कमलापति हैं उन्हें ग्वालिनें गोदमें उठा लेती हैं तुका कहता है वह ऐसे नटवर हैं कि भोग भोगकर भी ब्रह्मचारी हैं

सुन्दर नवल नागर बालरूप है और फिर वही कालीय सर्पको नाथनेवाला कालरूप है वही गौओं और ग्वालोंके साथ पु डलीकके पास आ गये वही यह दिगम्बर ध्यान है कटिपर कर धरे शोभा पा रहे हैं मूढ़जनोंको तारनेकी उन्होंने पु डलीकसे पथ की है तुका कहत है वैकुण्ठवासी भगवान् भक्तोंके पास आकर रहे हैं '

बालरूप भक्तोंको बडा ही प्यारा लगता है गौ ग्वालोंके सङ्गका बालरूप ही तुकारामजीके जीका जीवन था कालीयदहमें कालीयके काल बननेवाले यह बाल' कृष्ण ही भक्तोंके प्राण बन बन बैठे हैं वह भोले भाले बा पा डुरङ्ग जि होंने काग बक आदि दैत्योंको बचपनमें ही मार डाला उ हें मुझे दिखाओ वह नन्द नन्दन मेरे जीवनके आनन्द हैं '

इन्हीं भोले बाल पाण्डुरङ्ग की ओर तुकारामजीकी लौ लगी थी

पाडुरंग ध्यानी पाडुरंग मनी । जागृती स्वप्नी पाडुरंग

आत हरि बाहेर हरि । हरिनें घरीं कोंडिलें

अदर हरि बाहर हरि रिने ही अपने अदर बद कर रख है '

बाल कृष्णने ही उन्हें अपना चसका लगा रखा था तुकारामजीके निदिध्यास और कीतनके विषय भी श्रीबालकृष्ण ही थे

दीन आणि दुर्बळासी सुखराशि हरिकथा १
चरित्रतें उच्चरावें केलें देव गोकुळीं २

सावळें रूपडें चोरटें चित्ताचें । उभें पढरीचें विटेवरी १
डोळियाची धणी पाहता न पुरे । तयालागीं झुरे मन माझें ध्रु
प्राण निघो पाहे कुडी ये सांडोनी । श्रीमु नयनीं न देखता २
चित्त मोहियेलें नदाच्या नदनें । तुका म्हणे येणे गरुडध्वजें ३

दीन और दुर्बलके लिये हरि कथा ही सुखका सब है वही चरित्र कीतन करना चाहिये जो भगवान्‌ने गोकुलमें किया

व श्यामरूप चित्त चोर पण्ढरीकी इटपर खड़ा है उसको देखते हुए नेत्र कभी तृप्त नहीं होते उसीके लिये मेरा जी टपटा रहा है उन श्रीमुखको इन आँखोंसे न देखते हुए प्राण इस कलेवरको छोड़कर निकलना चाहते हैं इस गरुड नन्दनन्दनने चित्त मोह लिया है

इन सब उक्तियोंसे यह स्प हो जाता है कि इन नन्दनन्दन श्या ने ही तुकारामजीका मन मोह लिया था और तुकाराम उन्हींके दर्शनोंके लिये याकुल हो रहे थे

२ ानेश्वर नामदेवादिकी सम्मति

विठ्ठ नाम श्रीकृ णके बा रूपका ही है इस बातको ध्यानमें रखनेसे यह सम में आ ाता है कि हमारे साधु स ोंने श्रीकृष्णकी केवल बाल लीलाओंको ही ऐसे वि क्षण प्रेमसे क्यों गाय है सूरदास मीरा बाई नरसी मेहता आदि उत्तरापथके श्रीकृ ण भक्त और ज्ञ नेश्वर ना देव एकनाथ तुकाराम निलोबाराय प्रभृति म ाराष्ट्रके श्रीकृष्ण भक्त श्रीकृष्ण की बाल ली ओंका ी बड़े प्रेमसे वर्णन करते हैं महाराष्ट्रके कृ ण भक्तोंके श्रीकृष्णकी बाल ीलाके वर्णन भि न भिन्न गाथाओं में छपे हुए

हैं ज्ञानेश्वर और एकनाथने अध्यात्मदिक् दिखाते हुए बालली का वर्णन किया है इन्होंने तथा नामदेव तुकारामजा और निलाजीने श्रीकृष्ण बाल चरित्र कस वर्णन करके तथा यह सूचित करके कि श्रीकृष्ण द्वारकाधीश हुए बाललीला-वणन समाप्त किया है श्रीहरि हरकी एकात और श्रीविष्णुके सब अवतारोंकी विशेषकर राम और कृष्णकी भक्तिका यद्यपि इन बने ही वर्णन किया है थापि एकनिष्ठ सगुणोपासनकी दृष्टिसे देखा जाय तो ये पाँचों सत श्रीकृष्णके उपासक थे और श्रीकृष्णके भी रूप बालचरित (श्रीविठ) के ही उपास थे निर्विवाद है क्या ज्ञानेश्वरीमें और क्या एकनाथी भागवतमें श्रीकृष्ण चरित सम्बन्धी जो जो उल्लेख हैं वे उनकी बाललीलासे ही सम्बन्ध रखते हैं इसके कुछ उदाहरण यहा देते हैं

(वि) ज्ञाने र महाराजके अभंगोंमें श्रीविठ्ठलभगवान्‌की स्तुतिके प्र ङ्गमें वसुदेव कुवर देवकी नन्दन वृन्दावन विहारी ब्रह्मनन्द नन्दन' ऐसे ही विशेषण आये हैं और र्णन भी इसी प्रकारका है कि उपनिषदों के अन्तर्यामी हैं पर सशरीर चरणोंपर ड़े हैं कैसा सुन्दर गोपवेष है पेड़के पत्तोंके गुच्छे सिरपर ड़े किये अधरोंपर बसी रखे न दला ग्वालकी शोभा क्या बखानूँ ' इन्दु दन मेल लगा है व ाँ न्दावनमें आप रासक्री । कर रहे हैं यह नोहर र्णन श्रीकृष्णके बालरूपके ध्यानसे निकला है ज्ञाने रीमें भी वृ णीना वासुदेवोऽस्मि' (गीता १ ३) पर भा य रते हुए ज्ञानेश्वर महाराज कहते हैं

जो वसुदेव देवकीके कारण पैदा हुआ जो यशोदाकी कन्याके बदलेमें गोकुल गया व मैं हूँ पूतनाको प्राणोंसमेत जो पी गया व मै हूँ बचपनकी कली अभी खिली भी न ी कि पृ वीके द नवोंका जिसने सहार किया जिसने अपने ह थपर गोवर्धन गिरिको उठाकर म द्रका

गर्व रण किया जिसने का ीयका दमनकर कालिन्दीके हृदयका दूर किया जिसने भभक उठी हुई आगसे गोकुलकी रक्षा की जिसने ब्रह्माको बछड़े हर ले जानेके कारण दूसरे बछड़े निर्माणकर नादान बना दिया बचपनके भोरमें ही िसने कस जैसे बड़े बड़े दैत्योंको देखते-ही देखते सहज ही मार डाला वह मैं ही हूँ (ज्ञानेश्वरी अ १ २८८ २९,)

ज्ञानेश्वरीमें विठ्ठल ना नहीं कहनेवालोंको चाहिये कि इस अवतरणको अच्छी तरह पढकर मनन करें यादवोंमें ो वासुदेव हैं ह मैं ही हूँ इसका व्याख्यान करते हुए ज्ञानेश्वर महाराज कंसवघतककी ही श्रीकृष्ण ीलाका वणन करते हैं और आगेका हाल तो तुम जानते ही हो य कहकर आगे कु कहना टाल देते हैं इससे भी क्य य स्पष्ट नहीं होता कि ज्ञानेश्वर महारा मुख्य बाल कृष्णकी ही भक्ति करते थे जो वर्णन उन्होंने किया है वह श्रीविठ्ठलका है और श्रीविठ्ठल ही उनके उपास्य थे इस बातके प्रम णस्वरूप यह अवतरण पर्याप्त है

( ) नामदेवरायके अभगोंमें भी विठ्ठल स्वरूपका ऐसा ही स्पष्ट बोध होनेयोग्य अनेक प्र ङ्ग हैं अनिर्वचनीय ब्रह्म कहकर निगम जिसका वर्णन करते हैं जो उपनिषदोंको मथकर निकाला हुआ अर्थ है वेद जिसे सारका सार श्रवणोंका श्रवण नयनोंका नयन ज्ञानका दर्पण और सब भूतोंका व्यापक चित्तको चेतानेवाला बुद्धिका पाल करने ला मन और इन्द्रियोंको चलानेव । निर्विकल्प निराकार नि शून्य निराधार निर्गुण अपरम्पार क ते हैं वह परमात्मा नामदेव कहते हैं कि

गोकुल ग्वाल बनकर ोदाका ाल कहाता है—वही जो चिन्मय चिद्रूप अ य अपार परात्पर कहा जात है

*

उन्हींको देखो भीमाके तटपर समचरण विठ्ठलरूप होकर ईंटपर खड़े हैं ज्ञानियों । ेय और योगियों । ध्येय वहाँ कैसे पहुँचा वेणु-नादसे प्रसन्न होकर भगवान् पण्ढरीमें इस रेतके मैदानमें आये उस चतुर्भुज-मूर्तिको पुण्डलीकने जब देखा एक ईंट उनके सामने दी उसी इटपर विठ्ठल ड़े हुए वह छबि त्रिभु नपर गयी

निर्गुण । वैभव भक्तिके भेषमें आ गया वही य विठ्ठल वेष बन गया पुण लीकने अपनी साधनाके द्वारा जो भक्ति सुख दिया उससे भावमय भग ान् मोहित हो गये

वह भगवान् कौन हैं

व भगवान् हरि हैं गोकुलके वसुदेव कुलके ादाकी गोदके बाल-कृष्ण हैं

नामदेवरायके स्तुि स्तोत्रमें भी

श्रीधरा अनता गोविंदा केशवा । मुकुदा माधवा नारायणा
देवकीतनया गोपिकारमणा । भक्तउद्धरणा केशिराजा

गोवर्धनधरा गोपीमनोहरा । भक्तकरुणाकरा पाडुरगा

भगवान् पाण्डुरङ्ग को इन्हीं कृष्ण नामोंसे पुकारा है

श्रुतिके ि ये जो परब्रह्म दुर्बो है सगुण कैसे हुआ इसका है कि जलमें जैसे जलके ओले होते हैं वैसे निराकारमें साकार होता है गुण निर्गुण भेद के समझानेके लिये है यथार्थमें पाण्डुरङ्ग पूर्णताके साथ सहज में सह हैं वही भक्तोंके लिये ईंटपर खड़े

उनके नाम सकीतनसे ना देव हते हैं कि मेर मनस्त प नष्ट हुआ चित्तको न्ति मिली पर ह्म अविनाशी और आनन्दघन है पर हमें तो प्रेमसे पनहानेवाली विठामाई ही प्यारी गती हैं

( ) एकनाथ हाराजने बा कृष्ण भक्तिकी हद र दी है पहले ही अध्यायमें वह कहते हैं

भगवान् अनेक अवतार अ रि पर इस अ रकी नव कुछ और ही है इसक अभिप्र दे । भी नहीं जानते उस अगम्य रिलीलाको देखते ही बनता है पैद होते ही मैयासे अलग हुए अपनी लीलासे आप ही ालित पालित होकर ढे बचपनमें ही मुक्ति आनन्द दिलाने गे पूतनादि सबको स्व रीरसे मुक्ति अपण की होकर ब र्नोको ही मारा ससारके देखते सिंह जैसे महान् पराक्रमी थे पर बालपनके बाहर तिलभर भी नहीं र ी पुत्र सबके रहते थे ब्रह्मचारी य लीला भी उन्होंने दिखायी भक्ति भुक्ति और मुक्ति तीनोंको एक पक्तिमें बिठाया इनकी कीर्ति मैं क्या बखानू मिट्टी ाकर इ होंने वि रूप दिखाया

जो चरित्र मनु यको अत्यन्त प्रेय होता है उसक जी खोलकर णन किये बिना उससे नहीं रहा श्रीकृष्णके ावण और अनुपम वणन एकनाथी भागवतके इसी अध्य यमें (२३८ से २ और २८९ से ३ ९ तक) अवश्य पढनेयोग्य है लोकलालन कृष्ण जिनकी अङ्ग ङ्गप्रभासे ससारको ोभा हुई सुव्यक्त परब्र ही हैं

वी हुआ हो या पि हुअ व है घी ही उस घीपन तो कहीं नहीं गया वैसे ही ब्रह्म जो अव्यक्त है वही साकार या इससे उस । ब्रह्मत्व तो कहीं नहीं या उसीकी बनी मूर्ति है

परब्रह्म तो उसमें भरा हुआ है परब्रह्मके सगुणरूप यह श्रीकृष्ण सकल सौन्दर्यके अधि ास मनोहर नटवेष धारण किये लावण्य न्यास और स्वय जगदी हैं इनके इस नित नवल सौ दर्य और तेजको देखकर इनके सर्वाङ्गमें लोगोंकी आँखें गड जाती हैं और मन कृष्णस्वरूपको आलिङ्गन करता है नेत्र आतुर हो उठते हैं, उस लोभसे चाते है नेत्रोंके जिह्वाएँ निकल पड़ती हैं ऐसी उन स्वान दगर्भ साकार श्रीकृष्णकी शोभा है जिस ह्रा ने उन श्रीकृष्णको देखा वह दृष्टि फिर पीछे फिरकर नहीं देखती श्रीकृष्णरूपको ही अधिकाधि अ ि ङ्गन करती है सारी सृष्टि श्रीकृ णमय ही देखती है '

कटिमें वर्णाम्बर ोभित हो रहा है और गलेमें पैरोंतक वनमाला लटक रही है उन सुन्दर मधुर घनश्यामको देखते हुए नेत्रोंसे मानो प्राण निकल पड़ते हैं

श्रीकृष्ण ली वि ह हैं उनका रीर लोकाभिराम और ध्यान धारण मङ्गल है वेदों ा जन्मस्थान षट्शास्त्रोंका समाधान षड्दर्शनाकी पहेली ऐसा यह श्रीकृष्णका पूर्णावतार है (नाथ भागवत ११ २६८) और उसमें भी बालचरित्र ही सबसे अधिक मधुर दर और पवित्र है (८२) और वही सब भक्तोंको प्रिय है वही श्रीकृष्णकी बालमूर्ति पण्ढरीमें विठ्ठल नाम रूपसे ईंटपर खड़ी है ही मारे महाराष्ट्रके सतोंके उपास्य देव हैं

श्रीकृष्ण ही श्रीविठ्ठ हैं यह बात सतोंके वचनोंसे प्रमाणित ो चुकी पर इसी सम्बन्धमें एक ऐति सिक प्रमाण भी मिल है श्रीकृष्णावतारको हुए पिछली ाने सवत् १९९ की जन्म मीको पूरे ५ १८ वर्ष बीते श्रीकृष्णका न्म विक्र सवत्के ३ २८ वष पूर्व

भाद्रकृष्ण ८ को रोहिणी नक्षत्रपर मध्यरात्रिमें हुआ रा बहादुर चिन्तामणि विनाय वैद्यने अपने श्रीकृष्ण चरित्र के परिशिष्ट भागमें योतिष गणनाके आधारपर य लिखा है कि उस दिन बुधवार था इसको पढते ही यह बात ध्यानमें आ गयी कि वारकरी बुधवारको इतना पवित्र और पूज्य क ो मानते हैं कि उस दिन प ढरीसे प्रस्थान नहीं करते और वि का वार कहकर वह दिन श्रीविठ्ठलके भजन पूजनमें ही बिताते हैं व दिन श्रीकृष्णक जन्म दिन है यह बात ज्ञात होनेपर बड़ा आन द हुआ पण्ढरीके वारकरी सम्प्रदायके आदिप्रवर्तकको य बात निश्चय ही ात रही होगी कि बुधवारके दिन श्रीकृष्णका जन्म हुआ है अन्यथा बु वार ही खास तौरपर भगवान्‌का दिन न निश्चित किया जाता

३ श्रीकृ णकी बाललीलाएँ

ज्ञाने र ना देव ए नाथ तुकार म और निळाजीद्वारा व ि श्रीकृष्णलीलाओंमें श्रीकृष्णके बालचरित्र अर्थात् बाल्य और कौमार अवस्थाके चरित ही गाये गये हैं कसादि अ रोंके अत्याचार भारसे दबी हुई पृथ्वी क्षीरसागरमें शयन करनेवाले श्रीविष्णुकी रणमें गयी विष्णुने उसे अभय दान किया व देव देवकीके विवाह समयमें आकाशवाणी हुई और कसको ह मालूम हुआ कि देवकीका अ ठवाँ पुत्र मेरा काल होगा उसने उसके सात बच्चे मार डाले कारागारमें ही श्रीकृष्ण प्रकट हुए वसुदेवने उन्हें गोकु नन्दके घर पहुँचा दिया मार्गमें लोहेकी श्रृङ्खलाएं तड़ातड़ टूट गयीं और यमुना मैयाने रास्ता दिया कृष्णके मनोहर व रूपने सब गोप गोपियोंका चित्त मोह लिया कृष्णको मारनेके लिये कसके भेजे पूतना टासुर तृणावर्त वत्सासुर प्रलम्ब अघासुर बक केशी धेनुकासुर अ दि असुरोंको श्रीकृष्णने बचपनमें ही सहज मार डाला उगलीपर गोवर्धन गिरि उठाया यशोदाको अपने मुँहमें

ब्रह्म ड दिखाया ब्रह्माका गर्व उतारा वृन्दावनमें गोपोंके सङ्ग अनेक प्रकारके खेल खेले दूध दही मक्खन चुराकर गोपियोंका चित्त चुराया श्रीकृष्ण प्रेमसे वे पति पुत्र घर द्वार भूल गयीं गोकुल और वृन्दावनकी लीलाओंसे आबाल वृद्ध वनिता सभी कृष्ण प्रेममे पागल हो गये पीछे कृष्णने मथुरामें जाकर चाणूर मुष्टिकादि मल्लोंको मारकर अ तमें कसका भी अ किया कु काल बाद श्रीकृष्ण द्वारकाधीश हुए इन सब घटनाओंको श्रीकृष्ण भक्त सत कवियोंने बाल-लीलामें अत्यन्त प्रेमसे व ना है काँदोके अभङ्ग ग्वालिन डण्डोंका खे आती पा ी कबड्डी इत्यादि खेलोंपर जो अभङ्ग हैं उनका भी बाल लीलावर्णनमें ही समावे होनेसे इसमें कु भी सन्देह नहीं रह जाता कि गोकुल वासी न्दावन विहारी श्रीकृष्ण ही हम रे भक्त संतोंके भगवान् श्रीवि हैं श्रीकृष्णका उत्तर चरित सबको विदित ही है तुकारामजीके ही वचनके अनुसार जिन्होंने गीताका उपदेश किया वही यह मेरी माता हैं जो ईंटपर डी हैं अर्जुन ो भगवद्गीता और उद्धवगीता बतलानेवाले पाण्डवके सहायक रकाधी श्रीकृष्ण कौरव पाण्डव युद्धके कारण महाभारतके द्वारा परम राजनीतिज्ञके रूपमें ससारपर प्रकट हुए तथापि हमारे भक्तों और संतोंको जो श्रीकृष्ण पर प्यारे * व गोकुलके ही श्रीकृ ण हैं गोकुलके ी श्रीकृष्ण कुरुक्षेत्रके गीता-वक्ता हैं श्रीकृ ण एक ही हैं तथापि श्रीकृष्णने जगदुद्धारके लिये गोकुल वृन्दावनमें जो भक्ति रस परिप्लावित परमानन्ददायिनी ली एँ की वे ही भक्तोंके प्रेमकी वस्तु हैं इस कारण गोकुलके श्रीकृष्ण ही उनके उपास्य हैं स्वामी विवेकानन्दने कहा है श्रीकृष्ण सब मनुष्यों ा उद्धार करनेके लिये अव र लिये हुए परमात्मा हैं और गोपी लीला मानवधर्मान्तर्गत भगवत्प्रेमका सारसर्वस्व है स प्रेममें जीव भावका लय होकर परमात्मासे तादात्म्य हो जाता है श्रीकृष्णने

* प्रबुद्ध भारत सन् १९१५ जनवरी मासका अङ्क

गीतामें सर्व मान् परित्यज्य मामेक रण जो उपदेश दिया है उसकी प्रतीति इसी लील में होती है भक्तिका रहस्य जानना हो तो ओ और वृ दावन लीलाका आश्रय करो श्रीकृष्ण दीन दुखियोंके भिखारी कगालोंके पापी पामरोंके बाल ब ोंके ी पुरुषोंके सबके परम उपास्य हैं व्युत्पन्न पं डत और ब्दिक तत्त्व ोंसे वह दूर हैं भोले-भाले अजानोंके समीप हैं उ हें ज्ञानका शौक नहीं शुद्ध प्रेमके भूखे और भोक्ता हैं गोपियोंके लिये श्रीकृ ण और प्रेम एकरस हो गये थे द्वारकामें श्रीकृष्णने कर्मयोग सिख या और वृन्दावनमें भक्ति प्रेमकी क्षा दी श्रीकृष्ण प्रेम दया और क्षमाके सागर हैं

४ श्री ारामद्वारा लीला वर्णन

तु रामजीने अपने उपास्य भगवान् श्रीविठ्ठलकी जो बाललीलाएँ गायी हैं उनमें भी ग्वाल वालि नोंकी अलौकिक भक्ति और श्रीकृष्णकी भक्तवत्स ा अत्यन्त प्रेमसे बखानी है

अविना ी ब्रह्म आकार धारणकर दैत्योंका सहार करने आ गया भक्तजनोंका पालन करनेके लिये गोकुलमें राम और कृष्ण आ गये गोकु में आनन्द ख प्रकट हुआ घर घर ोग उ ीका आसरा नने गे

गोपियोंकी प्रगाढ कृ ण भक्ति देखिये

उनके पूव पु यका हिसाब कौन सकता है जिन्होंने मुरारीको खेलाया अन्त खसे खे ाया और खसे भी और उन्हें पाकर मुखका चुम्बन दिया ? भगवान्ने उन्हें अ सुख दिया न्होंने ए निष्ठ भावसे उन्हें जान श्रीकृष्णमें जिनका तन मन लग गया ो घर द्वार और पति पुत्रतकको भूल गयीं उनके लिये मान और विष-से ो गये

चारों वेद जिसकी कीर्ति बखानते हैं वह ग्वालिनोंके ाथों बँध है मक्खन चुराने उनके घरोंमें घुसता है अन्दर बाहर ए -सा है इससे चोरी पकड़ी नहीं जाती यह भेद वे जानती हैं कि ह अकेला ही और ब रास्तोंको बंद करके हमें बैठा लेगा इसलिये वे निश्चिन्त एकान्तमे नि सङ्ग होकर कृष्णके ही ध्यानमें अचल लगी रहीं ोगियोंके ध्यानमें जो एक क्षणके ि ये भी नहीं आता भावुक वालिनें उसे पकड़ रखती हैं उन भक्तिनोंके पास व॰ गिड़गिड़ाता हुआ आता है और सयाने कहते हैं कि वह तो मि ही नहीं

*

देहकी सारी भावना बिसार दी तब वही नारायणकी सम्पूण पूजा अर्चा है ऐसे भक्तोंकी पूजा भगवान् भक्तोंके जाने बिना ले लेते हैं और उनके माँगे बिना उन्हें अपना ठाँव दे देते हैं

*

मनसे सारी इच्छ एँ हरिरूपमें लग गयीं ग ालिनोंकी ये धुएँ उन्हींके लिये व्यग्र देख पड़ती हैं सबके चित्तमे एक भाव नहीं है इसलिये जैसा प्रेम वैसा रूप ब चेको छोटे बड़ेका ख्याल नहीं होता नारायण भी वैसे ही ौतुकके साथ खे ते रहते हैं

अब ग्वालोंका भक्ति भाग्य देखिये

राम और कृष्णने गोकुलमें एक कौतुक किया ग्वालोंके सङ्ग गौएँ चराते थे सबके आगे चलते हुए गौएँ चराते थे और पीठपर छाक बाँधे रहते थे उनकी व लाठी और कामरी य हुई वालिनों भी कैसा महान् पु य था वे गाय भैंस और अन्य पशु भी कैसे भाग्यवान् थे ’

*

इन ग्वालिनोंके व्रत याग आदि नेक सञ्चित पु य कर्म थे जो ऐसे फले वालिनोंको जो सुख मिला वह दूसरोंके लिये ब्रह्मादिके ि ये भी दुर्लभ है

*   *

न्द और यशोदाका कृष्ण भक्ति भाग्य देखिये परिश्रम करके धन उपार्जन किया वह भी उ होंने कृष्णार्पण किया सब गौएँ घोड़े भैंसें दासियाँ प्रेमसे कृ णको समर्पित कर दीं क्षणभर भी यदि कृष्णका वियोग होता तो उनके प्राण तडपने लगते उनके ध्यानमें मनमें सब विधि हरि ही थे शरीरसे काम करते थे पर चित्त भगवान्में ही लगा रहता था उन्हींका चिन्तन करते थे बस यही एक पुकार होती थी कि कृष्ण कहाँ गया अभी उसने खाया नहीं कहाँ चला गया वे कृष्ण नाम ही रटा करते थे माता यशोदा कूटते पीसते पछोरते कृष्णके लोरियाँ गाती थीं भोजनमें न द य ोदा कृष्णको पुकारते थे यानमें आसनमें शयनमें स्वप्नमें कृष्णरूप ही देखते थे कृष्ण उन्हें दिखायी देते थे दुश्चित्तोंको नहीं दिखायी देते तुका कह ा है नन्द-य ोदा जैसे मा पिता धन्य हैं

*

पास पड़ सकी ग्वालिनोंकी कृष्ण भक्ति देखिये और अ त रणमें उस सुखको अनुभवकर प्रेमाश्रु बहाइये

एक सखी दूसरी सखीसे कहती है कृ ण हमारा परिचारी है कृष्ण यवह री है अरी नारी ! कृ णको उठा ले कृष्णके बिन तुम्हें कैसे चैन मिलता है कैसे समय कटता है तुम ोग फालतू बात किया कर ी हो समय यर्थ खोती हो इस जग उजागरको जरा क ों नहीं उठा लेतीं उठा ो और इस सुखको भी तो जरा देख लो स खको जब तुम अनुभव करोगी तब द्वार द्वार न भटका करोगी एक कृष्णके बिना यह सारा खेल तुम्हें झूठा प्रतीत होगा सबकी सङ्ग सो ब तब

छोड दोगी और अनन्तको सङ्ग लेकर वनमें जाओगी इसे फिर अपने प्राणोंसे अलग न करोगी दूसरोंसे भी इस बच्चेको लेनेके लिये कहोगी इस बालकको जो अपने घर ले जाती है उसकी मा वही है

*

तुका कहता है जो कृष्णको ले जाती हैं वे फिर लौटकर नही आती कृष्णके साथ खेलते ही सारा दिन बीतता है कृष्णके मुँहकी ओर निहारते हुए चाहे दिन हो या रात उसे और कुछ नहीं सूझता सारा शरीर तटस्थ हो जाता है इन्द्रियाँ अपना व्यापार भूल जाती हैं भूख प्यास घर द्वार वे सब ही भूल जाती है यह भी सुध नहीं रहती कि हम कहाँ हैं हम किस जातिकी हैं यह भी भूल गयीं चारों वर्णोंकी गोपियाँ एक हो गयीं कृष्णके साथ खेल खेलती हैं चित्तमें उनके कोई इच्छा नहीं उठती बस एक ठाँवमें तुका कहता है कि श्रीगोविन्द चरणोंमें भावना स्थिर हो गयी

इन्होंने अपने आपको जाना जाना कि यह ससारा खेल जो खेल रहे हैं वह झूठा है असलमें हमारे सगे सम्बन्धी भाइ दामाद जो कुछ कहिये सबमें एक वही हैं उन्हींमें हम सब एक है इसलिये निःशङ्क होकर खेल सकती हैं हम किसके सङ्ग क्या खाती है और मुँहमें उसका क्या स्वाद मिलता है यह सब कुछ नहीं जानतीं दूसरोंकी आवाज भी कान नहीं सुनते क्योंकि ध्यानमें मनमें हरि बैठे हैं

काँदौके अभङ्गोंमें भी यही अनुपम रस भरा हुआ है श्रीगोपाल कृष्ण अपने सखाओंके साथ गौएँ चरानेके लिये मधुवनमें जाया करते थे वहाँ अपनी अपनी छाकें खोलकर सबने जो भोजन किये तथा जो जो खेल खेले उनका बडा ही चित्तरञ्जक वर्णन तुकारामजीने किया है भगवान्

पहले कहते हैं अपनी अपनी छाकें खोलो देखें कौन क्या ले आया है कारण, 'बिना सबकी तलाशी लिये मै अपना कुछ भी देनेवाला नहीं मट्ठा दही चिउरा चावल जिसके पास जो रहा वह उसने निकाल किसीकी गौएँ स्थिर ो गयी किसीकी इ र उ र भटकने लगी बने भगवान्से विनती की अब सब बाँट दो हमारे पास क्या है और क्या नहीं सो सब तुम जानते ो भगवान्के लेखे सभी बराबर हैं वह किसीके भी जीको क नहीं होने देते

सबको वतुलाकार बैठाकर आप मध्यमें बैठते और सबका समान समाधान करते

निष्कपट खेलाडी कान्हाने सबकी भावनाके अनुसार बँटवारा कर दिया

ग्वाल बाल अपनी-अपनी भावनासे पीड़ित हुए जिसकी जैसी वा ना कर्मके साक्षी इस लीलाको कौतुकसे देखने लगे खेल खेलते जो अपन भार उन्हींपर रखते उनके लिये कभी बाध नहीं होते थे कोई बाध आ जाते थे कोई उलझकर ल लेते थे

*　　*

सबके भोजनमें हरि अपनी म धुरी डाल देते थे परस्पर बातें करते हुए ब्रह्मानन्द लाभ करते थे भगवान् सबके हाथोंपर और मुखमें कौर डालते भगवान्के ही जो सखा थे

काँदौकी वह बहार देखकर गौए चरना भूल गयीं पशु पक्षी जडत्व भूल गये यमुन -जल स्थिर होकर बहने लगा सब देवता देखते हैं उनके लार टपकती है कहते हैं गोप धन्य हैं हम कु भी न हुए

काँदौका दही भरपेट ाकर गोपा कहते हैं कि तुम्हारा ाथ बडा अ छा हमें य नित्य मि ा करे '

फिर सब अपनी लकुटी और कम्बल उठा गौएँ चराने गये उनमें कई टेढ अङ्गवाले ोतले नाटे लँगड़े लूले आदि भी थे पर श्रीकृष्ण उन सबके प्रिय थे और भगवान् भी उनके भावसे प्रसन्न थे गौएँ चराते हुए ग्वाल बा श्रीकृष्णको मध्यमें किये डडोंके खेल आदि खेलते जा रहे हैं

बा क्रीड़ाके अभङ्गोंमें तुकारामजीने आध्यात्मिक भाव ध्वनित किये हैं गोपियाँ रास रङ्गमें समरस हुई उसी प्रकार हमारी चित्त वृत्तियाँ श्रीकृष्ण प्रेममें सराबोर हो जायँ और तन्मयताका आनन्द लाभ करें यही इन अभङ्गोंका आ यात्मिक भाव है भक्तोंके पूर्व सञ्चितको देखकर भगवान् उसमें अपना प्रसाद डालकर उनके जीवनको मधुर बनाते हैं और 'नीचेका द्वार बद करते हैं' याने अधोगतिका र स्ता बद करते हैं अस्तु श्रीकृष्ण प्रेममें तुकारामजी रमे हुए थे यह कहनेकी आवश्यकता नहीं

५ श्रीपण्ढरीके विट्ठलनाथ

पण्ढरपुरमें श्रीविट्ठलनाथकी ो मूर्ति है उसे अच्छी तरह देखनेसे भी यह मालूम हो जाता है कि यह भगवान्की बाल मूर्ति ही है कुछ आधुनिक पण्डितोंने जो यह र्क लड़ाया है कि यह मूर्ति बौद्धों या जैनोंकी है उसमें कुछ भी दम नहीं है यह मूर्ति श्रीमहाविष्णुके अवतार श्रीगोपालकृष्णकी हा है भगवान् ईंटपर खडे हैं ईंटपर भगवान्के बडे ही कोमल पद कमल हैं इन पादपद्मोंमें कोटि कोटि भक्तोंने अपने मस्तक नवाये हैं प्रेमाश्रुओंसे सहस्रश इन्हें नहलाया है अपने चित्त निवेदन किया है इन चरणोंने लाखों जीवोंके हृत्ताप हरण किये हैं उनके नेत्रोंको कृतार्थ किया है उनका जीवन ध य बनाया है सहस्रों पापात्माओं और मुक्तोंने बद्धों और मुमुक्षुओंने सिद्धों और साधकोंने रकों और रावोंने पतितों और पतित पावनोंने इन चरणोंके ध्यान और भजनसे अपना जीवन स किया है लाखों जीवोंके लिये यह दुस्तर

भवसागर इन चरणोंके चि तन चमत्कारसे गोष्पद जितना छोटा सा हो गया है ऐसे ये इस ईंटपर श्रीविट्ठलनाथके चरण स्थिर हैं भगवान्‌के बायें पैरपर एक व्रण है भगवान्‌की मुक्तके ी नामकी कोई दासी थी भगवान्‌पर उसका अत्यधिक प्रेम था वह दासी बड़ी सुकुमार थी और उसे अपनी सुकुमारताका बड़ा गर्व था उसने अपने दाहिने हाथकी उँगली भगवान्‌के बायें पैरपर रखी सो भगवान्‌के अति सुकुमार पैरमें गडी भगवान्‌के चरणोंकी यह सुकुमारता देखकर अपनी सुकुमारता उसे तुच्छ प्रतीत हुई और वह बहुत जित हुई उसका गर्व उतर गया भग वान्‌के दोनों पैरोंके बीचमें पीताम्बरका बा सा लटक रहा है वह बालरूपोचित ही है बडी अवस्था दरसानी होती तो पाँवोंसे पीताम्बर का किन रा कायदेसे मिला होता जननेन्द्रियके स्थानमें करधनीका एक लच्छा सा लटक रहा है सोनेकी करधनीपर इन्द्रिय चिह्न सा सोनेका ही टिकड़ा है जो पहलेका नहीं है अर्थात् मूर्ति नग्न नहीं है यह ङ्का करनेका कोई कारण न ी है कि मूर्ति जैन है पीताम्बरके ऊपर करधनी है दाहिने ाथमें ङ्ख और बायेंमें पद्म है छातीपर दाहिनी ओर भृगुलाञ्छन है भृगुके अँगूठेका चिह्न है क ठमें कौस्तुभमणि टकता हुआ छातीपर आ गया है भुजाओंमें भुजब ध हैं और दोनों कानोंमें क नोंसे कन्धोंतक मकराकृति कुण्डल हैं भगवान्‌के मुख नासि । और नेत्र प्रसन्न हैं मस्तकपर शिव ङ्गाकार मुकुट है भा प्रदे में मुकुटके बीचमें एक बारीक फीता सा बँधा है वह पीछे पीठपर टकी हुई ाककी डोरीका है प ढरीका गोपालपुर वहाँकी सब चीजें और काँदौके समारम्भ सब गोकुलके हैं ऐसे श्रीविट्ठलरूपी श्रीबालकृष्ण भगवान्‌को मेरे अनन्त प्रणाम हैं ॰

---

* 'गोपी प्रेम' का विषय विशेषरूपसे जानना हो तो गीताप्रेससे प्रकाशित भगवच्चर्चा भाग १ [तुलसीदल] नामक पुस्तक पढ़िये —प्रकाशक

ग्यारहवाँ अध्याय

सगुण साक्षात्कार

भक्तसमागमें सर्वभावें हरी । सब काम करी न सागता । १
साँठविला राहे हृदयसपुटीं । बाहेर धाकुटी मूर्ति उभा २

भक्तसमागमसे सब भा हरिके हो जाते हैं सब काम बिन बताये रि ही करते हैं हृदय सम्पुटमे समाये रहते हैं और बाहर छोटी सी मूर्ति बनकर सामने अ ते हैं

१ सत्यसङ्कल्पके दाता नारायण

भगवान्‌के सगुण दर्शनोंकी कैसी तीव्र लालसा तुकारामजीको गी थी यह हमलोग नवें अ यायमें देख चुके हैं अब उस ला साका उ हें क्या फल मिला सो इस अध्यायमें देखेंगे जीवमात्रको उसीकी इच्छाके अनुरूप ही फ मिला करता है जैसी वासना वैसा फल मनुष्यकी इच्छा शक्ति इतनी प्रबल है उसके सङ्कल्पके कर्म प्र । की गति इतनी अमोघ है कि वह जो चाहे कर सकता है नर जो करनी करे तो नरका नारायण होय यह कबीरसाहबका वचन प्रसिद्ध ही है जो कुछ करनेकी इच्छा मनुष्य करे उसे वह कर सकता है जो होनेकी इच्छा करे वह हो सकता है जो पानेकी इ छा करे वह पा सकता है पर होना यह चाहिये कि उस इ छा क्तिको शुद्ध आचरण दृढ निश्चय सद्भावना और निदि ध्यासका पूरा सहारा हो सङ्कल्पका पूरा होना सङ्कल्पकी शुद्धता और तात्रत पर निर्भर करता है मनकी क्ति असीम है पर निष्ठाके साथ उसका पूर्ण उपयोग कर लेनेवालेके ि ये बूँद बूँद पानी बाँध बा कर रुक्‍या

किया जाय तो सरोवर बन सकता है एक एक पैसा जमा करके यापारी लक्षपति बनते हैं सूर्य किरणोंको एक जगह केंद्रीभूत करें तो अग्नि तैयार हो जाती है और ऐसे ही भापके इकट्ठा करनेसे रे गाडियाँ चलती हैं इसी प्रकार मनकी क्ति भी सामान्य नहीं है बड़ी प्रचण्ड है हजारों रास्तोंसे यदि उसे दौड़ने दिया जाय तो वह दुर्ब हो जाता है पर एक जगह यदि स्थिर किया जाय तो वही ब्रह्मपद भ करा देने ककी सामर्थ्य रखता है मन ही मनुष्यके ब धन और मोचनका कारण है विषयोंमें चरनेके लिये उसे छोड दिया जाय तो वह थककर दुर्बल हो जाता है परमात्मामें लगाया जाय तो वही परमात्मरूप बन ज ता है मन य ने इच्छा शक्तिको इतस्तत बिखरने न देकर एकाग्र करनेसे एक ब्रह्मपदपर स्थिर करनेसे उसकी क्ति बेहद बढती है परमात्मा सब भूतोंमें रम रहे हैं जल थल काठ पत्थर सबमें विराज रहे हैं भू तेज समीर गगन इन पञ्च महाभूतोंको और स्थावर जङ्गम सब पदार्थोंको यापे हुए हैं उनके सिवा ब्रह्मा डमे दूसरी कोई वस्तु ही नहीं यही शास्त्र सिद्धान्त है और यही सतोंका अनुभव है या उपाधिमाजि गुप्त चैतन्य असे सवगत अर्थात् इस उपाधिमें गुप्तरूपसे चैतन्य सर्वत्र भर हुआ है (ज्ञानेश्वरी अ २ २६) प्राचीन ऋषि मुनियों और सत महात्माओंको इसकी प्रतीति हुई है और इस जमानेमें भी कलकत्तेके विद्वत्प्रवर अध्यापक श्रीजगदीशच द्र महा यने नवीन यन्त्रोंकी स ायतासे वही सिद्धान्त ससारके सामने प्रत्यक्ष करके दिखा दिया है पेड़ोंमें और पत्थरोंमें भी चै न्य भरा हुआ है स उसी चैतन्यका निदिध्यासन करते हैं और निदिध्याससे ही उन्हें उसका स क्षात्कार होता है वि में इससे पुनीत प्रिय और श्रेय विर ास और नहीं है उसी चैतन्यमें स पूर्ण इच्छ क्ति घनीभूत होनेसे पुण्यात्मा पुरुष ब्रह्मपदलाभ रते हैं वेदोंने उसीका वर्णन किया है ज्ञानी योगी और उसीमें रममाण होते हैं अन्य

न पदा ैंपर मन हो जाने न देकर अर्थात् वैराग्यसम्पन्न होकर वे उसीके मननमें ग जाते हैं मन वाणी और इन्द्रियोंसे उसका पता नहीं चलता पर मनको उसीकी लौ लग जानेसे मन उसे चाहे जिस रंगमें रँग लिया करता है उसे चैतन्य क ते है वेद अ त्मा कहते हैं और भक्त उसीको नारायण कहते हैं

वेदपुरुष नारायण । योगियांचें ब्रह्म शून्य
मुक्त आत्मा परिपूर्ण तुका म्हणे सगुण भोळ्याँ आम्हा

'वेदोंके लिये जो नारायण पुरुष हैं योगियोंके लिये शून्य ब्र हैं मुक्तात्माओंके लिये जो परिपूर्ण आत्मा हैं तुका कहता है कि हम भोले-भाले लोगोंके लि ये वह सगुण साकार नारायण हैं

तुकोबारायने उस अनाम अरूप अचिन्त्य परमात्माको नाम और रूप प्रदानकर चिन्त्य बना ाला गोकुलमें गोप गोपियोंको रमानेवाली वह सुरम्य श्याम बालमूर्ति तुकारामजीके चित्त चिन्तनमें आ गयी कारामजीका चित्त उसीको समर्पित हुआ इन्द्रियोंको उसीके यान सुखका चसका लग गया रीर भी उसीकी सेवामें लगा ३स प्रकार मन वचन और र्मसे वह कृ णमय हो गये ऐसी अवस्थामें वह यदि कृष्णरूप इन्हीं आँ ोंसे देखनेकी लालसा रख तो व कैसे न पूरी हो ?

निश्चयाचें ळ । तुका म्हणे तेंचि फळ

'तुका कहता है निश्चयका बल ही तो फल है निश्चयके ब का लब ही फ की प्राप्ति है अहकारकी हवा कहीं न ग जाय इसलिये भक्तलोग कहा करते हैं

सत्यसकल्पाचा दाता नारायण । सर्व करी पूर्ण मनोरथ

सत्यसकल्पके देनेवाले नारायण हैं वही सब मनोरथ पूर्ण करते हैं भक्तोंका यह कहना सच भी है जीवों । शुद्ध सकल्प या निश्चयका बल

और नारायणकी कृपा इन दोनोंके बीच बहुत ही थोड़ा अन्तर है कारामजीने श्रीकृष्णको प्रसन्न करके प्रकटानेके लिये शुद्ध और ती सकल्प धारण किया और न रायणको प्रकट होना ही पड़ा यह भक्तकी महिमा है या भगव न्की भक्तवत्सलताकी या इन दोनोंक एक दूसरेके प्यार और दु रकी ऐसे भक्त और भगवान्के अन्यो य प्रेमसे ससारको एक कौतुक देखनेको मिला ऐसे निश्चयसे हर कोई अपनी रुचिके अनुसार अपना ज वन सफल कर सकता है तुकार मजीकी जैसी लालसा थी तद नुसार भगव न्ने उन्हें कब और कैसे दर्शन दिये यह अब देखना चाहिये

२ रामेश्वर तुकाराम विरोध

भगवान्को तुकारामजीकी दर्शन लालसा पूरी करनी ही थी पर इसे उन्होंने एक प्रसङ्गका निमित्त करके किया रामेश्वर भट्टने तुकारामजीसे सब बहीखाता डुबा देनेको कहा और तुकारामजीने ब्र ह्मणकी आज्ञा सिर आँ ों उठाकर बहीखाता डुबा दिया और फिर भगवान्ने उन सब काग ोंको जलसे बचा लिया यह बात लोकप्रसिद्ध है इसी प्रसङ्गसे कारामजीको भगवान्के साक्षात् दशन हुए इसलिये हमलोग अब इसी प्रसङ्गको देखें रामेश्वर भट्ट कोई स धारण आदमी नहीं थे यह बड़े सत्पात्र और महाविद्वान् ब्राह्मण पूनेसे ईशान्यमें नौ मी पर वाघोली नामक स्थानमें रहते थे बडे ी वान् कर्मनि और रामोपासक तथा धर्माधिकारी भी थे तुकारामजीका नाम चारों ओर हो रह था उसे उन्होंने भी न रखा था जब उ होंने सुना कि तुकाराम शूद्र है और ब्राह्मण भी उसके पैर छूते हैं था उसके भजनोंमें वेदार्थ कट ोते हैं तब कारामजीके विषयमें और सामा यत वारकरी सम्प्रदायके विष में भी उनकी धारणा प्रतिकूल हो गयी थी पर य बात नहीं थी कि तुकारामजीकी कीर्ति उनसे न सही गयी या उ हें उनसे डाह हुआ और

किसी तरहसे उन्हें कष्ट पहुँचानेके लिये क्षुद्र बुद्धिसे उन्होंने कोई काम किया हो। हम आप तुकारामजीपर सादर और सप्रेम गर्व करते हैं पर जो कोई तुकारामजीके समयमें कुछ कालतक तुकारामके प्रतिपक्षी होकर सामने आये उनके विषयमें हम आप कोई गलत धारणा न कर बैठें। जब वाद विवाद चलता है तब प्रतिपक्षीके सम्बन्धमें अपना मन कलुषित कर लेना सामान्य जनोंका स्वभाव सा हो गया है, पर यह पक्षपात है। इसे चित्तसे हटाकर प्रतिपक्षीके भी अच्छे गुणोंको मान लेना विचारशील पुरुषोंका स्वभाव होता है। प्रतिपक्षीके कथनमें क्या विचार है और क्या अविचार है यह देखकर अविचारवाले अंशभरका ही खण्डन करना होता है और सो भी आवश्यक हो तो। रामेश्वर भट्ट कोई मम्बाजी बाबा नहीं थे, उनके विचार करनेकी दृष्टि भी विचारने योग्य है। तुकारामजी जिस भागवतधर्मके झंडेके नीचे खड़े होकर भगवद्भक्तिका प्रचार कर रहे थे उस भागवत धर्मकी कुछ बातोंसे उनका प्रामाणिक विरोध था। यह विरोध बहुत पहलेसे ही कुछ न कुछ चला आया है और आज भी वह सर्वथा निर्मूल नहीं हुआ है। आलन्दी और पैठणके ब्राह्मणोंने जिन कारणोंसे ज्ञानेश्वर महाराजका और एकनाथके पुत्र पण्डित हरिशास्त्रीने अपने पिता एकनाथ महाराजका विरोध किया उन्हीं कारणोंसे रामेश्वर भट्ट तुकाराम महाराजके विरुद्ध खड़े हुए। स्पष्ट बात यह है कि ज्ञानेश्वर महाराजके समयसे वैदिक धर्ममार्गी ब्राह्मणोंकी यह धारणा-सी हो गयी है कि यह भागवतधर्म वर्णाश्रमधर्मको मिटानेपर तुला हुआ एक बागी सम्प्रदाय है। भागवतधर्म वस्तुतः वैदिक धर्मका विरोधी नहीं है, इतना ही नहीं प्रत्युत वैदिक धर्म अत्यन्त उज्ज्वल व्यापक और लोकोद्धारमय स्वरूप भागवतधर्ममें ही देखनेको मिलता है। वैदिक कर्म और भागवतधर्मके बीच जो वाद सा छिड़ गया उसका उत्तर सन्तोंने अपने चरित्रोंसे ही दिया है। वारकरी सम्प्रदायके भगवद्भक्त जाति पाँति पूछे बिना एक दूसरेके पैर छूते हैं, संस्कृत

भाषामें सञ्चित ज्ञान रहस्य प्राकृत भाषामें प्रकट करते हैं और उससे देववाणी ल ञ्छित होती है कर्मको गौण बताकर भक्ति और भगवन्नामकी ी महिमा सबसे अधिक गायी जाती है ये बात हैं जो पुराने ढगके अनेक शा ी पण्डितोंको तथा वैदिक कमनि ाेंको ठीक नहीं जचतीं सभी शास्त्री पण्डित इसी विचारके पहले थे या अब हैं ऐसी बात नहीं तथापि ऐसे विच रके लोगोंद्वारा भागवतधर्म प्रचारक ज्ञानेश्वर और एकनाथको जैसे पहले कष्ट पहुँचाया गया वैसे ही क रामजीके समयमें तुकारामजीको रामेश्वर भट्ट क पहुँचानेके लिये मिले ये दो अलग अलग पन्थ हैं सस्कृत भाषामें ही सम्पूण ज्ञान और धर्म बना रहे और व ब्राह्मणोंके मुखसे अन्य सब वर्णोंके लोग सुन यह सस्कृताभिमानी वैदिक कममार्गियोंका दावा है और

> आता सस्कृता अथवा प्र कृता । भाषा जाली जे हरि कथा
> ते पावनचि तत्वता । सत्य सर्वथा मानली

अर्थात् भाषा सस्कृत हो या प्राकृत जिसमें भी हरि कथा हुई वही भाष तत्त्वत पवित्र सवथा सत्य मानी गयी है यह भागवतधर्मवालोंका ावा है (नाथ भाग त १ १२९) एकनाथ हाराज सस्कृत भाषाभिमानि ोंसे पूछते हैं कि केवल सस्कृत भ षा ही भगवान्‌ने निर्माण की तो क्या ाकृत भाषाको दस्युओंने निर्माण किय ? सस्कृतको व और प्राकृतको नि द्य कहना तो अभिमानवाद है य हकर एकनाथ महारा सिद्धान्त बतलाते हैं

> देवासि नाहीं वाचाभिमान । सस्कृत प्र त त्या समान
> ्या वाणी जाहलें ब्रह्मकथन । त्या भाषा श्रीकृष्ण संतोषे

(एकनाथी भागवत २९ १ २९)

अर्थात् भगवान्‌को भाषाका अभिमान नहीं है संस्कृत प्राकृत दोनों उनके लिये समान हैं ि स वाणीसे ब्रह्म कथन होता है उसी वाणीसे श्रीकृष्णको सन्तोष होता है दूसरी बात जात पाँतकी वैदिक कर्ममार्गी जाति बन्धनके विषयमें कडे कट्टर होते हैं अ त्यजसे लेकर ब्राह्मणतकके सब ऊच नीच भेदोंकी ही उनके समीप विशेष प्रतिष्ठा है भागवतधर्मने जात पाँतको न ो बढाया है न उसपर खड्‌ग ही उठाया है भागवत धर्मका यह सिद्धान्त है कि मनुष्य किसी भी वर्ण या जातिमें पैदा हुआ हो वह यदि सदाचारी और भगवद्भक्त है तो वही सबके लिये व दनीय और श्रेष्ठ है एकनाथ महारा कहते हैं

हो का वर्णामाजो अग्रणी । जो विमुख हरिचरणी
त्याहूनि श्वपच श्रेष्ठ मानी । जो भगवद्भजनी प्रेमलु

(नाथ भागवत ५ ६०)

अर्थात् कोई वर्णसे यदि अग्रणी याने श्रेष्ठ हो (ब्राह्मण हो) पर वह यदि हरि चरणोंसे विमुख है तो उससे उस चाण्डालको श्रेष्ठ मानो जो भगवद्भजनका प्रेमी है इस कारण श्रेष्ठता केवल जातिमें ही नहीं रह गयी बल्कि यह सिद्ध न्त हुआ कि जो भगवद्भक्त है वही श्रेष्ठ है कसौटी जाति न ीं रही कसौटी हुई सत्यता साधुता भगवद्भक्ति इस कारण प्राचीन मताभिमानियोंकी य धारणा हो गयी कि यह भागवतधम सम्प्रदाय ब्राह्मणोंकी मान प्रति ा नष्ट करनेके लिये उत्पन्न हुआ है ज्ञानेश्वर महाराजको तग करनेके लि ये ये दो ही कारण थे तुकारामजीको तग करनेके लिये तीसरा और एक कारण उपस्थित हुआ स ही जब श्रेष्ठ हुए तब यह श्रेष्ठत्व केवल ब्राह्मणोंमें न रहा सत जो कोई भी हुआ वही श्रे माना जाने लगा तुकारामजीका सतपना जैसे जैसे सिद्ध होकर प्रकट होने लगा उनके शुद्ध आचरण उपदे और भक्ति प्रेमका जैसे

जैसे लोगोंपर प्रभाव पड़ने लगा वैसे वैसे ही लोग उन्हें मानने और पूजने लगे तुकारामजीके इन भक्तोंमें अनेक ब्राह्मण भी थे जैसे देहूके कु कर्णी महादाजीपन्त चिखलीके कु कर्णी मल्हारप त पूनेके कोंडोपन्त लोहोकरे तलेगाँवके गङ्गाराम मवाळ इत्यादि तुकारामजीकी अमृत वाणी सुनकर ये उनके चरणोंमें भ्रमर से लीन हो गये जिसे जिससे अपनी ईप्सित वस्तु मिलती है उसका उसके पीछे हो लेना स्वाभाविक ही है ोग चाहते थे विशुद्ध धर्मज्ञान और सच्चा प्रेमान द ऐसा गुरु चाहते थे जो भगवान्‌की कथा आ तरिक प्रेमसे बतावे उ हें ऐसे गुरु तुकाराम मिले और इसलिये तुकारामजीको वे पूजने लगे लोगोंको स चे झूठेकी पहचान होती है तुकार म ीके ही पड़ोसमें मम्बाजी अपनी महन्तीकी दूकान लगाये बैठे थे पर ोग जो कु चाहते थे व उनके पास नहीं था इसलिये लोग भी उनकी वैसी ही कदर करते थे मम्बाजी और तुकाराम एक नक ी सि । और दूसरा असली लोगोंने दोनोंको ठी परखा ाराम ीका स्वभाव और प्रेम उन्हें प्रिय हुअ तुकारामजी ातिके शूद्र थे पर दि वे ब्रा ण होते तो भी इतने ही प्रिय होते और यदि अति शूद्र होते ो भी इतने ही प्रिय होते मम्ब जी ब्राह्मण थे पर स्वय ब्र ह्मणोंने भी उनको न ी माना तब क र जीको तग करनेके लिये तीसरा क रण जो उत्पन्न हुआ वह यह था कि तु ाराम शूद्र हैं ब्राह्मण इनके पैर छूते हैं और ये गुरु बनते हैं ब्राह्मणोंके यह बात तो सनातन धर्मके विपरीत है रामे र भ ने तुकारामजीको जो क दिया व इसी कारणसे कि एक तो य शूद्र होकर प्राकृत भाषामें मका रहस्य प्रकट करते हैं और दूसरे ब्राह्मण इनके पैर छूते हैं प्राचीन मताभिमानसे प्रेरित होकर रामे र भट्ट यदि तु ारामजीके विरुद्ध ड़े न होते तो और कोई वैदिक ी पण्डि इस कामको करता ज्ञानेश्वर महाराजने सब कष्ट सहकर यह बात सिद्ध कर दी कि र्म रहस प्र कृत भाषामें

प्रकट करनेमें कोई दोष नहीं है और तबसे यह रास्ता खु गया अब यह होना बाकी था कि शूद्र भी धर्म रहस्य * कथन कर सकता है कारण मर्म र स्य चाहे जिस जातिके शुद्धचित्त मनु यपर प्रकट हो । । है इसके ि ये तुकारामजीका तपाया जाना और उस तापसे उनका उज्ज्वल होकर निकलना आवश्यक था वर्णको इस प्रकार तपाकर देखनेका मान रामेश्वर भट्टको प्राप्त हुआ ज्ञानेश्वर और एकनाथकी अलौकिक क्तिसे आल दी पैठण और काशीके ब्राह्मणोंपर उनका पूरा प्रभाव पड़ा और म राष्ट्रमें सर्वत्र भागवत धर्मका जय-जयकार और प्रचार हुआ इस य जयकारका स्वर और भी ऊँचा करके प्रचारका कार्य और आगे बढाकर भागवत धर्मके रथको एक कदम और आगे बढानेका य भगवान् तुकारामजीको दिलाना चाहते थे । इसी प्रसङ्गको ब देखें

३ देहूसे निर्वासन

रामेश्वर भट्टको तुकारामजीके भागवत र्मके सिद्धान्त अस्वीकृत हुए पर इन सिद्धान्तोंके विरो का जो सीधा रास्ता हो स था उस रास्तेको छोड़कर यह टेढे रास्ते चलने लगे उ होंने सोचा य वि देहूमें यक्ति ीर्तन कर है और अपना रङ्ग जमा ा है और यहीं इसके विठ्ठलदेवका भी ्दर है यही जड़ है इसलिये यही अ होग कि हींसे इ को जिस तर से हो भगा दो ऐसा कर दो कि यहाँ य रहने ही न पावे महीपतिबाव भक्तलीलामृत अध्याय ३५ में कहते हैं

मनमें ऐसा विचारकर गाँवके हाकिमसे जाकर कह कि तुका शूद्र जातिका है और शूद्र होकर श्रुतिका र स्य बताया करता है हरि

* मनुस्मृति अध्याय २ श्लो २ ८ २४१ देखिये मनुका यह वचन है कि विद्या रत्न धर्म शिल्प समादेयानि र्वत जहाँसे भी मिले अवश्य ले

कीर्तन करके ुसने भोले भाले श्रद्धालु लोगोंपर जादू डाला है ब्राह्मणतक उसको नमस्कार करने लगे हैं यह बात तो ह ोगोंके लिये लज्जा नक है सब धर्मोको इसन उडा दिया है और केवल नामकी महिमा बताया करता है लोगोंमें इसने ऐसा भक्ति प थ चलाया है कि भक्ति वक्ति काहेकी केवल पाख ड ज न पड ा है

देहूके ग्रामाधिकारीको रामेश्वर भटट्ने चिट्ठी लिखी कि तुकारामको देहूसे निकाल दो ग्रामाधिकारीने यह चिट्ठी तुकारामजीको पढ नायी ब वह बडी मुसीबतमें पडे उस समयके उनके उद्गार हैं

क्या खाऊँ अब कहाँ जाऊँ ? गाँवमें रहूँ किसके ब भरोसे पाटील नाराज गाँवके लोग भी नाराज अब भीख मुझे कौन देगा हते हैं अब यह उच्छृङ्खल हो गया है मनमानी करता है हाकिमने भी यही फैसला कर डाला भले अ दमी ने जाकर शिका की आखिर मु दुर्बलको ही मार डाला तुका कहता है ऐसोंका सङ्ग अ छा नहीं चलो अब विठ्ठलको ढूँढते चल चलें

४ अभंगोंकी बहियाँ दहमें !

तुकारामजी यहाँसे चले सो सीधे वाघोली पहुँचे यही रामेश्वर भटट् र ा करते थे इस समय रामेश्वर भट्ट स्नान करके सन्ध्या पूजामें बैठे थे कारामजी उनके समीप गये और उन्हें दण्डवत् कि ा और बड़े प्रेमसे भग ान्का नामो र करके हरिकीर्तन करने लगे कीर्तन करते हुए उनके मुखसे रा प्रवा अभगवाणी नि ती जाती थी उसके प्रसादकी बात क कही जाय वह प्रासादि निर्म और अभग

भला आदमी यहाँ तुकारामजीने रामेश्वर भ को क है यह सौजन्य है में ए सौम्य व्यङ्ग भी है ो है

इ द्रायणी दह और थ

वाणी सुनकर रामे भट्ट बोले तुम बडा अनथ कर रहे हो तुम्हारे अभंगोंसे श्रुतिका अर्थ प्रकट होता है और तुम हो शूद्र इसलिये ऐसी वाणी बोलनेका तु हें कोई अधिकार नहीं है यह तुम्हारा काम । के विरुद्ध है श्रोता वक्ता दोनोंको नरक देनेवा है आजसे ऐसी वाणी बोलना तुम छोड़ दो

इसपर तुकारामजीने कहा पाण्डुरङ्गकी आज्ञासे मैं ऐसी बानियाँ बोलता रहा हूँ यह वाणी व्यर्थ ही खर्च हुई आप ब्राह्मण ई र-मूर्ति हैं आपकी आज्ञासे अब मैं कविता करना छो दूँग पर अब जो अभग रचे गये उन क रू

रामेश्वर भट्टने कहा तुम अपने अभगोंकी सब हियाँ जलमें ले जाकर ुबा दो

तुकारामजीने कहा आपकी आज्ञा शिरोधार्य है

यह कहकर तुकारामजी देहू ौट आये और अभगोंकी ब बहियोंको पत्थरोंमें बाँ र और ऊपरसे रुमाल लपेटकर इन्द्रायणीके किनारे गये और बहियोंको दहमें डाल दिया अभंगोंकी बहियोंके इस तरह डुबाये जानेकी वार्ता कानों कानों चारों ओर तुरत फै गयी भक्तजनोंको इससे ड़ा दु हुआ और कुटिं खल निन्दक इससे बड़े सुखी हुए नो उ हें ोई ब ी सम्पत्ति मिल गयी हो दूसरोंका कुछ भी हीनत्व देख र जिनकी जीभ नि दा करनेके जोशमें आ जाती है ऐसे लोग तुकारामजीके प स आकर उनक रह तर से उपहास करने लगे कहने गे पहले भाईसे र सब बही ख डुबा और अ रामे र भट्टसे भिड़कर अभग डुबा दिये दोनों फ अपनी फजीहत ही रायी और कोई ोता तो ऐसी हालतमें किसी ो फिर अपना मुँ न दिख चुल्लूभर प नीमें डूब मरता ऐसी ऐसी बातें

नकर तुकारामका हृदय दो टूक हो गया ' मन ही मन उन्होंने सोचा लोग तो ठीक ही कहते हैं प्रपञ्चको मैने ही तो आग लगायी और उसमेंसे बाहर निकल आया इसलिये प्रपञ्चमें जो कुछ मेरी नाम हँसाई हुई हो उससे मुझे क ा ? प्रपञ्च है ही फटहा ! पर इतना सब करके भी यदि भगवान् नहीं मिले इन आघातोंका निवारण यदि उन्होंने नहीं किया दुर्जनोंके मुँ बद नहीं किये और अपने भक्तवत्सल होनेके विरदकी ाज नहीं रखी तो जी करके भी क्या होगा इसलिये भगवान्के ही चरणोंमे, अन्न जल छोडकर चरण चिन्तन करता पड़ा रहूँ यही उचित है आगे उन्हें जो करना हो करेंगे इस प्रकार विचार करके तुकारामजी श्रीविठ्ठल मन्दिरके सामने तुलसीके पेडके समीप एक शिलापर तेरह दिन अन्न जल त्यागे भगवत् चिन्तनमें पड़े रहे

५ उ अवसरके उन्नी अभग

शि पर गिरते हुए उनके मुखसे उन्नीस अभग निकले उस समयकी उनकी मन स्थिति इन अभगोंमें अच्छी तरहसे प्रतिबिम्बि हुई है

हमें भूख लगे यह तो भगवन् बड़े आश्चर्यकी बात है भक्तिकी यह परिसीमा हुई जो दोषोंकी बस्ती कायम हो गयी जागरण किया सो उसका फ यह मिला कि टपटाहट ही पल्ले पड़ी तुका कह है भगवन् अब समझमें आ ा कि मेरी सेवा कितनी नि सार थी

हे भगवन् भूतमात्रमें भगवद्भाव रखते हुए किसी भी प्राणीसे ईर्ष्या द्वेष न करके भूतपति भगवन् आपका ही सदा चिन्त न रते रहनेपर भी (मारे ऊपर भू आवें) हमें पीडा पहुँच वें यह बड़े आश्चर्यकी बा है हमने अ क आपकी जो भक्ति की उसकी मानो यही परिसीमा हु कि हमारे अदर ऐसे दोष आकर बस गये कि लोग

उनके कारण निन्दा और द्वेष करने लगे एकादशी और हरि कीतनके आजतक जो ागरण किये उनका यह फल हाथ लगा कि चित्त छटपटाने लगा पर आपको मै क्या दोष दूँ मुझसे सेव ा कुछ न बन पडी।

सम्पूर्ण जीव भाव जबतक तुम्हारा सेवामें समर्पित नहीं करता हूँ तबतक तुम्हारा क्या दोष ?

अब या तो तुम्हें जोडूँगा या इस जीवनको छोडूँगा

अब फैसलेका दिन आया है मै कविता करूँ य न करूँ ोगोंको कु बताऊँ या न बताऊँ यह सब तुम्हें स्वीकार है या अस्वीकार इसका फैसला अब तुम्हीं करनवाले हो बरबस तो कविता मैं नहीं करूँगा तुम कहो तो तुम ारी हा आज्ञासे तुम्हारे लिये ही कविता करूँगा तुका कहता है अब मुझसे नहीं रहा जाता तुम सुनो इसलिये तो मैं कविता करता रहा तुम नहीं नते तो दोंक यह भूसा मैं कि लिये यथ प ोरूँ अब तो यही करूँगा कि एक ही जगह बैठा रहूँगा तुम स्वय आकर उठाओगे तब उठूँगा तुम्हारे दर्शनोंके लिये बहुत उपाय किये अब और कबतक प्रतीक्षा करूँ ? आ ाका तो अ त हो चला अब इस पार या उस पार जो करना हो कर डालो भगवन् मेरे ये द आपको अच्छे नहीं गते तो अब किसलिये जीभ चलाता फिरूँ ? श दोंमें जब तुम्हारी रुचि नहीं तब तुकाके लिये इनका उपयोग ही क्या रह ? तुम मिलो यही तो मेरा सत्यसङ्कल्प है इसे पूरा न करके प्रसन्नताकी जरा सी झलक दिखाकर छिप जाते हो यही आजतक करते रहे हो अब ऐसा करो कि

तुम प्रसन्न होओ इसीलिये ये कष्ट उठाये अभग रचकर तुम्हारी प्राथना की पर उन सब दोको तुमने यर्थ कर दिया

अब मुझे यह अभय दान दो कि मेरा श द नीचे धरतीपर न गिरे ह व्यर्थ न हो अब दर्शन दो और प्रेम सलाप होने दो

तुम रि प्रेमक श द सुननेके लिये मैं कान गाये बैठा हूँ और सब द छोड़कर मैंने अब तुम्हारा ही फन्द पकड़ा है तुम उदार हो भक्तवत्स हो तुम्हारे इन सब गुणोंका डका बजानेकी ही दूकान मैंने खोल रखी है पर तुम्हीं जब मु से घृणा करते हो ब तो मुझे अपनी दूकान उठा ही देनी पड़ेगी अकेले एक जी का उद्धार तो तुम्हारे ना से हो ही ज यगा पर इन सब लोगोंका उद्ध र हो इसीि ये तो मैंने यह फैलाव फैला रखा है मैं अपने क ोंसे थका न ी हूँ पर भक्तपर आये हुए सङ्कटका तुम नहीं निव रण करोगे तो तुम्हारे नामकी साख नहीं रह जायगी तुम्हारी नि दा होगी और उसे मैं नहीं सुन सकूँगा '

तुम्हारी और तुम रे नामकी दुनियामें हँसायी न हो और तु हारे प्रति लोगोंकी अश्रद्धा न बढे यही ो इतना ही तो मैं चाहता हूँ कुछ माँगन तो हमारे लिये अनुचित है माँगना तो हमारी कुल रीति ही नहीं है पहले जो अनेक ानी भक्त हो गये हैं उन्होंने नि काम भजनका सुन्दर आदर्श सामने रख दिया है उसे मैं दख रहा हूँ उसीको देखकर च रहा हूँ इसलिये मैं कुछ माँगता नहीं हूँ दे ादि सब उप ि योंको तुच्छ करके बुद्धिको आपकी सेवामें लगा दिया है तुक कहता है इस देहको बाँटकर (छत्तीस तत्त्वोंके देहको उन उन तत्त्वोंमें बाटकर) मैं अ ग हो गया हूँ और केवल उपकारके लिये रह गया हूँ

आपके नाम और ख्यातिमें कोई बट्टा न लगे और आपके प्र ति लोगोंकी श्रद्धा बढे इसीलिये आपसे यह प्रार्थना है कि आप प्रकट होकर दर्शन दें और मेरी कवितापर जो आघात हुआ है उससे उसकी रक्षा

करें आपको मैं इतना कष्ट दूँ क्या यह अधिकार मेरा नहीं है ? मैं क्या आपका दास नहीं हूँ

हे प ढरीश यह विचारकर बताइये कि मै आपका द स कैसे नहीं हूँ ? बताइये प्रपञ्चकी होली मैंने किसके लिये जलायी ? इन पैरोंको ोड़कर और भी कोई चीज मेरे लिये थी ? सत्यता है पर धैर्य नहीं है तो वहाँ आपको धीरज बँधाना चाहिये उलटे बीजको ऐसे नहीं जलाना चाहिये कि वह मे ही नहीं तुका कहता है मेरे लिये इह पर ोक और कु गोत्र तुम्हारे चरणोंके सिवा और कुछ भी नहीं है

तुम्हारे चरणोंमें ऐसी अनन्य प्रीति रखते हुए भी मुझे दे निकाला मिले क्या यह उचित है बच्चोंका भार तो माताके ही सिरपर होता है क्या माता अपने बच्चेको कभी अपने पाससे दूर करती है ? इसलिये मेरे माँ बाप श्रीपाण्डुरङ्ग अब दर्शन देकर मेरे जीको ठण्डा करो मैं तुम्हारा कहता हूँ पर इस कहानेकी कोई पहचान मेरे पास नहीं है इसीसे मेरी नाम हँसाई होती है इसीसे मेरी समझमें यह नहीं आता कि तुम्हारी स्तुति भी किससे और कैसे करूँ तुम्हारी कीर्ति भी कैसे सुनाऊँ कारण, इसकी पहचान ही कुछ नहीं कि मैं जो कुछ कहता हूँ वह सत्य है आजतक जो कुछ बकवाद की वह सब व्यर्थ हो गयी शब्द मुँहसे निकला और आकाशमें मिल गया यह देख मैं चकित हो गया हूँ मेरा चित्त तो तुम्हारे चरणोंमें है इसलिये भगवन् ! आओ और ऐसे दर्शन दो कि भव ब धकी ग्रन्थि खुल जाय

तुम्हारे रूपने चित्तको वशमें कर लिया है चित्त अब निश्चि त होकर तुम्हारे ही चरणोंमें है भगवन् ! तुम अशेष सु दर हो तुम्हारा मुख देखनेसे दु खसे भेंट नहीं होती इन्द्रियोंको विश्रा ति मिलती है

तुमसे अ ग होकर भटकनेवालोंको पीड़ा होती है इसलिये भगवन् मुझे दर्शन दो जिसमे भवबन्धकी ग्रन्थि खुल जाय ।'

इस प्रकार श्रीपा डुरङ्ग भगवान्के साक्षात् दर्शनोंकी लालसा लगाये कारामजी देहूमें श्रीपा डुरङ्ग मन्दिरके ामने उस शिलापर चिन्तन रते हुए आँखें बद किये तेरह दिन पड़े रहे इन तेरह दिनोंमें उन्हें अन्न जलकी सुध भी नहीं रही हृदयमें श्रीपाण्डुरङ्गका अखण्ड ध्यान बालक ध्रुवके समान लगा हुआ ।

६ भट्टजीपर दैवी ेप

उधर वाघोलीमें भट्ट रामेश्वरजीपर दैवी कोप हुआ भगवान्का कुछ ऐसा हृदय है कि उनसे कोई द्वेष करे तो उसे वह सह ले स ते हैं पर अपने भक्तका द्रोह उनसे नहीं सहा जाता कस-रावणादि हरि द्रो ी अन्तमें मुक्ति पा गये पर भक्तका द्रोह करनेवाला यदि समय रहते सावधान होकर पश्चात्तापको न प्राप्त हो और उसी भक्तिकी शरण न ले तो वह निश्चय ही नरकगामी होता है सब प्राणियोंके हितमें र रहनेवाले मन वच कर्मसे सबका हित साधनेवाले महात्माओंका अन्त करण सबके अन्तर यापे रहता है इस कारण उ हें गा हुआ का भूतपति भगवान्को ही जाकर लगता है और उससे क्षोभ हो ा है इसलिये साधु द्वे के समान कोई पाप नहीं रामेश्वर भट्ट वाघो ीसे पूनेमें नागनाथके द र्शन करने चले नागनाथ बड़ जाग्रत् देवता हैं और रामेश्वर भट्टकी उनमें बड़ी श्रद्धा थी रास्तेमें ही एक स्थानमें अनगडसिद्ध नामके कोई औलिया रहते थे उन्होंने अपने बगीचेमें एक बावली बनवायी थी यह बावली और अनगड ाहका तकिया अब भी वहाँ मौजूद है ज्यों ही इस बावलीमें रामेश्वर भट्ट नहाये त्यों ही उनके सारे रीरमें न होने गी किसीने कहा कि यह उस पीरका कोप है और किसीने कहा कि तुकारामजीसे द्वेष

तु और शिला

करनेका यह परिणाम है रामेश्वर भट्टका स रा रीर जैसे द ध होने गा ताप मनके अनेक उपचार शि योंने किये पर सब व्यथ उनका शरीर उस असह्य तापसे जलने लगा दुर्वासाने अम्बरीषको छला तब दर्शन चक्र उस मुनिके पीछे लगा और उनके होश उड गये (भागवत ९ ४ ५) वही गति तुकारामजीको छलनेवाले र मेश्वर भट्ट की हुई साधुषु प्रहित तेजो प्रह्तुं कुरुतेऽशिवम् साधु पुरुषको हतप्रभ करके उसपर अपना रग जमाने रोब गांठनेवालेका अकल्याण ही होता है यही याय अम्बरीषके आख्यानमें भगवान्ने अपने श्रीमुखसे कथन किया है भगवान्ने फिर यह भी कहा है कि

पो वि । च विप्रा । नि श्रेयसकरे उभे
ते एव दुर्विना स्य कल्पेते तुरन्यथ

तप आर विद्या दोनों साधन ब्राह्मणोंके लिये श्रेयस्कर हैं पर ब्राह्मण यदि दुर्विनीत हो तो ये उलटा ही फल देते हैं अर्थात् अधोगतिको प्राप्त कराते हैं दुर्विनीत ब्राह्मण तपस्वी होकर भी कैसे सङ्कटमें पड़ जाता है यह दुर्वासाके दृष्टा तसे मालूम हो जाता है और दुर्विनीत ब्राह्मण विद्वान् होकर कैसी आफतमें पडता है यह रामेश्वर भट्टके उदाहरणसे स्पष्ट हो ाता है सब उपचार करके भी जब दाह शान्त नहीं हुआ तब रामेश्वर भट्ट आ न्दीमें जाकर ज्ञ नेश्वर महाराजका जप करने लगे

७ सगुण साक्षात्कार, बहियोंका उद्धार

रामेश्वर भट्टको दुष्टताके कारण तुकारामजीपर देशनिकालेकी नौबत अ गयी अपने श्रीविठ्ठल मन्दिर और श्रीविठ्ठल मूर्तिसे बिछुड़नेका समय आ गया। प्रपञ्च और परमार्थ दोनोंसे ही रहे। इस कारण लोगोंकी ब तें सुनने और आजतक किये हुए कीर्तनों और रचे हुए अभगोंपर पानी फिरनेका अवसर आ गया। तब उनके वैराग्य और भगवत्प्रेमका

पारा पूर्ण अशपर चढा वह तेर॰ दिन लगातार अन्न जल त्यागे और प्राणोंकी कोई परवा न कर भगव मिलनकी परम उत्क ठासे प्रतीक्षा करते हुए उस शिलापर आँखें बद किये पडे रहे अब भगवान्के लिये प्रकट होनेके सिवा और उपाय नहीं था भक्तिकी सचाईकी परीक्षा होनेको थी तुकारामजीकी भक्ति कसौटीपर कसी जानेको थी भगवान्की यह प्रतिज्ञा कि तब मैं अपनोंका पक्ष लेकर साकार होकर उतर आता हूँ (ज्ञानेश्वरी ४ ५१) ससारको सत्य करके दिखायी जानेको थी और तो क्या स्वय भगवान्के ही भगवान्पनेकी परीक्षा होनेको थी वेद शास्त्र पुराण सत वचन और भक्तचरित्रकी ाज रखना भगवान्के लिये अनिवार्य होनेसे भगवान् सगुण साकार होकर इस समय तुकारामजीके सामने प्रकट हुए तुकारामजीको उन्होंने दर्शन दिये और दहमें फेंकी हुई बहियोंको उबारा फिर एक बार बार बार सिद्ध हुई वह बा प्रत्यक्ष हुई कि भक्त कार्यके लिये भगवान् अपने अजत्वको हटाकर गुण और आकारमें आकर भक्तोंसे मिलते हैं ससार बडा सशयी है तुकारामजीके इस आपत्कालमें भी यदि भगवान् प्रकट होकर तुकारामजीको न सम्ह ल लेते ो भी कारामजीकी निष्ठा विचलित न होती पर लोगोंकी समझको तो कोई प्रकाश न मिलता देहूमें तुकोबाराय तेरह दिन शिलापर पड़े रहे उ हें दर्शन देकर भगवान्ने उनका सङ्कट हरण किया तुकारामजी अपनी भक्तिके प्रतापसे त्रिलोकीनाथको खींच लाये और उस निराकारसे उ होंने आकार धारण कराया भगवान्से रूप और आकार धारण कराऊँगा निराकार न होने दूँगा' यह जो उनकी असीम भक्तिकी सामर्थ्य का उद्गार है इसकी प्रतीति ससारको क ानेका जब समय उपस्थित हुआ तब श्रीहरिने बालवेष धारणकर उ हे दर्शन दिये और आलिङ्गन देकर उनका पूर्ण सम ान किया तुकारामजीको भगवान्के साक्षात् दर्शन प्राप्त हुए सगुण साक्षात्कार हुआ उस समय भगवान्ने उनसे कहा

प्रह्लादकी जैसे मैंने बार बार रक्षा की वैसे नित्य ही तुम्हारी पीठके पीछे खड़ा हूँ और जलमें भी तुम्हारे अभगोंकी बहियोंको मैंने बचाय है भगवान्के श्रीमुखसे निकली यह वाणी सुनकर तुकारामजी सन्तु हुए और भग न् भी भक्तके हृदयमें अ तर्द्धान हो गये इस समय बाहरसे देखते हुए तुकारामजीका शरीर मृतप्राय हो गया था श्वासो छ्व सकी गति मन्द हो गयी थी हिलना डोलना बद हो गया था कुटिल ख कामियोंने सम । कि सब खतम हो गया पर भक्तोंको उनके चेहरेपर अपूर्व ते दिखायी दे रहा था और मध्यमा वाणीसे नामस्मरण होते रहनेकी न्द ध्वनि भी सुनायी दे रही थी इस प्रकार तेरह दिन बीतने पर गङ्गाराम मवाळ भृति भक्तोंको चौदहवें दिन प्रात काल भगवान्ने स्वप्न दिया कि अभंगोंकी बहियाँ जलपर रा रही हैं उन्हें तुम जाकर ले आओ सब भक्तोंको बड़ा कुतूहल हुआ वे दहकी ओर दौड़े गये और उ होंने बहियोंको लौकीकी तर पर तैरते हुए देखा उनके आश्चर्य और आन दका ठिकाना न रहा वे जोर ोरसे राम कृ ण हरि नाम सङ्कीर्तन करते हुए दसों दिशाएँ गुँजाने लगे दो चार जने पानीमें कूदकर उन बहियोंको निका ले अ ये इधर तुकारामजीने नेत्र खोले तो देखा कि भक्तजन दल बाँधे आनन्दमें बे ध हुए श्रीहरि विठ्ठल नाम सकीतन करते हुए चले आ रहे हैं सर्वत्र आनन्द ही आन द छा गया भक्तोंके आनन्दका वारापार नहीं रहा कुटिल खल कामियोंके चेहरे काले पड गये हवाके झोंकेके साथ कभी इधर कभी उधर झोंका खानेवाले अधकचरोंकी चित्त वृत्तियाँ स्थिर और प्रसन्न हुई पा डुरङ्गका कौतुकी पन यादकर तुकारामजीके हृदयमें वह प्रेमावेग न समा सका और उनके नेत्रोंसे प्रेमाश्रुधारा बहने लगी

८ उस स यके सात अभग

इस अवसरपर तुकारामजीके श्रीमुखसे अत्य त मधुर स त अभग

निकले हैं उनमें भगवान्‌के सगुण दर्शनकी व त स्प ही बता दी है और इस बातपर बड़ा दु ख प्रकट किया है कि भगवान्‌को मैंने कष्ट दिया ये सात अभग अमृ से भरे सात सरोवर हैं उन अभगोंका हि दी गद्य रूपान्तर इस प्रकार है

( )

तुम मेरी दयामयी मैया, हम दीनोंकी छत्र छाया कैसी जल्दी जल्दी ऐसे बालवेषमें मेरे पास आ गयीं और अपना सगुण सुन्दर रूप दिखाकर मुझे समाधान कराया हृदयको शीतल किया (ध्रु०) इन भक्तोंसे भी कृपा करायी जो यहाँ सतोंके चरण लगे मैंने तुम्हें बडा कष्ट दिया इसका मुझे कितना दु ख है सो चित्त ही जानता है तुका कह है मैं अ यायी हूँ ! मेरी माँ मुझे क्षमा करो अब तुम्हें ऐसा कष्ट कभी न दूँगा

(२)

मैंने बडा अन्याय किय ो लोगोंकी बातोंसे चित्तको क्षुब्ध कर तुम्हारा अन्त देख तुम्हारा सत् देखा मैं अधम मेरी जाति हीन तनुको क्षीणकर आँ बद किये तेरह दिन पड़ा रहा सारा भ र तु हारे ऊपर छोड दिया भूख प्यास भी तुम्हे दी योगक्षेम तुम्हींको सौंप दि । तुमने जलमें कागज बचा लि ये जनवादसे मुझे बचा लिया अपना विरद स । कर दिखाया

(३)

अब कोई चाहे तो मेरी गर्दन उतार दे दुर्जन चाहें जैसी पीडा पहुँचावें ऐसा काम कभी न करूँगा जिससे तुम्हें कष्ट हो एक बार मुझ च ण्डालसे ऐसी भू हो गयी कि तुम्हें जलमें खड़े होकर बहियोंको उब रना पडा यह नहीं विचारा कि मेरा अधि कार ही क्या है समर्थपर

भार रखना कैसा होता है मैं क्या जानूँ यह जो कु हुआ अनुचित ही हुआ पर तुका कहता है अब आगेकी सुध लो

(४)

मैं पापी तुम्हारा पार क्या जानूँ ? धीरज रखूँ तो तुम क्या न करोगे मैं मतिम द हीनबुद्धि अधीर हो उठा पर हे कृपानिधे तुमने फटकार बताकर मुझे अलग नहीं कर दिया तुम देवाधिदेव हो सारे ब्रह्माण्डके जीवन हो हम दासोंको दयाकी भिक्षा क्यों माँ ानी पडे तुका कहता है हे विश्वम्भर मै सचमुच पतित ही हूँ जो यह दूसरा अन्य किया कि तुम्हारे द्वारपर धरना देकर बैठ गया

(५)

मुझे कुछ ग्राहने नहीं पकड रखा था न व्याघ्र ही पीठपर चढ बैठा था जो मैंने तुम्हारी पुक र मचाकर आकाश पाताल एक कर डाला दोनों जगह तुम्हें बँट जाना पडा मेरे पास और दहमें भी कहींसे अपने ऊपर चोट मैंने नहीं आने दी माँ बाप भी २तना नहीं सहते जरा से अन्यायपर ही ारे क्रोधके प्राणोंके ग्रा बन जाते हैं सहना सहज न है सहना तो तुम्हीं जानते हो तुका कहत है हे दयालो तुम्हारे जैसा दाता कोई नही मैं क्या बखानूँ मेरी वाणी आगे चलती नहीं

(६)

तुम मातासे भी अधिक ममता रखनेवाले हो च द्रमासे भी अधिक शी हो जलसे भी अधिक तरल हो प्रेमके आन दमय कल्लोल हो हे पुरुषोत्तम तुम्हारी उपमा तुम्हारे सिव किस चीजसे दूँ मैं अपने आपेको तुम्हारे नामपर यो वर करता हूँ तुमने अमृतको मीठा किया पर तु उसके भी परे हो पाँचों तत्त्वोंके उ पन्न करनेवाले सबकी सत्ताके नायक हो अब और कु न हकर म्हारे चरणोंमें अपना मस्तक रखता हूँ तुका कहता है पण्ढरिनाथ मेरे अपरा क्षमा करो

(७)

मैं अपना दोष और अ याय कहाँतक कहूँ विठ्ठल माते मुझे अपने चरणोंमें ले ले यह ससार अब बस हुआ कर्म बड़ा ही दुस्तर है एक स्थानमें स्थिर नहीं रहने देता बुद्धिकी अनेकों तरङ्गें हैं वे क्षण क्षण अपना रग बदलता हैं उनका सङ्ग करते हैं तो वे बाधक बनती हैं तुका कहता है अब मेरा चि ता जा काट डालो और हे पण्ढरिनाथ मेरे हृदयमें आकर अपना आसन जमाओ

प्रथम अभङ्गमें यह स्प ही कह है कि श्रीकृष्णने बालरूपमें आकर प्रत्यक्ष दर्शन देकर आलिङ्गन किया

९ था । महत्त्व

इन सा अभगामृ कुम्भोंमें भरा हुआ प्रेमरस महीपतिबाबा कहते हैं कि अत्यन्त अद्भुत है और सत उसे यथे पान करते हैं हीपतिबाब आगे फिर यह भी बतलाते हैं कि भग ान्ने तुकारामजाके अभगोंकी बहियोंको जलमे बचा लिया यह बात दे विदेशमें फै गयी और इससे भूम डलमें तुकारामजी प्रख्यात हुए महीपतिबाबाका यह कथन मार्मिक और विचारने योग्य है यह बा सचमुच ही इतनी बड़ी है कि उसमें

कारामजी भ ावद्भक्तके नाते दिग्दिगन्तमे विख्यात हुए प्रत्येक महात्माके चरित्रम एक न एक ऐ महान् प्रसङ्ग होता है जिससे उस महात्माके सब सद्गुण तपाये जाकर समुज्ज्व होकर प्रकट होते हैं और वह गत्का सम्मान भाजन और भगवान्के निज प्रेमका अधिकारी होता है श्रीमच्छङ्कराचार्यने का ीमें रहकर सैकड़ों विद्वान् शि ोंको अपने अद्वैत सिद्धान्तका ज्ञान प्रदान किया पर तु उनका गद्गुरुत्व लोकमें भी सिद्ध हुआ और उनकी सत्कीर्ि पता त्रिलोकमें तभी फ रायी ब न मिश्र जैसे दिग्ग को बुद्धि कौ से । र्थमें परास्तकर वह अपने

चरणोंमें ले आये   ज्ञानेश्वर महाराजने भैंसेसे वेद मन्त्र कह वाकर पैठणके विद्वानोंको चकित किया और जड भीतको चलाकर चाङ्गदेव जैसे दीर्घायु तप सिद्ध पुरुषको अपने चरणों लेन्आया तभी सतम डलमें वह मंसस्थापकके नाते पूज्य हुए ि वाजी महाराजने अनेक दुर्ग और रण जीते पर बाजी बदकर आये हुए महाप्रतापी अफजलखाँसे ् होंने प्रतापगढपर नाकों चने चबवाये तभी स्वजनों और परजनोंपर भी उनकी धाक जमी और लोग उ हें महापराक्रमी स्वराज्य सस्थापक मानने लगे इसी प्रकार तुकाराम महाराजकी भी बा है रामेश्वर भट्टसे उनकी जो भिड़न्त ो गयी उससे रामेश्वर भट्ट जैसा वेद वेदान्त वेत्ता षट्‌श स्त्री और मंठ ब्राह्मण तुकाराम म ाराजकी अ ौकिक भक्ति साम र्थको देखकर अन्तको उनकी रणमें आ ही गया और जिस सगुण भक्तिका डका बजाते हुए उन्होंने सैकडों कीर्तन नाकर और सहस्रों अभग रचकर लोगोंको भक्ति मार्गपर च ानेका कङ्कन हाथमें बाँध था उस गुण भक्तिके उत्कर्षके लिये भगवान्‌ने स्वय सगुणरूप धारणकर उनकी बहियाँ ज से बचायीं और उन्हें प्रत्यक्ष दर्शन देकर उनकी बाँह पकड़ ली तभी उनकी और भागवतधर्मकी वि य हुई और भक्तोत्तम-मालिकामें तुकाराम महाराजका नाम सदाके लि ये अमर हो गया

१० रामेश्वर भ शरणागत

ज्ञानेश्वर महाराजकी चरण सेवामें लगे हुए रामेश्वर भट्टको एक दिन रातको स्वप्न आया कि महावै णव तु ारामसे तुमने द्वेष किया इस कारण म्हारा सब पु य नष्ट हो गया है सत छलनके पापसे ही तुम्हारी देह   र ी है इसलि ये अ त करणको निर्मल करके सद्भावसे तुक राम की ही रणमें ाओ इससे इस रोगसे ही नहीं भवरोगसे भी मुक्त हो जाओगे इसे ज्ञाने र महारा का ही आदेश जानकर रामेश्वर भट्ट अपने कियेपर बहु   ये इसी बीच उ हें य वार्ता न पड़ी कि दहमें

फेंकी हुई अभगकी बहियाँ जलसे भगवान्ने उबार ी तब तो उनके पश्चात्तापका कुछ ठिकाना ही न रहा ! वह फूट फूटकर रोने लगे . उनकी आँखें खुल गयीं और उनका सौभाग्य उदय हुआ . उनके चित्तमें य बात जम गयी कि भक्तिके सामने वेदाभ्यास और पाण्डित्य कोई चीज नहीं है नर देहकी सार्थकता सत्सङ्ग करते हुए भगवान्का प्रसाद पानेमें ही है उन्होंने यह जाना कि तुकाराम भगवान्के अत्यन्त प्रिय महान् विभूति है और यह जानकर उनका अहङ्कार चूर चूर हो गया भक्तका कार्य बनानेके ि ये स्वय भगवान् साकार होते हैं और हमारे पा ाडत्यमें इतनी भी साम र्य न ी कि भक्तके ापसे होनेवाले दाहका शमन कर सकें यह जानकर उसका अभिमान पानी पानी हो गया चित्तसे दुरभिमान जब चला गया तब र मेश्वर भट्ट जो पहले शुद्ध ही थे और भी शुद्ध हो गये तुकोबारायके प्रति उनके चित्तमें बड़ा आदरभाव जमा तुकाराम महाराजकी रणमें वह गये एक पत्र लिखकर अपना सारा कच्चा चिट्ठा उन्होंने तुकाराम महाराजको निवेदन किया और गद्गद अन्त करणसे उनकी बडी स्तुति की तुकारामजीने उसके उत्तरमें यह अभग लिख भेजा

चित्त शुद्ध तरी शत्रु मित्र होती । व्याघ्र हे न खाती सर्प तया १
विष ते अमृत आघात ते हित । अकतव्य नीत होय त्यासी ध्रु
दु ख त देईल सर्वसु फळ । होती होती शीतळ अग्नि-वाळा २
आवडेल जीव जीव चिंये परो । सकळ ॐ तरी एक भाव ३
तुका म्हणे कृप केली नारायण । जाणिजेते येणे अनुभव ४

अपना चित्त द्ध हो ो त्रु भी मित्र हो ते हैं सिंह और साँप भी अपना हिंस भाव भूल जाते हैं विष अमृत होता है आघात हित होता है दूसरोंके दु र्यवहार अपने लिये नीतिका बो करानेवाले होते हैं दु सर्वसुख रूप फल देनेवाला बन । है आगकी लपट

ढ डी ठ डी वा हो जाती है जिसका चित्त शुद्ध है उसको सब जीव अपने जीवनके सम न यार करते हैं कारण सबके अ तरमें एक ही भाव है तुका क०ता है मेरे अनुभवसे अ प यह जान कि नारायणने ऐसी ी आपदाओंमें मुझपर कृपा की

२स अभङ्गको रामेश्वर भट्टने पढा और फिर पढा और खूब मनन किया बात उ हें जँच गयी अनुतापसे दग्ध हुए उनके चित्तमें बोधका य० बाज जमा उनके शरीर और मनका ताप भी उससे शमन हुआ रामेश्वर भ अब वह रामेश्वर भट्ट न रहे वह तुकाराम महाराजके चरणोंमें लीन हो गये अब रामेश्वर भ८ तुकारामजीके साथ ही निर तर रहना चा०ते हैं और उस अजातशत्रु महात्माको यह मजूर है इस प्रकार तुकारामजीका विरो करने चले हुए रामेश्वर भ८ उनके शिष्य बन गये तुकारामजी पारस थे लोहा पारसपर आघात ०ी करे तो इससे पारसको क्या ? आघात करनेवाल लो०ा भी पारसके स्पर्शमा३से सोना हो जाता है तुकारामजीके स्पर्शसे रामेश्वर भ८की कायापलट हो गयी

११ रामेश्वर भट्टके चार अभङ्ग

रामेश्वर भट्टके चार अभङ्ग प्रसिद्ध हैं जो उ होंने तुकाराम महाराज के सम्ब मे कहे हैं कहते हैं मुझे तो २सका खूब अनुभव हुआ कि मैंने जो उनका द्वेष किया उससे शरीरमें याधि उत्पन्न हुई बडा क ट पाया और जगमें ०सी भी हु२ य० कहकर आगे बतलाते हैं कि कि प्रकार ज्ञानेश्वर महाराजने स्वप्न दिया और उसके अनुसार मैं उनकी रणमें आ गया हूँ और तबसे मैं नित्य उनका कीतन सुनता हूँ उनकी कृपासे मेरा शरीर नीरोग हो गया अपने दूसरे अभङ्गमें रामेश्वर भ८ यह बतलाते हैं कि भक्तकी जाति पाँति को२ न पूछे भक्त किसी भी वर्णका हो उसके पैर छूनेमें को२ दोष न०ी गुरु परब्रह्म हैं उन्हें

नुष्य ानना ी न चाहिये कारण ो श्रीरङ्गके नामरगमें रग गये वे ीरग ही हैं

उचनीच वणन म्हण ा कोणी । जे का नार यणीं प्रिय झाले १
चहू व सी ्। असे अधिकार । करिता नमस्कार दोष नाही २

जो ोई न रायणके प्रिय हो गये उनका उत्त य कनिष्ठ वर्ण था चारों वर्णोंका यह अधिकार है उ हें नमस्कार करनेमें ोई दोष न ीं

य् स्वीकृति दी है वेदवेदा तपारग श्रीरामेश्वर भट्टने जिन्होंने अपने अनुभवसे श्रीतुकाराम हाराजकी अ रग ँकी देखी ीसरे अभङ्गमें उ होंने काराम महारा की ता बखानी है यह तुकाराम ौन हैं ब्रह्मानन्द छ दसे ब्रह्म ल्य बने हुए काराम हैं विश्व सखा हैं वह विश्व सखा ही विश्वमें ह लीला कर रहे हैं विश्व सखा कहकर रामेश्वर भट्टने उनकी लोकप्रियता भी सूचित की है फिर य कह है कि धर्मको क्षयरोग लगा था उसे इस न्व तरिने दूर किया कारामजीका आचरण देखकर रामेश्वर भट्ट क ते हैं हे भक्तराज ा और शि ाचारका इसमें कहीं भी विरोध नहीं है

तुकाराम महाराजने र मेश्वर भट्टके कथनानुसार ब्रह्मैक्यभावसे भक्तिक विस्तार किया अर्थात् अद्वैत सिद्धा तको पकड़े रहकर भक्ति ोत बहाया देव द्विजोंकी सर्वभावसे पू ा की देवताओं और ब्राह्मणों की भक्ति भा से सेवा की शान्ति स ीसे उ होंने विवाह रचा माकी मूर्ति अपनी देहमें ही खडी की दयाकी प्राणप्रतिष्ठा की स र अज्ञानतिमिर न करनेके ि ये सतरूप ग्रह म डलमें तुकाराम सूय ही उदीयमान हुए इत्यादि प्रकारसे रामेश्वर भट्टने इस अभङ्गमें तुकाराम हाराजकी स्तुति की है और य् पश्चात्ताप किया है कि दे्बुद्धिके कार

था वर्णाभिमानसे मैंने आपको नहीं ज ना और बड़ा कष्ट पहँचाया पर अ प दया न हैं मु रण दीजिये अब मेरी उपेक्षा म कीजिये पश्चात्तापपूर्वक ऐसी विनय करते हुए अभङ्गके अ तिम चरणमें अपने आराध्य देव श्रीरामच द्रसे यह प्राथना की है कि इन चरणोंमें मेरी ओरसे द्धिका कोई व्यभिचार न हो अर्थात् महाराजके चरणोंके प्रति मेरे अन्त करणमे जो यह निमल भाव उत्पन्न हुअ है वह कभी मलिन न हो

र मेश्वर भ इस प्रकार रूपान्तरित हो गये रामेश्वर भट्ट विद्वान् मनिष्ठ ब्राह्मण थे पर तुकाराम महाराजके सामने उनके ज्ञान कर्म हाथ जोड़कर खड़े हो गये और चित्त श्रीतुकारामजीके चरणोंमें ीन हो गया रामेश्वर भट्ट थमें करताल ि ये तुकारामजीक पीछे खड़े होकर नाम सकीर्तनमें उनका साथ देनेमें ही अपना अहोभाग्य समझने गे रामेश्वर भट्ट स्वभावसे तो शुद्ध ही थ बीचमें अहङ्कारसे उनकी बुद्धि मलिन हो गयी थी गुरुके दर्शनोंसे उनकी मैल कट गयी और उनके नेत्र खुले।

रामेश्वर भ क चौथा अभङ्ग तुकाराम महाराजके सदेह वैकुण्ठ गमनके बादका है रामेश्वर भट्टने श्रीतकाराम महाराजके चरण ो एक बार पकड लिये फिर उ होंने उ हें कभी न छोडा दस पद्रह वर्ष कारामजीके सङ्ग रहे इतने दीर्घकालतक ऐसा अपूर्व सत्सङ्ग लाभ करनेके पश्चात् ही उनका चौथा अभङ्ग बना है तुकारामजीकी वाणीको उ होंने मुँह भरकर अमृत कहा है और इस अमृतकी नित्य वर्षा का अनुभवान द यक्त किया है अन्तमें कहा है भक्ति ज्ञान और वैराग्यका ऐसा परम शुभ सयोग इन आँखोंने अ यत्र नहीं देखा रामेश्वर भट्टकी यह सम्मति जगन्मा य हुई श्रीकृष्ण दर्शन नन्दमें नित्य रमण करनेवाले अन्तराराम श्रीतुकाराम और उनके चरण चञ्चरीक बनकर उनके स्वरूपमें समरस हुए पण्डित श्रीरामेश्वर भट्ट दोनोंको अनन्यभावसे व दन कर इस प्रसङ्गको यहीं समाप्त करते हैं

१२ समाध न

इस प्रसङ्गके पश्चात् तुकारामजी स्वानुभवके आन दके साथ यह कहनेमें समर्थ हुए कि मैंने भगवान्‌को देखा है ' एक बार श्रीकृष्णने उन्हें अपने बालरूपकी झाँकी दिखायी तबसे उ हें भगवान्‌के चाहे जब च ़े जहाँ दर्शन होने लगे य़ कहनेकी आवश्यकता नही भगवान् भक्तके कैसे दास बन जाते हैं कि निर्गुणमें सदा छिपे रहनेवाले आवाज देते ही सामने आकर खडे हो गये तुकारामजी बतलाते हैं कि भगवान्‌की जब कृपा हुई तब देह सङ्ग रह ही नही गया निज यासका ही रग चढता गया भगवान्‌के पहले दर्शन हुए पीछे भगवान् मुझसे मिले मेरे प्राणधन मुझे मिले तुमलोग भी भगवान्‌के चरणोंको पकड़ रखो तो तुम्हें भी भगवान् मिलेंगे तुकाराम महाराजके कीर्तनोंमें अब ऐसी स्व नुभव रसभरी बातें सुनकर श्रोताओंको अभूतपूर्व आन दोत्स ह अनुभूत हे ने लगा जनाबाई नामदेवराय एकनाथ आदि सतोंको जो भगवान् मिले वह मुझे भी मिले अब मेरी थकावट दूर हो गयी अब सतोंके सामने अपना मुँह दिखा सकता हूँ तुकारामजीने अपने मनमें कभी ऐसा कहा भी होगा भगवान्‌के मिलनेके बाद उस मिलनका आन द उनके कई अभङ्गोंमे व्यक्त हुआ है

आता कोठें धावे मन । तुझे चरण देखिलिया १
भाग गेळ शीण गेला । अवघा झाला आनन्द ध्रु

तुम्हारे चरण देखे अब मन कहाँ दौड़कर जायगा ? थकामाँदापन ब निकल गया अब केवल आन द ही आन द है

न हावें तें झालें देखियेले पाय । आता फिरूँ काय मागें देवा १
बहु दिस होतों करीत हे आस । तें आलें सायासें फळ आजि २ ।

जो कभी न होनेकी बात सो ही हुइ भगवान्के चरण (इन आँखोंसे) देख लिये अब क्या भगवन् पीछे फिरकर ाना है बहुत दिनोंसे यह आस लगी हुई थी सो आज पूरी हुई सब परिश्रम सफल हो गये

* *

श्रीकृष्ण दर्शनसे नेत्र खु कर कृ णाञ्जनसे समुज्ज्वल हो गये भगवान्का जो बालरूप देखा वही नेत्रोंमें स्थिर हो गया वह छवि आँखोंमें ऐसी सम गयी कि ब र बार उसीकी स्मृति होती है उस दिव्य दर्शनके स्मरण और निदिध्यासका आनन्द बढता ही गया ऐसी तन्मयता हो गयी कि

तुका ह्मणे वेध झाळ । अगा आला श्रीरंग

तुका कहता है लौ लग गयी और अङ्ग अङ्गमें श्रीरङ्ग समा गये चौसरके एक अभङ्गमें तुकारामजी कहते हैं कि चित्तकी उलटी चालमें मैं भी फँस गया था मृगजलने मु भी धोखा दिया था पर भगवान्ने बड़ी कृपा की जो मेरी आँखें खो दीं फिर तुमने मेरी गु ार सुनी इससे मैं निर्भय हो गया हूँ

स साधारण जीवोंको भक्तिकी शिक्षा देते हुए तुकारामजीने कहीं कहीं स्वानुभवका भी वा । दिया है

धीर तो कारण । साह्य होतो नार यण ।
होऊ नेदी शीण । वाहू चिता द सासी १
सुखें करावें कीतन । हर्षे गावे हरिचे गुण ।
वारा सुदर्शन । आपणचि कळिकाळा ध्रु
जीव वेंची म ता । बाळा जड भारी होता ।
हा तो नव्हे दाता । प्राकृता या सारि । । २

हें तो माझ्या अनुभवें । अनुभवा आलें जीवें ।
तुका म्हणे सत्य व्हावें । आहाच नये कारण । ३

नारायणके सहाय होनेमें धैर्य ही कारण है (धैर्यके साथ भक्तिपूर्वक साधना करनेसे नारायण तो सहाय होते ही हैं) वह अपने भक्तको दुखी नहीं करते अपने दासकी चिन्ता अपने ही ऊपर उठा लेते हैं सुखपूर्वक हरिका कीर्तन करो हर्षके साथ हरिके गुण गाओ (कलिकालसे मत डरो) कलिकालका निवारण तो सुदर्शनचक्र आप ही कर लेगा बच्चोंका बोझ जब भारी हो जाता है तब माता उन्हें भी छोड देती है पर भगवान् ऐसे प्राकृत जीव नहीं हैं (व अपने भक्तोंको कभी छोड़ते ही नहीं) यह बात तो मैं अपने अनुभवसे कहता हूँ तुका कहता है जो सच है वह सच ही है वह कभी व्यर्थ नहीं होता

ससारियोंके लिये भक्ति पथका रहस्य तुकारामजीने इस अभङ्गमें बहुत थोड़ेमें और बड़े अच्छे ढगसे बता दिया है

अवध्या दशा येणेंचि साधती । मुख्य उपासना सगुणभक्ति ।
प्रगटे हृदयीं ची मूर्ति । भावशुद्धि जाणोनिया १
बीज आणि फळ हरीचें नाम । सकळ पुण्य सकळ धर्म ।
सकळा कळा चें हे वर्म । निवारी श्रम सकळही ध्रु
जेथें हरिकीर्तन हें नाम घोष । करिती निर्लज्ज हरिचे दास ।
सकळ वोथबले रस । तुटती पाश भवबधाचे २
येती अगा वसती लक्षणें । अतरीं देवें धरिलें ठाणें ।
आपणचि यती तयाचे गुणें । जाण येणें खुटे वस्तीच ३
नलगे सांडवा आश्रम । उपजले कुळींच धर्म ।
आणीक न करावे श्रम । पुरे एक नाम विठोबाचें ४

वे.पुरुष नारायण । योगियाच ब्र शून्य ।
मुक्ता आत्मा परिपूण । तुका ९णे सगुण भोळ्या अ हा ५ ।

मुख्य उपासना सगुण भक्ति है इससे सभी अवस्थाएँ सध जाती हैं इससे शुद्ध भाव जानकर हृदयकी मूर्ति प्रकट हो जाता है हरिका नाम ही बीज है और हरिका नाम ही फल है यही सारा पु य और सारा धर्म है सब कलाओंका यही सार मर्म है इससे सब श्रम दूर होते हैं ज९ँ हरिके दास लोक ाज छोड़कर हरि कीर्तन और हरि नाम स‍कीर्तन किया करते हैं वहां सब रस आकर भर जाते हैं और ससरके बाँ लाँघकर ब९ने गते हैं जब भगवान् अदर आकर अ सन जमाकर बैठ ज ते हैं तब उनके कारण उनके सभी लक्षण भी आप ही आकर बस जाते हैं फिर इस मृत्युलोकक मरन जीना अ ना ाना कुछ नहीं रह ज ता इसके लिये अपने आश्रमको या जिस कुलमें पैदा हुए उस कुलके धर्मको छोड़नेकी को२ आव२यकत नहीं और कु भी न ी करना पड़ता केवल एक विट्ठल (बाल श्रीकृष्ण) का नाम काफी है वेद जिसे पुरुष या नारायण क ते हैं योगियोंका ो शून्य ब्रह्म है मुक्त जीवोंका जो परिपूर्ण आत्मा है तुका कहता है २म भोलेभाले जी ोंके ि ये सगुण (साक र श्रीविट्ठ श्रीबा कृष्ण) हैं

श्री रिके इस सगुण रूपकी भक्ति ही भगवत् भक्तोंकी मुख्य उपासना है नाम स्मरण सम्पूर्ण पु य म फ और बीज है नि नाम सकीतनमें सब रसोंका आन द एक साथ आ ा है जिसके हृदयमें भगवान् आकर बैठ गये उसमें ज्ञानीके सभी क्षण आप ही आ र टिकते हैं अपना अ श्रम या कु धर्म आदि छोड़नेका कुछ क म नहीं केवल हरि नाम ही उद्धारका साधन है चित्तके शुद्ध होते ही हृदयसे ि स मू का ध्यान करते हों वह मूर्ति स मने आ र ड़ी ो जाती है

रामेश्वर भट्ट तुकाराम महाराजके अनुगामी बन गये पर उनके प्रति तुकारामजीकी विनयशीलतामें कोई फर्क न पड़ा। तुकारामजी उनके पैरोंपर गिरते थे। भक्तलीलामृतकार अध्याय ३७ में कहते हैं—

रामेश्वर सा ब्राह्मण तुकारामजीका सम्प्रदायी बना, पर इस विदेही महात्माको देखिये कि वह रामेश्वरके चरणोंपर गिर गिर पड़ते हैं। महंतपना तो इन्हें छू नहीं गया। यह जानकर भी कि यह मेरा शिष्य है वह रामेश्वरको देवतके समान ही मानते थे। इसीको कहना चाहिये अद्वैत भजनसे परम शान्तिको प्राप्त जगद्गुरु पूर्ण ज्ञानी।

१३ मध्यम खण्डका उपसंहार

श्रीतुकाराम महाराजके चरित्रका यह मध्यम खण्ड यहीं समाप्त होता है। इसलिये अब किञ्चित् सिंहावलोकन कर लें और फिर उत्तर खण्डको आरम्भ करें। पूर्वखण्डमें मंगलाचरणके अनन्तर कालनिर्णय, पूर्ववृत्त और संसारका अनुभव, ये तीन अध्याय हैं और इनमें महाराजके इक्कीसवें वर्षतकका चरित्र कथन किया गया है। तुकारामजी संसारके कटु अनुभवोंसे इस संसारसे उपराम होने लगे यहाँतकका विवरण इस खण्डमें आ चुका है। उनके परमार्थ साधनका इतिहास मध्यखण्डमें आ गया। महाराज जिस साधन सोपानसे सगुण साक्षात्कारतक चढ गये वह साधन क्रम पाठकोंकी समझमें अच्छी तरहसे आ जाय और उससे उन्हें भी यह मार्ग दिखायी देने लगे इसलिये इस खण्डमें उसका विस्तार किया है और यह विस्तार भी महाराजके वचनोंके सहारे किया है जिसमें मुमुक्षु साधकोंके लिये यह खण्ड पर्याप्तरूपसे बोधप्रद हो। इस खण्डके चौथे अध्यायमें "याति शूद्र वैश्य केला वेवसाय" (जातिका शूद्र हूँ और वैश्यकी वृत्ति की) इस अभङ्गको ही आधार बनाकर और इसीको बीज न्याय मानकर उसपर (१) वारकरी सम्प्रदायका साधन मार्ग (२) ग्रन्थाध्ययन (३) गुरुकृपा और कवित्व स्फूर्ति (४) चित्त

शुद्धिके उपाय (५) सगुण भक्ति और दशनोक्त ठा (६) श्रीवि ल स्वरूप तथा (७) सगुण साक्षात्कार इन सात अध्यायोंकी सप्तपदी ड़ी की है पाँचवें अध्यायमें पाठकोंने वारकरी सम्प्रद यका स्वरूप देखा और एकादशी व्रत प ढरीकी वारी हरि कीतनका आन द नि कपट भक्तिभावका मर्म तथा परोपकारका अभ्यास इन विषयोंकी आलोचना की ठे अध्यायमें अ त प्रमाणों के साथ यह देखा कि तुकाराम ीने किन वि न ग्र थोंका अध्ययन किया था और अ ययनके म त्वकी ओर पूरा ध्यान देते हुए यह भी देख कि तुकारामजीने कैसी अवस्थाके साथ मूलमें ी गीता भ गवत कु पुराण वि णुसहस्रनामादि स्तोत्र तथ नेश्वरी एकनाथी भागवत अ दि ग्र थोंका कितनी बारीकीके साथ अध्ययन किया था और नित्य पाठ भी व(कितनी गनके साथ करते थे और फिर अन्तमें यह भी देखा कि तुकारामजीको ज्ञानेश्वर और एकना से अलग नेका कुछ आधुनिक विद्वानोंका प्रयत्न कितना बेकार और नि सार है ७ वें अ यायमें गुरु कृपा और कवित्व स्फूर्तिका विवेचन हुअ है पहले सद्‌गुरु कृपाका महत्त्व तुकारामजीकी गुरु दर्शन ालस बाबाजी चैतन्यद्वारा स्वप्नमें उपदेश फिर कारामजीकी त्रयी पर पराकी दो श खाएँ केशव और बाबाजीका एक ही यक्ति न होना बगा के श्रीकृ णचैत यसे तुकारामजीकी भक्तिके आविर्भावकी ल्पनाका अप्राम णिकत्व इन बातोंकी चर्चा की है ८ वें अ यायमें चित्त शुद्धिके उपाय मुख्यत स कोंके लिये विस्त रपूर्वक लिखे गये हैं तुकारामजीकी विरागता और सावधानता उन ी साधन स्थितिका मर्म और उनकी ोकप्रियताका रहस्य इत्यादि बातोंको देखते हुए यह दे ा ि तुकार मजीने किस प्रकार अपने मनको जीता जन सङ्ग और दु नोंकी उपाधिसे उकताकर उ होंने कैसे एक तवास किया और एकान्तका आनन्द लूटा अपने दोषोंको भगवान्से निवेदन करके उन्हें

कैसे कैसे पुकारा और सत्सङ्ग तथा नाम सकीर्तनके द्वारा कैसे साधनोंकी सब सीढियाँ चढ गये यह सम्पूर्ण अध्याय साधकोंके लिये अत्यन्त बोधप्रद होगा नवें दसवें और ग्यारहव अध्यायमें भगवान्‌के सगुण साकार-साक्षात्कारके अत्य त मधुर और मनोहर प्रसङ्गका वणन किया है नवें अध्यायमें भक्ति मार्ग ही सबसे श्रेष्ठ क्यों है तथा सगुण और निगुण किस प्रकार एक ही हैं यह बतलाकर तुकारामजीकी सगुणनिष्ठा कैसी दृढ थी यह देखा है तुकारामजीके उपास्यदेव श्राविट्ठ हैं इसलिये विट्ठल श द कैसे बना इसे देख लिया है और यह दिखलाय है कि ज्ञानेश्वरीमें विट्ठल नामक उल्लेख न होनेसे कुछ आधुनिक विद्वान् जो यह कहने लगते हैं कि ज्ञानेश्वरीसे वारकरी सम्प्रदायका कोई लगाव नहीं है वह कितना अप्रामाणिक और नि सारवाद है फिर तुकारामजी मूर्तिपूजक थे और मूर्ति पूजामें कि ना बड़ा रहस्य छिपा हुआ है इन बातोंका विचार करके तुकारामजीकी भगवद्दर्शन ला सा भगवान्‌से उनकी प्रेमकलह और मिलनकी निश्चयाशा और निर तर प्रतीक्षाके मधुर प्र ङ्गोंका वर्णन किया है वें अध्यायमें श्रीवि ल भगवान्‌का स्वरूप देखा प ढरपुरकी श्रीविट्ठल मूर्तिको निहारा सतोंके वचनोंको अवलोकन किया और यह ाना कि श्रीविट्ठ गोप वेष धारी श्री ·कृष्ण ही हैं १ वें अध्यायमें रामे र भट्टका प्रसङ्ग छि ड़ा जिसके निमित्तसे भगवान्‌ने बालरूपमें तुकारामजीको दर्शन दिये रामेश्वर भट्टकी योग्यत था उनके विरो में प्रवृत्त होनेके भावोंका विश्लेषण करते हुए इस बा क विवेचन किया कि कर्मठोंके विरो से इसी प्रकार भागवत मका सद जय जयकार होत च ा आया है फिर तुकार म मह राजके वचनोंके ही आधारपर यह देखा गय कि तुकारामजीने अपने अभङ्गोंकी पोथियाँ इन्द्र यर्णके दहमें डुबा दी ी और स्वय भगवान्‌ने उनकी रक्षा की रामजीकी अ ल् भगवत मं ी विजय हुई और रामेश्वर भट्ट

उनकी रणमें आ गये इन अ यायोंमें सत्सङ्ग सत्‌ शा गुरु कृपा और सगुण साक्षा कार इन चार मजिलोंको प र करके तुकारामजी कृतकृत्य हुए यहाँतक हमलोग आ गये अब पाठक इस मध्यख डमें जो आत्म चरित्र अध्याय है उसे फिर एक बार देख लें विशेषकर याती शूद्र वैश्य केला वे साय (जातिसे शूद्र हूँ और ति वैश्यकी की) इस अभगका विवरण तो अवश्य ही पढ लें इससे पाठकोंके ध्यानमें यह बात आ जायगी कि यही अध्याय इस मध्य ख का बीजाध्याय है रामेश्वर भट्टने जो उप ी उ ी प्रसङ्गसे तुकारामजीको भगवान्‌के सगुण क्षात्कारका परमलाभ हुआ

आ चरित्र अध्यायमें तुकाराम ीने जो यह कहा है कि निषेधका कुछ आघा लगा उससे जी दुखी हुआ बहियाँ डुब दीं और रना देकर बैठ गया तब नारायणने समाधान किया (६) इसका मर्म अ पाठकोंकी सम में आ गया होगा इसके बाद तुकारामजी कहते हैं

भक्तकी उपेक्ष नारायण कदापि नहीं करते वह ऐसे दयालु हैं यह अ मेरी सम में आ गयी (१) अब जो कुछ है सामने ही है आगेकी भगवान्‌ जानें (१८)

उसे हमलो ा आगेके ण्डमें देखें

बारह ँ अ या

मेघ वृष्टि

शैले शि ा ले गिरे श्रृङ्गेषु "
ि ण्डे विभी के ा पू" रिक्ते
स्निग्धे ध्वनि ारि ले पि ती ` षतो
वन्दे ारद ार्वभौम ो ि श्रो ि म्

१ लो गुरुत्वका अधि ार

सगुण स क्षात्कारका अलौकिक आलोक सारे रीरपर जगमगा रहा है इन्द्रियोंसे ा तिकी दि य ीतल छटा छिटक रही है प्र रतर वैराग्य के सब लक्षण देहपर देदीप्यमान हो रहे हैं प्रात यकी प्राप्तिका प्रेममय माधान नेत्रोंमें चमक रहा है ऐसी व तुकारामजीकी श्याम सुन्दर छबि जिन नेत्रोंने नि री होगी वे नेत्र सचमुच ही धन्य हैं श्रीतुकोबा रायके मुखसे इसके अनन्तर सतत पद्रह वषतक जो सुधा ारा प्रवाहित ोती रही उसमें डूबकर उस परम रसका आस्वादन करनेका सौभा य जिन प्रेमी रसिक श्रोताओं ो प्राप्त हुआ होग उनके सौभाग्यकी क्या प्रशसा की

भगवान्की नी हुई बातें सुननेवाले बहुत मिलते हैं पर जिसने भगवान्को देख हो भगवान्का वरद हस्त अपने मस्त पर रखाया हो भगवान्से जिसने एका त किया हो ऐसे स्वानुभवसम्पन्न परम सिद्ध भगवद्भक्तको जिन्होंने देखा हो उसके श्रीमुखसे श्रीहरि कीर्तन और हरि ीला नी ो सद चार ज्ञान और ैरा यका उपदेश श्रवण किया हो वे सचमुच ही ड़े भा यवान् हैं देहू और पूना और पूण महाराष्ट्रका र भाग्योदय हुआ जो तुकाराम महाराज अपने श्रीविठ्ठल मन्दिरसे भक्ति

भावके उत्तमोत्तम वस्त्राभरण निर्माणकर प ढरपुरके हाटमें भेजने लगे तुकारामजीकी वाणी अब विरहिणी न रही स्वानुभव प्राणसे सनाथ होकर प्रेम मिलनके अ न दमें नृत्य करनेवाली हुई अब उनकी वाणीसे प्रिय मिलनके प्रेमानन्द सागरकी लहरें निकल निकलकर श्रोताओंके हृदयोंपर गिरने लगी और लोग यह मानने लगे कि ीवके उद्धारक उपदे करनेका अधिकार इ हीको है इनकी सत्यता तपाये हुए सोनेकी भाँति अपनी समुज्ज्वलतासे लोगोंके चित्तको अपनी ओर खींच चु ी थी और इस कारण दाम्भिक दुर्जनोंपर इनका जो वाक् प्रहार उन्हींके उद्धारके निमित्त हुआ करता था उससे लोग सावधान और शुद्ध होने लगे और झूठका बाजार उजड़ने लगा सर्वत्र तुकारामजीका बोलबाला हुआ उन्हींके बोल बोले जाने लगे

आपण जेऊन जेववी लोका । सन्तर्पण करी तुका

स्वय जीमकर लोगोंको जिमाता है ऐसा सन्तर्पण तुका करता है इस विलक्षण उक्तिका प्रत्यक्ष लक्षण अब लोगोंने देख लिया

देहूमें परमार्थका मानो एक नवीन विद्यापीठ स्थापित हुआ तुकारामजी स्वय उसके सञ्चालक और सूत्रधार बने आस पासके गाँवमें तथा दूर दूरसे भी भगवान्‌के प्रेमी आ आकर इस विद्यापीठमें शिक्षा लाभ करने लगे देहू लोहगाँव तेलगाँव पूना पण्ढरपुर तथा प ढरपुरके रास्तेके सब स्थानोंमें तुकारामजीके कीर्तनोंकी ड़ी लग गयी स ज ही लोग उ हें गुरु कहकर पूजने लगे ऐसे इन्द्रियविजयी वैराग्य तेजके पुञ्ज पूर्णकाम विश्वप्रेमी लोकालोकस्वरूप लोकगुरु इस स्वार्थी ससारमें कहाँ मिलें ? जिनका बड़ा भाग्य होता है उ हींको ऐसे जग दुर्लभ गुरु प्राप्त होते हैं तृप्त पुरुषका य॰ स॰ज धर्म होता है कि वह अपनी तृप्तिका आनन्द सबको दिलाना चाहता है तृप्ति नाम इसीका है जो अपने पूर्ण आ म कल्याणको प्राप्त होता है वह लोक कल्याणमें प्रवृत्त होत है लोककल्याणकी

कामना तृप्त आप्त ाम पुरुषोंके स्वभ वमें ही हो ी है य ी तुकाराम जीने कहा है वि अब तो मैं उपकार जितना हो उतनेके लिये ही हू

२ मेघ ि व उपदेश

गुरु ोनेकी पूर्ण पात्रता होनेपर भी तुकार मजीने गुरुपनेको अपने पास फटकने नहीं दिया और किसीको अपना शि भी नहीं कहा इसी प्र ार उ ने ो उपदेश दिये हैं उन्हें उपदेश न क कर उ होंने मेघ वृष्टि कहा है हम भी इसे मेघ वृ ि ही कहें

का किसीके कानमें म त्र नहीं फूँकता न एकान्तका को गु ान रखता है अर्थात् तुकारामजी एकान्तमें उपदे या म नहीं दिया करते हरि चि तनक आन द लेते हैं और उसमें सबको सम्मिलित कर लेते हैं गुरुपनेसे तो दूर ही रहते हैं एक ग उ होंने हा है वि लोगोंको भरमानेकी कोई कपटवि ा मैं नहीं ान ा भगवन् म्हार ही कीतन करता हूँ तुम् रे ही उत्तम गुणोंको ग फिरता हूँ यह क र उ ोंने साम य लौकिक गुरु नाम धारियोंका निषे सा किया है आगे फिर उन्होंने य भी ह कि मेरे पास को ड़ी बूटी नहीं कोई ऐ द्रजा चमत्कार नहीं मैं जमीन दाद जोड़ने ाला कोई मह म लेश्वर नहा ठाकुरजीकी पूजा ँ बि ी हो ऐसी मेरी कोई दूकान नहीं मैं थावाच नहीं ो कहे कु और ारे कुछ और मैं पण्डि त भी ीं जो घट पटकी खटपटका ार्थ कर कू ऐ भवानी भक्त भी नहीं ो स्त पर जलती हुई आग ा घट लेकर चलूँ गोमुखीमें ा र ाला जपनेव ला पी मैं न ारण मारण न ने ा ोई ओ ा भी मैं न हूँ भगवन् म्हारे कीर्तनके सिवा ौर नहीं जान मेरे भगवान् मैदानमें हैं मेरा राम कृष्ण हरि है मेरा उपदे भी ीधी ादी बात है जो होता है रि कीतनमें कह को छिपाव नहीं कोई र

नहीं तुकारामजीका सब क म ही ऐसा निर ल निमल और सर है तुक रामजी कहते हैं

गुरुशिष्यपण । हें गों अधमलक्षण १
भूतीं नारायण खरा । आप तैसाचि दूसरा ध्रु

गुरु बनना और चे बनाना य तो अ मपना है भूतमात्रमें नारायण हैं ब य बात सच है ब जैसे हम हैं वैसे ही दू रे भी हैं' नार यण हमारे अदर हैं वैसे ही दूसरोंके अदर भी हैं तुकारामजी गुरु बनकर गुरु शि यका नाता तोड़कर एकत्वके भावको भेदकर तोड़कर गुरुके न ते न ीं बोलते नाराय प्रेरणा करके से बुल ते हैं वैसे ो ते हैं बो ते क्या हैं मेघकी रह बरसते हैं

मेघवृष्टिनें करावा उपदेश । परि गुरुनें न करावा शिष्य
वाटा लाभे त्यास । केला अर्ध कर्मांचा १

उपदे ऐसे करे जैसे मेघ बरसे पर गुरु बनकर किसीको शि न नावे ो कर्म करो उ का आध भाग उस ो मि ता है

इसलि ये अच्छा ो यही है कि

एकमेका साह्य करू । अवघ धरू सुपथ

आपसमें हमलोग एक दू रेकी सहाय रें और सभी ए न्मागपर चलें

हम आप प्रेमसे ए प्रा ो र नारायणक अमृत गुणगान करें और भवसागर पार रें अधि कारके न होते भी बलात्कार उपदे करनेवाले और सुननेवाले गुरु और शि य अन में पश्चात्तपके भागी होते

उपदेशी । । मेघवृष्टीनें आइ ।
सकलपासी धो सहज तें उत्तम ४

नो तुका मेघ वृष्टिसे उपदेश करता है सङ्क पमें थो है सहज जो है वही उत्तम है

मेघ वृष्टि सा उपदे करना प्रेम रसके मेघोंका बरसना है प्रेमसे ो नि ल पड़े उसमें सहजपना होता है असली रग होता है और फिर ैसे मेघ वृष्टि जहाँ कहीं भी हो पथरीले चट्टानों पर हो या ोत तकर तैयार िये हुए खे ोंमें हो उससे खेत लहलहा उठें या चट्टान लकर स्वच्छ ो जायँ अथवा जम जाय ा ब जाय मेघोंको इसकी कुछ भी परवा नहीं होती वे बरसते हैं जिसको जो लाभ होन होता है हो जा ा है नहा होना होत उसे नहीं होता मेघ अपना कार्य रते हैं परम र्थक साधन ो साधकको स्वय ही करना पडता है जो कमर स कर लड़ेगा वह अवश्य विजयी होग जो कायर होगा वह रण ोड़कर भाग ायगा यह सबके अपने कर बपर निर्भर करता है मेघ वृ सह उपदे के द्वार तुकाराम ी सबको ही एक स अमृत पान कराते हैं पान करना न करना सबकी अपनी इच्छापर निर्भर है स्वहितका स तो स्वय किये बिना नहीं होता

चोरके हृदयमें उसीका लाञ्छन टका करता है इ को रें हम तो ि रसते हैं

िसके जो दोष होते हैं उ हें व ा रहता है गुणोंकी स्तुति करते हैं और दोषोंका त्य ग रानेके लि ये दोषोंकी निन्दा करते हैं किसीके र्मपर चोट करनेके लिये ोई बात नहीं हते किसी क्तिको क्ष्य करके कोई बात नहीं हते य ो रि-गुण गानकी अमृ धार है

परम अमृताची धार । वाहे देवाही समोर १

ऊर्ध्ववाहिनी रिकथा । मुकुटमणी सकळा तीर्था २

सब ीर्थोंकी मुकुटमणि यह हरिकथा है यह ऊर्ध्ववाहिनी परमामृ की धारा भगवान्‌के सामने बहती रहती है

भग ान्‌पर इस धाध राका अभिषेक होता रह ा है और ोगोंको उपदे के ौरपर जब तुकार मजी कु कहते हैं तब भी मेघ यह नहीं पू ते कि कौन सा खेत कैसा है

ज बरसकर खेतोंमें खेतीके काम आता है या मोरियोंमेंसे ब जाता है इसका विचार मेघ नहीं ि या करते उनकी सबपर सम न वृष्टि हो ी है पतितपावनी गङ्गा पति त और पावन दोनों ो ही समान भावसे नहलाती हैं अग्निके द्वारा देवताओंको विष्यान्न मिल ा है और खा डव वन भी भस्म होता है पर किसीका स्पर्श दोष अग्निको नहीं ग उ ी कार तुकारामजी ी मेघवृष्टि सद उपदे दृष्टि जन दुजन दोनोंपर समानरूपसे ही पडती है स न खी होकर स्तुति कर लेंगे और दुजन सिरपर चोट गनेसे ति मि ाकर नि दा करने लगेंगे पर मेरे लिये भी कु नहीं व भी कुछ न ी मैं तो दोनोंसे अ ग हूँ

मेघ बरसते हैं अपने भ से भूमि ो ा ठ ी है वह अपने दैवसे

३ ी ी दे ति

सबको स ान उपदे रने ा अभि ाय स को एक ही उपदे करनेसे नहीं है रि कीर्तनके द्व रा होने ा उपदे तो बके लिये ए ही है अ यथा अधिकार तैसा करू उपदे जैसा जिसका अधिकार वैसा ही उसको उपदे किया जाता है जिससे जितना ो उठाते नेगा उतना ही उसपर ादा ायगा चींटीकी पीठपर ा ी हौदा नहीं र हेलियेके पास कुल ड़ी फन्दा और जा भी हो है पर इन उपयो ौके मौकेपर किया है कुटि

कृपण ससारी विरक्त विलासी शूर पापी पुण्या मा सभीको और सभी जाति ोंको उनके सस्कार और अधिकारके अनुसार उपदे करना हो है अ छी जातिका अच्छा घोड़ हो ो व केवल इशारेसे चलता है और अड़ियल टट्टू हो तो बिना चाबुकके वह एक कद भी नहीं च । में नीति व्य हारका कुछ उपदेश बके िये समान होता है सभीके भी समय ग्रहण करनेयोग्य होत है और कुछ उपदेश ऐसा भी होता है ो ए के लिये आ यक तो दूसरेके लिये अनावश्यक भी होता है किसे किस उपदे का प्रयोजन होता है यह तो सबके अपने ही निर्णय करनेकी ब है तुकाराम ीने किस प्रसङ्गसे किसके िये कौन सा अभग कहा य जाननेका तो अब कोई उपाय नहीं रहा है तथापि तुकाराम ीके श्रोताओंमें सामान्यत जिस प्रकारके ोग थे उसी प्र ारके लोग आज भी मौजूद हैं ि तने प्रकार उस समय रहे होंगे उतने आ भी हैं और सदा ही रहेंगे इसलि ये हर को तुकारामजीके अभगोंसे अपना अपना अधिकार जानकर बो प्र त कर सकता है सत सद्वैद्योंके समान होते हैं उनके पास सभी रोगोंकी ओषधि ाँ और भस्मादि होते हैं अपने रोग और प्रकृतिके अनुसार र कोई ओषधि लेकर अनुपानके साथ से नकर नीरोग हो कता है सत भवरोगको दूर करते हैं वैद्य तो खैर दाम और पुरस्कार भी चाहते हैं पर स परोपकारर और निष्काम भक्त होते हैं उ हें और कोई म ब गाँठना नहीं होता वे चतुर्वि पुरुषार्थका दान करनेमें ही ख मानते हैं तुकारा जीके उपदे ोंमें नितान्त सौम्य उपायसे लेकर पकड़ने बाँधने और दागने तकके उपाय ामिल हैं उनके अभग दर्पणमें अपना मुँह देखकर अपनी बीमारीको पहचाने औषध सेवन करे प यसे रहे और आरो य लाभ करे वैदिक ब्राह्मणोंको तथा स्वराज्य सस्थापनके म त्कायमें ेगे हुए ि वाजी हाराजको सिद्धोंको और पापात्माओंको सच्चे भक्तोंको और दाम्भिकोंको भलोंको और ख ोंको

वीरोंको और कायरोंको सबको तुकारामजीके अभगोंमे उपदे मिलेगा नि त्तिमार्गि ों और प्रवृत्तिमागियों दोनोंको तुकारामजीने उपदे दिया है अर्थात् विवेकके मुख्य मुख्य सिद्धान्त बता दिये हैं सत और तत्त्वद ीं मुख्य सिद्धान्त ही बतलाया करते हैं उनका योरा नहीं योरेकी बातें व्य हारसे त । दूसरोंका आचरण देखकर मालूम हो ी हैं सिद्धान्तभर वे ब ल देते हैं सतोंक मुख्य कार्य जीवोंको माया मो की निद्रासे जगा देना होता है स्वय जगे रहते हैं दू रोंको गा देते हैं और र्मका रहस्य बत ाकर उद्धारका मार्ग दिखा देते हैं भक्ति ान वैराग्यका बोध करा र उनकी दे बुद्धि नष्ट कर देते हैं उनकी जीवद । का दरिद्र दूर करके उ हें र ात्म खके ध्रुवपदपर बिठा देते हैं जीवोंको अभयदान देते हैं और अपने पुण्यचरित्र तथा समुज्ज्व प्रबोध क्तिसे जीवोंका दैन्य न कर उ हें स्वानन्द साम्राज्य पदपर आरूढ करते हैं संतोंके उपकार माता पिताके उपकारोंसे भी अधि क हैं सब छोटी ब ी नदियाँ जिस प्रकार अपने नाम रूपोंके स थ जाकर ऐसी मिल जाती हैं जैसे उनका ोई अरि त्व ी न ो उसी प्रकार त्रिभु नके सब ख दु ख संतोंके बो म ण में विलीन हो ाते हैं तुकाराम महारा ऐसे विश्वोद्धार महामहिम हात्माओंकी प्रथम श्रेणीमें हैं आइये पाठक अ प उनके अ ोघ उपदेशकी मेघ वृष्टि के नीचे विनम्र भावसे अपना नवाकर इस अमृ र्षाकी बौ ारका आन द लें

रि भरि न्य दे

हरि भक्तिका उपदे सबके ि ये एक ही है

खो खोल आँखें खो बो अभी क्या आँ नहीं खुली अरे अपनी की को में तू क्या पत्थर पैदा हुअ तैंने यह जो नर तनु पाया है यह बड़ी भारी निधि है जिस विधिसे कर सके

इसे साथक कर स तुझे ग र पार उतर जायँगे (तू भी पार उतरना चाहे तो र)

* *

अनेक योनियोंमें भट नेके बाद य (नर नारायणकी) जोड़ी मिली है नर नु ैसा ठाँव मिला है नारायणमें अपने चित्तका भाव लगा

* * *

सुन रे स न अपने स्वहितके लक्षण सुन मनसे प ढरिनाथका मिरन कर नारायणक गुणगान कर फिर बन्धन ैसा भ सि धु ो तो यह जान ले कि इसी किनारेमें समा जायगा फिर पार करना क्या सब स्त्रोंका सार और श्रुतियोंका मर्म और पुराणोंका आ य तो यही है ब्रा ण क्षत्रिय वैश्य और शूद्र था चा ालको भी इसका अधि ार है बच्चोंको स्त्रियोंको पुरुषोंको और वेश्यादिकोंको भी इसका अधिकार है तुका कह ा है कि अनुभवसे हमने यह जाना है इस आनन्दको लेनेवाले और भी भक्त हैं (जो यही कहेंगे जो मैं कह रहा हूँ)

जो मन करोगे ही पाओगे अभ्याससे क्या नहीं होता

ोग रनेसे असाध्य भी साध्य हो है अभ्या ही फल देनेवाला है

श्रीहरिकी शरणमें जाओ उन्हींके होकर रहो उनके गुणगानमें हो जाओ ससार जो हौआ बनकर सामने आया है उसे भगा दो और इसी देहसे इन्हीं आँखोंसे क्तिका आनन्द लूटो हरि न सकीर्तनसे भव सिन्धु य ा सिमट है यह तो काराम महाराज अपने अनुभव से कहते हैं हरि भजनमें क्या आनन्द है सो कारामजीमें ी दे लीजि ये

दिन रातका पता नहीं यहाँ तो अखण्ड ज्योति जगमगा

रही है इसका आन द जैसे हिलोरें मारता है उसके खका वर्णन कहाँ क करू

श्रीहरिके प्रसादसे सब दु ख न हो जाते हैं

यही भवरोगकी ओषधि है ज म जर और सब व्याधि इससे दूर हो जाती हैं हानि तो कुछ भी न ीं होती षड्रिपुओंका हनन अवश्य हो जाता है छहों चारों वेद और अठारहों पुराणोंके जो सार वस्व हैं उन श्याम दरकी बिको अपनी आँखों देख शे कुटि कामियोंका स्पर्श अपनेको न होने दो मुखसे निरन्तर विष्णुसहस्रन म माल फेर रहो

अपने (निज स्वरूपके) घरसे बाहर न निकलो बाहरकी (देह बुद्धिकी) न गने दो बहु बोलना छोड दो और दूसरे (अनात्म) सङ्गसे सावधान होकर बचते रहो

अनु प तीर्थमें नहा शे और दिग् वस्त्रको ओढ लो जिसमें अ शाका पसीना निक जाय तब तुम वैसे ही हो जाओगे जैसे पहले थे (अ ति् मू चि दान दस्वरूप) इसलिये का क त है वैर ग्य भोग करो

अनुताप करते हुए भगवान्से यह कहो मैं ो अना हूँ अपराधी हूँ कर्महीन हूँ मन्दमति और ज बुद्धि हूँ हे कृपानिधे हे मेरे माता पिता अपनी णीसे मैंने कभी तुम्हें नहीं याद किय तुम्हार गुण गान भी न सुना और न गाया अपना हित छोड़ शेक लाजके पीछे मरा किय रि ीर्तनमें सतोंका सङ्ग झे कभी अच नहीं गा पर निन्दामें बड़ी रुचि थी दूसरों ी खूब निन्द की परोपकार न मैंने कि ा न दूसरोंसे भी कराया दूसरोंको पीड़ा पहुँचानेमें भी दया न आयी ऐसा सा किया जो न करना चाहिये और उससे बनाया क्य तो अपने कुटु बका भार ढोता फिरा ीर्थोंकी भी यात्रा नहीं की

केव इस पि डके प न करनेमें हाथ पैर हि ाता रहा मु से न सत सेवा बनी न दान पु य बन न भगवान्‌की मूर्तिका दर्शन और पूजन अर्चन ही बना कुसङ्गमें पडकर अनेक अ याय और अधर्म किये स्वहित क्या है उसमें क्या करना ोता है कुछ समझ नहीं पडता क्या बोलूँ क्या याद करूँ यह कुछ भी नहीं जान पडता मैंने अपना आप ही सत्यानाा किया मैं अपना आप ही बद ा लेनेव ा वैरी बना क कहत हैं भगवन् तुम दयाके नि ान हो मुझे इस भवसागरके पार उत रो

भगवान्‌से इस प्रकार प ात्तापके स थ गद्गद ण्ठसे अपने ब कृत ों और अपर धों ो कह जाना चाहिये उनसे करुणाकी भि ा और सहायता माँगनी चाहिये उन ी रण हो ाना चाहिये जो दोष पहले हो चुके उन्हें फिरसे न करनेके सम्ब में सावधान र ना चाहिये और सदा ी भगवान्‌का स्मरण भगवान्‌का गुण गान और भगवान्‌का ध्यान करते र ना चाहिये इससे वह दीनवत्स अवश्य दया करेंगे और ऊपर उठा लेंगे शुद्ध चि से भग ान्‌के गुण गावे सतोंके चरण पकड़े दूसरोंके गुण दोषोंकी यथ चर्चा करनेमें समय न न ारे रीरको फल करे और इस प्रकार भगवान्‌का प्र ाद लाभ करे

भवसागरको तैरकर पार करते हुए चिन्ता किस बा की करते हो उस पार तो कटिपर कर धरे खड़े हैं ो कु चाहते ो उसके वही तो दाता हैं उनके चरणोंमें ाकर लि पट जाओ गस्वामी से कोई मो नहीं लेंगे केव म्हारी भक्तिसे ी तुम्हें अपने कन्धेपर उठा ले यँगे का कहत है प डुर ँ प्रसन्न हुए ँ भक्ति और मुक्तिकी चिन्ता –व ँ दे और दारिद्र्य ँ

५ ससारमें रहते हुए सावधान

इम ससारी लोग भ । ससारको कैसे छोड सकते हैं ? ठीक है ससारमें ही बने र॥ पर इरिको न भूलो हरिनाम जपते हुए सब काम याय नीतिसे किये चलो इससे ससार भी खद होता है नहीं तो वाब न अजाब कमर टूटी मुफ्तमे वाली मसल ही चरितार्थ हुई तो क्या स ार बना यह बना कुछ तो पशुओंका सा ससार बना मनु योंका सा नहीं इस ससारमें सुख है ही नहीं कारण ख जौबराबर है ो दु ख पहाड़बराबर ससारके विषयमें सबका यही अनुभव है माँ बाप ी पुत्र सङ्गी साथी धन दौलत, राजा महाराजा कोई भी क्या हमें मृत्युसे बचा सकते हैं ? यह शरीर तो का का कलेवा है ’

(१) कौडी कौड़ी जोडकर करोड रुपये इकट्ठे करो पर साथ तो एक लगोटी भी न जायगी

(२) सगी साथी एक एक करके चले अब तुम्हारी भी बारी आवेगी क्या गाफिल होकर बैठे हो ? अब अकेले क्या करोगे ? का ।सिरपर सवार है अब भी सावधान हो जाओ इससे निस्तार पानेका उपाय करो

(३) तुम्हारी देह तो नहीं रहेगी इसे का खा जायगा अब भी गो नहीं तो तुका कहत है धो । खाओगे (नशेके बीच मारे जाओगे)

इस बातको ध्यानमें रखो और अदर सावधान रहते हुए प्रपञ्च करो

सच्चाईको बिना छोड़े स चे यवहारसे धन जोड़ो और उसमें को बिना अटकाये नि सङ्ग होकर उसका उपयोग करो पर उप ार करो पर निन्दा त करो और पर स्त्रियोंको माँ हिन समझो प्राणिमात्रमें

दया भाव र ो गाय बै आदिका प न करो जगलमें जहाँ कोई
ा न ो व ाँ ा सेको पानी पिलाओ '

इस प्रक र अपना आचरग बना लोगे तो गृहस्थाश्रम ही परमार्थका साधन हो जायगा और इस आचरणमें कु कठिन भी नहीं है

पर ीको मा ा माननेमें हमारा क्या खर्च हुआ जाता है ?

पर द्र यकी इच्छा या पर निन्दा हम नहीं करेंगे ऐसा निश्चय यदि कोई कर ले तो समें उसके पल्लेका क्या जायगा बैठे बैठे राम र म रटा करें सत वचनोंपर वि ास रखे सत्य भाषणका व्र ले लें ो इससे क्या हानि होगी

तुका क ता है सेसे तो भगवान् मि जायँगे और कुछ करनेका काम ी नहीं '

पर घर गृहस्थीके प्रपञ्चमें लगे रहते हुए एक बात न भूलना क्या य क्षणकालीन द्रव्य दारा और परिवार तुम्हारा नहीं है अन ा में जो तु ह रा होगा वह तो एक विट्ठल ही है तु ा क ता है उसीको ाकर पकड़ो

तुकाराम महाराजका य ी मुख्य उपदे है मुख्य उपासना सगुण भक्ति के विषयमें विस्तारपूर्वक विवेचन इससे पहले किय जा चुका है यथार्थमें तुकाराम ीके सभी अभग इसी प्रकारकी मेघ वर्षा हैं मारे ऊपर इस अमृ र्षाकी डी लगे और हम ोगोंमेंसे हर कोई कृतार्थ होनेका अपना रास्ता ढूँढ़ ले भगवान् भक्त और भगव नाम के विषयमें तुकारामजीके उपदे ससे पहले अनेक बार उल्लिखि त हो चुके हैं, इसलिये यहाँ उनकी पुनरावृत्ति न करके अब यह देखें कि सर्व सामा य व्यव ार नीतिके सम्ब में विविध प्रकारके ोगोंको उन्होंने किस किस प्रकारके उपदेश दिये हैं

६ सारियों ो उपदेश

नि काम भत्ति का डका बजानेके लि ये ही तुकारामजीका ज म हुआ था जो ोग और जो मत भक्तिके विरोधी थे उनकी खबर लेना तु रामजीके लिये इस प्रसङ्गसे आवश्यक हुआ यही नहीं प्रत्युत भक्ति मार्गके भी कई स्वाँग और ढोंग उ हें ड मूलसे उखाड़कर फेंकने पड़े भक्तिके नामपर समाजमें प्रति ा पाये हुए अनेक अभिमानी विषयाचारी अनाचारी पेटके पुजारी और दाम्भिक ोग अपना अपना उल्लू सीधा कर रहे थे य आ श्यक था कि उ हें सच्चा भक्ति माग दिखाया ता और इसके लिये य भी आवश्यक हुआ कि उनके दोष उ हें दिखाये जाते

भगवान्के कह ाकर भगवान्का ही अनादर करते हैं य देखकर ड़ा ही आश्चर्य होत है अब उन साधारण लोगोंको कह ही क्या सकते हैं जिन बेचारोंपर गृहस्थीका बोझ लदा हुआ है ?

भगव न्क आदर सत्कार कैसे किया जाता है हाथ जोड़कर कैसी नम्रताके साथ उनके सामने रहना पड़ता है भगवान्के सामने ोर कोलाह न मचे इस ा बन्ध करके ैसी शान्ति शुद्ध और लीनताके उनका पूजन करना चाहिये उत्तमोत्तम पदार्थ भगवान्के लिये ैसे टाये जाते हैं कम से कम भगवान्के सामने तो मनके सारे मलिन विचार दूर करके कैसी अन्तर्बाह्य शुचिताके साथ ाना चाहिये ये सीधी ादी ब तें अपनेको भग ान्के भक्त बतानेवाले ोग न जानें यह तो बड़े ही दु और आश्चर्यकी बा है था की नमें कथा कीतनको एक माशा ा या ए बहुत मामूली रस्म सी सम ते हुए अपने अपने मानकी बड़ाईमें फूले रहकर गप पमें वह स य किसी कार बिता देना जोर जोरसे बोलना स ोंका सत्कार रनेसे मुकरना पान च ाते हुए अशुचि-अवस्थामें भगवान्के सामने ाना भगवान्की पूजाके

लिये सडी पारियाँ रखना गोटे चाव और सस्ते से सर । घी हवनके लिये लाना ऐसी असख्य बातें हैं जो लोग ने बे ने किया करते हैं भगवान्‌को चाहते हो तो चित्तको ि न क्यों र ते हो अभिमान अ ड़ आलस्य शोक लाज च । अ द्वय र नोमालिन्य इत्यादि कूड़ा करकट किसलिये जमा किये हो कम से कम भगवान्‌के भक्त कहनेवा लोंको तो ऐसा नहीं चाहिये के बाहरी भेस ना लेनेसे थोड़े ही कोई भक्त होता है

आग गे उस बनावटी स्वाँगमें जिसके भीतर ालि । भरी हुई है

व ोंको लपेटकर पेट बडा कर लेनेसे गर्भवती होनेकी ात उ ानेसे दोहदका स्वाँग भरनेसे ब चा थोड़े ही पैदा होता है केव हँसी होती है ?

इन्द्रियोंका नियमन नहीं मुखमें नाम नहीं ऐसा जीवन तो भोजनके स मक्खी निग जाना है ऐसा भोजन क्य कभी दे सक है

विषय विलासमें पड़े ि ानक भोजन करके इ पिण पोसने ही ही जिसे सूझती है उसका ज्ञान तो बड़ा ही अध है ए ए कौर बड़े स्वादसे मुँहमें ालता है और य नहीं जान । कि यह पिण तो भर ही सा रहने । ा है इसे पोसनेसे क्य आनेवाला है

इ न भी सोच विच र ि में नहीं उसे या हा शु जन ैसे योगी अपने वैराग्य लसे ही पर पदके अधि री ए ससारकी सारी आ ाओं और अभि षाओंका त्याग किये बिना भगवान् नहीं मिलते

आ ाको जड मूलसे उखाड़कर फेंक दो तब गोसाइ कहलाओ नहीं तो ससारी बने रहो अपनी फ ीहत क्यों कराते हो ?

श्रीहरिसे मिलना चाहते हो तो आ ा तृष्णासे बिल्कुल खाली हो ाओ जो नाम रिका लेते हैं पर हाथ लोभमें फँसाये रहते और असत् अ याय और अनीतिको लिये चलते हैं वे अपने पुरखोंको नरकमें गिराते हैं और नरकके ीड़े बन ते हैं

अभिमानका मुँह का ा उसका काम अँधेरा ही फैलाना है सब काज मटियामेट करनेके लिये पीछे लोक लाज लगी हुई है

दम्भ आ ा तृ ण अभिमान भजन करते ोकलाज इन सब दोषोंसे कम से कम वे ोग ो बचें जो अपनेको भगवान्के प्यारे बतल ते हैं । ो जी जानसे भगवान्को चाहते हैं वे अपने प्रेमको साव ानीसे बच ये रहें प्रतिष्ठाको शूकरी विष्ठा सम ल वृथा वादमें न उलझें अहङ्कारी तार्किकोंके सङ्गसे दूर रहें और कोई ढोंग पाख न रचें

स्वाँग बनानेसे भगवान् नहीं मिलते निर्म चित्तकी प्रेमभरी चा नहीं तो ो कु भी रो अन्त के आ है तु ा कहता है जानते हैं पर जानकर भी अ धे नते हैं

*

सबके अ ग अ ग राग हैं उनके पीछे अपने मनको बाँटते फिरो अपने विश्वा ो नसे रक ो दूर रोंके रगमें न आओ

द विव द जहाँ होता ो हाँ खड़े रहोगे तो उस फंदेमें फसोगे मिलो उन्हींमें ो सव ोभ से -रसमें मिले हों वे ही रे कुल परि

भक्तोंके मेलेका जो अ न द है उसक कु भी आस्वाद अविश्वासी को नहीं ि ता और वह सिद्धान्तमें ककड़ीकी तरह अलग ही र ा है

भगवान्की पूजा करो तो उत्तम मनसे करो उसमें बाहरी दि वेका क्या काम जि को जनाना चाहते ो वह अन्तरकी बा जान है कारण सच्चोंमें वही सच है

परन्तु

भक्तिकी ाति ऐ ी है कि सर्व से हाथ धोना पडता है

*

नेत्रोंमें अश्रुबि दु नहा हृदयमें टप ।ट नहीं तो भ क्ति काहे की वह तो भक्तिकी वि म्बना है यथका जन मन रञ्जन है स्व मीकी सेवामें जो सादर प्रस्तुत नहीं हुआ उसे मि ही क्या सक ा है । कह ा है जबतक द ि से द ि नहा मिली तबतक मि न न ी हो

यह तो क्रियायुक्त अनुभवका काम है

अहता नष्ट हो भगवान्के स्तुति पाठमें स ी भक्ति ो हृदयकी सच्ची गन ो हरि चरणोंमें पूर्ण नि ा हो ब क म ने

से कके तनमें जब क प्राण हैं ब क स्वामीकी अ ा ही उसके ि ये प्रमाण है '

दे मेंगुरुओंकी आ का इस प्रकार नि ापूर्वक पालन करके भगवान्के ोकर रहो ज्ञान लव दुर्विद तार्कि ोंकी अपेक्षा अप अनजान भोले भाले लोग ही अच्छे होते हैं कारामजी कहते हैं वि मूर्ख बल्कि अच्छे हैं ये विद्वान् तार्कि क ो किसी कामके न

तुकार मजीका कीर्तन नने या दर्शन करने जो लो आय करते थे उनमें ससारी ोग ही प्राय हुआ करते थे तुकारामजीने अपनी गृहस्थीकी होली ज ा दी एकन थ महाराज ी गृ स्थी अनुकूल गृहिणीके होनेसे सुखसे निभ गयी और समर्थ र मदास गृ स्थीके बन्धनमें पड़े ही

नहीं ये तीनों ही महात्मा विरक्त थे तीनों ही अदरसे पूर्ण त्यागी थे बाहरी वेषकी बा तो किसी भी ह ल में गौण ी हो ी है पर सर्वस धारण मनुष ऐसे कैसे बन सकते हैं सब तो बाल बच्चे घर द्वार काम धधेमें ही उल रहते हैं उ ा नहीं रहत एकाध ी ोई इ लिये इन त्माओंने सस रको ससारके अनुरूप ही उपदेश दिया है घर गिरस्तीका सब काम करो पर भग ान्को मत भूलो मुखसे रि रि उच्चारो और सदाचारसे रहो श्रुति स्मृति पुराणोक्त धर्मका पा न करो इससे अधिक साम य नोंको और क ा उपदे दिया जा सकता है भगवान्के ि ये सर्वस्वसे ह थ ोनेको तैयार ो जाना पूव पुण्यके बिना नसीब नहीं होता इसलिये अब स मा य जनोंको तुकारामजीने र तरहसे कैसे समझाया है कभी मना र और कभी ॉट डपटकर कैसे सावधान किया है प रीपरसे नीचे उतर आयी हुई समाजकी ग ड़ीको धमनीि ायकी पटरीपर फिरसे कै ाकर खडा किया लोगोंके दोष दूर करनेके ि ये उन दोषों ो कैसे नि इक चौड़े ले आये और कै ी उन्होंने उनमे भग ान् भक्त और मके प्रति स ा प्रेम गानेके त्नकी द कर दी इस ो अब हमलोग देखें

स ससारमें आये ो ो अब उठो ल्दी करो और उन उद र पाण्डुरङ्गकी रणमें ाओ य देह ो देवताओंकी है न सार कुबेरका है इसमें मनु य ा क्या है देने दि ने ला ले ाने लिवा ले नेवा तो ोई और ही है इस ा ाँ क्या रा है निमित्तका धनी बन य है इ णीको और यह मेरा मेरा कर र्थ दु उठाता है क है रे मूर्ख क ों नाशवान्के पीछे भगवान्की ओर पीठ फेर है

बुद्धिम ोंके लिये एक ही चन है चि पीछ न कर प्रेमसे गाते रहो नामके समान और ोई

सुलभ साधन नहीं है य नि मेरु है सबसे हाथ जोडकर तुकारामजी यह विनती करते हैं कि अपने चित्तको शुद्ध करो

भगवान्‌का चिन्तन करनेमें ही हित है भक्तिसे मनको शुद्ध कर लो ब का कहता है दयानिधि इस नामके कारण पार उतारेंगे

कथा कीर्तन सुनते नींद आ जाती है और पलङ्गपर पड़ पड़ा यह ससारकी उधेड़ बुनमें छटपटाता ागकर रात बिता । है कर्म-गति ऐसी गहन है कोई हाँतक रोये यही जागरण और यही छटपटाहट भगवान्‌के चिन्तनमें क्यों नहीं लगा देते ? भगवान्‌ने जो इन्द्रियाँ दी हैं उन्हें भगवान्‌के काममें क्यों नहीं देते

मुखसे उनका कीर्तन करो कानोंसे उनकी कीर्ति नो नेत्रोंसे उन्हींका रूप देखो इ ीके लिये तो ये इन्द्रियाँ हैं का हत है अपना कु तो स्व हित साध लेनेमें अब सावधान हो जाओ

❀ ❀ ❀

ससारका बोझ सिरपर लादे हुए दौड़नेमें बड़े खुश हैं टट्टी जानेके लिये पत्थर इकट्ठे करते हैं मनमें भी उसीके स ल्प रखते हैं लोक ला केवल नारायणके काममें है हाँ कु बोलते हुए जीभ भी लड़ ाने लगती है तुका कहता है अरे निर्लज्ज अपने ससारीपन पर बैलकी तर इस बोझके ढोनेपर इतना क्यों इतराता है ?"

ऐसे अत्यन्त आसक्त ससारियोंके लिये तुकाराम ीका उपदे है

श्रीहरिके रणमें तेरा मन क्यों नहीं रमता ? इसमें क्या घाटा है क्यों अपना जीं न व्यर्थमें खो रहा है जिनमें अपना मन अट ये बैठा है वे तो तु ` अन्तमें छोड़ ही देंगे का हता है सोच ले तेरा लाभ किसमें है

पर द्रव्य और पर नारीका अभिलाष जहाँ हुआ वहींसे भाग्यका ह्रास आरम्भ हुआ ’

ी और धन बडे ोटे हैं बड़े बड़े इनके चक्करमें मटियामेट हो गये इसलि ये इन दोनोंको छोड़ दे इ ीसे अन्तमें पायेगा

य उपदेश तुकारामजीने बार बार किया है अपनी स्त्रीके इशारेपर नाचकर ैण न बने और पर स्त्रीको छूत माने इससे गृ स्थीका सार उद सीन भावसे करते हुए सारा धन परमार्थमें गाते बनता है अपनी स्त्रीसे भी केवल युक्त सम्बन्ध ही रखे भी कु पुरुषार्थ बन सकता है इसी अभिप्रायसे एक ानमें कारामजीने कहा है कि स्त्रीको दासीकी तर रखे श्रीमद्भागवतमें भी स्त्री और स्त्रैणका सङ्ग बड़ा ही निकर बताया है

विधिपूर्वक सेवन विषय त्यागके ी समान है ’ विषयीपन स्त्री और पुरुष दोनोंकी हानि करनेवाला है

❀ ❀ ❀

अहिंस तो भागवतधर्मकी ए खा ची है र रियोंमें कोई भी मांसाहारी नहीं होता यदि कोई हो ो उसे ा फगा सम चाहिये सबमें भगवान्‌को दे ो यही तो सतोंकी मुख्य शिक्षा है णिमात्रमें हरिके सिवा और कोई पूजापन न देखे इस स्थितिको जो प्राप्त होना चाहे उसके लिये हिंसा तो त्याज्य ही है धिक्कार है उ दुजनको जिसमें भूत-दया नहीं सब जीवोंको जो अपने समान जीव नहीं उस चाण्डालको क्या क ा जाय

तुका कहता है दूसरोंके गलेपर छुरी फेरते तो इसे ा आता है पर अपनी बारी आती है तब रोता है

कालीमाईके ामने अपनी मनौती पूरी रने पेट भरनेके लिये दूसरोंके सिर काटते हैं इ निर्दयताकी कोई नहीं बचाजी

दूसरोंके सिर क्या काटते हैं उधार लेकर खाते हैं और यमपुरीमें कर उसे चुकाते हैं दूसरोंकी गर्दनपर ो छुरी चलाता है यह नहीं कि इन जीवोंमें भी ान है उसके ैसा पापी वही है आत्मा नारायण घट घटमें है पशुओंमें भी है इतनी सी बा क्या इ नहीं म सकता जीवको बिलखता चिल्लाता देखकर भी इस निदयीका हाथ उसपर जाने कैसे है

ऐसे चाण्डालको यह भी नहीं सूझता कि इस कामसे हम दूसरे जन्मके लिये अपने वैरी नि ाण र रहे हैं

बड़े शौकसे उ मास खाते हैं यह नहीं जानते कि इस तरह ैरी जोड़ते हैं

कन्या गौ और हरि कथाका विक्रय करके नरकका रास्ता नापने वालोंको तुकारामजीने बहुत बहुत धिक्कारा है गायत्री बेचकर जो पेट पापीको पालते हैं कन्याक विक्रय करते हैं और नाम गानकर जो द्रव्य माँगते हैं वे घोर नरकमें ा गिरते हैं उनका सङ्ग हमें पसन्द नहीं ये मनुष्य योनिमें कुत्ते और च ण्डाल हैं ोंमें सालकृत कन्यादान पृथ्वीदान समान कहा है पर जो कन्याका वि य करते हैं गो र और गो-पा अपना स्व र्म होते हुए भी जो गौओंको बेचने व्यवस य करते हैं जो रि था माता और नामामृ को बेचते फिरते हैं वे मोंसे भी अध हैं

स्त्री तिको कारामजी सामान्य उपदे इतना ही हुआ करता था कि स्त्री पतिव्र बनी रहे शीलकी रक्षा करे धमकार्यमें पतिके अनुकूल आचरण करे घर आँगन ाड़ बुहार लीप पोतकर स्वच्छ रखे सी और गौकी पूजा करे अतिथियोंका आतिथ्य और ब्राह्मणोंका करे कथा कीर्तन श्रवण करे घरमें सबको खी और न्त रखने

का यत्न रे और बाल ब ोंमें भी हरि भजनका प्रेम उत्पन्न किय रे एक स्थानमें उ होंने कहा है कि कु वती स्त्री अपनी शुद्धता और सतीत्वकी रक्षाके लिये अपने प्राणतक योछावर कर देती है कभी अनाचारमें नहीं प्रवृत्त होती

स्त्रीका चित्त ा त और स तोषी होना चाहिये यह बतलाते हुए ोधी स्त्रीका वर्णन करते है

उनकी भौहें सदा चढी ही रहती हैं और हृदय सदा ा ही कर ा है मुँह ऐसा लगता है जैसे दो टूक हुई उपरी हो तुका कहता है उसका चित्त तो कभी शान्त रहता ही नहीं

तुकारामजीने ीका मुख्य धर्म पाति त्य ही हा है पति ही उसके लिये प्रमाण है तुकारामजीने अपनी स्त्रीको ो उपदे किया उसका प्र ङ्ग अ गे आवेगा पर यहाँ

ाड़ बुहार तुलसी अतिथि और ब्राह्मणोंका पूजन सर्वतोभावसे भगवद्भक्तोंका दासत्व मुखमें सदा श्रीविठ्ठलका नाम इन नियम रत्नोंक यह रत्नहार तुकारामजीके प्रसाद रूपसे सब ि योंको अपने गलेमें प न लेना चाहिये और इस तरह वे

अपना ग ा इस जंजालसे छुड़ा लें गर्भवासके महान् कष्टसे चें इस क्षुद्र सुखपर थूक दें और परमान दको प्राप्त करें

स्त्रैण पति कुलटा स्त्री और गुरुकी अवज्ञा करनेवाले कुपुत्रोंको तुकारामजीने बड़ी फटकार ब ायी है जो स्त्री ऐसी जबर ग हो कि पतिसे 'अपनी ही से ा कराती हो अपनी ही भगवान्-सी पूजा कराती हो और पतिको कुत्ता बनाकर रखे हुए हो' और व भी गधा र कामान्ध हो उसीको घेरे रहता हो उसके पीछे अपने ही स्वजनोंको दूर कर हो वह अपने जीवनको यर्थ ही न कर रहा है

ीके अधीन जिसका जीवन हो जाता है उसके दर्शनसे बडा अपशकुन होता है मदारीके बदर-से ये जीव जाने क्यों जीते हैं

स्त्रीके मि भाषणपर टू होकर किस प्रकार कामी पुरुष अपने हित ना को छोड़ देता है इसका बडा ही मजेदार वर्णन उन्होंने तीन चार अभगोंमें किया है

एक ाडली ी अपने पतिसे कहती है क्या करूँ! मुझसे अब खाया भी नहीं जाता दिनमें तीन बार मि ाकर एक मन गेहूँ ही बस होते हैं परसों ही आप चीनी ले आये सो सा दिनमें दस सेर ही खपी पेटमें पीड रहती है २सर्ा ये और तो कुछ न ीं केवल दूधके साथ चावल खाती हूँ और अनुपानके लिये घी और चीनी चाट जाती हूँ! किसी तरह दिन क टती हूँ नींद आती नहीं इसलिये बिस्तरके नीचे फूल बिछा लेती हूँ ोंको पास सुलाऊँ तो सहन नहीं होता इतनी तो दुर्बल हो गयी हूँ इसलिये आपहीसे कहती हूँ कि ब ोंको सँभाल लिया करो मस्तकमें सदा ही पीड़ा रहती है इसलिये चन्दनका लेप लगाना पड़ता है मेरी तो यह ालत है मरी जाती हूँ पर आपको क्या मेरे तो हाड़ ग गये और ह मास फू आता है कहाँ क रोऊँ और ्सके पास रोऊँ

तुका कह ा है जीते ी ही गधा बना और मरकर सीधे नरक पहुँचा

पतिकी य गति करनेवाली ऐसी सिर चढी जबरजग स्त्री पतिके कान फूँका करती है और फ ते फूलते घरमें फूट ड दे ी है पतिसे घु घु र तें करती है हती है मेरी जैसी दुखिया और कोई नहीं मु् सतानेमें तुम्हारी माँ मेरी देवरानी जेठानी देवर जेठ ननद सबने जैसे एका कर लिय हो अब किसकी छायामें रहूँ ब ओ

प्राणोंको मुट्ठीमें लिये बन ठनके चलती हूँ जिसमें कोई कुछ जाने

नहीं पर आपको अभीतक कुछ खयाल नहीं कु इया नहीं अब अपना घर अलग करो तो मैं रह सकती हूँ नहीं तो अब प्राण ही दे दूँगी

लाडली स्त्रीका ऐसा निश्चय जब सुना तब वह कामा म्पट पति अपनी ीसे कहत है तुम ऐसा दु ख मत करो देखो मैं कल ही माँ बाप भाई बहिन सबको अलग करता हूँ और तब

तुम्हें सिकडी बाजूबन्द खोर और बेंदी सब बनवा दूँगा फिर मेरी तुम्हारी जोड़ी खूब बनेगी

तुका कहता है स्त्रीने उसे गध बनाया और य भी उसके हौंसलोंका बोझ लादे उसके पीछे पीछे चला

ऐसे स्त्रैण पुरुषोंका ीवन बिल्कुल बेकार है उसका न परलोक बनता है न इहलोक ही न वह प्रपञ्च अच्छी तरह कर सकता है न परमार्थ ही साध स । है हिन्दू-समाज सदासे ही अविभक्त कुटुम्ब पद्धतिका माननेवाला है माँ बाप भाई ि न देवर जेठ देवरानी जेठानी सास ननद अति थि अभ्यागत इन सबसे भरा हुआ गोकुल-सा बना हुआ घर बड़े भा यका ही क्षण समझा जाता है पर ऐसे घरमें यदि एक भी पुरुष स्त्रैण बन तो फिर उ घरकी मान प्रतिष्ठा धूलमें मिलते देर नहीं लगती परम्पर टूट जाती है और कु धर्म नष्ट ो है इसीलिये तुकारामजीने ऐसे स्त्रैण पुरुषोंको ि क्कारा है मियाँ-बीवी बनकर रहनेवाले टुटपुँजियोंके ससार में कर्म । लोप ही होता है फिर यही होता है कि

ी ही माँ बन ती है और आप ही प बन जात है खर्च तो खूब ोता है पर सब चे ाएँ अपस बन ती हैं

प्यारीको होगा इस भयसे यह देवधर्म और पितृकर्म बको काट देत है श्राद्ध-पक्षमें स्त्री ही माताके स्थानमें और स्वय पिताके स्थानमें बैठकर य भोजन करते हैं और हाथ पैर फैलाकर सो ते हैं

च्च खूब ब कर करते हैं यों तो अपसव्य करनेका काम श्राद्ध या पक्षमें ही पड़त है पर इनकी सब चेष्टाएँ अपस य याने वाम धर्महीन होती हैं ई र र्म पितर सत इन सबकी ओर पीठ ही फेरे रहते हैं तुकाराम जीने ऐसोंको बहु ि ार है

पर्वकालमें कोई ब्राह्मण आ गया तो उसे खाली हाथ लौटाना एकादशीके दिन यथेष्ट भोजन रना ब्रा णके लिये खाँड़ भी न जुटे और रा दरबारमें य राजद्वारपर बन ठनकर जाना कीर्तनसे भागकर चौसर खेलना या नटोंके नाच तमाशे देखना सतोंकी नि दा करन और रास्तेमें कोई सत मिल जायँ तो उनसे जाँगडचोरका सा बर्ताव करना गौकी सेवा न करके घोड़ेकी चाकरी करना द्व रपर सीका बिरव न गाना देव पूजन और अ ि सत्कार न करके भरपेट भोजन करना द्वारपर भि ारी चिल्लाये ो चिल्लाता रहे उसे मुट्ठीभर अन्न भी न देना कन्या विक्रय करना ीको कथा कीतन सुनने जाने न देना इत्यादि अनेक अनाच रोंका बड़े कठोर दोंमें तुकारामजीने निषे किया है पतित दुराचारी दाम्भिक कहीं भी मिल जाता तो तुकारामजी बिना उ ी खबर लिये नहीं ोड़ते थे ब्रा णोंमें जो अनीति अ य य ढोंग और दुराचार उन्होंने देखे उनपर भी खूब कोड़े गाये हैं पर तु इनसे किसी भी सद्ब्राह्मणको कोई चोट नहीं लगती और चे ट लगे तो वह ब्राह्मण ही क्या दोष किसीमें भी हों वे हैं ो निन्द्य ही व्य ज खानेकी त्ति करनेवाले अन्त्यजोंके घर जाकर उनसे खिचडी मागकर ानेवाले और उनसे लेन देन करते हुए उनका थूक अपने चे ेपर गिरा लेनेवाले गन्दी ग लियाँ देनेवाले अ चारभ्र ब्राह्मणोंकी उन्होंने खूब खबर ी है तुकारामजीके ये प्रहार वि सी जातिपर नहीं जिनके जो दोष हैं उनपर हैं यह बात ध्यानमें रहे ऐसे तो ब्राह्मणोंको कारामजी पू नीय मानते थे ब्राह्मणोंके प्रति उनका पूज्यत भा उनके सैकड़ों उद्गारोंद्वारा

कट हुआ है धर्म कर्ममें ब्राह्मणोंको ही अग्रपूजाका मान दिया करते थे और सब र्णोंको उनका यही उपदेश होता था कि ब्र ह्मणोंको धमगुरु मानो सब वर्ण भगवान्ने निर्माण किये हैं और सब वर्ण नारायणके ही हैं यही उन्होंने कहा है ब्राह्मण विरोधी और ब्रह्म द्वेषियोंको यह कहकर उन्होंने बड़ी फटकार बतायी है कि ये लोग ऐसे हैं कि ब्राह्मणोंको नमस्कार करते इनके चित्तमें भक्ति नहीं होती और तुर्कके सामने जाते हुए उसकी बाँदीके बेटे बनकर जाते हैं तुक रामजी यह चाहते थे कि सम जमें ब्राह्मणोंका जो गुरुपद है उसकी प्रतिष्ठा बनी रहे और उनमें जो दोष आ गये हैं वे नष्ट हो जायँ

७ भण्डाफोड़

ससारी जीवोंको हरिभ न और सदाचार का उपदेश करते हुए दुराचार फैलानेवाले दाम्भिकोंका भण्डाफोड़ भी बड़ी निर्भयतासे किया है सी रास्त दिखाते चलते हुए रास्तेमें बिछे काँटोंको भी अलग करते जान पड़ता है और ऐसे काँटे ससारी जीवोंकी अपेक्षा परमार्थका ढोंग बनानेवाले उपदेशक और गुरु बनकर पुजवानेवालोंमें ही अधिक होते हैं देवऋषी भग जोगी मौनी मानभाव क्ति नाथपन्थी वैरागी गोसाई आतत्यायी साधक भिक्षाव्यवसायी वितण्डावादी आदि नाना वेषधर बहुरूपी हुरगियों ो उन्होंने थेड़ा है इन नानावि पन्थोंमें जो अनीति और अनाचार दम्भ और दुराचार छलना और वञ्चना आदि प्रकार दिन दिन बढते ही जा रहे थे उन सबको तुकारामजीने उधेड़ डाला है ढोंग बनानेसे भगवान् मिलते हों ऐसा नहीं है य कहकर तुकारामजी बतलाते हैं कि ऐसे जो माया-जा हैं उनमें नन्दलाल नहीं हैं इसलिये इन पेट पुजारी सतों के फेरमें कोई न पड़े यही उन्होंने जनताको बार बार ताया है इनके सिवा फिर कीतन कथा वाच व्यास गुरु कवि

विद्वान् भक्त स आदि कहानेवालोंमें भी जो जो खोटाई उनके नजर पडी उसको चौड़े ले आये हैं

इन सब उपदेशकोंसे समाजका बहुत बडा काम निकलता है, समाजको इनकी आवश्यकता है इससे लोग इ हें मानते भी हैं इसलिये तो इन्हें अपने आपको अत्यन्त निर्दोष और निर्म बना लेना चाहिये पर ऐसी बुद्धि ऐसा हृदय ऐसी सत्यनिष्ठा बहुत ही कम लोगोंमें होती है प्राय बाजारू आदमी ही अधिक होते हैं तुकरामजी उन्हें उपदेश देते हैं कि ऐसा ढोंगीपना छोड़ दो हरि प्रेममें लौ लगाओ और सदाचार पालन रो इस उपदे के कु उदाहरण हमलोग भा देख लें हरि कीर्तनसे तुकारामजीकी अत्यन्त प्रीति होनेसे उनकी ऐसी लालसा थी कि कीर्तन करने वालोंमें कोइ भी दाम्भिक और ढोंगी कीर्तनकार न हो पेटके ि ये कोई कीर्तन न करे कीर्तनको धन्धा न बना ले कीर्तनके नामपर जो द्र य लेते देते हैं तुका कहता है ये दोनों नरकमें गिरते हैं कीतनकार और यास समाजके गुरु हैं उन्हें निर्लोभ नि स्पृह और दम्भर त होकर रि भक्ति और सदाचारका समाजमें प्रचार करना चा ये जैसा कहें वैसा स्वय रहना चाहिये रि कीर्तन रनेवाले रिदास पौराणिक थावाचक व्यास स्त्री पण्डि गुरु सजनेवाले सत बने फिरनेवाले वैदिक कर्मठ जपा पी सन्यासी सबसे ङ्केकी चोट कारामजीका यही हना है कि ोंग रचकर लोगोंको फँसाओ इन्द्रियोंको जी कर हले अपने वशमें कर लो स्वय याय नीति से बरतो नी सी अपनी करनी ना ो अर्थकरी उदरम्भरी विद्या और परमार्थकी खिचड़ी मत पकाओ स्वय धोखा न ओ और दूसरोंके न दे निष्काम भजनसे भगवान्को प्रसन्न करो और निष्काम बुद्धिसे मनमें और जनमें उसीका गुण गान करो ज्ञ नको बघारो दम्भसे सर्वथा बचे रहो भक्ति और उपासनामें रमो भक्तिके बिना अद्वैतज्ञानकी लबी चौड़ी बातें करके लोगोंको ठगा मत करो

स्वय तरो और फिर दूसरों को तारो यह उपदेश तुकारामजीने कहीं मीठे दोंमें और कहीं कड़वे शब्दोंमें पर सर्वत्र सच्ची ार्दिक सद्वासनाकी विक से किया है

अ ारके बिना क्या कहे जाते हो ? प हरिनाथका ही पता नहीं चला तबतक कोरी बातोंमें क्या रक्खा है तुम्हारे इस शुष्क ब्रह्मज्ञानको मानता ही ौन है

अद्वैतमें तो ोलनेका ही कु काम नहीं है इसलिये क्यों अपना सिरमगजन कर रहे हो गाना चाहते हो तो श्रीहरि (विठ्ठल) नाम गाओ नहीं ो चुपचाप खड़े रहो

अद्वैत हनेकी बात नहीं है स्वय होनेकी है ग्रन्थोंके आधारपर पाण्डित्य बघारकर यदि अद्वैतका प्रतिपादन किया ो उससे श्रोताओंका कुछ भी लाभ होनेका नहीं हरिका नाम स्मरण करो भगवान्‌को भजो इससे तुम रास्तेपर अ जाओगे व्यर्थमें बड़ी ऊँची ऊँची बातें हनेमें ाणीको थका डा ना ठीक नहीं

राम और कृष्ण नाम सीधे सीधे लो और उस श्यामरूपको मनमें स्मरण करो

न्ति क्षमा दया इन आभूषणोंसे अपने रीर और मनको भूषि करो नारायणका भजन करो का ादि ड्रिपुओंको जीतो तब स्वय ही ब्रह्म हो जाओगे ब्रह्मज्ञानकी बातें कहनेसे कोई ब्रह्म नहीं होता चने चबाने पड़ते हैं लोहेके तब ब्रह्मपदपर नृत्य करते बन है उत्कोची लोभी साक्षी जैसे बिन ज ने ही साक्ष्य दे । है वैसी ही बिना जाने ही क निरूपण करनेवालोंकी स्थिति है ऐसे ब्रह्मज्ञानको ौन स ा माने

दूसरोंको जो ह्मज्ञान बताता है पर स्वय कुछ न ीं कर उसके मुँ पर थू है व वैखरीको व्यर्थ ही देता है द्रव्य दिके किञ्चित्

मिलनेकी आ से वह ग्रन्थोंको देखता है और ब्रह्मकी ओर बुद्धिको दौड़ाता है यह ब पेटके लिये ढोंग बनाता है वहाँ श्रीपाण्डुरङ्ग श्रीरङ्ग कहाँ

अपनी बुद्धिके अनुसार सत-वाणीके प्रसादको मींजने मसलनेवाले और सोनेके साथ लाखका जतन के न्यायसे प्रासादिक कविवचनोंके दुशालेमें अपनी अकलके चीथड़े जोड़नेवाले कवीश्वर क्या करते हैं

जूठे पत्तल इकट्ठे रके अपने वित्वका चम कार दिखाते हैं

ऐसे कवियों और काव्योंके पाठकोंको इस भूसकी दवाईसे क्या हा आनेव है बड़ी विकलताके सा पि र आप कहते हैं

बतक सेव्य क्या और सेवकता क्या इसका पता नहीं चला तबतक ये लोग भटकते ही रहते हैं '

उपासनाका रग जब इनपर नहीं चढा उसका रसास्वादन इन्हें नहीं हुआ तबत ये ब्दजालमें ही फँसे रहते हैं हरिका प्रसाद पाने और सिद्ध स्वानुभव सम्पन्न पुरुषोंके ग्र थोंमें रमते हुए दयग्रन्थि खुलवाने के सीधे सरल मार्गको छोड़ ये लोग कवि बनकर न जाने क्यों ससारके सा ने आते हैं

घर घर ऐसे कवि ` गये हैं जिन्हें प्रसादका कुछ स्वाद ही कभी न मिला दू रोंकी बनी-बनायी विता ले ली उसीमें कुछ अपनी बा मिल दी बस बन गयी इनकी कविता

कारामजीके समयमें सालोम नामके ए कविता चोर थे वह तुकारामजीकी वि उड़ा लेते और उसमें तुका की ग अपना उपना बैठा देते और उसे अपनी कविता क कर लोगोंमें प्रसिद्ध करते का रामजीने इस कविता चोरको अपनी णीमें गिरफ र र नौ अभगोंके नौ बेंत लगाये

सतोंके वचनोंको तोड़ मरोड़कर ऐसे कवि अपने आभूषण बना लेते हैं और ससारमें एक री चाल चला देते है

विद्वानोंको देखिये तो क्या युव और क्या प्रौढ प्राय सभी अपनी ही ानमें मरे जात हैं और साधु सतोंका परिहास करनेमें ही अपनी विद्या को सफल सम ते हैं

रा सी विद्यापर इतना इतराते हैं कि जिसकी कोई हद नहीं गर्वके सिरपर सोहनेवाली मणि बन जाते हैं यह समझते हैं कि मु से ड़ा ज्ञानी और कोई नहीं इतने अकड़ते हैं कि किसीकी मानते ही नहीं और स धु सतोंको तग करते हैं तुका कहता है ऐसे जो माया-ज लमें हैं उनके पास न दलाल कहाँ

रन्तु ये मायावी मानके भूखे होते हैं और हालत इनकी य होती है कि चाहते हैं मान और होता है अपमान अल्प विद्याके गर्वके नशेमें चूर होकर सतोंकी निन्दा करके ये अपमानित ही होते हैं गुरु बननेका बन्ध करनेवाले पेट पुजारियों भ्र आचार तुकारामजीको बहुत ही अखर था इनके बारेमें उन्होंने क है

गुरुपनके दसे ये सब मय अशुचि रहते हैं कहते हैं ब्रह्ममें कोई जाति पाँति नहीं कोई शौचाचारका पालनेवाला पवित्र पुरुष हुआ तो उसे ये काँटा स झकर उखाड फेंकना चाहते हैं अनामिक आत्मिकको ये मानते हैं न जाने कैसा होम हवन करते हैं और ब लोग एक जगह बैठकर खाते हैं कहते हैं इसमें को पाप नहीं यह तो मोक्ष द्वार है तुका कहता है ऐसे पूरे गुरु और पूरे शिष्य श्रीविठ्ठलकी प करके मैं कहता हूँ कि नरकगामी होते हैं

ग फाड़कर चिल्लाते हैं जोरोंके सा उपदेश करते हैं स्त्रियों और ब ोंपर रग ते हैं ऐसा कुछ उपाय रखते हैं जिससे कुछ बँधी

आमदनी होती रहे ब्र निरूपण रते हैं पर जैसा कहते हैं वैसा रते कुछ भी नहीं ऐसे बने हुए गुरुओं और स बने फिरनेवाले दाम्भि के न तुकारामजीने अच्छी तरह ऐंठे हैं

ऐसे पेट पुजारी स के स भगवन्त कहाँ पर स्त्री द्य-पान असत्य दम्भ मान इत्यादिके पीछे पड़कर परमार्थकी दूकान निवालोंको तुकारामजीने कह है कि ये पुरुष नहीं चार पैरवाले हैं मनुष्य होकर भी कुत्ते हैं वेद, वेदा विद् गुरु और सत कहानेवाले लोगोंमें बहुतेरे बकरे होते हैं और अद्वैतका दुरुपयोग करके विषयवनमें चरा करते हैं

विषयमें जो अद्वय हैं उनसे हमलोग दूर रहें उन्हें स्पर्श भी न रें भगवान् वहाँ अद्वय नहीं उससे अलग हैं सबसे अलग निष्काम हैं जहाँ वासना लिपटी हुई है वहाँ ब्रह्मस्थिति कैसी ?

❀ ❀ ❀

ससारमें नाम हो इसके लिये तो तू गोसाईं बना इसीके लिये तैंने थोंको पढा इसीसे असली मर्म तुझसे दूर ही रहा चित्तमें तेरे अनु नहीं हुआ तो झूठ मूठ ही य भगवा पहन लिया और झूठी ही बकवाद करके अपनी जिह्वाको क दिया

विद्वानोंमें म तर्क और पन्थ तो बहुत होते हैं पर अनुपानसे शुद्ध होकर भगवान्‌के चरण पकड़नेवा । कोई विरला ही होता है

सीखे हुए बोल ये लोग बो सकते हैं पर अनुभव तो किसीको भी नहीं हो पण्डित हैं कथाओंका अर्थ बता देंगे पर जिस अर्थसे इन सुख बढे उससे ये कोरे ही रहते हैं

❀

तार्किकोंके बड़े चतुर होनेमें सन्देह ही क्या है पर इनकी चतुराई को श्रीविट्ठलजीका कोई पता नहीं है अक्षरोंकी बड़ाईमें ये चढा ऊपरी

र सकते हैं पर श्रीविट्ठलकी बड़ाईको नहीं ान सकते

❀

मत-मतान्तरोंके ये कोष हैं शब्दोंकी युत्पत्तिके भण्डार हैं पाठान्तरोंके अभ्यासी हैं और इनकी वाचालताकी तो बा ही क्या है पर मेरे श्रीवि का भेद ये न ीं जानते व तो इतनी दूर हैं कि वहाँ क देहभाव पहुँच ही नहीं सकता यज्ञ याग जप तप अनु ान येय ध्यान सब इसी ओर रह जाता है का कहता है चित्त ब उपराम हो ब प्रेमरस उत्पन्न हो ’

केवल ाब्दि न अहकारी ान देहबुद्धिको बना रखनेवाला ज्ञान मुर्दे ो पहनाये हुए आभूषणोंके समान व्यर्थ है वेदवाणी सुनो सार हण करो वेदोंकी आज्ञाओं ा पालन करो शास्त्रोंके अर्थोंको देखो उनका ा पर्य समझो चित्तको उपराम होने दो अनात्म भावनाकी जड़को उखाड़ फें ो और प्रेमसे मेरे पा डुरङ्गका भजन करो यही पण्डितोंसे कारामजीने कहा है पेटमें अन्न न हो तो श्रृगारकी क्या ोभा उसी ार श्री रिके प्रेमके बिना कोई ज्ञान किसी कामका नहीं जिसके लिये वेद ा और पुराण बने उस नारायणको जानोगे भजोगे तो म्हार ज्ञान सफल होगा नहीं तो समाजमें अहकारी विद्वान्‌की किसी कोढी मनु यकी सी गति होती है पण्डित होकर पेटके लिये नरस्तुति करना या वाग्वादमें ही वाणी यय रना ो अच्छा नहीं है यही कारामजीने बड़ी नम्रतासे उन्हें सम या है

नो हे पण्डितगण आपलोगोंकी मैं चरणवन्दना र हूँ आपलोग मेरी इतनी विनती मान लीजिये कि कभी मनुष्योंकी स्तुति कीजिये अन्न व का ि ना प्रारब्धके अधीन है जो मि इसलिये तुका कहता है अपनी वाणी नारायणके गुणगानमें लगाइये

तुकाराम जैसे श्री रि प्रेमी प्रेममय संतके मुखसे दुर्जनों और

दाम्भिकोंके प्र तिरस्कारभरे ऐसे ऐसे कठोर शब्द निकलते थे कि नने वालोंको कभी भी बड़ आश्चर्य होता था कि हरि प्रेमका य कौन सा ण है तुकाराम ीने इसका उत्तर यों दिय है कि प्राणिमात्रमें मेरे रि ही विर रहे हैं यह ो मैं ानता हूँ पर रास्ता भूलकर टेढे रास्ते चलने ोंको सीधा रा ादखानेके लिये ही मैं उनके दोष ब ा र उनकी आँखें खोलता हूँ दुनियाकी नि दा करनी पड़ती है य स ी है पर करूँ तो क रू दूसरोंके म से मेरे चित्तका मेल जो नहीं बैठता मिठा२से नहीं मानते मुँ में कौर ते हैं तो मुँ ब फेर लेते हैं तब हाथ पकड़कर और कभी कान पकड़कर भी सीध रना ही पड़ता है रोगीके नकी रनेसे तो काम न ी चलेगा कठोर हुए बिन कड़वी दवा पिलाये बिना उस ा रोग कैसे दूर होगा इन लोगोंपर दया आती है इन ी दशा दे कर हृदय रोता है ब नहीं रहा जाता तब जिसे मैं स्वय अनुभव करता हूँ ी गत्को देता हूँ भावुक ोग मेरे गलेमें माल पहनाते हैं पैरोंपर गिर पड़ते हैं मिष्टा भोजन कराते हैं पर उससे मुझे सन्तोष नहीं ो इसलिये अधीर होकर कहत हूँ अरे भगवान्के चरणोंका चित्तमें चिन्तन करो नहीं मानते ब कड़वी दवा पि नी पड़ती है ो कुछ कहता हूँ इसीलिये हता हूँ कि

इस भ सागरमें ोगोंको डूबते हुए इन आँखोंसे नहीं दे ा ाता द ड़प उठता है '

मान या दम्भसे मैं किसीकी छ तो नहीं करता यह श्रीविठ्ठलकी करके कहता ँ

ससारमे स त्र ही भगवान् हैं फिर भी ो मैं निन्दा रता हूँ यह मेरा स्वभाव है ये लोग के गालमें गिरे रहे हैं यह देखकर दयासे नहीं

फिर भी यदि मेरा इस प्रकार दम्भ भण्डाफोड़ करन किसी ो

अप्रिय लगता हो इससे किसीको कु क होता हो तो मैं ही दु और चा डाल हूँ और इसलिये सबसे क्षमा माँगता हूँ

८ धरना दिये को बोध

एक ब्राह्मण अ लन्दीमें धरन दिये बैठा था ज्ञानेश्वर महाराजने उसे तुकारामजीके प स मे । तु ारामजी बड़ाई चाहनेवाले नहीं थे पर ज्ञानेश्वर महाराजकी आज्ञा जानकर उन्होंने इस ब्राह्मणको उपदे दिया पर वह उस उपदे और महाफलको वहीं छोड़कर चला गया उस प्रसङ्गपर तुकारामजीने ग्य रह अभङ्ग हे हैं कुछका आशय नीचे देते हैं

ग्र थोंके भरोसे मत पड़े रहो अब इसी बातकी जल्दी करो कि मन को दे भावसे ख ली रके भगवान्के प्रेमसे भगवान्को मनाओ और सा न के मुँहमें देंगे भं ासके ग्रेसे कोई भी मुक्त न ारेगा

भगवान्के पास मोक्षका कोई थैला ोड़े ही रक्खा है जो उसमेंसे थोड़ा सा निकालकर वह तुम्हें भी दे देंगे ? इन्द्रि वि जयसे मनको साधो निर्विषय बन जाओ । बस मोक्षका यही मूल है तुका कहता है फ तो मूलके ही पास है उस मू को पकड़ो शीघ्र श्रीहरिकी रण लो

उन करुण ाकरसे करुणा माँगो, अपने मनको ाक्षी रखकर उन्हें पुकारो कहीं दूर ना आना नहीं पड़ वह तो अन्तर साक्षिस्वरूप विराजमान हैं तुका कहता है कृपाके सिन्धु हैं भव बन्धको तोड़ते उ हें कितनी देर लगती है ?

ग्रन्थोंको देख र फिर कोर्तन करो उसमें (ज्ञानमें) ोगेगा नहीं तो व्यर्थ ही गाल या और सना तो हृदयमें रह ही गयी तप ीर्थाटन आदि र्मोंकी सिद्धि तभी होगी ब बुद्धि हरिनाममें स्थिर होगी तुका कहता है अन्य गड़ोंमें मत पड़ो बस यही एक ससार सार हरि नाम धारण लो

नहीं घर बैठे छप्पर फाड़कर मि नेवाल द्र य न हीं बिना कु किये कराये सब कु अ प ही हो ाय ऐसा कोई चमत्कार नहीं जो ोग इसे ऐसा सम ते हैं वे उस ब्राह्मणकी तरह उपर्युक्त उपदे को पढकर निर हो ौट पड़ेंगे पर ो परमार्थ पथके पथिक हैं उनके लिये इसमें बड़ा ही प यकर पाथेय है इसको विस्तारसे समझानेकी आ श्यक । नहीं पाठक स्वय ही अपनी बुद्धिसे इसे ग्रहण करेंगे

९ तुकाजी ैर शिवाजी

त्रपति श्रीि वाजी महाराजका न्म सवत् १६८६ (ाके १५५१) के फाल्गुन मासमें अर्थात् तुकाराम ीकी आयुके २१ वें र्ष जो भय र दुर्भिक्ष पड़ा था उ ी दुर्भिक्षके स ल हुआ शिवाजी महार जने अपनी अ युके १७ व वर्ष ोरणकिलेपर अपना अधिकार माकर वहींसे स्वराज्य सस्थ पनके उद्योगक ी ाणे किया इसके तीन वर्ष बाद सवत् १ ६ (के १५७१) में तुकारामजी वैकु ठ सि ारे समर्थ रामदास स्वामी । न्म सवत् १६६५ (ाके १५३) है पुर रण और तीर्थ य त्र करके वत् १७ २ में समर्थ स्व मी कृष्णा टपर आये स त् १७ ३ और १७०६के बीच किसी स य समथ शि । ी और रामजी तीनों । माग हुआ होगा तुकार मजीके कीतंन भी शि जीने इन्हीं तीन वषमें ने ेगे ि वाजीकी म ता ि जा ाई और गुरु था र्यवा दाद ी ों दे के र । ध नमें और उनके प्रोत्सा नसे स्वराज स्थापन का उद्योग आरम्भ हुआ कार जी ैसे अव री पुरु थे ैसे ही

पहले य धारणा थी कि सवत् १६८४ (शाके १५४९) में शिवाजी महाराज उत्प हुए पी जो नवी तिह स ोध है उससे निर्विवादरूपसे णि हो है कि महाराजका स त् १६८६ (शाके १५५१) ही है भाषान्तरक र

ि वाजी भी अवतारी पुरुष थे दोनोंका ही मुख्य कर्मक्षेत्र पूना प्रान्त था तुकारामजीने धमको जगाकर ोगोंके उद्धारका पथ प्र स्त किया जिस समय तुकारामजीका कार्य खूब जोरोंके साथ हो रहा था उसी स य स्वराज्य सस्थापनका कार्य आरम्भ हुआ भार वर्षके सभी अवतारी पुरुषोंका प्र ान ध्येय स्वधर्मरक्षण ही रहा है धर्मके सरक्षणके लिये ही हमें यह सारा प्रप करना प ता है तुकारामजीकी इस उक्तिके अनुस र तुकारामजीका यह कार्य था और हिन्दवी स्वराज्य श्रीने हमें दिया है हि दू र्म सरक्षणके ि ये हमने फकीरी बान कसा है कहनेवाले ि वाजी काय भी यही र्म सरक्षण ही थ दोनोंका ्येय और ध्यान एक ही था राष्ट्रके अभ्युदय और नि श्रेयस दोनों ही र्म सरक्षणसे ही बनते हैं धर्म सरक्षण प्र ान अङ्ग र्णाश्रम र्म रक्षण है कारण वर्णाश्रम धर्म ही सना न र्मकी नाव है तुक राम ि वाजी और रामदास ीनों ही वर्णाश्रम र्मकी बिगड़ी हुई हाल को धारनेके लिये ही अवतीर्ण हुए थे कलि प्रभ के अभगोंमें तुक रा ीने उस समयका यथार्थ र्णन करके बताया है कि कि कार ब वण भ्र हो चले थे कोई र्ण र्म नहीं ान । छूत छा नहीं मानत एकाकार होकर उच रहे हैं य दे कर उन्हें बड़ा दु हुअ और ऐसे र्ण र्म त्ति सकर उन्होंने निषेध कि प प अ न दि करना लोगोंको बड़ा बोझ मालूम होता है पर इस मासपिण्डको पो ना ड़ा अच्छा है

ई र और धर्मको लोग भू से गये हैं देहको दे और भो ो ही भक्ति स बैठे हैं र्तव्य बोध कु र ही नहीं चारों ण अठारहों जाति याँ एक पक्तिमें बैठकर भो करनेवाले सहभो प्रेमी बने हैं

ि प्रभ है कि पुण्य दरिद्र हो ग और पाप न् बैठा द्विजोंने अपने आचार छोड़ दिये नि द और चोर गये

किया व से स्वधर्मीय रा सत्ताके सहारेकी आवश्य थी लोग अपने आचार धर्मसे वि हो गये थे उन्हें रास्तेपर ले आनेके लिये दण्डशक्ति आ श्यक थी

क्या रू भगवन् मुझमें वह बल नहीं कि इन्हें द देकर आगेके ोगोंको रास्तेपर ले आऊँ

य उनके हृदयका उद्गार है इसके लिये वह भगवान्से ार्थना रते थे उनकी य इच्छा उनके जीवि कालमें ही पूरी हुई क से

अन्ति ती चार ष तो शि जी उनके सामने ही थे शि वाजी महाराज धम और धर्मप्रचार सा सन्तोंसे हार्दिक स्ने रखते थे माता जिजाबाई और गुरु दादाजी ोंडदेव दोनोंकी ही उन्हें यही शिक्ष थी कि स धु सन्तोंके कृपाशीर्वाद व भरोसा पाये ि ना तेरा राजका सफ न ीं होग रामायण और म भारतकी वीर गाथाओंके सुननेका उन्हें बड़ा प्रे साधु सतोंसे मि ना उनका सत्कार और सत्सङ्ग रना य तो उनका स्वभाव ी बन गया था अन्तको उ होंने सम रामद स ामी ा बड़ा मागम वि ा और उनसे उपदे भी लिय यह ब तो प्रसिद्ध ही है पर इससे भी पहले चिंचवडके चिन्तामणि देव और पू अनगडशाहके दर्शनोंके लिये महार गये थे ौनी बा और याकूबकी शिवाजीपर बड़ी कृपा थी यह ेन्द्रस्वामीने है (महारा इतिहा साधन ३) कृष्णदयार्ण रिवरदा ग्रन्थमें कहते हैं कि एकना महाराजके शि चिदानन्दस्वामी और उनके शिष्य स्वानन्दको शि भूपति अपनी कल्याणकामनासे र्थना करके राय दुर्गमें ले आये और ाँ व प्रकारसे उनकी सेवाका प्रबन्ध ससे दोनोंको बड़ा सन्तोष श्रीशि छत्रपति ऐसे स समागम प्रेमी थे तुकाराम राजसे न मिलते ऐसा कब हो

१ शिवाजीके नाम पत्र

पहले पहल तुकारामजी जब लोहगाँवमे थे तब शिवाजीने अपने आदमियोंके साथ उनके पास म लें घोड़े और बहुत से जवाहिरात भेजकर उनसे पूनेमें पधारनेकी विनती की पर तुकारामजी ठ रे महाविरक्त उन्होंने जवाहिरातको देख तक नहीं और वैसे ही शिवाजीके पास लौटा दिया साथ ९ अभगोंका एक पत्र भी भेजा

मशाल छत्र और घोड़ोंको लेकर मैं क्या करू यह सब तो मेरे लिये अच्छा नहीं है इसमें हे प ढरिनाथ अब मुझे क्यों डालते हो ? मान और दम्भका कोई काम मेरे लि ये शूकरी विष्ठा ही है तुका कहता है दौड़े आओ और मुझे इससे छुड़ा लो '

मेरा चित्त ो नहीं चाहता वही तुम दिया करते हो इतना तग क्यों कर रहे हो

ससारसे तो मैं अलग रहा चाहता हूँ इसका सङ्ग चाहता ही नहीं चाहता हूँ एकान्तमें रहूँ किसीसे कु न बोलूँ जन धन तनको मन सा माननेको जी चा ता है तुका कहता है चाहने ो तो मैं चा हू पर करने धरनेवाले तो म्हीं हो

मैं क्य चाहता हूँ यह जानते हो पर अन्तर जानकर भी टाल देते हो यह तो तुम्हें आदत ही पड गयी है कि ो भी म्हें चाहता है उसके सामने ऐ ी ऐसी चीजें लाकर रख देते हो कि वह उन्हींमें फसकर तुम्हें भूल जाय पर तुकाने ो तुम्हारे पैर पकड़ रखे हैं देखू तो सही इन्हें ैसे छुड़ा लेते हो

पने नि यके आसनको स्थिर रखते हुए तुकारामजी शि वाजी महार को उस पत्रमें लिखते हैं चींटी और नरपति दोनों ही मेरे लिये

एक से ही जीव हैं ो और आस जो कलिकालका फाँस है अब कु भी
नहीं र है सोना और मिट्टी दोनों ही मेरे लि ये बराबर हैं का कह
है सम्पूर्ण वैकुण्ठ ही र बैठे आ गया है मुझे कमी किस बातकी है

ीनों भुव के सम्पूर्ण वैभवका नी बन बैठा हूँ भगवान् मेरे
माता पिता मु मि गये अब मु और क्या चाहिये ? त्रिभुवन
सम्पूर्ण ब तो मेरे अदर आ गया तुका कहता है सारी सत्त तो
अ मेरी ही है

आप हमें दे ही क्या सकते हो म तो विट्ठलको चाहते हैं हाँ
आप उद र हो चकम पत्थर देकर पारसमणि चा ते हो प्राण भी दो
तो भी भगवान् ी कहलायी एक बातकी भी बरा री न हो सकेगी
क देते हो ो तुकाके लिये गोमासके समान है

हाँ कु देना ही चाहते हो तो एक ही दान दो

उससे हम खी होंगे मुखसे वि वि ' कहो आपक
ौर सारा धन मेरे लि ये मिट्टीके समान है क ठमें तु सीकी कण्ठी पहन
लो ए ादशी ा व्रत करो रिके दास कहलाओ बस यही ए
काकी आ है

इन सात अभगोंके सिवा दो अभग और हैं इनमें ह हते हैं
बड़े बड़े पर्व ोनेके बनाये कते वन वनके वृ ोंको कल
सकता है नदियों और समुद्रोंको अमृ की नदि ाँ और मुद्र
जा ा है मृत्युको रोक र ा जा सकत है भूत भविष्य
तमान बताया सकता है ऋद्धि सिद्धियोंको प्रसन्न किया जा ा है
ोगमुद्राए सिद्ध की जा सकती हैं णको ब्रह्म डमें चढाया जा सकता है
ब कु किया है पर प्रभुके चरणोंमें प्रीतिलाभ करना पर
र्लभ है इन सब रि द्धियोंसे उन चरणोंका लाभ नहीं होत ऐसे

श्रीविठ्ठ के जग दुलभ परम प वन परमान दकर चरण महद्भाग्यसे मु मिले हैं इनके सामने इन दीपदान त्र और घोड़ोंको अपने दयमें मैं कहाँ ग दू

मेघवृष्टि और गङ्गाप्रवाहका दृष्टा त देते हुए दूसरे अभगमें तुकाराम महारा कहते हैं कि परती जमीन और खेत दोनोंपर मेघ वृष्टि समान ी होती है और गङ्ग के प्रवाहमें पु यव न् और पापी समान ही स्नान र पुनी होते हैं वैसे ी हमारा हरिकीर्तन अधिकारी और अनधि कारी राजा और र सभीके लिये समानरूपसे होता है

एक अभग और है जो शि ाजी ाराजके लिये लिखा गय हो । उसका भाव यों है

आपने बड़े बडे बलवानोंको अपने मित्र बनाये हैं पर अन्त यमें य काम न आवेंगे पहले रामना लो इस उत्तम स को अपने भी र भर ो य परिवार य ोक य सै य वि सी काम न आवेगा ब क का सिरपर न ी सवार हुअ तभीतक आपका यह बल है तुका कहता है प्यारे खचौरासीके चक्करसे बचो

११ सिपाहीबानेके अभ

इसके पश्चात् श्रीशि ाजी महार स्वय ही श्रीतुक राम महारा के दर्शनोंके लिये लोहगाँव गये महाराजका कीर्तन सुनकर शिवाजी र

तुकारामजीके नव भगी पत्रसे कट होनेवाले प्र र वैराग्य ौर ौकि आत्मनिष्ठाका पूनेके राजमण्डलपर भक्तोंपर ा प्रभाव पड़ा हो इसमें सन्देह ही है तुकारामके अभगोंके कुछ स होंमें ९ गोंके सिवा ५ बड़े डे अभग ौर हैं उनमें पति श्रीशिवाजी महाराज के ौर समर्थ श्रीराम ासस्वामीके भी नाम आये हैं परन्तु वारकरियोंमें वे प्रक्षिप्त माने ाते हैं और झे भी प्रक्षिप्त ही जान पड़ते हैं पर ये नौ अभग तुकाराम महाराजके ही में देह नहीं

हुत ही प्रसन्न ए उनका कीर्तन ननेका अब उन्हें च ही गया कई दिनोंतक शिवा ी महारा का यही नित्यक्रम रहा कि र ो ब्य ह्र करनेके बाद घोड़ेपर सवार होते और तुकारामजी दे या लोहगाँव जहाँ भी होते व ाँ पहुँचकर उनका कीतन नते और प्रात आरती होनेके बाद पूनेमें ौट आते करते रते ए दिन शि जीके चित्तमें पूर्ण वैरा य भर गय और नित्य मके अनु ार वह पूना नही ौटे देहूमें तु ारामजीके प स ही र गये जि ाबा२ ो य भ हुआ कि शिवाजी राजकाज छोड़कर कहीं ैराग्य योग न ले लें स्वय देहू पहुँचीं कारामजीने रि कीत करके हुए र्णा धम बता ौर क्षात्र म राजधर्मका रहस्य प्रकट रके शि वाजीको स्वकर्त० पर आरूढ कि ा ए दिनकी बा है कि काराम म राज ीतन कर रहे थे श्रोताओंमें शिवाजी बैठे न रहे थे ऐसे अवसरपर एक ह ार पठान चढ आये और उ होंने मन्दिरको घेर ि या शि वाजीको पकड़नेका इससे अ अवसर और कौन सा हो सक थ परन्तु तुकाराम म ाराजके पु यप्रत पको देखिये य शि वाजी महार ी सावधानता सरा ि ये शि ी को प ड़नेके ि ये अ ये हुए उन एक र पठानोंके सामने होकर ए हजार पुरुष ऐसे निक गये ो दे नेमें शि ाजी जैसे ही प्रती होते थे और इन सहस्र रूय शिवाओंको देखकर पठानोंके होश ही गुम ो गये वे मी ही न कर के कि इसमें ौन शिव जी हैं और ौन नहीं है शि ा ी ऐसे निकल भागे और मुग सेनाके सिपाही क्के-बक्के-से र गये ये बातें सबको विदि ही हैं हीपति बा ने इन बातों विस्तारपूव वर्णन किया है यहाँ उ ना विस्तार न रके एक सङ्गकी बात और ि ख देते हैं

एक बार तुकारामजी कीर्तन कर रहे थे और श्रीविठ के रणबाँकुरे वीर श्रवण कर रहे थे इन्हींमें श्रीशि जी और उनके धीर अमात्य था

वीर सैनिक भी बैठे सुन रहे थे श्रोताओंकी न रोंसे नजर मिलते ही कारामजीके चित्तने यह चाह कि इन द्विविध निष्ठावालोंको अर्थात् दि ल-भक्त वारकरियोंको और स्वराज्य सस्थापनके उद्योगियोंको एक थ ही बोध कराया जाय उस अवसरपर उ होंने उसी समय रचते हुए सिपाही बानेके ११ अभग हे राज का में हो या परमार्थके स धनमें हो वीर ता बड़ी दुर्लभ वस्तु है घर गिरस्तीके प्रपञ्चमें देशके राज काजमें और परमात्माके परमार्थ साधनमें हाँ भी देखिये सामा य ोगोंकी ही भरमार होती है सामान्य जीव ही सर्वत्र दिखायी देते हैं और इ ीलिये वे सामान्य कहल ते भी हैं वीरत्व गुण सम्पन्न पुरुष दुर्लभ होते हैं वीरत कहीं भी ो उसकी जाति एक ही है भीरु और वीर पामर और सत एक तिके नहीं हैं पशुओंमें ीर एक ही होता है सिं मनुष्योमें वीरत्व गुणकी जाति होनेपर भी उसके प्रकार भिन्न भिन्न हैं एकान्तविध्वसी अ ात् कभी न कभी न होनेवाले इस रीर और इस रीर स ब धी सब विकारोंसे जो अलग हो जाता है वह वीर है शरीर और रीर सम्बन्धी क्षुद्र व नाओंमें बँ ा हुआ जो रहता है वह भीरु और जो इस दूषि वायु म डलसे मनसा ऊपर उठ आया हो व वीर है बुद्धिमत्ता उद्योगदक्षता उच्चध्येय ा पराक्रम साहस ोककल्याणकर्मनि त इत्य दि असली वीरके गुण हैं अगरे ग्र थकार कार्लाइ और अमेरि न तत्त्ववेत्ता इमर्सनने वीर पुरुषोंकी अ ग अ ग कक्षाएँ बाँधी हैं उ हीं कक्ष ओंमें म अपने यहाँके ीरोंको बैठाना चाहें तो यों कह सकते हैं कि श्री राचार्य और ज्ञानेश्वरादि तत्त्ववेत्ता और मसस्थापक एक ही कक्षा या तिके वीर हैं मीकि व्या सूर और तुलसीदास दूसरी जातिके वीर हैं विक्रमादित्य शिवाजी आदि रामराज्य सस्थाप तीसरी तिके वीर हैं के व बि ारी और हरिश्च द्र आदि पण्डित और ार चौथी तिके वीर हैं नान कबीर अ दि सा स पाँचवीं तिके वीर हैं ये ब

वीर ही हैं तुकाराम रामदास और ि वाजी वीर ही थे ये स योद्धा थे सिरको दोनों हाथोंमें छिप कर रोनेवाले नहीं नहीं असा यको साधकर दिखानेवाले थे शिवाजीने स्वराज्य सस्थ पित करके दिखा दिया कारामजीने भगवान्को प्रत्यक्ष किया तुकाराम ीने शूरवीर बननेका उपदे करते हुए सिपाहीबानेके अभग कहे तुकार मजीने शि य और शिवाजीके सैनिक र्मवीर और रणवीर दोनाको उपदे किया है उस उपदेशका महत्त्व पूण अश नीचे देते हैं मर्मज्ञ इस । मर्म जानेंगे

सिपा ीबाने साथ सिद्धान्तपर आरूढ हो वीर बनो ीरोंकी गाथ चित्तमें धारो सिपाही बने बिना प्रजा पीड़नका अन्त नहीं ोगा और प्रजाको सुख न ी होगा प्राण दानमें उदार सिपा ी बनो सिपाहियोंकी कु क्षेम । स भार स्वामीपर है सिपा ीपनके खसे ो कोरा ी रहा उस जी व्यर्थ है उसके ीवनको धि ार है तुका कहता है एक क्षणमें सब बात ो जा ी है फिर सिपाहीके खक ोई अ त नहीं

दनादन ोलियाँ लग रही हैं बाणों पर बाण अ कर गिर रहे हैं यह ब वह सह लेता है और ऐसी मूसलाधार वृष्टि रता है कि जि का कोई परिमाण ी नहीं स्व मी और उनक कार्य ही सामने दिखायी दे रहा है उ युद्धकी शोभा ही कु और है जो शूर और वीर सिपाही हैं वे ऐसे द्धमें अदर और बाहर बड़ा ख लूटते हैं

सिपाहियोंको चाहिये कि आत्मरक्षा करें परकीयोंको लूटें उनका स ख ीन लें अपने ऊपर चोट न आने दें शत्रुको अपना पता भी न गने दें ऐसा जो सिपाही होता है दुनिया उसे अपना नाथ मानती है तुका कहता है ऐसे जि सके सिपाही हैं वही तीनों लोकोंका अमित पर क्रमी सेनान यक है

सिपाहियोंने ही परकीयोंक बल तोड़कर पथ चलने योग दिया परकीयोंकी छावनियाँ अपने ाथमें कर लीं और वहाँ अपने आदमी तैना किये जो ोग रास्ता ोडकर चलते हैं उन्हें ये सिपाही मार देते हैं जि समें दूसरोंको शि क्षा मिले का कहता है ये सिप ही वि लिये वि ो दिये चलते हैं

ो सिपाही तन ो तृण और र्णको पाष णके बरा र समझ ा है उ से उसके स्वामी भिन्न नहीं हैं विश्वासके बिना सिपाही ा को मूल्य नहीं

प्राणोंपर खे नेकी उदारता जि न सिपाहियोंमें है वे ही सिपाही ोहते हैं और उनके बीचमें उनके ना क मुकुटमणिसे ोभा पाते हैं भीरुओंकी तो कु चा ही नहीं है हाँ तहाँ भरे पड़े हैं उनके आने नेक ताँ ा गा ही हुअ है कहींसे भी व नहीं टूटता है ’

❀ ❀

एक ही स्वामी हैं उन्हींके सब सिपाही हैं जो जितना बड़ा योद्ध हो उ ना ही अधि क उसका मूल है तुका कह ा है रनेवाले ो सभी पर मरनेसे रन बेपानी ोना है मूल्य जो कुछ है वह निर्भय ाके पानी है

अ सिपाही ही सिपाहीको प चानत है उसमें ए ही स्वामीके लि ये आदर और नि ोती है पेटके लि ये ो हथियार बाँधते हैं वे तो मैले ड़ोंको ढोनेवाले गधे हैं ति का जो अस है व मारन और जान है वह क पर ीयों ो अपना अस्तित्व सौंप देगा कहता है उन्हें देवता मान र दन रँगे ो वै हुए हों उनके जा ते हैं

वाणीसे उ होंने जो उपदे किया है वह अत्य स्प निधड़क और प्रभा वोत्पादक है भगवान्‌की गुहार करनेमें सतोंके गुण गानेमें ना की म मि म बत नेम दाम्भिकोंका भण्डाफोड़ करनेमें और विवि प्रकारके लोगोंको उपदे करनेमे उनकी व णीसे जो तेज निक ा है व ी ते इस रा कारणविषयक उपदेशमें भी है और यह उपदेश उन्होंने किसी एकान्त स्थानमें बैठकर चुपके से नहीं कि ा है बल्कि हरि कीर्तनकी भरी भामें किया है और उन उन्नीस वर्षके युवक वीर शिवाजी और उनके साथिय को किया है जि होंने अभी अभी स्वराज्य सस्थापनके महान् उद्योगपर्वका आरम्भमात्र कि या था जिन काराम महाराजका सारा ी न रा दिन अन्तर्बा जगत् और नसे युद्ध करते और उनपर अपना मित्व पि करते ी परस्त्रीम त्रको जिन्होंने मा माना और सत्त्वहरण करने अ यी हुई अप्सर को ता रखुमाई कहकर विदा कि या जि होंने राजाकी ओरसे भेंटमें आये हुए बहुमूल्य रत्नोंको गोमाससमान द्रव्य कह कर लौटा दिय रामे र भट्ट जैसे दि ग विद्वान्‌को जि नके आध्यात्मि तेजके सामने बार ही दिनमें न मस्तक होकर अपन आपा सदाके लिये भुला देना पड़ा शि बा सार से घन लोभीको जि होंने एक स ाहमें कीतनरगमें ऐस रग डा कि उसने स रा वैभव परित्याग कर वैरा य ले लि यां शिव जी महारा जैसे परम तेजस्वी परम पराक्रमी म पुरुषको जिन्होंने अपनी अ तर्बा एकता और विशुद्ध सिद्ध प्रबो वाणीसे भक्ति भावसमुल्लासका आनन्द दिलाकर उसपर उनसे नृ य कराया जि होंने स्वय पर त्माको निगुणसे सगुण साकार बनने को विव किया और तीन सौ षसे ला ों ी के हृदयोंपर ि नका प्रभाव अ रूसे प्र ि होता और उन हृदयों को परम ाद देता चला जा र है उन कार जीकी णी वीर्यवती न होगी तो और ि स ी होगी वाणी वीर्यवती ते स्विनी अभयव रदायिनी है पर समें आश्चर्यकी कोई ब

नही जैसे वीरशि रोमणि तुकाराम वैसी ही वीयशालिनी उनकी अभग वाणि आश्चर्य तो इस बातका है कि ऐसे तेज पुञ्ज परम पुरुषार्थी म । पुरुषको था तत्तुल्य और तद्गुरुस्थानीय श्रीज्ञ नेश्वर एकन थादि सिद्ध मह पुरुषों और महात्माओं तथा सारे व रकरी सम्प्रदायको कुछ आधुनिक ढगके दे भक्तों ने अकर्म य भीरु राष्ट्रक किसी कामके ल यक नहीं राष्ट्रकी ानि रनेवाले आदि दु विशेषणोंसे विद्रूप करके अपनी बुद्धिकी बड़ी सराहना की है और दु ख इस बातका है कि उनके इस उ ङ्ख बुद्धिचाञ्चल्यसे अनेक नवयुवकोंका बुद्धिभेद हो जाता है सतोंकी नि दा भगवान्को प्रिय न ीं होती और समाजके लिये पथ्यकर नहीं होती श्रीज्ञानेश्वर एकनाथ तुकारामादि भक्तोंने य वार री सम्प्रदायने इन नयी रो नी लोंका ने क । बिगड़ है दे भक्तोंके म्प्रदायको इस प्रकार स ोंकी निन्दा सतोंका विरोध और र्मक उच्छेद सू ह बहुत ही बुर है भारत वासि ोंके दयोंपर सतोंका इत गहरा प्रभाव पड़ा हुआ है कि उसके सा ने कोई निन्दा विरोध और उच्छेदक दुस्सा स हर ही नहीं

दि भारती साहित्यमेंसे संतोंकी णी अल कर दी यदि म राष्ट्रके साहित्यसे ाने र एकना काराम । हिन्दी साहित्यसे सूर तुलसी बीर आदिकी ाणी अ ग कर दी जाय तो इन साहित्योंमें र ही । जायगा श्रीज्ञानेश्वर ए नाथ काराम आदि ोंने महाराष्ट्रमें धर्मको गाने प्रचण्ड कार्य किया रा की मनोभूमि दी लोगोंको नीति और सद चारके पाठ पढ ये विधर्मी र सत्तासे ददलि अचे जनताको र्मकी सञ्जीवनीसे चैत किय वैदिक धर्मकी र की ड़ी ही ठिन परिरि तिमें हि दू र्म और हिन्दू माजको भ और पालन कि , मराठी भ षा वैभ ढ़िंगत किया अपने उ चरित्र और दिव्य प्र ोध क्तिसे हार ष्ट्रमें नवजीवन । सञ्चार

किया और इसीसे श्रीशिव जी महारा स्वराज्य सस्थापनमें समर्थ हुए सूयप्रकाशके स न देदोप्यमान इस वटनापरम्पराको देखते हुए भी जो लोग पाश्च त्योंकी देशप्रेम म्ब धी कल्पन से गुमर ह होकर इन ोककल्याण कारी स ोंकी अवहे ना करते हैं उ हे क्या कहा ाय मनो के मूर्तिम न् आ ार नि यके मेरु ज्ञ न और वैराग के स गर लो कल्य णके अवतार अखि ाराष्ट्रके हि ये माता पितासे भी अधिक पूज्य लोक

ाणकी ृच्छा रने ले जिनके चरणोंके पा बैठकर आशीर्वाद पा र बलवान् बन ऐसे म हि ईश्वरतुल्य सिद्ध महात्माओंको अकर्म और भीरु और राष्ट्रका मनोब न करनेवाले क कर उनकी नि द रने ले आर घा ी ीव कम से कम इतन तो करें कि प ले उनके सब न्थ पढ जाय इन लोगों । यह ध्यान है कि राष्ट्रको ृन संतोंने न ही कर ला । पर रा दा ने आ र राष्ट्रको उब र हि या स र्थ र द स स्वामी ी स्तुति ि सको प्रिय न होगी जि नी करो थोड़ी है र इसके हि ये य आ श्य नहीं कि अन्य सतोंकी नि दा की

ी ो ँर मदास रद और स य हुए य तो स्प ही है पर समझनेकी बा य है कि स्वराज्य स नके क ममें शिव जी महार को ो पर क्रमी न्य ान् सदाचार प दृढनिश्चयी और शी ान् थी और से मिले जि न्होंने राष्ट्र ार्य धनेके हि ये अपना सर्वस्व शि जीके झंडेपर न्यो वर कर दिया वे स रित्र ीर एकन थ ार दि संतोंकी झीवनी ीसे नवजीवन पाये हुए म राष्ट्रोंमेंसे ही मिले । ये मानसे प पड़े स ोंने रा को यदि भी नाया

तुकारामजीकी मेघग ीसे निन दित म राष्ट्रकी गिरि न्दराओंमें शिवाजीको अपने ारे ले ैनिक मिले थे । उन्हें उन्होंने ीसे पारसलसे इतिह ो मुक्त ण्ठसे स्वी र है कि इन पहाड़ों रहनेवाले र ई ानदार और शूरवीर ोंसे

एकनिष्ठ सहायता और सेवा पाकर ही शिवाजी स्वराज्य स्थापित कर सके मावले प्राय किसान होते हैं और सब देशोंके किसानोंके समान २ हें भी लावनियाँ और पोवाने गानेका शौक होता है आज भी जाकर कोई म लोंके प्रदेशमें घूम आवे तो उसे य. मालूम होगा कि तुकाराम म०ाराजके अभग परम्परासे ग ते हुए अबतक वे चले आये हैं मावलोंका जो कुछ धर्म सम्ब धी ज्ञान है व० तुकारामके नाम और अभंगोंक स्मरणमात्र है उनका सम्पूण स ि०त्य २तन ही है शिवाजीके ावलोंके बारह जिले एक दूसरेमें मिले हुए हैं और एकसे ही बने हुए हैं तानाजी मालुसरेके इतिहासप्रसिद्ध शेलार म'मा देहूसे डेढ कोसपर शेलारवाडीमें ही र । करते थे पीछे शिवाजीके सफेदपो सिप हियोंपर समर्थ रामदासकी ाक जमी २समें को२ स देह न०ी पर इसके पूव मावलोंको धर्म नीति यवहारकी अमोघ शि क्षा तुकारामजीके हरि कीर्तनोंसे प्राप्त हुइ थी २से को२ अस्वीकार नहीं कर सकता मनु यसमा विराट् पुरुष है और विराट् बने हुए म०ात्माके सिवा उसे और को२ हि ा डुला न०ी सकता य० ऐरे गैरे नत्थू खैरोंका काम न०ी है कलिकालके प्रभावसे राष्ट्रपर धम लानिकी घटा बीच बीचमें घिर आया करती है और ऐसे समय लोग शक्तिहीन दुर्बल कापुरुष से बन जाते हैं ार धर्मरक्षाके निमित्त जब म०ापुरुष अवतीण होते हैं ब य० घटा छिन्न भिन्न होकर नष्ट हो जाती है म०ापुरुषोंके प्रभावसे राष्ट्रमें सब प्रकारके पुरुषार्थी पुरुष उत्पन्न होते हैं और राष्ट्रकी सर्वांगीण उन्नति होती है समाजके लिये २० परलोकमें संतोंके सिवा और को२ तारनेवाला न०ी संतोंके नेतृत्व और कृपाशीर्वादके बिना राजकीय उद्योग ता के पत्तोंका सा खेल हो जाता है उसका कोई मूल्य या महत्त्व न०ी समर्थ रामदास स्वामीने भी तो यही कहा है कि पहिलें तें ०रिकथा निरूपण दुसर तें राजक रण (पहले हरिभजन और तब रा शक्तिसाधन)

साधु संतोंपर यह आक्षेप किया जाता है कि इन लोगोंने ससारको मिथ्या और नाशवान् कहा इससे लोग अकर्म य बन गये पर ऐसा आक्षेप करने वालोसे य॰ पूछना चाहिये कि क्या समर्थ रामदास स्वामीने ससारको सत्य और अविनाशी' कहा है ? यदि नहीं तो तुकाराम या अ य सतोंने कौन सी मि या और विनाशकी बात कही ? भगवान् श्रीकृष्णने भी तो यही कहा है कि अनित्यमसुख लोकमिम प्राप्य भजस्व माम् वेद और शास्त्र क्या बतलाते हैं और अपना अनुभव भी आखिर क्या है यह भी तो दे ख लो स च्चे देशभक्त श्रीशिवाजी महाराज सतोंके तेज और बलको समझते थे और उनके चरणोंमें लीन रहते थे र जशक्तिसाधन यदि धर्म विवेकको छोड़कर चलेगा तो दर दर भटककर अ तमें सिर पटककर रह जायगा राज आन्दोलनोंके थपेड़े खा कर हताश होनेके बाद जब पूर्ण निराशा राष्ट्रको घेर लेती है तब राष्ट्र ईश्वर धम और साधु सतोंकी ओर झुकता है तब उसे ठीक रास्ता मिलता है सच्चा सात्त्विक प्रेम ब धु त्रा ब ोंका ऐक्य और आत्मरतिका तेज तथा र्मका बल प्राप्त होता है और राष्ट्र अपने उद्योगमें यशस्वी होता है जब समाज धर्म कर्म रहित विवेकहीन और मूढ बन जाता है तब उसमें सवत्र गदगी ही फैल ज ती है सामान्य बूँदा बादीसे वह नहीं धुल जाती उसके लिये मूसलाधार वर्षाकी ही आवश्यकता होती है ानेश्वर एकन थ तुकार और रामदास अपने मेघगर्जनसे सारे समाजको हिला ड लते हैं नकी मेघवृष्टिसे समाजकी सारी गदगी बह जाती है और कूएँ नदी नाले पानीसे भर जाते हैं पथरीली मीनको ड़कर शेष भूमि भीगती है और ऐसी उपजाऊ भूमिमेंसे शिवाजी जैसे कु ल और समर्थ कृषक चाहे तो अन्न उपजा लेते हैं और सम्पूर्ण राष्ट्र खी और समृद्ध आन द वनभुवन में परिणत हो जाता है महाराष्ट्रको ऐसी समृद्धि तुकारामजीके णके पश्चात् बीस बाईस वषके भीतर ही प्राप्त हु॰ उस सुख समृद्धिको

देखकर भूमिकी और उसे कमानेवालोंकी खेतोंकी हरियालीकी उस अन्नप्रचुरताकी तथा उसे भोगनेवालोंके सौभाग्यकी चाहे जितनी प्रशसा कीजिये वह उचित ही है और उसमें सभी सहमत हैं पर प्रेमसे इतनी ी विनय और है कि उस आन दमें मेघके उपकारको न भूलें हताश परव घर्मशू: बने हुए मह राष्ट्रमें उस मेघवृष्टिके होते ही दीन दरिद्र दुखिया महाराष्ट्र आन दवनभुवन हो गया उस आनन्दवनभुवनका माहात्म्य ह श्रीसमर्थ र मदास स्वामीके ही मेघगजनसे सुनकर इस मेघसघातको विनम्रभावसे व दन करें श्रीशिवाजी महाराजके राज्याभिषेक का परम मङ्गलमय शुभ कार्य सम्पन्न होनेके पश्चात् समथ रामद स स्वामीने बडे आनन्दके साथ कहा

य दे अब आन दवनभुवन न गया स्नान स ध्या जप तप अनुष्ठानके लिये पवित्र उदककी अब कोई कमी न रही जो लिखा सो ही हुआ बडा आन द हो गया अब प्रेम इस आनन्दवनभुवनमें दिन दूना रात चौगुना बढता जायगा पाख ड और विद्रोहका अन्त हो गया शुद्ध अ यात्म बढा राम ही कर्ता और राम ही भोक्ता इस आन दवनभुवनके हो गये भगवान् और भक्त एक हो गये सब जीवोंका मि न हुआ और सब जीव इस आन दवनभुवनको पाकर स तु हुए स्वर्गकी रामगङ्गा जहाँ अ कर बहने गीं ऐसे इस आनन्दवनभुवन तीर्थ ी उपमा किस तीर्थसे दी जाय स्वधर्मके म र्गमें जो विघ्न थे वे सब दूर हो ये भगवान्ने वय कितने ही कुटिल ल कामियोंको उठाकर पटक दिया कितनोंको मसल डा । और कितनों ो काट भी डा सभी प पी खतम ए हि दुस्थान दनदनाकर आगे बढा अब आनन्द नभुवनमें भक्तोंकी जय और अभक्तोंकी क्षय हुई भगव न्के द्रोही गल गये भाग गये मर गये निकाल बाहर किये गये पृथ्वी पावन हो गयी और जो आनन्दवनभुवन था ह आन दवनभुवन हो गया

तेरहवाँ अध्याय

चातक म डल

पिपा क्षा ण्ठेन याचित चा बु पक्षिणा
ोज्झिता । धारा नि तिता मुखे

तु ारामजीके ख्य शि य

तुकाराम महाराजने स्वय गुरु बननेकी कभी इच्छा नहीं की मेघवृष्टिसे उपदेश किया करते थे तथापि मेघकी ओर अनन्यगतिक होकर देखनेवाले चातक नारायणकी सृष्टिमें उत्पन्न हुआ ही करते हैं इसमें मेघकी इच्छा अनिच्छाकी कोइ बात नहीं तुकारामजीका कीर्तन सहस्रों श्रोता सुन करते थे सुनकर खी होते थे और फिर तुरत अपने पुराने अभ्यासको लौट भी जाते थे परतु इनमें अनेक ऐसे भी थे जिन्होंने मन वचन कर्मसे तुकारामजीका अनुसरण भी किया ऐसे बड़भागी जीवोंके पावन नामों और उनके पु य चरित्रोंका इस अध्यायमें दर्शन कर

देहू ग्राममें एक पुराने सग्रहमें तुकारामजीके प्रधान धान शि योंके नाम एक साथ लिखे हुए मिले हैं १ निलेबाराय पिंपलनेरकर २ रामेश्वर भट्ट वाघोलीकर ३ गङ्गाराम मवाल कडूसकर ४ महादजी

प त कुळकणा देहूकर ५ कोंडो पन्त लाहोकरे ६ मालजी गाडे येलेवाडीकर ७ गवर शेटवाणी सुदुम्बेकर ८ मल्हार पन्त कु कणा चिखलीकर ९ आबाजी प त लोहगाँवकर १ का होबा ब धु देहूकर ११ स ताजी जगनाडे तळेगाँवकर १२ कोंड पाटील लोहगाँवकर, १३ न वजी माळी लोहगाँवकर और १४ शिवबा कासार लोहगाँवकर

ये चौदह नाम हैं इनमें सबसे पहला नाम निळोबाराय (या निळाजी राय) का है यह नामोल्लेख इसलिये नहीं हुआ है कि तुकारामजीके साथ करताल बजानेवालोंमें यह रहे हों बल्कि इसलिये हुआ है कि तुकारामजीके शिष्योंमें यही सबसे बढ़कर हुए इन १४ शि योंमें ७ ब्राह्मण थे और ७ अ य वर्णाके यह जो कभी कभी सुननेमें आता है कि ब्राह्मणोंने तुकारामजीको सताया सो ब्राह्मण शिष्योंके इन नामोंसे यथार्थ सा ही जान पड़ता है यह भेद भाव व रकरी सम्प्रदायमें तो कभी था ही नहीं तुकारामजीकी छत्रछायामें सभी शि य भगवत्कथामृत पानमें ही मस्त रहते थे और उनक परस्पर प्रेम भी अवर्णनीय था निळाजीको छाड शेष तेरह शिष्य पूना प्रा तके ही अधिवासी और देहूकी पञ्चक्रोशीके ही भीतरके थे का होबा ब धु और मालजी गाडे जँवाई तो घरके ही आदमी थे इन चौदह शि योंके अतिरिक्त कचेश्वर ब्रह्मे तथा बहिणाबाईका हा इधर दस वर्षाके अदर ही मालूम हुआ है इसलिये इस अध्यायमें इनका भी समावे होना चाहिये पहले तेरह शि योंकी वार्ता न तेरहमें चार लोहगाँवके हैं लोहगाँवमें तुकारामजीका ननिहाल था और वहाँके लोग तु ारामजीको बहुत प्यार भी करते थे इसलिये पहले तेरह शि योंक परिचय प्राप्तकर पीछे लोहगाँवको चलेंगे और इसके बाद कचेश्वर और ब हणाबाईके दर्शन करेंगे और अ तमें निळाजी रायका चरित्र देखेंगे इन सोलह शि योंमेंसे निळा ी राय का ी और बहिणाबाइके अभग मौजूद हैं रामेश्वर भट्टके भी चार अभग और दो आरतियाँ हैं

१ महादजी प

यह देहूके ज्योतिषी कुलकर्णी थे तुकारामजीके आरम्भसे ही परम भक्त थे तुकारामजीके घरानेके स थ इनके घरानेका स्नेह पहलेहीसे चला आत था तुकाराम महाराजके गृहप्रपञ्चकी चिन्ता इ हाको अधिक रहती थी जिजाबाईको समय समयपर अन्नादि और द्र यादि देकर य उनकी मदद करते थे उनकी खबर रखते थे और आपत्ति का में सहाय होते थे महादजी प तका य० सारा यवहार घरके बड़े बूढ़ोंका सा । इन्द्रायणीके तटपर ज०ाँ देवीकी अनेक मूर्तियाँ एक स थ हैं हाँ तुकारामजी भजन करते थे और भजनमें लव ीन हो जाते थे एक बार पड़ोसका ए ि सान तु ाराम ीको अपने खेतकी रखवालीके ि ये बैठाकर किसी कामसे एक दूसरे गाँवमें गया तुकारामजीको अपने तनकी सुधि तो रहती ही नहीं थी भजनमें ही रमे रहते थे चिड़ियाँ आकर दाना चुगने गतीं तो इन्हें तो उनमें नारायणकी मूर्तियाँ दिखायी देती थीं २ससे पक्षी भी निश्चि त प्रसन्नत के साथ खेत चुग जाते वे हाथ जोड़े ही बैठे र ते व कि ान इस रखवा ीके बदले आधा मन अनाज देनेकी बात तुकारामजीसे ह गया था पर वह जब लौटकर आया ो सब बाल खाली एकमें भी दाना नहीं मारे क्रोधके हाथ पैर पटकता हुआ व पञ्चोंके पास गया पर प ब देखनेके लिये खे पर आये ब सार दृश्य ही उलट गया हाँ एक भी दाना नहीं । हाँ दो सौ मन अनाज निक । पञ्चोंने सौ मन अना तुकारामजीको दिलाया पर तुकाराम ीने अ धे मनसे अ िक लेना अस्वीकार किया तब लोगोंके कहनेसे महादजी पन्तने उस अन्न राशिको अपने घरमें रखवा लिया और श्रीविठ्ठल ि दरके जीर्णोद्धारके ामर्मे उसे सचाइके साथ खच किया

२ गङ्गाराम मवाल

यह तुकारामजीके कीर्तनमें ध्रुवपद अ ापते थे तुकारामजीके यही

पहले ध्रुवपदी थे यही तुकारामजीके एक मुख्य लेखक भी थे प्रधान लेखक दो थे एक य० और दूसरे स ताजी तेली चाकणकर गङ्ग राम वा ,सगोत्री यजुर्वेदी ब्राह्मण थे और दाभाडेतले गाँवमें रहते थे इनके पिताका नाम नाभाजी था य० सराफीका काम करते थे और सम्पन्न थे स्वभावसे बड़े सात्त्विक शा त सहिष्णु और प्रेमी थे इनका कुल नाम महाजन था इनके मृदु सौम्य स्वभावके कारण तुकाराम ी इन्हें विनोदसे मवा (नरम) कह करते थे गोपालबुवाने इनके अ करणको मोमसे भी मुलायम हकर २न ा वर्णन किया है गङ्गारामजीकी र० ही स ताजी तेलीका भी स्वभाव था स्वभाव दोनोंका मिलता था इससे दोनों एक दूसरेके बड़े प्रेमी भी थे ऐसे प्रेमी ऐसे नैष्ठिक और ऐसे दुराशारहित ध्रुवपदिये प्रेममें मस्त होकर नाचनेवाले मञ्जुल स्वरसे स्वर में स्वर मिलानेवाले और न मनसे तुकार मजीका अनुगमन करनेवाले तुकारामजीके पीछे खडे रहकर उनके भजनकी टेक या स्थायी पद गानेवाले ध्रुवपदिये थे इससे तुकारामजीके कीर्तनमें रगदेवता नाच उठते थे और श्रोताओंपर बड़ा अद्भुत प्रभाव पड ा था इन गङ्गाराम नरमके व आज भी पूना और कडूसमें मौजूद हैं पहले पहल तुकारामजीसे इनका साक्षात् भामनाथ पवतपर हुआ गङ्गाराम नरम अपनी ोयी हुई भैंसको ढूँढ़ते ढूँढते वहाँ पहुँचे थे कारामजी उस समय भ नके आन दमें थे इन्हें देखकर उनके मुँहसे एक बात निक गयी उ होंने कहा जाओ घर ौट जाओ भैंस ो तुम्हारे घरमें ही बँधी है यह ौटे घर पहुँच र देखते हैं कि सचमुच ही भैंस बँ ी खड़ी है चार दिनसे उसका पता नहीं था ढूँढ़ते ढूँढ़ते गङ्गाराम हैरान हो गये आज वह भैंस आप ही लौट आयी गङ्गारामने २से उस साधुके वचनका ही प्रभाव जाना उनका यह ज्ञान अन्यथा भी नहीं था कारण स धुओंके सहज चनोंमें ऐसी ही क्रियासिद्धि होती है गङ्गारामने दूसरे ही दिन उत्तम भोजन तैयार कराया

और एक थालमें पूरण पूरी आदि सब पदार्थ सजाकर रखे और उस ।लको सिरपर रखकर वह भामनाथ पर्वतपर तुकार मजीके समीप ले गये तुकारा जीके सामने थाल रखकर उनकी चरण व दना की और भोजन पानेकी बडी दीनतासे विनती की तुकारामजीने इनके नि कपट स्नेहको जानकर भोजन किया पर ऐसी ुपाधि बढनेकी आशङ्कासे व कुछ ही दिन बाद उस स्थानको छो कर भण्डारा पर्वतपर चले गये गङ्गारामजीके चित्तपर तो तुकारामजीकी मूर्ति खिच गयी और वह भण्डारा प तपर भी तुकारामजीके पास ज ने आने लगे यह समागम अब इतना बढा कि तुकारामजीके समीप दो आदमी सदा ही छाया से रहने लगे एक गङ्गाराम और दूसरे सन्ताजी तुकारामजीकी ।याकी यह युगल जोडी ही थी तुकारामजीको माघ शुक्का दशमीके दिन गुरूपदेश हुआ था इस निमित्त तुक रामजीसे अनुमति लेकर गङ्गारामजी कडूसमें इस दिन आन दोत्सव मनाने लगे यह उत्सव गङ्गारामजीके वशज अभीतक बड़े ठाटके साथ पद्रह दिनतक लगातार किया करते हैं इन उत्सवके दिनोंमें उनके यहाँ अ ौच या वृद्धि नहीं होती और किसी बच्चेको माता भी नह निकलती अभीतक यही मा यता चली आयी है और मवालवशज इसे तुकारामजीका साद मानते हैं गङ्गारामके पुत्रका नाम विठ्ठल था इनके ० में रामकृष्ण नामके कोई महात्मा भी हुए जो परमहस वृत्तिसे प ढरपुरमें रहा करते थे

३ स ताजी तेली

इनका कु हाल तो ऊपर आ ही चुका है य चाकणके रहनेवाले कुल नाम इनका ।ोनव इनके पुत्रका नाम बाल जी इनके वशज तलेगाँवमें मौजूद हैं स ताजीके हाथकी लिखी हुई तुकारामजीके अभगों की बहियाँ लेगाँवमें हैं ते हैं तुकारामजी और स ताजीके बीच यह पथ प्रति । थी कि हम दोनोंमेंसे जिसकी मृ यु पहले हो उसे जो जीवित

रहे ह मिट्टी दे तुकारामजी तो मरे नहीं अदृश्य हुए उनके अदृश्य होनेके कई वर्ष बाद सन्ताजीका चोला छूटा उनके घरके लोग उन्हें मिट्टी देने लगे पर कितनी भी मिट्टी दी तो भी सन्ताजीका मुँह मिट्टीसे नहीं तोपा जा सका यह मिट्टीके ऊपर खुला ही रहा किसी तरह मुँह नहीं तोपा गया तब मध्यरात्रिके समय उस स्थानमें तुकारामजी स्वयं प्रकट हुए और उन्होंने अपने हाथसे मिट्टी दी तब मिट्टी देनेका काम पूरा हुआ उस अवसरपर सन्ताजीके पुत्र बालाजीको तुकारामजीने तेरह अभंग दिये उसमेंसे एकका भाव इस प्रकार है

गौओंको चराते हुए मैंने जो वचन दिया था उससे मुझे एक तेलीके लिये आना पड़ा तीन मुट्ठी मिट्टी देनेसे उसका मुँह तुआ (यह तो बाहरी बात है असलमें) तुका कहता है मैं इसे विष्णुलोकमें लिवा जानेके लिये आया हूँ '

सन्ताजीकी समाधि भण्डारा पर्वतके नीचे दुम्बर नामक ग्राममें है

४ गबर सेठ बनिया

यह कर्णाटकके लिङ्गायत बनिया दुम्बरमें रहते थे बड़े सात्त्विक थे तुकारामजीके महाप्रयाणके पश्चात् इनकी देह छूटी मृत्युके पूर्व इन्होंने रामेश्वर भट्ट और बाहजीको अपने समीप बुला लिया था और उनके मुखसे तुकारामजीके अभंग सुनते हुए इन्होंने देहत्याग किया उस समय तुकारामजीके रूपकी ओर इनकी ऐसी लौ लग गयी थी कि अन्त समयमें तुकारामजी प्रकट हुए इन्होंने अपने हाथसे तुकारामजीके ललाटमें चन्दन लेपन किया और गलेमें फूलोंका हार डाला तुकारामजीको और किसीने नहीं देखा पर सबने अधरमें हार लटका हुआ देखा और तुकारामके नामकी जयध्वनि की उसी ध्वनिमें मिलकर गबर सेठके प्राण चले गये

५ मालजी

यह तुकारामजीके जँवाई याने उनकी कन्या भागीरथीके पति थे पति पत्नी दोनोंकी ही तुकारामजीपर बड़ी भक्ति थी तुकारामजीने मालजी को नित्य पाठके लिये गीताकी पोथी दी थी

६ तुकाभाई ान्ह ी

तुकारामजीके भाई का जी पहले तुकारामजीसे बाँट बखरा कराके अलग हो गये थे पर पीछे इनके हृदयपर तुकारामजीका प्रभाव पडा और यह तुकारामजीकी रणमें आकर शि य बने यह तुकभाई कहलाने गे तुकारामके अभगोंकी ग था में इनके भी अनेक उत्त अभग हैं तुकारामजीके महाप्रयाणपर इन्होंने जो विलाप किया है और भगवान्‌को जो खरी खोटी सुनायी है उस विषयके अभग तो बड़े ही करुणारसपूर्ण हैं

७ मल्हार पन्त चिखली र

यह भी तुकाराम ीके बड़े नियमनिष्ठ भक्त थे और कीर्तनमें करताल ज ते थे

८ कोंडो प त लोहो रे

य भी ध्रुवपद गाया करते थे एक बार इन्होंने तुकारा जीपर अपनी यह इच्छ प्रकट की कि मैं क शीयात्राको जाना चा ता हूँ आपके अनेक धनी मानी भक्त हैं उनसे कुछ क दीजियेगा तो मैं आरामसे पहुँच जाऊँगा तुकारामजीने ात सुनी और अपने आसनके नीचेसे एक अशर्फी निकालकर उनके ह थपर रखी और कहा कि यह लो इसे भँजा र रूरी सामान लिया करो पर जो भी खर्च करो एक पैसा रोकड़ जमा रखो इससे उसी पैसेकी दूसरे दिन अशर्फी बन जाया करेगी कोंडो पन्तने बड़े कुतूहलके साथ वह अशर्फी अपनी टेंटमें खोंसी और वहाँसे विद

लेकर उसी दिन उसका चमत्कार आजमाया पैसेकी अशर्फी बन जाता है ह प्रत्यक्ष देखकर उनके कुतूहलका ठिकना न रह तुकारामजीने उनसे यह कह रख था कि यह बात और किसीसे न कहना अस्तु तुकारामजीने उनके साथ काशीमें तीन अभग भेजे थे पहले अभंगमें गङ्गाजीको माता कहकर पुकार है और यह प्राथना की है

(१)

भगवति मात मेरी विनती नो आपके चरणोंमें मैं अपना मस्तक रखता हूँ आप महादोषनिवारि ी भागीरथी सब ती ोंकी स्वामिनी हैं जीव मुक्ति देनेवाली हैं आपके तीरपर मरना मोक्षलाभ करना है इहलोक और परलोक दोनोंके लिये आप ख देनेवाली हैं सतोंने जिसे पाला पोसा वह श्रीविष्णुका दास तुका यह वचन सुमन आपकी भेंट भेजता है

(२)

दूसरे अभगमें श्रीकाशीविश्वनाथसे प्रार्थना करते हैं

आप विश्वनाथ हैं मैं दीन रङ्क अनाथ हूँ मै आपके पैरों गिरता हूँ आप कृपा कीजिये जितनी कृपा करगे वह थोडी ही होगी क्योंकि मैं (आपकी कृप का) बडा भुक्खड हूँ आपके पास सब कु है और मेरा सन्तोष अल्पसे ही हो जाता है तुका कहता है भगवन् मेरे लिये कु खानेको भेजिये

(३)

वि णु पदमें अपने करोंसे पिण्डदान कर चुक हूँ गयावर्णन मेरा हो चुका है पितरोंके ऋणसे मैं मुक्त हो चुका हूँ अब मैंने कर्मा तर कर लिया है हरिहरके नामसे बम बम बजा चुक हूँ तुका कहता है मेर सब बो अब उतर गया है

इन तीन अभगोंमें भागीरथी काशीविश्वेश्वर और विष्णुपदकी प्रार्थना की है कोंडोजीने तुकारामजीसे मिली हुई वर्णमुद्रासे सम्पूर्ण यात्रा पूरी की चातुर्मास्य उन्होंने काशीमें किया और तब लोहगाँवमें लौट आये तुकारामजीके चरणवन्दन किये और यात्राका सब हाल निवेदन किया पर एक बात झूठ कह दी उन्हें यह डर हुआ कि तुकारामजी अपनी सुवर्ण मुद्रा कहीं वापस न माँग बैठें इसलिये उन्होंने बड़ी समयसूचकताके साथ पहले ही कह दिया कि यात्रासे लौटते हुए स्वर्ण मुद्रा जाने कहाँ खो गयी तुकारामजीने कहा तथास्तु घर लौटकर कोंडोपन्तने देखा कि दुपट्टेके छोरमें बाँधकर रखी हुई मुद्रा न जाने कहाँ गायब हो गयी तुकारामजी जैसे सर्वसमर्थ पुरुषसे ऐसा कपट किया इस बातपर उन्होंने बड़ा पश्चात्ताप किया और तुकारामजीके चरणोंमें गिर उनसे अपना अपराध क्षमा कराया

९ रामेश्वर भट्ट

रामेश्वर भट्ट तुकारामजीके विद्वेषी थे पीछे उनके परम भक्त हुए यह कथा पहले कही जा चुकी है वाघोलीमें रामेश्वर भट्टके भाईके वंशज हैं और बहुल नामक स्थानमें स्वयं रामेश्वर भट्टके वंशज हैं रामेश्वर भट्टके परदादा कान्ह भट्ट कर्णाटक प्रदेशमें बादामी नामक स्थानमें रहते थे वहाँसे वह पूनेमें आये और वहीं बस गये इनके पूर्वज कर्णाटकी ही थे इन्हींके समयसे यह घराना महाराष्ट्रीय हुआ है कान्ह भट्टके पुत्र चण्ड या चाण्ड भट्ट चाण्ड भट्टके पुत्र कान्ह भट्ट और कान्ह भट्टके पुत्र रामेश्वर भट्ट हुए रामेश्वर भट्टके पुत्र विठ्ठल भट्ट हुए विठ्ठल भट्टका वंश बहुल ग्राममें विद्यमान है रामेश्वर भट्टके कुलमें वेदाध्ययन पूर्वपरम्परासे ही चला आया था इन्होंने सम्पूर्ण वेद अपने पितासे ही पढ़े यह रामके उपासक थे जिस मूर्तिकी यह पूजा करते थे वह मूर्ति बहुल ग्राममें इनके वंशजोंके पास है वाघोलीमें व्याघ्रेश्वर महादेवका स्थान

प्रसिद्ध है रामेश्वर भट्टने य ाँ बडा अनुष्ठान किया था घर ी श्रीरम मूर्तिकी पूजा अर्चा करके य० नित्य ही याघ्रेश्वरके म दिरमें आकर एकाद णी (एकादश रुद्रपाठ) करते थे इनके वशज बहुलकर कह ते हैं और इनकी पैतृक ज्योतिषी वृत्तिके वाघोली भावडी बहु चिंचोली और शिंदेगह्वाण ये पाँच गाँव अभीतक इनके अधिकारमें हैं रामेश्वर भट्ट जब तुकारामजीके ि य हुए तबसे वारकरी म डलमें उनकी बड़ी प्रतिष्ठा हुई तुकारामजीके पीछे कीर्तनमें यह झाँझ लेकर खड़े होते थे दस बारह वष य० तुकारामजीके सत्सङ्गमें रहे तुकारामजीने मह स्थान किया तब यह देहूमें ही थे और कुछ झगडा पडनेपर वहाँ इ होंने ही श ाीय यवस्था दी थी इनकी समाधि वाघोलीमें है बहु करोंके यहाँ मार्गशीष शुक्ल १४ को इनकी तिथि मनायी ज ती है

१० शिवबा कासार

लोहगाँवमें तुकारामजीका ननि०ाल था और ले०गाँवके लोग भी इ हें बहुत चाहते थे इससे लोहगाँवमें तुकारामजीका आना जाना बराबर ◌ा रहता था व०ाँ तुक रामजीके कीर्तनका रग और भी गाढा रहत था सारा लो०गाँव उनके कीर्तनपर टूट पडता था और आसपासके भी सैकड़ों लोग आ जाते थे पर नहीं आता था शिवबा कासार और केवल आत ही न ी था सो नहीं घर बैठे तुकारामजीकी खूब नि दा भी किया करता ा वह जैसा दुष्ट भ्रष्ट और कुटिल था सब जानते थे पर तुकारामजीका दयार्द्र अ त करण तो य०ी चाह ा था कि कोई कैसा भी दु कृतिका मनुष्य हो वह कीर्तन श्रवण करे भक्तिगङ्गामें नह ले और शुद्ध होकर तर जाय लोगोंके बहु कहने सुननेपर वह एक दिन लोगोंकी बा रखनेके ही विचारसे कीर्तन सुनने आ ही तो गया दूसरे दिन उसका मन कहने ग कि चलो जरा कीर्तन ही सुन अओ फिर ही मन य भी

कहे कि अरे कहाँ जाते हो बढाओ बखेड़ा पर उसके पैर उसे घसीट ही लाये ीसरे दिन कोइ विकल्प नही पड़ा अपनी ही इच्छासे आप ही बडी प्रसन्नताके साथ कीर्तन सुनने आया इसके बाद तीन दिनतक उसकी उत्क ठा बढती ही गयी सातवें दिन तो वह तुकारामजीका भक्त ही बन गया तुकारामजीके निर्मल हृदयकी अमोघ वाणीका यह प्रसाद था जिसने सात दिनमें एक बडे दुर्वृत्तको सु ारकर भगवान्का प्रेमी बना दिया तुकारामजीने कहा है कि खल दुर्जनको निर्मल जन बना देंगे गधेको घोड़ा बनाकर दिखा देंगे शिवबा कासारको सचमुच ही उ होंने कुछ क कु बनाकर दिखाया यह पत्थरको ही पिघलानेका सा काम था तुकार मजीके सङ्गसे शिवबाका रूपा तर हो गया उसकी स्त्री अपने पतिका नया रूप रग और ढग देखकर बहुत घबड़ायी उसके ो पतिदेवता नित्य हाय पैसा ाय पैसा करते हुए पैसेके लिये जाने क्या क्या काण्ड कर डालते थे वे अब विठ्ठल विठ्ठ कहने और आँख मूँदकर बैठ रहने लगे भला य को२ ससारियोंका क म है ससारमें आसक्त उस ीको तुकारामजीपर बडा क्रोध आया उसने तुकारामजीको इसका बद ा चुक नेका निश्चय किया और वह समयकी प्रती ा करने लगी एक दिन शिवबा तुकारामजीको बड़े प्रेम और सम्मानके साथ अपने घर लिवा गये तुकारामजी जब स्नान करने बैठे तब इस कृत्या ने जान बूझकर उनके बदनपर अद नका उबलता हुआ पानी ा दिया उससे रीरकी क्या ल हुई ह तुकारामजीके ही ब्दोंमें निये

ारा रीर लने गा है रीरमें जैसे दावानल धध रहा हो अरे राम हरे नारा ण शरीर कान्ति जल उठी रोम-रोम जलने लगे ऐसा होलिकादहन सहन नहीं होता बु ाये नहीं बु ता शरीर फटकर जैसे दो टुकड़े हुआ जाता हो मेरे माता पिता केशव दौड़े आओ मेरे हृदयको क दे ते हो लेकर वेगसे दौड़े आओ यहाँ और

किसीकी कु नहीं चलेगी तुका कहता है तुम मेरी ननी हो ऐसा सङ्कट पडनेपर तुम्हारे सिवा और कौन बचा सकता है

फूलसे भी कोमल जिनका चित्त होता है उन परोपकाररत महात्माओं के साथ नीच लोग जब ऐसी नीचता करते हैं तब थोडी देरके लिये तो इस ससारसे अत्य त घणा हो जाती है और जी यह चाहता है कि यहाँसे उठ चलो उस चुडै ने उन करुणानिधिके कोमल अङ्गोंपर उबलता हुआ प नी छोडा न श दोंको सुनते ही बदन ज उठता है कारामजी शि वब की स्त्रीपर जरा भी क्रुद्ध नहीं हुए पर भगवान्‌क उसपर कोप हुआ उसके शरीरपर कोढ फूट निकला उसकी यथासे ह टपटाने लगी रामेश्वर भ के कहनेसे तुकारामजीको स्नान कराना सोचा गया था दैवी लीला कु विचित्र ही होती है तुकारामजीके इस स्नानसे जो मिट्टी भीगी व ी मिट्टी शिवबाने अपनी ीके सारे शरीरमें म दी इससे वह महारोग दूर हो गया उसके भी भा योदयका समय अ या उसने बडा पश्चात्ताप किया बिलख बिलखकर खूब रोयी तुकारामज के चरणोंपर गिरी तुकारामजीने उसे आश्वासन देकर न्त किया शेष जीवन उसका अपने पतिके साथ श्रीराम कृष्ण हरि वि भजनमें बड़े सुखसे बीता

११ नावजी माली

य भी ो गाँवके रहनेवाले थे तुकार मजीके बड़े भक्त थे गनि पु पोंकी मालाएँ बड़े प्रेमसे गूँथ गूँथ र य तु ारा ीको पहनाते थे स प्रकार उ होंने अपनी ल ही तु ारामजीको अर्पण की थी माला गूँथकर बेचना ी उनकी जीविका ही थी पर अपनी जीविक का बहुत स समय भग त्प्रेममें लगाते थे बड़े प्रेमसे श्रीविट्ठलनाथ श्रीतुकार म और श्रीहरिकीतनके श्रो ओंके ि ये

बड़े दर हार और गजरे तैयार कर ले आते थे और बारी बारीसे सबको प ाते थे उ हेंने अपने बागमें बड़ी भक्तिसे तु सीके बिरवे लगा रखे थे नाना प्रकारके सु दर ग भित फूलोंके पेड और पौधे तो लगा ी रखे थे उनकी क्या रियोंमें घास निराते हुए जल सींचते हुए फू तोडते हुए म ला गूँथते हुए वह श्रीविट्ठलका ध्यान करते हुए निरन्तर नाम स्मरण करते रहते थे बडे प्रेमसे भजन करते थे नके प्रेम मधुर भजन और नृत्यको देखकर तुकारामजी इनसे बहुत ही प्रसन्न रहते थे नावजी जब कीर्तनमें आ बैठते तब तुकाराम यही कहकर उनका स्व गत करते कि 'हमारे प्राण विश्राम अ गये '

१२ अ बाजी प त

यह लोहगाँवके जो ी कुलकणा थे इ होंने तुकार मजीकी चरण सेवासे कृताथता लाभ की यह एकाग्रचित्त होकर कथा सुनते थे श्रोताओंमें ऐसी एकाग्रता और किसीकी नहीं होती थी एक समयकी बात है कि लोहगाँवमें म यरात्रिमें यह तुकारामजीका कीर्तन सुनते हुए तल्लीन हो गये थे और उसी समय उनके घरपर उनके बच्चेका प्राणा हुआ बच्चेकी माँ उस दु खसे पागल सी हो गयी और ब चेके प्रेतको उठाकर कीतन स्थानमें ले आयी वहाँ प्रेतको नीचे रखकर अपने पति और तुकारामको खूब खोटी खरी सुनाने और प्रलाप करने लगी उसके प्रलाप और विलापको देखते हुए तुकारामजीके मुखसे एक अभङ्ग निकला इस अभङ्गमें तुकारामजीने भगवान्‌से प्राथना की

हे नारायण आपके लिये नि प्राणको चैत य कर देना कौन सी बडी बात है हे स्वामिन् पहलेके गी हम क्या जानें अब यहा उन ा ोंको प्रत्यक्ष करके क्यों न दिखा दें हमारा अहोभा य है जो आपकी रणमें हैं आपके दास कहलाते हैं तुका कह ा है अपनी साम य दिखाकर अब इन नेत्रोंको कृताथ कीजिये

इसी प्रकार भगवान्से विनय करते और भगवान्का भजन करते एक प्रहर बीत गया तब तुकारामजीके हृदयकी गुहार भगवान्को सुननी पडी और उस मृत बालकको प्राण दान कर उठाना पडा भक्तोंके चरित्रोंसे ऐसी ऐसी अद्भुत घटनाएँ हो जाया करती हैं पर इस विषयमें ध्यानमें रखनेकी बात यही है कि भक्तके चित्तमें यह भाव नहीं होता कि यह काम मैंने किया या मेरे कारण बना ऐसा अभिमान उनके चित्तको दूरसे भी स्पर्श नहीं कर पाता भक्त जब पूर्ण निरभिमान होता है और इसी ज्ञानमें लीन रहता है कि करने करानेवाले भगवान् हैं तभी उनकी वाणी भी भगवान्की ही हो जाती है जो कुछ भक्तके मुँहसे निकल जाता है भगवान् उसे क्रियाफलपरिपूर्ण करते हैं

१३ कोंड पाटील

तुकारामजी जब लोहगाँव जाते तब इन्हींके यहाँ ठहरते थे यह ताल देनेमें बडे प्रवीण थे तुकारामजीके बडे प्रिय थे

लोहगाँव

शिवबा कासार नावजी माली अम्बाजी पन्त और कोंड पाटील ये चारों शिष्य लोहगाँवके अधिवासी थे तुकारामजी देहू और लोहगाँव इन्हीं दो गाँवोंमें सबसे अधिक रहते थे इन्हीं दो गाँवोंमें उनके स्वजन और प्रियजन अधिक थे देहूमें तो उनका अपना घर ही था और लोहगाँवमें उनका ननिहाल था देहूसे भी अधिक लोहगाँवके लोग इन्हें चाहते थे महीपति बाबा अपने भक्तलीलामृतमें कहते हैं

श्रीकृष्णका जन्म तो मथुरामें हुआ पर उनका असीम आनन्द गोकुलको ही मिला वैसे ही श्रीतुकारामका सारा प्रेम लोहगाँववालोंने ही लूटा

यह लोहगाँव* पूनेसे ईशान दिशामें यरवदाके उस ओर नौ मीलपर है वारकरीमण्डलमें यह प्रसिद्ध भी है तुकारामजीका ननिहाल इसी गाँवमें था और उनकी माताके माइकेका कुलन म मोझे था गाँवकी रचना तथा गाँववालोंके पास जो क ागज पत्र हैं उ हे देखनेसे इस विषयमें कोई ङ्क नहीं रह जाती तुकारामजीके ननिहालवाले घरमे एक शिला थी इसीपर बैठकर तुकारामजी भजन किया करते थे तुकारामजीके पश्चात् यह शिला उठाकर एक वृ दावन † पर रखी है यहाँ वारकरियोंके भ न अब भी होते हैं प ढरीके वारकरी आल दी जाते हुए मार्गशीर्ष कृष्ण ९ के दिन यहाँ ठहरते हैं अभी उस दिनतक मोझेव के लोग यहाँ जमींदार थे अब इस वशका कृष्ण मोझे नामक यक्ति बम्ब ईमें एक मेव फरो के यहा नौकर है ि वबा कासारका म ान अब खँडहरके रूपमें मौजूद है उसकी टूटी फूटी दीवारोंसे यह पत च ता है कि य को ड़ी भ ी हवेली रही होगी इस हवेलीक दरवाजा पश्चिमकी ओर था वेलीके स मने महादेवजीका एक बेमरम्मत म िदर है लोग बतलाते हैं कि इसी मन्दिरमें तुकारामजी और ि वजी मह रा बैठ र ब तें किया करते थे लोहगाँवके शिवजीके पास प च सौ ै थे इनके द्वारा वह राँगा सीसा और ब र्तनका बड़ा कारब ार करता था तुकारा जीके समयमें पुनवाडी (पून) छोटी सी डी थी और लोहगाँवके इलाकेमें समझी जाती थी लोहगाँवके बड़े बड़े गिरे हुए मकान

प्रसिद्ध तिहासकार राज डेने ो गाँवको पूनेकी नाग री नदीके कि नारेका एक ग्र म ताया था पर कई वष पूव ग्रन्थके ले कने सका सप्रमाण ण्डन करके अस ी लोहगाँ का प ा ब दिया है भार ति ससशोध म डलके तृ ीय स मे न वृत्तमें श्रीपागारकर होदयक व लेख ा है लो गाँव ा उपर्युक्त वणन लेखकने उसी ले से यहाँ उतारा है

† तुलसीकी ऊँची सी कियारी या ग ले ो महाराष्ट्र वृन्दाव कहते हैं

हाँका बडा भारी महारवाडा वहाँके मालियों और कासारोंके पुराने मकान तथा गाँवका ढाँचा देखकर ऐसा जान पडता है कि तुकारामजीके समयमें यह कोई बहुत बडा कसबा रहा होगा लोहगाँवसे पैदल रास्तेसे आल दी अढाई कोस देहू सात कोस और सासवड नौ कोस है लोहगाँवमें कासार मोझे खादवे और माली पुराने अधिवासी हैं कोंड पाटील खादवे नावजी माली और शिवबा कासार (तुकारामज के शि य) सी लोहगाँवके थे मालियोंमें भालेकर घोरपडे गरुड और भूकण ये चार घर वेतनवाले हैं अर्थात् परम्परासे जीविकाके लिये ज गीर पाये हुए हैं गाँवमें तुकारामजीका मन्दिर है इस म दिर को छोड तुकारामजीका स्वतन्त्र मन्दिर और कहीं नहीं है यह न्दिर गु डोजी बाबाके शिष्य इराप्पाका बनवाया बताया जाता है पुनव डीकी ओरसे गाँवमें घुसते ही कासारविहीर (बावली) आती है यह बाव ी ब बड़ी और रमणीक है बावलीकी पूर्व पश्चिम और दक्षिण तीन दिशाओंमें बड़े बड़े आले हैं और बावलीके भीतर ही चारों घाटोंमें इतनी बड़ी जगह है कि पचास पचास ब्राह्मण एक साथ बैठकर न्ध्या व दन कर सकते हैं बावलीमें दक्षिण ओर ए शिलालेख खुदा हुआ है यह शाके १५३४क है शिलालेखपर तुलसीका चिह्न बना है मध्यका मुख्य लेख अ ी रह पढा ता है अग बगलके अ र शि ाके कोन किनारे घिस जानेसे नहीं पढे ते इस ि ला लेखसे यह जान पड़ता है कि सवत् १६६९में य गाँव कसब लोहगाँव था

यहाके एक पट्टेमें यह लि खा हुआ मिला कि अमुक का हो ी रायगढमें महाराजकी च करीमें थ वह मरनेके लिये गाँवमें आया इ से भी इस ब तकी पुष्टि होती है कि तुकाराम ीके हरिकीतनसे निनादित ल प्रा से ी शि वाजीकी शूरवीर सेन तैयार हुई ।

१४ कचेश्वर ब्रह्मे

भारत इतिहास मण्डलके शाके १८३५ के वार्षिक विवरणमें श्री पा डुरङ्ग पटवर्धनने कचेश्वर कविकी आत्मचरित्रात्मक १११ ओवियाँ कुछ कागज पत्र और दो आरतियाँ प्रकाशित की हैं आरतियाँ तो इससे पहले ही हमे मिल चुकी थीं आत्मचरित्र नहीं मिला था यह आत्मचरित्र बड़े महत्त्वका है चाकणमें ब्रह्मे नामका वेदपाठी ब्राह्मणकुल प्रसिद्ध है कचेश्वर इसी कुलमें उत्प न हुए बचपनमें यह बड़े नटखट और ऊधमी थे। जीर्णपुरा (वर्तमान जुन्नर) से बीजापुरतक अ प गश्त लगा आये पीछे कचेश्वर कहते हैं मुझे कु चमत्कार दिखायी दिया जिससे मुझे गीतासे प्रेम हो या ' इसके बाद व विष्णुसहस्रनामका भी पाठ करने लगे एक बार किसीने उ हें भोजनमें मिला विष खिला दिया उससे उ हें दमा हो गया किसीने सलाह दी कि अम्बाजी पन्तके घर तुकारामजीके अभगोंक सग्रह है वहाँ जाओ और तुकारामजीके अभ ग पढ़ा इससे तुम्हारी बीमारी दूर हो जायगी ' कचेश्वरको यह सलाह जँची और वह देहूमे अ ये यहाँ

भगवान्के दर्शन करके मन प्रस न हुआ सतोंके मुखसे हरिकीर्तन ना ऐसा जान पड़ा जैसे तुकारामजी स्वय ही कीर्तन कर रहे हों और आनन्दसे झूम रहे हों आँधीसे जैसे कदली हिलती है हरि प्रेमसे तुका राम वैसे ही ोल रहे थे कचेश्वरको ऐसा प्रतीत हुआ कि तुकारामजी नृत्य करते करते अब कहीं नीचे न गिर पड़ें इसलिये उ होंने तुकारामजीको क धेका सहारा देकर उ हें सँभाल सा लिया दूसरे दिन तुकारामजीकी आज्ञासे कचेश्वर स्वय ही कीर्तन करने लगे उनकी याधि दूर हो गयी इनके पिताको यह बात पसद नहीं थी कि कचेश्वर इस तरह शूद्रोंके मेलेमें नाचा गाया करे कचेश्वर अपने आपेमें नहीं थे भगवद्भजन और हरि नामसकीर्तनके आगे वह किसीकी कुछ नते ही नहीं थे पिताने आखिर

उ हें घरसे निकाल दिया यह निकल आये कुछ समय बाद इ हें अपनी मीन जायदाद मिली योगक्षेमकी कुछ चिन्ता न रही कथा कीर्तनमें समय यतीत करने लगे चित्त परमार्थके परम रसका अधिकाधिक आस्वादन करने लगा कचेश्वरकी कुछ कविताएँ भी प्रसिद्ध हैं इ होंने एक बार एक चमत्कार भी दिखाया था शाके ६ ७ में चाकणचौगसी गाँवोंमें अवर्षणके कारण बड़ा भयकर दुर्भिक्ष पडा यज्ञादि अनेक अनुष्ठान किये गये पर इ द्र भगवान् प्रस न नहीं हुए तब सब लोगोंके कहनेसे कचेश्वरने वर्षाके लिये हरिकीतन किया कचेश्वरके हरिकीर्तनके प्रतापसे मेघ घिर आये और जोरोंसे बरसने लगे यह कथा प्रसिद्ध है इस सम्ब धके ाग पत्र भी अब प्रका ित हो गये हैं पर्ज यके लिये कीर्तन करना स्वीकार करते हुए उ होंने यह कहा था कि श्रीहनुमान्जीके मन्दिरमें आनन्दगिरि मठमें हरिकथाके लिये मण्डप खड़ा करो श्रीहरिकी कथा कीर्तन करेंगे भगवान्को पुकारेंगे उससे पज यवृष्टि अवश्य होगी कथा सकीर्तन आरम्भ हुआ नाम सकीतन होने लगा और उसी क्षण वृष्टि आरम्भ हुई और दिन और रात २४ घटे इतने जोरोंकी मूसलाधार वृष्टि हुई कि लोग तृप्त हो गये और कहने लगे कि अब वृष्टि थम जाय तो अ छा इस प्रकार सब लोग बड़े खी हुए इस कथाका समर्थक ऐतिहासिक प्रमाण भी मौजूद है कचेश्वरके वशज पूना और सतारामें जागीरदार हैं

१५ बहिणाबाई

तुकारामजीके शिष्यम डलमें बहिणाबाईका स्थान बहु ऊँचा है यह कइ वष देहूमें तुकारामजीके सत्सङ्गमें रही उनके कीर्तन सुनती रहीं और उनकी कृपा से स्वानुभवसम्पन्न भी हुई उन्होंने कुछ अभग आत्म-चरित्रात्मक और कुछ उपदेशात्मक रचे हैं निलोबा राय था महीपति ा के वचनोंकी बड़ी मान्यता है पर एक तरहसे इनसे भी अधिक महत्त्व

हिणाबाईके वचनोंका है कारण बहिणाबाईने तुकारामजीके सम्बन्ध में जो कुछ लिखा है २ तुक रामजीको प्रत्यक्ष देखकर तथ उनके सत्सङ्गसे लाभ उठाकर अधिकारयुक्त वाणीसे लिखा है बहिणाबाईके अभगोंका सग्रह सवत् १९७ में ाम गाँवके श्रीउमरखानेने प्रकाशित किया था पर मुझे इन अभगोंकी असली हस्तलिखित प्रति बहिणाबाईके शिऊर (शिवपुर) ाममें बहिणाबाईके व ज श्रीरामजीसे प्राप्त हो गयी है २सी शिऊर गाँवमें बहिणाबाईकी तथा निलोबा रायके शिष शकरस्वामीकी समाधि है इनके व भी २सी स्थानमें रहते हैं बहिणाबाईका नाम तुकारामजीके शि योंके नामोंमें है और रामदास स्वामीके शि योंकी नामावलीमें भी है इसलिये यथाथ बहिणाबाई ारकरी थीं या रामदासी या बहिणाबाई एक नहीं दो थीं यह एक विवाद ही थ पर शिऊरमें तीन दिन र कर सब पोथियों और कागज पत्रोंको देख लेनेपर यह निश्चय हुआ कि बहिणाबाई दो नहीं एक ही हैं इ होंने तुकारामजीसे दीक्षा ली थी और पीछे उत्तर वयस्में य रामदासके सत्सङ्गमें रहीं समर्थ रामदासने हनुमान्‌जीकी एक प्रादेशमात्र (बित्ताभर) मूति दी थी यह मूर्ति बहिणाबाइके र म मन्दिरमें अभीतक है बहिणाबाइपर ब कैसे तुकारामजीने अनुग्रह किया इसका वर्णन स्वय हिण बाईने अपने अभगोंमें किया है बहिणाबाइके अभगोंकी मू हस्तलिखित प्रतिमें भी कई जग सद्‌गुरु तुकाराम समर्थ श्रीतुकागम रामतु कहकर गुरुरूपमें श्रीतुकार म महारा था श्रीरामदास स्व मी दोनोंकी ही व दना की है

बहिणाबाईका जन्म सवत् १६९ में हुआ वह बारह वषकी थीं तब स्वप्नमें तुकारामजाने उनपर अनुग्रह किया इनके अभग सग्रहमें आत्मचरित्रके ५३ निर्याणके ३४ तथा भक्ति वैराग्य ब्रह्म और म य वि ल पण्ढरी त्रिगुण अनुताप सत सद्‌गुरु ज्ञान मनोबोध ब्रह्मकर्म

पतिव्रता मे प्रवृत्ति इत्यादि विषयोंपर अनेक अभग हैं निलोबा रायकी सी ही इनकी वाणी प्र सादिक है यह पूर्वजन्मकी योगभ्रष्ट थीं पूर्व पुण्यके प्रतापसे उत्तम कुलमें ज म ग्रहणकर इ होंने तुकारामजीका अनुग्रह प्र म किया रामदास स्वामीका भी सत्सङ्ग लाभ किया और परम पदको प्राप्त हुई तुकारामजीका उनपर जो अनुग्रह हुआ उसी प्रसङ्गको यहाँ देखना है कोल्हापुरमें यराम स्व मीके कीर्तन हुआ करते थे बहिणाब ई उस मय बालिका थीं व इन कीर्तनोंको न करती थीं इन्हीं कीर्तनोंमें कारामजीके अभग उ होंने ने और चित्तपर ये अभग जम से गये उनके पुण्यसस्कार घटित मनपर उसी बा वयसमें तुकारामजीकी वाणी नृत्य करने लगी और तुकाराम ीके दर्शनोंके लिये व रसने लगीं बहिणाब इ स्वय ही ब लाती हैं—

तुकारामजीके प्रसिद्ध अद्वै पदोंके पीछे चित्त उनके दर्शनोंके ि ये छटपटाने गा है जिनके ऐसे दि य पद हैं व यदि मुझे दर्शन देते तो हृदयको बड़ा सन्तोष होता कथामें उनके पद नते नते उ होंकी ओर आँखें लग गयी हैं हृदयमें तुकारामजीका ध्यान कर ी हूँ और उस ध्यानका घर बनाकर उसके भीतर रहती हूँ बहिन ह ी है मेरे होदर सद्गुरु काराम ब मुझे मिलगे तो अपार होगा

मछ ी जैसे लके बिन टपटा ी है से मैं तुकारामके बिना पटा रही हूँ जो को अन्त स क्षी होग वही अनुभवसे इ ब को म गा सञ्चितको द कर डाले ऐसा सद्गुरुके बिना और कौन हो सक ा है बहिन कहती है मेरा जी निकला जा ा है तु राम ों दया नहीं आती

अ र्त चातककी द पर करुणाघनको भला दया कैसे न आवेगी सा दिन और सात रात तुकारामजीका ही निरन्तर यान थ और किसी

बातकी सुध नहीं थी तब मार्गशीर्ष कृष्ण ५ रविवार (संवत् १६९७) के दिन तुकारामजीने स्वप्नमें उन्हें दर्शन दिये उपदेश दिया और हाथमें गीता थमा दी तब बहिणाबाई कहती हैं

मन आनन्दित हुआ चिन्मयस्वरूप अन्तःकरणमें भर गया और यह क्या चमत्कार हुआ सोचती हुई मैं उठ बैठी तुकारामजीका वह स्वरूप सामने आता है उस स्वरूपमें जो मन्त्र उन्होंने बताये वे याद आते हैं सत्य ही स्वप्नमें उन्होंने मुझपर पूर्ण कृपा की जिसके स्वादकी कोई उपमा नहीं ऐसा अमृत पिला दिया इसका साक्षी तो तिसके पास मनहीमें है बहिन कहती है सद्गुरु तुकारामने सत्य ही पूर्ण कृपा की उन्हींके पदोंसे विश्रान्ति मिलती है श्रीविट्ठलकी सी ही उनकी मूर्ति है सचमुच ही तुकारामजीकी सब इन्द्रियोंके चालक श्रीपाण्डुरङ्ग ही तो हैं

बहिणाबाईको दूसरी बार फिर तुकारामजीका स्वप्न दर्शन हुआ पीछे वह अपने पतिके साथ देहूमें आयी यहाँ तुकारामजीके प्रत्यक्ष दर्शन हुए

माता पिता भाई और पतिके साथ मैं वहाँ आयी जहाँ इन्द्रायणी बहती हुई चली आयी है यहाँ आकर इन्द्रायणीमें स्नान किया श्रीपाण्डुरङ्गके दर्शन किये अन्तरंगमें सृष्टि आनन्दमय दीखने लगी उस समय तुकारामजी भगवान्की आरती कर रहे थे उन्हें प्रणाम करके चित्तको प्रकृतिस्थ किया स्वप्नमें उनका जो रूप देखा था वही वहाँ प्रत्यक्षमें देखा उस रूपको आँखें भरकर देख लिया

देहूमें तो आये पर ठहरें कहाँ ? इस विचारसे रास्ता चल रहे थे इतनेमें मम्बाजीका बड़ा-सा मकान दिखायी दिया इसी घरमें ये लोग घुसे इन्हें घुसे चले आते देखकर वह महाक्रोधी मम्बाजी अग्निशर्मा हो उठा और मारनेके लिये दौड़ा ये बेचारे वहीं दालानमें अपना सब सामान रखकर बाहर निकल आये बाहर निकलते ही कोंडाजी पन्त

होकरेसे भेंट हुइ कोंडाजीने इन सबको बडे आग्रहके साथ अपने यहाँ भोजनके लिये बुलाया इनसे उ होंने कहा

यहाँ श्रीविठ्ठल मन्दिरमें नित्य हरि कथा होती है कथा स्वय कारामजी करते हैं जो हम वैष्णवोंकी साक्षात् माता हैं आपलोग यहीं रहिये खाने पीनेकी कु चि ता मत कीजिये उसका प्रब ध हमलोग कर लेंगे यह पु य भी हमें लाभ होगा बहिन कहती है तब हमलोग तुकारामके लिये देहूमें रह गये

तुकारामजीके दशन कीतन और सत्सङ्गका परम सु लूटनेवाली महाभा यवती बहिणाबाई कहती हैं

मन्दिरमें सदा ही हरि था होता रहती है और मैं भी दिन रा श्रवण करती हूँ तुकारामजीकी कथा क्या होती है वेदोंका अर्थ प्रकट होता है उससे मेरा चित्त समाहित होता है तुकारामजीका जो ध्यान हले कोल्हापुरमें स्वप्नमें देखा था वही ज्ञानमूर्ति यहाँ प्रत्यक्ष देखी उससे नेत्रोंमें जैसे आन द नृत्य करने गा हो दिनमें या रातमें निद्रा तो एक णके ि ये भी नहीं आती कैसे आवे ? अब तो तुकाराम ही अदर आकर बैठ गये हैं बहिन कहती है कि आन द ऐसी हिलोरें मारता है कि मैं क्या कहूँ जो कोई इसे जानता है अनुभवसे ही जानता है

म बाजीकी कथा

बहिणाबाइ तो इस कार अन्य भक्तोंके साथ जिस समय तुकारामजी के दशन और उपदे का आनन्द ले रही था उस समय गोस्वामी मम्बाजी बा क्या कर रहे हैं यह देखना अब जरूरी है इस अध्यायमें हमलोगोंने कारामजीके भक्तोंको ही देख कि वे तुकारामजीको कितना मानते और कैसे पूजते थे तथा उनसे कि ना गाढा स्नेह रखते थे पर इस मिष्टान्न

भोजनके साथ कु खटाई भी तो होनी चाहिये दर सुशोभित रे मुखड़ेको नजर न लगने देनेके लिये एक काली बि दी भी ो ोनी चा ये दि ऐसा न ो तो यह ससार सस र ही न र जायग इसलिये खटाईके रूप इन गोस ईको मम्बाजीरूप इस काली बि दीको भी जरा निहार लें म्बा ी गोसाई तुक रामजीको मानो पीड़ा पहुँचानेके लिये ही पैदा हुए थे कारामजी तो नि क म भजन करते थे और म्बाजीने खोल र ी थी परमाथकी दूकान तुकाराम भगवान्की भक्तिसे लोगोंके हृदय भर करते थे और मम्बाजी लोगोंसे पैसा वसूलकर अपना घर भरते थे पर इनके इस यवसायमें तुकारामजीके कारण बड़ी ब धा पड़ती थी लोग तुकारामजी की ओर ी झुकते उन्हींके जाकर पैर पकड़ते थे यह देख मम्बाजी उनसे मन ी मन बहुत जलते थे उनके नामसे चिढते थे उनसे बड़ा द्वेष करते थे तुकारामजीको इन बा ोंका कुछ ख्याल ही नहीं था वासुदेव सर्वमिति को प्रत्यक्ष करनेव ले भूतमात्रमें भूतभावन भगवान्को देखनेवाले सवभूतहितरत भगवद्भक्त महात्माके हृदयमें भगवान्के सिवा और किसी स्तुके लिये अवका ही कहाँ पर भगव न्का कौतुक देखिये कि अपने प्रिय म भक्तकी ान्तिका अलौकिक तेज दिखानेके लिये कहिये या भक्त की न्तिकी परीक्षाके लिये कहिये उन्होंने एक सौटी पैदा की जो तुकारामजीके घरके बिल्कुल बग में मम्बाजी ो र रख दु नके बिना सज्जनका सौजन्य छिपा ही रह ज ता है ससारपर उसका प्र फै ने नहा पा

बुरे भलेको दिख देते हैं हीन उत्तमको बता देते हैं का हता है नीचोंसे ऊँचोंका पता लगाता है

मम्बाजीने कारामजीसे वैर ठाना पर तुकारामजीकी भक्ति इतनी ऊपर उठी हुई थी कि वह निर तर अजात त्रुत्वके परम खासनपर ही बिर जमान रहते थे मम्बाजी कारामजीका कीर्तन नने आया करते थे

अवश्य ही द्वेषबुद्धिसे आया करते थे पर तुकारामजीको इससे क्या वह तो मम्बाजीपर प्रेमकी ही दृष्टि रखते थे यदि किसी दिन मम्बाजी कीर्तनमें न आते तो तुकारामजी उनके लिये कीर्तन रोक रखते उनकी प्रतीक्षा करते उ हें बुलानेके लि ये किसीको भेज देते और उनके आनेपर उनका बडा स्वागत करते पर औंधे घडेका पानी किस कामका मम्बाजीपर कुछ भी असर न होता वह अपने द्वेषको ही लगाते रहते आखीर ए दिन म्बाजीके द्वेषको भभक उठनेके लि ये अ छा अवसर मि ।

तुकारामजीके श्रीविठ मन्दिरसे सटा हुआ सा ही मम्बाजीका मकान थ उनके कान और तुकारामजीके मन्दिरकी परिक्रमाके बीच रास्तेमें ही मम्बाजीने फूलोंके कुछ बिरवे लगा रखे थे और एक छोटा सा बगीचा सा ही तैयार किया था उस बगीचेके चारों ओर काँटोंकी बाड लगा दी थी एक दिनकी बात है कि तुकारामजीको उनके ससुर अ पाजीसे मिली हुई भैंस बाड़को रौंदती हुई मम्बाजीके बागीचेके अदर घुस गयी बस फिर क्या था मम्बाजी तुकार मजीपर लगे गालियोंकी बौछार करने परिक्रम के रास्तेमें काँटे छितरा गये थे हरिदिनी एकादशीका दिन था यात्रियोंकी उस दिन बड़ी भीड़ होती परिक्रमा करते हुए उनके पैरोंमें कहीं ाँटे न गड़ें इसलिये तुक रामजीने स्वय ही अपने हाथों उन काँटोंको वहाँ से हटाय और र स्ता साफ किया पर उधर मम्बाजीके द्वेष ो भभक उठने भी अच्छा रास्ता मिला साँपपर भूलसे भी यदि पैर पड़ जाय तो व जैसे क ल सा बनकर काट ख नेको दौड़ता है वैसे ही मम्बाजी भी मारे क्रो के दाँ पीसते हुए तुकारामजीपर टूट पड़े और उ हीं काँटोंकी बाड़ोंसे उ ें म रने लगे मुँहसे गालियाँ बकते जाते थे और हाथसे बाड़ें मारते जाते थे मारते मारते तुकारामजीको अधमरा सा कर डाला तुकारामजीकी शा ि की परीक्षाका यही समय था और तुकारामजी इस परीक्षामें पूर्णरूपसे उत्तीर्ण हुए तुकारामजीने मम्बाजीकी बेदम मार चुपचाप स ली मुँहसे

एक भी श द उ होंने नही निकाला और कोई प्रतीकार भी नहीं किया महीपतिबाबा कहते है कि मम्बाजीने तुकारामजीकी पीठपर दस बीस बाड़ें तोड़ी तुकारामजी शान्त रहे शान्तिसे इसकी फरियाद मन्दिरमें भगवान् के पास ले गये उस अवसरपर उ होंने छ अभग कहे उनमेंसे एकका भाव इस प्रकार है

बडा अच्छा किया भगवन् आपने बडा अच्छा किया जो क्षमाका अन्त देखनेके लिये काँटोंकी बाड़ोंसे पिटवाया गालियोंकी वर्षा कर यी अनीतिसे ऐसी विडम्बन करायी और अन्तमें क्रोधसे छुड़ा भी लिया

काँटोंका रास्ता साफ करने चला तो काँटोंसे ही कटवाय इससे तुकारामजीका चित्त कुछ दुखित तो हुआ पर भगवान्ने क्रोधसे जो छुड़ा लिय इसीका उन्हें बड़ा स तोष था जिजाईने बडी सावधानीके साथ एक एक करके उनके वदनसे सब काँटे निकाले और उ हें अ रामसे ल दिया फिर जब कीर्तनका समय उपस्थित हुआ और म दिरमें कीर्तनकी तैयारी हो चुकी और तुकारामजीने देखा कि मम्बाजी अभीतक नहीं आये तब वह स्वय उनके घर गये उ हे साष्टाङ्ग प्रणाम किया और उनके पैर दबाते हुए पैरोंके पास बैठ गये मम्बाजीके चित्तमें चुभे ऐसी कोई बा उन्होंने नहीं कही सरल और विनम्र भावसे यही कहने गे कि दोष तो मेरा ही है मैंने पेडोंको पीड़ा न पहुँचा यी होती तो आपको भी क्षोभ न होता मुझे बडा दु ख है कि आपके ह थ और वदन मेरे कारण दर्द कर रहे होंगे य कहकर आँखोमें जल भरकर सिर नीचा करके वह उनके पैर दबाने लगे तुकारामजीका यह विलक्षण सौज य देखकर मम्बाजी कठोर हृदय भी थोड़ी देरके लिये पसीज उठा मन ही मन वह बहुत ही लज्जित हुए और तुकाराम ीके साथ कीतनको चले तुक रामजीकी ान्ति मा और दयाने सदाके लिये लोगोंके हृदयोंमें अपन घर कर लिया

मम्बाजीकी यह कथा बहुत प्रसिद्ध है पर इतनेसे उनके क्रोधी और ईर्ष्यालु स्वभावका पूरा इलाज नहीं हो पाया उनके ईर्ष्या द्वेषकी आगकी लपटें बहिणाबाईके भी जा लगी बहिणाबाई अपने सब सामानके साथ इन्हींके यहाँ ठहरी थी मम्बाजीकी यह इच्छा थी कि ऐसी श्रद्धालु स्त्रियों को तो हमारे जैसे आचारवान् गुरुओंसे ही दीक्षा लेनी चाहिये बहिणाबाई की समझ तो इतनी बडी नहीं थी इसलिये यही उनके पीछे पडे और कहने लगे कि तुका शूद्र है उसका कीर्तन सुनने मत जाया करो शूद्रके भी कहीं ज्ञान होता है हाँ उपदेश तुम्हें लेना है तो हमसे लो रोज रो यही बात सुनते सुनते बहिणाबाई थक गयी और एक रोज उन्होंने मम्बाजीको कोरा जवाब सुना ही तो दिया कि मैं उपदेश ले चुकी हूँ अब मुझे उपदेशकी आवश्यकता नहीं है यह सुनते ही मम्बाजीके क्रोधकी आग भभक उठी बहिणाबाईकी एक गौ थी उसे इन्होंने पकड़कर बाँधा और बडी क्रूरतासे उसपर डडे चलाये गौकी पीठपर जो डडे पडे उनके चिह्न लोगोंने तुकाराम महाराजकी पीठपर बने देखे बहिणाबाई ऐसे ऐसे अत्याचारोंसे बहुत ही तग आ गयीं तब महादजी पन्तने उन्हें अपने घरमें टिकाया यह सारा हाल बताकर बहिणाबाई आगे कहती हैं

तुकारामजीकी स्तुतिका पार कौन पा सकता है ? तुकारामको इस कलियुगके प्रह्लाद समझो अपने अन्त करणका साक्षी करके जो भी इनकी स्तुति करते हैं वे निजानन्दमें रमते हैं बहिन कहती है लोग उनकी तरह तरहसे स्तुति करते हैं पर एक शब्दमें उनकी यथार्थ स्तुति यही है कि तुकाराम केवल पाण्डुरङ्ग थे

१६ निलाजी राय

पिपलनेरके निलोब या निलाजी राय तुकारामजीके शिष्योंमें शिरोमणि हुए प्राय सभी शिष्य भोले भाले श्रद्धालु प्रेमी और निष्ठावान् थे और

तुकारामजी सबसे अत्यधिक प्रेम करते थे रामेश्वर भट्ट विद्वान् थे और बहिणाबाईका अधिकार बड़ा था पर तुकारामजीके उपदेशोंकी परम्परा जरी करनेवाले और त्रिभुवनमें उनका झण्डा फहरानेवाले जो एक शिष्य हुए वह थे निलोबा राय ही तुकारामजीके तीन पुत्र थे उनमें परमार्थके नाते नारायण बावा अच्छे थे पर निलोबाके अधिकारको पानेवाला कोई भी न हुआ इनका अधिकार तुकारामजीकी ही कृपाका फल था इसमें स देह नहीं पर था वह अधिकार तुकारामजाके अधिकारकी बराबरीका ही निलोबा रायक चरित्र यह समझिये कि तुकाराम महाराजके ही चरित्रका नया सस्करण था वारकरी सम्प्रदायके देवपञ्चायतनमें ये ही ो पाँच देवता हैं ज्ञानेश्वर नामदेव एकनाथ तुकाराम और निलोबा यह पञ्चायतन सर्वमा य और सर्वप्रिय है उत्कट भगवत्-प्रेम प्रखर वैरा य अलौकि ज्ञानभा य इत्यादि गुण निलोबामें अपने गुरु तुकारामके समान ही थे ोकदृष्टिमें उनका आदर भी ऐसा ही था कि तुकोबा और निलोबा ए ही म ने जाते थे और यह मा यता समुचि भी थी नि ोबाकी गुरुपरम्पराका विवरण पहले आ ही चुक है गुरु कृपाके सम्ब में निलोबा कहते हैं

परम कृपालु श्रीसद्गुरुनाथ तुकाराम स्वामी आये उन्होंने अपना हाथ मेरे मस्तकपर रखा और प्रसाद देकर अ नन्दित किया मेरी बुद्धिको बढ दिया और गुणगान करनेकी स्फूर्ति प्रदान की निला हता है बो ता हुआ मैं दीखता हूँ पर यह सत्ता उनकी है

अबतक निलाजीक कोई स्वतन्त्र चरित्र नहीं था हीपर्ति बाबाने अपने भक्तविजय थ (अध्या ५६) में इनकी दो एक ब तें क कर अपने इन गुरु भाईको गौरवान्वित किया है पर अब मुझे नि ोबाके सम्पूण ओवीबद्ध चरित्रकी हस्तलिखित पोथी उन्हींके वशजोंसे मि गयी है इस निलाचरित्र में २ अध्याय हैं जिनमें सब मिलाकर ३४ ओवियाँ

इस चरित्र थसे यह पता चलता है कि नि जी तुकाराम ीके सम ालीन नहीं थे तुकारामजीको उ होंने देखातक नहीं था तुकारामजीके वैकुण्ठधाम सिधारनेके २५ ३ वर्ष बाद सवत् १७३५ (श के १६) के लगभग तुकारामजीने उ हें स्वप्नमें दर्शन दिये और उनपर अनुग्र किया पिंपलनेर स्थान नगर जिलेके अदर पर पूना जिलेकी सरहदपर है निला ी पीछे यहीं आकर रहे पर उनका ज मस्थान वहाँसे कुछ दूर नैर्ऋत्य कोनेमें शिऊर नामसे प्रसिद्ध है यह ि ऊरके जोसी कुलकर्णी थे इनके दादा गणेश पन्त और पिता मुकुन्द प त खी और सम्पन्न थे ये ऋग्वेदी दे स्थ ब्राह्मण थे घन धा यसे समृद्ध थे गोठ ग य बैलोंसे भर था अ छी वृत्ति थी सभी बातें अनुकू थीं

निलाजी जब १८ वर्षके हुए तभी प्रपञ्चका सारा भार उनपर आ पड़ा इनकी ी मैनाबाई बड़ी साध्वी ीलवती और र्माचरणमें पतिके र्वथा अनुकूल थी उनके साथ बड़े खसे इनका समय यतीत होता था इन्हें जैसे वैराग्य प्राप्त हुआ उसकी कथा बड़ी नोरञ्जक है इनका यह नित्यक्रम था कि प्रात का स्नानादि करके यह श्रीरामलिङ्गका बड़ी भक्ति से पू न करते और उसके ब द कु कर्णका काम देखते थे एक बार ऐसा योग हुआ ि य पू ामें बैठे थे और कचहरीमें इनकी बुल ट हुई इ होंने कहल दिया कि अ छा आता हूँ पर पूजामेंसे ीचमें ही कैसे उठते इस बीच चार बार चपर सी आ गया पर इन ी पूजा सम स नहीं हुई ब आखिरको य पकड़व मँगाये गये कचहरी पहुँचनेपर इ होंने अपना हिसाब दिया और वहाँसे जो ौटे सो यही निश्चय करके बैठ गये वि अब इस च रीको अन्ति नमस्कार है

ज्ञानकी ओर द रके बिवे से अपने अदर देखा और कहने गे ऐसे ससारमें आग गे ऐस प्रपञ्च ल र भस्म ो य जो परमार्थ में घ हो है यदि मैं ा ीन होता ो क्य देवत चनको ऐसे बीचमें

ही छोड देता ? धिक्कार है पराधीन होकर जीनेको खोटे काम करो किसानोंको लूटो, नीच बनकर दूसरोंका धन हरण करो और अपना और अपने कुटुम्ब परिवारका पेट भरो इससे अधिक लज्जाजनक जीवन और कौन सा है ? धिक्कार है ऐसे जीवन को !

निलाजीने उसी दिन उस वृत्तिका त्याग किया और यह निश्चय कर लिया कि संसार दारिद्र्यको नष्ट करनेके लिये अब साधु संतोंका सङ्ग करेंगे और परमार्थरूपी धन जोड़ेंगे उन्हें अपने जीवनपर बड़ा अनुताप हुआ अनुतापसे देह जलने लगी कण्ठ भर आया और नेत्रोंसे अश्रुधारा बह चली अपनी सहधर्मिणीपर अपना निश्चय प्रकट करते हुए उन्होंने कहा मैं तो अब भगवान्को ढूँढनेके लिये घर बार छोडकर चला ही जाऊँगा पर मैं तर जाऊँ और तुम इसी मायामें छटपटाती हुई पडी रहो यह मुझे कब पसन्द होने लगा ? इसलिये यदि तुम अखण्ड परमार्थ सुख चाहती हो तो मेरे साथ चलो मैनावती लज्जासे मुँह नीचा करके बोली मैं मन वचन कर्मसे आपके चरणोंकी दासी हूँ आप आज्ञा करें और मैं उसका पालन करूँ यही तो मेरा धर्म है माया मोहके समुद्रमें मैं डूबी जा रही हूँ और आप अपने हाथका सहारा देकर मुझे उबार रहे हैं इससे बढ़कर सौभाग्य और मेरे लिये क्या होगा नाथ आपके बिना मैं यहाँ नहीं रह सकती ऐसे रहनेसे तो मर जाना अच्छा है आप जहाँ भी जायँ मैं बड़ी प्रसन्नतासे आपके पीछे पीछे चलूँगी ठाकुरजीके बिना मन्दिर जलके बिना कमल बनकर मैं नहीं रहूँगी दीपज्योतिके समान मेरा आपका अटूट सम्बन्ध है

यह सुनकर निलाजी बहुत प्रसन्न हुए और अपना घर बार गाय बैल सब दान करके सहधर्मिणीको सङ्ग लिये उन्होंने प्रस्थान किया घूमते फिरते पण्ढरीमें आये वहाँके अपार प्रेमानन्दमें दोनों ही तल्लीन से हो गये उस समय तुकारामजीकी कीर्ति सर्वत्र फैली हुई थी तुकारामजीकी

महिम जानकर ये पं पत्नी आल दी होकर देहूमें आये देहूमें उस समय तुकारामजीके पुत्र नारायणबाबा थे उनके साथ निलाजीकी बड़ी घनिष्ठता हुई नारायणबाबासे उन्होंने तुकारामजीका सम्पूर्ण चरित्र सुन इससे तुकारामजीके चरणोंमें उनका चित्त स्थिर हो गया कुछ का वहाँ रहनेके बाद निलाजी प त और मैनावती तीथयात्रा करने आगे बढे अनेक तीर्थोंमें भ्रम ग किया ज्ञानेश्वरी नाथभागवत तुकाराम ीके अभग आदिका श्रवण मनन बराबर होता रहा अ तको उ हें तुकाराम जीका ऐसा ध्यान लगा कि

तुका यानमें और तुका ही मनमें
दीखे जनमें तुका, तुका ही बनमें ।
ज्यों चातककी लगी रहे लौ घनमें
नीला रटता तुका ! तुका ! त्या मनमें

तुकारामजीके दर्शनोंके लिये मन अत्य त याकुल हो उठा बस ही एक धुन लग गयी कि तुका अपने चरण दिखाओ अन्तको उ होंने अन्न जल भी छोड दिया धरना देकर बैठ गये तब तुकारामने स्वप्नमें दशन दिये और उपदेश किया

तुकाराम ीने उनके मस्तकपर हाथ रखा और उठाकर बैठाया कहा नीला स वधान हो जा भ्रान्तिसे बद हुआ नेत्र अब खो तुक रामजीने फिर म त्र दिया उसके भालमें कस्तूरी तिलक गाया अपने गलेकी लसीम । उत रकर निलाके गलेमें डाली

तुकारामजीने नि ाजीके गलेमें यह अपने सम्प्रदायकी ही माला दी और यह आज्ञा की कि आबालवृद्ध नर नारी सबको भक्तिपन्थमे गाओ

अपना सञ्चित किया हुआ सब धन जैसे पिता अपने पुत्र को दे है वैसे ही सद्गुरु (काराम) ने अपना स पूर्ण आत्म न इन्हें दे ला

निला'जीपर तुकाराम पूण प्रसन्न हुए तुकार म प ढरीकी जो वारी कि । करते थे उसे निलाजीने जारी रखा निलाजी हरिकीर्तन करने लगे, श्रोताओंपर उनका बड प्रभाव पड़ा उनकी प्रास दिक स्फूर्तिदायिनी वाणी गोताओंके हृदयोंको अपनी ओर खींच लेती थी उनके मुँहसे राप्रवाह अभग निकलने लगे पा डुरङ्ग भग ान् पूण प्रसन्न हुए पिंपलनेरका पाटील उनके आशीर्वादसे रोगमुक्त हुआ तब बड़े सत्कारके साथ वह निलाजीको पिंपलनेर लिवा लाया और उनकी बडी सेवा करने लगा निलाजी सत कहलाये उनका सकीतन समाज खूब बढा उनका श बढानेवाले अनेक दैवी चमत्कार हुए निलाजीकी क याका जब विवाह हुआ तब उसकी सब सामग्री भगवान्ने स्वय ही प्रस्तुत की ऐसी ऐसी अनेक अद्भु घटनाएँ हुई नगरमें सतत दो मास कीतन होते रहे नगरका यह कानून था कि दो पहर रात बीतनेपर कीर्तन समाप्त हो ाया करे तदनुसार उनके कीर्तनके लिये भी नगरके कोतवालने यही हुक्म जारी करना चाहा पर भगवान्का दरबार ठहरा वहाँ मनु योंकी सुनव यी कब होने लगी निलाजी कीतन कर रहे हैं दो पहरके बदले तीन पहर र त बीत जाती है तो भी कीर्तन बद नहा होता तब कोतवाल सिप ियोंके एक दलके साथ कीर्तन बन्द करने खुद चला आय आकर बैठा बैठते ही हरिका नाम और भक्तकी वाणी उसके कानोंमें पडी सकीर्तनके प्रेमान दने उसके हृदयपर ऐसा अधिकार म या कि कोतवाल कीर्तन बद करनेकी बात भूलकर वहीं जम गया और निलाजीके चरणोंमें गिरकर उनका शि य बना निलाजीकी

मूर्ति ठिंगनी सी थी वर्ण गोरा था नाक सर थी नेत्र बड़े बड़े

थे दय वि और कमर पतली थी डील डौल सब तर से सुहावना था

गलेमें तु सीकी माल पडी रहती हाथमें फूलोंके गजरे होते कीतनके लिये खड़े होते तब बड़े ही सुह वने लगते और कीर्तनरंगमें ह्मस्वरूप ही प्रतीत होते थे कीर्तनकी शैली ऐसी सर और बोध हो ी थी कि आबाल वृद्ध वनिता तथा तेली-तमोलीतक सब अनाय स ही सम लेते और उससे लाभ उठाते थे निलाजीका कीतन नने एक बनजारा आया था यह बड़े ही क्रूर स्वभावका आदमी था पर निलाजीका कीर्तन नते सुनते इसे पश्चात्ताप हुआ और यह निलाजीकी रणमें आया और ारकरी बन गय निलाजी एक बार इसके अनुरोधसे इसके घरपर भी गये इसने उनकी बड़ी सेवा की पर इनकी ीने निला ीको हुत बुरा भला कहा तुमलोग बड़े खोटे कपटी और ढोंगी हो मेरे पतिको फुसलाकर तो तुमलोगोंने मेरा सत्यानाश कर डाला बड़े कुटिल लोभी और पापी हो इत्यादि यह सुनकर निलाजी स्वामी उसके समीप दौड़े गये और उसके पैर पकड लिये और बोले माता तुम सच कहती हो मैं ऐसा ही पतित हूँ म दबुद्धि हूँ तुमने बड़ा अच्छा उपदेश किया अब मेरी सम में आया अब जननीके इन वचनोंको मैं दयमें धारण करूँगा

निल जीक अधिकार महान् था यह उनकी अभगवाणीसे भी पष्ट प्रतीत होता है उनके वैराग्य क्षमा शा ति और उपदे पद्धतिने लोगोंके हृदयोंमें घर कर लिया तुकारामजीके पश्चात् वारकरी भक्ति प थका प्रचार जितना निलाजीने किया उतना और कोई भी न कर का उन्होंने सचमुच ही सम्पूर्ण महाराष्ट्रपर भागवत धर्मका झडा फहरा दिया

१७ श्रीतुकाराम महाराजके श्चात्

नि ाजीके प्रधान शिष्य ि ऊरके गगगोत्री यजुर्वेदी ब्राह्मण र स्वामी थे इनके परपोतेके पोते इस समय मौजूद हैं इनका कुल नाम लाखे था पुरखे लखपती थे सराफीका काम करते थे शकर स्वामी ब पूनेमें थे तब नि ाजीके साथ आल दी और प ढरीकी यात्र करते थे इनपर ब निलाजीका पू प्रस द हुआ तब यह शिऊरमें ाकर र ने लगे शकर स्व मीके ि य मलाप्प वासकर नाम एक लिङ्गायत णिक् थे ो नि ाम राज्यमें भा की नामक ग्रा में रहते थे म प सकरने ही प ले पह वारकरी म की एक नवीन ाखा नि ण की और आषाढी एकादशीके दिन ज्ञानेश्वर महार की पालकी अ लन्दीसे भजनसम रम्भके सा प ढरपुर ले जाने ी प्र ा चली तुकारामजीके पुत्र नारायणबावाने त्रपि शाहू मह राजसे पुरस ारस्वरूप ीन गाँव ा किये इनके पुत्र ज गीरदारोंके ढगसे रहने गे एक बार ण्ढरपुरमें मलाप्पा कीर्तन कर रहे थे और वहाँ कारामजीके पोते गोपालबावा प ारे मलाप्पाने उनकी चरण व दना की और य निवेदन किया कि श्रीहरिका कीर्तन करनेका अधिक र यथार्थमें आपका है आपकी अनुपस्थितिमें मुझसे जैस बन पड़ा मैंने कीतन किया अब आप ही कीतन नाकर इन कानोंको पवित्र करें कहते हैं कि उस समय गोपालब ाके मुखसे दो अभग भी द्धरूपमें नहीं निकले इससे उनकी बड़ी नामहसायी हुई और मला पाने खूब खरी खरी न यी गोपालबावाके चित्तपर इसका बड़ा प्रभा पड़ा व भण्डार पर्व पर वर्ष रहे वहाँ उ होंने तुकारामजीके अभग ज्ञ नेश्वरी आदिक अध्ययन किया और फिर कीतन भी करने गे उ होंने वारकरी सम्प्रदायकी एक और ाखा निकाली यह देहूकी ा ा हुई तबसे वारकरी सम दायकी दो शाखाएँ चली आती हैं सीधी गुरुपरम्परासे चली आयी हुई शाखा

ासकरोंकी है इसलिये यही विशेष मा य है विगत सौ दो सौ वर्षके भीतर वारकरी सम्प्रदायमें अनेक महात्मा उत्पन्न हुए और सभी जातियोंमें हुए सतोंके चरित्रलेखक और तुकारामजीके अनुगृहीत महीपतिबाव का (सवत् १७७२ १८४) विस्मरण भला कैसे हो सकता है सख राम ावा अम्मलनेरकर बाबा अझरेकर नारायण अप्पा प्रह्लादबुवा बडवे चातुर्मासे बोवा यबक बुवा भिन्ने हैवन्त राव बाबा गङ्गु काका गोदाजी पाटी ठाकुर बोवा भानुदास बोवा भाऊ कान्कर साखरे बोवाके मूलगुरु केसकर बोवा बाबा पाध्ये ज्येतिपन्त महाभागवत पूनेके ख ोजी बोवा इत्यादि अनेक भक्त हुए जिनके नाम सस्मरणीय हैं साखरे बोवा विष्णु बोवा जोग यङ्कट स्वामी प्रभृति लोगोंने भी ारकरी सम्प्रदायकी बड़ी सेवा की है विगत छ सौ वर्षमें भागवतधर्म महाराष्ट्रमें अ छी तरहसे याप्त हो गया है कोल्हापुर सतारा सोलापुर नगर पूना न सिक खानदेश बरार नागपुर और निजामराज्यके मराठा भाषा भाषी सब स्थानोंमें ज्ञानेश्वर महाराज नामदेव राय एकनाथ जनार्दन तुक राम महाराज और निलोबाराय या अनेक सत्पुरुष भागवतधर्मका चार कर गये हैं ज्ञानेश्वर महाराजने जिसकी नीव डाली नामदेवने जिसका विस्तार किया एकनाथने जिसपर भागवतका झडा फहराया और अ तमें तुकाराम महाराज जिसके िखर बने उस भागवतधर्मक अख ड और अभग दिव्य भवन त्रिभुवन ्र श्रीकृष्ण विठ्ठलकी कृपा छत्रछायामें आज भी अपने अति मनोहररूपमें खड़ा है ऐसे इ भागवतधर्मकी निरन्तर जय हो

चौदहवाँ अध्याय

तुकाराम महाराज और जिजामाई

स्त्री पुत्र घर द्वार सब कु रहे पर इनमें आसक्ति न हो परमार्थ युक्त साधनके द्वारा चित्तवृत्ति सदा वधान बनी रहे

श्रीनाथभागवत अ १

१ जिजामाईकी गिर ी

तुक र मजीकी प्रथम पत्नी रुक्मिणीबाई अकालमें ही का कवलित हुइ और बसे तुकारामजीकी घर गिरस्ती क्या थी यथार्थमें उनकी द्विती पत्नी जिजाबाईकी ही गृहस्थि ी तुकारा जीकी आयुके १ वष भी पूरे नहीं हो पाये थे ब जिजाइके स थ उनका विवा हुआ और महाराज जब वैकुण्ठ सि रे ब जिजाईके पाँच महीनेक गर्भ इ तरह दोनोंका समागम २६ वष रहा इस बाच इनके अने सन्तान हुए और बड़ी तग लतमें जिजाईको दिन काटने पड़े कारामजी अपने वयस्के २२ वें वर्ष ससारसे विरक्त हुए और ससारसे जो उन्होंने मुँ ोड़ा सो फिर कभी ससार उ हें आसक्ति नहीं हुई

लोकाचारके लिये व संसारी बने थे पर कहते यही थे कि मेरा चित्त इस प्रपञ्चमें नहीं है मेरे शरीरतककी मुझे सुध नहीं रहती लोगोंसे आओ विराजो कहकर लोकाचारका पालन करना भी ऐसी अवस्थामें उनसे कैसे बन सकता था एक अभंगमें उन्होंने कहा है मुझे अपने कपड़ोंकी सुध नहीं मैं दूसरोंकी इज्जतका क्या ख्याल करूँ

उन्होंने अपना सब बहीखाता इन्द्रायणीके भेंट किया तबसे कभी उन्होंने उनको स्पर्शतक नहीं किया इसलिये लोकदृष्टिसे उनकी अवस्था अच्छी नहीं थी जिजाईके माता पिता और भाई पूनेमें रहते थे और वे सम्पन्न भी थे जिजाई शुरू शुरूमें उनसे सहायता लेकर जहाँतक बन पड़ता था तुकारामजीकी गिरस्ती सम्हाले रहती था अपने भाईकी मध्यस्थतासे उन्होंने कई बार व्यापारके लिये तुकारामजीको रुपया दिलवाया कई बार वो स्वयं भी तमस्सुक लिखकर महाजनोंसे रुपया लेकर तुकारामजीके हाथोंमें दिया पर तुकारामजी ठहरे साधु पुरुष और ऐसे साधु पुरुषोंसे उचित अनुचित लाभ उठानेवालोंकी इस संसारमें कोई कमी नहीं इस कारण जो भी व्यापार उन्होंने किया उसीमें उन्हें नुकसान ही देना पड़ा और पीछे जब कान्हजी अपने भाइसे अलग हो गये तब तो जिजाईको गिरस्ती चलाना बड़ा ही कठिन हो गया ऐसी दशामें जिजाईके सन्तान भी होते ही रहे पतिदेव ऐसे कि कहां एक पैसा कमाकर लाना जानते नहीं और घरमें बाल बच्चोंके लिये अन्नके लाले पड़े हुए थे ऐसी विचित्र चिन्ताजनक दशा होनेके कारण जिजाईका स्वभाव चिड़चिड़ा और झगड़ालू हो गया हो तो कोई आश्चर्य नहीं उनका यदि ऐसा स्वभाव न होता तो कदाचित् इस तरह बार बार घरसे भण्डारा पर्वतकी ओर न उठ दौड़ते और संसारका सारा भार अकेली जिजाईपर लदा न पड़ता और अन्न वस्त्रके भी ऐसे लाले न पड़ते तो जिजाई भी कदाचित् ऐसे चिड़चिड़े मिजाजकी न बनतीं पर क्या होना था या न होता

विचार तो गौण ही है क्या था या है' वही देखना अ छा है प्रारब्ध कहिये या ईश्वरका कौतुक कहिये तुकारामजी और जिजाईको सारा जीवन एक साथ ही रहकर यतीत करना पड़ा यूरोपके तत्त्ववेत्ता साधु क्रातकी स्त्री बडी जबरजग थी लोग कभी कभी जिज ईको इसी स्त्रीकी उपमा देते हैं पर तु जिजाईमें अनेक उत्तम गुण भी थे और तुकारामजीका नित्य समागम होनेसे उनकी उत्तरोत्तर उ नति ही हो चली थी तुकारामजीके वैराग्य और अभ्यासके लिये जिजाईका सङ्ग बडा उपयुक्त था इसलिये यही कहना चाहिये कि भगवान्ने अ छी ही जोडी मिलायी इस जोड़ीके मिलानेमें अ युत कहानेवाले भगवान् च्युत हुए या चूक गये ऐसा तो नहीं कह सकते समुद्रमें कोई काठ कहींसे बहता चला आया और कोई कहींसे और दोनों मिल जाते हैं और फिर अ ग भी होकर भिन्न भिन्न दिशाओंमें चले जाते हैं ऐसा ही जीवोंका भी सयोग वियोग हुआ करता है प्रत्येक जीवका प्रार धकर्म भिन्न है प्रत्येक अपने कर्मानुसार जीवदशा भोगता है सुख दु ख कोई किसीको दिय नहीं करता यही यदि शास्त्रसिद्धान्त है और जीव स्वकर्मसूत्रमें बँधा हुआ है तो जिजाइ और तुकारामजीके परस्पर समागम और सुख दु खका कारण भी उनका प्राक्कर्म ही है जिजाईके स्वभावमें कुछ कटुता थी और वह कटुता परिस्थितिसे और भी कटु हो गयी यह बात सच है पर उनका कोई ऐसा महान् पुण्यबल भी था जिससे उ हें इस ज ममें ऐसे महान् भगवद्भक्तक समागम प्राप्त हुआ और भगवान् म और सतोंके पु यप्रद महाफलदायी सत्सङ्गका लाभ हुआ

२ 'योगक्षेम वहाम्यहम्'

भक्तोंका योगक्षेम भगवान् कैसे चलाते हैं कैसे उनकी पत र ते और उनकी बात ऊपर रखते हैं इसकी कुछ कथाएँ महीपतिबाबाने बड़े प्रेमसे र्णन की हैं एक बार तुकारामजीने क्या कि या कि जिजाई ी साड़ी

किसी अनाथा स्त्रीको दे डाली और जिजाइके पास बस यही एक साडी थी जिसे वह कहीं आना जाना हुआ या लोगोंके सामने निकलना हुआ तो पहना करती थीं अब उनके पास ऐसी कोई स बी नहीं रह गयी तन ढाकनेभरका कोई फटा पुराना कपडा पहने रहने और उसी हालतम लोगोंके सामने निकलनेकी नौबत आ गयी तब भक्तवत्स भगवान् पाण्डुरङ्गने स्वय ही जरीका काम की हुई ओढनी उ हें ओढा दी और उनकी रखी

तुकारामजीके प्रथम पुत्र महादेव पथरीकी बीमारीसे पीड़ित हुए जिजाइने लाख उपाय किये पर किसीसे कोई लाभ नहीं हुआ सब उपाय करके जब वे हार गयीं तब उ हें उन्माद सा चढ आया और उसी अवस्थामें वे अपने बेटेको ले ज कर श्रीविठ के पैरोंपर पटक देनेके विचारसे म दिरमें गयीं मन्दिरमें प्रवे करते ही बच्चेको पेशाब हुआ और बच्चा अ छा हो गया

एक घटना और बतलाते हैं गिरस्तीका सारा जजाल सम्हालते सम्हालते जिजाईके नाकों दम आता था फिर भी इसी हालतमें तुक राम जीके लिये भोजन तैयार करके पर्वतपर ले जाना पड़ता था यह आने जानेका झझट ऐसा लगा कि इसके मारे कभी कभी उनके क्षोभका पारावार न रहता एक दिनकी घटना है कि जिजाई इसी तरह रोटी और जल लिये पर्वत की चढाई चढ रही थीं बडी तेज धूप पड़ रही थी पैर जल रहे थे ककड़ गड़ रहे थे सारा शरीर झुलसा जा रहा था सिरपर तो जैसे अगारे बरस रहे थे जिजाईके प्राण याकुल हो उठे इसी हालतमें ऊपर चढते ढते उनके पैरके वेमें ए बड़ा सा काँटा ऐसा भिदा कि भिद कर परके ऊपर निक आया जिजा लमला उठी और बेहोश होकर गिर प ी लपात्र ा से छूटा रत पर गिरा और रसे बड़े वेगके सा रक्तकी धारा निकली कु ाल बाद उन्हें ो आया

अपने ही हाथसे काँटेको निका ना चाहा पर व॰ किसी तरह नहीं निक काटेको निकालनेकी चेष्टामें लगी हैं सोच रही हैं विधनाकी करतूतको रो रही हैं अपने ऐसे दुर्भाग्यको कोस रही हैं अपने पिताको कि कैसे अ छे पति ढूँढ दिये और सबसे अधिक दाँत पीस रही हैं उस कलूटेपर जिसका पल्ला पकड़े तुकाजी ड़े हैं और चाहती हैं किसी तरहसे य॰ काँटा ो निकल आवे पर काँटा तो ऐसा भिदा है कि किसी रहसे निकलता ही नहीं पैरसे रक्त निक रह है और जिजा॰के मनोमय नेत्रोंके ामनेसे होकर अपने ऐसे पतिके साथ विवाह होनेके समयके दृश्य एक एक करके गुजरते जा रहे हैं वह सोच रही है कैसे ठाट बाटके साथ पिताने मुझे विवाह दिया मा॰ने किस उत्साह और साज बाजके साथ वरयात्रा करायी और तुला भी की मा॰केमें बीते हुए के वे दिन याद कर करके तुकाजीके सङ्ग रहनेसे होनेवाले क ष्टोंपर वह फूट फूटकर रोने लगी आँखोंसे शुभ्र ज धारा निकल रही है और पैरसे रक्त ारा ॰धर तुकारामजीके पेटमें भूखकी ज्वाला उठी और उ र उसकी लपट श्रीविठ्ठलनाथके हृदय पर जा लगी जिजा॰के कष्टोंने भी वहाँ पहुँचकर दयामैयाको जगाया कारण ये कष्ट एक पतिव्रताके स्व र्म निर्वाहके कष्ट थे स्वधर्माचरण करने ा ष्टोंपर भगवान् दया करते ही हैं दयाके निधान श्रीप डुरङ्ग भगवान् उस झल्लाती धूपमें धूपकी जलन और काँटेकी भिदनसे तडपती हुई ि जाईके स मुख प्रकट हुए जि होंने जिजाईके सम्पूण गृ॰सौख्यको स्वय ही हर लिया था और ॰स कारण जिजाई जि हें अपने खका ॰र्ता जानकर ही भजती थीं व॰ नारायण भी वैसे भजनके अधीन हो गये श्रीविठ नाथजीकी वह श्याम सगुण लाव यमूर्ति सम्मुख खड़ी देखकर क ा जिजाईको कु सन्तोष हुआ न॰ीं व॰ाँ तो ो ग्नि और भी वेगसे भड़क उठी और जिजा॰ क्रो के अगारे बसराने गीं क ने लगीं यही है ाला लूटा जिसने मेरे पतिको प गल बना दिया अरे ओ

निदयी तू अब भी पीछा नहीं छोडता ! क्या अब मेरे पीछे पडना चाहता है मेरे सामने अपना यह काला मुँह लेकर क्यों आया है यह कहकर जिजाईने भगवान्‌की ओर पीठ फेर दी और दूसरी ओर मुँह करके बैठ गयी जिजाईकी उस विलक्षण दृढताको देखकर भगवान्‌के भी जीमें कुछ कौतुक करनेकी इच्छा हुई वह लील नटवर जिस ओर जिजाईने मुँह फेरा था उसी ओर सम्मुख होकर खडे हुए जिजाईने झुँझलाकर फिर मुँ फेर लिया भगवान् वहाँ भी सम्मुख हो गये आँठों दि एँ जिजाई घूम गयीं पर जिधर देखो उ र वही काले कृष्णकन्हैया ि जाईके छलैया खड़े हैं इधर देखो तो वही उ र देखो तो वही ऊपर देखो ो वही नीचे दे ो तो वही कहाँ किधर वह नहीं यह हालत जिजाईकी उ समय हो गयी

र वण कस शिशुपाल इत्यादिको जिन्होंने उनके भगवद्विद्वेषके कारण ही तारा उन ीलानटवर श्रीवि लने अपने परम भक्तकी सहधर्मिणी के चारों ओर चक्कर लगाकर उसकी दृष्टि अपनी ओर खींच ली तो इसमें आश्चय ही क्या है ? किसी भी निमित्तसे हो भगवान्‌की ओर जहाँ चित्त लगा त ी ीवका सब काम बना जिजाई जिस ओर दृष्टि डालतीं उसी ओर उन्हें श्रीकृष्ण दृष्टि आते अ खिर उ ोंने अपने दोनों नेत्र दोनों थोंसे खूब कसकर बद कर लिये ब ो भगवान् अन्तरमें भी दिखायी देने गे । पिता जिस प्रकार अपनी पुत्रीपर हाथ फेरे उसी प्रकार भगवान्‌ने जिजाईके अङ्गपर अपना कम कर फिराया और जिजाईका पाँव अपनी प थीपर र कर ऐसी विधासे कि ि जाईको किञ्चित् भी वेदना नहीं ी हुई व काँटा चटसे निका लि ब जिजाई और उन स थ साथ भगवान् काराम ीके मीप गये तुकार मजीने इन दोनोंको एक ाथ जो देखा तो उ हें रात्रि और दिवाकरके साथ ही स आने भान हुआ काराम ीके साथ साथ भगवान् और जिजाईने भी भोजन

किया वही बैठे बैठे भगवान्ने एक पत्थर हटाया तो वहाँसे स्वच्छ जलक झरना बहने लगा

३ दोषका भागी कौन ?

तुकारामजी और जिजाईके झगड़ेमें दोषक भागी कौन है तुकाराम या जिजाई यह प्रश्न उपस्थित करके दूसरोंके गड़ोंमें पञ्च बनकर पडनेवाले कई विद्वानोंने इसकी बड़ी चर्चा की है कितनोंका यह कहना है कि तुकारामजी जब गृहस्थ थे एक स्त्रीका पाणिग्रहण कर उसे घर ले आये थे उससे उनके स तान भी थी, तब उ हें उस स्त्री और उन सन्तानोंका अवश्य ही पालन पोषण करना उचित था यह उनका कर्त य ही था इस कर्त यका प लन उन्होंने नहीं किया इसलिये तुकाराम ी सवथा दोषी हैं पाठक हम आप भी जरा इस प्रश्नको इस अवसरपर विचार लें सारे ज त्को उपदेश करनेवाले तुकारामजीको क्या इतन भी ज्ञान नहीं था कि अपने स्त्री और स तानके प्रति अपना कर्तव्य वह न समझ सकते ? और ऐसी बात भला कौन कह सकता है ? और ऐसी बात हो भी कैसे सकती है ? इसलिये बात कुछ और है तुकारामजी और जिजाईकी जो नहीं बनी इसमें यथार्थमें दोष तो किसीका भी नहीं है तुकारामजीके अभग सग्रहोंमें तुकार मजीके प्रति उनकी ीके कठोर वचन शीर्षक सात अभग हैं इन अभगोंको कुछ लोग असली मानते हैं और कुछ नहीं मानते जो हो पर उन अभगोंसे इतना तो अवश्य ही जाना जा सकता है कि तुकारामजीपर जिजाईके कौन कौन से अ क्षेप हो सकते थे जिजाईक मानो यही कहना था कि

(१) यह कोई काम-काज नहीं करते कुछ उपार्जन नहा कर विव ह करके मेरे पति तो बन बैठे पर इनके य ब ोंके लिये अन्न-व मुझे ही जुटान पडता है ीकी जाति मैं कितना दु ख उठाऊँ और किस किसके सामने अपना दीन वदन दिखाऊँ

(२) इ ें अपने तनकी को ् चि । नहीं न सही पर ् हैं हमारी को् चिन्ता हो से भी नहीं

(३) स्वय तो कुछ कमाकर लाते नहीं पर यदि कहींसे कुछ आ ाय ो वह भी लुटा देते हैं अन्न हो वस्त्र हो अथवा और कोई वस्त हो जो भी ो कुछ माँगता े व् अपने बच्चोंको पूछतेतक नहीं और उसे दे डा ते हैं दूसरोंके पेट भरते हैं पर मेरी या बच्चोंकी कोई परवा नहीं करते कभी एक पैसा कमाना नहीं हाँ घरमें यदि कुछ पडा हो तो उसे भी गँवा देन यही ्नका धधा है

(४) घरमें तो रहना जानते ही न् । जब देखो तब वनको ही दौड़े जाते हैं इन्हें ढूँढ़कर पकड़ लाना पड़ता है तब इनका आगमन होता है

(५) सब कीर्तनियाँ मिलकर रातको बडा कोलाहल मचाते हैं किसीको सोने नहीं देते इनके सङ्ग साथसे ्नके साथी भी घरबारत्यागी विरागी बन रहे हैं और उनकी स्त्रियाँ भी घरोंमें बैठी मेरी तरह रो रही हैं

जिजा्के ये आक्षेप हैं इ ें झूठ तो तुकारामजी भी नहीं बतलाते जिन सात अभगोंकी ये बातें हैं उनमेंसे प्रत्येक अभगके अ तिम चरणमें तकारामजीका उत्तर भी रख हुआ है उत्तर एक ही है कि क्षितका भाग मिथ्या है मि याका भार ढोनेमें यर्थ ही माथा खपाना है

जि ाबाईका कहना जिज बा्की दृष्टिसे ठीक है सामा य ससारी जनोंकी दृष्टिसे भी ठीक है ससारको सत्य माननेकी दृष्टिसे भी बिल्कुल ठी है जिज ईको अकेले तकारामजीकी गिरस्तीका सारा भार अपने सिरपर उठाना पड़ा ्ससे उ हें बहुत कष्ट हुए कष्टोंसे उनका मिजाज चिड़चिड़ा बन गया चिडचिड़ेपनसे जो कु उन्होंने कहा ह ्स तर से बिल्कुल सही है और उनके दु खोंसे ससारी जीवोंको स्व भाविक ही

ानुभूति होती है पर तुकारामजीकी ओर देखिये और कारामजीकी दृष्टिसे विचरिये तो उनका भी को़ दोष न ीं दिखायी पडता ससारका मिथ्यात्व जब प्रकट हो गया उससे मन उपर म हो गया और सासारिक ख दु खके विषयमें चित्त उद सीन हो गया तब उस ख दु खसे उत्पन्न होनेवाले कर्‍ य ही कहाँ रह गये इसलिये इसमें तो तुकारामजीका कोई दोष नहीं दिखायी पडता सूर्यके सामने जब अन कार ही नहीं र जाग उठनेपर स्वप्नगत ससार ही जब नही रहा नदीके उस पार पहुँचे हुए पर नदीकी हरें जाकर नहीं गिरीं तो ़समें सूर्य जाग्रत् और उत्तीण पुरुषको को़ भी विवेकी पुरुष दोषी कह सकता है जागता हुआ पुरुष और स्वप्नमें बडबड़ नेवाली ाी इन दोनोंका मि न जैसा है वैसा ही तुक रामजी और जिज ईका जीवन मिलन है स्वप्नमें बड़बड़ नेवाली स्त्रीके शब्दोंका जाग्रत् पुरुषके समीप कोई मूल्य नहीं होता प्रत्युत जागता हुआ पुरुष उसे भी जगानेका ही प्रयत्न करता है उसी प्रकार तुकारामजीने जिजा़को जगानेके लिये पूर्णवे के अभग कहे हैं तुकारामजी और जिजाईका झगड़ा सत्त्वगुण और रजोगुणका झगड़ा है परमार्थ और प्रपञ्चका या ब्रह्म और मायाका गड़ा है प्रकृतिके दास जीव प्रकृतिके सब कामोंको ही ठीक समझते हैं पर प्रकृतिप्रभु पुरुषके सामने प्रकृति आती ही नहीं फिर उसका कार्य क्या और उसका अभिनिवेश ही क्या पुरुष ो अनङ्ग और उदासीन है निर्धन और एका ती है जराजीण अ वृद्धसे भी वृद्ध है पर अकर्ता उदासीन और अभोक्ता होनेपर भी पतिव्रता प्रकृति उससे भोग कराती है व अविकारी है पर यह (प्रकृति) स्वय उसमें विकार बन ज ती है वही उस निष्कामकी क मना परिपूर्णकी परितृप्ति अकुलका कुल और मेत्र बन ाती है ़स प्रकार प्रकृ पुरुषमें फैलकर अविकार्य पुरुषको ि रवश बना लेती है ज्ञानेश्वरी (अ १३) पुरुष ऐसा और प्रकृति

ऐसी है कारामजी पुरुष और जिजाई प्रकृतिका यह विवाद अनादिक से चला अ । है यह तो अध्यात्मदृष्टि हु२ पर लोकदृष्टिसे भी देख तो भी तुकारामजी दोषी न२ीं ठ२र ये जा सकते ससारी बने रहो और परमाथ भी स धो य२ क ना तो बडा सरल है पर दो नावोंपर पैर रखनेवाला किसी एक नावपर भी नहीं रहता इस लोकोक्तिके अनुसार भी महात्माओंका अनुभव है सम र्थ रामदास स्वामीने भी (पुराना दासबोध समास १८ में) यही कहा है बचपनमें माता पिताने याह कर दिया पीछे वैर ग्य हुआ ऐसी अवस्थामें को२ भी चा सा क ऐसे ी रह सकत है जैसे तुकारामजी हे बाल ब ोंका पेट भरना और इसके लिये नौकरी चाकरी या को२ निज यापार करना तो सभी करते हैं। कारामजी भी यदि वैसा ही करते तो परम अथकी जो निधि उनके हाथ लगी व२ न लगी होती और जे धन उ हांने ससारमें वितरण कि या वह भी न कर सकते य२ तो स्पष्ट ही है कुछ त्यागे बिना कुछ हाथ नहीं गता प्रपञ्च लोभ छोड़े बिना परमाथ लाभ न२ं हो सकता तुकाराम जीके चित्तने ससारको जडमूलसहित त्य ग दिया इसीसे परमार्थका मूल उनके ह थ लगा म ान् लाभके लिये अल्पका त्याग करना ही पड़ता है दो कर्त योंके बीच ज ब झगड़ा चले तब श्रेष्ठ कतव्यके लिये कनिष्ठ कर्तव्य त्यागना पड़ता है सर्वस्व त्यागी बनना पड़ता है तभी फलोंका भी फल खोंका भी ख येयोंका भी ध्येय जे परमात्मा है उसकी प्राप्ति हो ी है उस प्राप्तिके लिये तुकारामजीने कभी न कभी नष्ट होनेवाले सारका त्याग किया तो क्या गल ी की ? सीप फेंककर पारस लेना द्धिमानोंका काम ही है नारायणके लिये गृह सुत दारादि ससारकी अ२ता ममताकी मैल काटकर ही उ होंने ससारको सुवर्ण बना दिया सारमें र्णकी माय जोड़नेवाले ससारको सुवर्ण नहीं बनाते प्रत्युत जो अपने हृदयसम्पुटमें नारायणके चरण जोड़ते हैं उन्हींका ससार वर्ण हो

जाता है उनके असख्य ज मोंके ससार बन्ध टूट जाते हैं और ससार सुखमय हो जात है तुकारामजीने एक ससारीके नाते अपनी को२ पत नहीं रखी य२ चाहे अज्ञ जीव कहा कर पर उनकी अपनी दृष्टिमें और उनके स श दृष्टिवालोंकी दृष्टिमे उनका ससार उनका प्रपञ्च उनका जीवन खमय लाभमय और परम सौभा यमय ही हुअ इस सुख भ और सौभाग्यको अगले अध्यायमें विस्त रसे देखेंगे

जिजामाईको पूर्णबोध

सोतेको जगाना गुमरा२को र पर लाना अपना ख दू रोंको वितरण करना यही सच्चा परोपकार है तुकाराम जीने सस र को जग या उसी ससारमें जिज इ भी अ गयीं पर तु जिज २को खास तौरपर अलग भी तुकारामजीने उपदे करके लोकदृष्टिसे भी अपने कर्तव्यका पालन किया जिजा२के लिये जो उपदे उन्होंने किय उस पूर्णबोध के रह अभग हैं जिजाइ भजन करनेवाले वारकरि ोंके कोलाहलसे झुँझलाकर जैसे कठोर वचन कहा करतीं उसपर तुक रामजी उ हें बड़ी शान्तिसे समझाते हमारे घर क्यों को२ आने लगा सब ो अपना अपन काम काज लग हुआ है कौन ऐसा निठल्ला बैठ है जो बिना किसी मतलबके हमारे यहा आया करे जो कोई भी आत है वह भगवान्के प्रे से आता है भगवान्के लिये ही अखि ब्रह्मा अपन हो ता है भक्तोंके लिये जो तुम ऐसी कठोर बातें कहती ो सो न क र मृदु वचन हो तो २समें तुम् ारा क्या खच हो जायगा अ दर मानके साथ बु निसे प्रेमवश इ ने लोग आते हैं कि जिनक को२ हिसाब नहीं

पूर्णबोध का प ला अभग कु कूट सा है खेतमें जो उपज होती है उसमें हमारे यारे चौ री पा डुरङ्ग हमें बाँट देते हैं गानका अभी ७ रुपये देन बाकी है सो वह माग रहे हैं अबत रुपये हो दिये हैं घरमें हडा बतन हैं गोठमें गाय बैल हैं यही ए ज दि ाते हा

निमें खाटपर बैठे हुए हैं मैंने कहा भाई ले लो ए बारमें ही सब हना चुका लो इस तर मैं उनसे उल पड़ा आप चुप हो गये

भाव यह है कि इस रीररूपी खेतके प्रभु पाण्डुरङ्ग हैं उन्होंने नर तन हमें बर्तनेके लिये दिया है वह हमें भूखों नहीं मरने दे इस खे का गान ८ रुपये हैं इसमेंसे म अबतक १ दे चुके हैं बाकी हैं सो यह माँग रहे हैं अर्थात् यह रीर ८ तत्त्वोंक है ये ही ८ तत्त्व उन्हें गिना देने होंगे इनमेंसे ५ कर्मेन्द्रिय और ५ ानेन्द्रिय हैं उ हें तो मैंने भजनमें लगा दिया है इस तरह ८ गानके दे चुके अब बाकीका तका । है ाटपर बैठे हैं य ने हृदयमें विराज रहे हैं

श्रीमद्भगवद्गीतामें तत्त्वसख्या (अ १३ श्लोक ५ ६) २६ दी हुई है श्रीमद्भागवतमें (स्क ध ११ अ २२) इन त्त्वोंकी सख्याका कई कारसे हिसाब लगाकर ४ से लेकर २८ तक भिन्न भिन्न सख्याएँ बतायी गयी हैं श्रीमद्दासबोधमें (दशक । समास ८ ९) तत्त्वोंकी सख्या ८२ बतायी है जो कारण और महाकारण देहको अलग रखनेसे ८ ही रह जाती है अ त करण ५ प्राण ५ ज्ञानेन्द्रिय ५ कर्मेन्द्रिय ५ और विषय ५ इस प्रकार २५ तत्त्व हुए इन २५ के दो दो भेद २५ सूक्ष्म और २५ स्थू इस प्रकार ५ हुए इनमें स्थू और सूक्ष्म देह मिल नेसे ५२ हुए इन ५२ में ४ स्थ न ४ अवस्थाए ४ अभिम नी ४ भोग ४ ात्राएँ ४ गुण और ४ क्ति याने २८ तत्त्व ये मि ानेसे तत्त्वोंकी कुल ख्या ८ हुई ८ तत्त्व इस प्रकार गिना देनेसे एको वि णुर्महद् भूतम् की प्रतीति और वैकुण्ठकी प्राप्ति होती है

देहूमें तुकारामजीके अभगोंके एक पुराने सग्रहमें इस अभगका आशय यों सूचित किया है उपजा=स्वरूप खेत=भक्ति चार

खान चार वाणीके जीवोंको बाँट अधिकार चौधरी स्थूल सूक्ष्म कारण और महाकारण इन चार देहोंके धारक चतुधर चौधरी प्यारे पुरुषोत्तम पाण्डुरङ्ग सगुण सत्तर रुपय सत्तर तत्त्व दस दस प्राण दिये सगुण भक्तिके समर्पित किये हडा अहङ्कार बतन पञ्चमहाभूत गाय बैल इन्द्रियाँ दाल न हृदय खाट पयङ्क ब मैं उल पड़ तब आप चुप हो गये दस प्राण स र्पित कर दिये ब ीवभ व न हुआ अपने ि त्वकी प्रतीति हुई ब तुकार म भगवान्से ड़ पड़े और कहने गे कि मेरा सब ि साब साफ हो गया अ मेरे जिम्मे कुछ ब की न रहा इस प्रकार ८ तत्त्व झड गये

इस अभगमें पञ्चीकरण सूचित किया है सद्गुरु जब ि ष्यको उपदेश करते हैं त्र पहले एका तमें पञ्चीकरण सम ा देते हैं तुकाराम जीने एकान्तमें जि जा ्को पञ्चीकरण समझा दिया होगा इससे जिजाइका अधिकार भी सूचि होता है तुकारामजी आगे कहते हैं

विवेकसे य सारा एकछत्र साम्राज्य है एक ही सिंहासनासीन म्राट् हैं उनके सिवा और कौन मुझे अपनी पीठपर बैठा सकता है

भगवान्के सिवा और है ही कौन इनका खे मैंने जोता बोया असामी बनकर रह और अब य मेरी जानको लग गये इनका पावना इसी देहमें रहकर चुका देनेका मैंने निश्चय कर ि या है अच्छे मालिक मिले ऐसे रि हैं कि सब कुछ हर लेते हैं इसी ि ये कोई इनके पा मारे भयके फटकतातक नहीं कितनोंको इ होंने लूट लिया और कितनों को तोंकी जमानतपर छोड़ रखा है इनकी निठुरता देखकर लोग इनके नामपर हसते हैं य० सर्वस्व छीन लेते हैं पर यह बात है वि सर्वस्व ीनकर वैकुण्ठपद देते ० हम इनके चगुलमें खूब फँसे इ प्रकार बोध कराते हुए जिजाइसे तुकारामजी कहते हैं कि मेरे विचारमें तुम अपना विचार मिला दो तो मेरा तु ारा विरो मिट ाय भगवान्

ो मेरा अन्तरङ्ग स्नेह हो चुका है यह मेरे करनेसे नहीं हुआ उन्हींके आदेशसे हुआ है तुम्हारे लिये यही उपदे है

च्चेके लिये यह हो और वह हो यह हवस छोड़ दो जिन्होंने इसे दिया उन्हींका यह है वही इसकी देख भाल करेंगे अपन ग । छुड़ा ो गर्भवासकी यातनाओंसे बचो

वासना छोड़ दो माया ोड़नेकी द्धि छोड़ दो वासनासे ही यमदूत गलेमें अपना फदा डालते हैं उनकी मार बड़ी भयङ्कर है स्मरण करनेमात्रसे मेरा तो कलेजा काँपने गता है यदि तुम्हें मेरी चाह हो ो पने चित्तको बड़ा रो चित्तको ऐसा उदार बनाओ कि

सज्जनोंका सङ्ग तुम्हारे अनुकूल पड़े ससारमें तुम्हारी कीर्ति बढ़े यह कहनेके लिये तैयार हो जाओ कि मेरे गाय बैल मर गये बासन जन चोर चुरा ले गये और ब चे तो मेरे पैदा ही नहीं हुए आस छोड़ हृदयको व स बना । इस क्षुद्र सुखपर थूक दो अक्षय परमानन्द लाभ रो तुका कहता है भव बन्धनोंके टूटनेसे बड़े भारी क परित्राण होगा

मैं ो ल्द ही वैकुण्ठधामको जानेवाला हूँ तुम भी मेरे साथ चलो हाँ हम तुम आदर पायेंगे घर द्वारपर तुलसीपत्र रखकर ब्राह्मणों को दान करके इस जजालसे निकल आओ विचार लो अच्छी तरह देख ो मैं मेरा का सर्वथा त्याग करो भूख प्यास द्रव्यादि लोभ मत्व इन सबसे अपने आपको छुड़ा लो और ऐसी सुखी बनो जैसा मैं हूँ

मेरी भूख प्यास कैसी स्थिर है अस्थिर मन भी ाँ का तहाँ ही स्थिर होकर बैठा है

गुरु कृपासे भगवान्‌ने मुझसे ो कहलवाया वही मैं तुमसे कह रहा हू

चमुच ी भगवान्‌ने मुझे अगीकृत कर लिया है अब और कुछ

विचारनेकी ही कहाँ र ी तुम्हारे लि ये अब ही उपदेश है कि टिबद्ध होकर बलवती बनो

कार महार ने जिजा ईको यही अन्तिम उपदेश किया यह उपदेश था नहीं हुआ सिद्धोंकी ाणी भला वृथा कैसे हो सकती है जिजा ाईका आचर शुद्ध नि कल पवित्र और पातिव्रत धर्मानुकूल । पतिको भोजन कराये बिना उ होंने कभी भोजन नहीं किया ौवि व्यवहारमें पतिसे उनकी नहीं पटती थी तथापि पतिके प्रति उनके प्रेमक ोत अत्यन्त शुद्ध और निरन्तर था तुकारामजीको वह प्राणोंसे भी अधि प्यार करती थीं उनका पतिप्रेम अत्यन्त नि कपट और निम था तुकारामजीके उपदे ोंका परिणाम उनके ऊपर बहुत ही अच्छा हुआ दूसरे ही दिन उ होंने अपना सब घर द्वार ब्राह्मणको दान कर दिया और सासारिक बन्धनोंसे मुक्त हो गयीं तुकाराम ऐसे महात्माका सत्स अकारथ ही कैसे जाता तुकाराम भी भगवान्से खूब लड़े झगड़े पर उनका भगवत्-प्रेम ज्व त था ऐसी ही बात जिजामाईकी भी समझनी चाहिये प्रेमके बिना गड़ा नहीं होता झगड़ेकी सचाईसे निष्कपट प्रेम आचरण और सच्ची निष्ठ ही प्रक होती है

५ स तान

जिजामाईके काशी भागीरथी और गङ्गा ये तीन कन्याएँ और महादेव विठ्ठल और नारायण ये तीन पुत्र हुए इनमें काशी सबसे बड़ी ीं और नारायण सबसे छोटे तुकारामजीके महाप्रस्थानके समय जिजामाई गभव ी थीं अर्थात् तुकारामजीके प्रयाणके पश्चात् इनका जन्म हुआ तुकारामजीने अपने इन पुत्रको इन आँखोंसे नहीं देखा और इन्होंने भी अपने पिताको नहीं देखा सबसे बड़ी काशी उनसे छोटे मह देव इनके ादकी भागीरथी ब विठ्ठ विठ्ठलसे छोटी गङ्गा और गङ्गासे छोटे नाराय नार यणका जन्म हुआ उस समय गङ्गा बहु ोटी थीं उन

सम्हालनेके लिये धाई नामकी एक दासी रखी गयी थी। कारामजी जब भण्डारा या भामनाथ प तपर पहुँचकर भगवान्के भजनमें तल्लीन हो जाते ब उ हें भूख यासकी न रहती पर जिजामाई उन्हें भोजन कराये बिना स्वय कभी न खाती थीं कभी तो इ स्वय भोजन लिये वन जग में उन्हें ढूँढती फिरतीं और कभी का ीको भेज देतीं महादेव और विठ्ठलका चित्त प्राय खे कूदमें ही लगा रहता इससे जिजामाईका कहना वे सदा ानते ही हों ऐसा नहीं था क याओंके विवाह आदि बड़े गरीबी गसे हुए कन्याओंके लिये तुकारामजीने वर भी ऐसे ढूँढे वि वर ढूँढने घरसे ों ही बाहर निकले थोड़ी दूर जाकर देखा रास्तेमें कुछ बाल खेल रहे हैं वहीं ड़े हो गये उनमें अपनी जातिके दो बालकोंको उन्होंने देखा उ हींको घर लिवा ाये और वधू-वरको लदीसे रँगकर विवाह कर दिया जँवाइयोंकी न तो कोई बारात सजी न दावत दी गयी कोई न र भट की गयी और न रीसने रूठनेका ही कोई अभिनय हुआ दूधके साथ भा खिला दिया और प मृ पान करा दिया उन बालकोंके माता पिता म्पन्न थे और तुकारामजीकी ओर उनके भक्त लोग भी तैयार थे इसलिये पीछेसे चार दिन विवाहका मङ्गलोत्सव होत रहा इससे जिजामाईको कु सन्तोष हुआ तुकारामजीके ये जँवाई मोसे गाडे और म्बुलकर घरानेके थे कारामजीकी मझली कन्या भागीरथी बड़ी पितृभक्त और भगवद्भक्त थी तुकारामजीने प्रयाणके पश्चात् जिन लोगोंको दर्शन दिये उनमें एक भागीरथी भी हैं तुकारामजीके तीनों पुत्रोंमें नारायणबोवा अच्छे पुरुषार्थी निकले देहू आदि गाँ इन्होंने ही अर्जि विये देहूके पाटी इगलेकी कन्या इन्हें याही थीं नारायणबोवाके ात् भी कार जीके व जोंके साथ देहूके पाटी इगलोंका सम्बन्ध हो रहा इ देहूमें प्राय रा म राजके ोंके ही घर

पन्द्रहवाँ अध्याय

ध यता और प्रयाण

मनकी स्थिरतासे जो स्थिर हो जाता है भक्तिकी भावनासे जिसका अन्त करण भर जाता है और योगशक्तिसे सुसज्जित होकर ो ठिकाने आ जाता है केवल परब्रह्म परम पुरुष कहानेवाला मेरा निजधाम होकर रहता है (नेश्वरी अ ९६ ९९)

जिस स्वरूपको प्राप्त होनेसे नीचे गिरना नहीं होता व॰ श्रीकृ ण स्वरूप है श्रीकृष्णकी कीर्ि गाते गाते भक्त स्वय ही श्रीकृष्णरूप हो जाते हैं (नाथभाग १)

१ परमार्थ-सुख

परमार्थसाधन करना होता है परम सुखके लिये तुकारामजीने प्रपञ्चको तिला ि देकर परमार्थसा न किया अर्थात् स्व९र क्षणिक सुखका त्याग करके अखण्ड अविना ी ख लाभ किया पञ्चका अथ है पाँच विषयोंका सङ्घात ब्द स्पर्श रूप रस गन्धसे ख प्रा करनेकी इच्छ करना और उसके पीछे भटकते फिरना सब जीव प्रपञ्ची हैं और इसीसे दुखी हैं नरतन सब तनोंमें सबसे श्रे रतन (रत्न) है ब खोंमें जो सर्वोत्तम सुख है जिसके मिलनेसे अन्य किसी खकी इच्छा नहीं र ाती

जिस सुखका कभी क्षय नहा होता जिसकी अन्य किसी सुखसे उपमा
नहीं दी जा सकती व परम ख इसी नर नमें ही प्रा किया सकता
है नरसे नारायण हुआ जा सकता है र्सा दान दपदवीको प्र त कि
सकत है इ मनु यदेहके द्वारा चारों अथ धर्म अर्थ काम और
मोक्ष जोडे ज सकते हैं इनमें अथ और काम अस्थिर और क्षणभङ्गुर
हैं नसे परे धम है और धमसे भी परे मोक्ष है वही परम अर्थ पर
पुरुषार्थ है चतुवग । वही परम ध्येय है यही सक दु खविध्वसकारी
महान द है प्रत्येक जीव खके लिये टपटाता रहता है प्रपञ्ची जीवोंके
समान पारम र्थिक ी भी सुखके ही पीछे दौड़ रहे हैं अन्तर इ ना ही
है कि कोई विषयको ही खका स्रोत समझकर उसीमें गोते खा रहे
और कोई विषयोंसे परे जो निर्विषय आन द है उसमें गोते लग रहे हैं
विषय सुख पूण सुख नहीं है इसलिये पारमार्थिक इस सुखको त्याग कर
अथवा इससे उदासीन र कर अख ड सुखकी स धनामें लगे रहते हैं
देहेन्द्रियविषय सन्निकर्षसे होनेवाले सुखसे ऊबकर वे देहातीत इन्द्रियाती
विषयाती सुखके पीछे पड जाते हैं यह परमाथ माग ऐसा है कि सपर
पैर र ते ही परम सुखका रसास्वादन आरम्भ हो जाता है स पूर्ण मार्ग
सुख नुभवकी वृद्धिक ही मार्ग है पद पदपर अधिकाधिक आनन्द है
परमाथके सम्ब धमें बहुतोंकी बड़ी विचित्र धारण ए हो जा ी हैं उन
चित्तमें यह बात बैठ जा ी है कि परमाथ सस रका रोन है परमाथसा
करना रोते हुए चलना और ऐसी जगह पहुँचना है जहाँ मिट जानेके सिवा
और कुछ हाथ नहीं आता पर य सम सूर्यके प्रका को आँख बद
करके घोर अन्धकार मान लेनेकी सी बा है यथार्थमें परमार्थ रोना नहीं
रोनेको हसाना है मरना मिट जाना नहीं अजर अमर पद लाभ करन है
दु खके आँसू न ीं आपूयमाण आनन्द समुद्र है ीवका वास्तविक हित,
वा विक ाभ वास्तविक न्ति और माधान सीमें है इसी ये तो

इसे पर र्थ परम सुख परम पुरुषार्थ कहते पारमार्थिक लोग पागल
नादान दीव ने थ पर हाथ रके बैठ रहनेवाले आलसी कापुरुष
नियासे बेखबर और अन्धे नहीं होते जि ससारमें म रहते हैं उसे वे
ही अच्छी तरहसे देखते और स ते हैं सदा सावधान रहते अज्ञान और
मोहका वीर से सा ना करते एक क्षण भी उद्योगसे खाली नहीं जाने
देते लाभ हानिका हिसाब ठीक ठीक रखते हैं हानिसे बचते और भ
उठाते परमार्थके साधन भिन्न भिन्न हो सकते हैं ध्येयसम्ब धी श्रद्धा
और विश्वास अथ । कल्पनाके प्रकार भिन्न भिन्न हो सकते हैं पर सबका
सयोग उसी एक सकलदु ख वियोगरूप अखण्ड खके मह योगमें ही होता
है तुकारामजीने इस परमार्थ मागपर से पैर रखा तबसे उनका वैकु ठ
पदलाभपर्य पूर्ण चरित्र इसी परम खकी बढती हुई बाढका ही
इतिहास है हाँ इस बाढकी द हो जाती है घट बढकी भाषा ही जहाँ
हीं र जाती लाभकी परिपूर्णता और सुखकी ओ प्रोतताका अनुभ
होता है वही मोक्ष है वही वैकु ठधाम है विषयोंका सम्बन्ध जहाँ दृढता
पूर्वक विच्छिन्न ो गय तहाँ आन द सागर उमड़ने लगता है और ऐसी
बाढ बढी च ी आती है कि आन दकी उस बाढमें अपूर्व आनन्द तरङ्गोंपर
ाचता सा बहता हुआ उस पार जा लगता है जहाँ आर है न प र ओर
है न छोर वही कृतकृत्यताकी परमान द पदवी है श्रीतुक राम इ
परमानन्द पदवीको प्राप्त हुए और तीनों लोकोंमें य हुए उन
लौकि जीवन नाना दु ों और यातनाओंमें बीता उनके प्रपञ्चका दृश
बड़ा ही दु स र पर बा दृष्टि है बहिर्मुखीन क्ष्यहीन मो ट का
अभिप्रा है क्ष्यपर ि र दृष्टिका नहीं इन दु सह दु खों और
नाओंसे घिरे हुए कारामजी क्ष्य क्या था वि स क्ष्यपर उनकी
दृष्टि गी थी कि ओर व इन दु खों और यातनाओंमेंसे होकर जा रहे
थे और कैसे उन्होंने अप ी परिष्कृत कर लिया हा पहुँचे और

पाया उन्होंने अपना लक्ष्य पा लिया दु खों और यातनाओंके भीषण रूपको देखकर वह डर नहीं गये परिस्थिति के चक्रके पीछे चक्कर ते चक्कर काटते भूलते भटकते ही नहीं रह गये दु खों और यातनाओंके घिर ो ोड़कर परिस्थितिको भेद र अपने क्ष्यपर गी दृष्टिसे निश्चि इष्टमार्ग पर चलते गये और क्ष्यपर पहुँच गये उनकी यात्रा पूरी हुई साधना फल हुई सम्पूर्ण सुख सम्पूर्ण आनन्द स पूण ज्ञान म्पूण भक्ति सभी ो मि गय सर्वेश्वर श्रीपाण्डुरङ्ग स्वय ही निजाङ्ग हे गये भवाम्बुधिके पार उतर ये कृतकृत हो ये न्य हो गये उस कृतकृत्य और धन्य के साधनपथपर च ते हुए था क्रमसे साध्यको सा ते हुए ो जो आनन्द उन्होंने लाभ किया उसके उद्गार हमलोग इस थमें नते ही रहे हैं अब उस अनिर्वचनीय रसका भी कु आस्वादन कर सकें तो कर लें जो अनिर्वचनीय होनेपर भी तुकारामजीकी दयासे उनके वचनोंसे टपक रहा है सब साधनोंकी परिसमाप्ति िस प्र ार अ नामस्मरणमें जाकर हुई यह हम ोग पहले देख चुके हैं नाम और नामी गुणी और निगुण शिव और जीव इनकी एकरूपताके आनन्दमें निम तुकाराम प्रे से नाचते हैं गाते हैं गाते गाते उसीमें मि जाते हैं

२ आत्मतृप्तिकी रें

वहाँ स न सम्प्रदाय भगवान् और भक्त वर्ण पाप पुण्य धर्माधम सब एकमें मि जाते हैं इसीके लिये सारा अट्टहास था ब त्न सफल हुए विश्रान्ति मि ली तृष्णाकी दौड़ ाप्त हुई

लज्जा भय चिन्ता कुछ भी न र रे सुख आकर पैरोंपर लोटपोट करने गे

भक्तिप्रेमम रीसे हृदय भर गया उससे चि को आनन्द आनन्द

मिलने गा ीविट्ठलने अज्ञानका पटल पों उससे जगत्
नन्दसे भर या

ससारकी मृति विस्मृति ोकर पीछे ही रह गयी चित्त लग गया श्रीरङ्गकी ओर उस म धुरीका जितना पान करो उसकी प्यास उतनी ही बनी रहती है उस प्रेम मिलनमें जितना मिलो उस मिलनकी रुचि उतनी ी बढ ी है पाण्डुरङ्गमें वह कभी अघाती नहीं जी कभी ऊबता न ीं इन्द्रियोंकी लालसा तृप्त हो ती है पर चि तन सदा बना ी रहता है का कहता है पेट भर जाता है पर उसकी भूख बनी रहती है यह ऐसा है कि इसकी कोइ उपमा नहीं कल्पनाकी यहाँतक पहुँच ही नहीं वह सुन्दर मधुर श्रीमुख प्रत्यक्ष सुषम म धुरी ही है उसे देखनेके स ोक मोह दु ख न ो जाते हैं

सगुण निर्गुण एकरस है वह चिदानन्द है उसीमें चित्त डू रहता है मन अपनी सारी वृत्तियोंके ाथ उ ीमें डूब ाता है देहमें देहभ वकी सुधि नहीं रहती

श्रीरङ्गकी ओर चित्त गा उनके चिन्तनका सुख ऐसा है कि उससे भी ी नहीं ऊबता उससे कभी तृप्ति नहीं होती औरकी इच्छा नी ही रहती है अब ोई ससार चिन्ता नहीं रही कलिका का भ भा गया मोह दु ख ोक सब हवा हो गये अब ो केवल एक श्रीहरि ही हैं अदर भी वही हैं बाहर भी वही हैं (तत्र को मोह क शोक एकत्व मनुपश्यत ई ावास्य उपनिषद्में इस आन दका वर्णन किया गया है)

तुक रामजीके बिरहिन के २५ अभग हैं अध्य त्मका रग शृङ्गार ी भाषामें कोई देखना चाहे तो इन अभगोंको अवश्य देखे इस प्रमस्वरूप पति को ोड़ दिया उ से मेरी स तृ न ो पायी इ लिये

ने परपुरुष से सहवा वि या य भेद लोगोंपर प्रकट हो इससे लोग मु स ने गे मैं तो परपुरुषमें ही रत हो गयी उ ीमें रंग गयी और अब बसे यह कहे देती हूँ कि इस व्यभिचारको मैं त्रिकालमें भी न छोड़ूँगी इस रँगमें तुकाराम ीत्व स्वीकर कर कु वा ि लास कर गये हैं ब्रह्मक स्वरूप न ी न ष ढो न पुमान् न ज तु जैसा हैं और उन्हींसे तुकारामजीका यह सख्य और तादात्म्य है इसलि ये कारामजीने यह मनोविनोद किया है इन अभगोंमें स्वानुभवका प्रसाद भर हुआ है

लोग मुझे छिनार कहकर बिरादरीके बाहर भले ही निका द पर यह बनवारी तो मुझे एक क्षण भी अपनेसे अ ग नहीं करता लोक लाज तो उतारकर मैंने खूँटीपर टाँग दी है उससे उदास होकर बैठी हूँ मुझे अब अपने जीका ही कोई डर नहीं रहा और न किसीसे कोइ आस लग ये बैठी हूँ मैं तो उसीको रात दिन पास बैठाये रखना चाहती हूँ उसके बिना एक क्ष ा भी मुझसे नहीं रहा जाता लोग अब मेरा नाम छोड़ दें सम लें कि मैं मर गयी तुकिया अब अन तके पास पड़ी रहती है इसीमें उसे ख मिलता है यही उसका नेम है गोविन्दके पास बैठ गयी अब मैं पीछे फिरनेवाली नहीं श्यामसलोने परब्रह्मको मैंने वर लिया अब उनकी पटरानी होकर बैठी हूँ अब कुछ देखना सुनना नाना नहीं चाहती चित्तमें अकेले चितचोर आकर बैठ गये हैं बलीको पाकर हम बलवती बन बैठी हैं स रे ससारपर अपना अधिक र मावेंगी पलभर पीड़ा सह ली अब अपुरन्त निज न द छोड़ दि या है अब हँसेंगी रूठेंगी और अपुरन्त अन्तर्मधुरिमाको बढावगी सेवा सुखसे विनोद वचन कह ी हैं कि हम और कोई नहीं के एक नारायण हैं तुका कहता है कि अब म द्वन्द्वके पर उठ आयी हैं स्वच्छन्द ग्व ि नोंके साथ च रही हैं

अखि भूतोंका सन्तर्पण किया सारी भूमि दान कर दी दिन और रात ए प का बन गये जप तप ीर्थ ोग याग सब कर्म यथासा ो चुके फ अनन्तके समपण कर दिये तुक कहता है अ अबोल ो ोलत ँ न न वचनमें ो अब मैं नहीं र गया

भगवान् सामने आ गये शुभ अशुभकी सारी थकावट दूर हो गयी उन्होंने केवल क्री । कौतुकके ि ये जीव ि वकी गुड़ियाँ बन यी हैं वहाँ इन ोगोंका कहाँ पता है यह सारा आभ स अनित्य है अर्थात् शुभाशुभ कल्पन ए वि ीन हो गयीं जीव और शि व भगवान् और भक्त एक ही हैं उनमें भेद नहीं भेद तो केवल एक कौतुक था सात ो और चौद भुवन आभासमात्र र गये एक हरिको ोड़ और कु भी न ी है णधर्म उसका खे है एककी समूची बुनावट है उसमें भि और अभि । वेदपुरुष नारायणने यही निर्णय नाया है

क को सादरसका सौरस प्राप्त हुआ चरणोंके मीप नि ास मिला इतना निकट वि कु भेद ही न रह गया

अब मैं खस्वरूप हूँ दु खा कारी यह ख स द्र कहाँसे कैसे उमड़ आय भेदकी भावन जड़से ाती रही

तेरा मेर कैसा है जैसे सागरमें रङ्ग दोनोंमें हैं ए ही विठ्ठल श्रीपण्ढरिनाथ तन्तुपट जैसा ए है विश्वमें वैसा ी तुका व्यापक है लवण में मिल दो ो भेद क्या र जाता है वैसा ही तेरे भीतर स र ोकर मैं समा गय हूँ आग और पूर मिलते हैं ो क्या का अलग र जाता है क कहता है वैसे ही मेरी तेरी ज्योति ए है ीजको भू कर लाई ी अब जनन मरण कहाँ आकारको अ ठौर ँ दे जो वान् गयी चीनीसे फिर ई नहीं उप

मेरा गर्भवा कै। है सार योग है घटमें पाण्डुर

बी भूजकर जब लाई बना ी ब वह बोनेके काम नहीं अ ती उसी प्रकार तुकाराम कहते हैं कि हमारा कर्म ज्ञानानिसे द घ हो चुका है इसलिये मारा म मरण अब नहीं हो सकता इ से चीनी नती है पर चीनी होकर ईखपनेको वह नहीं ौट सकती उसी प्रकार देहका आश्रय करके हम ब्रह्मस्थितिमें आ गये ब यह ब्रह्मस्थिति ौट कर देह नहीं बन सकती घट घटमें भगवान् हैं और हम भी तद्रूप हैं मारी देह क भगवान् बन गयी है अब नाशवान् रीरसे ह ारा कोई म्बन्ध नहीं रहा

देहभाव प्रेतभाव हो गया' सब देहधम लय हो गये काम क्रोधादि अनाश्रित होकर फूट फूटकर रो रहे हैं और यमरा आहें भर रहे हैं शरीर वैराग्यकी चितापर ज्ञानाग्निसे ज रहा है देह घटको भगवान्के चारों ओर घुमाकर उनके चरणोंके समीप फोड़ डाला और मह वाक्य ध्वनि करके बम बमका घोष किया कुल और नामरूपको तिलाञ्जलि दी तुकाराम कहते हैं यह रीर जिनक था उन्हींको (पञ्चमहाभूतोंको) ौंपकर मैं निश्चिन्त हो गया

अपने थों अपनी देहमें आग लगा दी पाञ्चभौतिक देहको ब्रह्मबोधकी आगमें जला डाला ज्ञानाग्निसे दहकती हुई चितापर अमृत सञ्जीवनी छि डककर भूमिको । किया घर कोड़ ाला उसी ण सब कम समाप्त हो गये अब केव श्रीहरिके नामसे ही नाता रह गया है तुका कहता है अब आनन्द ही आनन्द है सर्वत्र गोवि द हैं जि धर देखो उ र गोवि द ही हैं

पिण्डदान इ ी पि डको देकर कर दिया इस देहपिण्डको ही दान कर दिया ौर पिण की मू त्रयी और त्रिगुणकी ति । लि दी

व विष्णुमयं जगत् का रहस्य खु जानेसे सम्पूर्ण सव्यापसव्य मैं समाप्त हो गया तुका कहता है सबका ऋण उतार दिया अब एक र सबको अन्तिम नमस्कार करत हूँ

अपनी मृत्यु अपनी आँखों देख ली उस आनन्दका क्या कहना है तीनों भुवन आनन्दसे भर गये सर्वात्मभावसे उस आन दको लूटा जनन मरणके अशौचसे अपने अ पेके स ोचसे मैं निवृत्त हो गया

इस प्रकार तुका नारायणस्वरूप हुए सदे वैकुण्ठ जानेका नि ोनेसे हो सक । है उ हें य॰ खय ल पड़ हो कि मेरे चले ।निके पीछे मेरा क्रिया कर्म को॰ न कर पायेगा इसलिये ।ते ।ी ही उन्होंने अपना सारा क्रिया कर्म स्वय ।ी कर डाला और सम्पूर्ण कमबन्धसे मुक्त हो ि ये विश्व को कँपानेवाले क ि कालको भी उ होंने मात किया विद्यय मृत मश्नुते मृत्यो स मृत्युम प्नोति इत्यादि उपनिषद्वचनोंके अनुसार कोबाराय मृत्युको मारकर स्वय ।ीवित रहे

निरञ्जनमें बाँध हमने अपना घर दृश्य विश्वका मायाका (अञ्जन) जहाँ कोई स्पर्शतक नहीं उस निरञ्जनमें मने अखण निवा किय है अहङ्कारकी छूत छूट गयी और अब शुद्ध बुद्ध निराभास परमात रसमें समरस होकर रहते हैं

पाण्डुरङ्गने ही करी कृपा पूर्ण पा डुरङ्गका ही य॰ कृपाप्रसाद है मेरी विठामा॰ मैयाने मुझे निजरूपके पालनेमें पौढा दिया है और अपने चेके ति ये अना॰त ध्वनिसे गान गा रही है

रक्त श्वेत कृ ण पीत प्रभ भिन्न
चि मय अजन अँ ियन आँजा १
तेही अजन कारणे दिव्य ष्टि पायी ।
कल्पना बिसरी द्वैतद्वैत टेक

देशकालवस्तु भेद सब नाशा
आत्मा अविनाशा विश्वाकार २
कहाँ था प्रपञ्च य है पर ।
अह सोऽह जाना जाना । ३
तत्त्वमसि विद्या ब्रह्मानद साग ।
साहि तो निजाग तुका भये ४

रक्त (रज) श्वे (सत्त्व) कृ ण (तम) और पीत इन गुण शसे परे ो चिन्मय अञ्जन है व० श्रीगुरुने मेरे नेत्रोंमें गाया उससे मेरी दृष्टि दिव्य हो गयी द्वैत और अद्वैतकी भेदकल्पना ाती रही और निर्विकल्प ब्रह्मस्थिति प्राप्त हुई दे गत वस्तुगत कालग भेद न हो गये एक अविना ी विश्व कार आत्मा प्रत्यक्ष हुआ य० सम में आ गया कि प्रप ो कहीं था ही नहीं केवल एक पर ही है ि ए ो गये तुका स रीर ह्म हो गये

उछरत सिंधु सरित हि मिलत ।
आप ही खेलत आप ही सों १
मध्य परी सारी उप धि घनेरी ।
मेरे तेरे हरी बीच खड़ी टेक
घट मठ आये आकासके ये ।
गिर जो गिर ये उत ही त २
तुका कहे बीजै बीज दिखराये ।
फूल पा आये अकारथ ३

मुद्र भाप बनकर ऊपर ाता और मेघरूपसे वृष्टि करके नदीमें आकर मिलता है और फिर नदी प्रवाहके साथ समुद्रमें जा मिल ा है इस ार मुद्र अ प ी अपनेसे खे है ऐसा ही सम्बन्ध हे भगवन्

हमारे आपके बीच है बीचमें जो नाम रूपादि उपाधि है व्यथ है मुण्डकोपनिषद्में है

स्यन्दमाना समुद्रे

च्छन्ति मरूपे विहाय

यही दृष्टान्त इस अभगमें स्पष्ट हुआ है हाँसे श्रुति ो ी वहींसे तुकारामकी गिरा गिरी है इससे उनकी व णीको श्रुतिमर प्राप्त हुअ है

क्षणिक ससार-सुखको तिलाञ्जलि देकर तुकारामजीने जो अ अक्षय परमात्म ख भोग किया उसका आस्वादन वे ी कर सकते जो उसी भूमिकापर हों यहाँ केवल दिग्दर्शनमात्र करनेका प्रयास कि है इसमें ान और उपासना एक हो गयी है य॰ केवल द्वै नहीं है केवल अद्वैत भी नहीं है यह अद्वैतभक्ति मुक्तिसे परेकी भक्ति अभेदभक्ति है यह अभेदभक्ति ही भागवतधर्मका रहस्य है इसका प॰ले विवेचन किया चुका है उसकी प्रतीति उपस्थित प्रसङ्गसे पाठकोंको ो सकेगी अखिल आकारको कालने कवलित किया है पर नामको क रामने अविनाशी कहा है इससे भी यह स्प है कि ज्ञानके पश्चात् प्रेमाभक्तिका आनन्द बढता ही जाता है व ी भक्ति वही ज्ञान एक वि ही जान यह ज्ञानोत्तर भक्तिका मर्म है सगुण निगुणरूप ो हरि है उन मु एक (श्रीहरि) के बिना उसके ि ये य॰ सारा जगत् और वह स्वय भी कुछ नहीं है ऐसे भक्तकी सहज स्थिति ही नभक्ति है उसे ज्ञानी कहिये भक्त कहिये कुछ भी कहिये सुहाता है उसके अध्यात्मरगमें भक्तिका रस होता है और भक्तिके रगमें अध्यात्मर होत है ॐ तत्सदिति सूत्रका सार कृपाके सागर पाण्डुरङ्ग इस प्रकार श्री रिके रास रगमें वलीन हो गये और अ अन्त बहिर ही हो रहे—हरिरू हो गये देहकी ध तो जाती

ैकुण्ठ के स्थानमें ।दुरगं वृ

रही थी अ उनके नका समय उपरि हुआ श्रोताओंका ौभाग्य सिमट चला कारामजीका अवतारकार्य माप्त आ संवत् ६ (के १५ १) का फाल्गुन मास आया तुकारामजीकी वैकु स्थिति अचल हो रही द्वादशीके दिन जिजाबाईको पूर्ण बोध किया कृ णपक्ष (र्थात् पूर्णिमा मासके हिसाबसे चैत कृष्णप की प्रतिपदाकी रात्रिमें गोपा पुर नामक स्थानमें नान्दुरगीके क्षके नीचे कीर्तन करनेके ि ये तुकाराम खड़े हुए कीर्तन आरम्भ हुआ

३

निर्याणके अभग प्रसिद्ध हैं तुकारामजीकी देह ानभक्तियोगसे ब्रह्मरूप ो चुकी थी उन्होंने उस दिन नाम सङ्कीर्तनभरि ी अमृत-वर्षा की प्रेमामृत पानकर सत स नोंके हृदय आनन्दसे भर गये नाम भक्ति उत्कर्ष दिखानेके लिये तुकारामजीका अवतार हआ

ढूँढ़त ही न ने त सों चर चित लीने १
ऐसी रो दयानिधि । दे जन ना कदी २

घोटें सब ार जेते ब्र ज्ञानी य अभग चला ारा कहने गे जो जो ब्रह्मज्ञानी मुक्त तीर्थयात्री दान प कर्म हैं उन सबके मुँहमें नाम सङ्कीतन रसकी मिठास उत्पन्न करूँगा वे ब लार घोटा कर ज्ञानसहित सब साधनोंको कीतन भक्तिके आनन्दके सामने छिपा दूँगा मैं ब चला जाऊँगा तब लोग मेरे धन्यवाद गायेंगे और श्रोता अपने बा बच्चोंसे कहेंगे कि बड़े भाग्य हमारे जो तुका दिखाने

भगवन्नामकी महिमा गाते गाते तुकोबाराय जिस वैकुण्ठसे मृत्युलोकमें आये थे वह वैकुण्ठ व श्रीमहाविष्णु वे सनकादि सत वह सुरऋषि नारद वह वाहने र गरुड़ वह आदिमाया श्रीमहालक्ष्मी वे स

वैकु ठवासी भक्तजन सब नेत्रोंमें समा ये और उन्हीं वह भी न्म ो ये ागतेमें जिसका ध्यान लगा रहत है पलक ग ही वह सामने आ ाता है वैसे ी स रा जीवन जिस ध्यानमें बी ा है वही मृ युसमयमें हृदयमें सम जाता है तुकारामजीके नेत्र जो कुछ देखते थे कान जो कुछ नते थे मन ो कुछ मन था ाणी जो कु ोल ी थी चित्त ो कुछ चिन्तन करता था अदर बाहर जो कुछ भ व भराव था ह स वि लमय था इस ारण प्रयाणक में श्रीवि लके सिवा उनके लिये और ोई गति ी नहीं थी विष्णुस स्रनाममें वैकुण्ठ पुरुष प्राण वैकु ठको म ाविष्णुके नामोंमें गिनाया है उनका ोक भी वैकु ठ ही है सब परम विष्णुभक्त वैकु ठमें ही र ते हैं वैकु ठसे जगत्‌-कल्याणके लिये नीचे मानव ोकमें अ ते हैं और घ कार्य करके पुन नि धामको चले जाते हैं सम्पूर्ण विश्व अव्यक्तसे व्यक्तिमापन्न होता है और फिर अव्यक्तमें ही ज कर लीन ो है ो जहाँसे आता है हाको लौट जाता है तुका वैकु ठसे अ ये जीवनभर वैकुण्ठकी ओर ही ध्यान ग ये रहे और याण भी वैकुण्ठको ही कर ये

हे सनकादि सत आप बड़े कृपाव त हो इतना उपकार हो वि भगवान्‌से मेर नमस्कार कहो और करुण उपजाकर वैकु ठके राणासे यह विनती करो कि तुका हता है वि अब मेरी धि लो और जल्द सवारी भेज दो

यह कहकर तुकारामजीने गरुड़जीसे प्राथना की कि भगवान्‌को शीघ्र ले आओ शेषनागके सामने भी गिड़गिड़ाये कि जाओ हृषीकेशको जगा दो मेरा चित्त उन्हींके आनेकी ओर लगा है माइके जानेकी बाट ोह रहा हूँ अब माँ बाप स्वय ही मु लिवा ले यँगे इसके प त्‌ तुकारा ीके अगपर शुभ चिह्न उद होने लगे मन वैकुण्ठ गमन करनेको उत्कण्ठित हो गया वृत्ति वैकुण्ठकी ओर च ी देहभाव

रहा प्रप की हवा मृत्यु शोकके सङ्गकी दूषित वायु उनके लिये असह्य हो उठी सनकादि त वैकुण्ठमें भगवद्दर्शनके नित्य आनन्दमें निमग्न र ते गरुड से एकनि भक्त जहाँ परिचर्या करनेमें सदा त्पर रहते स क्षात् आदिमाया लक्ष्मी जहाँ अपने कोमल करोंसे भगवान्के कोमलतर चरणोंको दबाती हुई अख ड परमान दमें निवास करती हैं उस शुद्ध सत्त्व पावन दिव्य वैकुण्ठधामको जानेके लिये तुकारामजीका मन अत्य उत्क ठासे फड़फडा र ा था श्रीमह विष्णु तब तुकाको अकेला देख वैकुण्ठसे आ गये भगवान्को और किसीने भी नहीं दे पाया

श्रीहरि आ पहुँचे उनके हाथोंमें शख चक्र सुशोभित थे गरुड़जी फ फडाते हुए बड़े वेगसे दौड़े आये उनके फडात्कारसे नामी नामी ध्वनि निक रही थी भगवान्के मुकुट कु डलोंकी दीप्तिके सामने गभस्तिमान् अस्त हो गये मेघश्याम वर्ण विशा नेत्र दर मधुर चतुर्भुजमूर्ति प्रकाशि त हुई गलेमें वैजयन्तीमाल लटक रही थी पीताम्बर ऐसा दमक र ा था जैसे दसों दि ाएँ जगमगा उठी हों तुका सन्तु हुआ ो घर ही वैकुण्ठपीठ चला आया

यह कहते कहते तुकाराम अ र्धान हो गये उनका रीर फिर किसीने नहीं देखा वह अदृश्य होकर अदृश्यमें मिल गये स रीर वैकुण्ठमें मि गये

तुकाराम महाराजके पुत्र नारायणबोवाने एक लेखमें लिख रखा है कि कोबाराय कीर्तन करते करते अदृश्य हो गये ाथ आया हुआ चिद्रत्न खो गया यह कहकर सब शि य फूट फूटकर रोने लगे वह चैत्र कृष्ण (अमान्त स फाल्गुन कृ ण) द्वितीयाका दिन था जिस दिन काराम महाराज अदृश्य हुए प मीके दिन उनका करताल तम्बूरा और कम्बल मिला पाँच दिन भक्तोंने कीर्तन भजन महोत्सव किया तुका सशरीर वैकुण्ठ गये इसलिये उनका क्रियाकर्म करनेका कुछ प्रयोजन नहीं

रहा यही स्त्रीय य र सप्तमीके दिन रामेश्वर भट्टने दी और इसे सबने शिरोधाय किया बसे तुकाराम महाराज याण महोत्सव देहूमें ति र्ष उ ी मासकी कृ ण २ से ५ तक हुआ करता है

काराम महाराज चले गये तब उनके भक्तोंके ोकका कोई पारावार न रहा उस प्रसङ्गपर का हजीने सैंतीस अभग रचे जिनसे यह कल्पना करते बनती है कि दु खसे उन दय कितना विदीर्ण गया थ

दु खसे हृदय फटा जाता है कण्ठ रुँ गया है हाय हमारे सखा ऐसा क्या अपराध हमने किया कि जो तुम हमें ऐसे ीहण वनमें छोड़कर चले गये ऐसे करुण स्वरसे बच्चे हैं पुकार पुकारकर रो रहे हैं कि रती फटा चाहती है हम सब म्हारे अ थे न इन्हें क्या अपने सङ्ग तुम नहीं ले जा सकते थे तुम जानते हो तुम्हारे सि । दोनों लो ोंमें हमारा को स । नहीं है कान्हा कहता है तुम्हारे वि ोहसे हम सब अनाथ हो गये आओ प्यारे एक बार आकर मि तो जाओ

भक्ति मुक्ति ब्रह्मज्ञान तेरा भाड़में जाय पहले मेरा भाई मुझे दो ऋद्धि सिद्धि मोक्ष सब खूँटीपर टाग दो पहले मेरा भाई मुझे जल्द दो मत ले जाओ अपने वैकु ठको पहले मेरा भाई मुझे जल्द ला दो तुकाभाई कहता है पाण्डुरङ्ग सावधान कहीं ऐस न हो कि तेरे सिर त्या गे

४ देह वै ण्ठ गमन

काराम जो सदे वैकुण्ठको चले गये इससे आधुनिक विद्वानोंके दिमाग चकरा गये हैं चर्चाका चरखा चलाकर अपना अपना विचार भी कर रहे हैं इन विचारोंके ण्डन मण्डनके फेरमें पड़नेका को

प्रयोजन नहीं है पर बहुतोंने मुझसे ह प्रश्न किय है कि तुकाराम सशरीर वैकुण्ठको कैसे चले गये इ प्रश्नका उत्तर भला मैं क्या दे सकता हूँ ऐस तो है नहीं कि मैं वैकु ठसे च । आ रहा हूँ और यहाँ आकर अपने मुमुक्षु पत्रके कार्यालयमें बैठकर यह चरित्र लिख रहा हूँ मैं वैकु ठका आँखों देखा हाल भला कैसे बता सकता हूँ प्रत्यक्षप्रमाण हाँ न हो वहाँ द प्रमाण माना जाता है सो इस प्रसङ्गमें भरपूर है और वही मैं पे कर सकता हूँ और अधिक से अधि क तुकारामजीके सदेह वैकु ठ गमनके विषयमें यही कह सकता हूँ कि इस अद्भुत घटनापर मेरा पूर्ण विश्वास है यह जमाना आधिभौतिक ास्त्रोंके प्रचारका है अर्थात् इन चर्मचक्षुओंसे जो दिखायी दे उसीको मानने दृश्य सृष्टिसे परेकी अदृश्य क्तियोंका अस्तित्व अस्वीकार करने श द प्रमाणको उडा देने और मनमानी बातोंको लिख मारनेका जमाना है सामा य विद्वानोंकी ऐसी ही प्रवृत्ति है ऐसे समयमें जब श्रद्धाकी सुध ही नहीं है धर्मकी धारणा क्तिका सहारा ही छूटा सा जा रहा है तब तुकारामजीके सदेह वैकुण्ठ गमनकी सी विलक्षण बातें बुद्धिको जँचा देना असम्भव ही है और मेरी तो इतनी योग्यता भी नहीं कि इस विषयमें अपने अनुभवकी कोई बात कह कूँ भगवान्की दयासे थोडा स सत्सङ्ग लाभ इस जीवनमें हो गया और सत समागममे कई ऐसी बातें दे नेमें आयीं जिनतक आधिभौतिक विज्ञानकी पहुँच नहीं है ऐसी बातें मैंने देखी हैं बहुतोंने देखी होंगी कृमि कीटसे लेकर मनुष्य देहतक कुछ किञ्चिज्ज्ञत हम ोगाको प्राप्त हुई है पर ऐस कोई ज्ञान हमें न ीं प्र त हुआ है न कोई ऐस प्रमाण हमारे पास है जिससे हम य ह सकें कि मनु ययोनिसे परे देव ग धर्वादि लोक हैं ही नहो मन बुद्धि अ तरात्माका कौन सा निश्चि ज्ञान हमें मिल गया है देहके विषयमें भी मार ज्ञान कितना है स्वप्नसृष्टिकी पहेली तो अभीतक समझी ही नहीं गयी ागृति । किञ्चिज्ज्ञान स्वप्नसृष्टिका कु नहीं सा

न और उसके परे शू य ज्ञान यही तो हमारे ज्ञानकी पूँजी है इतने-से ज्ञान यानी लगभग पूर्ण अज्ञानके बलपर हम अध्यात्मयोग तथा साधु ोंकी स बातोंको झूठ कह देनेका दुस्साहस कर तो यह केवल मुखमस्तीति वक्त यम्' के सिवा और कु नहीं हो सकता यह केवल बान राशी है ऐसे अनधिकारी विद्वान् कहानेवालोंको अ कारी अनुभवी पुरुष फाल्गुने बा का इत्र समझकर ही चुप र ते हैं यूरोप और अमेरिक में मनोविज्ञान तथा अन्य गूढ विज्ञानोंकी खोज नवीन रीतिसे आजकल करनेका प्रय हो रहा है अध्यात्मज्ञानका यह केवल श्रीगणे सा कता है भारतवर्ष दे अध्यात्म ानकी खानि है न जाने कितनी ताब्दियोंसे यहाँ इस गूढ ज्ञान विज्ञानका अध्ययन अध्यापन ही या अनुभव और आनन्द ाय हुआ है कितने प्रत्यक्षद ीं महात्मा हो गये हैं उसकी कोई गणन नहीं कारामजी इसी देहमें सी देहके साथ कैसे वैकुण्ठ ो प्राप्त हुए वैकु ठ क्या है और कहाँ है वहाँ कोई कैसे पहुँचत है इत्यादि बातोंका ज्ञ न वैसे ही स्व नुभवसम्प न पुरु बता कते हैं कि जिनकी तुकारामजीकी सी पहुँच हो गणितकी पहेलियाँ गणितज्ञ ही स सक है मोट ढोनेवाला बेचारा उ हें क्या सम ? वह यदि मोट ढोनेको ही गणितक सम्पूर्ण ान मान ले और गणि शा में अपनी टाँग अड़ वे ो उसे म जो कुछ कह सकते हैं वही उन विद्वानोंको भी जायगा जो आ भौ क व्यापारकी कु बाह्य जीवनोप ोगी व्यवहारकी बातोंका ज्ञान ढोते फिरते हैं पर भीतरी अध्यात्मका जिन्हें को पता नहा तुकाराम ाने भक्तियोगका पर पार देखा उत्कट भक्तियोगसे खिंचकर हासिद्धियाँ उनके द्वारपर आकर हाथ ोड़े खड़ी र ी थीं पिण्डमें पिण्डका पि डा पारकर अर्थात् रीर पा िव अंश आपमें तेजमें तेजका वा में वायुका आ । में इस प्रकार पाञ्चभौतिक देहका करके व ैकुण्ठस्वरूप हुए कइ ज्ञाताओंका ी है

गुलाबरा महाराज कहा करते थे कि देहके साथ वैकुण्ठ जाय जा सकता है द प्रमाणको देखते हुए रामेश्वर भट्ट । चन है और अन्य अने संतों और कवियोंके वचन हैं सबका य ी अभिप्राय है कि तुकारा सदे वैकु ठ गये

रामेश्वर भट्ट कहते हैं पहले जो बड़े-बड़े कवीश्वर हुए उन सबसे पूछा कि आपके कलेवर कौन ले गया सबसे पूछकर वह विमानमें बैठ चले गये ' निलोबारायने मानवदेहको ि ये निजधाम चले इस आशयकी आर ीमें कहा है कि श्रीतुकारामके ोगकी य ी सिद्धि थी कि वह काया सहित मुक्त हुए कचेश्वरकी उक्ति है कि श्रीतुकारामने सतोंमें जो बडी कीर्ति पायी वह यही है कि उ होंने इस देहको भी सायुज्य गति दी भक्तमञ्जरिमालाकार भी यही कहते हैं कि तुकारामने इस जड़ देह ो विमानपर बैठाया रङ्गनाथ स्वामीका ए बडा मजेदार पद इस प्रसङ्गपर है जिसका अ य इस प्रकार है

नरदेह लिये वणि जो वहाँ पहुँचा व ाणी सुनो घटको फोड़कर नकादिने मिट्टी अनुभव की यह का वैसा नहीं है इसने घटको रखकर चित्तमें उसे धारण कर लि औरोंने दूधको छोडकर पानी पीया यह तुका वैसा नहीं है इसने दूध ो रखकर उसका मक्खन च खा औरोंने कोऽहम् का छिलक नि कर सोऽहम् का रस पान किया यह तुका ैसा नहीं है यह कोऽहम् को बिना छीले ी र पचा गया औरोंने इ मिश्रपुटमेंसे जड़ ो फें दिया यह तुक वैसा नहीं है इ ने पारससे ोहेको भी सोना बना लि या जड़बुद्धि अहम् ले इस देह ो निज रूपमें ढो ले गया नि रगमें इसका रग देखनेका ही श्रीरगने नि किया अस्तु इस वाणीका अब सार मम हता ँ कि ोगियोंका य है तूको दिखायी देन और मरण क है

गत्से अदृश्य हो जाना यक्ताव्यक्त होनेके ये अघटि धर्म योगियोंके अपने रग

मेरे विद्यालयीन गुरु और विख्यात स्कृतज्ञ पण्डि गोप राव नन्दरगीकर स्त्री ीने सशरीर स्वर्ग सिधारनेके चार पाँच द ा वाल्मीकि रामा से ढूँढ र दिये हैं उ हें मैं पाठकोंके आगे रखता हूँ

( ) कौशिककी बहिन सत्यवती इस रीरके थ ही स्वर्ग सिधारी

ी ा रमनुवर्ति ी

(बाल ४ ८)

(२) बालका ५ ६ में त्रिशकुकी समग्र कथा पाठक देखें त्रिशकुके चित्तमें यह तीव्र लालसा गी कि एक महायज्ञ करके सदेह स्वग ो ाय ग च्छेय स्व रीरेण देवताना परा गतिम् (५७ १२) पर वसि ने इसका विरो किया और यह ाप दिया कि तुम चा डा त्वको प्राप्त होगे त्रिशकु चाण्ड ल हुअ तव वह वि-वामित्रकी शरणमें गया विश्वामित्रने उसे यह वरदान दिया कि

ने सह रूपे ीरो मिष्यसि

(५९ ४)

और यज्ञ रचनेके लिये ब्रा णोंको बुलाकर विश्वामित्रने उनसे कहा

स्वेनानेन ीरेण देवलोकजि ीषया
यथा ीरे देव ो वि ष्यति
वत्य ां यज्ञो क्रि

(६ ४)

हम-आप मिलकर ऐसा यज्ञ रचें जिससे यह राजा इसी रीरसे स्वर्गको जाय

यज्ञ आरम्भ हु ा दे ओं ो विभाग देनेका जब समय आया त विश्वामित्रने उनका आवाहन किया पर देव नहीं आये विश्वामित्र क्रो भड़का और उन्होंने कह

स्वार्जि किञ्चिदप्यरि ा हि पस मू
र स्व ते ा स्य ीरो दिव
उ वाक्ये ौ स्मिन् रीरो नरेश्वर
दिवं गाम कुर मुनीन पश तदा

(६ १४ १६)

मैंने जो कु तपका फल स्वय अजन किया है हे राजन् उसके तेजसे तुम स रीर स्वर्गको जाओ मुनिके इस वचनके प्रतापसे ह र जा सब मुनियोंके देखते हुए स रीर दि यलोकको चला गया

(३) अयो याकाण्ड सर्ग ११ मे महर्षि वसिष्ठने श्रीरामचन्द्रजीसे रघुकुलके पूव पुरुषोंकी नामावली निवेदन की है उसमें राजा त्रिशंकुके सम में यही हा है कि स सत्यवचनाद्वीर सशरीरो दिव गत अ ात् व वीर पुरुष सत्य वचनके द्वारा सशरीर दि यलोकको प्राप्त हुआ

(४) वन वन घूमते हुए एक बार एक वनमें आनेपर सुग्री श्रीरामचन्द्रजीसे उस वनका इतिहास कहते हुए बत ाते हैं

सप्तज ा ा मु य सि ा
शीर्षा ि ज यि
त्रे हारा ायुना वारि
दिव षश ीता स्सभि लेवरा

(किष्किन्धा १ १८ १९)

(५) दश जै सशरीर क्षम्
गृ क्ष्मण दिवं दि वेश

(र १ ६ १)

(६) स्वय श्रीरामचन्द्र अपने रीर तथा भ्र ताओंसहित वैष्णवतेजमें प्रवे र गये

विवेश वै व ते शरार ानुज

(उत्तर० ११ १२)

महाभारत (स्वर्गारोहण पर्व अ ३ ४१ ४२) में यह वर्णन है कि धर्मरा युधिष्ठिरने मानव देह त्य ग कर दिव्य वपु ारण किया और दे ओंके स थ दि य धामको गये

ङ्गा दे नदीं पुण्या ीमृषि ाम्

तो राजा तनु य ा ीम्

त ाे दि य भू ध राजो धिष्ठिर

तुकाराम महाराज स रीर वैकुण्ठको गये और कीर्तन करते करते ह अदृश्य हो गये यह घटना अपूर्व तो है ही पर इसी प्रकारकी गति और भी कु हात्माओंने प यी है मुक्ताबाई इसी प्रकारसे देखते देखते ही गु हो ग ी कबीर ाहबके वि षयमें भी ऐसी ही ब कही जाती है बीर ाहबने १ १ षकी आयुमें एक दिन अपने ि योंसे गु ाबके फूलोंकी से तैयार करने ो कह से तैयार हुइ कबीरसाहब उसपर एक दु ाला ओढकर लेट गये कुछ स य बाद ि ष्योंने दुशाला उठाकर देख ीरसाहब ो नहीं हैं व ीसे गुप्त हो गये यह घटना अनेक हिन्दू और मुसलमान लेखकोंने आँखों देखी कहकर लिख र ी है (अडयर बुलेटिन मार्च १९१६) सि सम्प्रदा के संस्थापक गुरु नान ा भी अन्त इसी कार हुआ सके ७ वें वर्ष उनकी यात्रा समाप्त हुई उन अन्त्य सर ार हिन्दू-धर्म ी विधिसे किया जाय य इस्लामके अनुसार झगड़ा उनके ि योंमें छिड़ गया ही विवाद चल र ा था व एक शिष्य ने के शरीरपरसे यों चद्दर उ यी त्यों ही वह रीर गाय हो

गया से दहन द नका गड़ा भी मिट (एनीबेस टकृत दि रिली जिअस प्राब्लेम इन इं या) द्र विड दे के सत तिरुपन्न (अलवर) और शै ाधु माणिक्यके विषयमें ऐसी ी सशरीर हरिस्वरूप हो लेनेकी थाएँ उस ओर प्रसि द्ध हैं ईसाइयोंके मं ास्त्र बाइबलमें प्रेषि ोंके कृत्य प्रकरणमें इसी प्रकारका वर्णन है सब साधु स रामायण महाभारत जैसे ग्र थ कालिदास से कवीश्वर (रघुव सग १५) और अन्य धमग्र थ भी एकमत होकर सदेह वैकुण्ठ गमन करने और कीतन करते करते अदृश्य हो ने की घटनाकी सत्य ा प्रमाणित कर रहे हैं फिर भी इस सत्कथ प्रसङ्गपर जिनका विश्वास न जमता हो वे कृपा करके श्री काराम महाराजके अभगोंका विश्वास और आदर के साथ न्त चित्तसे अध्ययन करें और महाराजने भगवत्प्रसाद लाभ करनेका जो स्वानुभूत साधन मार्ग उ हीं अभगोंमें बताया है उसपर चलें ही प्राथना करके

श्री काराम मह राजकी जय

—के घोषमें उनके इस चरित्रग्र थको पूर्ण करते हैं और ह नव क्पुष्प श्रीपा डुरङ्ग भगवान्के चरणोंमें समर्पित कर पाठकोंसे विदा लेते हैं

इति

ॐ तत् सत् श्रीकृ णार्पणमस्तु

श्रीहरि

सचित्र सक्षिप्त भक्त चरित माल की पुस्तकें

(म्पादक श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार)

पृ २ चित्र इसमें गोविन्द मोहन धन्ना चन्द्रहास और धन्वाकी कथाएँ हैं मूल्य)

नारी पृ ६८ एक तिरगा तथा पाँच सादे चित्र इसमें ी मीराबाई करमैतीबाई जनाबाई और रबियाकी कथाए मूल्य)

-पञ्चरत्न पृ ८८ एक तिरगा तथा ए सादा चित्र इसमें रघुनाथ दामोदर गोपाल शान्तोबा और नीलाम्बरदासकी कथाए हैं मूल्य -)

आदर्श पृ ९६ एक रगीन तथा यारह सादे चित्र इसमें शिवि रन्तिदेव अम्बरीष भीष्म अजुन दामा और चक्रिककी थए हैं मूल्य)

-चन्द्रिका-पृष्ठ ८८ एक तिरंगा चित्र इसमें साध्वी सखूबाई महाभागवत श्रीज्योतिपन्त भक्तवर विट्ठलदासजी दीनबन्‍ दा भक्त नारायणदास और बन्धु महान्तिकी न्दर गाथाए हैं मूल्य)

-सप्त पृ ८६ सचित्र इसमें दामाजी पन्त मणिदास माली कूबा कुम्हार परमेष्ठी दर्जी रघु केवट रामदास चमार और सालबेगकी कथाएँ हैं मूल्य -)

-कुसु पृ ८४ सचित्र इसमें जग ा दास हिम्मतदास बालीग्रामदास दक्षिणी तुलसीदास गोविन्ददा और हरिनारायणकी कथाएँ २ मूल्य)

प्रेमी पृष्ठ ८८ एक तिरंगा चित्र इसमें बिल्वमङ्गल जयदेव रूप सनातन हरिदास और रघुनाथदासकी ए हैं मूल्य)

ाचीन पृ १५२ चार बहुरगे चित्र इसमें मार्कण्डेय महर्षि अगस्त्य और राजा शङ्ख कण्डु उतङ्क आरण्यक पुण्डरीक चोलराज और विष्णुदास देवमाली भद्रतनु रत्नग्रीव राजा सुरथ दो मित्र भक्त चित्रकेतु वृत्रासुर एव तुलाधार शूद्रकी कथाए हैं मूल्य)

-सौरभ पृष्ठ ११ एक तिरंगा चित्र इसमें श्रीव्यासदासजी मामा श्रीप्रयागदासजी ङ्कर पण्डित प्रतापराय और गिरवरकी कथाएँ मूल्य)

-सरोज–पृष्ठ ४ एक तिरंगा चित्र इसमें गङ्गाधरदा श्रीनिवास आचार्य ीधर गदाधर भट्ट ेकनाथ लोचनदा मुरारिदास हरिदास भुवनसिंह चौहान और अङ्गदसिंहकी कथाएँ हैं मूल्य =)

-सुमन पृष्ठ ११२ दो तिरगे तथा दो सादे चित्र इसमें विष्णु चित्त विसोबा सरा नामदेव राँका-बाँका धनुर्दास पुरन्दरदास गणेशनाथ जोग परमानन्द मनकोजी बोधला और सदन साईकी कथाए हैं मूल्य)

-सु पृ १ भक्त रामच द्र ाखाजी गोवर्धन रामहरि डाकू भगत आदिकी १९ कथाएँ हैं चित्र १२ मूल्य)

-महिल पृ १ रानी रत्नावती हरदेवी निमला लीलावती सरस्वती आदिकी ९ कथाए हैं चित्र मूल्य ≥)

भक्त दिवाकर पृष्ठ १ भक्त सुव्रत वैश्वानर पद्मनाभ किरात और नन्दी वैश्य आदिकी ८ थाए हैं चित्र ८ मूल्य ≥)

-रत्नाकर पृष्ठ १ भक्त माधवदासजी भक्त विमलतीथ महेश मङ्गलदास आदिकी १४ थाए हैं चित्र ८ मूल्य ≥)

ये बूढ़े-ब ी पुरुष—सबके पढ़ने योग्य बड़ी सुन्दर और शिक्षाप्रद हैं एक ए प्रति अवश्य पास रखने ोग्य है

पता गीताप्रेस पो गीताप्रेस (गोरखपुर)

श्रीहरि

श्रीजयदयलजी गोयदकाकी कु पुस्तकें

१	श्रीमद्भगवद्गीता तत्त्वविवेचनी नामक हिंदी टीकासहित पृष्ठ ६८४ रगीन चित्र ४ कपड़ेकी जिल्द मूल्य		४)
२	तत्त्व चिन्तामणि (भाग १) पृष्ठ ५५२ मू	=) सजिल्द	१)
३	(भाग २) पृष्ठ ५९२ मू	–) सजिल्द	१)
४	(भाग ३) पृष्ठ ४२४ मू	≢) सजिल्द	१–)
५	(भाग ४) पृष्ठ ५२८ मू	) सजिल्द	१≢)
६	(भाग ५) पृष्ठ ४९६ मू	।–) सजिल्द	१≢)
७	(भाग ६) पृष्ठ ४५६ मू	१) सजिल्द	१ –)
८	(भाग ७) पृष्ठ ५२ मू	१=) सजिल्द	१)
९	(भाग ४) छोटे आकारका सस्करण सचित्र पृष्ठ ६८४ मू	=) सजिल्द	)

१ —रामायणके कुछ आदर्श पात्र पृष्ठ १६८ मूल्य		=)
११—परमार्थ पत्रावली (भाग १) ५१ पत्रोंका सग्रह	मूल्य	)
१२ (भाग २) ८	मूल्य	)
१३ (भाग ३) ७२	मूल्य	)
१४ (भाग ४) ९१	मूल्य	)
१५ महाभारतके कुछ आदर्श पात्र पृष्ठ १२६	मूल्य	)
१६ आदर्श नारी सुशीला सचित्र पृष्ठ ५६	मूल्य	)
१७—आदर्श भ्रातृ-प्रेम सचित्र पृष्ठ १ ४	मूल्य	≢)
१८—गीता निब धावली पृ ८	मूल्य	=)
१९ नवधा भक्ति—सचित्र पृष्ठ ६	मूल्य	=)
२ —बाल शिक्षा—सचित्र पृष्ठ ६४	मूल्य	=)
२१ श्रीभरतजीमें नवधा भक्ति सचित्र पृष्ठ ४८	मूल्य	–)
२२—नारीधर्म—सचित्र पृष्ठ ४८	मूल्य	–)

श्रीहरि

वेता और भजनोंकी पुस्तकें

१ विनय पत्रिका सानुवाद पृष्ठ ४७२ सुनहरा चित्र १ मूल्य अजिल्द १) सजिल्द १ -)
२—गीतावली सानुवाद पृष्ठ ४४४ मूल्य १) सजिल्द १ -)
३—कवितावली सानुवाद सचित्र पृष्ठ २२४ मूल्य -)
४ दोहावली सानुवाद सचित्र पृष्ठ १९६ मूल्य)
५ -भारती सचित्र पृष्ठ २ मूल्य =)
६ माला पृ ५६ मूल्य -)
७—गीताभवन-दोहा-सग्रह पृष्ठ ४८ मूल्य =)
८—वैराग्य संदीपनी—सटीक सचित्र पृ २४ मूल्य =)
९ सग्रह भाग १ पृ १८ मूल्य -)
१ " " २ पृष्ठ १६८ मूल्य =)
११ " " ३ पृ २२८ मूल्य =)
१२ " " ४ पृष्ठ १६ मूल्य =)
१३ " ५ पृष्ठ १४ मूल्य =)
१४ हनुमानबाहुक पृ ४ मूल्य -)
१५ विनय पत्रिकाके बीस पद पृष्ठ २४ सार्थ मूल्य)
१६ हरेरामभजन २ माला मूल्य)॥
१७—सीतारामभजन पृष्ठ ६४ मूल्य)॥
१८ विनय पत्रिकाके पद्रह पद सार्थ मूल्य)॥
१९ श्रीहरिसंकीर्तनधुन पृष्ठ ८ मूल्य)।
२०—गजलगीता पृष्ठ ८ मूल्य आधा पैसा

पता—गीताप्रेस, पो गीताप्रेस (गोरखपुर)